NEW CATALOGUE OF SANSKRIT AND PRAKRIT MANUSCRIPTS

JESALMER COLLECTION

L. D. SFRIES 36

COMPILED BY

GENERAL EDITOR
DALSUKH MALVANIA

MUNI
SHRI PUNYAVIJAYAJI

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD-9

जेसलमेरुदुर्गस्थहस्तप्रतिसंग्रहगतानां

संस्कृतप्राकृतभाषानिबद्धानां

ग्रन्थानां नूतना सूची

सङ्कलयिता

मुनिराज श्री पुण्यविजयजी

प्रकाशक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर

अहमदाबाद-९

FOREWORD

We are happy to publish the New Catalogue of the various mss. collections at Jesalmer. This was prepared and got printed by Rev. Muni Shri Punyavijayaji who is no more with us. During his life-time the printing of this Catalogue was finished but due to his other engagements he was not able to write the Introduction. So, the publication was delayed.

The expenses of preparation and printing were borne by the Śvetāmbara Jaina Conference of Bombay and we are much grateful to the authorities of this Conference for allowing us to publish the Catalogue.

The first Catalogue was published in 1923 A. D. in the G.O.S. Vol. No. 21. It was compiled by Shri C. D. Dalal and was edited with Introduction etc. by Pt. L. B. Gandhi. Therein we find [1]the entries of the mss. as follows :

1)	Baḍā Bhaṇḍār palm-leaf mss.	347
	Baḍā Bhaṇḍār paper mss.	18
2)	Tapagaccha Bhaṇḍār Palm-leaf mss.	9
	Tapagaccha Bhaṇḍār Paper mss.	22
3)	Thāru Shah Bhaṇḍār paper mss.	4
		400

In this New Jesalmer Catalogue the entries of mss. are as follows :

pp.	1-173	Collection of Jinabhadra in the Fort-(Baḍā Bhaṇḍār) Palm-leaf mss.	402
pp.	173-180	Pañcano Bhaṇḍār.[2] Palm-leaf mss (No. 404-426)	23
pp.	181-291	[3]Collection of Jinabhadra Paper mss. (In 83 Pothis).	1330
pp.	292-357	[4]Vaḍāupashraya in the Fort - paper mss. (No. 1331-2257)	927
pp.	358-360	Tapagaccha Collection. Palm-leaf mss.	8
pp.	361-363	Loṅkāgacchīya Collection Palm-leaf mss.	4
pp.	364	Thārushah Collection Paper mss.	3
			2697

1. It should be noted that in one mss. there may be more than one work.
2. This was previously in the City but now it is kept in the fort.
3. This collection is of Vegaḍagaccha.
4. This collection is of Vegaḍagaccha.

This comparison shows the value of this Catalogue

Introduction to this Catalogue is written by Pt Amratlal Bhojak Pt Bhojak was with Rev Muniji in Jesalmer and had good fortune to be trained by Rev Muniji We are thankful to Pt. Bhojak for his informative Introduction

We hope that this Catalogue will be useful to the interested scholars provided the mss in the Collection are made available by the authorities

Some important mss of the Collection were microfilmed by the efforts of Rev Muniji and some of the microfilm roles are handed over to us [1] but some of the roles are with Pt Fatehchand Belany We have proposed to microfilm the mss of which we have no roles We hope that the authorities at Jesalmer will allow us to finish the work so that the world of scholars may be able to utilize the Collection

L D Institute of Indology
Ahmedabad-9
15th Aug 1972

Dalsukh Malvania
Director

---

1 See Introduction p 22 but of them Roles Nos 1-5 are with us

ग्रन्थानुक्रम

आगमप्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी
विक्रम-१९५२ — २०२७

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

प्रस्तावना

जेसलमेरनो परिचय

जेसलमेरना प्राचीन ज्ञानभंडारोनो परिचय मेळव्या पहेलां आपणे सामान्य रीते जेसलमेरनुं प्रादेशिक निरीक्षण करी लईए ए उचित छे. जेसलमेर ए, राजपुतानानी वायव्य सरहदे, पाकिस्ताननी सरहदनी लगोलग आवेला एक नाना देशीराज्यनुं पाटनगर हतुं. आजे आ राज्यने हिंदी संघमां मेळवी देवामां आव्युं छे.

पहेलां गुजरातथी जेसलमेर जवा इच्छनारे रेलमार्गे मारवाड जंक्शनथी जोधपुर थई पोकरण पहोंची त्यांथी मोटर मारफत जेसलमेर जवुं पडतुं. हवे पोकरणथी रेलमार्गे ज जेसलमेर पहोंची शकाय छे, रेल्वे थई जवाने कारणे एक समये अति अगवडभरी गणाती यात्रा आजे सुगम बनी गई छे.

कुदरती वातावरणनी अनेकविध प्रतिकूळताओ छतां आ नगर पोतानी समृद्धिथी प्राचीन युगमां केटलुं झळहळतुं हतुं अने एना आंगणे केवुं महत्त्वनुं कळा, शिल्प–स्थापत्य अने साहित्यनुं सर्जन थयुं हतुं एनी साक्षी अहींनां सख्याबंध जैन–जैनेतर मंदिरो, जैन ज्ञानभंडारो अने जैन पटवाओनी भव्य कळापूर्ण हवेलीओ तेमज तेमां रहेली अनेक प्रकारनी साधनसामग्री पूरे छे. रणवगडा जेवा विकट अने वेरान दीसता आ प्रदेशमां एक काळे केवा कळाविदो अने कळाधरो जीवता जागता हता ए आजे विद्यमान अहींनी प्राचीन कळाकृतिओ अने अनेकविध अवशेषो उपरथी आपणे कल्पी शकीए छीए.

आ नगरनी आसपास आजे पण नानां मोटां संख्याबंध तळावो छे. वरसाद जो सात–आठ इंच जेटलो वरसे तो आ प्रदेशनी प्रजा माटे पाणीनी बे-त्रण वरस सुधी नीरांत थई जाय छे, परंतु कुदरतनी बलिहारी मानो के गमे ते कारणे, आ प्रदेशमां मेघराजानी एटली महेर पण नियमित रीते थती नथी. एटले अहींनी प्रजा माटे 'पाणीनी तंगी' ए सामान्य वस्तु गणाती हती.[1]

अहींनी भूमि मोटे भागे पथरोया होवाने लीधे सामान्य रीते खेतीवाडी माटे उपयोगी नथी. छतां अमुक जमीन एवी पण छे, जेमां चालु अमुक अनाज उगाडवामां आवे छे. शाक–भाजी वगेरे आ प्रदेशमां ऊगतां नथी; ऊगी न ज शके तेवुं तो नथी लागतुं, पण प्रजाना स्वभावमां आ

---

1. आज हवे जेसलमेरमां पाणीना नळ थवाथी पाणीनी अगवड गई छे.

विषेनो उद्यम ज नथी. प्राचीन काळथी एटलुं गातां रहे छे के "अठे तो धान के साथ धान खावारो है" एटले अहीं व्यंजन (साक) तरीके मोटे भागे मग, अडद, चोळा के चणानी अने एनी दाळनो ज वपराश थाय छे. ए उपरांत व्यंजन तरीके सांगरी, केर, कुमठीआ, बावळनां पैडां वगेरेनी सुकवणीनो उपयोग अमुक प्रमाणमां अहीं थाय छे. दूध-घी अहीं ठीक ठीक मळे छे.

आजथी लगभग सो-सवा सो वर्ष पहेलां जेसलमेरमां २७०० जेटलां जैन घरो हतां. पण प्रादेशिक विषमता अने राज्यनी अव्यवस्था आदिने लीधे वेपार-धंधाओ नष्ट थवाने कारणे प्रजा क्रमे क्रमे देश-देशांतरमां जती रही छे अने आजनी परिस्थितिमां तो ए विषे कांई कहेवानुं ज न होय. अमे जेसलमेर हता त्यारे (ई. स. १९५०-५१मां) जैनोनां मात्र सत्तावीस घर ज हतां. अहींनी मुख्य पेदायश पत्थरोनी छे. ए पत्थरोमां आरसनी जातिने मळतो पीळो पत्थर अहीं ठीक ठीक प्रमाणमां पाके छे, ए कांईक पोचो होई तेमां कोतरणी के नकशी सरळताथी बनावी शकाय छे. अमरसागरनां कळापूर्ण जैन मंदिरो अने जेसलमेरमांनी पटवाओनी भव्य हवेलीओ आ ज पाषाणनी एक सरखी जातिने पसंद करीने बनाववामां आवेल छे. जेसलमेरनां जैन मंदिरो अने तेमांनी हजारोनी संख्यामां विद्यमान मूर्तिओ पण आ ज पाषाणमांथी निर्मित थयां छे. कुदरती रीतेज जेमां अनेक रंग-विरंगी भातो अने आकृतिओ देखाय तेवी वींछीया वगेरे पत्थरनी जातिओ पण अहीं पाके छे, पण तेनुं प्रमाण घणुं ओछुं छे. आथीज अहींनां मंदिरोमां एनो खास उपयोग नजरे पडतो नथी।

जेसलमेरनां जैन मंदिरो

जेसलमेरगाममां मात्र नानुं सरखुं अने लगभग सादुं गणी शकाय तेवुं तपगच्छनुं जैन मंदिर छे. जेने आपणे भव्य अने कळापूर्ण कही शकीए एवां मंदिरो तो अहींना टेकरी उपरना किल्लामां आवेलां छे. अहींनो किल्लो एटले ऊंचाईमां प्रायः तळाजा (सौराष्ट्र) जेवी टेकरी (लगभग ५००–६०० फीट ऊंचो) समजवी जोईए, परंतु किल्लाना उपरना भागनो विस्तार एटलो बधो छे के जे एक नानुं सरखुं नगर गणी शकाय. किल्लामां अहींना महाराउळजीना महेल, संख्याबंध जैन जैनेतर मंदिरो उपरांत आमप्रजानां घरो पण ठीक ठीक प्रमाणमां छे. किल्लामां पाणी वगेरे साधनोनी सगवड होवाने कारणे युद्धना प्रसंगोमां आ किल्लाए राज्यनुं सारी रीते रक्षण कर्युं छे. किल्लामां लक्ष्मीनारायण आदि मंदिरो पण अनेक छे, तेम छतां जेमां विविध कळाओना जीवता नमूनाओ छे ते जैन मंदिरोनो ज मात्र अहीं परिचय आपवामां आवे छे. किल्लामां बधां मळीने आठ जैन मंदिरो छे, जे विक्रमना पंदरमा शतकना चतुर्थ चरणमां अने सोळमा शतकना प्रथम चरणमां विद्यमान खरतरगच्छीय समर्थप्रभावक आचार्य श्री जिनभद्रसूरिप्रवरना उपदेशथी बनेलां छे. आ ज आचार्यना उपदेशथी खंभातनिवासी गूर्जरज्ञातीय श्रेष्ठी धरणाके अने श्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठी बलिराज उदयराजे लखावेली संख्याबंध ताडपत्रीय पोथीओ अहींना ज्ञानभंडारमां विद्यमान छे, जेने विषे

आगळ विशेष कहेवाशे. जेसलमेरनां आ भव्य मंदिरोनो विस्तृत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिचय स्व. श्रीयुत् पूर्णचन्द्रजी नहारे तेमना "जैनलेखसंग्रह जेसलमेर भाग ३"मां आप्यो छे, एटले अहीं प्रसंगवश ज आ मंदिरोनो मात्र अमुक लक्ष्यथी ज टूंक उल्लेख करवामां आवे छे. मंदिरोमां केवी कळानुं सर्जन करवामां आव्युं छे तेनुं दिग्दर्शन उपरोक्त नहार बाबुजीना पुस्तकने आधारे थई शकशे. तेम छतां आ मंदिरो पैकी अष्टापदजी चिंतामणिपार्श्वनाथ अने आदीश्वर भगवानना मंदिरमां, खास करीने मूळ मंदिरनी प्रदक्षिणामां पडती त्रणे बाजुनी भींतोमां अने ते उपरांत मंदिरनां तोरणो, कमानो अने गुंबज आदिमां जे देव-देवीओ वगेरेनां तेमज नृत्यकळानी विविध भंगीओ, अंगभंगो अने मुद्राओने दर्शावतां रूपो घडवामां आव्यां छे ए, शिल्प-स्थापत्यकळा अने नृत्यकळा विशारदने माटे एमनी कळामां प्राण पूरी शके एवी रसप्रद वस्तु छे, आ पंक्तिओ वांचनारने प्रथम नजरे जरूर आमां अतिशयोक्तिनो भास थशे, छतां हुं आशा राखुं छुं के आ कळाकृतिओने नजरे जोया पछी अथवा एनी प्रतिकृति (फोटोग्राफ्स) जोया पछी एमनो ए ख्याल जरूर दूर थई जशे. आ विशिष्ट अने दैवी कलापूर्ण रूपो जोतां आपणने एम जरूर लागे छे के ए रूपोना घडवैया शिल्पीओने आ अंगे घणुं ऊंडु ज्ञान हशे अने तेओ सिद्धहस्त हशे. आ रूपो पैकी केटलांक रूपो तो आपणने एवां जीवतां जागतां भासे छे के जाणे हमणां ज बोली के हसी ऊठशे !

अमरसागरनां जैन मंदिरो

जेसलमेरथी पांच माईलना अंतरे आवेला अमरसागरमां जेसलमेरना बाफणा कुटुंबे बंधावेला मंदिरनी बहारनी विशाळ जाळी अने अन्दरनो भाग ए बेमां जे नकशी छे ए, आपणने अमदावादनी मसजीदो अने हठीभाईनी वाडीना मंदिरनी नकशीओने घडीभर भुलावी दे तेवी छे.

जेसलमेरथी दसेक माईलना अंतर उपर आवेलुं लोद्रवाजीनुं मंदिर पण प्राचीन अने भव्य-रचनापूर्ण छे.[1]

*

अनवरत साहित्यसंशोधक गुरुवर्य श्री चतुरविजयजी महाराज अने अनेक ग्रन्थभंडारोना उद्धारक विद्योपासक प्रगुरु प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजी महाराज साहेबनी निश्रामां प्राचीन ग्रंथोना संशोधनकार्यमां अने प्राचीन ज्ञानभंडारोना संरक्षणादि कार्यमां बाळपणथी ज जोवा–शीखवा अने तैयार थवानुं सौभाग्य आगमप्रभाकरजी मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने प्राप्त थयेलुं. त्यारथी विद्वद्वर श्री सी. डी. दलाल द्वारा संपादित जेसलमेरना ज्ञानभंडारनी सूचि जोई त्यारथी ज जेसलमेरना ज्ञानभंडारोनुं निरीक्षण–संशोधनादि कार्य करवानुं बीज पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीना

१. अहीं सुधीनी प्रस्तावनानुं प्राथमिक रीते तैयार करेलुं मेटर पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी श्रुत-शील-वारिधि विद्वद्वरेण्य मुनिप्रवर श्री पुण्यविजयजी महाराज साहेबे लखेलुं मळी आव्युं छे जे यथावत् आप्युं छे. हवे पछीनो प्रस्तावनानो कोईक भाग पू. पा. आगमप्रभाकरजीनी छूटी-छवाई नोंधोना आधारे तथा शेष मुद्रित सूचीपत्रमांथी स्वतंत्र रीते तारवीने आपवामां आव्यो छे.

अंतरमां रोपायुं हतुं. आमां, अहीं जणाव्युं तेम, तेमना गुरु-प्रगुरुश्रीनो संशोधन क्षेत्रनो वारसो प्रधान वस्तु छे. त्यार बाद वि. सं. १९९९ मां पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजीए, तेमना विद्वन्मंडळ साथे जेसलमेरना भंडारो जोवा अने उपयोगी सामग्रीनी नकल करवा-कराववा माटे पांच मास पर्यंत जेसलमेरमां जे कार्य कर्युं ते प्रत्यक्ष सांभळीने पूज्यपाद आगम-प्रभाकरजीनी जेसलमेर जवानी वृत्तिने वधु प्रोत्साहन मळ्युं. आ पछी सात वर्षना अंतरे जेसलमेर श्रीसंघनी तीर्थयात्रा प्रसंगना मेळा माटेनी योजना अने विनंति थतां तेओश्रीए जेसलमेर जवा माटे, वि. सं. २००६ना कार्तक वदि ७ ना दिवसे कपडवंजथी विहार करीने कार्तक वदि अमावास्याना दिवसे साबरमती आवीने वि. सं. २००६ना मागसर सुद १ ना दिवसे साबरमतीथी विहार कर्यो. अने वि. सं. २००६ना माह सुदि १२ ना दिवसे जेसलमेरमां प्रवेश कर्यो. ते ज दिवसे तेमनी साथेनुं विद्यामंडळ पण जेसलमेर पहोंच्युं मने बराबर स्मरण छे के कपडवंजथी जेसलमेरना मार्गमां पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी अमदावाद, पाटण वगेरे जे जे स्थानोमां गया त्यां कोई पण समुदाय के गच्छना जे जे वडिल गुरुवरो हता तेमनी पासे जईने तेओए जेसलमेरना ज्ञानसंशोधनादि कार्य माटे विनीत भावे शुभाशीर्वाद मेळव्या हता.

जेसलमेरना जैन ज्ञानभंडारो[1]

जेसलमेरना ज्ञानभंडारोनी विशेष महत्ता तेमां रहेली प्राचीन-प्राचीनतम प्रतिओ अने केटलाक अन्यत्र अप्राप्य ग्रंथोने कारणे छे. आनो अर्थ ए नथी के गुजरात वगेरे प्रदेशोमां आवेला ज्ञानभंडारोनुं महत्त्व एथी ओछुं छे. पाटण, खंभात, अमदावाद, सूरत अने अन्य प्रदेशोमां रहेला ज्ञानभंडारोमां एवा घणा ग्रन्थो छे, जेनुं मूल्यांकन आपणे जेसलमेरना ग्रंथोथी जरा पण ओछुं न करीए. अर्थात् पाटण-खंभातना ताडपत्रीय ज्ञानभंडारोनी जेम ज जेसलमेरना ताडपत्रीय ज्ञान-भंडारनुं स्थान छे. जेम जेसलमेरना भंडारमां अन्यत्र अप्राप्य अने प्राचीनतम विशिष्ट ग्रन्थो छे तेवुं पाटण अने खंभातना भंडारोना संबंधमां छे. जेसलमेरना ज्ञानभंडारनुं सविशेष महत्त्व ए कारणे छे के सौप्रथम तो त्यां जवुं ए मुश्केल छे, त्यां गया पछी ए भंडारोने जोवानी अनुकूळता मळवी मुश्केल छे. अने पूरती धीरजथी आखा भंडारने तपासवानुं कार्य तो घणुं ज अघरुं छे. आ परि-स्थितिमां ए ज्ञानभंडारोनुं निरीक्षण बहु ओछुं थयुं होई तेमांना साहित्यनो ख्याल अने उपयोग घणा ओछा करी शक्या छे. तेथी विद्वानोना मनमां तेनी महत्ता आज पर्यन्त जळवाई रही छे. जे जे विद्वानो त्यां गया तेमणे सौए पोता पूरतुं अमुक कार्य कर्युं होई तेनो व्यापक परिचय

---

१. जेसलमेरना ज्ञानभंडारोना विविधविषयक ग्रन्थोना परिचय माटे प. श्री लालचन्द्र भगवान गांधीए लखेली श्री सी. डी दलाल संपादित "जेसलमेर जैन भाण्डागारीयग्रन्थानां सूचिपत्रम्" (सेंट्रल लाइब्रेरी-वडोदरा द्वारा प्रकाशित) ग्रन्थनी पांडित्यपूर्ण प्रस्तावना जोवा भलामण छे.

सौने न मळवाने कारणे ए भंडारो विषेनी जिज्ञासा विद्वद्वर्गमां अहर्निश बनी रही छे. आ भंडारनो महत्त्वनुं आगवुं उपलक्षण आज छे. बाकी भारतमां स्थान स्थानमां जे ताडपत्र के कागळ उपर लखायेल ग्रन्थोना संग्रहो छे ते बधा घणी घणी दृष्टिए महत्त्वना छे. टूंकमां एम पण कही शकाय के गुजरात वगेरेना भंडारो घणीवार आपणा जोवामां आव्या होई ए विशेनी नवाई आपणा मनमां रहे ते करतां जे भंडारो जोवाया न होय ते विषेनी नवतरता आपणा मनमां सविशेष रहे ए स्वाभाविक छे. अस्तु.

जेसलमेरमां कुल दस जैन ज्ञानभंडारो छे—

१ किल्लामां श्री संभवनाथजीना मंदिरना भोंयरामां आवेलो श्रीजिनभद्रसूरिज्ञानभंडार.

२. वेगडगच्छीय ज्ञानभंडार.

३. खरतरगच्छीय वडा उपाश्रयनो अथवा पंचनो ज्ञानभंडार.

४–५. खरतरगच्छीय वडा उपाश्रयमां आचार्य श्री वृद्धिचंद्रजी यतिश्रीनो ज्ञानभंडार अने यति श्री लक्ष्मीचन्द्रजी महाराजनो ज्ञानभंडार.

६. आचार्यगच्छना उपाश्रयमांनो ज्ञानभंडार.

७. खरतरगच्छीय श्री थाहरूशाहनो ज्ञानभंडार.

८. यति श्री डूंगरजीनो ज्ञानभंडार.

९. लोंकागच्छनो ज्ञानभंडार.

१०. तपागच्छनो ज्ञानभंडार.

आ भंडारोमांना लोंकागच्छीय अने तपागच्छीय ज्ञानभंडार सिवायना बाकीना आठ भंडारो खरतरगच्छीय छे.

प्रथम बे नंबरना ज्ञानभंडारो तो किल्लामां साथे ज हता ज्यारे त्रीजा नंबरनो वडाउपाश्रयनो ज्ञानभंडार पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए जेसलमेरना श्रीसंघने समजावीने किल्लामां मूकाव्यो छे. पांचमा नंबरवाळो यति श्री लक्ष्मीचन्द्रजी महाराजनो भंडार तेओश्रीए पोते वि. सं. २००७ मां श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर (पाटण-गुजरात) ने समर्पित करेलो होवाथी हाल ते भंडार पाटणमां छे.

अहीं जणावेला जेसलमेरना तेमज अन्यान्य स्थानोमां रहेला प्राचीन जैन ज्ञानभंडारो, ए, केवल जैन धर्मना ग्रन्थोना संग्रहरूप ज नथी पण तेमां ब्राह्मण अने बौद्ध ग्रन्थो पण जैनोए लखावीने संग्रहेला छे. आमां एवा पण कोइक अजैन ग्रन्थो छे जेनी प्रति अन्यत्र मळती नथी, अने एवा पण अजैन ग्रन्थो छे, जेनी प्राचीनमां प्राचीन नकल जैनभंडारोमां ज मळती होय. आ दृष्टिए

आ भंडारोमां भारतीय वाङ्मयना प्राचीन–प्राचीनतम ग्रन्थो सचवाया छे. एमां शक नथी; अलबत, आमां जैनधर्मना ग्रन्थोनी बहुलता होय ए स्वाभाविक छे.

उपर जणावेला जेसलमेरना ज्ञानभंडारो पैकीनो छट्ठा नंबरवाळो आचार्यगच्छना उपाश्रयमांनो भंडार तथा आठमा नंबरवाळो श्रीडुंगरजी यतिनो भंडार जोवानी सुविधा पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीने मळी न होती. तेमज दसमा नंबरवाळो तपागच्छनो भंडार जेसलमेरथी नीकळवाना थोडा दिवसो पहेलां जोवानी सगवड थई हतो, ज्यारे सातमा नंबरवाळो श्री थाहरूशाहनो भंडार तो जेसलमेरथी विहार करवाना बे–चार दिवस पहेलां एक दिवस माटेज जोवानी तक मळी हती. बाकीना भंडारो तेओश्रीए संपूर्ण जोया छे. तेमांय श्रीजिनभद्रसूरिज्ञानभंडार, वेगडगच्छीय ज्ञानभंडार अने खरतरगच्छीय वडा उपाश्रयनो अथवा पंचनो ज्ञानभंडार, एम त्रण ज्ञानभंडारोनो संपूर्ण सुरक्षा तथा व्यवस्था अने सूचीपत्र करवामां आवेल छे. अलबत, तपागच्छीय भंडार अने लोंकागच्छीय भंडारमां रहेली ताडपत्रीय प्रतिओनुं सूचीपत्र करवामां आव्युं छे, अने थाहरूशाहना भंडारनी कागळ उपर लखायेली मात्र बे प्रतिओनोज परिचय आप्यो छे.

जे त्रण भंडारोना संपूर्ण समुद्धारनुं कार्य करवामां आव्युं छे ते भंडारोनी विशेष माहिती नीचे प्रमाणे छे—

१. श्रीजिनभद्रसूरि जैन ज्ञानभंडार

आ भंडारनी स्थापना खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्री जिनभद्रसूरिजीए विक्रमना पंदरमा शतकना उत्तरार्द्धमां करेली छे. व्यवहारमां आ भंडार 'बडो भंडार' ना नामे ओळखाय छे. आ आचार्यश्रीना उपदेशथी खंभातनिवासी परीक्षक–परीख धरणाशाहे घणा ग्रंथो ताडपत्र उपर लखावेला, जेमांना ४८ ग्रंथो आज पण आ भंडारमां विद्यमान छे. ते उपरांत खंभातनिवासी श्रेष्ठी श्री उदयराज अने श्रेष्ठी श्री बलिराज नामना भ्रातृयुगले पण आ आचार्यश्रीना उपदेशथी अनेक ग्रंथो ताडपत्र उपर लखावेला होवा जोईए, आ बे भाईओए लखावेला छ ग्रंथो आ भंडारमां विद्यमान छे.

श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर (पाटण)मां रहेला श्री वाडीपार्श्वनाथज्ञानभंडारनी स्थापना पण आ ज आचार्यश्रीनी प्रेरणाथी थई हती. आ भंडारमां विक्रमना पंदरमा शतकना अंतमां श्री जिनभद्रसूरिना उपदेशथी कागळ उपर लखायेला जैन आगमादि साहित्य उपरांत काव्य, कोश, अलंकार, छंद अने दर्शनशास्त्रना पण महत्त्वना ग्रंथो छे. आथी आ आचार्यश्रीनी विविध विद्याशाखाओ प्रत्येनी रुचि, आदर अने प्रेरणा विशेष उल्लेखनीय बनी जाय छे. वाडीपार्श्वनाथज्ञानभंडारमां केटलाक ग्रंथो एवा छे जे जेसलमेरना ज्ञानभंडारनी ताडपत्रीय प्रतिनी नकलरूपे छे. आचार्य श्री जिनभद्रसूरिजीना

उपदेशथी जेसलमेर, जाबाल, देवगिरि, अहिपुर (नागोर), पाटण (गुजरात), मंडपदुर्ग, आशापल्ली अने खंभातमां ज्ञानभंडारोनी स्थापना थई हती (जुओ पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजीसंपादित 'विज्ञप्तित्रिवेणी'नी प्रस्तावना, पृ० ५७–५८.)

प्रस्तुत श्री जिनभद्रसूरिज्ञानभंडारमां परीख धरणाशाह अने श्रेष्ठी श्री उदयराज-बलिराजे न लखावी होय तेवी प्रतिओने विक्रमना बारमा शतकना पूर्वार्द्धथी लई पंदरमा शतकना उत्तरार्द्ध सुधीमां जुदा जुदा महानुभावोए लखावेली छे. सौथी प्राचीनतम प्रति विशेषावश्यकमहाभाष्यनी* छे, जे विक्रमना दसमा शतकना पूर्वार्द्धमां लखायेली छे, जुओ क्रमांक ११६. प्राचीनता अने लिपिनी दृष्टिए आ प्रति असाधारण महत्त्वनी छे.

आ भंडारमां लांबा अने टूंका मापनी कुल ४०३ ताडपत्रीय प्रतिओ छे, ज्यारे तेमां पेटा नंबरोमां आवता नाना मोटा ग्रंथो मळीने कुल ग्रंथसंख्या लगभग ७५० थी पण उपर थाय छे.

आमां अहीं जणावेल विशेषावश्यकमहाभाष्य, सर्वसिद्धान्तप्रवेश, तत्त्वसंग्रह, सांख्यकारिकानी बे टीकाओ, मल्लवादीनुं धर्मोत्तरटिप्पन, पादलिप्तसूरिकृत ज्योतिष्करण्डकनी टीका, ओघनिर्युक्तिभाष्य, गुणपालकृत जंबूचरियं अने चन्द्रलेखाविजयप्रकरण आदि अनेक अलभ्य-दुर्लभ्य ग्रंथो आ भंडारमां छे. आ सिवाय जैन आगमो, तेनी व्याख्याओ, व्याकरण, काव्य, कोश, अलंकार, छंद अने दर्शनशास्त्रना प्राचीन-प्राचीनतम महत्त्वना ग्रंथो आमां छे, जे अभ्यासी अन्वेषको आ सूचीपत्रमांथी जाणी शकशे.

आ उपरांत जेनुं अमुक दृष्टिए वैशिष्ट्य होय तेवी प्रतिओमांथी केटलीक उदाहरण पूरत अहीं जणाववामां आवे छे—

१. भगवतीसूत्रवृत्ति (क्रमांक १५) आ प्रतिनां पत्रो अतीव सुकुमार छे.

२. वि. सं. १२०७ मां अजमेरनो भंग थयेलो ते समये त्रुटित थयेली पंचाशक प्रकरण वृत्तिनी प्रतिने, श्री स्थिरचन्द्रगणिए त्रुटित भाग पुनः लखीने संपूर्ण करी हती. आ प्रतिनो क्रमांक २०८ छे. आ उपरथी जाणी शकाय छे के वि. सं. १२०७ मां अजमेरनो भंग थयो हतो, अने ते वखते जैन ज्ञानभंडारने पण हानि पहोंची हती.

३. वि. सं. ११८० मां लखायेली पाक्षिकसूत्र सवृत्तिकनी प्रति नजीकना समयमां ज लखाई जवाने कारणे के फाटी जवाथी कोई कळाधरे तेने काळजी पूर्वक सांधीने तैयार करेली छे. विशिष्ट प्रकारे संधायेली प्रतिओमां आ प्रति कीमती दर्शनीय नमूनारूप छे. आनो क्रमांक १२९ छे.

* आ प्रतिनी प्रतिलिपि में करेली तेने आधारे ते अमदावादनी जाणीती लालभाई दलपतभाई ग्रन्थमालामां छपायुं छे.

४. चैत्यवंदनभाष्य उपर श्री देवेन्द्रसूरिए रचेली संघाचारटीकानो प्रति, टीकाकारनी पोतानी ज छे. आनो क्रमांक २०७ छे.

५. वि. सं. ११९० ना कार्तक सुद १ ना दिवसे रचायेला धर्मविधिप्रकरणनी वि. सं. ११९० ना पोष सुदि ३ ना दिवसे लखायेली प्रतिनो क्रमांक २३६ छे.

६. श्री नामनां शेठाणीए लखावेली भवभावनावृत्तिनी प्रति उपद्रवथी खंडित थई गयेली, तेने तेमनां प्रपौत्रवधुए समरावीने संपूर्ण करी हती. जुओ पृ० ८४—८५, श्लो० २५—२६. आ प्रतिनो क्रमांक २३१ छे.

७. सिद्धसाधुरचित न्यायावतार वृत्ति उपरनी टिप्पणी ज्ञानश्री नामनां साध्वीजीए करेली होय तेवो संभव छे. आनो क्रमांक ३६४(१) छे.

८. प्रकरण—स्तोत्रादिना संग्रहरूप वि. सं. १२१५ मां लखायेली क्रमांक १५४ वाळी प्रति शांतिमतिगणिनीना स्वाध्याय माटेनी पोथी छे. तथा सटीक पिंडविशुद्धिप्रकरण (क्रमांक २१०) नी प्रति प्रभावतीमहत्तरानी छे.

९. कर्मप्रकृतिचूर्णि (क्रमांक १६९) नी प्रति, गच्छादिना दुराग्रहथी के मालिकीहक्कना व्यामोहथी प्रेराईने ग्रंथ लखावनारनी पुष्पिका भूंसी नाख्याना नमूना रूपे छे.

१०. क्रमांक २३२ वाळी भवभावनावृत्तिनो प्रति नश्री—नानी नामनी श्राविकाए वि. सं. १२४० मां लखावेली अने तेनुं व्याख्यान वि. सं. १२४०, १२४८ तथा १२५३ मां पादरामां कराबेलुं. आ नश्री—नानी ना पछी तेना सुकृत माटे तेनी पुत्री जयतीए वि. सं. १२६५ मां तिमिरपाटकमां अने वि. सं. १२८० मां पंडित नेमिकुमार द्वारा आ ग्रंथनुं व्याख्यान कराव्युं. त्यारबाद देवपत्तनथी आवीने जयतीए अभयकुमारगणिने आ ग्रंथ पादरामां समर्पित कर्यो. आ ग्रंथ नानी श्राविकाए त्रण वार वंचाव्यो ए अंगेनी नानी श्राविकानी प्रशस्ति प्राकृत भाषामां छे. अने तेनी पुत्री जयतीनी प्रशस्ति संस्कृतमां छे.

लखावेला ग्रन्थोना व्याख्याननी हकीकत तथा ग्रंथो वंचायानी तेमज तेमनुं संशोधन कर्यानी हकीकतोनां उदाहरण अन्वेषकोने आ सूचीपत्रमांथी मळी रहेशे.

आ उपरांत आ भंडारनी विक्रमना १२ मा शतकथी पंदरमा शतक सुधीमां लखायेली प्रतिओ लखावनारनी प्रशस्ति—पुष्पिकाओमां तत्तत्कालीय राजवंशो, राजाओ, महामात्यो, पंचकुळो, दंडनायको, श्रमणोना गणो-शाखाओ-गच्छो-पट्टपरंपराओ, जैनाचार्य आदि जैन विद्वानो, जैन गृहस्थो तेमनां कुळ वंश गोत्र अने अटको, अजैन विद्वानो, प्राचीन ग्रंथो अने गाम-नगर आदिनां नाम मळे छे, जेने तेमना सत्तासमय अने प्राचीनताना प्रामाणिक आधार तरीके स्वीकारी शकाय. आ महत्त्वनां घणां य नाम आ ग्रन्थना त्रीजा परिशिष्टमांथी जोई—जाणी शकाशे .

प्रशस्ति-पुष्पिकामां जणावेलां जिनमंदिरनिर्माण आदि धर्मकृत्यो तथा उक्त श्रीजा परिशिष्टमां जणावेलां नामो पैकी केटलांक गाम-नगरादिनां नाम वाचकोनी जाण माटे नीचे जणाववामां आवे छे:—

१. श्री जगद्धर श्रेष्ठीए जेसलमेरमां श्रीपार्श्वनाथजिननुं मंदिर बनाव्युं हतुं. जुओ क्रमांक ११४, पृ० ३७, श्लो० २; क्रमांक २१७, पृ० ७७, लेखकप्रशस्तिनो श्लो० ७; क्रमांक २७० (४), पृ० ११६, श्लो० ४ अने क्रमांक २७२, पृ० १२०, श्लो० ८.

२. श्री पद्मदेव श्रेष्ठीए नागपुर (नागोर) पासे कुडिल्लपुरीमां भव्य जिनालय बनाव्युं हतुं. जुओ क्रमांक २१७, लेखकनी प्रशस्तिनो श्लो० ४. अहीं भगवानना नामवाळो पानानो भाग तूटी गयो छे.

३. कुमारपल्ली (गुजरात-पाटण पासे कुणघेर) मां श्री पार्श्व नामना श्रेष्ठीए श्री वीरजिननो चतुर्मुख प्रासाद-चोमुखजीनुं मंदिर-कराव्यो हतो. जुओ क्रमांक २३५, पृ० ८९, श्लो० ७.

४. भीमपल्ली (भीलडी-बनासकांठा) मां श्री भुवनपाल नामना श्रेष्ठीए मांडलिकविहार नामनुं श्रीवीरजिननुं उत्तुंग मंदिर बनाव्युं हतुं. जुओ क्रमांक २१७, पृ० ७७, लेखकनी प्रशस्तिनो श्लो० १२. आ भुवनपाल शेठ उपर जणावेला जेसलमेरना श्रीपार्श्वजिनमंदिरना करावनार श्री जगद्धर शेठना पुत्र छे.

५. श्री गोल्ह नामना श्रेष्ठीए मरुकोट्टमां श्री चन्द्रप्रभजिनानुं उत्तुंग मंदिर बनाव्युं हतुं. जुओ क्रमांक ११२, पृ० १३२, श्लो० ५.

६. लवणखेटमां श्रीशांतिनाथजिनमंदिर बनाव्यानी नोंध मळे छे. जुओ क्रमांक ११२, श्लो० १४ अने क्रमांक ११४, श्लो० ११.

७. श्री ब्रह्मदेव नामना श्रेष्ठीए श्रीमंट (?) जिनेशमंदिरमां श्रीवीरदेवगृह कराव्युं हतुं. जुओ क्रमांक २३२, पृष्ठ ८४, श्लो० ८.

८. क्षेमंधर श्रेष्ठीए अजमेरमां श्री पार्श्वजिनमंदिरमां भव्य मंडप कराव्यो हतो. जुओ क्रमांक ११२, पृ० ३६, श्लो० ७; क्रमांक २७० (४), पृ० ११५, श्लो० २ तथा क्रमांक २७२, पृ० ११९, श्लो० ५.

९. आवश्यकवृत्ति प्रथमखंड (क्रमांक ११२) ना लखावनारनी प्रशस्तिमां भीमदेव नामना शेठने, कर्मग्रन्थविचारमां अतिनिपुण अने धर्मक्रियानिष्ठ जणाव्या छे.

१०. आगळ जणावेला श्री उदयराज-बलिराजना दादा हाजी शेठे श्री जिनचन्द्रसूरिनी आचार्यपदवीनो महोत्सव कर्यो हतो. जुओ पृ० ४०, श्लो० ५.

आ सिवाय अनेक श्रेष्ठीओनां तीर्थयात्रा-संघ, आवश्यक-पूजादिकार्य, उपधानतप, अजमणां, साधर्मिकभक्ति आदि धर्मकार्योनी पण हकीकतो आ प्रशस्तिओमां नोंधायेली छे.

ग्रन्थ लखावनारनी प्रशस्ति–पुष्पिकाओमां अणहिल्लपुरपत्तन, स्तम्भतीर्थ, भृगुकच्छ, धवलक्क (धोळका), वडद्द (वडोदरा) आदि अनेक सुख्यात प्राचीन नगरोनां नाम अनेक स्थळे मळे छे ज. ते उपरांत बीजां पण अनेक गाम–नगरोनां नाम मळे छे. तेमांनां केटलांक नाम, ते जे संवतमां नोंधायां छे, ते संवत साथे जणावुं छुं.

कांसा, सं. १२६०—अणहिल्लपुरपत्तनना विषयपथकमां आवेलुं गाम, जे आज पण कांसा नामे ज ओळखाय छे. जुओ क्रमांक २३३.

कुमारपल्ली, सं. १२०७–आजथी लगभग पांचसो वर्ष पहेलांना गाळामां रचायेला रास वगेरेमां जे **कुमरगिरि** नामनुं गाम उल्लिखित थयुं छे ते ज आ **कुमारपल्ली** होय एम लागे छे. आज आ गाम पाटण (गुजरात) थी पांच माइल दूर आवेलुं छे अने ते **कुणघेर** नामथी ओळखाय छे. कुमारपालना नामनो स्मृति स्थायी करवा माटे आ गाम वसेलुं हतुं. वि. सं. १२०७ मां आ प्रति (क्रमांक २३५) लखावनारना पिताए **कुमारपल्ली**मां श्रीवीरजिननो चतुर्मुखप्रासाद कराव्यो हतो, आथी जाणी शकाय छे के कुमारपालना राज्यना प्रारंभमां ज आ गाम वस्युं हतुं. कुमारपालनो राज्यारोह वि० सं. ११९९ मां थयो हतो.

पालउद्र, सं० १२२७–महेसाणा (उ. गु.) पासेनुं पालोदर गाम. आ गामने विषय-दंडाण्य पथकमां जणाव्युं छे. जुओ क्रमांक २३७.

कटुकासन, सं० १२२७–महेसाणा–वीरमगाम रेलमार्गमां आवेलुं कटोसण. जुओ क्रमांक २३७.

बदरसिद्धस्थान, चतुरोत्तरमंडलकरणमध्यस्थित सं० १३३९ - चरोतर प्रदेशमां आवेलुं बोरसद. जुओ क्र० २५०.

आशापल्ली } सं० १२२३–अमदावाद पासेनुं असारवा.
आशावल्ली } जुओ क्रमांक २१७, पृ० ७६–७७.

पद्रउर }
पद्र } सं० १२४०–वडोदरा पासे पादरा. जुओ क्रमांक २३२, पृ० ८५–८६–८७.
पद्रग्राम }

ऊमता, सं. ११९८–विसनगर (उ. गु.) पासे ऊमता. जुओ क्रमांक ४०६.

वासप्पय }
वासव } सं० १२४०—वडोदरा पासे वासद. जुओ क्रमांक २३२, पृ० ८६.

मंडली, सं० १२१८ अने १२२६–वीरमगाम पासे मांडल. जुओ क्रमांक ३०१, पृ० १२८ अने क्र० ७६, पृ० २५.

[1]गंभूयपुरी, सं० १२१६—गांभू (उ. गु.) क्रमांक २५९. s
[2]पंचासर, „ — मांडलपासे पंचासर „
[3]संडथल, „ „
[4]वड्डावली, „ „
[5]छत्तावल्लिपुरी, सं० ११२५ क्रमांक २३५.
[6]छत्रापल्ली, सं० १३०४ क्रमांक २५६.
मूलनारायणदेवीयमठ, सं० १२०० क्रमांक ३९१.
श्रेरिंडक, सं० १२२३ क्रमांक २१७, पृ०७६.
धारापुरी, सं० १२९५ क्रमांक २८१, पृ० १२३.
नलकच्छपुर „ „ „ „
मण्डपदुर्ग „ „ „ „ ; सं० १३०८, क्रमांक २८६, पृ. १२५
वाहुपुर—मठस्थानक, सं० १३८४ क्रमांक १२७९, पृ० २८२.
मड्डाहड सं० १२१३ क्रमांक १५५ (८), पृ० ५३.

उपर उदाहरण रूपे जणावेलां गाम-नगरो पैकी जे नाम लेखकनी प्रशस्तिओनां छे तेमां मोटा भागनां नाम गुजरातनां छे. आथी अने स्तंभातनिवासी परीख धरणाशाह तथा उदयराज-बलिराजना लखावेला ग्रंथोने लक्षीने कही शकाय के जेसलमेरना प्रस्तुत ताडपत्रीय ज्ञानभंडारना स्थापक आचार्य प्रवरनो उपासक वर्ग गुजरातमां विपुल प्रमाणमां हतो अने ते धर्मशील समृद्ध तथा दानी हतो. ग्रन्थ लखनार लेखकोनां—लहियानां नाम पण मळे छे; तेमां मुनिओ उपरांत श्रावको अने ब्राह्मणोनां नामोनो पण समावेश थाय छे. आ गृहस्थ लेखकोए पोतानां गामनां नाम आ प्रमाणे जणाव्यां छे—स्तंभतीर्थ, अणहिल्लपुरपत्तन, मंडली—मांडल, कांसा, पलोदर, ऊमता अने मुंडहटा. आमां एक लेखके 'पोते भव्य अक्षरथी भवभावनावृत्ति (क्र० २३३)नुं पुस्तक लख्युं' एम जणावीने अने एक लेखके पोताना माटे 'विविधलिपिनो जाणकार' (क्र० ४०८) आवुं विशेषण आपीने पोत पोतानो विशेष परिचय पण आप्यो छे.

पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी आदि द्वारा प्राचीन प्राचीनतम ग्रन्थो लखावनारनी प्रशस्ति-पुष्पिकाओ अलग मुद्रित ग्रन्थरूपे प्रसिद्ध थयेली छे. आथी पण अनेक रीते वधारे उपयोगी प्राचीनतम सामग्री ग्रन्थकारोनी प्रशस्तिओमां सचवायेली छे, जो तेनो संग्रह करीने ते एक के वधु ग्रन्थरूपे प्रकट थाय तो अभ्यासी अने जिज्ञासुओने अनेक ऐतिहासिक तेमज धर्मकार्योनी उपयोगी सामग्री एमांथी मळी शके. अस्तु.

१–६. आ छ नाम ग्रन्थकारनी प्रशस्तिमांथी नोंध्यां छे.

भाग्यवान दानी श्रेष्ठीओए पोत पोताना श्रद्धेय गुरुवर्योना उपदेशथी लखावेली पोथीओनी अव्यवस्था जेवुं पण केटलीक वार थतुं हतुं. जेना कारणे ए पोथीओ वेचीने पैसा लेनार व्यक्तिओना हाथमां जती. प्रस्तुत भंडारनी केटलीक प्रतिओना प्रान्तमां मूल्यथी लेवामां आवेली प्रतिरूपे उल्लेख मळे छे. ते आ प्रमाणे—

१. वि. सं. १३१९ मां लखायेला त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रना प्रथम अने दशम पर्वनी प्रतिने (क्र० २३९) वि. सं. १३४३ मां महण नामना श्रेष्ठीए (?)मूल्यथी लईने श्री जिनचन्द्र-सूरिजीने समर्पित करी हती.

२. उपर जणावेला महण श्रेष्ठीए वि. सं. १३०४ मां लखाएली मुनिसुव्रतस्वामिचरित्रनी प्रतिने (क्र० २५६) वि. सं. १३४३ मां मूल्यथी खरीदीने श्री जिनचन्द्रसूरिजीने समर्पित करी हती.

३. 'आना' नामना श्रेष्ठीए वि. सं. १३७८ मां श्री जिनकुशळसूरिजीना उपदेशथी नैषध-महाकाव्यनी प्रति खरीदी हती. जुओ क्र० ३४१

४. विक्रमना चौदमा शतकमां लखाएली पिंडविशुद्धिप्रकरण सटीकनी प्रतिने (क्र० २०५) वि. सं. १३९४ मां सेढ नामना श्रेष्ठीए मूल्यथी खरीदीने श्री जिनपद्मसूरिजीने समर्पित करी हती.

५. समवायांगसूत्र अने समवायांगवृत्तिनी प्रतिने (क्र० ९) राउळ नामना श्रेष्ठीए वि. सं. १४०१ मां मूल्यथी खरीदीने श्री जिनचन्द्रसूरिजीने समर्पित करी हती.

६. विक्रम संवत् १२७४ मां लखाएली भगवतीसूत्रनी प्रतिने (क्र० १५) डुसाऊ नामना श्रेष्ठीए वि. सं. १४०५ मां श्री जिनपद्मसूरिगुरुना उपदेशथी छोडावी. आथी एम जणाय छे के आ प्रति गीरो मुकाई हती.

७. वि. सं. १२९५ मां लखाएलो प्रवचनसारोद्धार सटीकनी प्रतिने (क्र० २०६) खंभातनिवासी बल्लाळ नामना श्रेष्ठीए वि. सं. १४८४ मां मूल्यथी खरीदी हती.

८. विक्रमना चौदमा शतकमां गोपी नामनी श्राविकाए उपदेशमालाबृहद्वृत्तिनी प्रतिने मूल्यथी खरीदीने श्री जिनेश्वरसूरिजीने समर्पित करी हती. जुओ क्र० २३०, पृ० ८३, श्लो० २७.

९. वि. सं. १३३९ मां लखाएली आदिनाथचरित्रनी प्रतिने (क्र० २५०) जावड नामना श्रेष्ठीए खरीदीने श्री खरतरगच्छने समर्पित करी हती.

उपर जणावेली प्रतिओ खरीदायानी नोंधमां जेनी पासेथी खरीदी करवामां आवी तेनुं नाम जणाव्युं नथी. आमां खरीदनार गृहस्थ अने तेनी प्रेरणा आपनार धर्मगुरुनी महानुभावता स्पष्ट थाय छे.

१-२. मुद्रित सूचीपत्रमां आ बे ग्रंथोनो लेखनसंवत् अनुक्रमे १३७८ अने १४०१ आप्यो छे तेमां अनवधान थयुं छे. खरी रीते आ संवतो ते ते प्रति खरीदाई तेना छे.

"अणहिल्लपुर पाटणथी ज्ञानभंडारने लावीने जेसलमेरदुर्गना गुप्तस्थानमां मूकवामां आव्यो छे" आवी प्राचीन समयथी किंवदंती संभळाय छे, पण अहीं एटलुं तो सुस्पष्ट थाय ज छे के जेसलमेरनो आ प्राचीनतम ज्ञानभंडार आचार्य श्री जिनभद्रसूरिजीए ज स्थापेलो छे. जे भंडार माटे किंवदंती छे ते भंडार कोई बीजो होय अने ते हजु सुधी गुप्तावस्थामां ज होय ते वस्तु विचारणीय छे.

२. वेगडगच्छीय ज्ञानभंडार

खरतरगच्छनी वेगडशाखाना विद्वान् आचार्योए आ भंडार स्थापेलो छे. आमां विक्रमना १३ मा शतकथी २० मा शतक सुधीमां लखायेला ग्रन्थो छे. २० मा शतकमां लखाएला ग्रन्थो आचार्य श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजीए लखावीने मूक्या छे. आमां रहेला, विक्रमना १५ मा शतकमां पाटण (गुजरात)मां लखायेला, ग्रन्थोनी पुष्पिकाओ जोतां एम जणाय छे के ते समयना वेगडगच्छीय आचार्योए जेसलमेरना भंडार माटे पाटणना प्राचीन ग्रन्थोनी नकलो करावी होय. श्री जिनभद्रसूरिजीए पाटणमां स्थापेला भंडार माटे लखाववामां आवेली प्रतिओ पण आ भंडारमां छे.

पोथी नं. १ थी ८३ सुधीमां (पृ० १८१ थी २९१) आ भंडारना क्रमांक १ थी १३३० सुधीना ग्रन्थो छे. अने ते बधा कागळ उपर लखावेला छे. ८० मी पोथी ज्योतिषना अपूर्ण तथा प्रकीर्णक पानांना संग्रहरूपे छे, अने ८१ थी ८३ सुधीनी त्रण पोथीओमां स्तवन-सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां छे.

आ भंडारमां वि. सं. १२४६ (क्र० १३४, पृ० २८८), वि. सं. १२७७-१२७८ (क्र० १३००-१३०१, पृ० २८५)मां लखाएला अने बीजा पण विक्रमना १३मा शतकमां लखाएला अनेक ग्रन्थो छे. कागळ उपर लखाएला आटला प्राचीन ग्रन्थो आ भंडारमां ज सचवाया छे. तेमां य वि. सं. १२७९मां लखायेली न्यायतात्पर्यवृत्ति अने भाष्य, श्रीकण्ठनुं टिप्पन अने न्यायवार्तिकनी प्रतिओ तो अत्यन्त महत्त्वनी छे. आ प्रतिओ एवी जीर्ण हालतमां हती के जेने स्पर्श करतां पण तूटी जवानो भय रहे, परंतु तेने दिल्ही नेशनल आर्काइव्झमां मोकलावीने वैज्ञानिक पद्धतिए तेनो जीर्णोद्धार कराववामां आव्यो छे, जेथी बीजां चार सो पांच सो वर्ष सुधी एने आंच न आवे अने एनी मूळस्थिति जळवाई रहे.

वि. सं. १५३८ मां लखाएली प्रेमराजकृत कर्पूरमञ्जरीनाटिकाकर्पूरकुसुमभाष्यनी प्रति (क्र० २४६, पृ० २०६) अने जयदेवकृत गीतगोविन्दनी जगद्धरकृत टीका (क्र० ४५९ पृ० २२७) तेम ज वि. सं. १४०७मां गुणसमृद्धिमहत्तराए प्राकृतभाषामां रचेला अंजनासुंदरीकथानकनी प्रति पण आ भंडारमां छे.

उपर जणाव्या सिवायना विविध विषयोना अनेक प्राचीन ग्रन्थो आ भंडारमां छे, जे प्राचीन प्रत्यंतरादि दृष्टिए अति उपयोगी छे.

सूचीपत्रमां आ भंडारनुं नाम 'श्री जेसलमेरुस्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान श्री जिनभद्रसूरिज्ञानभंडारस्थित कागळ उपर लखेल ग्रन्थोनुं सूचीपत्र' आवा शिर्षकमां आप्युं छे, पण वास्तवमां आ कागळ उपर लखायेलो ज्ञानभंडार वेगडगच्छीय ज्ञानभंडार छे. पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीना य पहेलां जे कोईए आ भंडार जोयो तेमणे तेने किल्लामां श्री जिनभद्रसूरिज्ञानभंडारवाळा भोंयरामां ज जोयो छे. अर्थात् अनेक वर्षोथी आ भंडारने किल्लामां मूकवामां आवेलो छे. आथी ज अहीं जणाव्युं तेम, आ भंडारनुं शीर्षक अपायुं छे. आ संबंधमां पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए नोंध पण करेली छे.

३. खरतरगच्छीय वडाउपाश्रयनो अथवा पंचनो ज्ञानभंडार

प्रस्तुत सूचीपत्रमां क्रमांक ४०४ थी ४२६ सुधीना आ भंडारना ग्रन्थोने 'पंचनो ज्ञानभंडार—जेसलमेर' आ नाम थी सूचित कर्या छे. जुओ पृ० १७४ थी १८० वास्तवमां आ ग्रन्थो वडा उपाश्रयना भंडारना ज छे. आ ग्रन्थोमां स्थविर श्री अगस्त्यसिंहगणिकृत दशवैकालिकसूत्रनी चूर्णिनो अति महत्त्वनी प्राचीन प्रति छे, जे अन्यत्र कोई पण भंडारमां नथी. आ ग्रन्थने पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए संपादित कर्यो छे अने ते प्राकृत टेक्स्ट सोसाइटी द्वारा टूंक समयमां ज प्रसिद्ध थशे. आ उपरांत नन्दिसूत्रनी तथा अनुयोगद्वारसूत्रनी प्राचीनतम विशिष्ट प्रति, वि. सं. ११९३मां रचाएला श्री मुनिसुंदरसूरिकृत मुनिसुव्रतस्वामिचरित्रनी वि. सं. ११९८मां लखाएली प्रति, वागीश्वरांक रत्नाकरकविकृत हरविजयमहाकाव्यनी वि. सं. १२२८मां लखाएली प्रति आदि ताडपत्र उपर लखाएली कुल पंदर प्रतिओ अने विक्रमना चौदमा शतकथी सोळमा शतक सुधीमां कागळ उपर लखाएली महत्त्वनी प्राचीन प्रतिओ आ भंडारमां छे. कागळ उपर लखाएली प्रतिओमां चांदीनी (रूपेरी) शाहीथी लखाएली कल्पसूत्र अने कालकाचार्यकथानी सचित्र प्रति तेमज काळी शाहीथी लखाएली सुंदरतम चित्रोवाळी कल्पसूत्र अने कालकाचार्य कथानी प्रति आपणी विशिष्ट लेखनकळा अने चित्रकळाना नोंधपात्र नमूनारूप छे.

उपर जणावेला पंचना भंडार पछी प्रस्तुत सूचीपत्रमां वेगडगच्छीय ज्ञानभंडारना ग्रन्थोनी सूची आपी छे. अने ते पछी पोथी नं. ८४ थी १३३ सुधीमां आवेला क्रमांक १३३१ थी २२५७ सुधीना ग्रन्थो वडाउपाश्रयना ज्ञानभंडारना छे. जुओ पृ० २९२ थी ३५५ आ ग्रन्थो विक्रमना पंदरमा शतकथी ओगणीसमा शतक सुधीमां लखाएला छे अने तेमांनो मुख्य भाग जैन आगम, प्रकरण, रास तथा स्तोत्रादि ग्रन्थोनो छे. आम छतां व्याकरण, काव्य, छंद, आयुर्वेद अने ज्योतिष आदि विषयोना अजैन ग्रन्थोनी प्रतिओ पण आ भंडारमां छे.

शेष भंडारोनी माहिती आ प्रमाणे छे—

तपागच्छनो ज्ञानभंडार

आ भंडारमां ताडपत्र अने कागळ उपर लखाएला ग्रन्थो छे. तेमांथी ताडपत्रीय बधा य एटले सात ग्रन्थोनी सूची अहीं आपी छे. आमां ऋषभदेवचरित्रनी प्रति (क्र० २, पृ० ३५८) विशेष महत्त्वनी छे, कारण के आ चरित्र श्री जयसिंहसूरिए वि. सं. १३३० मां रचेलुं छे अने लखमी नामनी श्रेष्ठिपुत्रीए ते ज समयमां एटले वि. सं. १३३०मां लखावीने ग्रन्थकार श्री जयसिंहसूरिजीने ते अर्पण करेल छे. आ सिवाय धर्मरत्नप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तिसहितनी प्रति (क्र० ४, पृ० ३५८) पण महत्त्वनी छे, कारण के तेमां वृत्तिकारना नामनो स्पष्ट निर्देश छे. तेमज वि. सं. १११५मां लखायेल पंचाशकप्रकरण आदि बीजा पण विशिष्ट ग्रन्थो आ भंडारमां छे.

आ भंडारमां रहेली कागळनी प्रतिओ पैकी केवळ एक सोनानी शाहीथी लखेली सचित्र कल्पसूत्रनी प्रतिनो तेनी विशिष्ट लेखनकळा अने चित्रकळाने लक्षीने परिचय आप्यो छे. आ पुस्तक लखावनारनी प्रशस्तिमां संघयात्रा, ऊजमणुं तेमज पौषधशाळा कराव्यानो उल्लेख छे. जुओ क्र० ८, पृ० ३५९–६०.

लोंकागच्छनो ज्ञानभंडार

आ भंडारमां ताडपत्र उपर लखायेली चार प्रतिओ छे. कागळ उपर लखायेला ग्रन्थो विपुल प्रमाणमां छे. अहीं मात्र ताडपत्रीय ग्रन्थोनी सूची आपवामां आवी छे. ताडपत्रीय चार प्रतिओमां कुल नव ग्रन्थो छे अने ते जैन आगम अने तेनी व्याख्याना छे. तेमां भगवतीसूत्र (क्र० ४, पृ० ३६२) अनुमाने विक्रमना बारमा शतकमां लखायेलुं छे, अने शेष ग्रन्थो वि. सं. १३०७ मां लखायेला छे. प्राचीन प्रत्यंतरनी दृष्टिए आ ग्रन्थो महत्त्वना छे.

थाहरूशाहनो ज्ञानभंडार

विक्रमना सत्तरमा शतकमां जेसलमेरनिवासी भणशालीगोत्रीय धनी, दानी अने धर्मनिष्ठ श्रेष्ठी श्री थाहरूशाहे जिनमंदिरनिर्माण आदि अनेक धर्मकृत्यो करेलां जेमां पोतानो ज्ञानभंडार पण लखावेलो. आ भंडार आज पण तेमना वंशजो पासे सुरक्षित छे. पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीने आ भंडार जोवा माटे छेल्ले छेल्ले एक दिवस पूरतो ज अनुकूळता मळी तेथी तेनी सूची आपी शकाई नथी. श्री थाहरूशाहजीना परिचय माटे तेमनी प्रशस्तिवाळी एक उदाहरण पूरती अंगविज्जानी प्रतिनी तथा लेखनकळा अने चित्रकळाना श्रेष्ठ किंमती नमूनारूपे सुवर्णाक्षरी सचित्र कल्पसूत्रनी प्रतिनी प्रशस्ति अहीं आपी छे. उपरांत, चामडाना डाबडा उपर पण लखेली श्री थाहरूशाहनी पुष्पिका पण अहीं आपी छे. चौलुक्य महाराजा श्री कुमारपालदेवना समयनी श्री जिनदत्तसूरिजीना चित्रवाळी ताडपत्रीय पुस्तकना उपर राखवामां आवती एक चित्रमय काष्ठपट्टिका पण आ सूचीमां नोंधी छे, आ काष्ठपट्टिका मूळमां थाहरूशाहना भंडारनी नथी पण किल्लाना श्री जिनभद्रीयज्ञानभंडारनी

छे. इस्वीसन १९१६मां श्री सी. डी. दलाले आ ज काष्ठपट्टिकानी नोंध वडा भंडारमांनी बदले श्री जिनभद्रसूरिभंडारमांनी काष्ठपट्टिकारूपे लीधी छे. जुओ गायकवाड्स ओरियेन्टल सिरीझमां प्रकाशित 'जेसलमेरभाण्डागारीयग्रन्थानां सूचिपत्रम्'ना ३१मा पृष्ठमां आवेलो क्रमांक २४१, अने तेने सरखावो प्रस्तुत सूचीपत्रना ३६४मा पृष्ठना क्रमांक बे साथे.

वि. सं. १८०९ मां जेसलमेरना भंडारोनी टीप–सूची थएली, जे आ ग्रन्थना चोथा परिशिष्टरूपे आपी छे. आ सूचीमां डाबडानी ओळख माटे अपाता क्रमांक एक-बे आदिना बदले स्वस्तिकडाबडो, श्रीवत्सडाबडो आदि अष्टमंगलना नामथी डाबडानी ओळख आपवामां आवी छे. आ डाबडा आज पण आ भंडारमां विद्यमान छे.

*

प्रस्तुत सूचीमां आपेला भंडारोना संबंधमां घणुं लखी शकाय तेम छे. अहीं वाचकोने एना महत्त्वनो सामान्यरूपे ख्याल आवे ते पूरती टूंकमां हकीकतो जणावी छे.

*

जेसलमेरना भंडारोनी प्राचीन सूचीओ

जेसलमेरना भंडारोना संशोधनादि कार्यकाळमां पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीने जेसलमेरना भंडारोनी बे प्राचीन सूचीओ पण मळेली.

आमांनी एक वि. सं. १८०९ मां थयेली छे अने ते आ ग्रन्थमां यथावत् मुद्रित करी छे. जुओ पृ० ४४१ थी ४५०.

बीजी सूची कपडवंज (गुजरात)ना शेठ नीहालचंदभाई नत्थूभाईना तरफथी मोकलेला, आणसूरगच्छाधिपति विजयगुणरत्नसूरि मारफत सुरतनिवासी मुनि श्री मोतीचंदजीए करेली छे. आ सूची पण आ ग्रन्थमां यथावत् मुद्रित करी छे. जुओ पृ० ४५१ थी ४६८.

आ बे सूचीओ उपरथी जाणी शकाय छे के जेसलमेरना भंडारोना संबंधमां प्राचीन समयथी गवेषणा अने जिज्ञासा रहेली ज छे.

*

जेसलमेरमां पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीनुं कार्य

पूर्वे जणाव्युं तेम श्री जिनभद्रसूरिज्ञानभंडार, वेगडगच्छीय ज्ञानभंडार अने बडाउपाश्रयनो अथवा पंचनो ज्ञानभंडार एम किल्लामां श्री संभवनाथजीना मंदिरना भोंयरामां रहेला कुल त्रण ज्ञानभंडारोना समुद्धारनुं कार्य तथा ग्रन्थसंशोधनादि कार्य पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी महाराज द्वारा तथा तेमना मार्गदर्शनमां थयुं ते नीचे मुजब छे.

ज्ञानभंडारनो समुद्धार

उपर जणावेला त्रण भंडारो पैकीना श्री जिनभद्रसूरिज्ञानभंडार समग्रना तथा वेगडगच्छीय अने बड़ा उपाश्रयना—पंचना ज्ञानभंडारना ताडपत्रीय अने ताडपत्रना आकारवाळा कागळ उपर लखाएला ग्रन्थोनां पानांने एकत्रित राखवा माटे प्रत्येक पानाने नवी सुतराउ दोरीथी परोवीने दरेक ग्रन्थनी उपर-नीचे प्रमाणयुक्त नवी काष्ठपट्टिकाओ मूकीने तेमने बांधवामां आव्या छे. आ प्रमाणे दोरीथी बंधायेला प्रत्येक ग्रन्थने नवा वस्त्रना प्रमाणयुक्त बंधनथी बांधवामां आव्यो छे. प्रत्येक ग्रन्थना उपरनी काष्ठपट्टिका उपर ग्रन्थनुं नाम अने क्रमांक लखवामां आव्या छे, अने प्रत्येक ग्रन्थना वस्त्रबंधन उपर ग्रन्थनो क्रमांक आपवामां आव्यो छे. वस्त्रना बंधनमां बंधाएला प्रत्येक ग्रन्थने ते ते ग्रन्थना प्रमाणवाळा एल्युमिनियमना डबामां मूकवामां आव्यो छे. आ एल्युमिनियमना डबा पण नवा बनाववामां आव्या छे. आ डबा उपर पण ग्रन्थनो क्रमांक आपवामां आव्यो छे. जे डबामां एकथी वधु ग्रन्थ मूकवामां आव्या छे तेना उपर पण तेमां रहेला ग्रन्थोना क्रमांक लख्या छे. आ प्रमाणे तैयार करेला एल्युमिनियमना डबाओने लोखंडना मजबूत कबाटोमां मूकवामां आव्या छे. अने प्रत्येक कबाट उपर तेमां आवेला क्रमांको लखवामां आव्या छे. कबाटो बहार तैयार करावीने भोंयरामां लई जई शकाय तेम न होवाथी भोंयरामां ज लोखंडनी चादरो वगेरे तदुचित सामान लईने जोधपुरना कुशळ कारीगरो द्वारा ते तैयार कराव्यां छे. भोंयराना जे खंडमां भंडार छे ते खंडमां जवानुं प्रवेशद्वार मांड २॥×२॥ फूटनी आसपास छे.

ताडपत्रीय अने ताडपत्रीय आकारना कागळ उपर लखायेला ग्रन्थो सिवायना कागळ उपर लखायेला ग्रन्थोनी कुल १३३ पोथीओ छे. आ पोथीओमां २२५७ हस्तप्रतो छे. प्रत्येक पोथीमां अनेक हस्तप्रतो मूकवामां आवी छे, जे प्रस्तुत सूचीपत्र जोवाथी जाणी शकाशे. प्रत्येक हस्तप्रतने कागळनुं रेपर करी तेना उपर तेनुं नाम अने क्रमांक लखवामां आव्यो छे. प्रत्येक पोथीना उपर नीचे प्रमाणयुक्त पाटली मूकीने तेने नवा वस्त्रना बंधनथी बांधीने तेना उपर पोथीनो नंबर अने तेमां रहेला ग्रन्थोना क्रमांक लखवामां आव्या छे. आ पोथीओने पण लोखंडना कबाटमां मूकवामां आवी छे.

जे भोंयरामां भंडार छे ते भोंयरानी पण मरामत करवामां आवी छे.

उपर जणाव्या प्रमाणे भंडारने संपूर्ण सुरक्षित कर्या अगाउ प्रत्येक ग्रन्थनां समग्र पानांने गणीने खूटतां पत्रोनी नोंध लेवामां आवी छे. आ काम करती वखते सेंकडो वर्षथी दर्शनादि ज्ञानभक्ति निमित्ते अवार-नवार पुस्तको खोलवाने कारणे अने ते पाछा भंडारमां मूकती वखते चोकसाईना अभावे लगभग सो ग्रन्थोनां पानां अलग अलग पडीने आपसमां भेळसेळ थई गयां हतां, ते सर्व पानांने प्रत्येक ग्रन्थवार तारवीने तेमना मूळग्रन्थनी साथे जोडीने अनेक ग्रन्थ पूर्ण करवामां आव्या छे. आ कार्य पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी सिवाय अन्यने माटे दुष्कर ज नहीं किन्तु अशक्य

हतुं. मने बराबर स्मरण छे के आ मेळवेळ थयेलां अनेक ग्रन्थोनां पानांने व्यवस्थित करवा माटे वि० सं० १९९९मां पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजीए अने तेमना सहायक तरीके गयेला अमे चार भाईओए पण प्रयत्न करेलो, पण ते कार्य अशक्य लाग्युं त्यारे पू० मुनि श्री जिनविजयजीए कह्युं के—"भाई ! आ काम पुण्यविजयजी सिवाय कोई नहीं करी शके."

आ सिवाय, पहेलां जणाव्युं तेम, महत्त्वनी कागळ उपर लखायेली अति जीर्ण प्रतिओनो बिल्होमां जीर्णोद्धार कराव्यो.

केटलाक ताडपत्रीय ग्रन्थो उपर सचित्र कळामय प्राचीन बहुमूल्य काष्ठपट्टिकाओ हती ते वधारे घसाय नहीं अने सुरक्षित रहे ते माटे अलग तारवीने प्रदर्शनीमञ्जूषा–शो केइसमां मूकवामां आवी छे. आ पट्टिकाओना परिचय माटे जुओ पृ० ३५७.

संशोधनादि कार्य

पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी द्वारा जेसलमेरना भंडारोना ग्रन्थोनुं संशोधन कार्य थयुं तेना मुख्यतया चार विभाग करी शकाय. १ सूचीपत्र तैयार करवुं, २ महत्त्वना ग्रन्थोनी नकल–प्रेसकोपी कराववी, ३ उपयोगि ग्रन्थोने अक्षरशः मेळवी लेवा, ४ महत्त्वना ग्रन्थोनी फिल्म–माइक्रोफिल्म लेवरावबी. आ चार बाबतोनी विगतो आ प्रमाणे छे.

१. सूचीपत्र–प्रत्येक ग्रन्थनुं नाम, तेनी भाषा, तेना कर्ता, तेनो रचनासमय, तेनो लेखनसंवत्–लेखनसंवत् न मळ्यो होय तो अनुमाने विक्रमनो शतक, तेनी हालत–स्थिति अने लंबाई–पहोळाईनी विगतो आ सूचीपत्रमां आपवामां आवी छे. महत्त्वना ग्रन्थोनो आदि–अंतनो भाग तेमज प्रत्येक ग्रन्थना लेखकनो प्रशस्ति–पुष्पिकाओ अक्षरशः आपी छे. कोईवार उपयोगी जणातां ग्रन्थकारनी प्रशस्ति पण आपी छे. आ सिवाय विशेष जाणवा जेवी हकीकत होय तो तेने ते ते ग्रन्थना अंतमां नोंधरूपे जणावी छे.

उपर प्रमाणेनी सूचीनी पछी छ परिशिष्टो आपवामां आव्यां छे. प्रथम परिशिष्टमां समग्र सूचीपत्रमां आवेला ग्रन्थोनां नाम तेमना स्थळदर्शक पृष्ठांक साथे, अकारादि क्रमथी आप्यां छे. द्वितीय परिशिष्टमां सूचिपत्रमां आवेला ग्रन्थोना रचयिताओनां नामोने, तेमना स्थळदर्शक पृष्ठांक साथे, अकारादि क्रमथी आप्यां छे. तृतीय परिशिष्टमां सूचिपत्रमां आवेला ग्रन्थोना आदि-अंत भागमां तथा प्रशस्ति-पुष्पिकाओमां आवेलां विशेषनामोने पृष्ठांक साथे, अकारादि क्रमथी आपवामां आव्यां छे, आ नामोनुं ऐतिहासिक महत्त्व घणुं छे. चतुर्थ अने पंचम परिशिष्टमां पूर्वे जणावेली अनुक्रमे वि. सं. १८०६ अने वि. सं. १९४१ मां लखायेली जेसलमेरना भंडारोनी टीपो–सूचीओ आपवामां आवी छे. अने छट्ठा परिशिष्टमां आगळ जणावेला वि. सं. २००७ वाळा शिलालेखनी वाचना आपवामां आवी छे.

२. महत्त्वना ग्रन्थोनी नकलो—जे ग्रन्थोनुं प्राचीनतानी दृष्टिए अने पाठभेदनी दृष्टिए महत्त्व छे अने जे ग्रन्थो अन्यत्र नथी मळता ते ग्रन्थो पैकी नीचेना ग्रन्थोनी नकल–प्रेसकॉपी कराववामां आवी छे.—

क्र०	ग्रन्थनाम	क्र०	ग्रन्थनाम
२७	प्रज्ञापनासूत्र	३७३	सर्वसिद्धान्तप्रवेश
३४	ज्योतिष्करण्डकटीका	३८७(२)	प्रमाणान्तर्भाव
८५	दशवैकालिकचूर्णि श्री अगस्त्यसिंहगणिकृत	३९३	सांख्यसप्ततिका सटीक
११६	विशेषावश्यकमहाभाष्य	३९४	,, ,,
१२२	ओघनिर्युक्तिमहाभाष्य	४०६	मुनिसुव्रतचरित्र
२७१	पृथ्वीचन्द्रचरित्र	४१०(२)	नन्दीसूत्रचूर्णि
३१७	कविकल्पलतापल्लवशेषविवेक		भगवतीसूत्र लोंकागच्छीय
३६३	सन्मतितर्क द्वितीयखंड		भंडारनी प्रति

नीचेना दार्शनिक ग्रंथोमांथी संभव छे के कोई ग्रन्थनी कॉपी न थई होय अने एना पाठभेद अ लीधा होय :–

३७७ तत्त्वसंग्रहमूल	३६४(२) न्यायबिन्दुवृत्ति
३७८ तत्त्वसंग्रहपंजिका	३६४(५) न्यायबिन्दुमूल
३८३(२) न्यायकन्दलीटीका	३७५(१) न्यायप्रवेशसूत्र
३८१(१) न्यायकन्दलीटिप्पनक	३७५(३) न्यायप्रवेशटीका
३८३(१) प्रशस्तपादभाष्य अपूर्ण	३६४(३) न्यायप्रवेशपञ्जिका
३६४(१) न्यायावतारवृत्ति	७२–पोथी नं. ७ पंचप्रस्थान
३८१(२) न्यायावतारटिप्पनक	१३१३ पोथी नं. ७७ किरणावली

३. उपर जणाव्या प्रमाणे जे ग्रन्थो पाठभेदनी दृष्टिए अने प्राचीनतानी दृष्टिए महत्त्वना छे ते पैकीना नीचेना ग्रन्थोने तेमनी मुद्रित आवृत्ति साथे अक्षरशः मेळवीने तेना पाठभेद नोंधी लीधा छे[1].—

७९(१) अनुयोगद्वारसूत्र	८० अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति मलधारीया
७९(२) ,, लघुवृत्ति हारि०	८१ ,, ,,
४१०(३) ,, चूर्णि	

१. आ ग्रन्थोमां जे ग्रन्थ अद्यावधि मुद्रित थयो न होय ते ग्रन्थनी प्रेसकॉपी साथे पाठभेद लेवामां आव्या छे.

क्र०	ग्रन्थनाम
७७(१)	नन्दीसूत्र
७७(२)	„ वृत्ति मलय०
३५	सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति
३६	„
१४८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र वृत्तिसह मलय०
११७	विशेषावश्यकवृत्ति कोटयाचार्यकृता
११२	आवश्यकवृत्ति मलयगिरीया प्र० खंड
११३	„ „ द्वि० खंड
८४(२)	दशवैकालिकसूत्रवृत्ति हारि०
५५	कल्पवृत्ति प्रथम खंड
४६	कल्पलघुभाष्य
४	सूत्रकृतांगसूत्रवृत्ति
९(२)	समवायांगसूत्रवृत्ति
४०(५)	पर्युषणाकल्पटिप्पनक
४०(३)	पर्युषणाकल्पनिर्युक्ति
४०(४)	पर्युषणाकल्पचूर्णि
४५	„
८२(४)	कल्पसूत्रटिप्पनक
८२(५)	कल्पसूत्रनिर्युक्ति
८२(६)	कल्पसूत्रटिप्पनक
४१(१)	दशाश्रुतस्कन्धसूत्रचूर्णि
४१(२)	दशाश्रुतस्कन्धसूत्र
१३२	आवश्यकवृत्तिटिप्पनक
७६	नन्दीदुर्गपदवृत्ति
४१(४)	पंचकल्पभाष्य
२८	प्रज्ञापनासूत्रवृत्ति
२९	प्रज्ञापनासूत्र
२०(४)	प्रश्नव्याकरणसूत्र

क्र०	ग्रन्थनाम
२२(९)	प्रश्नव्याकरणसूत्र
१९(५)	प्रश्नव्याकरणसूत्रवृत्ति
२१(४)	„
२२(४)	„
२३(३)	„
२२(६)	उपासकदशांगसूत्र
२०(१)	„
२२(१)	उपासकदशांगसूत्रवृत्ति
१९(२)	„
२१(१)	„
२३(१)	„
२२(७)	अन्तकृद्दशांगसूत्र
२०(२)	„
२२(२)	अन्तकृद्दशांगवृत्ति
१९(३)	„
२१(२)	„
२३(२)	„
२२(८)	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र
२०(३)	„
२२(३)	अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्रवृत्ति
१९(४)	„
२१(३)	„
२२(१०)	विपाकसूत्र
२०(५)	„
२२(५)	विपाकसूत्रवृत्ति
१९(६)	„
२१(५)	„

क्र०	ग्रन्थनाम	क्र०	ग्रन्थनाम
१०२	आवश्यकचूर्णि		
२३१	भवभावना स्वोपज्ञवृत्तिसह	२६१	पार्श्वनाथचरित्र
२३२	,, ,,	२९७	सिद्धहेमलघुवृत्ति पंचमाध्याय
२३३	,, ,,	३००	,, षष्ठ-सप्तमअध्याय
२६०(१)	अरिष्टनेमिचरित	२९८	,, तृतीयाध्यायथी पंचम अध्याय
२०८	पञ्चाशकप्रकरणवृत्ति	३१४(१)	जयदेवछन्दःशास्त्र
२०९	,,	३१४(२)	जयदेवछन्दःशास्त्रवृत्ति
२२४(८)	धर्मबिन्दुप्रकरणमूल	३१४(३)	कइसिट्ठछन्दःशास्त्र
२२५	धर्मबिन्दुप्रकरण वृत्तिसह	३१४(४)	कइसिट्ठछन्दःशास्त्रवृत्ति
१९८	बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक	३२२	काव्यप्रकाश
१९९	,, ,,	३२३	,,
१९३	बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण ,,	३३१	अभिधावृत्तिमातृका
२०६	प्रवचनसारोद्धार वृत्तिसह	३२६(२)	अलंकारदर्पण
१०६	आवश्यकवृत्ति प्र० खंड हारि०	३१६(१)	कल्पलताविवेक तृतीय परिच्छेद
१०७	,, द्वि० खंड ,,	३१६(२)	,, चतुर्थ परिच्छेद
२६५	समराइच्चकहा	३५४	गौडवहोमहाकाव्य सटीक
२७०	धन्यशालिभद्रचरित्र	३४८	वासवदत्ताख्यायिका
२३८	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र तृतीयपर्वपर्यन्त	३७६(१)	न्यायबिन्दु मूल
२४०	,, तृतीय पर्व	३७६(२)	न्यायबिन्दु टीका
२४१	,, द्वितीय-तृतीयपर्व	३६५	न्यायकन्दलीटीका
२४४	,, अष्टम पर्व	३७९	,,
४११	,, ,,	३८०	,,
४१२	,, दशम पर्व	३७१	धर्मोत्तरटिप्पनक
२६४	पउमचरियं	३७४	न्यायप्रवेश मूल

विशिष्ट पाठभेद न मळवाने कारणे मेळववानो समुचित प्रयत्न करीने जे ग्रन्थो संपूर्ण मेळव्या नथी तेनी यादी नीचे प्रमाणे छे—

क्र०	ग्रन्थनाम	क्र०	ग्रन्थनाम
३६८	रत्नाकरावतारिका	४१४	अंगविद्याप्रकीर्णक प्रथम खंड
२४८	महावीरचरित्र	१५	भगवतीसूत्रवृत्ति
१(१-३)	आचारांगसूत्र-निर्युक्ति-वृत्ति	१२	,, प्रथम खंड
२(१-३)	,, ,, ,,	१३	,, द्वितीय खंड
३	आचारांगसूत्रचूर्णि	१४	,, २६ शतक पर्यन्त
६	स्थानांगसूत्रवृत्ति	५२	कल्पवृत्ति प्रथम खंड
२६	जीवाभिगमसूत्रवृत्ति	५३	,, द्वितीय खंड
७८	अनुयोगद्वारचूर्णि	५४	,, तृतीय खंड
१४९	अंगविद्याप्रकीर्णक	५७	,, ,, ,,

४. जे ग्रन्थोनी माइक्रोफिल्म लेवामां आवी छे तेनी यादी नीचे प्रमाणे छे.—

रोल नं० १

१ निशीथचूर्णि, प्रथम खंड, पत्र ३३८
२ ,, द्वितीय खंड, पत्र ४१९
३ विशेषावश्यकवृत्ति, प्र. खंड, पत्र ३३५ (मलधारीया)
४ ,, द्वि. खंड, पत्र ३२५
५ कल्पबृहद्भाष्य, पत्र २०७
६ पिंडनिर्युक्ति, वृत्तिसह
७ जीवाभिगमसूत्र, पत्र १०२
८ ,, लघुवृत्ति, पत्र १०३ थी १३५
९ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र, पत्र १४८
१० दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि, पत्र १ थी ५०
११ दशाश्रुतस्कन्धसूत्र, ५० थी ९२
१२ पञ्चकल्पचूर्णि, १७४ थी २४९

रोल नं० २

१३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांग, पत्र ९७
१४ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगचूर्णि, पत्र ४०
१५ निर्यावलिकादिपंचोपांगसूत्र, पत्र २५
१६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांग, पत्र १६४
१७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांगचूर्णि, पत्र १६५ थी २३३
१८ समवायांगसूत्र, पत्र ६४
१९ ओघनिर्युक्तिबृहद्भाष्य, पत्र १०१
२० कल्पबृहद्भाष्य, प्रथम खंड, पत्र ३११
२१ तपोटमतकुट्टन आदि, पत्र २०
२२ न्यायावतारवृत्ति टिप्पणीसह, टिप्पणीकार-ज्ञानश्री (?), पत्र १३७.

रोल नं० ३

रोल नं० ४

६० धर्मविधिप्रकरण, नन्नसूरिकृत, पत्र १८६, के. सं. ११९०
६१ निशीथसूत्र, पत्र १५
६२ निशीथसूत्रभाष्य, पत्र १७८
६३ निशीथचूर्णि, प्रथम खंड, किंचिदपूर्ण, १० उद्देशपर्यन्त, लेखनसमय १० मासैकानो प्रारंभ
६४ भगवतीसूत्र, पत्र ४२२, लेखनसमय १२ मो सैको
६५ ओघनिर्युक्तिवृत्ति, द्रोणाचार्यकृता, पत्र १०५, के. सं. ११९७
६६ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति, पत्र १४१, के. सं. ११६६
६७ उपदेशप्रकरणलघुटीका, वर्द्धमानसूरिकृता पत्र १४९ थी २९९, के. सं. ११९३
६८ कर्मप्रकृतिचूर्णि, पत्र ३०६, के. सं. १२२२
६९ दशवैकालिकवृत्ति, पत्र १०६ थी २१२
७० दशवैकालिकनिर्युक्ति पत्र १२
७१ पिंडविशुद्धिप्रकरण, सटीक, पत्र १८४, टीका-श्रीयशोदेवसूरि
७२ शतकचूर्णि, पत्र १७३, के. सं. ११९६
७३ सूक्ष्मार्थविचारसारचूर्णि, पत्र ६७
७४ अणुव्रतविधि, पत्र ७७, के. सं. ११६९

रोल नं० ५

७५ स्याद्वादरत्नाकर, प्रथम खंड, वादिदेवसूरिकृत, पत्र ३७३
७६ पंचकल्पभाष्य, पत्र १०६
७७ पंचकल्पचूर्णि, पत्र १०७ थी २०२
७८ नन्दीसूत्रचूर्णि, पत्र १८५ थी २२३
७९ अनुयोगद्वारचूर्णि, पत्र २२४ थी २७५
८० न्यायभाष्य, पत्र ५७, लेखनसमय १५मो सैको, कागळनी प्रति
८१ न्यायवार्तिक, भारद्वाजकृत, पत्र ५८ थी २००
८२ न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका, वाचस्पतिकृता, पत्र २०१ थी ४०१
८३ न्यायतात्पर्यपरिशुद्धि, पत्र ४०२ थी ५६६
८४ श्रीकण्ठीयटिप्पनक,
८५ पंचप्रस्थानटिप्पनक
८६ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र, पत्र ४६ [१६५१ थी १६९६]
८७ पिण्डनिर्युक्तिअवचूरि, पत्र ४७
८८ बालशिक्षाव्याकरण, संग्रामसिंहकृत, पत्र ३०
८९ सिद्धिविनिश्चय, सटीक, पत्र ५८२
९० निर्वाणलीलावतीमहाकथोद्धार (लीलावतीसार), पत्र २६७ संस्कृत जिनेश्वरसूरिकृत, लेखनसमय १४ मो सैको

रोल नं० ६

९१ अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी, प्रथम खंड, पत्र २६४
९२ „ , द्वितीय खंड, पत्र २३९
९३ „ , तृतीय खंड, पत्र १३४

९४ सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुन्यासदुर्गपदव्याख्या, कनकप्रभकृता; प्रथमादर्श पत्र १८४
९५ पञ्चग्रन्थी—बुद्धिसागरव्याकरण, पत्र ३७६
९६ सिद्धहैमशब्दानुशासनरहस्यवृत्ति—सिद्धहैमलघुवृत्तिसंक्षेप, पत्र १६०
९७ शतकचूर्णि, त्रूटक, पत्र ५७ थी १३५.
९८ ,, ,,
९९ षष्ठाशकप्रकरणलघुवृत्ति, पत्र २६५
१०० चैत्यवन्दनचूर्णि, यशोदेवसूरिकृता, पत्र ६३.
१०१ वन्दनकचूर्णि, यशोदेवसूरिकृता, पत्र १ थी ४८
१०२ इरियावहियाचूर्णि, यशोदेवसूरिकृता, पत्र ४८ थी ५८
१०३ खण्डनखण्डखाद्य, श्रीहर्षकृत, पत्र २६०
१०४ भाष्यवार्तिकविवरणपञ्जिका, अनिरुद्धपण्डितकृता, अध्याय २–५, पत्र ११७
१०५ गौतमीयन्यायवृत्ति, पत्र १२४
१०६ सर्वसिद्धान्तप्रवेश
१०७ न्यायप्रवेशसूत्रवृत्ति पत्र १६४
१०८ सांख्यसप्ततिकावृत्ति, पत्र ८९
१०९ ,, , पत्र १५७
११० सांख्यसप्ततिकाभाष्य-टीका, गौडपाद आदि. पत्र १८३
१११ सांख्यसप्ततिका, वृत्तिसह, पत्र १०२
११२ न्यायमञ्जरीग्रन्थीभङ्ग, चक्रधरकृत, पत्र १८६
११३ विलासवईकहा, अपभ्रंश, पत्र २०६
११४ ,, ,, पत्र २०३
११५ नैषधमहाकाव्य, पत्र ३१७
११६ काव्यादर्श, सोमेश्वरकृत, पत्र २२२
११७ काव्यप्रकाशसंकेत, माणिक्यचन्द्रकृत, अपूर्ण, पत्र ५३
११८ काव्यप्रकाशअवचूरि, पत्र ९२
११९ मुद्राराक्षसनाटक, पत्र १थी ९५
१२० प्रबोधचन्द्रोदयनाटक, पत्र ९६ थी १६५

रोल नं० ७

१२१ अनर्घराघवनाटक, अपूर्ण, पत्र १६९
१२२ वेणीसंहारनाटक, पत्र ७३
१२३ चन्द्रलेखाविजयप्रकरण, पत्र २०३
१२४ अलंकारदर्पण, पत्र १३
१२५ चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, पत्र ११७
१२६ हम्मीरमदमर्दननाटक, पत्र ९०
१२७ वस्तुपालप्रशस्ति
१२८ गउडवहोमहाकाव्य, सटीक, टीका-उपेन्द्र हरिपाल, पत्र २४८
१२९ भट्टिकाव्य—रामकाव्य, पत्र १४४
१३० वृन्दावनकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि, पत्र १ थी ३१
१३१ घटखर्परकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि, पत्र ३२ थी ४२
१३२ शिवभद्रकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि, पत्र ४३ थी ८७
१३३ मेघाभ्युदयकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि, पत्र ८८ थी ११४
१३४ चन्द्रदूतकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि, पत्र ११५ थी १३३

१३५ राक्षसकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि. पत्र १३३ थी १४६
१३६ घटखर्परकाव्य, सटीक, टीका—शान्तिसूरि- पत्र ३९ थी ५३
१३७ काव्यप्रकाश, टिप्पणीसह, पत्र १७८
१३८ जयदेवछन्दःशास्त्र, पत्र १०
१३९ जयदेवछन्दःशास्त्र, वृत्तिसह, पत्र १ थी ५५
१४० कइसिट्ठछन्दःशास्त्र, विरहांक, पत्र ५६थी८९
१४१ कइसिट्ठछन्दःशास्त्र, वृत्तिसह, वृत्ति-भट्टगोपाल, पत्र ८९ थी १८३
१४२ वृत्तरत्नाकर, पत्र १५
१४३ छन्दोनुशासन, जयकीर्तिकृत, पत्र २८
१४४ काव्यादर्श, तृतीयपरिच्छेदपर्यन्त पत्र ३९
१४५ अलंकारदर्पण, पत्र २४
१४६ अभिधावृत्तिमातृका, पत्र ३१
१४७ उद्भटालङ्कारलघुवृत्ति, प्रतीहारेन्दुराजकृता, पत्र १४३
१४८ रुद्रटालङ्कार, तृतीयाध्यायथी पञ्चमाध्याय पर्यन्त, पत्र ४६
१४९ कविरहस्य—अपशब्दाभासकाव्य, सटीक, पत्र ७४
१५० वामनीय काव्यालङ्कार, स्वोपज्ञवृत्तिसह, टिप्पणीसह, पत्र १३०
१५१ व्यक्तिविवेककाव्यालङ्कार, राजानकमहिमकृत, पत्र १९८
१५२ सिद्धहेमलघुवृत्ति, पञ्चमाध्याय, वि. सं. १२०६, पत्र ९१
१५३ कातन्त्रव्याकरण, आख्यातवृत्ति, पत्र ३०३
१५४ कातन्त्रव्याकरणवृत्तिपञ्जिका, पत्र २७०
१५५ „ „ कृद्वृत्ति, पत्र १६४
१५६ कातन्त्रव्याकरण दुर्गपदप्रबोध, प्रबोधमूर्तिकृत, पत्र १९१
१५७ कातन्त्रोत्तरविद्यानन्दिवृत्ति, पञ्चसन्धि, पत्र ७४
१५८ कातन्त्रोत्तरविद्यानन्दिवृत्ति, नामद्वितीयपादपर्यन्त, पत्र ४६
१५९ कातन्त्रोत्तरविद्यानन्दिवृत्ति, कारकप्रकरण, पत्र २७
१६० कातन्त्रोत्तरविद्यानन्दिवृत्ति, कारकटिप्पण, पत्र ४३
१६१ कातन्त्रोत्तरविद्यानन्दिवृत्ति, तद्धितपर्यन्त, पत्र ३०९
१६२ स्याद्यन्तप्रक्रिया, सर्वधरकृता, पत्र ९४
१६३ प्राकृतप्रकाश, पत्र २८
१६४ न्यायकन्दलीटीका अपूर्ण, पत्र ३८७
१६५ प्रशस्तपादभाष्य, अपूर्ण, पत्र ३३
१६६ न्यायकन्दली, श्रीधरकृता, पत्र ५१ थी ८७
१६७ मीमांसादर्शन—शाबरभाष्य, पत्र १ थी ५०
१६८ प्रमाणान्तर्भाव, पत्र ५१–९७
१६९ धर्मोत्तरटिप्पनक, मल्लवादिकृत, पत्र ९४
१७० „ „ पत्र ७७
१७१ अनेकान्तजयपताकाटिप्पनक, मुनिचन्द्रसूरिकृत, पत्र २३१
१७२ प्रमालक्ष्मलक्षण, सटीक, पत्र २७२
१७३ वासवदत्ता, पत्र ४७
१७४ लीलावईकहा, कुतूहलकविकृता, पत्र १४३, वि. सं. १२६५

१७५ महावीरचरित्र, प्राकृत, नेमिचन्द्रसूरिकृत, के. सं. ११६१, पत्र १५७
१७६ अर्थशास्त्रवृत्तिसंक्षिप्त, त्रूटक, अपूर्ण
१७७ विशेषावश्यकमहाभाष्य, पत्र २८४, लेखनसमय १० मो सैको
१७८ न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका, वाचस्पतिमिश्रकृता, पत्र ५ थी २८० के. सं. १२७९
१७९ न्यायभाष्य, अपूर्ण, पत्र २८१ थी ३५०
१८० न्यायवार्तिक, भारद्वाजकृत, पत्र ८ थी १५७, के. सं. १२७९
१८१ न्यायतात्पर्यपरिशुद्धि, उदयनाचार्यकृता, अपूर्ण, पत्र १५७ थी ३२५, के.सं. १२७९
१८२ षडशीतिकर्मग्रन्थटिप्पनक, रामदेवगणिकृत, पत्र ७४ थी १०५, कागळनी प्रति, के. सं. १२४६
१८३ द्वादशारनयचक्र, पत्र ५२२, कागळनी प्रति
१८४ दशवैकालिकसूत्र, त्रिपाठ, पत्र १६, कागळनी प्रति

रोल नं० ८–परिशिष्ट

१८५ नन्दीदुर्गपदवृत्ति, श्रीचन्द्रसूरिकृता, पत्र ३ थी २२१
१८६ पञ्चवस्तुकप्रकरण, पत्र १५२
१८७ सप्ततिकाटिप्पनक, रामदेवगणिकृत, पत्र ५६, के. सं. १२११
१८८ बृहत्संग्रहणी, सटीक, पत्र १५०, टीका–शालिभद्रसूरि
१८९ धर्मबिन्दुप्रकरण, पत्र ६४, लेखनसमय १२ मो शतक
१९० उपदेशपदप्रकरण, पत्र ११२ के. सं. ११७८
१९१ प्रकरणपुस्तिका, पत्र ४५, के. सं. ११६९
१९२ सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण–सार्धशतक, पत्र ११, लेखनसमय १२ मो सैको
१९३ श्रावकधर्मविधिप्रकरण, पत्र ८
१९४ ओंकारपञ्चाशिका, पत्र ५
१९५ श्रावकविधिप्रकरण, पत्र ४
१९६ सुभाषितपद्यसंग्रह, पत्र ३
१९७ प्रकरणसंग्रह, पत्र १२७, के. सं. ११९२
१९८ „ पत्र १६२+३१, के.सं. १२२२
१९९ पातंजलयोगदर्शनभाष्य, वाचस्पतिमिश्रकृत, पत्र १ थी १६०
२०० „ जीर्ण, पत्र १६१ थी २१७
२०१ आवश्यकटिप्पनक, मलधारिहेमचन्द्रसूरिकृत, पत्र ३१५
२०२ चउप्पन्नमहापुरिसचरिय, पत्र १, तथा पत्र २२१ थी २२३ (चार पत्र)
२०३ पार्श्वनाथचरित्र, देवभद्रसूरिकृत, पत्र १, तथा पत्र २२९ मुं (बे पत्र)
२०४ पञ्चाशकप्रकरणवृत्ति, पत्र १, २६०, २६१ (त्रण पत्र)
२०५ महावीरचरित्र, गुणचन्द्रकृत, पत्र १ तथा ३६१ थी ३६३ (चार पत्र)
२०६ न्यायभाष्य, पत्र ५७
२०७ न्यायवार्तिक, भारद्वाजकृत, पत्र १४२ (५८ थी २००)

२०८ न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका, वाचस्पतिमिश्रकृता, पत्र २०१ (२०१ थी ४०१)

२०९ न्यायतात्पर्यपरिशुद्धि, उदयनाचार्यकृता; पत्र १६४ (४०२ थी ५६६)

२१० न्यायटिप्पनक, श्रीकण्ठकृत, पत्र ४९ (५६७ थी ६१४)

२११ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र, पत्र ४६ (१६५१ थी १६९६)

२१२ पिण्डनिर्युक्तिअवचूरि

२१३ बालशिक्षाव्याकरण, पत्र ३०

२१४ निर्वाणलीलावतीकथोद्धार, पत्र २६७, अपूर्ण.[1]

*

उपर जणावेला ग्रन्थोनी माइक्रोफिल्म लेवानुं कार्य न्यु दिल्हीमां कराववामां आव्युं छे. मिनिस्ट्री ऑफ कॉमर्स अने ओथोरीटीझ ऑफ एड्मिनिस्ट्रेटीव इन्टेलीजन्ट्स रूम (क्वीन्स वे, न्यु दिल्ही), आ बन्नेए माइक्रोफिल्म लेवाना कार्यमां अनुकूळता आपी हती. आ दिवसोमां नेशनल म्युझीयम–न्यु दिल्हीना विद्वान् अध्यक्ष श्री डॉ. वासुदेवशरणजी अग्रवाले आ ग्रन्थोनुं महत्त्व अने दर्शनीयता जणातां तेमणे ता. २४–२५ फेब्रुआरी १९५१ ना दिवसे नेशनल म्युझीयममां आ ग्रन्थोनुं प्रदर्शन योज्युं हतुं. आ प्रसंगे तेमणे प्रकाशित करेला निमंत्रण पत्रमां जेसलमेरना जैन भंडार अने तेना ग्रन्थो माटे आ प्रमाणे जणाव्युं हतुं :—

AN EXHIBITION OF OLD PALM-LEAF MANUSCRIPTS

These mansucripts belong to the Jinabhadra Jñāna Bhandar, an ancient library established in the 15th century at Jaisalmer as part of a Jain temple establishment. The library contains some of the oldest manscripts known in India going back to the 10th century A. D. and has remained almost sealed to the public from the 15th century, which partly accounts for its preservation intact. The distinguished Jain scholar Muni Punya Vijayaji, through his personal influence

१. पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीना काळधर्म पछी तेमनी अंतरेच्छाने अनुसरीने तेमना प्रधान शिष्य दीर्घतपस्वी पन्यासजी श्री दर्शनविजयजी महाराज साहेबे पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीनो समग्र संग्रह (हस्तलिखित–मुद्रित ग्रंथो अने अन्य कळासामग्री) श्री ला.द. विद्यामंदिरने समर्पित कर्यो छे. आ संग्रहमां अहीं उपर जणावेली, माइक्रोफिल्म लेवायेला ग्रंथोनी यादी पण मळी आवी छे, जे पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए स्वहस्ते लखेली छे. आ यादीने अनुसरीने ज उपर जणावेली ग्रन्थसूचि आपवामां आवी छे. आम छतां आ सूचिमां आवेला रोल नं ६–७–८ ला.द. विद्यामंदिरमां आव्या नथी. आ संबंधमां विशेष तपास करतां एम जणायु छे के उक्त त्रण रोल पं. श्री फतेचंदभाई बेलाणीनी पासे छे. आ संबंधमां ला.द. विद्यामंदिरना मुख्य नियामक पं. श्री दलसुखभाई मालवणियाजी समक्ष रूबरू मुलाकातमां पं. श्री फतेचंदभाई बेलाणीए मौखिक जणावेलु के रोल नं ६–७–८ तो में मारा माटे अने मारा खर्चे लेवरावेला छे. आथी उक्त त्रण रोल ला.द. विद्यामंदिरमां आव्या नथी

persuaded the custodians of this library to have the manuscripts not only properly examined and catalogued, but also preserved for posterity and multiplied for scholars with the aid of microfilming. Accordingly, important select mansucripts of palm-leaf were brought to New Delhi and have been microfilmed through the special facilities provided by the Ministry of Commerce and the authorities of the Administrative Intelligence Room, Queensway, New Delhi.

Before sending back the manuscripts to their traditional custody at Jaisalmer to be kept in specially designed new aluminium containers, an opportunity has been taken to put them on view in an Exhibition open to the public under the auspices of the National Museum of India with the kindness of Sri Fateh Chand Belaney, who has organised the microfilming arrangements.

The manuscripts were specially seen by the Hon'ble Dr. Rajendra Prasad who evinced keen interest in their future preservation and publication.

The collections of the Jaisalmer Bhandar consist of 402 manuscripts on palm-leaf and more than 1000 on paper together with a number of beautifully painted wooden book-covers, which have been sent to Bombay for coloured reproducation. The Bhandar is considered to be the oldest amongst all the Jain manuscripts collections in this country so far known, containing a number of important manuscripts of the 11th, 12th and 13th centuries.

Besides collecting Jain religious texts, the Bhandar was founded with a more eclectic aim and therefore it contains manuscripts relating to the systems of Indian philosophy like Sāṅkhya Mīmāṁsā, Vaiśeshika, Nyāya and Yoga, and also works on Poetry, Rhetoric, Metres, Drama, Romance, Literature, Stories, Lexicons, Grammar, etc A new commentary of about the 14th century on the *Arthaśāstra* of Kauṭilya has been discovered in this Bhandar. When properly edited, it is expected to throw new light on the continuity of the textual tradition of the *Arthaśāstra* in India. As is known, the *Arthaśāstra* was discovered by the late Dr. Shama Shastri only about forty years ago.

For the first time a manuscript library in India has brought to light Buddhist Sanskrit texts on philosophy, a voluminous literature preserved in original in Nepal and in translations in Tibet and China, but lost in its homeland. A Palm-leaf manuscript of *Nyāya-Praveśa* of the famous Buddhist philosopher Diṅnāga written in 1146 A. D. as well as the *Tattvasaṅgraha* of Kamalaśīla, Principal of the Nalanda University with his own commentary dated 12th century (the only known copy in the world) and some other works are on view in the Exhibition.

There are some manuscripts discovered for the first time, e. g. two new commentaries on *Sāṅkhya-Saptati* and a Bhāshya on the *Ogha-Niryukti*. The author's copy of a commentary by Kanak Vijaya on Hema Chandra's Grammar

dated 1214 A. D. is also on show. There are other manuscripts from this collection in the Exhibition, the dates of which coincide with the dates of their first composition and these belong to the early part of the 12th century. The manuscript of the *Nishitha-Sutra* (12th century A. D.) is the personal copy of the famous Jain pontif Sri Jina Datta Sūri.

Of even greater interest are the several manucripts of old romance literature, e. g. *Tilaka-mañjari*, of Dhanapala (1073 A. D.), *Śriṅgāra-mañjari* by the famous king Bhoja (a beautiful new love romance with a good deal of cultural documentation of the 11th century), *Kuvalaya-mālā-Kahā* by Udyotana Sūri (1082 A. D.), *Vāsavadattā* by Subandhu (1150 A. D.), *Saṁvega-Raṅga-śālā* by Jina Chandra Sūri (a new and unpublished story book in Prakrit relating to love and renunciation, dated 1150 A. D.), *Vilāsavatīkathā* in Apabhraṁśa, *Samarāditya-kathā* (Prakrit, dated 1193 A. D.) and *Nirvāṇa-līlāvati* (dated 1208 A. D.).

The mansucript of the Nārāyaṇī commentary on the *Naishadha-charita* was written in 1303 A. D., only eight years after its composition. A composite manuscript of 615 palm-leaves preserves the whole gamut of Nyāya literature consisting of the Bhāshya of Vātsyāvana, Vārttika of Bhārdvāja, Tātparyaṭīkā by Vāchaspati, Tātparyaparis'uddhi by Udayana and Nyāya Ṭippanaka by Śrīkaṇṭha.

The entire literature of the Jain Aṅga texts in Ardhamāgadhī with Prakrit and Sanskrit commentaries is represented in manuscripts written between 1064 and 1174 A D.

This collection also shows the oldest paper manuscript so far found in India (dated 1189 A. D.) of a work called *Karmagrangtha Ṭippana*.

The longest palm-leaf manuscript in the exhibition is of 34" written in perfectly preserved black ink. Palmleaf was specially imported from Indonesia during the mediveal period and was called Śrī-tāla Each leaf has four or eight lines of writing. The script of the manuscripts is Devanagari of the 11th-12th century.

Some specimens of old writing material are also on show.

V. S. AGRAWALA
Superintendent.

ग्रन्थोने सुरक्षित रीते जेसलमेरथी दिल्ही लई जवा माटे भाई लक्ष्मणदास भोजक तथा चिमनलाल भोजकने मोकलवामां आव्या हता. दिल्ही पहोंच्या पछी लक्ष्मणदासनी जेसलमेरमां वणी अगत्य होवाथी तेमना भाई रसिकलाल भोजकने न्यु दिल्ही मोकलीने लक्ष्मणदासने जेसलमेर बोलावी लिधा हता. आ बे भाईओए (चीमनलाल तथा रसिकलाल) दिल्हीमां ग्रन्थोनी फिल्म लेवा माटे प्रत्येक ग्रन्थनां पानां गोठववा आदिनुं कार्य चोकसाईथी कर्युं हतुं अने बधाय ग्रन्थोने सुरक्षित रीते बाळवीने जेसलमेर लाव्या हता. आ कार्य माटेनी व्यवस्था पं. श्री फतेचन्दभाई बेलाणीए करी हती.

अहीं एक हकीकतनी खास नोंध लेवी जोईए के जेसलमेरनिवासी श्रेष्ठी श्री रावमलजीना सुपुत्र श्रेष्ठी श्री फतेसिंहजी महेताए, भंडारना अन्य ट्रस्टीओनी समक्ष दिल्ही मोकलवाना ग्रन्थोना संबंधमां संपूर्ण जवाबदारी न स्वीकारी होत तो आ ग्रन्थोनी माइक्रोफिल्म लेवानुं कार्य न ज बनी शकत.

पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए जेसलमेरथी लखेला पत्रोमां जेसलमेरना भंडारो विषे घणी हकीकतो जणावी छे. आमांनी केटलीक हकीकतो श्री महावीर जैन विद्यालय (मुंबई) द्वारा प्रकाशित 'ज्ञानांजलि—पूज्य मुनि श्री पुण्यविजयजी अभिवादन ग्रंथ'मांथी जाणी शकाशे.

*

पूज्यपाद आगमप्रभाकरजीए प्रस्तुत ज्ञानभंडारसमुद्धारनुं कार्य कर्युं ते समयमां जे अनेक महानुभावो जेसलमेर आवेला ते पैकीना केटलाक उल्लेखनीय महानुभावोनी यादी आ प्रमाणे छे—

डॉ. श्री जितेन्द्रभाई जेटली दार्शनिक ग्रन्थोनी कॉपी अने संशोधन कार्य माटे चारथी पांच महिना रह्या.

पं. श्री बेचरदासजी दोसी काव्यकल्पलतापल्लवशेषनुं संशोधन आदि कार्य माटे आसरे दोढ महिनो रह्या.

जर्मन विद्वान् डॉ. आल्सडोर्फ घणा ग्रन्थोनी फोटोकॉपी लेवा माटे चार दिवस रह्या.

भारतीय तत्त्वज्ञानना ऊंडा अभ्यासी पं. श्री दलसुखभाई मालवणिया दर्शनशास्त्रना ग्रन्थोनी कॉपीओना संशोधन आदि कार्य माटे चार दिवस रह्या.

राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठानना सम्मान्य संचालक पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी, प्राच्यविद्यामंदिर (वडोदरा)ना मुख्यनियामक श्री डॉ. भोगीलालभाई सांडेसरा तथा श्री अगरचन्दजी नाहटा विविध विषयक अनेक ग्रन्थोना निरीक्षणार्थे आशरे चार दिवस रह्या.

शेठ श्री कस्तुरभाई लालभाई पोताना विशाळ कुटुंब साथे चार दिवस रह्या.

शेठ श्री केशवलाल कीलाचंद, शेठ श्री चीमनलाल पोपटलाल, शेठ श्री जेसींगलाल लल्लुभाई झवेरी, श्री केशवलाल मंगळचंद, श्री मोहनलाल दीपचंद चोकसी तथा श्री फूलचंदजी झाबक आदि अनेक धर्मानुरागी श्रेष्ठीओ पण चार पांच दिवस रह्या. शेठ श्री त्रिकमलाल महासुखलाल विशाळ जनसमूह साथे तथा अमदावाद मोटीपोळ अने नागजी भूदरनी पोळना भाईओनो मोटो समूह चार पांच दिवस रहेल.

*

जेसलमेरना ज्ञानभंडारोना समुद्धार संशोधन आदिना संबंधमां पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी साथेना मुनिवरो, सहायक विद्वानो, अन्य कार्यकरो तेमज आ महत्त्वना ज्ञानकार्यमां थयेल खर्चना दाताओ वगेरेनी विगतो दर्शावतो एक शिलालेख सुंदरलिपिमां कोतरावीने जे भोंयरामां भंडार छे ते भोंयराना प्रवेशना पहेला खंडमां पत्थरनी दीवाल कोचीने चोडाव्यो छे जेथी आवा ज्ञानकार्यमां ते ते प्रकारे प्रेरणा अने अनुमोदनानी परंपरा जळवाई रहे, आ शिलालेखनो पूरो ख्याल आवे ते माटे तेनो ब्लोक बनावीने तेनी प्रतिकृति आ सूचीपत्रना प्रारंभमां मूकवामां आवी छे, अने तेनुं समग्र लखाण सुवाच्य बने ते माटे आ ग्रन्थना अंतमां छठ्ठा परिशिष्टरूपे आप्युं छे. संस्कृतभाषामां लखायेला आ शिलालेखनो अनुवाद नीचे प्रमाणे छे.—

जेसलमेर ज्ञानभंडार शिलालेख

श्रमण भगवान वीर वर्द्धमानजिनने नमस्कार हो. अनुयोगधरोने नमस्कार हो.

कमठासुरना प्रतापनुं मथन करनारा, श्री अश्वसेन तथा श्री वामादेवीना पुत्र, प्राभाविक, नामस्मरण मात्रथी रोगोने दूर करनारा, अर्हन्, धरणेन्द्रथी सेवित, पद्मावतीथी संस्तुत, एवा श्री पार्श्वजिननुं हुं पुनः पुनः शरण स्वीकारुं छुं.

स्वस्ति श्री विक्रम संवत् २००७ना चैत्र सुदि ११ तिथि अने बुधवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमां स्थिरयोगमां आज अहीं श्री जेसलमेरमहादुर्गमां खरतरगच्छालंकार युगप्रधानाचार्यप्रवर श्रीजिनभद्रसूरिज्ञानभंडारनी, जीर्णोद्धारादि कार्य पूर्वक, फरीने स्थापना करवामां आवी छे.

आ ज्ञानभंडार युगप्रधानाचार्य श्री जिनभद्रसूरिए विक्रमना पंदरमा शतकना चोथा चरणमां स्थापित कर्यो हतो. तेमां तेमणे जैन जैनेतर स्थविरार्यपुंगवोए रचेला अतिबहुमूल्य अलभ्य अने दुर्लभ्य प्राचीनतम ग्रन्थोनो संग्रह कर्यो हतो. तेम ज तेमणे ताडपत्र अने कागळ उपर हजारो ग्रन्थो लखाव्या हता. अने ते अहींना—जेसलमेरना अने अणहिलपुर पाटण वगेरेना भंडारोमां मूक्या हता.

आज पर्यन्त घणा मुनिपुंगवोए अने श्रेष्ठ विद्वानोए जेसलमेरदुर्गमां रहेल आ अतिमहान् ज्ञानभंडारनुं अवलोकन, ग्रन्थसूची, पुस्तकलेखन अने जीर्णोद्धारादि कार्य कर्युं छे. तेमां य गया सैकामां डॉ. टोड, डॉ. बुल्हर, डॉ. याकोबी, डॉ. भाण्डारकर, यति श्री मोतीविजयजी, श्री हंसविजयजी महाराज, श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स—मुंबई, श्री सी. डी. दलाल, श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि, श्री जिनहरिसागरसूरि, भारतीयविद्याभवन (मुंबई) ना आद्य आचार्य श्री जिनविजयजी, यति श्री लक्ष्मीचन्द्रजी वगेरे विद्वद्वरोए ज्ञानभंडारनुं निरीक्षण, पुस्तकलेखन अने ग्रन्थसूचीनुं पाण्डित्यसूचक कार्य कर्युं छे. आम छतां एक पण प्रकाण्ड विद्वाने आ भण्डारनुं जीर्णोद्धार-ग्रन्थव्यवस्थापन-लेखन-संशोधनादि कार्य समग्रभावे कर्युं नथी.

श्री संघना पुण्योदयथी अने जेसलमेरना श्री संघनी सम्मतिथी संघवी शेठ श्री सांगीदासजी बाफणाना सुपुत्र श्रेष्ठी श्री आयदानजी अने श्रेष्ठी श्री राजमलजी महेताना सुपुत्र श्री फतेसिंहजी महेता, आ बे सुश्रावकोनी विनंतिथी, तपगच्छदिवाकर न्यायांभोनिधि संविग्नशाखाना आद्य आचार्य पंजाब-देशोद्धारक आचार्य श्री विजयानन्दसूरि (आत्मारामजी महाराज) ना शिष्य अणहिलपुर पाटण आदिमां रहेल जैन ज्ञानमण्डारोना उद्धारक प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजीना शिष्य लिंबडी वगेरे नगरोना प्राचीन ज्ञानभंडारोना उद्धारक श्री आत्मानन्द जैन ग्रन्थमालाना संपादक मुनिवर श्री चतुरविजयजी महा-राजना शिष्याणुरत्न अने समग्र जिनागमना सर्वांग संशोधननी इच्छावाळा मुनि पुण्यविजयजीए, राजनगर (अमदावाद) गुजरातथी अत्युग्र विहार करी जेसलमेर आवीने अहींना किल्लामां रहेला प्राची-नतम जैन ज्ञानभण्डारनो, ग्रन्थलेखन-संशोधन-पृथक्करण-टीप वगेरे करीने सर्वांगीण समुद्धार कर्यो.

पूज्यप्रवर चारित्रचूडामणि श्री हंसविजयजी महाराजना शिष्य विनीतस्वभावी पंन्यास श्री संपद्विजयजीना शिष्याणु अनेक ग्रन्थोनुं संशोधन अने नकल करवामां प्रवीण मुनि श्री रमणिक विजयजी अने पोताना शिष्य श्री जयभद्रविजयजीनी सहित मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजीए पोताना मोटा गुरुभाई पूज्यपाद श्री मेघविजयजी महाराजनी छत्रछायामां रहीने उपर जणावेलुं जीर्णोद्धारादि कार्य कर्युं छे.

अनेककार्यकुशळ न्यायतीर्थ बेलाणी श्री फत्तेहचन्द्र, भोजककुलभूषण पंडित श्री अमृतलाल, सततसंशोधनादिलीन पंडित श्री नगीनदास अने लेखनकलाप्रवीण भोजक चीमनलाल, आ चारेय विद्वानोए आ भण्डारना जीर्णोद्धारादि समस्त कार्योमां सतत सहाय करी छे. तथा राजनगरनी श्री गुजरात-विद्यासभाए पोताना खरचे मोकलेला श्री जितेन्द्रभाई जेटली एम. ए. न्यायाचार्य पण अहींना ज्ञान-भण्डारोमां रहेला दार्शनिक ग्रन्थोना संशोधनादिमां सहायक थया छे. तथा अहींना भंडारना जीर्णो-द्धारादिने उपयोगी अन्यान्य कार्योनो निरन्तर श्रम उठावनार भोजककुलनंदन लक्ष्मणदास अने रसिकलाल (बे भाईओ) पण सहायक थया छे. रसोई करनार वीरचंद अने माधवसिंह ठाकोर पण उत्साह पूर्वक बधाने आनंद आपता हता.

श्री जैन कॉन्फरन्स—मुंबई, आ संस्थाए जीर्णोद्धारादिमां थएला समस्त द्रव्यनी व्यवस्था करी छे. तेमां उपर जणावेला विद्वद्वर्ग आदिना निमित्तनी बधी ज व्यवस्थानो खरच अणहिलपुर पाटणना निवासी श्रेष्ठी श्री कीलाचन्दात्मज श्री केशवलालभाईनी सत्प्रेरणाथी प्रेराईने पाटणना ज वतनी उदार प्रकृतिवाळा जिनप्रवचनना अनुरागी श्रेष्ठी श्री पोपटलालना सुपुत्र श्री चीमनलालभाईए पोताना ज्ञानावरणादि क्लिष्ट कर्मनी निर्जरा निमित्ते कर्यो छे. ग्रन्थोनी काष्ठपट्टिकाओ, दोरीओ, बजनां बन्धनो, एल्युमिनियमना डबा अने लोखंडनां कबाट वगेरे माटेनी तेमज माईक्रोफिल्म संबंधी समग्र द्रव्य-

कलकत्ता, श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्सना कार्यकरोनी विनंतिथी जे जे श्री संघ तथा महानुभावोए करी तेमनी नामावली आ प्रमाणे छे— रु. १००००) श्री गोडीजी जैन श्री संघ–मुंबई, रु. २०००) कोट श्री संघ–मुंबई, रु. २०००) श्री संघ–पूना, रु. २०००) श्री संघ–कलकत्ता, रु. २५००) शेठ हेमचंदभाई–सुरेन्द्रब्रधर्स–मुंबई, रु. ७५१) जानीशेरी श्रीसंघ–वडोदरा; रु. ७५१) श्री आत्मारामजी जैन ज्ञानमंदिर–वडोदरा, रु. ५००) कसफोर बहेन झवेरी ह० हसमुखबहेन झवेरी–वडोदरा; रु. ४०१) शा. छगनलाल लखमीचंद–वडु.

उपर जणावेला बधाय सहायको करतां पण अति उपयोगी सहाय करनार तो जेसलमेर श्रीसंघना व्यवस्थापको अने श्रीसंघना आगेवान सुश्रावको छे. तमनां नाम आ प्रमाणे छे—१. श्रेष्ठी श्री रतनलालजी महेताना पुत्र श्रेष्ठी श्री रामसिंहजी; २. श्रेष्ठी श्री फतेसिंहजी महेता (श्रेष्ठी श्री राणमलजी महेताना सुपुत्र); ३. श्रेष्ठी श्री आयदानजी बाफणा अने ४ श्रेष्ठी श्री केसरीमलजी सिंघाणीना सुपुत्र श्रेष्ठी श्री प्यारेलालजी. ज्ञानभक्तिथी शोभायमान आ चार श्रेष्ठीओए व्यवस्थादि माटे समस्त ज्ञानभण्डार सोंप्यो जेथी ज्ञानभण्डारनी व्यवस्था आदिमां सुविधा थई.

अहीं पंदर महिनाथी कंइक वधारे समय रहीने जीर्णोद्धारादि सर्व कार्य पूर्ण कर्युं छे. श्री संघ भट्टारकनुं कल्याण हो.

आ प्रशस्ति चीमनलाले लखी अने मेंडती सलाट ईस्माईले शिला उपर उत्कीर्ण करी. वीर-संवत् २४७७. शुभ थाओ.

तपागच्छाधीश श्री विजयानन्दसूरिपट्टप्रभाकर श्री विजयवल्लभसूरिना धर्मसाम्राज्यमां अने स्वतंत्रभारतमहासाम्राज्यगणतंत्रनी छायामां रहेला महारावलजी श्री रघुनाथसिंहजी साहेब बहादुरना विजय राज्यमां.

*

प्रस्तुत ज्ञानभंडारोना, संपूर्ण सुरक्षा आदि कार्यनी समाप्ति पछी अनुक्रमे ई. स. १९५४ अने १९५५मां भारतगणतंत्रना प्रथम वडा प्रधान अने प्रथम राष्ट्रपति पं. जवाहरलालजी नेहरु अने डॉ. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जेसलमेर गयेला. आ बन्ने विभूतिओए ज्ञानभंडारने जोइने जे अभिप्राय आप्यो छे ते तेमना पोताना हस्ताक्षरोमांज ग्रन्थना प्रारंभमां मुद्रित कर्यो छे.

• गत ता. ६–११–१९७१ना रोज श्रीसंघ–जेसलमेरना अग्रणी शेठिया अमदावाद आवेला, तेमणे जणाव्युं छे के—तपागच्छीय ज्ञानभंडार, थाहरू शाहनो ज्ञानभंडार अने डुंगरजी यतिनो

ज्ञानभंडार, एम जेसलमेरना त्रण ज्ञानभंडारो सिवायना शेष बधाय भंडारो हवे किल्लामां श्रीजिनभद्रसूरि ज्ञानभंडारनी साथे ज मुकवामां आव्या छे.

अहीं माइक्रोफिल्म लिधेला ग्रंथोनी यादी आपीछे तेमां कोईक कोईक ग्रंथ जेसलमेरभंडार सिवायनो पण छे. पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी कांबा समय सुधी जेसलमेरमां रह्या ते समयमां सिद्धिविनिश्चय, द्वादशारनयचक्र जेवा कोईक ग्रन्थो तेमणे अन्य स्थानोना भंडारोमांथी मंगावेला. तेनी उपयोगिताना लीधे फिल्म पण साथे साथे केवरावी लीधी छे.

श्री महावीर जैन विद्यालय संचालित आगमप्रकाशन विभागना संचालक महानुभावोए आगमप्रकाशनकार्यना समयमां आ प्रस्तावना लखवानी अनुमति आपीने मने अनुगृहीत कर्यो छे.

श्री ला. द. भारतीयसंस्कृतिविद्यामंदिर
युनिवर्सीटी विस्तार, नवरंगपुरा
अमदावाद ९
ता. ८-११-१९७१

विद्वज्जनविनेय—
अमृतलाल मोहनलाल भोजक

श्री जिनभद्रसूरि ज्ञानभंडारके जीर्णोद्धारका शिलालेख

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्रीजेसलमेरुदुर्गस्थ खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिसंस्थापित ताडपत्रीय जैन ग्रन्थभंडारनुं सूचिपत्र.

क्रमाङ्क १

(१) आचारांगसूत्र पत्र १–७१। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २६५४।

(२) आचारांगसूत्र निर्युक्ति पत्र ७२–८७। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ३६६।

(३) आचारांगसूत्र वृत्ति पत्र १–४२१। **भा.** सं.। **क.** शीलाकाचार्य। **ग्रं.** १२०००।

ले. सं. १४८५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** ३१॥।×२।

पत्र ३४६ मध्ये—

तदात्मकस्य **ब्रह्म**चर्याख्यश्रुतस्कन्धस्य **निर्वृत**कुलीनश्री**शील**ाचार्येण **तत्त्वा**दित्यापरनाम्ना **वाहरि**साधुसहायेन **कृता टीका** परिसमाप्तेति ॥छ॥

सत्त सहस्सा पच य, सयाइं अहियाइं णेय णूणाइ। गंथस्स य रइयाइं, विहिणा कम्मक्खयट्ठाए ॥

अक्खर मत्ता बिंदू, वयण पय तह य गाह वित्तं च। जं इत्थ न मे लिहिय, तं समयविऊहिं खमियव्वं ॥छ॥

कृतिः श्री**शील**ाचार्यस्येति ॥छ॥ ॐ नमः ॥

जयत्यनादिपर्यन्तमनेकगुणरत्नभृत्। न्यक्कृताशेषतीर्थेश तीर्थं तीर्थाधिपैर्नुतम् ॥ इत्यादि...

अन्त—

आचार्य**शील**ाङ्कविरचितायामा**चा**रटीकाया द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥छ॥ समाप्त चाचाराङ्गमिति ॥छ॥

आचारटीकाकरणे यदाप्त, पुण्य मया मोक्षगमैकहेतु।

तेनापनीयाशुभराशिमुच्चैराचारमार्गप्रवणोऽस्तु लोकः ॥छ॥

ग्रन्थाग्र सहस्र द्वादश अङ्कतोऽपि ॥छ॥१२०००॥ शुभ मङ्गलम् ॥ श्री ॥ श्रीः

यावन्मही यावदिमे समुद्राः, तिष्ठन्ति यावच्च कुलाद्रयोऽमी।

तावच्चिरं पुस्तकमस्तदोप नन्दात् सुधीभिर्भुवि वाच्यमानम् ॥ श्री ॥छ॥

॥ स्वस्ति स १४८५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि द्वितीयायां गुरौ श्रीखरतरगच्छे भट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरिविजयराज्ये **परीक्षगूजरसुतधरणाकेन** श्री**आचाराङ्गसूत्र**-निर्युक्ति-वृत्तिपुस्तक लेखयाञ्चक्रे ॥ ठा. **सारङ्गे**न। पं. **सोम**कुञ्जरगणिना सोधितम् ॥

श्री**जयसागर**महोपाध्यायपादानां समीपे पठता प. **सोम**कुञ्जरमुनिना यथायोगं शोधितं पुनः श्रीगीतार्थैः शोधनीयम्। श्रीः ॥ स. १४९२ वर्षे शोधितम्। श्रीः ॥

क्रमाङ्क २

(१) आचारांगसूत्र पत्र १–७६। **भा.** प्रा.। पत्र ७० मुं नथी।

(२) आचारांगसूत्र निर्युक्ति अपूर्ण पत्र १–१३। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ३५४ पर्यंत।

(३) आचारांगसूत्र वृत्ति अपूर्ण पत्र २–३०२। **भा.** स.। **क.** शीलांकाचार्य।

ले. सं. अनु. १५मी शताब्दीनुं उत्तरार्ध। **संह०** मध्यम। **द.** मध्यम। **लं. प.** ३०॥×२॥.

पत्र ५, ९, २१, २५, ५७, ८०, ८४, ८५, २८८ नथी.

क्रमाङ्क ३

आचारांगसूत्र चूर्णी पत्र २६०। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १४८९। **संह०** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२।.

पत्र ६, ७, ९, १०, १२, १४–१७, १९, २०, २७, २८, ३१, ४०, ४१, ४५, ४८, ५८–६०, ६४, ६७, ६९, ७५, ७६, ८३, ८४, ८६, २२३, २२५, २२६ **नथी.**

अन्त—

इति **आ**चारचुण्णी परिसम्मत्ता। संवत् १४८९ वर्षे भाद्रपद सुदि १३ **शुक्रे खरतरगच्छे** श्री**जिनभद्रसूरि**-विजयराज्ये **परीक्षिगूर्ज**रसुतपरीक्षि**धरणा**केन श्री**आचाराङ्ग**चूर्णिलिखापिता ॥छ॥ शुभं भवतु श्रीसघस्य ॥छ॥

क्रमाङ्क ४

सूत्रकृतांगसूत्र वृत्ति. अपूर्ण पत्र ४१४। **भा.** स। **क.** शीलांकाचार्य। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दीनु उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥।×१॥।. । पत्र ३५९मु **नथी.**

आ प्रतिनां ताडपत्र अत्यंत सुकुमार, पातळां अने सरस छे.

क्रमाङ्क ५

(१) **सूत्रकृतांगसूत्र** पत्र १–५३। **भा** प्रा.।

(२) **सूत्रकृतांगसूत्र निर्युक्ति** पत्र ५४–५८। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** २०८।

(३) **सूत्रकृतांगसूत्र वृत्ति किंचिदपूर्ण** पत्र ५९–३५६। **भा** सं। **क.** शीलांकाचार्य।

ले. सं. अनु. १५ मी शताब्दीनु उत्तरार्ध [परीक्षी **धरणाक** लेखित ?]। **संह** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ **लं. प.** ३४×२॥

पत्र १, १०, १३, १८, १९, २३, २९, ३१, ३४, ३८, ५८, ६६, ६९, ३४२, ३४६, ३४९, ३५२, ३५३ नथी

आ प्रतिनां ताडपत्र स्थूल छे. घणा पानाना टुकडाओ थई गयेला छे।

क्रमाङ्क ६

स्थानांगसूत्र वृत्ति पत्र ३४९। **भा.** स.। **क** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** १४२५०। **र. सं.** ११२०। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दीनु पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३४।×२.

पत्र ६, ८, ३९, ४०, ३३४ नथी.

क्रमाङ्क ७

(१) **स्थानांगसूत्र** पत्र १–८७। **भा.** प्रा। **ग्रं** ३७५०।

(२) **स्थानांगसूत्र वृत्ति** पत्र १–३४९। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** १४२५०। **र. सं.** ११२०।

ले. सं १४८६। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२।×२॥.

अन्त—अत्र दशमाध्ययने श्लोकाः १७१४॥

प्रत्यक्षर निरूप्यास्या ग्रन्थमान विनिश्चितम्। अनुष्टुभां सपादानि सहस्राणि चतुर्दश ॥छ॥

अङ्कतोऽपि १४२५०। शिवमस्तु। सवत् १४८६ वर्षे माघ वदि पञ्चम्यां सोमे अद्येह श्री**स्तम्भतीर्थे** अविचलत्रिकालज्ञाऽऽज्ञापालनपटुतरे विजयिनि **खरतरगच्छे** श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयकृतपापपूर-प्रलयचारुचरित्रचन्दनतरुमलयश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिनभद्रसूरी**श्वराणामुपदेशेन प **गूर्जरसुतेन** रेषाप्राप्तसुश्रावक-परीक्ष**धरणा**केन पुत्र**साङ्या**सहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे **स्थानाङ्ग**सूत्रवृत्तिपुस्तक लिखापितम् ॥

क्रमाङ्क ८

(१) **समवायांगसूत्र** पत्र १–४५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १६६७। पत्र. १५ मु नथी।
(२) **समवायांगसूत्र वृत्ति** पत्र ४६–१३४। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ३५७५। **र. सं.** ११२०।

ले. सं. १४८७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥ × २।.

अन्त—

समवायांगवृत्तिः संपूर्णा॥ सवत् १४८७ वर्षे पोस सुदि १० रवौ......[**धर**णाक लेखिता ?]

क्रमाङ्क ९

(१) **समवायांगसूत्र** पत्र १–६४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १६००। पत्र २४ मुं नथी।
(२) **समवायांगसूत्र वृत्ति** पत्र ६५–२१५। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ३५७५। **र. सं.** ११२०।

ले. सं. १४०१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २७ × २.। प्रति शुद्ध छे।

अन्त—

॥ सवत् १४०१ वर्षे माघ शुक्ल एकादश्यां श्री**स**मवायांगसूत्रवृत्तिपुस्तकं सा. **रउला**सुश्रावकेण मूल्येन गृहीत्वा श्री**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नपद्मसूरिपट्टालकारश्री**जि**नचद्रसूरिसुगुरो: प्रादायि। आचद्राक नदतात्॥ छ॥

क्रमाङ्क १०

भगवतीसूत्र पत्र ३४८। **भा.** प्रा.। **ले. सं** १२३१। **संह** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९॥×२॥.। अंतिम पत्रमां **शोभन** छे। प्रति **शुद्ध** छे।

अन्त—

॥ **भ**गवई समत्ता ॥छ॥ ॐ ॥छ॥ संवत् १२३१ वैशाख वदि एकादश्यां गुरौ अपराह्ले लेखक**धण**चंडेन लिखितमिति॥

क्रमाङ्क ११

भगवतीसूत्र पत्र २९३। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२×२॥. पत्र २८५ टूकडो तथा पत्र २८८ नथी।

अन्त—

वियसियअरविंदकरा नासियतिमिरा सुयाहिया देवी। मज्झ पि देउ मेह बुहनिवहनमंसिया निच्च॥
सुयदेवया पणमिमो जाए पसाएण सिक्खियं नाण। अन्न **प**वयणदेवी संतिकरी त नमसामि॥
सुयदेवया य जक्खो **कुं**डधरो **बं**भसंति **वे**रोट्टा। विज्जा य **अं**बहुर्डी देउ अविग्घ लिहतस्स ॥छ॥

॥ संवत् १४८८ वर्षे मार्ग सुदि ५ पचम्यां गुरुदिने श्रीमति श्री**स्तं**भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालन-पटुतरे विजयिनि श्रीमत्**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयत्रधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलय-चारुचारित्रचंदनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जि**नभद्रसूरीश्वराणामुपदे-शेन प० **गू**जरसुतेन रेषाप्राससुश्रावकेन परीक्ष**धरणा**केन पुत्र**सा**इयासहितेन श्रीसिद्धांतकोशे श्री**भ**गवतीसूत्रपुस्तक लिखापितं ॥छ॥

क्रमाङ्क १२

भगवतीसूत्रवृत्ति प्रथम खंड अष्टमशतक पर्यन्त पत्र २५६ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ९४३८ । **र. सं.** ११२८ । [**ले. सं.** ११९५] । **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २६×२।.। आ प्रतिनां केटलांक पानां गुम थवाथी ते पानां पुनः अनुमान १३मी शताब्दीमां नवां लखावेलां देखाय छे।

पट्टिका उपर—"श्रे. मांडव्यपुरीय लक्ष्मीधरेण प्रदत्त ॥ भगवती प्रथमखड पु"

क्रमाङ्क १३

भगवतीसूत्र वृत्ति द्वितीयखंड. नवमा शतकथी संपूर्ण पत्र २५५ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** ९१७८ । **सर्वग्रं.** १८६१६ । **र सं** ११२८। **ले. सं.** ११९५। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** २६×२।. । आ पोथी उधेईए खाधेली छे ।

अन्त—

॥ सवत् ११९५ श्रावण सुदि ६ शुक्रे ॥ लिखित च लेखकखेंदिराजेन ॥छ॥ ॥छ॥

क्रमाङ्क १४

भगवतीसूत्र वृत्ति २६ शतक पर्यन्त पत्र ४३७। **भा.** स. । **क** अभयदेवाचार्य। **ले. सं.** अनु. १२ शताब्दीनु उत्तरार्ध । **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं प** २७।×२।. । प्रति शुद्ध छे। पत्र २९५, ३३५, ३३६, ४३३ नथी ।

क्रमाङ्क १५

भगवतीसूत्र वृत्ति पत्र ४३५ । **भा.** स. । **क** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** १८६१६ । **र. सं** ११२८। **ले. सं** १२०४। **संह.** श्रेष्ठ । **द** श्रेष्ठ । **लं. प** २९॥।×२॥।. । आ प्रतिना ताडपत्र पहोळां अने अतिसुकुमार छे ।

अन्त—

अष्टादश सहस्राणि षट् शतान्यथ षोडश । इत्येव मानमेतस्याः श्लोकमानेन निश्चितम् ॥१६॥
अङ्कतोऽपि १८६१६ ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥
प्राप्तप्रतिष्ठो भूभृत्सु सुपर्वममलङ्कृतः । शाखाश्रितो धर्कटानां वंशोऽस्ति भुवि विश्रुत. ॥१॥
तत्र मुक्तामणिप्रायः सजज्ञे वैसटः पुमान् । सद्वृत्तः कान्तिभृत् तस्य प्रेयसी वीरवत्यभूत् ॥२॥
जिनदेवः सुतस्तस्य जिनदेव्याः प्रियोऽभवत् । वरदेवोऽङ्गजस्तस्य बकुलश्रीश्च तत्प्रिया ॥३॥
सलक्षणस्तयोराद्यो नागेन्द्रश्च तत सुत । साढाक साल्हणश्चैव बोधिस्थो नाम पञ्चमः ॥४॥
प्रिया सलक्षणा सीता तत. सौभाग्यदेव्यथ । सहजगतिस्तेषां तु बहुश्रीश्च यथाक्रमम् ॥५॥
सलक्षणस्य पुत्रोऽभूत् वैर आस्ते तथाऽऽजडः । शिवादेवीति सोमीति तथाऽभूत् पुत्रिकाद्वयम् ॥६॥
नागेन्द्रस्याङ्गज. ख्यातो जिनचन्द्रः सतां प्रिय. । चन्द्रोज्ज्वलाऽपि यत्कीर्त्तिः सराग कुरुते जनम् ॥७॥
तस्य भ्राता कनिष्ठोऽस्ति यशोनागो यशोनिधिः । द्वितीयाचन्द्रलेखेव वन्द्या यस्य गुणावली ॥८॥
भगिनी पाहिनीत्याद्याऽभयश्रीरपरा तयोः । सरस्वतीव प्रत्यक्षा तृतीया तु सरस्वती ॥९॥
यज्जनन्याश्च सीतायाः पिता सलक्षणोऽजनि । विशुद्धशीलालङ्कारा माता तु श्रीमती पुनः ॥१०॥
यद्भर्त्ता नरदेवोऽभूत् सांपटस्वर्णिकाङ्गजः । यशोभटसुताकुक्षिशुक्तौ मौक्तिकसन्निभः ॥११॥
जिनचन्द्रसाधुदयितं जिनमति-कर्पूरदेविसञ्ज्ञे स्तः । कार्पूरोज्ज्वलशीले आद्यायाः सोमला पुत्री ॥१२॥
यशस्विनी यशोदेवी यशोनागस्य वल्लभा । पुत्रिका रूपलावण्यशालिनी पद्मलाऽभिधा ॥१३॥

साहकपुत्री चाऽऽस्ते पुत्री साल्हणसुतो विमलचन्द्रः । श्रीपार्श्ववीरनामा तथाऽपरो गुणमतिः पुत्री ॥१४॥
बोधिस्थस्याऽऽत्मजो जातः शुद्धबुद्धिर्महीलणः । रत्नीति पुत्रिकारत्नं विद्यते गुणसुन्दरम् ॥१५॥
अन्यदा चिंतयामास स्वीयस्वान्ते सरस्वती । दाने चतुर्विधेऽपि स्याद् ज्ञानदानं महाफलम् ॥१६॥

यतः—

पायं पायमपायवर्ज्जमखिलग्रन्थार्थपाथःपतिक्षीरं भूरि घनाघना इव परप्रीत्यै विधायोन्नतिम् ।
धन्यानां गुरवः प्रबोधकवचोधाराभिरासारिर्णी, वृष्टेः सृष्टिमहर्निशं श्रुतिपथक्षेत्रेषु कुर्वन्त्यमी ॥१७॥
गुरवोऽपि पुस्तकाभावात् कथं कुर्वन्ति देशनाम् । सर्वज्ञोपज्ञशास्त्राणामतो लेखनमुत्तमम् ॥१८॥
इत्थं विचिन्त्य मनसा लेखयित्वा सरस्वती । भगवत्यङ्गसूत्रस्य सद्वर्णं वृत्तिपुस्तकम् ॥१९॥
श्रीदेवचन्द्रसूरेः शिष्याणां देवभद्रसूरीणाम् । वेद–मुनि–भानुवर्षे [१२७४] भक्त्या विधिनाऽर्पयामास ॥२०॥
सूर्यशुभ्रांशुताडङ्का नभःश्रीः क्रीडति स्वयम् । ताराकपर्दकैर्यावित्तावन्नन्दतु पुस्तकः ॥२१॥ छ ॥

संवत् १२७४ वर्षे प्रथम ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे प्रल्हादनपुरे भगवतीवृत्तिपुस्तकमलेखीति ॥ छ ॥ मङ्गलं महाश्रीः । शुभं भवतु श्रीश्रमणसंघस्य ॥ छ ॥

पश्चाल्लिखित—

श्रीशत्रुञ्जयोज्जयन्तमहातीर्थयात्राविधान–प्रतिदिनपञ्चशतसाधर्मिकभोजनदान–निजधर्मनैष्ठिकताप्रकटिताऽऽनन्दकामदेवादिश्रावकव्रज–नित्यगुरुचरणसमाराधनसमर्जितसुकृत–नानानिजावदातव्रातसमजातकीर्त्तिकमलिनीपरिमलपरिमलितत्रिभुवनवलय–प्रमुखगुणश्रेणीधवलीकृतनिजकुलः साधुश्रीअभयचन्द्रश्चन्द्रावदातः समजनि । तत्पुत्र. सा० तेजा श्रावको बभूव । तस्य पुत्रौ सा० कर्मसिंह सा० पाल्हणसिंहावभूतां । सा० कर्मसिंहपुत्रेण सा० डुंगराऊसुश्रावकेण निजपितृव्य सा० पाल्हणसिंहपुण्यार्थं श्रीजिनपद्मसूरिसुगुरूपदेशेन श्रीभगवतीवृत्तिसिद्धान्तपुस्तकं संवत् १४०५ वर्षे मोचापितं आचन्द्रार्कं नन्दतात् ॥छ॥

क्रमाङ्क १६

भगवतीसूत्रवृत्ति पत्र ३९७ । **भा.** सं. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** १८६१६ । **र. सं.** ११२८ । **ले. सं.** १४८८ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३४×२॥.

अन्त—

॥ संवत् १४८८ वर्षे माग सुदि २ गुरुदिने श्रीमति श्रीस्तम्भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयमधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलययुगपवरोपमनिर्मिमनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारक श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्षिगूजरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन प. धरणाकेन सुत सा. साईयासहितेन श्रीसिद्धांतकोशे श्रीभगवतीवृत्तिपुस्तकं लिखापितं ॥छ॥ शुभं भवतु ॥

क्रमाङ्क १७

(१) **ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र** पत्र १–१४८ । **भा.** प्रा. ।

(२) **ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति** किंचिदपूर्ण पत्र १४९–२६४ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य ।

ले. सं. अनु. १३ शताब्दी उत्तरार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं प.** ३२॥×२॥. । पत्र २६४मां देवीनु चित्र छे । पत्र २, ३, २०, २१, १६८ नथी ।

क्रमाङ्क १८

(१) **ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र** पत्र १–११४ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ५४६४ ।

(२) **ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति** पत्र ११४-१९७। **भा.** सं.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ३८००। **र. सं.** ११२०।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाक लेखित ?]। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२१.। पत्र १, १२ नथी।

क्रमाङ्क १९

(१) **ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र वृत्ति** पत्र १-१४५। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ३७००। **र. सं.** ११२०।

(२) **उपासकदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र १४५-१७८। **भा.** स। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ९००।

(३) **अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति** पत्र १७८-१८९। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य।

(४) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र १८९-१९३। **क.** अभयदेवाचार्य। **उपा. अंत. अनु.** त्रणे सूत्रनी वृत्तिना **ग्रं.** १३००।

(५) **प्रश्नव्याकरणसूत्र वृत्ति** पत्र १९३-३५०। **भा.** सं.। **क.** अभयदेवाचार्य।

पत्र ३५० मां—

॥ संवत् १२०१ वैशाख वदि १२ **मुंडहटाग्रामे चांडहरिसुतेन** लेषककपर्देन नायाधम्मकथायगवृत्ति-लिखितेति ॥ मंगलं महालक्ष्मी ॥छ॥

(६) **विपाकसूत्र वृत्ति** पत्र ३५१-३७५। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ९००। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २७×२१.

अन्त—

॥ ज्ञाताधर्मकथादिषडंगविवरण समाप्तमिति ॥छ॥ मगल महाश्रीः ॥छ॥

श्रीमानूकेशवंशेऽप्यजनि समकरः श्रावको भावदेवः
स्वस्थाम्ना योगवीरः प्रचुरतरमहासत्त्वधामा समुद्रः।
तस्मात् प्रादुर्बभूव प्रकृतजनमनोलोचनामन्दमोदः
सूनुर्गौरांगयष्टिर्विहितबुधनुतिश्चन्द्रवद् देवचंद्रः ॥१॥
तस्याऽऽसीच्चारुचर्यार्जितविशदयशःपुंजशुभ्रीकृतांगो
निःसंगे सद्गुरौ च प्रविरचितनतिर्विल्हकाख्योऽङ्गजन्मा।
तस्याऽऽसन् जान्यवाहा इव शुचिविनया देवडो जेसलोऽन्ये
.. ...प्राच्यानुचीर्णश्रुतविधिरतयो. ....देवश्च पुत्राः ॥२॥
भार्याऽऽस्ते देवडस्य श्रुतसुगुरुगिरो देवभद्रस्य पौत्री
चित्तानडीति नाम्ना विनयगुणनिधिः सोमदेवस्य पुत्री।
शश्वी दुर्वासनानां जिनगुणमधुरोद्गानविक्षिप्तमत्री
पुण्यायालीलिखन् सा सुविवरणमदः श्रीषडगश्रुतस्य ॥३॥

इतश्च—

यस्योद्यद्वक्त्रचंद्रद्युतिभिरिह सुखेष्विंदुकांतेष्विवोच्चै
रुन्मुद्रेषु श्रवत्सु श्रमजलमिषतोऽखर्वगर्वप्रवाहम्।
वादींद्राणां विवादेष्ववनिपतिगृहप्रांगणानामयन्नात्
सिध्यन्त्याक्षालनश्रीर्जिनपतियतिपः कस्य न स्यान्मुदेऽसौ ॥४॥

तस्मै स्वस्मै हिताय व्यतरदवनता पुस्तक तत् षडग-
व्याख्यायाः ख्यातकीर्तेर्जगति जिनवचोदुर्गसेतुश्रियः सा ।
सत्यकारानुकारि त्वरितसुरशिनामंदमंदानुषगे
नंदत्वेतच्च तावच्चतुरुदधितटक्षुम्भ्यते यावदुर्व्यां ॥५॥छ॥

क्रमाङ्क २०

(१) **उपासकदशांगसूत्र** पत्र १-१९ । **भा.** प्रा. । **ग्रं. ८१२।**
(२) **अंतकृद्दशांगसूत्र** पत्र १९-३७ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ८९० ।
(३) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र** पत्र ३७-४१ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १९२ ।
(४) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र** पत्र ४१-६७ । **भा.** प्रा. ।
(५) **विपाकसूत्र** पत्र ६७-९५ । **भा.** प्रा ।
ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाक लेखित ?] **संह.** श्रेष्ठ । द. श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥।×२।.

क्रमाङ्क २१

(१) **उपासकदशांग वृत्ति** पत्र १-१९ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य ।
(२) **अंतकृद्दशांग वृत्ति** पत्र १९-२६ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य ।
(३) **अनुत्तरौपपातिकदशांग वृत्ति** पत्र. २६-२८ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य ।
(४) **प्रश्नव्याकरणवृत्ति** पत्र २८-१२६ । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** ४६३० ।
(५) **विपाकसूत्र वृत्ति** पत्र. १२६-१४४ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवसूरि ।
ले. सं. १४९० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥×२।.

अन्त—

संवत् १४९० वर्षे वैशाख सुदि १३ बुधे श्रीमति श्रीस्तंभतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुत.........
.....श्रीगुजरसुतेन रेषाप्राप्तमुश्रावकेन परीक्ष्य धरणाकेन पुत्र सा. साइयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे ज्ञाताधर्मकथा.................. . ...

क्रमाङ्क २२

(१) **उपासकदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र १-२३ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचाय ।
(२) **अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति** पत्र २३-३१ । **भा.** स । **क.** अभयदेवाचार्य ।
(३) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र ३१-३४ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** १३०० [**उपा. अंत. अनु.** त्रणेनी वृत्तिना] ।
(४) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र ३५-१५९ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** ४६०० ।
(५) **विपाकसूत्र वृत्ति** पत्र १५९-१८१ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ग्रं.** ९०० ।
॥ संवत् ११८५ ज्येष्ठ सुदि १२ शुक्रदिने श्रीमदणहिलपाटके ले. सोढलेन लिखितमिति ॥
(६) **उपासकदशांगसूत्र** पत्र १८२-२०२ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ८१२ ।
(७) **अंतकृद्दशांगसूत्र** पत्र २०३-२२२ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ७९० ।
(८) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र** पत्र २२३-२२८ । **भा.** प्रा. ।
(९) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र** पत्र २२८-२५९ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १२५० ।
(१०) **विपाकसूत्र** पत्र २५९-२८५ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १२१६ । **ले. सं.** ११८६ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९॥।×२।.

अन्त—

॥ एक्कारसम अंगं सम्मत्तं ॥छ॥ ॥ ग्रंथाग्रम् १२१६ ॥छ॥ ॥छ॥ मंगलं महाश्रीः ॥छ॥ ॥छ॥ संवत् ११८६ अश्विनसुदि ३ भौमे। अद्येह श्रीमदणहिल्लपत्तने

.... ।

श्रीमालवंश इह मेरुसमोऽस्ति किन्तु नाष्टापदामिकलितो न च कूटधारी ॥१॥

तस्मिन्नभून्मल्हणनामधेयश्छायाभिरामः सुमनोमनोज्ञः ।

वणिग्वरो निर्जरशाखितुल्यः पर सदा फल्गुवर्जितोऽसौ ॥२॥

तस्यास्तम............................. ....

....॥३॥

तयोरभूतां तनयौ गुणाढ्यौ सद्धर्ममार्गाचलचेतसावुभौ ।

आद्यस्तयोर्वेच्छक इत्यभिख्यया ख्यातः परोऽल्हः सुमना उदारधीः ॥४॥

न्यायात्त वित्तमर्हन्निगदितविधिना जायते पुण्यहेतुः

सम..।

....

......गृहीत्वा परमसुखकृते पुस्तके कर्ममुक्त्यै ॥५॥

यतिपतिजिनपतिसूरेः शिष्येभ्यो भक्तितो ददौ चेदम्। श्रीचित्रकूटसंस्थो वाच्छाख्यः श्रावको धीमान् ॥६॥

नैवास्थां तेषु दुःख क्षणमपि........... ....

....तेभ्य इद्धोऽपि दृष्टः।

निस्तीर्णस्तैर्भवाब्धिः स्वयमपि भजते मोक्षलक्ष्मी हुत तान्

श्रीयन्ते ते श्रिया ये विदधति भुवने पुस्तकज्ञानदानम् ॥७॥

आदर्शः किं खलक्ष्म्याः सुरपथगरमो राजहंसोऽथवा किं

... .।

......डिंडीरपिंडो घुसरित इति खे शंक्यते यावदिन्दु-

स्तावन्नयात् सभायां शुभगुरुभिरिदं पुस्तक पठ्य मानम् ॥८॥छ॥

क्रमाङ्क २३

(१) **उपासकदशांगसूत्र वृत्ति** पत्र ६१-६८। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य।

(२) **अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्ति** पत्र ६९-९५। **भा.** सं। **क.** अभयदेवाचार्य।

(३) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र वृत्ति अपूर्ण** पत्र ९५-२७२। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य।

ले. सं. अनु. १३ शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥×२.। पत्र १ थी ६०, १५९ थी १७९, १८१ थी १८५ नथी।

क्रमाङ्क २४

(१) **औपपातिकोपांगसूत्र** पत्र १-४३। **भा.** प्रा.।

(२) **औपपातिकोपांगसूत्र वृत्ति** पत्र ४४-१५८। **भा.** स.। **क.** अभयदेवाचार्य। **ग्रं.** ३१३५।

(३) **राजप्रश्नीयोपांगसूत्र** पत्र १५९-२२९। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २०७९।

(४) **राजप्रश्नीयसूत्र वृत्ति** पत्र २३०-३४५। **भा.** स.। **क.** आचार्य मलयगिरि।

ले. सं. १४८९। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३।×२।.

अन्त—

इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपाङ्गवृत्तिका समर्थिता ॥छ॥छ॥छ॥ श्री ॥ स. १४८९ वर्षे मार्ग शुदि ५ गुरुदिने श्रीमति श्रीस्तम्भतीर्थे अखिलत्रिकालज्ञाऽऽज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्षगुजरसुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन सा. धरणाकेन पुत्रसाईयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे उवाईयसूत्र-वृत्ति राजप्रश्नीसूत्र-वृत्ति लिखापितम् ॥ ॥छ॥ पुरोहित हरियाकेन लिखितम् ॥ श्री ॥ छ ॥

क्रमाङ्क २५

(१) जीवाभिगमसूत्र पत्र १-१०२। भा. प्रा.।

(२) जीवाभिगमसूत्र लघुवृत्ति पत्र १०३-१३५। भा. सं.। क. हरिभद्राचार्य।

(३) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र पत्र १३६-२६५। भा. प्रा.। ग्रं. ३८५०।

(४) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिचूर्णी पत्र २६६-३२९। भा. प्रा.।

ले. सं. १४८९। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ३१॥×२।.

अन्त—

जंबुद्दीवपण्णत्तीकरणाण चुण्णी सम्मत्ता ॥छ॥ जंबुद्दीवपण्णत्ती सम्मत्ता ॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्ग सुदि ५ गुरौ श्रीस्तम्भतीर्थे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशतः प. गूजरसुत प. धरणाकेन सुतसाइयासहितेन सिद्धान्तकोशे श्रीजीवाभिगमसूत्र-लघुवृत्ति जम्बूद्वीपसूत्र-जम्बूद्वीपचूलापुस्तक लिखापितम् ॥

क्रमाङ्क २६

जीवाभिगमसूत्र वृत्ति पत्र ३३६। भा. स.। क. आचार्य मलयगिरि। ग्रं. १४०००।

ले. सं. १४८९। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ३२॥×२।

अन्त—

॥ इति श्रीमलयगिरिविरचितायां जीवाभिगमटीका समाप्ता ॥छ॥ ग्रन्थाग्र चतुर्दश सहस्रा ॥छ॥श्री॥छ॥ श्री॥ सवत् १४८९ वर्षे वैशाख सुदि द्वितीयायां श्रीखरतरगच्छे अद्येह श्रीस्तम्भतीर्थे श्रीजिनभद्रसूरीणां उपदेशात् परीक्षगुजरसुतसाहधरणाकेन जीवाभिगमपुस्तक लिखापितमस्ति ॥ चिर नदत ॥

क्रमाङ्क २७

प्रज्ञापनासूत्र पत्र १७०। भा. प्रा। क. श्यामाचार्य। ग्रं. ७८८७।

ले. सं. १३८९। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ३३॥×२॥

अन्त—

॥छ॥ छत्तीसइम पद समत्तं ॥छ॥ ३६ पण्णवणा समत्ता ॥छ॥ अनुष्टुपछदसां ग्रन्थाग्रं ७८८७॥छ॥ मंगलं महाश्रीः ॥छ॥ स. १३८९ वर्षे ॥

क्रमाङ्क २८

प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति पत्र २२९। भा. सं.। क. आचार्य मलयगिरि।

ले. सं. अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ३३॥×२॥।

अन्त—

इति श्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां षट्त्रिंशत्तमपद समर्थितम् ॥छ॥ समर्थिता प्रज्ञापना टीका॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

॥यस्मिन् जाग्रत्सुपुरुषसुमस्तोमसौरभ्यभङ्गीभोगाकृष्टैर्बुधमधुकरैस्तन्यते कीर्त्तिगीतिः ।
पृथ्वीकान्ताकमनकरणप्राणशृङ्गारकोऽसौ पुष्पापीडो जगति जयति श्रीमदूकेशवंशः ॥१॥

तस्मिन् सिद्धिवधूवशीकृतिविधौ गाढानुबन्धान्न्यधाद् यः स्वस्वान्तवसुन्धरान्तरतुल सम्यक्त्वसत्कार्मणम् ।
सर्वाङ्गीणविभूषण त्वचकलच्छील शरीरेऽसकौ पुन्नागोऽभवदासनाग उदयी नाहट्टवंशोद्भवः ॥२॥

कुमरपाल इति प्रथमोऽङ्गभूरभवदस्य विभास्वरभाग्यभूः ।
तदनुजोऽजनि दुर्लभनामकः कलकलाकलनाकुशलात्मकः ॥३॥

देवार्चागुरुपर्युपास्तिगुणवद्दानादिषट्कर्म्मणां कर्त्ता विप्र इवान्वह कुमरपालः श्राद्धरत्न जयी ।
श्रीशत्रुञ्जयदेवदेवकुलिकां श्रीमानतुङ्गाभिधप्रासादाभरण विधाय नृजने योऽलात् फलं निस्तुलम् ॥४॥

समजनि जनी मान्या धन्याभिधाऽऽस्यसुधारसप्रसरमधुरव्याहारोवृधा सुशीलरमानघा ।
यतिजनसदासेवाहेवाकताकलिता हि याऽजनयत निज नामान्वर्थं विवेकवती सती ॥५॥

स्वःशाखेव सुखावहान् कलफलान् प्रासूत सा सत्सुतान्, ख्यातानीश्वर-लौहटौ कुमरसिंहं चेति सत्पुत्रिके ।
गोगीं नाम सरस्वतीं च विदितैरेतैरपत्योत्तमैर्या कांचित् कल्याचकार परमां रामासु शोभां भुवि ॥६॥

उदयश्रीति नाम्नाऽभूदीश्वरस्य सधर्मिणी । समुद्रतनया ख्याता लक्ष्मीर्लक्ष्मीपतेरिव ॥७॥

तयोः सुतोऽभूत् थिरदेवनामा बभौ द्वितीयो जिनदेवसञ्ज्ञः ।
ततस्तृतीयोऽजनि वीरदेवस्त्रयोऽपि मूर्त्ता इव पुरुषार्थाः ॥८॥

इतश्च—

पृथ्वीराजनृराजराजसमितौ प्रौढप्रमाणायुधैः, श्रीपद्मप्रभसूरिवीरमुदयद्दर्पं विजित्वा (त्य ?) क्षणात् ।
वीराश्लेषसुखोन्मुखी जयरमा येनोपयेमेतमां, सेषोऽशेषजिगीषुराड् जिनपतिर्जज्ञे यतीन्द्रः पुरा ॥९॥

तदीयपदसम्पदां स समपादि पात्र पर, जिनेश्वरयतीश्वरः सुकृतवारिवार्द्धिर्यकः ।
निशाकरकरोत्करप्रवरसौवकीर्त्तिच्छटासिताभ्रदलभङ्गिभिर्व्यधित पत्रभङ्गीर्दिशाम् ॥१०॥

रेजे श्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुस्तद्गच्छलक्ष्मीपतिर्मुक्ताहारतुषारतारसुयशःप्राग्भारविश्वम्भरिः ।
यात्रां यत्र वितन्वति क्षितितले मिथ्यात्वदस्युच्छिदे, तद्गृध्ना इव ते दिगतगतयः पाषण्डिनो जज्ञिरे ॥११॥

शुद्धे यद्वक्त्रसौधे कलिमलविलयक्लृप्तसर्वर्तुकान्ते कान्ते श्रीवाणिदेव्याः सुखमसुखमुषि प्रत्यह सवसन्त्याः ।
लीलादोलानुकारं कलयति युगलीकल्पयोः कर्णपाल्योस्तत्पट्टस्वर्णशैले जिनकुशलगुरुः स्वस्तरु सोऽस्त्युदीतः ॥१२॥

प्राहुर्ज्ञानचरित्रदर्शनमय श्रीमुक्तिमार्गं जिना, विज्ञानेन विना क्षमे न भवितुं चारित्र-सद्दर्शने ।
ध्यानज्ञाननिबन्धन च समयज्ञानैकतानात्मनां, साधूनां बहुशास्त्रपुस्तकततेर्विश्राणन गीयते ॥१३॥

तन्मोक्षलक्ष्मिपरिरम्भमहोत्सवोत्कैः, श्राद्धैर्विशुद्धहृदयैर्विकसद्विवेकैः ।
जैनागमावगमसङ्गतमयतेभ्यः सिद्धान्तपुस्तकततिः सतत प्रदेया ॥१४॥

इति हितमुपदेश सन्मरदावभासं जिनकुशलयतीन्दोर्वक्त्रपद्मान्निरीतम् ।
मधुकर इव वर्यानन्दसन्दोहसिन्धुं स्म पिबति बत वेगादीश्वरः श्राद्धरत्नम् ॥१५॥

श्रीमत्प्रज्ञप्त्युपाङ्गागमविवृतिमिमां पुस्तयुग्मे सुवर्ण्णैर्ज्यायोन्यायात्तवित्तैर्निजसुकृतकृते लेखयित्वा प्रधानाम् ।
ध्यानज्ञानप्रभामे विधिपथपथिकः पुण्यभूरीश्वराख्यः, श्राद्धोत्तसः प्रभुश्रीजिनकुशलगुरुभ्यो ददौ.........॥१६ =
ब्रह्मांडालयमण्डपप्रतिकृतिर्व्योमाङ्गणे तीर्थकृत्कीर्त्तिः कीर्त्त्यनटीस्फुटीकृतगतिर्नृत्य परं पुष्णती ।

यावत् खेचरचक्रवालपरिषत्प्रीतिप्रदा जायते तावत् क्रीडतु मृङ्गवत् कृतिकराम्भोजेष्वदः पुस्तकम् ॥१७॥
श्रीजिनकुशलयतीशां निकटे कर्पूरपूरगद्भुषः। विदधल्लब्धिनिधानोऽभिषेक आधात् प्रशस्तिमिमाम् ॥१८॥
इति साहुईश्वरलेखितपुस्तकप्रशस्तिः ॥

क्रमाङ्क २९

(१) **प्रज्ञापनासूत्र** पत्र २३३। **भा.** प्रा.। **क.** श्यामाचार्य। **ग्रं.** ८०२०।

अन्त—

॥ इति पन्नवणाए भगवतीए समुग्घायपदं छत्तीसइमं सम्मत्त ॥छ॥

प्रत्यक्षर निरूप्यास्या ग्रन्थमान स्फुटाक्षरम्। अष्टौ श्लोकसहस्राणि विंशत्यधिकानि निश्चितम् ॥

(२) **प्रज्ञापनासूत्र लघुवृत्ति** पत्र २३४–३५०। **भा.** स.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ग्रं.** ३९३८।

ले. सं. १४८९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२॥×२।। पत्र ७, ११, १५, १९, ५६, २४७–२४९, २५३, २५४, २६१–२६३, २९१ नथी।

अन्त—

॥छ॥ इति प्रज्ञापनाप्रदेशव्याख्यायां षट्त्रिंशत्तम व्याख्या समाप्तेति ॥छ॥ समाप्ता चेय प्रज्ञापनाप्रदेशव्याख्या ॥ कृतिरिय श्रीहरिभद्रसूरेः ॥छ॥ ग्रन्थाग्र ३९३८ ॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्ग सुदि १० सोमे प्रज्ञापनासूत्रप्रदेशव्याख्या लिखापिता सा बलिराजेन ॥छ॥ श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणां भांडागारे।

क्रमाङ्क ३०

प्रज्ञापनासूत्र वृत्ति पत्र ३९५। **भा.** स.। **क.** आचार्य मलयगिरि।

ले. सं. १४८९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.

अन्त—

॥ इति श्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां षट्त्रिंशत्तम पद समर्थित ॥ छ ॥ समाप्ता प्रज्ञापनाटीका ॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे श्रावण सुदि १० गुरावद्येह श्रीस्तंभतीर्थे खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशात् परीक्षिधरणाकेन प्रज्ञापनाबृहद्वृत्तिर्लिखापिता ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीभूयात् ॥

क्रमाङ्क ३१

(१) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र** पत्र १–१६४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४१४६।

(२) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र चूर्णी** पत्र १६५–२३३। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १८६०।

ले. सं. अनु १४ शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २७×२।.

आदि—

णमिऊण विणयविरतियकरकमलकयजली पयतो। सुरवरमणिरयणुक्कडफुरतपरिघट्टपावीढ ॥१॥
वरवसहमत्तगयवरसललियविक्कतकंतगतिगमण। वरहेमतवितचपयदिणकरकरसप्पह उसह ॥२॥
अवसेसे य जिणिंदे णमिउं चदिंदधणयपणिपतित्ते। करणविभावण वोच्छ जबुद्दीवस्सऽह इणमो ॥३॥
विक्खंभ वग्ग दसगुण करणी वट्टस्स परिरओ होइ। विक्खभ पायगुणिओ परिरओ तस्स गणितपद ॥४॥
जंबुद्दीवस्स विक्खभ पावेऊण इमं लक्ख १०००००, एयस्स वग्गो दसगुणं च जात इमं, एयस्स मूलगहियं इमं।

अन्त—

जंबुद्दीवपण्णत्तीकरणाणं चुण्णी समत्ता ॥ जंबुद्दीवपण्णत्ती समाप्ता ॥ ग्रं. १८६० ॥

श्रीश्रीमालकुले सुधांशुधवले पुंरत्नचक्राकुले, धैर्यौदार्यविनिर्जितामरगिरिस्वःपादपालीचले ।
श्रीमद्भूपतिमन्त्रिमुख्यविविधव्यापारचिन्ताकुले, ब्राह्मीसिन्धुसुताविलाससदने प्रक्षालितान्तर्मले ॥१॥
रेजतुः परहितौ सहोदरौ सूरिवर्यजिनभक्त-बाहडौ । प्राप्तसाधु-गृहधर्मसेवधी योगिनाथजिनदत्तसूरितः ॥२॥युग्मम् ॥
जज्ञे बाहडदेहजो जिनरतः साधारणः श्रीपतिर्यद्दानात् समजायतात्र भवने दानेश्वरोऽर्थिव्रजः ।
तत्पुत्रोऽजनि उज्वलो गतमलः सत्साधुसेवाकुलो, यत्का कायलता सदा समुदिता रेजे परार्थोद्यता ॥३॥
कृत्वोत्सर्जनदीपिकां निजकरे सद्वाक्यवर्त्यन्वितां, भावस्नेहसमुज्ज्वलां विधिपथ या दर्शयत्यङ्गिनाम् ।
सा श्रीशीलसमुज्ज्वलाम्बरधरा स्वाध्यायनित्याशना, तस्याजायत धर्मकर्मनिरता जीवदही श्राविका ॥४॥
आद्यस्तस्यास्तनूजः परहितनिरतो राजसिंहो विवेकी, सप्तक्षेत्र्यां स्वकीय वपति निजभुजोपार्जित योऽर्थजातम् ।
तस्यैवाभाति वीरप्रवचनविविधोत्सर्पणाबद्धकक्षो, धर्मज्ञो मोषदेवो विधिपथजलधिं सेवते विष्णुवद् यः ॥५॥

रयवति गुरुसंघे सघपाश्चात्यभारो निजविभवचयेनाङ्गीकृतो दुर्द्धरोऽपि ।
विमलविमलशैले कारिता च प्रतिष्ठा जिनकुशलगुरूणां पाणिपद्मेन याभ्याम् ॥६॥

आद्यस्याऽऽद्या वितरणरता प्रेमिका भाति कान्ता धर्मिण्याख्या नतगुरुजिना सत्यसञ्ज्ञा द्वितीया ।
जाताः पुत्रास्तदुदरभवाः पाण्डवाभाः प्रवीणाः पुत्र्यश्चान्याः कुमतविरताः श्राविकाधर्मभाजः ॥७॥
तत्राद्यः पूर्णसिंहाख्यो द्वितीयो धर्णसिंहकः । अन्ये च हेमसिंहाद्याः सुता भान्ति महीतले ॥८॥

इतश्च—

जज्ञे चान्द्रकुले जिनेन्दुसुगुरू रूपास्तमीनध्वजस्तच्छिष्यः परवादिजिज्जिनपतिस्तत्पट्टलक्ष्मीपतिः ।
श्रीमत्सूरिजिनेश्वरो युगवरो भाग्यावलीमेदुरस्तत्पट्ट च जिनप्रबोधयतिपो विद्याम्बुपाथोनिधिः ॥९॥
येषां ध्यानतपोबलेन सतत जाताः सुराः किङ्करा, व्याख्यानामृतमग्नजन्तुनिकरा वाञ्छन्ति नो शर्कराः ।
कीर्त्तिव्याप्तदिगम्बराः स्मरहराः सौभाग्यलक्ष्मीभरा, रेजुस्ते जिनचन्द्रसूरिगुरवस्तत्पट्टलक्ष्मीवराः ॥१०॥
जज्ञुः पट्टे तदीये विबुधपतिनताः प्रीणितप्राणिजाता, ज्ञानध्यानैकवित्ता जिनकुशलबुधाधीश्वराः शान्तचित्ताः ।
चक्रुर्येषां मिषेण ध्रुवमवनितले सघभाग्यादिदानीं, श्रीजम्बूस्वामिमुख्या युगवरनिचयाः स्वोदय सर्वलब्ध्या ॥११॥
सर्वज्ञे शिवपत्तन गतवति श्रीद्वादशाङ्गीलवा, गीतार्थैः करुणाम्पदैः परकृते न्यस्ताः पुरा पुस्तके ।
तेषां लेखनमुख्यकैः प्रतिदिन यः कारयत्यादरात् तस्यागण्यमुदेति पुण्यमधिक प्राणान्नदानोद्भवात् ॥१२॥

श्रुत्वा व्याख्यां तदीयां गुरुवचनरतो राजसिंहोऽत्र साधु-
जम्बूप्रज्ञप्तिसञ्ज्ञस्य बहुसुखकृते तानमात्रोरिदानीम् ।
पुस्तं श्रीसत्रशाला शिवसुखजनिका व्यञ्जनाढ्या विशाला,
सौन्दर्याङ्गोन्थयुक्तो व्यरचयत मुदा लेखयन्नन्यपुस्तान् ॥१३॥

मृगाङ्कं लालयन्नेष मृगाङ्को गगनाङ्गणे । यावदाह्लादते विश्वं तावन्नन्दतु पुस्तकम् ॥१४॥

पुस्तकप्रशस्तिः समाप्तेति ॥छ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥

क्रमाङ्क ३२

(१) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र** पत्र ९७ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ४१४६ ।

ले. सं. १३७८ ।

॥ **जम्बुद्दीवपन्नत्ति सम्मत्ता** ॥छ॥ ग्रन्थसख्या ४१४६ ॥ सवत १३७८ **पोष** वदि ५ दिने **समर्पिता** ॥छ॥ **शुभं** भवतु सघस्य ॥

(२) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र चूर्णी** पत्र १–४० । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १८६० ।

(३) **सिद्धप्राभृतसूत्र** पत्र ४१–४४ । **भा.** प्रा. । गा. १२१ ।

(४) **सिद्धप्राभृतसूत्र वृत्ति** पत्र ४४–६१ । **भा.** प्रा. ।

(५) **निर्यावलिकादिपंचोपांगसूत्र** पत्र १–२५ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ११०० । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥×२॥.

क्रमाङ्क ३३

(१) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र** पत्र १–१०१ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ४१४६ ।

(२) **जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र चूर्णी** पत्र १०२–१४० । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १८६० ।

(३) **सिद्धप्राभृतसूत्र** पत्र १४१–१४४ । **भा.** प्रा. । **गा.** १२१ ।

(४) **सिद्धप्राभृतसूत्र वृत्ति** पत्र १४४–१६० । **भा.** प्रा. ।

ले. सं. अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥×२॥

क्रमाङ्क ३४

(१) **सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र** पत्र. १–१०१ । **भा.** प्रा. ।

(२) **ज्योतिष्करंडकसूत्र वृत्तिसह** पत्र. १०२–१६५ । **भा.** प्रा. ।

क. पादलिप्ताचार्य । ग्र. १५८० ।

आदि—

॥ ५० ॥ णमो अरहंताण ॥

कातूण णमोक्कार जिणवरवसभस्स वद्धमाणस्स । जोतिसकरंडगमिण लीलावट्टीव लोगस्स ॥

कालण्णाणाभिगमं सुणह समासेण पायडमहत्थ । णक्खत्तचंदसूरा जुगम्मि जोग जध उवेंति ॥

कचि वायग वालब्भं सुतसागरपारग दढचरित्तं । अप्पस्सुतो सुविहिय वंदिय सिरसा भणति सिस्सो ॥

सज्झायज्झाणजोगस्स धीर ! जदि वो ण को पि उवरोधो । इच्छामि ताव सोतु कालण्णाण समासेण ॥

अह भणति एवभणितो उवमाविण्णाणणाणसपण्णो । सो समणगधहत्थी पडिहत्थी अण्णवादीण ॥

दिवसिय रातिय पक्खिय चउमासिय तह य वासियाण च । णिअयपडिक्कमणाणं सज्झायस्सावि य तदत्थे ॥

सुण ताव सूरपण्णत्तिवण्णण वित्थरेण ज णिउण । थोगुच्चएण एत्तो वोच्छं उल्लोगमेत्ताग ॥

अंत—

कालण्णाणसमासो पुव्वायरिएण नीणिओ एसो । दिणकरपण्णत्तीतो सिस्सजणहिउपियो [.........] ॥

पुव्वायरियकयाय नीति समससमएण(?) । पालित्तएण इणमो रइया गाहाहिं परिवाडी ॥ नमो अरहंताण ।

कालण्णाणस्स इणमो वित्ती णामेण चद त्ति । सिवनंदिवायगेहिं तु रोयिगा जिणदेवगतिहेतूणं ॥छ॥ [ग्रं.]१५८० ॥

(३) **ज्योतिष्करंडकसूत्र** पत्र १६६–१७९ । **भा.** प्रा. ।

(४) **चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र** पत्र १८०–२५६ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १८३१ ।

ले. सं. १४८९ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २३।×२।

आदि—

॥ नमो अरिहंताण ॥

जयति नवनलिणिकुवलयवियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो । वीरो गइंदमयगलसललियगयविक्कमो भयवं ॥

नमिऊण असुरसुरगरुलहुयगपरिवंदिए गयकिलेसे । अरिहे सिद्धायरिओवज्झाए सव्वसाहू य ॥
फुडवियडपायडत्थं इणमो पुव्वसुयसारनीसंद । सुहुमगणिओवइट्ठं जोतिसगणरायसंबद्धं ॥
नामेण इंदभूइ त्ति गोतमो वदिऊण तिविहेण । पुच्छइ जिणवरवसभं जोइसरायस्स पण्णत्तिं ॥

अन्त—

तत्थ खलु इमे अट्ठासीतिं महागहा पण्णत्ता । त जहा–इगालए वियालए लोहियक्खे सणिच्चरे आहुणीए पाहुणीए कणए कणगसंताणए सोमे सहिए आसासणे भए कज्जोयए कव्वडए आगरए रडभए सखे सखवण्णे सखवण्णाभे कसे कसवण्णे कंसवण्णाभे रुप्पा रुपी रुप्पोभासे णीले णीलभासे दगे तबवण्णे तिले तिलपुप्फवण्णे काए काकबे इदग्गी धूमकेतू हरी पिंगलए बुहे सुक्के बहस्सती राहू अगत्थी माणवए कालव्वासे धुरे पमुहे वियडे विसंधी णियल्लोयल्ले जडिले आतिलए अरुणे अग्गिलए काले महाकाले सत्थीए सोवत्थिए वद्धमाणए पूसमाणए अकुसे पल्लके निच्चालोए निच्चुज्जोये सयपभे ओभासे उयकरे खेमकरे अपराजिए अरए असोगे विगतसोगे विमले विमुहे वितट्टे वित्तत्थे विभासे सकले सुव्वए अणियट्टी एकजडी दुजडी करे करिए रायग्गले पुप्फकेतु भावकेतू ।

इति एस पागडअभव्वजणहियय्दुलभा इणमो । उक्कित्तिआ भगवती जोतिसरासि(ति)स्स पण्णत्ती ॥
एस गहिया वि सती थद्धे गारवियमाणिपडणीए । अबहुस्सुए न देया तव्विवरीए भवे देया ॥
जम्हा धिइउट्ठाणुच्छाहकम्मबलवीरियपुरिसकारेहिं । जो सिक्खिओ वि सतो अभायणे पक्खिवेज्जासि ॥
सो पवयणमुक्तगुणो सघबाहिरो णाणविणयपरिहीणो । अरहंत थेर पवयण गणहर किर होनि वोलीणो ॥४॥
तम्हा धितिउट्ठाणुच्छाहबलवीरियसिक्खिय नाण । धारेयव्व नियय न य अविणीएसु दायव्व ॥छ॥

इति चंदपण्णत्ती सम्मत्ता ॥छ॥ ग्रन्थाग्र १८३१ ॥छ॥छ॥छ॥

सम्वत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष शुदि पञ्चम्या तिथौ गुरुदिने श्रीमति श्रीस्तम्भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाऽऽज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयवन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृत-पापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रमरसमश्रीमत्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष सा. गुजरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष्यधरणाकेन पुत्र सा. साईयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे सूर्यपन्नत्तीसूत्र-टिप्पनक चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र लिखापितम् । पु. हरीयाकेन लिखितम् ॥छ॥

क्रमाङ्क ३५

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति अपूर्ण पत्र २७६ । **भा.** स । **क.** आचार्य मलयगिरि । **ग्रं.** ९१२५ ।
ले. सं. अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०।×२॥ । पत्र १६३, १६४ नथी ।

क्रमाङ्क ३६

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति पत्र ३१० । **भा.** स. । **क.** आचार्य मलयगिरि । **ग्रं.** ९१२५ ।
ले. सं. १४८९ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २३॥×२।.

अन्त—

॥ सवत् १४८९ वर्षे भाद्रपद सुदि षष्ठी शुक्रे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये परीक्षिगूजरसुत परीक्षि धरणाकेन सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तिपुस्तक लिखापित ॥छ॥श्रीः॥

क्रमाङ्क ३७

चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वृत्ति पत्र ३३५। **भा.** स.। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ९५००।
ले. सं. १४८९। **संग्र.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २३।×२।.

आदि—

॥ ॐ नमः श्रीवर्द्धमानाय ॥

मुक्ताफलमिव करतलकलितं विश्वं समस्तमपि सततम्। यो वेत्ति विगतकर्मा स जयति नाथो जिनो वीरः॥१॥
सर्वश्रुतपारगता प्रतिहतनिःशेषकुपथसन्तानाः। जगदेकतिलकभूता जयन्ति गणधारिणः सर्वे ॥२॥
विलसतु मनसि सदा मे जिनवाणी परमकल्पलतिकेव। कल्पितसकलनरामरशिवसुखसन्तानदुर्ललिता ॥३॥
चन्द्रप्रज्ञप्तिमिह गुरूपदेशानुसारतः किञ्चित्। विवृणोमि यथाशक्ति स्पष्टं स्वपरोपकाराय ॥४॥
तत्राविघ्नेनेष्टप्रसिद्ध्यर्थमादाविष्टदेवतास्तवमाह ॥छ॥

जयइ नवनलिणकुवलयवियसियसतपत्तपत्तलदलच्छो। वीरो गइदमयगलसललियगयविक्कमो भगवं ॥

अन्त—

वन्दे यथास्थिताशेषपदार्थप्रविभासकम्। नित्योदितं तमोऽस्पृष्टं जैनं सिद्धान्तभास्करम् ॥१॥
विजयन्तां गुणगुरवो गुरवो जिनवचनभासनैकपराः। यद्वचनवशादहमपि जातो लेशेन पटुबुद्धिः ॥२॥
चन्द्रप्रज्ञप्तिमिमामतिगम्भीरां विवृण्वता कुशलम्। यदवापि मलयगिरिणा साधुजनस्तेन भवतु कृती ॥३॥

इति श्रीमलयगिरिविरचितायां विंशतितमं प्राभृतं समाप्तम्। समाप्ता चन्द्रप्रज्ञप्तिटीका। ग्रन्थाग्र ९५०० ॥ सम्वत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि २ गुरौ श्रीमति श्रीस्तम्भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दननन्दनवनमलययुगप्रवरोपमर्मिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रमरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन रेषाप्राप्तश्रावकेन सा. उदयराज सा बलिराजेन श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिटीका लिखापिता ॥

क्रमाङ्क ३८

(१) **जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र चूर्णी** पत्र ७५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १८६०।
पत्र ३४, ४०, ४२, ४८, ५३, ५९, ६२, ६९, ७१ नथी। अंक विनानां चार पत्र छे।

(२) **सिद्धप्राभृतसूत्र** पत्र १–८। **भा.** प्रा.। **गा.** १२१।

(३) **सिद्धप्राभृतसूत्र वृत्ति** पत्र ८–४४। **भा.** प्रा.।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाके अथवा बलिराज–उदयराजे लखावेली ?]। **संग्र.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १७॥×१॥.। पत्र २६, २९ नथी।

क्रमाङ्क ३९

(१) **निर्यावलिकादिउपांगसूत्रपंचक संपूर्ण** पत्र २९–८३। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ११०९।

(२) **निर्यावलिकादिउपांगसूत्रपंचक वृत्ति** अपूर्ण पत्र ८३–११४। **भा.** सं.। **क.** श्रीचन्द्रसूरि।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध (धरणाके लखावेली ?)। **संग्र.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२.। पत्र ४४, ४५, ५३, ५५, ५६, ५८, ५९, ६२, ६३, ६८, ७०–७२ नथी।

क्रमाङ्क ४०

(१) **कल्पसूत्र (पर्युषणाकल्प-दशाश्रुतस्कंधसूत्र अष्टमाध्ययन)** पत्र १-७४। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी।

(२) **कालिकाचार्यकथा पद्य** पत्र ७५-८०। **भा.** प्रा.। **गा.** ८४।

आदि—

अत्थि धरावासपुरे नरनाहो वयरसिंहनामो त्ति।

(३) **पर्युषणाकल्पनिर्युक्ति** पत्र ८१-८६। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ६७।

(४) **पर्युषणाकल्पचूर्णी** पत्र ८६-१३३। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ७००। **ले. सं.** १४०४।

॥पज्जोसमणाकप्पो अट्ठमज्झयण परिसमाप्तं ॥छ॥ स. १४०४ वर्षे पौष वदि ३ भौमे लिखितं ॥छ॥ ग्रन्थाग्र ७०० कल्पसूत्रचूर्णी ॥छ॥

(५) **पर्युषणाकल्पटिप्पनक** पत्र १-२५। **भा.** स.। **क.** पृथ्वीचन्द्रसूरि। **ग्रं.** ६७०।

(६) **कालिकाचार्यकथा गद्य अपूर्ण** पत्र १०३-१२९। **भा.** प्रा.।

संह. श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं.प.** १४॥×२।.

आदि—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे धरावास नाम नयर।

क्रमाङ्क ४१

(१) **दशाश्रुतस्कंधसूत्रचूर्णी** पत्र १-५०। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २२५०।

(२) **दशाश्रुतस्कंधसूत्र** पत्र ५०-९२। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** २०००।

(३) **दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्ति** पत्र ९२-९६। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी।

(४) **महत्पंचकल्प भाष्य** पत्र ९७-१७४। **भा.** प्रा.। **क.** संघदास गणि क्षमाश्रमण। **गा.** २५७४।

अन्त—

॥छ॥ महत्पंचकल्पभाष्य। संघदासक्षमाश्रमणविरचित समाप्त ॥छ॥ गाहग्गेण पचवीस सयाइ चउहत्तराइ॥ २५७४। सिलोयग्गेण बत्तीस सयाणि पचत्तीसाणि ३२३५ ॥छ॥

(५) **पंचकल्पचूर्णी** पत्र १७५-२४९। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३२३५।

ले. सं. अनु. १३ शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २२×२॥.।

पत्र १६१, १६२, १६५-१७२, १७५ नथी।

क्रमाङ्क ४२

(१) **कल्पसूत्र (पर्युषणाकल्प-दशाश्रुतस्कंधसूत्र अष्टमाध्ययन)** पत्र १-१३७। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** १२१६।

॥ग्रन्थाग्र १२१६ ॥छ॥ शुभ भवतु सकलसघस्य॥ साहु हेमासुत वोहडिना आत्मीय मातृश्रे

(२) **कालिकाचार्यकथा गद्य अपूर्ण** पत्र १३७-१७५। **भा.** प्रा.।

ले. सं. अनु. १४ शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥×२.

आदि—

अत्थि इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे धरावास नाम नयर।

पत्र ११, १२, १४, २३, ३२, ३४, ३५, ४१, ४६, ७०, ७१, ७४, ८४, ९१-९४, ९६, ९८, १००, १०४, १२८, १५४, १५६,-१५९, १६४, १६६, १६७ नथी।

क्रमाङ्क ४३

(१) **कल्पसूत्र (पर्युषणाकल्प-दशाश्रुतस्कंधसूत्र अष्टमाध्ययन.)** पत्र. १–८५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** १२१६।

(२) **कालिकाचार्यकथा गद्य** पत्र. ८६–१११। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३६०।

आदि—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे धरावास नाम नयरं।

अन्त—

सलेहण विहेउ अणमणविहिणा दिव पत्तो ॥

कालिकाचार्यकथानकं समाप्तम् ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं कथा ३६० ॥ एवं ग्रंथ १५७६ ॥ छ ॥

(३) **पर्युषणाकल्पचूर्णी.** पत्र. ११२–१५७। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी। **संद०** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२॥

क्रमाङ्क ४४

(१) **कल्पसूत्रवृत्ति (संदेहविषौषधि)** पत्र. १–१४६। **भा.** स.। **क.** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** २१६८।

(२) **कल्पनिर्युक्तिवृत्ति.** पत्र. १४६–२०१। **भा.** प्रा.। **क** जिनप्रभसूरि।

ले. सं. अनु १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाक लेखित]। **संद** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥×१॥।। अंतिम पत्र नथी।

क्रमाङ्क ४५

पर्युषणाकल्पचूर्णी. पत्र. १–२७। **भा.** प्रा। **ग्रं.** ७००। **ले सं.** अनु १५ शताब्दी उत्तरार्ध। **संद** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १४×२।। **कागळ** उपर लखेली पोथी छे।

क्रमाङ्क ४६

कल्पलघुभाष्य (बृहत्कल्पलघुभाष्य) अपूर्ण पत्र १७९। **भा.** प्रा। **क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **ग्रं.** ६५६८। **ले. सं** अनु १३ शताब्दी पूर्वार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥×२॥

पत्र १६५, १७१, १७४, १८०–१८३ नथी। पत्र १६७ थी १८३ कागळ उपर नवां लखावेलां छे।

क्रमाङ्क ४७

(१) **बृहत्कल्पसूत्र** पत्र १–१२। **भा.** प्रा। **क** भद्रबाहुस्वामी।

(२) **कल्पलघुभाष्य** पत्र १३–२३८। **भा.** सं। **क** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **गा.** ६६००। **ले. सं.** १४८८। **संद.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२×२।

अन्त—

॥ इति लघु कल्पभाष्य समाप्तम् ॥छ॥ सर्वसख्या गाथा ६६०० ॥ शुभं भवतु श्रीश्रमणसघस्य ॥छ॥ सवत् १४८८ वर्षे श्रीमत्खरतरगच्छनायकश्रीजिनराजसूरिपट्टप्रद्योतसहस्रकरकिरणानुकाराणां श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परमदेवगुर्वाज्ञापालक परोपकारकारक प. धरणासुश्रावकेण पु. सा. साइया सा. महीराज सा. जिणदासादिसारपरिवारकलितेन श्रीज्ञानकोशे सौवविभवव्ययेनैतत्पुस्तकं लेखयांचक्रे। वाच्यमानं चिरं जयतु ॥

क्रमाङ्क ४८

कल्पबृहद्भाष्य प्रथमखंड पत्र ३११ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध **धरणाक** लेखित । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २३×२।। पत्र. १, २४, २७, २९, २९५ थी २९७, ३००, ३०९, ३११ नो टुकडो नथी ।

अन्त—

.. ..**म**हीराज प. **जि**णदासादिपरिवारयुतेन श्री**कल्प**बृहद्भाष्यपुस्तकमलेखि । वाच्यमानं चिरं नन्दतु ।

क्रमाङ्क ४९

कल्पबृहद्भाष्य प्रथमखंड पत्र २०२ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १४९० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२॥×२।

अन्त—

सामी अणुण्णविज्जति दुमस्स जस्सोग्गहो व असधीणे । कूरसुरपरिग्गहिते इणमो गमयो मुणेतव्वो ॥
णेच्छते वा अण्णो ईसा खलु सुरेण ज परिग्गहिय । तत्थ वि सो चेव गमो सगारपिंडम्मि म गणतो ॥
जक्खो च्चिय होति तरो पत्तिः ॥छ॥

सवत् १४९० वर्षे मार्गशीर्ष सुदि पञ्चम्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाऽऽज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत**खरतर**गच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगप्रवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गूजर**सुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन सा **धरणाकेन** पुत्र **साइ**यासुतसहित श्रीसिद्धान्तकोशे **बृहत्**कल्पचूर्णिपुस्तक (बृहत्कल्पबृहद्भाष्यपुस्तक) लिखापितम ॥छ॥

क्रमाङ्क ५०

कल्पचूर्णी. पत्र ३३४ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १४७८४ । **ले. सं.** १३८९ । **संह** श्रेष्ठ । **द** श्रेष्ठ । **लं. प** ३२।×२॥ । पत्र १५६, १६३ नथी ।

अन्त—

॥ **कल्प**चूर्णी ॥छ॥ विक्रम स १३८९ भाद्रवा सुदि चतुर्थीदिने लिखितमिदम् । ग्र. १४७८४ ॥
उदकानलचौरेभ्यो मूषकेभ्यस्तथैव च । रक्षणीयः प्रयत्नेन यस्माद् दुःखेन लिख्यते ॥

शुभमस्तु सङ्घस्य ॥ श्री**जिन**चन्द्रसूरिपट्टालङ्कारश्री**जिन**कुशलसूरियुगप्रवरागमोपदेशेन ना **कुमरपाल**श्रावकेण श्री**कल्प**चूर्णिपुस्तकमिदमलेखि ॥

यस्मिन् जाग्रत्सुपुरुषसुमस्तोमसौरभ्यभङ्गीभोगाकृष्टैर्बुधमधुकरैः स्तन्यते कीर्त्तिगीतिः ।
पृथ्वीकान्ताकमनकरणप्राणशृङ्गारकोऽसौ, पुष्पापीडो जगति जयति श्रीम**दू**केशवंशः ॥१॥
तस्मिन् सिद्धिवधूवशीकृतिविधौ गाढानुबन्धान्व्यधाद्, यः स्वस्वान्तवसुन्धरांतरतुल सम्यक्त्वसत्कार्मणम् ।
सर्वाङ्गीणविभूषण त्वचकलच्छील शरीरेऽसकौ, पुन्नागोऽभव**दा**सनाग उदयी **नाहट**वंशो**द्भ**वः ॥२॥
कुमरपाल इति प्रथमोऽङ्गभूरभवदस्य विभास्वरभाग्यभूः ।
तदनुजोऽजनि **दु**र्लभनामकः कलकलाकलनाकुशलात्मकः ॥३॥
देवार्चागुरुपर्युपास्तिगुणवद्दानादिषट्कर्मणां, कर्त्ता विप्र इवान्वह **कु**मरपालः श्राद्धरत्न जयी ।
श्री**शत्रु**ञ्जयदेवदेवकुलिकां श्री**मानतुङ्गा**भिधप्रासादाभरण विधाप्य नृजने योऽलात् फल निस्तुलम् ॥४॥

समजनि जनी मान्या धन्याभिधाऽऽस्यसुधारसप्रसरमधुरव्याहारोद्धुरा सुशीलरमाऽनघा ।
यतिजनसदासेवाहेवाकताकलिता हि याऽजनयत निज नामान्वर्थं विवेकवती सती ॥५॥
स्वःशाखेव सुखावहान् कलफलान् प्रासूत सा सत्सुतान्, ख्यातानीश्वरलोहटौ कुमरसिंह चेति सत्पुत्रिके ।
गोगीं नाम सरस्वती च विदितैरेतैरपत्योत्तमैर्या काचित् कलयाञ्चकार परमां रामासु शोभां भुवि ॥६॥
[उदयश्रीति नाम्नाऽभूदीश्वरस्य सधर्मिणी । समुद्रतनया ख्याता लक्ष्मीलक्ष्मीपतेरिव ॥]

तयोर्बभूव स्थिरदेव-वर्द्धापनादयो नप्तृवरा उदाराः ।
अवर्द्धिषातामिति तौ धरायां न्यग्रोधभूमीरुहवन्निकामम् ॥७॥

इतश्च—

पृथ्वीराजनृराजराजसमितौ प्रौढप्रमाणायुधं., श्रीपद्मप्रभसूरिवीरमुदयद्दर्पं विजित्य क्षणात् ।
वीराश्लेषसुखोन्मुखी जयरमा येनोपयेमेतमां, सैषोऽशेषजिगीषुराड् जिनपतिर्जज्ञे यतीन्द्रः पुरा ॥ ८ ॥
तदीयपदसम्पदं स समपादि पात्रं परं जिनेश्वरयतीश्वरः सुकृतवारिवार्द्धिर्यकः ।
निशाकरकरोत्करप्रवरमौक्तिकीर्निच्छटासिताभ्रदलभङ्गिभिर्व्यधित पत्रभङ्गीर्दिशाम् ॥ ९ ॥
तत्पट्टपट्टद्विपकुम्भकोटिमध्यास्त चक्रीव जिनप्रबोधः ।
सूरीश्वरो येन सुशास्त्रचक्रप्रयोगतो जाड्यरिपुर्व्यभेदि ॥ १० ॥
रेजे श्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुस्तद्वच्छलक्ष्मीपतिर्मुक्ताहारनुपारतारमुयशःप्राग्भारविश्वम्भरिः ।
यात्रां यत्र वितन्वति क्षितितले मिथ्यात्ववंश्युच्छिदे, तद्दृष्ट्वा इव ते दिगन्तगतयः पाखण्डिनो जज्ञिरे ॥ ११ ॥
शुद्धे यद्वक्त्रसौधे कलिमलविलसत्कल्मषमवर्तुयाते, कान्ते श्रीवाणिदेव्या सुखमसुखमुषि प्रत्यहं संवसन्त्याः ।
लीलादोलानुकारं कलयति युगली कर्णयोः कम्पाल्योस्तत्पट्टस्वर्गिशाले जिनकुशलगुरुः स्वस्तरु सोऽस्त्युदीतः ॥१२॥
प्राहुर्ज्ञानचरित्रदर्शनमयं श्रीमुक्तिमार्गं जिना, विज्ञानेन विना क्षमं न भवितुं चारित्रसद्दर्शने ।
ध्यानज्ञाननिबन्धनं च समयज्ञानैकतानात्मनां साधूनां बहुशास्त्रपुस्तकततेर्विश्राणनं गीयते ॥ १३ ॥
तन्मोक्षलक्ष्मिपरिरम्भसहोत्सवोत्कैः श्राद्धैर्विशुद्धहृदयैर्विकसद्विवेकैः ।
जैनागमाऽभ्यसनसन्ततसंयतेभ्यः सिद्धान्तपुस्तकततिः सततं प्रदेया ॥ १४ ॥
इति हि तदुपदेशं सान्द्रचन्द्रातपाभं विशदवदनचन्द्रात् सादरं पुश्चकोरः ।
किमपि कुमरपालः पुण्यलक्ष्म्या विशालः स्म पिबति बत तृष्णग् सद्विवेकप्रवेकः ॥ १५ ॥
छेदग्रन्थपुरावतारसरणेः श्रीकल्पचूर्णेः कल, सलेख्याक्षरचञ्चुलेखकवरात् पुस्त प्रशस्ताक्षरम् ।
पुण्यात्मा च कुमारपाल उदयद्धर्माशयः श्रेयसे ज्ञानाक्षीणनिधानवत् सुगुरवे विश्राणयामासिवान् ॥ १६ ॥
ब्रह्माण्डालयमण्डपप्रतिकृति व्योमाङ्गणे तीर्थकृत्कीर्त्तिः कीर्त्यनटीस्फुटीकृतगतिर्नृत्य पर पुष्णती ।
यावत् खेचरचक्रवालपरिषत् प्रीतिप्रदा पप्रते, तावत् क्रीडतु सूक्ष्मवत् कृतिकराम्भोजेष्वदः पुस्तकम् ॥ १७ ॥
श्रीजिनकुशलयतीशां निकटे कर्पूरपूरगण्डूषान् । विदधल्लब्धिनिधानोऽभिषेक आधात् प्रशस्तिमिमाम् ॥ १८ ॥
॥ इति श्रीकल्पचूर्णिपुस्तकप्रशस्तिः ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ५१

कल्पचूर्णी अपूर्ण पत्र २४-३५६ । **भा.** प्रा.।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । ३१॥×२। **लं. प.** ३१॥×२। पत्र ३-२३, २६, २८, २९, ४४, ४५, ४८, ३२१, ३२६-३२९, ३३१, ३३४-३३५, ३३८, ३४०, ३४२, ३४४, ३४८, ३५०-३५३ नथी ।

क्रमाङ्क ५२

कल्पवृत्ति प्रथमखंड मासकल्पप्रकृतपर्यन्त पत्र ३३१। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि तथा तपा. क्षेमकीर्त्ति। **ले. सं.** १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥.

अन्त—

॥ इति **मासकल्प**प्रकृतं समाप्तम् ॥छ॥

चूर्णिश्रीवृद्धभाष्यप्रभृतिबहुतिथग्रन्थसार्थाभिरामा-

रामादर्थप्रसूनैस्त्वरितमवचितैः सूक्तिसौरभ्यसारैः।

चेतःपट्टं निधाय स्वगुरुशुचिवचस्तन्तुभिर्गुम्फितेयं,

श्री**कल्पे मास**कल्पप्रकृतविवरणस्रग् मया भव्ययोग्या ॥छ॥१॥

इति श्री**कल्प**प्रथमखण्डपुस्तकं ॥ छ ॥ श्री ॥ सम्वत् १४८८ वर्षे मार्गशीर्ष शुदि **पञ्च**म्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाऽऽज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खर**तरगच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धि-लीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगप्रवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकर-प्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गू**जरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष**धर**णाकेन पुत्र सा. **साई**यासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे श्री**कल्पवृत्तिप्र**थमखण्डपुस्तकं लिखापितम्। मङ्गलमस्तु ॥ ॥ छ ॥श्री॥

क्रमाङ्क ५३

कल्पवृत्ति द्वितीयखंड पत्र ३०८। **भा.** प्रा सं.। **वृ क** तपा. क्षेमकीर्त्ति। **ग्रं.** १४१६०। **ले. सं.** १४९०। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥

अन्त—

एवमस्माकमपि प्राघूर्णकाः प्रधानपुरुषकल्पास्तनस्तेषां यथायोग्यमवकाशान् दत्त्वा वृषभाः संस्तारकभूमीः संक्षिप्य प्रयत्नतः पूर्वानपि साधून् मापयन्ति ॥ छ ॥

समाप्त **बृहत्कल्प**वृत्तिद्वितीयखण्डम् ॥ छ ॥ ग्र १४१६० ॥ सवत् १४९० वर्षे वैशाख सुदि पञ्चम्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खर**तरगच्छे श्री**जिन**राज-सूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगप्रवरोपममिथ्यात्वतिमिर-निकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गू**जरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष-**धर**णाकेन पुत्र सा **साइ**यासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे **बृहत्कल्प**वृत्तिद्वितीयखण्डपुस्तकम्।

क्रमाङ्क ५४

कल्पवृत्ति तृतीयखंड. पत्र २९६। **भा.** प्रा सं। **वृ. क.** आम्नाय क्षेमकीर्त्ति। **र सं** १३३२। **ले. सं.** १४८९। **संह** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प** ३४×२।

अन्त—

सूत्रे वा भाष्ये वा यन्मतिमोहाद् मयाऽन्यथा किमपि। लिखितं वा विवृतं वा तन्मिथ्यादुष्कृतं भूयात् ॥२६॥

ग्रन्थ ९५५१ सर्वाग्र १२६५१ श्री. ॥छ॥श्री.॥

सम्वत् १४८९ वर्षे मार्ग सुदि ५ गुरु दिने श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खर**तरगच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारु-चारित्रचन्दनतरुमलययुगप्रवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमत्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गू**जरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष**धर**णाकेन पुत्र**साई**यासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे **बृहत्कल्प**तृतीय-खंडपुस्तकं लिखापितम्। पुरोहित **हरी**याकेन लिखितम्। शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ छ॥

क्रमाङ्क ५५

कल्पवृत्ति पीठिकासहित प्रथमखंड, मासकल्पप्रकृत पर्यन्त प्रथम उद्देश. पत्र २०७। **भा.** प्रा. स.। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि तथा तपा. क्षेमकीर्ति। **ग्रं.** १५०००। **ले. सं.** १३७८। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२।×२॥

पत्र ९६ मां—

ग्र. ४६०० ॥ **कल्पपीठिका** श्रीमलयगिरिविरचिता ॥छ॥ स. १३७८ वर्षे मार्ग शुदि ८ दिने समर्थिता ॥छ॥

क्रमाङ्क ५६

कल्पवृत्ति पीठिका अनंतरवर्ती विभाग अपूर्ण. पत्र ३१५। **भा.** प्रा. स.। **वृ. क.** आचार्य क्षेमकीर्ति।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** मध्यम। **लं. प.** ३७।×२।। पत्र. १४३, १४४, १४६–१५१, २०९, २१०, २८१–२८४, ३०२–३१०, ३१२ नथी।

क्रमाङ्क ५७

कल्पवृत्ति तृतीयखंड. पत्र २८२। **भा.** प्रा स। **वृ. क.** आचार्य क्षेमकीर्ति।
ले. सं. अनु १५ शताब्दी उत्तरार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** मध्यम। **लं. प.** ३८॥×२। ।
पत्र १, २७४, २७६, २७७, २८१ नथी। अंतनो प्रशस्तिनो भाग अपूर्ण छे.

क्रमाङ्क ५८

(१) **कल्पवृत्ति द्वितीयखंड** पत्र. २८९-३९६। **भा.** प्रा स।

(२) ,, ,, पत्र २७६-४२२। **भा.** प्रा. स। वचमा घणां पानां नथी. मात्र २५ जेटलां पानां छे।

॥ स. १४०३ वर्षे भाद्रवा सुदि ६ सोमदिने खरतरगच्छाधिपतिश्रीतरुणप्रभसूरीणां उपदेशात् ॥ छ ॥ **कल्प.** .

(३) **कल्पविशेषचूर्णी.** पत्र २९। **भा.** प्रा.।

(४) ,, पत्र २४९-३०५। **भा.** प्रा.।

॥छ॥ **विशेषकल्पचूर्णी** सम्मत्ता ॥छ॥ ग्रंथाग्र ११००० ॥ शुभं भवतु ॥

(५) **कल्पचूर्णी** त्रटक अपूर्ण.

(६) **कल्पलघुभाष्य.** त्रटक, अपूर्ण

त्रटक अपूर्ण ग्रंथोनी आ पोथी छे।

क्रमाङ्क ५९

(१) **व्यवहारसूत्र.** पत्र १-१५। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ६८८। **ले. सं.** १२३६।

अन्त—

॥ छ ॥ ववहारे दसमो उद्देसओ समत्तो ॥ समत्तो ववहारो ॥ छ ॥ सवत् १२३६ ॥ श्रावण वदि १० शुक्रे अद्येह श्रीमदणहिलपाटकस्थितेन साधुजिनवधुरेण कर्मक्षयार्थ लिखितमिति ॥ छ ॥ ग्रंथाग्र श्लोकमानेन ६८८ ॥ छ ॥

(२) **व्यवहारसूत्र भाष्य.** पत्र. १६–१३६। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ६०००।

अन्त—

॥ जयति जिणो वीरवरो सरुरुहतवणिज्जपुजपिंजरदेहो । सव्वसुरासुरणरवरमउडतडालीढपावीढतडो ॥
नमो सुतदेवयाए भगवतीए ॥छ॥ व्यवहारभाष्य समाप्तमिद ॥ मंगल माश्रीः ॥ छ ॥
प्रत्यक्षरगणनायां सुभाष्यामृतनीरधेः । द्वादशार्द्धसहस्राणि ग्रन्थमानं विनिश्चितम् ॥१॥ ग्र. ६००० ॥ छ ॥
येन श्रीजिनधर्ममत्र जगृहे भित्त्वा सुदुर्ग्राग्रह सूरेः श्रीजिनरक्षितस्य विधिना सम्यग्गुरोरंतिके ।
तेनेद जिनबंधुरेण गुरवे स्वस्मै स्फुट साधुना मोक्षार्थं व्यवहारभाष्यममल सलिख्य दत्तं स्वयम् ॥छ॥व॥छ॥व॥

(३) **व्यवहारचूर्णी** पत्र १-२३१ । **भा.** प्रा. ।

ले. सं. १२३६ । **संह** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९॥×२।. । पत्र. १३०-१४९ नथी ।

अन्त—

व्यवहारस्य भगवतः अर्थविवक्षाप्रवर्त्तने दक्षम् । विवरणमिद समाप्त श्रमणगणानाममृतभूतम् ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ६०

(१) **व्यवहारसूत्र** पत्र १-१९ । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । पत्र २, ४ नथी ।

(२) **व्यवहारसूत्र चूर्णी** पत्र १-३०१ । **भा.** प्रा. ।

ले. सं. १४९० । **ग्रं.** १२००० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२×२

अन्त—

॥छ॥ ग्रन्थाग्र १२००० ॥ संवत् १४९० वर्षे माघवदि ५ शुक्रे श्रीमति श्रीस्तंभतीर्थे अविचलत्रिकाल-ज्ञाज्ञापालनपटुतरे । विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलय-कृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलययुगपवरोपमंमिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरी-श्वराणामुपदेशेन परीक्षिगूजरसुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन प धरणाकेन पुत्र सा. साइयासहितेन स्वश्रेयसे व्यवहार-चूर्णिपुस्तकं लिखापित ॥छ॥

क्रमाङ्क ६१

(१) **व्यवहारभाष्य** पत्र १-१५५ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदासगणि क्षमाश्रमण ।

अन्त—

॥ सवत् १४९० वर्षे फा. वदि ९ गुरौ लिखित श्रीस्तंभतीर्थे खरतरगच्छे जिनभद्रसूरीश्वराणा ॥

(२) **दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्ति** पत्र १५६-१६१ । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी ।

(३) ,, **चूर्णी** पत्र १६१-२२५ । **भा.** प्रा ।

(४) ,, **सूत्र** पत्र २२५-२८० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी ।

ले. सं. १४९० [धरणाक लेखित ?] । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२×२

क्रमाङ्क ६२

व्यवहारसूत्रवृत्ति प्रथमखंड. प्रथम उद्देश पर्यन्त पत्र ३५० । **भा** प्रा. स । **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि । **ले. सं.** १४८९ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२॥×२।. । पत्र ३४२ ३४४, ३४६-३४७ नथी.

अन्त—

॥छ॥ ग्रन्थाग्र १०८७८ ॥ सवत १४८९ वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिराज्ये प. गूजरपुत्र सुश्रावक प. धरणाकेन श्रीव्यवहारप्रथमखडपुस्तक पुन्यार्थं लेखापित ॥ शुभ भवतु ॥ कल्याण-मस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ६३

व्यवहारसूत्र वृत्ति द्वितीयखंड २-६ उद्देश पर्यन्त पत्र ३७५। **भा.** प्रा. सं.। **कृ. क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** १३७१९। **ले. सं.** १४९०। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२।×२।

॥ स्वस्ति सवत् १४९० वर्षे मार्गशीर्ष सुदि पञ्चम्यां तिथौ गुरुवारे। श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचल-त्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खरतर**गच्छे श्री**जिनराजसूरि**पट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधित-भूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलयगुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री-**जिनभद्रसूरी**श्वराणामुपदेशेन परीक्ष सा. **गूजर**सुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन सा. परीक्ष्य**धरणा**केन पुत्र सा. **साईया**-सहितेन श्रीसिद्धान्तकेशो लेखित स्वश्रेयसे।

यावन्मेरुः पवित्रो जिनवरजननस्नात्रसम्भूततोयैर्यावद्दिव्या विमानस्थितिरतिसुखदा सिद्धिसस्थाश्च सिद्धाः।
यावल्लोकप्रकाश सकलजनहित जैनसिद्धान्ततत्त्व विद्वद्भिर्वाच्यमान चिरमवनितले पुस्तकं तावदास्ताम् ॥छ॥
॥श्रीसङ्घस्य शुभ भवतु ॥छ॥ श्रीः॥

क्रमाङ्क ६४

व्यवहारसूत्रवृत्ति तृतीय खंड ७-१०उद्देश पर्यन्त संपूर्ण पत्र ३०७। **भा.** प्रा. सं.। **कृ. क.** आचार्य मलयगिरि.। **ले. सं** १४९०। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** ३२×२।

अन्त—

॥ इति श्री**व्यवहारवृत्तिः** सपूर्णा. ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

सवत् १४९० वर्षे मार्गशीर्ष सुदि पञ्चम्यां तिथौ गुरुवारे। श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाऽऽ-ज्ञापालनपटुतरे विजयिनि। श्रीमत्**खरतर**गच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृत-पापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलयगुगपवरमिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्व-राणामुपदेशेन परीक्षसाह**गू**जरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन सा परीक्ष्य**धरणा**केन पुत्र सा. **साइ**यायुतेन श्रीसिद्धान्तकोशो लेखित. स्वश्रेयसे।

यावन्मेरुः पवित्रो जिनवरजननस्नात्रसम्भूततोयैर्यावद्दिव्या विमानस्थितिरतिसुखदा सिद्धिसस्थाश्च सिद्धाः।
यावल्लोकप्रकाश सकलजनहित जैनसिद्धान्ततत्त्व, विद्वद्भिर्वाच्यमान चिरमवनितले पुस्तक तावदास्ताम् ॥छ॥
॥ श्रीसघस्य शुभ भवतु ॥ छ ॥ श्रीः ॥

क्रमाङ्क ६५

(१) **निशीथसूत्र** पत्र १-१५। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामी।

(२) **निशीथसूत्र भाष्य** पत्र १-१७८। **भा** प्रा.। **गा.** ६४३९। **ग्रं.** ७४००।

ले. सं. अनु १२ मी शताब्दीनु उत्तरार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २६॥।×२।

पट्टिका उपर—

५ **निसीह**भास्यपुस्तक श्री**जयसिंहा**चार्याणाम् ॥

क्रमाङ्क ६६

निशीथसूत्र भाष्य पत्र २१४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दीनु उत्तरार्द्ध [**धरणा**क लेखित?]। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५॥×२

क्रमाङ्क ६७

निशीथसूत्रचूर्णी प्रथमखंड. ११ मा उद्देश पर्यन्त किंचिदपूर्ण पत्र ४६४। **भा** प्रा.।

ले. सं अनु. १२ मी शताब्दी प्रारभ। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥।×२।.। पत्र १८-३२, ४१, ४३, ४६, ४७, १८४, २७१ नथी।

प्रथम पत्रनी पहेली पूंठी उपर—

॥ श्री**जिन**दत्ताचार्याणां **नि**शीथसूत्रचूर्णिप्रथमखडपुस्तक ॥

क्रमाङ्क ६८

(१) **निशीथसूत्र** पत्र १८। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ८१२। पत्र ८, १०, ७४, ७७, २१५, २१९-२२३, २२५-२२८, २४१ नथी

(२) **निशीथसूत्रचूर्णी प्रथमखंड अपूर्ण** पत्र १-३२४। **भा.** प्रा.।

ले. सं. अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [**धरणाक** लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२×२॥

पट्टिका उपरि—

॥ सं. १५४९ वर्षे श्री**जिन**समुद्रसूरिविजयराज्ये महोपाध्यायश्री**क**मलसयमशिष्यश्री**मु**निमेरूपाध्यायैग्रंथोऽयम-वाच्यत ॥

॥ स. १६३४ वर्षे श्री**जिन**चद्रसूरिराजानां शिष्यैः प० **क**ल्याणकमल प० **म**हिमराजमुनि प० **स**मयराज प० **ध**र्म्मनिधान प० **र**त्ननिधानमुनिभिः पचभिः प्रत्यन्तरे लेलिखितो ग्रथोऽयमवाचि च ॥ अथ वाच्यमानश्चिर नदतादिति श्री**जिन**कुशलसूरिप्रसत्त्यामस्त्या ॥ श्रीः

क्रमाङ्क ६९

निशीथसूत्रचूर्णी द्वितीयखंड पत्र. २९८। **भा.** प्रा.। **ले सं.** अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [**धरणाक** लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** ३१॥×२।

क्रमाङ्क ७०

निशीथसूत्रचूर्णी प्रथमखंड दशम उद्देश पर्यंत. पत्र ३३८। **भा** प्रा। **ग्रं.** १७८८४।

ले सं. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥

क्रमाङ्क ७१

निशीथसूत्रचर्णी द्वितीयखंड. पत्र ४१९। **भा.** प्रा.।

ले. सं. अनु. १३मी शताब्दीनु पूर्वार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥।×२।

क्रमाङ्क ७२

महानिशीथसूत्र पत्र ८७ **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४५४४।

ले. सं. अनु १५ मी शताब्दीनु उत्तरार्द्ध [**धरणाक** लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२।

क्रमाङ्क ७३

निशीथसूत्र लघुभाष्य पत्र ४-१००। **भा.** प्रा। **ले. सं** अनु १२ मी शताब्दीनु उत्तरार्द्ध। **संह.** अतिजीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११।×२।.। पत्र ९३मु नथी।

पत्र ७९ मां—णिसीथभाष्ये प्रथम उद्देशक ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ७४

(१) **दशवैकालिकसूत्र** पत्र. १–९६। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं.** ७००।
(२) **पाक्षिकसूत्र** पत्र ९७–१४२। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३००। पत्र ८४ नथी।
ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११×२

क्रमाङ्क ७५

निशीथचूर्णी विंशोद्देशक व्याख्या अपूर्ण पत्र. १७२। **भा.** स.। **क.** श्रीचंद्रसूरि।
ले. सं. अनु. १४ शताब्दी पूर्वार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८॥×१॥
पत्र. १–५, ५५–५८, ६०, ६१ नथी।

क्रमाङ्क ७६

नंदीदुर्गपदवृत्ति पत्र. ३–२२१। **भा.** स.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं.** ३३००।
ले. सं. १२२६। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२।

अन्त—

इति समाप्ता श्री**शी**लभद्रप्रभुश्री**धनेश्वर**सूरिशिष्य**श्री**चन्द्रसूरिविरचिता **न**न्दिटीकाया **दु**र्गपदव्याख्या ॥छ॥

स्व कष्टेऽतिनिधाय कष्टमधिकं मा मेऽन्यदा जायतां,
व्याख्यानेऽस्य तथाविधे कुमनसामल्पश्रुतानाममुम्।
इत्यालोचयता तथापि किमपि प्रोक्तं मया तत्र च,
दुर्व्याख्यानविशोधनं विदधतु प्राज्ञाः परार्थोद्यताः ॥१॥
दुःसम्प्रदायादसदूहनाद्वा प्रकाशितं यद् वितथं मयेह।
तद् धीधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यं मतार्थक्षतिरस्तु मैवम् ॥२॥छ॥

ग्रथाग्रं ३३००॥छ॥ मङ्गलमस्तु ॥छ॥ संवत् १२२६ वर्षे द्वितीय श्रावण शुदि ३ सोमेऽद्येह **मं**डली-वास्तव्यश्री**जा**ल्योधरगच्छे **मो**ढवंसे श्रावकश्री**स**देवसुतेन ले. **प**ल्हणेन लिखिता। लिखापिता च श्री**गुण**भद्रसूरिभिः ॥छ॥ मङ्गलमस्तु ॥छ॥

सकलभुवनप्रकाशनभानुश्री**हे**मचन्द्रसुगुरूणाम्। स्थापयिताऽऽसीद् **भा**ण्डागारिक**सो**माकरसुश्राद्धः ॥१॥
मरुदेवागर्भजया तत्सुतया **सो**मिकाह्वया क्रीत्वा। **न**न्द्यध्ययनमृविवरणाऽर्पितपुस्तकमिदमुदारम् ॥२॥
मुनि**बाल**चन्द्रशिष्यश्रीमद्**गुण**भद्रसूरिसुगुरुभ्यः। दत्तमुपलभ्य वयं फलममलं ज्ञानदानस्य ॥३॥६॥

सं. १३९३ श्री**जिन**पद्मसूरिसुगुरूपदेशेन सा **के**ल्हीपुत्ररत्न सा.**कि**रतासुश्रावकेण सत्पुत्र सा. **वि**जमल सा. **कर्म**सिंह पौत्र**की**का सकलपरिवारेण ससूत्रा **न**न्दीटीका गृहीता। भगिनी**ना**यकसुश्राविकाश्रेयोऽर्थम्। आचन्द्रार्कं नन्दतात् ॥ श्रीः ॥

क्रमाङ्क ७७

(१) **नंदीसूत्र** पत्र २६। **भा.** प्रा.। **क.** देववाचक। **ग्रं.** ७००।
(२) **नंदीसूत्रवृत्ति** पत्र १–२९७। **भा.** स। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ७७३२।
ले. स. १४८८। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥। शुद्ध प्रति।

अन्त—

स्वस्ति संवत् १४८८ वर्षे श्री**सत्य**पुरे पौषवदि १० दिने श्री**पार्श्व**देवजन्मकल्याणके श्री**खरतर**गणाधिपैः

श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्जिनभद्रसूरिसूर्यावतारैः श्रीनंदिसिद्धान्तपुस्तकं स्वहस्तेन शोधितं पाठितं च। तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिरं नंदतु॥

क्रमाङ्क ७८

अनुयोगद्वारचूर्णी पत्र. ६९। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ग्रं.** २२६८।
ले. सं. अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २२॥।×२।

क्रमाङ्क ७९

(१) अनुयोगद्वारसूत्र पत्र १-६६। **भा.** प्रा.।
(२) अनुयोगद्वारसूत्रलघुवृत्ति पत्र ६७-१६३। **भा.** स.। **क.** आचार्य हरिभद्र।
ले. सं. अनु. १५ शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३०।×२

क्रमाङ्क ८०

अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति पत्र १८१। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि।
ले. सं. अनु. १४ शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३०॥×२।। संशोधिता प्रति।

क्रमाङ्क ८१

अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति किंचिदपूर्ण पत्र १९४। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचद्रसूरि।
ले. सं. अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाशाह लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२॥।×२।। सशोधिता प्रति।

क्रमाङ्क ८२

(१) दशवैकालिकसूत्र सटीक पत्र १-१८६। **भा.** प्रा. स। **मू. क.** शय्यभवसूरि। **टी. क.** तिलकाचार्य। **ग्रं.** ७०००। **यु. र. सं.** १३०४।

(२) संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र १८७-२७५। **मू. क.** श्रीचद्रसूरि। **टी. क.** देवभद्रसूरि। **ग्रं.** ३५००।

(३) कल्पसूत्र (पर्युषणाकल्प) पत्र २७६-३०५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी।

(४) कल्पसूत्रचूर्णी पत्र ३०५-३२१। **भा.** प्रा।

(५) कल्पसूत्रनिर्युक्ति पत्र ३२१-३२३। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ६८।

३-५ ना **ग्रं.** १९००।

(६) कल्पसूत्र टिप्पनक पत्र ३२३-३३८। **भा.** सं.। **क.** पृथ्वीचद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३।×२॥.

आ प्रतिमां भगवान् श्रीपार्श्वनाथना जीवनप्रसगने लगतां चित्रो छे। चित्रोनी यादी—

चित्रक्रमांक	पत्रांक	चित्र
१	१	वामा माता अतनां पांच स्वप्न जुए छे
२	,,	वामा माताए जोएलां प्रारंभनां गज-वृषभादि नव स्वप्न.
३	२	स्वप्नपाठकनो फलादेश.
४	,,	भगवान् श्रीपार्श्वनाथनो जन्म.
५	१८५	हरिणेगमेषि देव पार्श्वनाथ भगवानने मेरु उपर लई जाय छे.
६	,,	मेरुपर्वत उपर श्रीपार्श्वनाथनो जन्माभिषेक.

७	१८६	भगवान् पार्श्वनाथ घोडा उपर बेसी फरवा नीकळ्या छे.
८	,,	श्रीपार्श्वनाथनुं लग्न.
९	२७६	श्रीपार्श्वस्वामी अने राणी प्रभावती रंगभवनमां.
१०	,,	वामा माता अने भगवान्-दीक्षानी अनुज्ञा.
११	,,	भगवान् पार्श्वनाथ कमठ तापस पासे जाय छे.
१२	२७७	कमठ तापसनुं पंचाग्नितप अने नागदहन.
१३	,,	वार्षिकदान.
१४	,,	भगवान् शिबिकामां बेसी दीक्षा माटे जाय छे.
१५	३३७	भगवाननुं केशलुंचन अने दीक्षा
१६	,,	कमठ-मेघमालिदेवकृत जलोपसर्ग
१७	,,	आचार्य महाराज शिष्योने वाचना आपे छे.
१८	३३८	समवसरण.
१९	,,	पार्श्वनाथ भगवाननु निर्वाण.
२०	,,	अष्टमगल.

क्रमाङ्क ८३

(१) **दशवैकालिकसूत्र वृत्ति** पत्र १-२०२। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** ७०००। **ले. सं.** १२८९।

पत्र २०२ मां—

॥ सवत् १२८९ फाल्गुन सुदि ४ सोमे स्तंभतीर्थनगरनिवासिना । श्रीश्रीमालवंशोद्भवेन ठ. साढासुतेन। ठ. कुमरसिंहेन दशवैकालिकश्रुतस्कधवृत्ति १ निर्युक्ति २ सूत्र ३ पुस्तक लेखयांचक्रे ॥छ॥ शुभ भवतु ॥छ॥ मगलमस्तु ॥छ॥

(२) **दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति** पत्र २०३-२२१। **क.** भद्रबाहुस्वामी। गा. ४४०.

॥ सवत् १२८९. इत्यादि पुष्पिका उपर प्रमाणे

(३) **दशवैकालिकसूत्र** पत्र २२२-२४७। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यभवसूरि। **ग्रं.** ७०००। **ले. सं.** १२८९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.

अन्त—

॥ सवत् १२८९ फाल्गुन सुदि ४ सोमे स्तंभतीर्थनगरनिवासिना। श्रीश्रीमालवशोद्भवेन ठ. साढासुतेन ठ. कुमरसिंहेन दशवैकालिकश्रुतस्कधवृत्ति १ निर्युक्ति २ सूत्र ३ पुस्तकं लेखयांचक्रे श्रीजिनराजसूरीणां ॥छ॥

क्रमाङ्क ८४

(१) **ओघनिर्युक्ति वृत्ति** पत्र १-१०५। **भा.** प्रा. सं.। **क.** द्रोणाचार्य। **ले. सं.** १११७। **पत्र** १०, ४६ नथी। पत्र १०५ मां हाथी अने कमळनां शोभनो छे।

अन्त—

॥ ओघनिर्युक्तिटीका समाप्ता ॥छ॥

दोषारुचि चन्द्रकुल प्रजनितबहुलक्षपापहरणं च । यच्चरिते सदा सान्त तजयति महातपोहित सकलम् ॥१॥

तस्मिन् बभूव भुवनत्रयगीतकीर्तिः श्रीमान् कृती सुकृतवान् **मु**निचन्द्रसूरिः ।
यस्याद्भुतैकचरिताम्बुनिधेर्गुणानां शक्या न जातु परिमा गुरुणाऽपि कर्तुम् ॥२॥
सूरिः श्रीमा**नाम्र**देवाभिधानस्तच्छिष्योऽभूद् भूषणं भूरमण्याः ।
बद्धस्पर्धा यद्गुणाः कीर्त्तिवध्वा सार्द्ध भ्रेमुर्विश्वदृक्कौतुकेन ॥३॥
शिष्यस्तस्याऽजनि बहुमतः श्री**यशो**देवसूरिर्यस्यात्यर्थं गुरुगुणगणाः प्रत्यहं वृद्धिभाजः ।
ब्रह्माण्डान्तर्निजनिवसनस्थानसम्बाधभीत्या शङ्के भ्रेमुस्त्रिभुवनमदो वीक्षितुं सर्वदैव ॥४॥
नागपालसुतः श्रीमान् **श्री**धराख्योऽभवद् वणिक् । जगदानन्दनस्तस्याभू**दा**नन्दाभिधः सुतः ॥५॥
स इदं लेखयामास **ओ**घनिर्युक्तिपुस्तकम् । तस्मै श्रीसूरये भक्त्या ज्ञानदानधिया सुधीः ॥६॥
याव**च्च**न्द्रदिवाकरौ प्रकुरुतो निर्ध्वान्तमर्सैनभो यावत्तुङ्गतरङ्गभङ्गगहना गङ्गापगा गीयते ।
याव**च्चो**न्नतिमान् महानिह गिरिर्मेरुर्नगग्रामणीस्तावत् पुस्तकरत्नमेतदमलं कुर्वन्तु कण्ठेऽशठाः ॥७॥छ॥
सम्वत् ११९७ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥ **पा**हिलेन लिखितम् । मङ्गलं महाश्री ॥छ॥छ॥छ॥

(२) **दशवैकालिकसूत्र वृत्ति** पत्र १०६-२१२ । **भा.** सं. । **क.** आचार्य हरिभद्र । पत्र २१२ मां **हा**थी, **कळश**, **श्री**देवी आदि चित्ररूप **शोभ**नो छे ।

अन्त—

दोषारुचि **चन्द्र**कुलं प्रजनितबहुलक्षपापहरणं च । यच्चरितं सदा सतां तज्जयति महातपोहितं सकलम् ॥
तस्मिन् बभूव भुवनत्रयगीतकीर्त्तिः श्रीमान् कृती सुकृतवान् **मु**निचन्द्रसूरिः ।
यस्याद्भुतैकचरिताम्बुनिधेर्गुणाना शक्या न जातु परिमा गुरुणाऽपि कर्तुम् ॥
सूरि श्रीमा**नाम्र**देवाभिधानस्तच्छिष्योऽभूद् भूषणं भूरमण्या. ।
बद्धस्पर्धा यद्गुणाः कीर्त्तिवध्वा साधं भ्रेमुर्विश्वदृक्कौतुकेन ॥
शिष्यस्तस्याऽजनि बहुमतः श्री**यशो**देवसूरिर्यस्यात्यर्थं गुरुगुणगणाः प्रत्यहं वृद्धिभाजः ।
ब्रह्माण्डान्तर्निजनिवसनस्थानसम्बाधभीत्या शङ्के भ्रेमुस्त्रिभुवनमदो वीक्षितुं सर्वदैव ॥
नागपालसुतः श्रीमान् **श्री**धराख्योऽभवद्वणिक । जगदानन्दनस्तस्याभू**दा**नन्दाभिधः सुतः ॥
स इदं लेखयामास **द**शवैकालिकाभिधम् । पुस्तकं सूरये तस्मै श्रीमते शुद्धमानसः ॥
याव**च्च**न्द्रदिवाकरौ प्रकुरुतो निर्ध्वान्तमर्सैनभो यावत्तुङ्गतरङ्गभङ्गगहना गङ्गापगा गीयते ।
याव**च्चो**न्नतिमान् महानिह गिरिर्मेरुर्नगग्रामणीस्तावत् पुस्तकरत्नमेतदमलं कुर्वन्तु कण्ठेऽशठाः ॥छ॥छ॥
मङ्गलं महाश्री ॥छ॥ **पा**हिलेन लिखितम् । मङ्गलं महाश्री. ॥

(३) **दशवैकालिकनिर्युक्ति अपूर्ण** पत्र. १० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **गा.** ३७९ पर्यन्त । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २५॥×२॥. । पत्र ८ मुं नथी ।

क्रमाङ्क ८५

(१) **दशवैकालिकसूत्र वृत्ति** पत्र. १-१७३ । **भा.** सं. । **क.** आचार्य हरिभद्र । **ग्रं.** ७००४ । पत्र. १७३ मां **शोभन** छे ।

(२) **दशवैकालिकचूर्णी** पत्र. १७४-३४१ । **भा.** प्रा । **क.** स्थविर अगस्त्यसिंह । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९॥।×२।. । पत्र ३३४ मां **शोभन** छे ।

पट्टिका उपर—

॥छ॥ श्रीम**ज्जिन**दत्तसूरीणां **द**शवैकालिकवृत्तिश्चूर्णिश्च ॥ छ ॥ प्रधानाक्षरा ॥

अन्त—

छहि मासेहिं अधीतं० गाधा। छहिं इति परिमाणसद्दो। मास इति कालपरिसखाण, तेहिं छहिं अधीत। एत्तिएण कालेण पढित। अज्झयणसद्दो सव्वम्मि दसकालिये वट्टति। अधवा अज्झयणमिण तु ज इमं पच्छिमं चूलियज्झयण, एतम्मि आणुपुव्वीए अहीते सगल सत्थमधीत भवति। अज्जमणएण ति अज्जसद्दो सामिपज्जायवयणो, मणयो पुव्व भणितो। तेण तस्स एत्तियो चेव छम्मासो परियाओ। अह कालगतो अधसद्दो अणंतरत्थे अज्झयणपरियायाणतर। अह तदणु कालगतो समाधीए जीवणकालो जस्स गतो सो कालगतो, समाधीए त्ति जधा तेण एत्तिएण चेव सुतनाणेण आराधित एवमण्णे वि एत्तिएणेव आराधगा भवतीति। द्वितीया निज्जुत्तिगाधा ॥

आणदअसु०गाधा। आणदणमाणदो तेण असुपातो। जधा दृद्रुसमादौ आराधितमिमेण ति। एतेण अत्थेण कासी इति अकार्षीत्। अनिकंतकालवयण। सेज्जभवथेरा इति जे पढम परूविता। तहिं ति तम्मि काले। सेज्जभवसामिपधाणसीसाण जसभद्दाण पुच्छा असुपात प्रति। किं खमासमणो! इमम्मि खुड्डए कालगते असुपातो अकतपुव्वो कतो। कधणा य अज्जसेज्जभवाण जधा हारिमो ससारसबधो त्ति। एस मम सुतो। अज्जजसभद्दहि य एस गुरूण सुतो एव कधावियालणा सघे। सव्वेहि य आणदअसुपातो मिच्छादुक्कडाणि य कताणि पडिचोदणादिसु गुरुसुतो आसाइतो त्ति। सेज्जभवसामिणा वि मा गोरवेण ण पडिचोदेज्ज त्ति अतो पढमं न कधिय। एवमणुगमे परिसमत्ते णया। तत्थ णायम्मि गेण्हितव्वे० गाधा। गाधाविवरण जधा आवस्सए। बितिया सव्वेसिं पि णयाण० गाधा। अक्खरत्थविचारो से तधेव। एवमेत धम्मसमुक्कित्तणादिचरणकरणाणेगपरूवणागब्भं नेव्वाणगमणफलावसाण भवियजणाणंदिकर। चुण्णिसमासवयणेण दसकालिय परिसमत्त ॥ ॥ नमः ॥

वीरवरस्स भगवतो तित्थे कोडीगणे सुविपुलम्मि। गुणगणवइराभस्सा वैरसामिस्स साहाए ॥
महरिसिसरिससभावा भावाभावाण मुणितपरमत्था। रिसिगुत्तखमासमणो खमासमाण निधी आसि ॥
तेसिं सीसेण इमा कलसभवमइदणामधेज्जेण। दसकालियस्स चुण्णी पयाण रयणातो उवण्णत्था ॥
रुयिरपदसंधिणियता छड्डियपुणरुत्तवित्थरपसगा। वक्खाणमतरेणावि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥
ससमयपरसमयणयाण ज थ ण समाधित पमादेण। त खमह पसाहेह य इध विण्णत्ती पवयणीण ॥

॥ दसकालियचुण्णी परिसमत्ता ॥

आसीदशेषनगरीगरिमापहारिश्रीपल्लिकावरपुरीविहिताधिवासः।
श्रीधर्कटान्वयसमुत्थजनाग्रगामी सच्छ्रावकः सुविदितो भुवि शालिभद्र ॥१॥
गाम्भीर्यधैर्यविनयार्जवसत्यमुख्यमख्याव्यतीतगुणसम्पदुपेतमूर्त्तिम्।
य नास्पृशत् क्षयभयादिव दुर्दमोऽपि नून कलिः कलुषिताखिलसत्त्वनोऽपि ॥२॥
तस्य देवगुरूपास्तिनिरस्ताशेषदुःकृता। शीतेव शीलसम्पन्ना बहुदेवी गृहिण्यभूत् ॥३॥
तयोरसमसाहसो मतिमतां मनःस्वान्मवत् परोपकृतितत्परः परमबन्धुभूतः सताम्।
न केवलमभिख्ययाऽजनि तथाऽर्थतोऽप्यग्रजः प्रसिद्धिमधिकां गतो जगति साधुसाधारणः ॥४॥
सुरगुरुरकुलीनो ग्राहभाग् वारिराशिः खररुचिरहिमांशुः प्राप्तदोषो मृगाङ्कः।
गिरिकुलमपि दूर कर्कशत्वप्रपन्न तदयमतिगुणाढ्यः केन तुल्यः समस्तु ॥५॥
सिन्धौ हरौ धनपतौ च चिर स्थिता श्रीः ते रक्षिताऽऽदरपरं र्व्ययिताऽमुनैव।
बद्धाऽस्य पुण्यनिगडैर्न च नष्टुमीष्टे कस्यास्तु विस्मयकरी न सतां प्रवृत्तिः ॥६॥
धवलगुणदेविपुत्री पवित्रचारित्रपात्रतां प्राप्ता। भार्या जिनमुनिभक्ता शान्तिमतिर्नाम तस्यास्ति ॥७॥

तस्याममास्यमभजत् (?) प्रचुरेऽपि कोपे कार्कश्यवल च वचः क्वचिदुल्ललाप।
स्वप्नेऽपि न व्यधित कर्म विगर्हणीय कृच्छ्रेऽपि लंघितवती न च या स्वमेराम् ॥८॥
पूर्णभद्र-हरिभद्रपञ्चितौ प्रज्ञया च विनयेन चान्वितौ।
साऽभ्यसूत तनयौ विशिष्टया शैशवेऽपि शुचिचेष्टया युतौ ॥९॥
दृष्ट्वा रासृतिसम्भव सुखमतिस्वल्प वपुर्जीवित, विद्युच्चञ्चलमाकलय्य..........................।
मत्वा चाशुभभित्तिभगचतुर ज्ञानप्रदान मुदा, सम्यक् शान्तिमतिर्व्यलेखयदिदं मोक्षाय सत्पुस्तकम् ॥१०॥
जाड्य खण्डयति प्रभावमतुल सवर्द्धयत्युद्धत मिथ्यात्व प्रतिहन्ति कीर्तिममलामुल्लासयत्यञ्जसा।
किं वा नो वितरत्यभीष्टमखिल सज्ज्ञानदान ततः कल्याणार्थिभिरादृतैरिह महायत्नो विधेयः सदा ॥११॥
केचिन्मुग्धधियो धनानि बहुधाऽऽवर्ज्योर्जितान्यङ्गनाबन्धुस्निग्धसुतोपभोगविधये युञ्जन्ति रक्षन्ति च।
अन्ये तूज्ज्वलबुद्धयोऽधममिद ज्ञात्वा भवार्त्तिच्छिदि प्रज्ञानतमुदि क्षिपन्ति विभव ज्ञानप्रदानादिषु ॥१२॥
यावद्विक्षेपदण्डश्रियमनुकुरुते तिर्यगद्रिव्रजोऽय
मेरूणां पञ्चक च प्रथयति नियत कन्दुकाकारमुद्राम्।
क्रीडत्येभिश्च कालः शिशुरिव विविधान्यान्यपर्याययृत्त्या-
स्तात्तावत् पुस्तकोऽय यतिभिरनुदिन सादर पठ्यमान. ॥१३॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ८६

दशवैकालिकवृत्ति त्रुटक अपूर्ण पत्र २०८। **भा.** प्रा. स.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २६॥×२.। वचमां घणां पानां नथी।

क्रमाङ्क ८७

(१) दशवैकालिकनिर्युक्ति पत्र १-१६। **भा.** प्रा.। **क** भद्रबाहुस्वामी।

(२) दशवैकालिकवृत्ति पत्र १-१७१। **भा.** स। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ग्रं.** ७०००।

ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥। वचमा वचमां खंडित थएलां घणां पानां अनु. १५ मी शताब्दीमा लखाएलां छे।

क्रमाङ्क ८८

(१) दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति वृत्ति सह पत्र २७०। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** शय्यभवसूरि। **नि. क.** भद्रबाहुस्वामी। **वृ. क.** आचार्य हरिभद्र। **वृ. ग्रं.** ७०००। **सर्वग्रं.** ८२७५।

(२) दशवैकालिक लघुवृत्ति पत्र २७२-३५८। **भा.** स.। **क.** सुमतिसूरि। **ग्रं.** २५००। र. स. १२२०।

ले. सं. १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३×२.। पत्र १३ मु नथी.

अन्त—

॥ समाप्ता दशवैकालिकटीका ॥

महत्तराया याकिन्या धर्मपुत्रेण चिन्तिता। आचार्यहरिभद्रेण टीकेयं शिष्यबोधिनी ॥१॥
दशवैकालिकानुयोगात् सूत्रव्याख्या पृथक् कृता। मात्सर्यदुःखविरहाद् गुणानुरागी भवतु लोकः ॥२॥

दशवैकालिकटीकां विधाय यत् पुण्यमर्जित तेन । हरिभद्राचार्यकृतान्मोहाद् भक्त्याऽथवा मया ॥३॥
श्रीमद्बोधकशिष्येण श्रीमत्सुमतिसूरिणा । विद्वद्भिस्तत्र न द्वेषो मयि कार्यो मनागपि ॥४॥
यस्माद् व्याख्याक्रमः प्रोक्तः सूरिणा भद्रबाहुना । आवश्यकस्य निर्युक्तौ व्याख्याक्रमविपश्चिता ॥५॥
सूत्रार्थः प्रथमो ज्ञेयो निर्युक्त्या मिश्रितस्तथा । सर्वैर्व्याख्याक्रमैर्युक्तो भणितव्यस्तृतीयकः ॥६॥
प्रमादकार्यविक्षिप्तचेतसा तदय मया । क्रियाया अवबोधार्थं साधूनां तु पृथक्कृतः ॥७॥
लब्ध्वा मानुष्यकं जन्म ज्ञात्वा सर्वविदां मतम् । प्रमादमोहसम्मूढा वैफल्यं ये नयन्ति हि ॥८॥
जन्ममृत्युजराव्याधिरोगशोकाद्युपद्रुते । ससारसागरे रौद्रे ते भ्रमन्ति विडम्बिताः ॥९॥
ये पुनर्ज्ञानसम्यक्त्वचारित्रविहितादराः । भवाम्बुधिं समुल्लंघ्य ते यान्ति पदमव्ययम् ॥१०॥

॥ ग्रंथ २५०० ॥

कातंत्रभूषणन्यासकर्तृश्रीचंद्रसूरये । आशादित्यमहामात्यः [.........................॥]
एनां [वि]शतिसयुक्ते शतद्वादशहायने । एकादश्यां नभस्यस्य कृष्णायां भौमवासरे ॥छ॥

सवत् १४८८ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि २ गुरौ श्रीस्तंभतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपट्टुतरे श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबहुबुद्धिबोधितभव्यलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन रेपाप्राप्तसुश्रावकेन सा. उदयराज सा० बलिराजेन दशवैकालिकसूत्र-निर्युक्ति-बृहद्वृत्ति-लघुवृत्तिपुस्तक लिखापितम् ॥छ॥छ॥ श्रीमगल ॥

क्रमाङ्क ८९

(१) **दशवैकालिकचूर्णी** पत्र. १-३५५ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ८४०० । **ले. सं.** १४८९ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प** २२×२.

अन्त—

॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्ग शुदि ५ गुरुदिने श्रीमति श्रीस्तंभतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपट्टुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभव्यलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलयुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्षगूजरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्षधरणाकेन पुत्रसाईयासहितेन श्रीसिद्धांतेन भांडकार लिखापित आस्मा लिखित ॥

(२) **दशवैकालिकनिर्युक्ति** पत्र. ३५६-३८० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **गा.** ४५० । **ले. सं** १४९१ । **लं. प.** २२×२

अन्त—

तत्समर्थने च दशवैकालिकनिर्युक्तिः समाप्ता ॥छ॥ कृतिः श्रीभद्रबाहुस्वामिनः ॥छ॥
आवश्यकादिनिर्युक्तिविधानाल्लब्धकीर्तये । भद्रबाहुमुनींद्राय श्रुतकेवलिने नम. ॥
॥ सवत् १४९१ वर्षे श्रावण सुदि ९ बुधे विशाखानक्षत्रे शुभयोगे लिखित ॥छ॥
शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥छ॥श्रीः॥छ॥

क्रमाङ्क ९०

(१) **पिंडनिर्युक्ति (महल्लिया पिंडनिर्युक्ति)** पत्र १-३० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **गा.** ६९७ ।

(२) **पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति** पत्र ३१-१०२ । **भा.** प्रा. ।

(३) **पिंडनिर्युक्तिबृहद्वृत्ति सह** पत्र १-२४१। **भा.** सं.। **वृ.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ७५००।

ले. सं. १४८९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३×२।

अन्त—

एव ग्रन्थसङ्ख्या ७५०० **पिण्डनिर्युक्तिः** समाप्ता ॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ५ **गुरुवारे** श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खरतरगच्छे** श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धि-लीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकर-करप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन साह**बलि**राजेन सा. **उदय**राजादिस-परिवारेण श्री**पिण्ड**निर्युक्तिसूत्रलघुवृत्तिबृहद्वृत्तिपुस्तक लिखापितम् ॥छ॥ शुभ भवतु चतुर्विधश्रीश्रमणसङ्घस्य ॥

क्रमाङ्क ९१

पिंडनिर्युक्ति वृत्तिसह पत्र २००। **भा.** प्रा. स.। **नि क** भद्रबाहुस्वामी। **वृ. क.** मलयगिरि। **ग्रं.** ७२५०। **ले. सं.** १२८९। **लं. प.** ३१॥×२।

अन्त—

॥छ॥ प्रथाग्र ७२५० ॥छ॥छ॥ संवत् १२८९ वर्षे फाल्गुन शुदि ४ सोमे **स्तंभ**तीर्थनगरनिवासिना श्री**श्री**मालवंशोद्भवेन। ठ. **साढा**सुतेन ठ. **कुमर**सिंहेन। **मलय**गिरिविरचिता सूत्रमिश्रा **पिंड**निर्युक्तिवृत्तिर्लेखयां-चक्रे ॥छ॥छ॥ शुभ भवतु चतुर्विधश्रीश्रमणसघस्य ॥छ॥छ॥ मगलमस्तु ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ९२

पिंडनिर्युक्तिवृत्ति पत्र २४७। **भा** स। **क.** वीरसूरि। **ग्रं.** ७६७१।

ले. सं अनु १४ शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प** ३३।×२।। पत्र २३५, २३७, २४२, २४४, २४६ नथी। वे पत्र नबर विनाना छे।

क्रमाङ्क ९३

(१) **पिंडनिर्युक्ति लघुवृत्ति** पत्र १-१३१। **भा.** प्रा। **ग्रं.** २९५०।

(२) **पिंडनिर्युक्ति** पत्र १३२-१७५। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ७०७।

ले सं. अनु. १३ शताब्दी पूर्वार्ध।. **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** २८॥×२।

पत्र १, १३१, १३२, १७५ मां सुदर **शो**भनो छे।

क्रमाङ्क ९४

(१) **आवश्यकनिर्युक्ति किंचिदपूर्ण** पत्र ६६। **भा.** प्रा.। **क** भद्रबाहुस्वामी। **संह** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** ३३॥।×२.। पत्र २४, ५४ नथी।

(२) **उत्तराध्ययनसूत्र** पत्र ५०। **भा.** प्रा.। **ले. सं** १४८७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥।×२.। पत्र १, ४, ५, १४, १६, २१, २६, २७, २९, ३३, ४९, नथी।

अन्त—

स्वस्तिश्री सवत् १४८७ वर्षे अश्विनमासे शुक्लपक्षे एकादश्यां तिथौ गुरुवासरे श्री**स्तंभ**तीर्थे श्री**खरतर**गच्छे भट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरीणां श्रीउत्तराध्ययनपुस्तक लिखित। प्रथाग्र २०००॥ श्री श्रीः॥ छ॥ प० **धरणा**केन **समवायांगसूत्रवृत्ति आवश्यकसूत्र पाक्षिकसूत्रवृत्ति उत्तराध्ययनसूत्र**पुस्तक लिखापितं ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ९५

उत्तराध्ययनसूत्र चूर्णी पत्र २५३ । **भा.** प्रा. । **क.** गोपालिक महत्तर शिष्य । **ग्रं.** ५८५५ । **ले. सं.** १४८९ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९।×२. ।

अन्त—

॥ संवत् १४८९ वर्षे कार्त्तिक वदि ४ भौमे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन प. गूजरपुत्र प. धरणाकेन सुतसाईयासहितेन श्रीउत्तराध्ययनचूर्णिपुस्तकं लिखापितं ॥

क्रमाङ्क ९६

उत्तराध्ययनसूत्र बृहद्वृत्ति पाइयटीका किंचिदपूर्ण पत्र ३९० । **भा.** प्रा. सं. । **क.** थारापद्रगच्छीय वादिवेताल शान्तिसूरि । **ले. सं.** १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९।×२॥. । पत्र १, १०, ७८, १३५, १४४, ३०९ नथी ।

क्रमाङ्क ९७

उत्तराध्ययनसूत्र बृहद्वृत्ति द्वितीयखंड (पाइयटीका) पत्र २०८ । **भा.** प्रा. सं. । **क.** थारापद्रगच्छीय वादिवेताल शांतिसूरि । **ले. सं.** १४९१ । **संद्द०** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३१॥×२।. ।

अन्त—

संवत् १४९१ वर्षे कार्त्तिक वदि ११ गुरौ श्रीमति श्रीस्तम्भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्षिगूजरसुतेन रेषाप्राप्तपरमसुश्रावकेन परीषिधरणाकेन पुत्रसाइयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे श्रीउत्तराध्ययनबृहद्वृत्तिद्वतीयखण्डपुस्तकं लिखापितम् । स्वश्रेयसे ॥छ॥

श्रीर्भूयात् श्रीसमणसंघस्य ॥छ॥ पुस्तकं विद्वज्जनैर्वाच्यमानमाचन्द्रार्कं यावन्नन्दतात् ॥ श्रीः ॥

क्रमाङ्क ९८

उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्तिसह पत्र ३९५ । **भा.** प्रा. सं. अप. । **वृ. क.** नेमिचंद्रसूरि । **ग्रं.** १४००० । **ले. सं** १३५४ । **संद्द.** जीर्णप्राय । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३।×२॥.

अन्त—

॥छ॥ वृत्तेः सूत्रसम प्रथाग्र श्लोक १४००० ॥छ॥ मगलमस्तु ॥छ॥छ॥ सवत् १३५४ वर्षे अश्विन शुदि २ सोमे । श्रीउत्तराध्ययनपुस्तक लिखित ॥छ॥ भद्र भवतु ॥छ॥

क्रमाङ्क ९९

उत्तराध्ययन सुखबोधावृत्ति सह पत्र ४५५ । **भा.** प्रा. स. अप. । **वृ. क.** नेमिचंद्रसूरि । **ले. सं.** १४९१ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २३×२

अन्त—

इत्युत्तराध्ययनटीकासूत्रसन्मिश्रा समाप्ता ॥छ॥ सवत् १४९१ वर्षे श्रावण वदि १३ रवौ श्रीस्तम्भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबन्धुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्षिसाहगूजरसुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन सा. धरणाकेन पुत्र सा. साइयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे श्रीउत्तराध्ययनलघुटीका सूत्रसहिता समाप्ता ॥छ॥ श्रीर्भूयात् ॥छ॥ ग्रन्थाग्र १४०००॥

क्रमाङ्क १००

उत्तराध्ययनसूत्र सुखावबोधा वृत्ति त्रुटक अपूर्ण पत्र १३७। **भा.** प्रा. स.। **क.** नेमिचन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१×२।। लगभग २०० जेटलां पानां छे।

क्रमाङ्क १०१

आवश्यक चूर्णी पत्र ४१२। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ले. सं.** १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३४।×२।। पुष्पिका धरणाशाहनी घसाएली छे।

क्रमाङ्क १०२

आवश्यक चूर्णी अपूर्ण पत्र २–३७९। **भा.** प्रा। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.। वचमां घणां पाना खूटे छे तथा घणा पानांना टुकडा थएला छे।

क्रमाङ्क १०३

आवश्यक चूर्णी पत्र ३३९। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३०।×२।.। पत्र २, ९०, ९२, ११६, ११८, १२२, २०३, २७८, २८०–२८३, २८५, २९०–२९३, ३१३ नथी।

क्रमाङ्क १०४

(१) **आवश्यकवृत्ति शिष्यहिता प्रथमखंड** पत्र ३९६। **भा.** प्रा. स। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं** १४८९।

अन्त—

॥ समाप्तमावश्यकप्रथमखडमिति ॥ छ ॥ मगल महाश्री· ॥ स्वस्ति सवत् १४८९ वर्षे पौषवदि २ भौमे स्तंभतीर्थे पुस्तक लेषिनीया। श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये सा. डूंगरसुत बलिराजउदयराजसुश्रावकयो (काभ्यां) निजपुण्यार्थं पुस्तक लिखापयामास (लिखापितम्) ॥ छ ॥

(२) **आवश्यकनिर्युक्ति** अपूण पत्र १५। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.

क्रमाङ्क १०५

आवश्यकवृत्ति शिष्यहिता द्वितीयखंड पत्र ३३१। **भा.** प्रा स। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं.** १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** ३२।×२।

अन्त—

॥ सवत् १४८८ वर्षे भाद्रपद सुदि २ गुरौ अद्येह श्रीस्तंभतीर्थे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये परीक्षिधरणाकेन श्रीआवश्यकबृहद्वृत्तिद्वितीयखडपुस्तक लिखापित ॥ चिर वाच्यमान नंदतात् ॥

क्रमाङ्क १०६

आवश्यकवृत्ति प्रथमखंड पत्र. ३१३। **भा.** प्रा. स.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं.** १४०७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.। पत्र. ३०, ४६, ४७, ४९, ५०, ७४, ७६, ७९–८१, ८३, १२८, ३०५, ३०७, ३०९, ३११ नथी।

अन्त—

सं० १४०७ वर्षे आषाढ सुदि ६ गुरौऽद्येह श्रीपत्तने आवश्यकवृत्तिप्रथमखंडस्य खंडिर्लिखिता ॥

संकुडियजन्हुकुप्परगीवाकरचलणबंधणावयवा । अणसमउ तुम्ह वैर........................

क्रमाङ्क १०७

आवश्यकवृत्तिद्वितीयखंड पत्र. ३१०। **भा** प्रा सं.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ग्रं.** १२४००। **ले. सं.** अनु. १५ शताब्दी। **संह** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२।.

क्रमाङ्क १०८

आवश्यकवृत्ति टिप्पनक अपूर्ण पत्र. १८६। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं प.** ३१॥।×२।। पत्र ६७, ६९, ७०, ८६, ८८, १०१, १०३, १०४, १०६, १०८–११७, ११९–१२९, १३३–१४५ नथी.

क्रमाङ्क १०९

विशेषावश्यक महाभाष्य पत्र. ७–१०७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** ४३१४। **ले. सं** अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [**धरणाशाह** लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२।.। पत्र ६१ मु नथी

क्रमाङ्क ११०

आवश्यकवृत्ति प्रथमखंड. पत्र. २४२। **भा.** प्रा. स.। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** १४९०। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** ३१॥।×२।.। पत्र १३२ मु नथी।

अन्त—

॥ सवत् १४९० वर्षे माघसुदि पचमी शुक्रे श्रीमति श्री**स्तं**भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपट्टुतरे विजयिनि श्रीमत्**खर**तरगच्छे श्री**जि**नराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरममश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जि**नभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष सा० **गू**जरसुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष**धर**णाकेन पुत्र सा० **साइ**यासहितेन । श्री**आवश्यकम**लयगिरिकृत**बृ**हद्वृत्तिप्रथमखडपुस्तक लिखापित ॥ श्रीः ॥ छ ॥

क्रमाङ्क १११

आवश्यकवृत्ति द्वितीयखंड पत्र ३२४। **भा.** प्रा स। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** १४९१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२।.

अन्त—

॥ सवत् १४९१ वर्षे श्रावण सुदि ८ भोमे श्रीमति श्री**स्तं**भतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपट्टुतरे विजयिनि। श्रीमत्**खर**तरगच्छे श्री**जि**नराजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरममश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री**जि**नभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गू**जरसुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष**धर**णाकेन पुत्र**सा**ईयासहितेन श्रीसिद्धांतकोशे श्री**म**लयगिरिकृतश्री**आ**वश्यकबृहद्वृत्तिद्वितीयखडपुस्तक लिखापित ॥छ॥ शुभ भवतु ॥

क्रमाङ्क ११२

आवश्यकवृत्ति प्रथमखंड पत्र २३६। **भा.** प्रा. सं.। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** १३००। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥।×२॥.

अन्त—

सव्वेसिं पि जिणाणं जेहि उ दिन्नाउ पढमभिक्खाओ । ते पयणुपेज्जदोसा दिव्ववरपरक्कमा जाया ॥
केयी तेणेव भवे निव्वुया सव्वकम्मउम्मुक्का । केई तइयभवेण सिज्झिस्संती जिणसगासे ॥छ॥
५० ॥

सरक्ष्य जीवस्य कृतार्त्तिकस्य नालीकसम्बन्धमनोहरस्य ।
जैनस्य धर्मस्य निबन्धन श्रीऊकेशवशोऽत्र वरीवृतीति ॥१॥
तत्रेन्दिराभद्रवशकविन्ध्यः श्राद्धावतसोऽजनि पद्मदेवः ।
अमस्त धर्म विभव विवेक चक्षुःसधर्मोपकृतीरसून् यः ॥२॥
नासत्ययुक्त्या गतरोगशीला सुपर्वश्रद्ध्यद्रसुराजकाम्या ।
वृषाग्रिमश्रीरुचिताऽस्य देवश्रीरित्यभूत् प्रेमगृह कलत्रम् ॥३॥
तस्याङ्गभूः कौस्तुभवत् पयोधेः क्षेमधरोऽभूद् विलसन्महस्कः ।
लोकपृर्णयः स्वगुणैश्चकार पद हृदब्जे पुरुषोत्तमस्य ॥४॥
यो धर्मरत्नमभजज्जिनचन्द्रसूरेर्दैगत्यनिर्जय विविच्य विशुद्धबुद्धिः ।
वाक्यामृतैर्जिनपतेः सुगुरोरुदारैः कृत्वा तदेव विमल हृदये न्यधत्त ॥५॥
चित्र महाधार्मिकमौलिरेष सहोदर यन्निजनन्दन च ।
आचार्यलक्ष्मीयुजमप्यहासीत् को वान्यमिच्छेज्जिनचन्द्रमाप्य ॥६॥
पार्श्वप्रभोरजयमेरुपुरे पुरस्ताद् योऽचीकरत् कमपि मण्डपमग्र्यभङ्गिम् ।
मध्यदिने दिनपतिर्यदधः क्षण यान् चामीकराण्डकरमा परमा बभार ॥७॥
तस्य प्रिया समुदपद्यत हंसिनीति यस्या वपुर्ल्वणिमामृतपार्वणेन्दुः ।
लावण्यमप्यविषयः सुरसूरिवाचो वाचोऽप्यध कृतसितामृतदुग्धधाराः ॥८॥
तयोस्तनूजा जनताप्तपूजास्त्रयोऽभवन् स्व सरितो यथौघाः ।
पूतामलस्वान्तमु येषु नित्य मुदा रमते सुमनोमनांसि ॥९॥
समस्ति तेषा धुरि भीमदेवः श्रिया परीतो गुणबद्धयेव ।
प्रज्ञालता तां हृदयालुता च चित्रीयते यस्य निशम्य धीमान् ॥१०॥
यः कर्मसद्ग्रन्थविचारचारुचातुर्यधुर्य श्रितसाधुचर्यः ।
कृत्यैर्द्विरावश्यकतीर्थपार्चामुख्यैर्जनुः स्व सफलीकरोति ॥११॥
पद्मानुषङ्गभिदुरोऽप्यजडाश्रयोऽपि पद्मः प्रबुद्ध इह शश्वदपि द्वितीयः ।
पश्चाद्भवः पुरिसडो वृषनैष्ठिकत्व यस्याब्रवीत् परिकरः सुकृत चरिष्णुः ॥१२॥
अत्रत्याक्षियुगे न मक्षु मिलिते अन्यप्रियालोकनौत्सुक्य दोषमसुष्य मा मम दृशौ मुग्धे ग्रहीष्टामिति ।
नीरङ्गीपिहितास्यया न ददृशे पुसः परस्यानन, वैदेहेव यया प्रियाऽस्य जयदेव्याख्यऽस्ति पद्मस्य सा ॥१३॥
य इह लवणखेटे मन्दिर शान्तिनेतुर्व्यरचयदतिरम्य स्वर्धुनीस्पर्द्धिकेतु ।
स्मृतिपथगमितानदादिपुस्कस्य तस्योद्धरणममभिधस्य श्रावकस्याङ्गजा या ॥ १४ ॥
प्रज्ञावान् विनयी जितेन्द्रियचयः सम्यक्त्वरत्नालयः श्रीनीथकरबन्धुराचेनगुरूपास्त्येकतानाशयः ।
सत्पात्रेष्वनिदानदानविदुरः श्रेयःश्रिया मेदुरः सूनुः सुनवदुज्ज्वलोल्वणगुणान् धत्ते तयोः साढलः ॥१५॥
क्वचिदपि समयेऽथ साढलोऽय द्वयधिकदशामलभावनापरागे ।
निजहृदयसरोरुहीतिचिन्तामधुकरिकां विनिवेशयांबभूव ॥१६॥

मोक्षे सौख्य निरवधि स तु प्राप्यते कर्मनाशाच्चारित्रेणायमपि सुविदस्तच्च स्वाज्ञानहानेः ।
तद् दुःखद्रोर्विमलसलिलाभ्यर्णपूर्णालवाल, दोषाणां वा क्षय इव रुजां कारण ही समेषाम् ॥१७॥
तस्याऽऽमूलनिमूलनोज्ज्वलबलं श्रीतीर्थराजां वचस्तस्यावश्यकमादिमं दुरधिग निर्युक्तिमेतद् विना ।
साऽप्येव विवृतिं विनाऽपि निपुणैस्तल्लिख्यते चेदसौ, पारपर्यवशाद् वशवदमिद शर्मात्मनः स्यात्तदा ॥१८॥
इति मनसि विविच्य रुच्य(भव्य ?)मावश्यकविवृतेः प्रथम स एष खण्डम् ।
त्रिशतयुतदिनाधिनाथरोचिःपरिमितसवति १३०० लेखयांबभूव ॥१९॥

ततः—

चान्द्रे कुले श्रीजिनवल्लभोऽभूत् सूरिस्ततः श्रीजिनदत्तसूरिः ।
तत्पट्टपूर्वाचलहेलिकेलिः कलौ दिदीपे जिनचन्द्रसूरिः ॥२०॥
तदनु दनुजकल्पानल्पदुर्वादिजल्पाविरलगरलमूर्च्छाछिदपेयूषजूषः ।
स्वपरसमयसारोदन्वतः पारदृश्वाऽजनि जिनपतिसूरिर्निर्मनिःशेषसूरिः ॥२१॥
तत्पदसरोजन्मा जन्मामलच्छदवृत्तयः प्रवचनमलकुर्वन्ति श्रीजिनेश्वरसूरयः ।
व्यतरदजरद्भक्त्या तेभ्यः स पुस्तकमुत्तम तदिह सुतरामेवकार भवेदुपयोगवत् ॥२२॥
ककुभमपरा दूर राज्ञि प्रसाधयितु गते प्रवरविभया नक्षत्रौघ सदबरमडले ।
उदयकटकालबी सूरः स्वहेतिभिरस्तयन्नुदयमयते यावत्तावत्तमः स्यतु पुस्तकः ॥२३॥छ॥

॥ प्रशस्तिः समाप्ता ॥

क्रमाङ्क ११३

आवश्यकवृत्ति द्वितीयखंड पत्र. ३१० । **भा.** प्रा. स । **क.** आचार्य मलयगिरि । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं प.** ३२॥।×२॥.

क्रमाङ्क ११४

आवश्यक लघुवृत्ति पत्र. ३०१ । **भा.** म. । **क.** तिलकाचार्य । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०॥×२॥.

पत्र—१, ९, १२, १३, ३६, ४१, ४३, ४८, ५०, ५६ थी ५८, ६६, ६९, ७०, ७२, ७४, ७८, ९०, ९४, ९९, ११३, १२४, १२९ थी १३१, १३३ थी १३५, १३७, १४० थी १४२, १४४ थी १४६, १५७, १६१, १६७, थी १६९, १७२, १७९, १९१, २०१, २०३ थी २०९, २१२ थी २१४, २२३ थी २२७, २२९ थी २३०, २३२ थी २३५, २३९, २४१, २४२, २४५ थी २४७, २५३ थी २६१, २७१ थी २७३, २७६, २७८, २८२, २९३, २९४, २९७ थी २९९ नथी ।

यो मन्दरागेण न मन्थितोऽपि न वा नरैः क्वाऽपि विलङ्घितोऽपि ।
यं नालुलोके प्रमदोत्करामो महोदधिः सोऽप्युपकेशवशः ॥ १ ॥
तस्मिन् साधुजगद्धरः समजनि क्षेमन्धराङ्गोद्भवः, श्रीपार्श्वस्य निकेतन क्षितिगतस्वःसद्मसद्मभ्रमम् ।
सर्वाङ्गीणपरिष्कृतीश्च वसुना स्वीयेन योऽचीकरन्मध्येजेसलमेरु चित्रमथवा किं तादृशां दुष्करम् ॥ २ ॥
औदार्यमुख्यगुणमहतिलक्षणानां पौरस्त्यलक्ष्यमभवद् भरतावनीषु ।
यो जङ्गमः किमपर मरुमण्डलेऽभूत्तद्वासिजन्मिसुकृतैर्बत कल्पशाखी ॥ ३ ॥
रामस्य सीतेव सतीव शम्भोर्मधुद्विषः श्रीरिव रेवतीव ।
बलस्य जायाऽजनि सज्जनाऽस्य प्रसिद्धियुक् साढलहीति नाम्ना ॥ ४ ॥

समजनि बत तस्य विश्वशस्यास्तनयवराभितये जगद्वयस्याः ।
सुत्रपपरतयाऽतिवैभवत्वात् सुभगतयाऽङ्गभृतो मृषार्थकामाः ॥ ५ ॥
तदादिरभवद् यशोधवल उज्ज्वलोजेस्वली, यशोधवल उच्चकैर्लसति यस्य विश्वावनौ ।
मदीयकरकल्पभूरुहविपूर्णकामा नरा विदन्ति मरुमण्डलं निपतितं दिवः खण्डलम् ॥ ६ ॥
द्विःषोढाऽऽवश्यकविधिमसौ तीर्थपार्चा निरचां, साधूपास्ति तत इतरदेशागतश्राद्धभुक्तिम् ।
दानं गुप्तिस्थितनृषु ततो मोक्षणं चैव तेषां, यस्यावश्यं रचयत इद यान्ति षण्माः सहस्राः ॥ ७ ॥
तदनु भुवनपालः प्रीतदिक्चक्रवालः सुगुरुजिनपतीशस्तूपसाश्चर्यकार्यम् ।
विघटितमपि दिष्ट्या कारयामास योऽयं जिनपतिरथयानं चक्रवर्तीव पद्मः ॥ ८ ॥
तार्त्तीयीक उदारतैकवसतिर्गाम्भीर्यपाथःपतिः, स्वच्छात्मा सहदेव आर्हतमतप्रोत्सर्पणोद्यन्मतिः ।
यस्य स्त्र शुभपात्रतां प्रथयतेऽनेहस्त्रयेऽपि स्फुटां, पात्रत्राभवदङ्कुरः शुभतरोः पूर्वार्जितैस्तैः कृतम् ॥ ९ ॥
श्रेयोमूर्त्तेः स्फुरति यशसः सुन्दरी धर्मपत्नी, लज्जासज्जा प्रियसहचरी हन्त यस्याः प्रशस्या ।
अश्रान्तं प्रत्ययवयमलङ्कारिका शीललक्ष्मीरालीमुख्या यदि परममूर्लौकिकाचारकृत्यैः ॥ १० ॥
य इह लवणखेटे मन्दिरं शान्तिनेतुर्व्यरचयदतिरम्यं स्वर्धुनीस्पर्द्धिकेतु ।
स्मृतिपथगमिताऽऽनन्दादिपुस्तकस्य तस्योद्धरणममभिधस्याऽऽनन्दना नन्दना या ॥ ११ ॥
तयोस्तनूजो नेमिकुमारः प्रथमः शिशुरपि तनुजिनमारः ।
विनयगभीरिमधीरिमसिन्धुः परिमलमथकेम्बुजेव बन्धुः ॥ १२ ॥
द्वितीयीकोऽजनि गणदेवः सुगुरुपदाम्बुजविरचितसेवः ।
शैशव एव प्रवरविवेकस्तादृगुभयकुलजोऽपरथा कः ॥ १३ ॥
वैराग्यकन्दलसमुज्ज्वलचित्तवृत्तिः श्रीमज्जिनेश्वरगुरोः क्रमपङ्कजान्ते ।
प्रव्रज्य शैशववयस्यधिगूर्जरत्र तन्नन्दना प्रचुरवैभवडम्बरेण ॥ १४ ॥
गृहे सरस्वती नाम्ना व्रते चारित्रसुन्दरी ।
तपस्यति शिवायैषा दुर्लभं हि तदन्यथा ॥ १५ ॥

इतश्च--

सप्तक्षेत्र्यां निहितविभवा वैभवेऽप्यस्तमाना, मानत्यक्तस्वपरजनतास्वौचितीवर्यचर्या ।
उच्चैःशब्दं क्वचिदपि मनाक्नचिन्नादधानाऽप्युच्चैः शब्दं प्रतिपदमिता धर्मकर्मैकताना ॥ १६ ॥
क्वचिदपि समये च सुन्दरीयं द्व्यधिकदशामलभावनापरागे ।
निजहृदयसरोरुहीर्तिचिन्तामधुकरिकां विनिवेशयाम्बभूव ॥ १७ ॥
मोक्षे सौख्यं निरवधि सकः प्राप्यते कर्मनाशाच्चारित्रेणाऽयमपि सुविदस्तच्च स्वाऽज्ञानहाने ।
तद् दुःखद्रोर्विमलसलिलाभ्यर्णपूर्णालवालं, दोषाणां वा क्षय इव रुजां कारणं ही समेषाम् ॥ १८ ॥
तस्यामूलनिमूलनोज्ज्वलबलं श्रीतीर्थराजां वचस्तस्याऽऽवश्यकमादिमं दुरधिगं निर्युक्तिमेतद्विना ।
साऽप्येव विवृतिं विनाऽतिधिषणैस्तल्लेख्यते चेदसौ, पारम्पर्यवशाद्विशदर्दमिदं शर्मात्मनः स्यात्तदा ॥ १९ ॥
स्थैर्यं मेरुगिरेर्गभीरिमरमां सिन्धोर्विधोः सौम्यतां, तेजस्वित्वमहःपतेः सुकवितां काव्याद् गुरोर्वाग्मिताम् ।
रूपं पुष्पशरात् स्वरं जलधरादादाय सृष्टिं स्वकामेकत्रोपगतामिवेक्षितुमना यस्मिन् विधाता व्यधात् ॥२०॥
इति झटिति सदक्षरौघमावश्यकविवृतेरपरं विलेख्य खण्डम् ।
सुविहितयतिनायकाय साऽस्मै स्वगुरुजिनेश्वरसूरये व्यतारीत् ॥ २१ ॥
यावत् क्षोणीमृगाक्षी सलिलनिधिमहानीलनीलाम्बरीपा
कालिन्दीवेणिवल्लिः सुरपथसरिदामुक्तमुक्ताकलापा ।

ज्योतिर्विस्तारितारास्वरनलभरितश्यामरम्योन्तरीपा,
स्वर्गोर्वीभृत्किरीटा वहति जनशिरून् पुस्तकस्ताकदास्ताम् ॥ २२ ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ११५

आवश्यकलघुवृत्ति पत्र ३२२। **भा.** स.। **क.** तिलकाचार्य। **ले. सं.** अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाक लेखित ?]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२।.। पत्र ९३, २९५, ३२१ नथी।

क्रमाङ्क ११६

विशेषावश्यकमहाभाष्य पत्र २८४। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। गा. ४३००। **ले. सं.** अनु. १० शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२.

अन्त—

सव्वाणुयोगमूल भास सामाइयस्स [सोतूण]।
होति परिकम्मियमती जोग्गो सेसाणुयोगस्स ॥
पच मता इगितीसा सगणिवकालस्स वद्धमाणस्स।
तो चेत्तपुण्णिमाए बुधदिण सातिम्मि णक्खत्ते ॥
रज्जाणुपालणपरे सी[लादि]च्चम्मि णरवरिन्दम्मि।
वलभीणगरीए इमं महदि [सिरि]संतिजिणभवणे ॥
॥ गाथाग्र चत्तारि सहस्साणि तिण्णि सताणि ॥

क्रमाङ्क ११७

विशेषावश्यकवृत्ति अपूर्ण पत्र ३४०। **भा.** स। **क.** कोटयाचार्य। **ले. सं.** अनु. १५ शताब्दी उत्तरार्ध। [धरणाक लेखित]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१।×२॥.। पत्र १४१, ३०८, ३१२, ३१६, ३१७, ३२३, ३२९–३३१, ३३७, ३३८ नथी।

क्रमाङ्क ११८

विशेषावश्यकवृत्ति प्रथमखंड पत्र ३३५। **भा.** स। **वृ.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **ग्रं.** १४०००। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३॥×२॥.

पत्र १मां भगवान महावीरनु परिकर सहित अति सुंदर चित्र छे अने पत्र २मां व्याख्यान करता आचार्य अने सांभळता श्रोताओनु सुदर चित्र छे।

क्रमाङ्क ११९

विशेषावश्यकवृत्ति द्वितीयखंड पत्र ३२५। **भा.** सं.। **वृ. क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **ग्रं.** १४०००। र. स. ११७५। **ले. सं.** १४८८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३।२॥

अन्त—

शरदां च पंचसप्तत्यधिकैकादशशतेष्वतीतेषु। कार्त्तिकसितपंचम्यां श्रीमज्जयसिंहनृपराज्ये ॥११॥
श्रेष्ठिवीरकसत्पुत्रश्रेष्ठिवेल्लकसञ्ज्ञयोः। शय्यातरयोर्गेहेऽसौ वृत्तिर्निष्पत्तिमागता ॥१२॥छ॥
॥श्रीः॥ शुभं भवतु श्रीसघस्य ॥छ॥

॥५०॥ नवां नवां योऽनुकलं बिभर्त्ति श्रिय श्रयत्सेवकदित्सयेव।
स वः सदा श्यामतनुः शिवाय श्रीस्तंभनः पार्श्वजिनः शुभाय ॥१॥

श्रीमालाकलिते सुपुण्यपुरुषे श्रीमालवशोत्तमग्रगे कोटिकगोत्रनामविशदप्रासाद आभासते ।
तत्राभूत् कलशोपमः सुकुशलानन्दप्रदानक्षमः साधुः श्रीचिणलाभिधोऽतिविमलः सद्वृत्तशोभावहः ॥२॥
तेजाभिधः प्रादुरभूत् सतेजास्ततोऽब्जिनीनाथ इवोदयाद्रेः ।
मुद महर्षिष्वपि यो दधानः सचक्रकष्टान्यभितो जघान ॥३॥
तज्जन्योऽजनि यो जगन्निजभुजद्वंतार्पणार्थार्पणोद्भूतस्फीतहरावदातसुयशाः शीतांशुकान्त्या तथा ।
चक्रे निर्मलमुज्ज्वलः समभवन् भावा यथा दुर्धियां कालुष्यान्मलिनात्मनामपि कृती हाजीति सुश्रावकः ॥४॥
अचीकरत् श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरोः पदस्थापनमादरेण ।
श्रीगौतमस्येव हरिर्महर्द्ध्या स शोभते श्राद्धवरोऽत्र हाजी ॥५॥
तन्नन्दनः फम्मणनामधेयस्तीर्थेशपूजार्जितभागधेयः ।
मेरास्थितोऽप्यम्बुधिवद् भुव यो व्यापत् स्वपूरैः कुतुक स आसीत् ॥६॥
रूपादे गेहिनी तस्य रूपसौंदर्यशालिनी । अजायत सदाचारा हरेः पद्मेव देहिनी ॥७॥
गुरूपदेशामृतपूर्णकर्णः सर्वज्ञपूजाप्रवणः सकर्णः । तयोस्तनूजोऽजनि डूंगराख्यः स्ववंशशृंगारकरोऽतिदक्षः ॥८॥
तद्गेहिनी वाल्हिणिदेवी नाम्ना गगेव गौरा जिनपादलीना ।
पद्माभिरामा वरकंकणाढ्या सुश्राविकाऽभूज्जगति प्रसिद्धा ॥९॥
तदुदरनदसभूतं भ्रमरहित सर्वदा लसत्कोशम् । बलिराजोदयराजांबुजयुग्म जयति सश्रीकम् ॥१०॥
साधुश्रीबलिराजस्य तारादेवीति वल्लभा । समस्ति सुगुणाधारा हारयष्टिरिवामला ॥११॥
धौरेयकौ धर्मधुरामिवोर्वी वोढु विनीतौ तनयौ तदीयौ ।
विराजतस्तत्र तु देवदत्तो मुख्यो द्वितीयः किल रत्नपाल ॥१२॥
उदारोदयराजस्य जाया शृंगारदेऽभिधा । विमलाऽपीन्दुलेखेव चित्र वक्रा न या क्वचित् ॥१३॥
पुत्रौ तदीयावपि सच्चरित्रौ शुभाशुभौ स्तः सुगुणैः पवित्रौ ।
पूर्वस्तयोः श्रावकपासवीरो द्वितीयको राजति राजपालः ॥१४॥
इत्यादिपरिवारेण सहितो हितमानसः । बलिराजश्चिरं धर्मकृत्यानि कुरुते भुवि ॥१५॥

इतश्च—

अस्ति स्वस्तरुसन्निभः सुमनसामाधारभूतो लसत्पात्रश्रेणिविभूषितोऽतिविततो नीरध्रसच्छायकः ।
श्रीमच्चन्द्रकुलालवालकलितः श्रीवीरतीर्थावनीसप्रामोन्नतिरुत्तमः खरतरो गच्छो गणानां गुरुः ॥१६॥
आसस्तत्र जिनोदयाः सुगुरवः सप्राप्तभव्योदयास्तेभ्यः श्रीजिनराजसूरियतयो राजेंद्रचक्रांचिताः ।
तत्पट्टोदयशैलशृगमभितोऽप्याक्रम्य सूर्या इव भ्राजन्ते जिनभद्रसूरिगुरवस्ते बोधयन्तो जगत् ॥१७॥
प्राग् ज्ञान तदनन्तरं किल दया वागार्हतीति स्फुटा न ज्ञानेन विना क्रियाऽपि सफला प्रायो यतो दृश्यते ।
तत् स्यात् सप्रति पाठतः स च पुनः स्यात् पुस्तकाधारतस्तस्मात् पुस्तकलेखनेन मुनिषु ज्ञान प्रदत्त भवेत् ॥१८॥
ज्ञान सर्वसुखप्रद च ददता साधुव्रजायाभय दत्त येन ततो भवेदधिगमस्तत्त्वस्य तत्त्वाच्छमः ।
शान्तो वैरविवर्जितः स निरर्रिनिर्द्वेषिणो नो भय तस्माल्लिखयत श्रुत भुवि जनाः ! यूय विधायाऽऽदरम् ॥१९॥
निपीय तेषामिति वाक्सुधौघं सबान्धवः श्रीबलिराजनामा ।
अलीलिखच्छ्रीश्रुतपुस्तकानि स्फुरद्यशांसीव निजानि मन्ये ॥२०॥
व्यतीते विक्रमादष्टाष्टाब्धीन्दु १४८८ मितवत्सरे । विशेषावश्यकव्याख्यांन्यखंडं लेखित मुदा ॥२१॥छ॥

॥ श्रीः ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

क्रमाङ्क १२०

विशेषावश्यक वृत्तिसह प्रथमखंड अपूर्ण पत्र ३२२। **भा.** प्रा. सं.। **क. मू.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२॥।×२॥. प्रति शुद्ध छे.

क्रमाङ्क १२१

विशेषावश्यक वृत्तिसह द्वितीयखंड पत्र ३६४। **भा.** प्रा. सं.। **क. मू.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **र. सं.** ११७५। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२×२.

क्रमाङ्क १२२

ओघनिर्युक्तिबृहद्भाष्य पत्र १०१। **भा.** प्रा.। **गा.** २५१७। **ले. सं.** १४९१। **लं. प.** २४॥×२.

आदि—

५०॥ ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय॥

अरहंते वंदित्ता चोद्दसपुव्वी तहेव दसपुव्वी। एक्कारसगसुत्तत्थधारए सव्वसाहू य॥१॥

ओहेण यु निज्जुत्तिं वोच्छ चरणकरणाणुओगातो। अप्पक्खर महत्थ अणुग्गहत्थं सुविहियाणं॥२॥

ओहे पिंड समासे सखेवे चेव होंति एगत्था। निय अधिग नियय निच्छिय जुत्ति अत्थ त्ति निज्जुत्ती॥३॥

वोच्छामि भणामि त्ति चिज्जइ चरण ति किज्जते करणं। तो चरणकरणं भण्णइ होइ विभागो इमो तेसिं॥४॥

वय समणधम्म सजम वेयावच्च च बभगुत्तीओ। णाणाइतिय तव कोहनिग्गहाइ चरणमेयं॥५॥

अन्त—

ओहसमायारेन जुजता चरणकरणमाउत्ता। साहू खवेंति कम्मं अणेगभवसंचियमणंत॥

एसा अणुग्गहट्ठा फुडवियडविसुद्धपागडमहत्था। भणिनोहसमायारी दसविह एत्तो परं भवती॥

२५१७ **ओह**णिज्जुत्तीए भास सम्मत्त गाहाण सव्वग्ग॥छ॥ सवत् १४९१ वर्षे श्रावण सुदि १ बुधे श्रीमति श्री**स्तम्भ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खरतर**गच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयबधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमत्गच्छेशभट्टारकश्री**जिनभद्र**सूरीश्वराणामुपदेशेन परीक्ष**गूजर**सुतेन रेखाप्राप्तसुश्रावकेन परीक्ष**धरणा**केन पुत्र**साई**यासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे श्री**ओघनिर्युक्तिभा**ष्य लिखित पुरोहित**हरी**याकेन॥छ॥ शुभ भवतु॥

क्रमाङ्क १२३

(१) **ओघनिर्युक्ति** पत्र १–३६। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ११६३। पत्र ११, ३३ नथी।

(२) **ओघनिर्युक्तिवृत्ति** पत्र १६४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ६८२५। **ले. सं.** १४८७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥×२.। पत्र १५१ नथी।

अन्त—

अक्षरगणनया ग्रथाग्र ६८२५॥ सवत् १४८७ वर्षे श्री**खरतर**गच्छे श्री**जिन**राजसूरिपट्टालंकारश्री**जिनभद्र**सूरिसुगुरूणामादेशात: पुस्तकमेतल्लिखितं शोधित च॥ लिखापित साह**धरणा**केन सुत**साई**यासहितेन॥छ॥श्रीः॥

क्रमाङ्क १२४

ओघनिर्युक्तिवृत्ति पत्र २४१। **भा.** प्रा. सं.। **क.** द्रोणाचार्य। **ले. सं.** १२८९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२.

अन्त—

ओघनिर्युक्तिटीका समाप्ता ॥छ॥ कृतिराचार्य**द्रोण**स्येति ॥छ॥छ॥

संवत् १२८९ वर्षे फाल्गुन शुदि ४ सोमे **स्तंभतीर्थ**नगरनिवासिना श्री**श्री**माल्वशोद्भवेन ठ. **साढा**-सुतेन । ठ. **कुमरसिंहेन** सुत्रमिश्रा **ओघनिर्युक्तिवृत्ति**र्लेखयांचक्रे ॥छ॥छ॥ शुभं भवतु चतुर्विधश्रीश्रमणसंघस्य ॥छ॥छ॥ मंगलं महाश्रीः ॥छ॥छ॥ मंगलमस्तु ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क १२५

ओघनिर्युक्तिवृत्ति पत्र २३४ । **भा.** प्रा. सं. । **क.** द्रोणाचार्य । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प** ३३।×२.

क्रमाङ्क १२६

ओघनिर्युक्ति वृत्तिसह पत्र २३३ । **भा.** प्रा सं. । **वृ. क.** द्रोणाचार्य । **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संह.** मध्यम । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२॥×२.

क्रमाङ्क १२७

पाक्षिकसूत्र वृत्ति सह पत्र ६८ । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** यशोदेवसूरि । **ग्रं.** २७०० । **र. सं.** ११८० । **ले. सं.** १४८८ [धरणाक लेखित?] । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३४।×२।. । पत्र १, ११, १८ नथी ।

अन्त—

संवत् १४८८ वर्षे आषाढ सुदि १५ रवौ **पाक्षिकवृत्तिः** समाप्ता ॥

क्रमाङ्क १२८

पाक्षिकसूत्र वृत्ति सह पत्र ८९ । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** यशोदेवसूरि । **र. सं.** ११८० । **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३।×२।

क्रमाङ्क १२९

पाक्षिकसूत्र वृत्तिसह पत्र ८४ । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** यशोदेवसूरि । **र. सं.** ११८० । **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२॥×२। । पत्र ५७, ५८ नथी ।

आ प्रति तत्काळ कोइ कारणसर खवाइ जवाने लीधे के भांगी जवाथी तेने कोई कळाधरे काळजी पूर्वक सांधीने पुनः तैयार करी छे, तेथी आ प्रति विशिष्ट प्रकारे संधाती प्रतिओना किंमती दर्शनीय नमूनारूप छे :

क्रमाङ्क १३०

आवश्यकनिर्युक्ति अपूर्ण पत्र १४० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दीनु पूर्वार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥×२

पत्र १ थी ७, ९ थी १४, १६, १७, २१, २२, २४, २६, २९, ३१, ३७, ३८, ४०, ४१, ४३ थी ४५, ५३, ५७, ५९, ६१, ६३, ६४, १२६, १३८, १३९ नथी ।

क्रमाङ्क १३१

आवश्यकनिर्युक्ति पत्र १४१ । **भा.** प्रा. । **क** भद्रबाहुस्वामी । **ले. सं.** ११६६ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३।×२.

अन्त—

संवत् ११६६ पौष वदी ३ मगलदिनी महाराजाधिराजत्रैलोक्यगडश्रीजयसींघदेवविजयराज्ये लिहवेहेन लिखित ॥

क्रमाङ्क १३२

आवश्यकवृत्तिटिप्पनक पत्र ३१५। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **ले. सं** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२

क्रमाङ्क १३३

आवश्यकनिर्युक्ति पत्र २–२९१। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥।×२।.। अंतिम पत्रना टूकडा थइ गया छे।

क्रमाङ्क १३४

आवश्यकनिर्युक्ति पत्र २६९। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ३२८४। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२।।

पत्र ७८, ९७, १३२, १४१–१४८, १५६, २६३ नथी.

क्रमाङ्क १३५

आवश्यकनिर्युक्ति त्रटक अपूर्ण पत्र १८७। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२।.। आ प्रतिमां वचमां वचमां घणां पाना नथी।

क्रमाङ्क १३६

(१) **षडावश्यकसूत्रवृत्ति** पत्र १–९१। **भा.** स.। **क.** नमिसाधु। **ग्रं.** १५५०। **र. सं.** ११२२। **ले सं.** १२९८।

पत्र ९१ मां—

विक्रम सवत् १२९८ वैशाष सुदि १५ गुरौ षडावश्यकं लिखितं ॥छ॥ मगल महाश्री ॥ शुभं भवतु ॥

(२) **श्रावकधर्मविधितंत्रप्रकरणवृत्ति** पत्र ९१–१४६। **भा.** स.। **ग्रं.** ९००।

(३) ,, ,, **मूल** पत्र १४६–१५२। **भा.** प्रा.। **गा.** ७७। **संह** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प** १६×२।.

क्रमाङ्क १३७

षडावश्यकसूत्रवृत्ति पत्र १४६। **भा.** स.। **क.** नमिसाधु। **ग्रं.** १५५०। **र. सं.** ११२२। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×१॥।.

क्रमाङ्क १३८

ललितविस्तरावृत्तिसंक्षेप (चैत्यवंदनासूत्रवृत्ति) पत्र २८। **भा.** सं.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२॥.

क्रमाङ्क १३९

(१) **चैत्यवंदनासूत्रचूर्णी** पत्र १–६०। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि। **ग्रं.** ८४०। **र. सं.** ११७४। पत्र १, २ नथी।

(२) **वंदनकसूत्रचूर्णी अपूर्ण** पत्र ६०-८१। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि।

(३) **प्रत्याख्यानस्वरूपप्रकरण त्रूटक** पत्र १४७-१५२। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि। **गा.** २५० थी ३२९। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारंभ। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२।.

क्रमाङ्क १४०

(१) **चैत्यवंदनासूत्रचूर्णी** पत्र ६३। **भा.** प्रा.। **क** यशोदेवसूरि। **ग्रं** ८४०। **र. सं.** ११७४।

अन्त—

॥ संवत् ११७४ वर्षे॥ अमुकादिने चैत्यवदक चूर्णी कृता लिखि॥ (?)

(२) **वंदनकसूत्रचूर्णी** पत्र १-४८। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि। **ग्रं.** ७०७।

(३) **इरियावहियादंडकचूर्णी** पत्र ४८-५८। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि। **ग्रं.** १५०।

(४) **प्रत्याख्यानस्वरूपप्रकरण गाथाबद्ध** पत्र ५८-८४। **भा** प्रा.। **क** यशोदेवसूरि। **गा.** ३२९। **ग्रं.** ४००। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२

क्रमाङ्क १४१

(१) **चैत्यवंदनासूत्रवृत्ति** पत्र १-२८। **भा** स.। **क** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं.** ५४०।

(२) **वंदनकसूत्रवृत्ति** पत्र २८-६६। **भा.** स। **क.** श्रीचंद्रसूरि।

(३) **प्रत्याख्यानसूत्रवृत्ति** पत्र ६६-७९। **भा.** स.। **क** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं** ९२० त्रणेना।

(४) **श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति** पत्र ८०-१८२। **भा.** स। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं.** १९५०। **र. सं.** १२२२। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १७॥×२

आ प्रतिमां जीर्ण थयेल अंतनां पानां स. १६३५ मां नवां उमेरेलां छे.।

अन्तनी नवी पुष्पिका—

॥ संवत् १६३५ वर्षे आषाढ सुदि नवम्या पूर्णता प्रापित पत्रमदः प्रांतिम श्रीजिनमाणिक्यसूरिपट्टांभोज-भास्करश्रीश्रीश्रीजिनचंद्रसूरि[भट्टार]कैरिति श्रुतभगवद्भक्तये ॥श्री.

क्रमाङ्क १४२

चैत्यवंदनादिविवरण अपूर्ण पत्र ५४। **भा.** स.। **ले. सं** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १३॥।×२।.। पत्र ३८, ३९, ४३, ४५-४८, ५१ नथी।

आदि—

रागाद्यरातिविजयाप्तजिनाभिधानं देवाधिदेवमभिवंद्य निराकृताघः।
तच्चैत्यवंदननियुक्तमशेषसूत्रं शक्रस्तवादि विवृणोमि यथावबोध॥

सन्त्यं सति नयप्रमाणविषयक्षोदक्षमाः पंजिकाः सूत्रस्यास्य चिरंतनैः कविवृषैर्बद्धाः परं मेदवान्।
नानासूरिनिमित्तकोऽपि विविधो मे सप्रदायोऽस्ति यत्प्रायस्तस्य निवेदनं परकृतौ कर्तुं तु नो शक्यते॥

तस्मादेष समारम्भस्तत्प्रकाशाय युक्तिमान्। पूर्वसूरिभिरप्येव रचिता वृत्तयः पृथक्॥
नानार्थमिदं सूत्रं व्याख्यातं पूर्वसूरिभिः। नियतार्थप्रकाशेऽतो नोपालंभोऽस्ति कोऽपि नः॥
साधुश्रावकयोरत्र न विशेषोऽस्ति कश्चन। क्वचित्सूत्रे क्रियायां च विशेषः साधुगोचरः॥

क्रमाङ्क १४३

यतिप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति पत्र २८। **भा.** सं.। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध [धरणाक लेखित?]। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२.

आदि—

नत्वा श्रीवीरजिनं संक्षिप्तरुचीननुग्रहीतुमनाः । सुगमीकरोमि किंचिद् यतिप्रतिक्रमणसूत्रमहम् ॥१॥
अथ प्रतिक्रमणमिति कः शब्दार्थः ? उच्यते ।

अन्त—

ननु रात्राविच्छामि पडिक्कमिउ गोयरचरियाए इत्यादि सूत्रमपार्थकमसंभवादिति चेन्न, स्वप्नादौ तत्संभवाद-दोषः, अखंड वा सूत्रमुच्चारणीय, कथमन्यथा योगवाहिनोऽपि पारिष्ठापनिकाद्याकारानुच्चारयतीति सर्वमनवद्य ॥ समाप्ता चेयं यतिप्रतिक्रमणवृत्तिः ॥श्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क १४४

पाक्षिकसूत्रचूर्णी पत्र २६ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ४१५ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३॥×२

क्रमाङ्क १४५

पाक्षिकसूत्र वृत्तिसह पत्र ९६ । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** यशोदेवसूरि । **र. सं.** ११८० । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी । **संह** श्रेष्ठ । **द** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥×२। । प्रशस्ति अपूर्ण छे.

क्रमाङ्क १४६

(१) **चतुःशरणप्रकीर्णक** पत्र १–६ । **भा** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **गा.** ६३ ।

(२) **आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक** पत्र ६–१२ । **भा.** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **गा.** ७७ ।

(३) **भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक** पत्र १२–२६ । **भा.** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **गा.** १७२ ।

(४) **संस्तारकप्रकीर्णक** पत्र २६–३५ । **भा.** प्रा. । **गा.** १२२ ।

(५) **गच्छाचारप्रकीर्णक** पत्र ३५–४६ । **भा.** प्रा. । **गा.** १३७ ।

(६) **मरणविधिप्रकीर्णक** पत्र ४६–९७ । **भा.** प्रा । **गा.** ६५३ ।

(७) **गणिविद्याप्रकीर्णक** पत्र ९७–१०२ । **भा.** प्रा. ।

(८) **चंद्रवेध्यकप्रकीर्णक** पत्र १०२–११५ । **भा.** प्रा. । **गा.** १७४ ।

(९) **चतुःशरणप्रकीर्णक** पत्र ११५–११८ । **भा** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी [धरणाक लेखित] । **संह** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प** १५×२. ।

पत्र ४, ८, १०, १२, ३२, ३६, ३९, ४२, ४४, ५७, ६७, ७०–७३, ७६, ७९, ८०, १०१–१०५, ११४ नथी ।

क्रमाङ्क १४७

सर्वसिद्धान्तविषमपदपर्याय पत्र १५२ । **भा.** स. । **ग्रं.** २३६४ । **ले. सं.** १४९३ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं प** १३॥×१॥.

(१) **नंदीविषमपदपर्याय** पत्र १–७

(२) **आवश्यकवृत्तिविषमपदपर्याय** पत्र ७–३९

(३) ,, ,, पत्र ३९–५४

(४) **दशवैकालिकविषमपदपर्याय** पत्र ५४–६४

(५) **ओघनिर्युक्ति** ,, पत्र ६४–६६

(६) **पिंडनिर्युक्ति** ,, पत्र ६६–६८

(७) **पिंडनिर्युक्ति कतिचिद्गाथावृत्ति** पत्र ६८-७७
(८) „ **विषमगाथाविवरण** पत्र ७७-८३

यावत् त्रैलोक्यशालः कमठपतिवपुर्मूलजालप्रतिष्ठो
नागेन्द्रस्कन्धबन्धस्त्रिदशपतिनदीपल्लवश्चन्द्रगच्छः ।
आशाशाखाप्रशाख. शिवसदनशिलासत्कलो धिष्ण्यपुष्पो
भारत्यामेष तावद्दलितकलिमल· पुस्तकः पठ्यमानः ॥छ॥

(९) **उत्तराध्ययनबृहद्वृत्तिपर्याय** पत्र ८३-९५
(१०) **आचारांगपर्याय** पत्र ९५-१०३
(११) **सूत्रकृतांगपर्याय** पत्र १०३-१०५
(१२) **स्थानाङ्गपर्याय** पत्र १०५-११४
(१३) **समवायांगपर्याय** पत्र ११५-१२१
(१४) **भगवतीसूत्रपर्याय** पत्र १२१-१३१
(१५) **जीवाभिगमसूत्रपर्याय** पत्र १३१-१३७
(१६) **प्रज्ञापनासूत्रपर्याय** पत्र १३७-१३९
(१७) **प्रज्ञापनाविवरणविषमपदपर्याय** पत्र १३९-१४३

॥ प्रज्ञापनाविवरणविषमपदपर्यायाः समाप्ताः ॥ **अंगोपांगपर्यायाः समाप्ताः** ॥छ॥

(१८) **जीतकल्पविषमपदपर्याय** पत्र १४३-१५२

अन्त—

॥ सवत् १४९३ वर्षे श्रावण वदि १ गुरौ श्रीस्तंभतीर्थे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन प० गूर्जरपुत्रधरणाकेन पुत्रसाईयासहितेन श्रीसिद्धांतकोशे समस्तसिद्धान्तविषमपदपर्यायपुस्तक लिखापित ॥छ॥

क्रमाङ्क १४८

ज्योतिष्करंडकसूत्र वृत्तिसह पत्र २३३ । **भा.** प्रा. स । **वृ. क.** मलयगिरिसूरि । **ग्रं** ५००० । **ले. सं.** १४८९ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द** श्रेष्ठ । **लं. प.** २५x२

अन्त—

॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुदिने श्रीमति स्तंभतीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्खरतरगच्छे । श्रीजिनराजसूरि[पट्टे] लब्धिर्लीलानिलयबधुरबहुबुद्धि[बोधि]तभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचन्दनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरममश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्रीजिनभद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन [परीक्षगूजरसुतेन रेषा]प्राप्तसुश्रावकेन परीक्षधरणाकेन पुत्रसाइयासहितेन श्रीसिद्धान्तकोशे ज्योतिष्करण्डकटीका लिखापिता ॥ पुरोहितहरीयाकेन लिखिता ॥छ॥

क्रमाङ्क १४९

अंगविद्याप्रकीर्णक पत्र २४१ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ९००० । **ले. सं.** १४८८ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥x२.

इति खलु भो महापुरिसदिन्नायमंगविज्जाय उपपत्तीविजयो णामज्झायो सट्ठितिमो संमत्तो ॥छ॥ णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय महापुरिसदिन्नाय अंगविउजाय सहस्स-

परिवाराय भगवतीय अरहंतेहिं अणतणाणीहिं उवदिट्ठाय अणंतगमसगहसंजुत्ताय पण्णसमणसुतणाणिबीजमतिअणुगताय अणंतगमपज्जायाय ॥छ॥ णमो अरहताणं। णमो सिद्धाण। णमो आयरियाण। णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्वसाहूण ॥छ॥ णमो भगवतीए सुतदेवताए ॥छ॥ एताओ गाथाओ संलावजोणीपडले आदिदितिकाओ—

पुढवी गत्ता जा कायी समायुत्ता कधा तवे। आधारित्ता णिसित्तट्ठं कज्जेत्तणेव पुच्छति ॥
पसत्थ अप्पसत्था वा अत्थणिद्धा सुभासुभा। णिग्गुणगुणसुत्ता समत्ता वा सुसमता ॥
दूरा इति आसन्नदीहहस्सधुववेला। सपताणागतातीता उत्तमाऽधममज्झिमा ॥
जारिसी जाणमाणेण पुढवीसकधा भवे। तेणेव पडिरूवेणं त तधा वग्गमादिसे ॥

ग्रथाग्र ९००० शुभ भवतु ॥ सवत् १४८८ वर्षे वैशाख सुदि ३ अद्येह श्रीस्तंभतीर्थे खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये परीक्षगूजरसुतपरीक्षिधरणाकेन अंगविद्यापुस्तकं लिखापित ॥छ॥

श्रीसाधुकीर्त्युपाध्यायानां शिष्येण पं. महिमसुदरगणिना अस्या उपरि शोधिता सा० थिरुकभंडारपुस्तिका ॥

क्रमाङ्क १५०

प्रकरणपोथी पत्र २०५। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२.

(१) **बृहत्संग्रहणीप्रकरण** पत्र १-५७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** ५७९।

(२) **बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र ५८-१२१। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ग्रं.** ८७५। **गा.** ६४०।

(३) **कर्मस्तव-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ** पत्र १२१-१३५। **भा.** प्रा.। **गा.** ५८।

(४) **कर्मविपाक-प्राचीन प्रथम कर्मग्रंथ** पत्र १२६-१४०। **भा** प्रा.। **क.** गर्गर्षि। **गा.** १६९।

(५) **शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ** पत्र १४०-१५०। **भा.** प्रा.। **क.** शिवशर्मसूरि। **गा.** १११।

(६) **सित्तरी-षष्ठ कर्मग्रंथ** पत्र १५०-१५८। **भा.** प्रा.। **गा.** ९१।

(७) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रन्थ** पत्र १५९-१७०। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १०३।

(८) **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण (सार्धशतक)** पत्र १७०-१८५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १६४।

(९) **कर्मविचारसारप्रकरण** पत्र १८६-२००। **गा** १६५।

(१०) **बंधस्वामित्व-प्राचीन तृतीय कर्मग्रंथ** पत्र २००-२०५। **भा.** प्रा.। **गा.** ५४।

अन्त—

बधस्सामित्तमिण नेय कम्मत्थय सोउ ॥५४॥छ॥ मगल महाश्री ॥छ॥छ॥छ॥छ॥छ॥
५०॥ अत्थि सुहपत्तकलिओ वरविण्णो पव्वसजुओ सरलो। सिरिभिल्लमालवसो सपत्तीए इव विसालो ॥१॥
तम्मि य सिट्ठी मुत्तामणि व्व सत्थो विसालसोहिल्लो। पणयजणकयाणदो जिणदेवो नाम वरसड्ढो ॥२॥
सोहिणि नाम पिया से सुहकम्मसमुज्जया विमलसीला। तीसे पुत्ताण तिग एगा धूया अ......(अपूर्ण)

क्रमाङ्क १५१

प्रकरणपोथी पत्र १५४। **भा.** प्रा. सं. अप.। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२।.

(१) **पर्यन्ताराधनाप्रकरण** पत्र १-९। **भा.** प्रा.। **क.** सोमसूरि। **गा.** ६९।

(२) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र ९-२९ । **भा.** प्रा. । **क.** आसड । **र. सं.** १२४८ ।

(३) **चउसरण** पत्र २९-३३ । **भा** प्रा । **गा.** २७ ।

(४) **आतुरप्रत्याख्यान** पत्र ३४-३९ । **भा** प्रा. ।

(५) **आराधनाप्रकरण** पत्र ३९-५२ । **भा.** प्रा । **क.** अभयदेवसूरि । **गा.** ८५ ।

आदि—

आलोयणा वयाण उच्चारो खामणा अणसण च । सुहभावणा णमुक्कारभावणा च त्ति मरणविही ॥१॥

अन्त—

इय **अभयसूरिविरइयआराहणपगरणं** पढताणं । सत्ताण होइ नियमा परमा कल्लाणनिप्फत्ती ॥८५॥छ॥

(६) **[वैराग्य कुलक-धर्माधर्मफलकुलक]** पत्र ५२-५४ । **भा.** प्रा. । **गा.** १३ ।

आदि—

लद्धूण माणुसत्त धम्माधम्मप्फलं च नाऊण । सयलसुहकारणमी जत्तो धम्मम्मि कायव्वो ॥१॥

अन्त—

सभाविऊण एव वेरग्गनिबंधण भवसरूव । धम्मसमायरेणेण करेह मणुयत्तणं सफलं ॥१३॥छ॥

(७) **मिथ्यादुष्कृतकुलक** पत्र ५४-५६ । **भा.** प्रा । **गा.** १६ ।

आनां बीजां नाम **असज्झयानक्षामणाकुलक** तथा **भावनाकुलक** पण कुलककारे जणाव्यां छे ।

आदि—

जो को वि य पाणिगणो दुक्खे ठविओ मए भमतेण। सो खमउ मज्झ इण्हि मिच्छामिह दुक्कड तस्स ॥१॥

अन्त—

मिच्छादुक्कडकुलयं अहवाऽ**स**ज्झाणखामणा रइया । अहवा **भाव**णकुलय सम्मदिट्ठिस्स जीवस्स ॥१६॥छ॥

(८) **आलोचनाकुलक** पत्र ५६-५८ । **भा.** प्रा । **गा.** १२ ।

आदि—

जिणसिद्धकेवलीणं मणपज्जवनाणिओहिनाणीण । चउदसदसपुव्वीण नियदुच्चरिय समालोए ॥१॥

अन्त—

एव आलोएतो दढसत्तो अइविसुद्धपरिणामो । सुचरिएण समग्गो वच्चइ अयरामर ठाण ॥१२॥

आलोचनाकुलक समाप्तम् ॥छ॥

(९) **[आत्मविशुद्धिकुलक]** पत्र ५८-६१ । **भा.** प्रा. । **गा.** २४ ।

आदि—

अरहतसिद्धगणहरपमुहाण अभिमुहो अह ठाउ । अजलि काऊण सिरे नियदुच्चरियं समालोए ॥१॥

अन्त—

अप्पविसोही एसा जो भावइ निच्चकाल उवउत्तो । सो अचिरेण साहइ नियजीयं सुद्धपरिणामो ॥२४॥

(१०) **[आराधनाकुलक]** पत्र ६१-६३ । **भा.** प्रा । **गा** ११ ।

आदि—

रे जीव किं न याणसि चउगइससारसायरे घोरे । भमिहिसि चक्काइद्धो चउरासीजोणिलक्खेसु ॥१॥

अन्त—

रे जीव भावणाओ नवनवसवेगवड्ढियपयावो । निट्ठवण कम्माण कुणसु धुवं थेवकालेण ॥११॥छ॥

(११) **[वैराग्यकुलक]** पत्र ६३-६७ । **भा.** प्रा. । **गा.** २९ ।

आदि—

संसारम्मि असारे नत्थि सुह वाहिवेयणापउरे । जाणंतो इह जीवो न कुणइ जिणदेसिय धम्मं ॥१॥

अन्त—

इय जाणिऊण एय धम्मायत्ताइ सव्वकज्जाइ । त तह करेह तुरिय जह मुच्चह सव्वदुक्खेहिं ॥२९॥

॥ कुलक समाप्तम् ॥छ॥

(१२) **[उपदेशकुलक]** पत्र ६७–७८ । **भा.** प्रा. । **गा.** ७४ ।

आदि—

भो भो महायस तुम जीहाखलणेण सपय मन्ने । पच्चासन्न मरण ता सपइ होसु उवउत्तो ॥१॥

अन्त—

सावय महपुण्णेहिं पुव्वकएहिं तुम इह पत्तो । एयावत्थगयस्स वि जम्मह आराहणा एसा ॥७४॥छ॥

(१३) **नवकारफलकुलक** पत्र ७८–८४ । **भा.** प्रा. । **गा.** ३३ ।

आदि—

घणघायकम्ममुक्का अरहता तह य सव्वसिद्धा य । आयरिया उज्झाया पवरा तह सव्वसाहू य ॥१॥

अन्त—

अट्ठेव य अट्ठ सया अट्ठ सहस्स च अट्ठ कोडीओ । जो गुणइ सयाकालं सो तइयभवे लहइ सिद्धी ॥३३॥

॥ इति नवकारफल ॥छ॥

(१४) **मिथ्यादुष्कृतकुलक** पत्र ८४–८६ । **गा.** २० ।

आदि—

ससारे ससरता ण नाणाजोणिगया मए । जतुणो ठाविया दुक्खे तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

अन्त—

एव मिच्छाउक्कडवोसिरणविहीय सयलसत्तस्स । सग्गऽपवग्गमुहाइ सुलहाइ नरस्स किं बहुणा ॥२०॥

॥ मिच्छाउक्कडकुलय ॥छ॥

(१५) **संवेगमंजरी** पत्र ८७–९२ । **भा.** प्रा. । **क.** देवभद्रसूरि । **गा.** ३२ ।

आदि—

सद्देसणमलयानिलमजरियविसुद्धभावसहयारो । जयइ जणाणदयरो वसतसमउ व्व जिणवीरो ॥१॥

अन्त—

इय जइ सवेगपरो खण पि रे जीव होसि ता तुज्झ । सुलहा सिवलच्छी लद्धमणुयसिरिदेवभद्दस्स ॥३१॥

संवेगमजरीमिम सवणावयसभाव नयति सुयणा अमिलाणसोह ।

ते निच्चमेव सिरिसिद्धिवहूकडक्खलक्खोवलक्खियतणु खलु ते हवति ॥३२॥

॥छ॥ संवेगमजरी समत्ता ॥छ॥

(१६) **संजममंजरी** पत्र ९२–९७ । **भा.** अप. । **क.** महेश्वरसूरि । **गा.** ३५ ।

आदि—

नमिऊण नमिरतियसिंदविंदसिरिमउडलीढपयवीढ । पासजिणेसर सजमसरूवसकित्तणं काहं ॥१॥

अन्त—

समणह भूसण गयवसण संजममंजरि एह । कहइ महेसरसूरिपहु कत्ति कुगति स एह ॥३५॥

॥छ॥ संजममजरीप्रकरणं समत्त ॥छ॥ॐ॥छ॥

(१७) [**भावनाकुलक-वैराग्यकुलक**] पत्र ९८-१०१। **भा.** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **गा.** २२।

आदि—

जम्मजरामरणजले नाणाविहवाहिजलयराइन्ने। भवसायरे अपारे दुलह खलु माणुस जम्म ॥१॥

अन्त—

ता मा कुणसु कसाए इंदिअवसगो अ मा तुमं होसि। देविंदसाहुमहिय सिवसुक्ख जेण पाविहिसि ॥२२॥छ॥

(१८) [**भावनाकुलक**] पत्र १०१-१०५। **भा.** अप.। **गा** २१।

आदि—

जहिं जिणधम्मु न जाणीयइ न वि देवह गुरु भत्ति। तहिं तुहु जीवा दच्चडइ वससि म एकइ रत्ति ॥१॥

अन्त—

जं दिज्जइ पचंगुलिहि त परिअग्गइ थाइ। हल्लोहलियइ जीवडइ मुड्ढ कि बधण जाइ ॥२१॥

॥ शुभ भवतु श्रमणसघस्य ॥ छ ॥ छ ॥

(१९) [**उपदेशकुलक**] पत्र. १०६-११३। **भा.** अप.। **क.** जिनप्रभसूरि। **गा.** ३२।

आदि—

सुगुरु न सेविउ जगमु तित्थु, सुणिय न आगमवयणु महत्थु।
को वि न पाविउ परमपयत्थु, हा हा जम्मु गयउ अकयत्थु ॥१॥

अन्त—

ण्हाणु निम्मलु नाणु सम्मत्तु, सिंगारु जीवह पभउ, सच्चु वयणु तबालु इट्ठउ।
परदव्वज्जणु पियलि मुद्द सीलु आभरणु लट्ठउ।
आरुडउ सतोसरहि दप्पणु गुरुउवएसु। जिणपहु सामिहि जो करइ सु लहइ सिद्धिपवेसु ॥३२॥छ॥

(२०) [**आराधना**] पत्र ११३-१२०। **भा.** स.। **ग्रं** ४०।

आदि—

स निष्कलक श्रामण्य चरित्वा मूलतोऽपि हि। आयुःपर्यन्तसमये व्यधादाराधनामिति ॥१॥

अन्त—

नित्यमेव सुधीः साम्यश्रद्धासशुद्धमानसः। क्षणभगुरे [हि] ससारे कुर्यादाराधनामिति ॥४०॥छ॥

(२१) **भावनासंधि** पत्र १२१-१३६। **भा.** अप.। **क** जसदेवमुनि (यशोदेवमुनि)। **गा** ११।

आदि—

पणमवि गुणसायर, भुवणदिवायर, जिण चउवीसइ एक्कमणि।
अप्पउ पडिबोहइ, मोहु निरोहइ, कोइ भव्वु भावणवयणि ॥

अन्त—

निम्मलगुणसूरिहिं, सिवदिनसूरिहिं, पढमु सीसु जसदेवमुणि।
किय भावणसधी, भावविसुद्धी, निसुणवि अण्णु वि धरउ मणि ॥११॥

॥छ॥ शुभ भवतु श्रीश्रमणसंघस्य ॥

(२२) **आराधना** पत्र १४८-१४९। **भा.** प्रा। **गा.** ८। पत्र १३७-१४७ नथी।

आदि—

नाणे दसण चरणे तव विरिए सिद्धसक्खिय सुद्धि। गिण्हामि उच्चरामी वयाइ जहगहियभगाइं ॥१॥

अन्त—

नाह कस्स न मज्झ य को वि अह निम्ममो सदेहे वि। किंतु सिरिवीरपाया गई मई हुतु सयकाल ॥८॥
॥ आराधना समाप्ता ॥छ॥

(२३) **भावनाकुलक** पत्र १४९-१५१। **भा.** प्रा.। **क.** सोमदेव। **गा.** १७।

आदि—

नमिऊण सुरिंदनरिंदविंदनागिंदवंदिय वीर। भवभावणवरकुलय पबोहग भणमि जीवस्स ॥१॥

अन्त—

एयं भावणकुलय वहइजणमरणमोगमीएण। नियजीवबोहणत्थ रइअमिग सोमदेवेण ॥१७॥
॥ भावनाकुलक ॥छ॥

(२४) [**महर्षिकुलक**] पत्र १५१-१५४। **भा.** अप.। **गा.** २७।

आदि—

भयव दसन्नभद्दो सुदसणो थूलभद्द वयरो य। सफलीकयगहचाया साहू एवविहा हुंति ॥१॥

अन्त—

ए एवमाइमुणिपुंगवह भत्तिहिं वदण जो करइ।
मणु वयणु काउ निम्मलु करिवि भवसायरु लीलइ तरए ॥२७॥छ॥

क्रमाङ्क १५२

प्रवचनसारोद्धार पत्र १७४। **भा.** प्रा.। **क** नेमिचन्द्रसूरि। **ग्रं.** २०००। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२।.

क्रमाङ्क १५३

(१) **उपदेशपदप्रकरण** पत्र १-८५। **भा.** प्रा.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **गा.** १०४०।

(२) **जीवसमासप्रकरण.** पत्र ८५-११४। **भा** प्रा.। **गा.** २७०।

(३) **प्रवचनसंदोह.** पत्र ११४-१३७। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।.

क्रमाङ्क १५४

प्रकरणपोथी. पत्र १६५+१५+८=१८८। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं** १२१० तथा १२१५। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** १२॥×२

(१) **श्रावकषडावश्यकसूत्र** पत्र १-१४। **भा.** प्रा. स।

(२) **पंचलिंगीप्रकरण.** पत्र १४-२६। **भा** प्रा.। **क** जिनेश्वरसूरि। **गा.** १०१।

(३) **श्रावकवक्तव्यताप्रकरण** पत्र २३-३५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनेश्वरसूरि। **गा.** १०३।

(४) **पिंडविशुद्धिप्रकरण.** पत्र ३५-४५। **भा.** प्रा.। **क** जिनवल्लभगणि। **गा.** १०३।

(५) **आगमोद्धारगाथा.** पत्र ४५-५१। **भा.** प्रा.। **गा.** ७१।

(६) **पौषधविधिप्रकरण.** पत्र ५२-६४। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि।

(७) **पंचकल्याणकस्तोत्र.** पत्र ६५-६७। **भा.** प्रा.। **गा.** २६।

(८) **लघुअजितशांतिस्तव** पत्र ६७-७०। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १७।

आदि—उल्लासिकमनक्ख०

(९) **अजितशांतिस्तोत्र** पत्र ७०-७५ । **भा.** प्रा. । **क.** नंदिषेण । **गा.** ४० ।

(१०) **पर्यन्ताराधनाप्रकरण** पत्र ७५-८२ । **भा.** प्रा. । **गा.** ८४ । सोमसूरिकृतथी अन्य छे ।

(११) **आउरपच्चक्खाण** पत्र ८२-८६ । **भा.** प्रा. ।

(१२) **धर्मलक्षण** पत्र ८६-८७ । **भा.** सं. ।

(१३) **प्रश्नोत्तररत्नमालिका** पत्र ८७-९० । **भा.** स । **क.** विमलाचार्य । **आ** २७ ।

(१४) **नवतत्त्वप्रकरण भाष्यसह (नवतत्त्वप्ररूपणाप्रकरण)** पत्र ९१-१०३ । **भा.** प्रा. । **मू.** देवगुप्तसूरि । **भा.** अभयदेवसूरि । **गा.** १५२ ।

(१५) **नवपदप्रकरण** पत्र १०३-११६ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनचन्द्रगणि । **गा.** १३९ ।

(१६) **श्रावकधर्मविधिप्रकरण** पत्र ११६-१२१ । **भा.** प्रा. । **गा.** १७० ।

(१७) **कर्मप्रकृतिसंग्रहणी** पत्र १२१-१६२ । **भा.** प्रा. । **क.** शिवशर्मसूरि । **गा.** ४७७ ।

अन्त—

पएससत सम्मत्त ॥छ॥ सम्मत्ता **कम्मपयडिसंगहणी** ॥छ॥ गाहग्ग चारि सया अहिया पुण पचसयरीए ॥छ॥ संवत् १२१० माघ सुदि ३ सोमदिने ॥छ॥

(१८) **जिनविज्ञप्तिका** पत्र १६२-१६५ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनवल्लभगणि । **गा.** ३७ ।

आदि—

लोयालोयविलोयणवरकेवलनाणनायनायव्व । जिणचइ वंदिय विण्णवेमि त चेव तिजयगुरु ॥१॥

अन्त—

इच्चाइ रुच्चइ किमेत्थ समत्थवत्थुवित्थारसव्वपरमत्थविउस्स तुज्झ ।
सब्भावगब्भभणिएहि पसीय देहि दिट्ठि सया मुहकरिं **जिणवल्लह** मे ॥३७॥
॥ इति **विज्ञप्तिका** समाप्ता ॥छ॥

(१९) **स्वप्नसप्ततिकाप्रकरणगत गाथा सटीक** पत्र १-१५ । **भा.** प्रा. स । **ग्रं.** २५० । **मू. गा.** ३८ ।

आदि—

किंचोदाहरणाइ बहुजणमहिगिच्च पुव्वसूरीहिं । एत्थे णिदसियाइ एयाइ इमम्मि कालम्मि ॥१॥
किंचेत्यभ्युच्चये ॥

अन्त—

॥ इति गाथार्थः ॥छ॥ इति.........कृतिश्री ....समाप्तमिति ॥छ॥
ग्रथाग्र श्लोका जात २५०॥ सवत् १२१५ माघ सुदि ९ बुधे पुस्तिका लिखितमिति ॥छ॥
श्रीमत् **जिनदत्तसूरिसिसिन्याः शांतमतिगणिन्याः** सज्झायपुस्तिका श्री· ॥

(२०) **बोटिकनिराकरण** पत्र १-८ । **भा.** प्रा. । **गा.** ११५ ।

आदि—

५ नमो वीतरागाय ॥

निच्छिद्दा पाणिपुडा सघयण वज्जरिसभनाराय । अइसयजुत्ता य जिणा करभोई तेण ते होंति ॥१॥

अन्त—

जुन्नेहिं खडिएहिं य असव्वतणुपाउएहिं नणु निच्च । चेलेहिं सचेला वि हु अचेलया हुंति मुणिवसभा ॥११५॥
॥**बोटिकनिराकरण** समाप्तम् ॥छ॥

क्रमाङ्क १५५

प्रकरणपोथी पत्र १६२+१७+३१=२१०। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १२२२। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२॥

(१) श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण पत्र १–३७। **भा.** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **गा.** ५७०।

(२) धर्मरत्नप्रकरण पत्र ३७–४७। **भा.** प्रा.। **क.** शान्तिसूरि। **गा.** १४५।

(३) नवतत्त्वप्रकरण भाष्यसह पत्र ४७–५९। **भा.** प्रा.। **मू. क.** देवगुप्तसूरि। **भा. क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १५२।

(४) धर्मोपदेशमालाप्रकरण पत्र ६०–९५। **भा.** प्रा.। **क.** वीरचन्द्र शिष्य। **गा.** ५०२।

(५) शालिभद्रचरित्र गाथाबद्ध पत्र ९५–१०५। **भा.** प्रा.।

आदि—

सुरनरकयमाणं नट्ठनीसेसमाण भवजलहिमुजाणं सत्तहत्थप्पमाण।
वियरियवरदाण छिन्नकम्मारिताण पयडियवरनाण वंदिउं वद्धमाण ॥१॥
वोच्छामि सालिभद्दस्स पवित्त वरमंगल चरित्तमुत्तमाइन्नं।

अन्त—

इइ परमपवित्त सालिभद्दस्स एय चरियमइविसिट्ठ जे पढती मणुस्सा।
तह य अणुगणंती तीए वक्खाणयंती नरसुरवरसोक्ख भुंजिउ जंति मोक्ख ॥
॥ सालिभद्रचरित समाप्तम् ॥ छ ॥

(६) [श्रावकव्रतभंगकुलक] पत्र १०५–१०७। **भा.** प्रा.। **गा.** ३०।

आदि—

दुविहा अट्ठविहा वा बत्तीसविहा व सत्त पणतीसा।

अन्त—

तेरस कोडिसयाइं चुलसीइजुयाइ बारस य लक्खा।
सत्तासीइसहस्सा दो य सया तह दुरग्गा य ॥३०॥छ॥

(७) उपदेशमालाप्रकरण-पुष्पमालाप्रकरण पत्र १०७–१५५। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **गा.** ५०५। **ले. सं.** १२२२।

॥ श्रीहेमचन्द्रसूरिविरचिता समाप्ता॥ संवत् १२२२ पोष वदि १ ॥

(८) तपश्चरणभेदस्वरूपप्रकरण पत्र १५६–१६१। **भा.** प्रा.। **क.** चक्रेश्वरसूरि। **गा.** ५४। **र. सं.** १२१३।

आदि—

नमिऊण जिण निज्जरभिहाणतत्तस्स सत्तमस्साह। वोच्छ विवरणगाहाओ पुव्वसुत्ताणुसाराओ ॥१॥

अन्त—

तवभेयाण सरूव सिरिमच्चक्केसरेहिं सूरीहि। मड्डाहडम्मि रइय बारससतेरुत्तरे वरिसे ॥५४॥
॥ तपश्चरणभेदस्वरूपप्रकरणं समाप्तम् ॥ छ ॥

(९) त्रयोदशभेदनवकारस्वरूपकुलक पत्र १६१–१६२। **भा** प्रा.। **गा.** १४।

आदि—

इगदुतितिचउपणछसगसोलसपणतीसअट्ठसट्ठीहिं। सगवीससयतिसहस्सएण वन्नाण निप्फन्ना ॥१॥

अन्त—

सगवीसइं सइ अक्खरह पणतीसउ खरजुत्तु । इह तेसट्ठसय अक्खरउ दुहहरु सुमरहं मंतु ॥१४॥
॥ त्रयोदसभेदनवकारस्वरूपफल ॥ छ ॥ छ ॥

(१०) **विचारमुखप्रकरण** पत्र १–१७। **भा.** प्रा.। **क.** अमरचन्द्रसूरि। **गा.** १४१।

आदि—

॥इ०॥ नमः सर्वज्ञाय ॥
निम्मलनाणपयासियवत्थुविभत्तिं नमित्तु **वीर**जिणं। किंचि **विभत्तिवियार** वोच्छं बालावबोहत्थं ॥१॥

अन्त—

इय छब्भेयविभत्ति पयचिय **अमरचंद**सूरीहिं। निसुणताण जायइ उम्मेसो नाणलेसस्स ॥१४१॥
॥एकचत्वारिंशदधिक शत ॥ छ ॥ इति **विचारमुखप्रकरण** समाप्तम् ॥

(११) **बृहत्संग्रहणीप्रकरण** पत्र १–३१। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** ३६६।

क्रमाङ्क १५६

प्रकरणपोथी पत्र १२७+४+१०+६+३४=१८१। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** ११९२। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२।

(१) **श्रावकवक्तव्यता-षट्स्थानकप्रकरण** पत्र १–७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनेश्वरसूरि। **गा.** १०३। पत्र १, ४ नथी।

(२) **पंचलिंगीप्रकरण** पत्र ७–१५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनेश्वरसूरि। **गा.** १०१।

(३) **आगमोद्धारगाथा** पत्र १५–१९। **भा.** प्रा.। **गा.** ७१।

(४) **मिथ्यात्वमथनाकुलक** पत्र १९–२१। **भा.** प्रा.। **गा.** २६।

आदि—

न गुले भणिए गुलिय निंबे कडुय कया वि हवइ मुहं। न गुणे हवंति दोसा वायामेत्तेण कइया वि ॥१॥

अन्त—

बहुकालिओ अणाई संसारो मिच्छदसण एय। जेहिं न चत्त अइरा बहुकाल ते भमीहिंति ॥२६॥
॥ इति **मि**थ्यात्वमथना ॥छ॥

(५) [**दानविधिकुलक**] पत्र २१–२३। **भा.** प्रा.। **गा.** २५।

आदि—

धम्मोवग्गहदाणं दिज्जइ धम्मट्ठियाण नरनाह। जे खंतिमद्दवज्जवनियमपरा गुत्तिबंभधरा ॥१॥

अन्त—

.........हो गम्मइ नरयमि जेण धम्मेण। सो मिच्छत्तच्छाइयलोयणाण धम्मो मणे ठाइ ॥२५॥

(६) **धूमावलि** पत्र २३–२७। **भा.** प्रा. अप.। **गा.** ५४।

आदि—

......हिं सिद्धजयमंगलमंगलेहिं कल्लाणसंपयपरंपरकारएहिं।
मोहधयारणियरेक्कदिवायरेहिं ....णेहिं ॥१॥

अन्त—

निव्वत्तियमउजणसुरसरिच्छणेवत्थवड्ढियच्छाय। जयभूसण विभूसियभूसणसोह जिण नमह ॥५४॥
॥छ॥ **धूमावलिया समाप्ता** ॥ॐ॥

(७) **जिनस्नात्रविधि चतुष्पर्वात्मक** पत्र २७–३३ । **भा.** सं. । **क.** वादिवेताल शांतिसूरि । **का.** ७४ ।

आदि—

श्रीमत्पुण्य पवित्र कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्मलक्ष्म्याः
क्षुन्नारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पातघाति ।
संकेतः कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वोत्सवानां
स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिमगुरोर्वच्चिता मेन्नं दृष्टम् ॥१॥

अन्त—

इति धनरत्नसुवर्णत्रवस्त्रविलेपनायलकारैः । जनितादरो विजयते जगद्गुरोर्जन्मसतानम् ॥१८॥
॥छ॥ इति **जिनस्नात्रविधौ चतुर्थं** पर्व्व समाप्तमिति ॥ॐ॥छ॥

(८) **प्रातिहार्यस्तोत्र कुसुमाञ्जलिस्तोत्र नंदीश्वरस्तोत्र** पत्र ३४–३७ । **भा.** प्रा. । **क.** मानतुंगसूरि प्रणेता । **कडी** ९+५+१०=२४ ।

आदि—

१ पवणकंपिरपत्तपब्भारुप० २ बहलपरिमलमिलियमुहलालि० ३ कल्लाणयदिणेसु सव्वेसु वि०

(९) **थेरावली-नन्दीसूत्रगता** पत्र ३७–४० । **भा.** प्रा. । **क.** देववाचक । **गा.** ५० ।

(१०) **श्रावकधर्मविधितन्त्रप्रकरण** पत्र ४०–४८ । **भा.** प्रा. । **क.** हरिभद्रसूरि । **गा.** १२० ।

(११) **नाणाचित्तयप्रकरण** पत्र ४८–५३ । **भा.** प्रा. । **गा.** ८१ ।

(१२) **कथानककोशसूत्र** पत्र ५३–५६ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनेश्वराचार्य । **गा.** ३० ।

(१३) **जिनदत्तसूरिस्वाध्याय** अपूर्ण पत्र ५७–५९ । **भा.** अप. । पत्र ६० मु नथी ।

आदि—

जो अमाणु णिरिवद्धमाणु मयमाणविवज्जिउ सिद्धिपुरंधिनिबद्धमाणु भवपंजरु भजिउ ।
लोयालोयपयासणेक्कगुरुभुयणदिवायरु सो जिणिंदु नयअमरविंदु वंदिवि करुणायरु ।
सथुणहिं **वीर** जुगपवरगुरु गुरुभावह सठविय मणु । जिणसासणगयणगणतरणि सिवपहगमणमहासमणु ॥१॥

(१४) [**त्रुटक कुलक**] पत्र ६१–६२ । **भा.** प्रा । **गा.** ३२ । पत्र ६३–६५ नथी ।

अन्त—

गिम्हुम्हुहयस्स दुयं जह धावतस्स विरलतरुहेट्ठा । छायासुहमप्पं चिय इंदियसोक्खं पि तह जाण ॥३२॥छ॥

(१५) **आराधना** पत्र ६६–६९ । **भा.** प्रा. । **गा.** ३६ ।

आदि—

जमणंतम्मि वि न कयाइ पत्तपुव्व अईयकालम्मि । लंघिज्जइ गोपयमिव जस्सामत्थेण भवजलही ॥१॥

अन्त—

एक्केक्कगोयरा वि हु अरिहाइसु सुहपरपर जणइ । भत्ती उ कीरमाणा कणगरहनिवो इह नायं ॥३६॥
॥छ॥ **आराहणा** ॥

(१६) **ज्ञानमाहात्म्यप्रकरण** पत्र ६९–७३ । **भा.** प्रा. । **गा.** ५६ ।

आदि—

नाणं चक्खू नाग पईवओ नाणमो य दिणनाहो । तिहुयणतिमिसगुहाए पगासरयणं परं नाणं ॥१॥

अन्त—

जह मक्कडओ पक्कफलाइ दट्ठूण धाइ धाओ वि। इय जीवो पर[विहव] विविहं दट्ठूण अहिलसइ ॥५६॥छ॥

(१७) **[आराधनाप्रकरण अपूर्ण]** पत्र ७३–७५। **भा.** प्रा.।

आदि—

आजम्म पि करित्ता कडमह रइयपावपब्भारं। पच्छा पडियमरण लहिऊण विसुज्झए जीवो ॥१॥

(हवे पछीनां पानां कोई बीजी पोथीनां होवाथी आ प्रकरण अपूर्ण छे.)

(१८) **चतुर्विंशतिजिनकल्याणकस्तोत्रचतुर्विंशतिका** पत्र ७६–८४। **भा.** प्रा.।

आदि—

भीमभवसंभमुब्भतजतुमताणताणदाणखम। उसभ जिणवरवसभ थुणामि भावेण भुवणगुरु ॥१॥

अन्त—

इय चवणपभिइपनरसपयत्थपयडणथुईए सथुणिओ। वछिय पय पयच्छउ वीरो सेसा वि तित्थयरा ॥७॥२४॥ॐ॥

(१९) **ऋषभ-शान्ति-नेमि-पार्श्व-महावीरजिनपंचकस्तोत्रपंचक** पत्र ८४–९०। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **गा.** २५+२३+१५+१५+१५=१०३।

(२०) **अजितशांतिस्तव** पत्र ९०–९२। **भा.** प्रा। **क.** जिनवल्लभसूरि। **गा.** १७।

(२१) **जिनविज्ञप्तिका** पत्र ९२–९४। **भा** प्रा.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **गा.** ३७।

आदि—लोयालोयविलोयणवरकेवलनाणनायनायव्व।

(२२) **लघुशांतिस्तोत्र** पत्र ९५–९५/२। **भा.** स। **क.** मानदेवसूरि। **आ.** १७।

(२३) **महावीरपंचकल्याणकस्तोत्र** पत्र ९५/२–९६। **भा.** प्रा। **गा.** १३।

आदि—ओहिन्नाणमुणियतिव्वेसर मणुय०

(२४) **प्रव्रज्याविधानकुलक** पत्र ९६–९८। **भा.** प्रा। **गा.** २८।

(२५) **चउसरण** पत्र ९८–१००। **भा.** प्रा.। **गा** २५।

(२६) **चतुर्जिनकल्याणस्तोत्र** पत्र १०० मु। **भा.** प्रा.। **गा** १०।

आदि—

आसाढपढमचउत्थीए चविय सव्वट्ठवरविमाणाओ।

(२७) **जयतिहुयणस्तोत्र** पत्र १०१–१०४। **भा.** अप। **क.** अभयदेवसूरि। **कडी.** ३०।

(२८) **सुगुरुगुणसंथवसत्तरिया** पत्र १०४–१०९। **भा** प्रा.। **क.** सोमचंद्रसूरि। **गा.** ७५।

आदि—

गुणमणिरोहणगिरिणो रिसहजिणिंदस्स पढममुणिवइणो। सिरिउसभसेणगणहारिणोऽणहे पणिवयामि पए ॥१॥

अन्त—

इय सुहगुरुगुणसथवसत्तरिया सोमचदजुन्ह व्व। भवभवक्खरतावहरा भणिज्जमाणा लहु होउ ॥७५॥

॥ छ ॥ इय सुगुरुगुणसंथवसत्तरिया समाप्ता ॥ छ ॥

(२९) **चतुस्त्रिंशदतिशयस्तोत्र** पत्र १०९ मु। **भा.** प्रा.। **गा.** १३।

आदि—थोसामि जिणवरिंदे अब्भुयभूएहिं.

(३०) **युगप्रधानगुरुसुरूपदेशिकुलक** पत्र ११०–१११। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा** ३४।

आदि—

वंदिय दियसत्तभयं भयवंतं वद्धमाणमसमाण । वोच्छं जुगपवरागमगुरुपरिमाणं सुरूवं च ॥१॥

अन्त—

इय जिण जिणदत्तसुमुत्तिमग्गदेसीण जुगपहाणाण । ससरूव परिमाण महानिसीहाओ भणियमिणं ॥३४॥

॥ युगप्रधानगुरुसुरूपदेसिकुल्क समाप्तमिति॥ॐ॥

(३१) **विश्रुतश्रुतस्तव** पत्र ११९–११३ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** २७ ।

आदि—

निम्महियमोहमाएण कणयकाएण विगयराएण । उवलद्धविमलकेवलनाणेण विसुद्धझाणेण ॥१॥

अन्त—

सूरु व्व सूरिजिणवल्लहो य नाओ जए जुगप्पवरो । जिणदत्तगणहरपय तप्पयपणयाण होइ फुडं ॥२७॥

॥ इति विश्रुतश्रुतस्तवः समाप्तः ॥ॐ॥

(३२) **श्रावकआवश्यकसूत्र** पत्र ११३–१२२ । **भा.** प्रा. ।

पत्र १२२ मां—॥ संवत् ११९२ भाद्रपद वदि १.

(३३) **आलोयणाविधिप्रकरण** पत्र १२२–१२३ । **भा.** प्रा. । **क.** अभयदेवसूरि । **गा.** २५ ।

आदि—

आलोयणा उ विहिणा चउछक्कन्ना य संजमजुयाण । जाणंताण देया विसुद्धभावेण निस्सल्ला ॥१॥

अन्त—

इय वरनवंगविवरणकारयसिरिअभयदेवसूरीहिं । भव्वाणुग्गहणकए कयमिणमालोयणविहाण ॥२५॥

॥ आलोअणाविधिप्रकरण समाप्तम् ॥

(३४) **नमिऊणस्तोत्र** पत्र १२४–१२५ । **भा.** प्रा । **गा.** २१ ।

(३५) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र १२५–१२६ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनचन्द्रसूरि । **गा.** ११ ।

आदि—भवगत्ततोनिवडतसत्तहत्थावलंबदाणपर ।

(३६) **गुरुपारतंत्र्यकुलक** पत्र १२६–१२७ । **भा.** प्रा. । **गा.** २१ । **ले. सं.** १११५ ।

॥ सवत् १११५ वर्षे ॥

नोंध—आ १११५ सवत् नवो लखेलो होवाथी बनावटी छे । आ कल्पित संवत् लखनारना ध्यानमां ए हकीकत नथी आवी के प्रतिनो साचो लेखनसवत् प्रतिना १२२ मा पानामां ११९२ उल्लिखित छे ।

(३७) **गुरुपरिवाडी** पत्र ४ । **भा.** अप । **क.** पल्हकवि । **कडी** १० ।

आदि

जिण दिट्ठइ आणंदु चडइ अइरहसु चउग्गुणु । जिण दिट्ठइ झडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु ।
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ । जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु णासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ सुइ धम्ममइ अवुहहु काइ उइक्खहु । पहु नवफणि मडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहु ॥१॥

अन्त—

वक्खाणियइ त परमतत्तु जिण पाउ पणासइ । आराहियइ त वीरनाहु कइ पल्हु पयासइ ।
धम्मु त दयसंजुत्तु जेण वर गइ पाविज्जइ । चाउ त अणखडियउ जु वंहिणु सलहिज्जइ ।
जइ ठाउ त उत्तिमु मुणिवरह वि पवरवसहिहो चउरनर ।
तिम सुगुरुसिरोमणि सूरिवर खरतर सिरिजिणदत्तवर ॥१०॥

॥ इति श्रीपट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तनमहानगरे श्रीजयसिंहदेवविजयराज्ये । श्रीखरतरगच्छे । योगीन्द्रयुगप्रधानवसतिवासिनां श्रीजिनदत्तसूरीणां शिष्येण ब्रह्मचन्द्रगणिना लिखिता ॥ॐ॥शुभं भवतु ॥ॐ॥ श्रीमत्पार्श्वनाथाय नमः ॥ सिद्धिरस्तु ॥

नोंध—आ गुरुपरिवाडीमां मूळ चोथा पानाने बदलीने नवु चोथुं पानुं उमेरेलुं होई गुरुपरिवाडीनो आ ११७१ लेखनसंवत् विश्वासपात्र नथी ।

(३८) अजितशान्तिस्तोत्र पत्र ५-१० । **भा.** प्रा. । **क.** नदिषेण । **गा.** ३९ ।

(३९) चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिचतुर्विंशतिका पत्र ६ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनवल्लभगणि । **गा.** ९६ ।

आदि—

मरुदेविनाभितणय वसहकं पचधणुसयपमाणं । सव्वट्ठचुय पणमह उत्तरसाढाहि उसभजिण ॥१॥

अन्त—

गयवाहणो गयगई कुवलयकालो वि न कुवलयकालो ।
कयनयरक्खो जक्खो घणओ लहु होउ सुहधणओ ॥४॥२४॥
॥छ॥ समत्ताओ चउव्वीसतित्थयरथुईओ ॥छ॥ कृतिर्जिनवल्लभगणेः ॥छ॥

(४०) आत्मानुशासन पत्र १-४ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनेश्वराचार्य । **गा.** ४० ।

आदि—९०॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

लद्धूण माणुसत्तं कहिंचि अइदुलहं पि रे जीव । धी धी अणज्ज तुज्झ अज्ज वि विसएसु ज घुलसि ॥१॥

अन्त—

इय सूरिजिणेसरअप्पसासण पढइ निच्च जो सम्म । सो ससारमहण्णवपार खिप्प समल्लियइ ॥४०॥छ॥

(४१) उपदेशमालाप्रकरण पत्र ४-३४ । **भा.** प्रा. । **क.** धर्मदासगणि । **गा.** ५४१ ।

क्रमाङ्क १५७

प्रकरणपोथी पत्र २६१ । **भा.** प्रा स. । **ले. सं.** १३१० । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५॥×२१. ।

(१) उपदेशमालाप्रकरण पत्र १-४७ । **भा.** प्रा. । **क.** धर्मदासगणि । **गा.** ५४३ ।

(२) बृहत्संग्रहणीप्रकरण पत्र ४८-१०२ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण । **गा.** ५२४ ।

(३) योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १०२-१५० । **भा.** सं । **क.** आचार्य हेमचन्द्र ।

(४) पुष्पमालाप्रकरण पत्र १५०-२०६ । **भा.** प्रा. । **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि । **गा.** ५०५ ।

(५) हितोपदेशामृतप्रकरण पत्र २०७-२६१ । **भा.** प्रा. । **क.** प्रभानन्दसूरि । **गा.** ५२५ ।

आदि —

५० ॥ नमः परमात्मने ॥

नमिरसुरासुरसिरल्हसिरसरसमदारकुसुमरेणूहिं । निम्मज्जियपयनहदप्पणे जिणे पणमिमो सिरसा ॥१॥

अन्त—

सिरिअभयदेवमुणिवइविणेयसिरिदेवभद्दसूरीण । अनिउणमईहिं सीसेहिं सिरिपभाणंदसूरीहिं ॥५२१॥
उवजीविऊण जिणमयमहत्थसत्थत्थसारलवे । सपरेसि हिउवएसो हिओवएसो विणिम्मविओ ॥५२२॥
निसुणतपढतगुणंतयाण कल्लाणकारण एसा । गाहाण संखाए पंच सया पचवीसहिया ॥५२५॥
॥छ॥ इति हितोपदेशप्रकरणं समाप्तमिति । भद्रम् ॥छ॥

॥५०॥ ऊकेशान्वयमडन समभवन्माणिक्यनामा पुरा साधुः स्वर्गधुनीप्रवाहविमलास्तस्यात्मजास्तु त्रयः। आद्यो बिल्हण इत्यनिंद्यचरितः साधुस्ततो रुल्हणस्तार्त्तीयः पुनरस्ति साल्हण इति स्यूताः पुमर्था इव ॥१॥ अस्ति रुल्हणसाधोश्च नन्दनश्चन्दनाभिधः। स सुधी पुस्तिकामेनां स्वश्रेयोर्थमलीलिखत् ॥२॥ ॥ संवत् १३१० वर्षे मार्गपूर्णिमायामद्येह महाराजाधिराजश्रीविश्वलदेवकल्याणविजयराज्ये। तत्पादपद्मोपजीविनि महामात्यश्रीनागडप्रभृतिपंचकुलप्रतिपत्तौ एवकाले प्रवर्त्तमाने प्रकरणपुस्तिकेयं साधुचंदनेन लि[लि]खिता ॥ लिखिता च उ० सांगाकेनेति भद्रम् ॥ मगलं महाश्रीः ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क १५८

प्रकरणपोथी पत्र २०४। **भा.** प्रा. स। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×१॥।

(१) **उपदेशमालाप्रकरण टिप्पणीसह** पत्र १–४३। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४१। पत्र १ तथा २ मां **चित्र** छे।

(२) **योगशास्त्रआद्यप्रकाशचतुष्टय** पत्र ४४–७५। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य।

(३) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र ७५–८६। **भा.** प्रा.। **क.** आसड। **गा.** १४४। **र. सं.** १२४८।

(४) **धर्मोपदेशमालाप्रकरण** पत्र ८६–९४। **भा.** प्रा.। **गा.** १०३।

(५) **षट्स्थानकप्रकरण** पत्र ९४–१०८। **भा.** प्रा.। **क.** प्रद्युम्नसूरि। **ग्रं.** २२०।

(६) **जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र १०९–११६। **भा.** प्रा.। **गा.** ८६।

(७) **श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र** पत्र ११६–१२०। **भा.** प्रा। **गा.** ६१।

(८) **पंचसूत्रसत्क प्रथमसूत्र** पत्र १२०–१२३। **भा.** प्रा।

(९) **गौतमपृच्छा** पत्र १२३–१२७। **भा.** प्रा.। **गा.** ५३।

(१०) **थेरावली (नंदीसूत्रान्तर्गता)** पत्र १२७–१३१। **भा.** प्रा.। **क.** देववाचक। **गा.** ५०।

(११) **अजितशांतिस्तोत्र** पत्र १३१–१३६। **भा.** प्रा.। **क.** नंदिषेण। **गा.** ४०।

(१२) **प्रश्नोत्तररत्नमाला** पत्र १३६–१३८। **भा.** स.। **क.** विमलाचार्य। **आ.** २८।

(१३) **धर्मलक्षण** पत्र १३८–१३९। **भा.** स.।

(१४) **उपदेशमालाप्रकरण–पुष्पमालाप्रकरण** पत्र १४०–१८०। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **गा.** ५०५।

(१५) **आत्मानुशासन** पत्र १८०–१८७। **भा.** सं। **क.** पार्श्वनाग। **आ.** ७७। **र. सं.** १०४२।

(१६) **उपदेशकंदली** पत्र १८७–१९८। **भा.** प्रा.। **क.** आसड। **गा.** १२४।

(१७) **भक्तामरस्तोत्र** पत्र १९८–२०३। **भा.** स.। **क.** मानतुगसूरि। **का.** ४४।

(१८) **नवकारसारस्तव** पत्र २०३–२०४। **भा.** प्रा.। **क.** मानतुगसूरि। **गा.** ३१।

आदि—

भत्तिभरअमरपणय पणमिय परमेट्ठिपचय सिरसा। नवकारसारथवण भणामि भव्वाण भयहरणं ॥१॥

अन्त—

पचनवकारलक्खं लेसेण य संसिय अणुहवेण। सिरिमाणतुगमाहिँ......ल सिवसुह देउ ॥२८॥

ता किमिह बहुविहेहिँ पुत्थयभारेहिँ पढिएहिँ ॥३१॥छ॥

क्रमाङ्क १५९

प्रकरणपुस्तिका पत्र १६७। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १३४५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२।

(१) **उपदेशमालाप्रकरण** पत्र १-६९। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४४।

(२) **धर्मोपदेशमालाप्रकरण** पत्र ६९-८२। **भा.** प्रा.। **क.** जयसिंहसूरि। **गा.** १०३।

(३) **षट्स्थानप्रकरण** पत्र ८२-१०८। **भा.** प्रा। **क.** जिनेश्वरसूरि। **गा.** १९१।

(४) **मूलशुद्धिप्रकरण** पत्र १०८-१११। **भा.** प्रा.। **गा.** २२।

(५) **श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र** (**वंदित्तासूत्र**) पत्र १११-११७। **भा.** प्रा.। **गा** ५०।

(६) **प्रव्रज्याविधानप्रकरण** पत्र ११८-१२०। **भा.** प्रा.। **गा.** २४।

(७) **पंचसूत्रसत्क पापप्रतिघातगुणबीजाधाननामक प्रथम सूत्र** पत्र १२०-१२५। **भा** प्रा.।

(८) **संक्षिप्त आराधना** पत्र १२५-१३०। **भा** प्रा.। **गा** ३५।

(९) **चतुःशरणप्रकीर्णक** पत्र १३१-१३४। **भा** प्रा। **गा.** २७।

(१०) **भावनाकुलक** पत्र १३४-१३७। **भा.** प्रा.। **का.** २२।

(११) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र १३८-१५८। **भा.** प्रा। **क.** आसड। **गा.** १४४। **र. सं.** १२४८।

(१२) **अजितशांतिस्तोत्र** पत्र १५८-१६७। **भा.** प्रा.। **क.** नंदिषेण। **छं.** ४०।

पत्र १ मां **पार्श्वनाथनु**, पत्र २ मां **समवसरणनु**, पत्र १६६ मां **अजित-शांतिजिननु** अने पत्र **१६७** मां **जिनमंदिरनु** चित्र छे। आ चित्रोमां **सोनेरी** रंगनो उपयोग करवामां आव्यो छे।

अन्त—

सवत् १३४५ वर्षे आषाढ वदि ९ भौमे प॰ठे॰ **सादेवेन** पुस्तिका लेखि॰॥

क्रमाङ्क १६०

प्रकरणपुस्तिका पत्र १६१। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** अनु १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२

(१) **कर्मस्तव-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ** पत्र १-५। **भा.** प्रा.। **गा.** ५७।

(२) **कर्मविपाक-प्राचीन प्रथम कर्मग्रंथ** पत्र ५-१८। **भा.** प्रा.। **क** गर्गर्षि। **गा.** १६६।

(३) **शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ** पत्र १८-२५। **भा.** प्रा.। **क.** शिवशर्मसूरि। **गा.** १०७।

(४) **सित्तरी-षष्ठ कर्मग्रंथ** पत्र २५-३१। **भा.** प्रा.। **गा.** ९१।

(५) **जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र ३१-३६। **भा.** प्रा.। **गा** ९०।

(६) **प्रवचनसंदोह** पत्र ३६-५४। **भा** प्रा।

(७) **श्रावकप्रज्ञप्तिप्रकरण** पत्र ५५-८०। **भा.** प्रा.। **क** उमास्वाति वाचक। **गा.** ४०१।

(८) **पंचाणुव्रतप्रकरण** पत्र ८१-१०१। **भा.** प्रा.। **गा.** २०९।

आदि— ।ॐ नमो वीतरागाय।

णमिऊण णाणदसणचरित्तसमत्तसत्तसंजुत्तं। छच्छत्तसरिवच्छधाराए छत्त जिणयंदे ॥१॥

किंचि किर **वायग** अचिरमावगो धम्मसत्थमइकुसलो। सिक्खेजऽणुव्वयाइ पडिपुच्छइ आणुपुव्वीए ॥२॥

जइ मे सावगधम्मो उवलद्धो जइ य मे अणुव्वरोहो। बारसविह अणूण गिहिधम्म इच्छिमो णाउ ॥३॥

एवपडिपुच्छिओ सावगेण सो **वायगो** इणमुदासी। सावग! सावगधम्म वण्णे हं ते समासेणं ॥४॥

अन्त—

एय अणत्थमियभोयण च जो कुणइ भत्तिसजुत्तो। सो विगयरागदासो वच्चइ अयरामरं ठाणं ॥२०९॥

॥ पंचाणुव्रत समाप्तमिति ॥छ॥

(९) **स्थविरावली (नंदीसूत्रगत)** पत्र १०१–१०५। **भा.** प्रा.। **क.** देववाचक। **गा.** ५०।
(१०) **नवपदप्रकरण** पत्र १०५–११३। **भा.** प्रा.। **क.** उपकेशगच्छीय जिनचंद्रसूरि। **गा.** १३८।
(११) **आराधनाप्रकरण** पत्र ११३–१२४। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १५९।
(१२) **उपदेशमालाप्रकरण** पत्र १२४–१६१। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४०।

क्रमाङ्क १६१

(१) **प्रवचनसारोद्धार** पत्र ९४। **भा** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि। **गा.** २०००।
(२) **श्रावकधर्मप्रकरण** पत्र ९५। **भा.** स.। **क.** जिनेश्वरसूरि। **ग्रं.** २५०। **र सं.** १३१३। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२।.

आदि—

॥५०॥ अर्हम् ॥ नमः सरस्वत्यै ॥

मेजुर्यस्यांह्रियुग्म पथि मथितरिपोर्जातरूपस्य यात·
प्रोत्फुल्लान्यंबुजानि प्रमदपुलकितैर्निर्जरैर्निर्मितानि।
लक्ष्मांभोजन्मलक्ष्मीमिव कुतुकवशात् प्रेक्षितु कांतकांतिः
शांति· क्लातिप्रशातिप्रवितरणचण· प्राणिजान स पायात् ॥१॥

अन्त—

विक्रमवर्षे शिखिशशिशिखिशशिमग्ध्ये प्रभावतः शशिन.। श्रीप्रह्लादनपुरमनु विजयदशम्यां धनिष्ठाभे ॥२४१॥
श्रावकधर्मप्रकरणमुपकारकं विशेषतो गृहिणा। परिपूर्णीकृतमनघ भवतु मुदे सकलसघस्य ॥२४२॥
यावन्नंदीश्वरद्वीपानिष्प्रतीपजिनव्रज। तावत् प्रकरण नद्यादानंद्यात् सघमानस ॥२४५॥
॥छ॥ शुभ भवतु श्रीश्रमणसघस्य ॥छ॥

क्रमाङ्क १६२

(१) **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण-सार्द्धशतकप्रकरण** पत्र १–१५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १५३।
॥ इति दृप्यत्कुवादिमत्तमहामातंगभजनसज्जकण्ठीरवकल्पसद्दशश्री**जिन**वल्लभमहापडितकृतिः ॥छ॥
(२) **सूक्ष्मार्थविचारसारचूर्णि** पत्र १–६७। **भा** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध।
(३) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-षडशीति चतुर्थ कर्मग्रंथ** पत्र ८। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** ९३।
(४) **जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र ८–१५। **भा.** प्रा.। **गा.** ९०। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **ल. प.** १३॥×२.

क्रमाङ्क १६३

उपदेशपदप्रकरण पत्र ११२। **भा,** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा.** १०४०। **ले. सं.** ११७८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×१॥।.

अन्त— ॥ संवत् ११७८ वर्षे ॥

क्रमाङ्क १६४

पंचवस्तुकप्रकरण पत्र १५२। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा.** १७१०। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×१॥। पत्र १३६, १३७, १४६ नथी
[**अन्त**—श्रीब्रह्माणगच्छे प. अभयकुमारस्य पंचवस्तुकपु.]

क्रमाङ्क १६५

उपदेशमालाप्रकरण पत्र ११३। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४०। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२॥। पत्र १-३, ८, ९, ११, १७, ४३ नथी।

क्रमाङ्क १६६

उपदेशपदप्रकरण पत्र १०९। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा.** १०४०। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥।×२.

पत्र १०८ तथा १०९ मां चक्र अने चोकडीनां शोभनो छे।

क्रमाङ्क १६७

प्रवचनसारोद्धार पत्र १२७। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १३॥×२।। पत्र ८३, १०० नथी।

क्रमाङ्क १६८

उपदेशपदप्रकरण पत्र ११३। **भा.** प्रा। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा.** १०४३। **ले. सं.** १३५४। **संह** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२.

अन्त—

संवत् १३५४ वर्षे का० १४ बुधेऽद्येह श्रीपत्तने गूर्जरज्ञातीय श्रावक मह० देवाउ ठ. मालदेवेन श्रीखरतरगच्छे स्वगुरुप्रभुश्रीजिनचन्द्रसूरिपादाना तपस्विनां पठनाय धर्मोपदेशशास्त्रपुस्तिका पादौ प्रणम्य विधिना समर्पिता इति ॥

क्रमाङ्क १६९

कर्मप्रकृतिचूर्णी पत्र ३०६। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १२२२। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥।×२॥.। अन्त्य पत्रमां शोभन छे।

अन्त— ॥ संवत् १२२२.........(पुष्पिकाने भूंसी नाखवामां आवी छे.)

क्रमाङ्क १७०

कर्मप्रकृतिचूर्णी पत्र १०४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प** १५।×२॥

क्रमाङ्क १७१

प्रकरणपुस्तिका पत्र १८+१७+४+४+२=४५। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** ११६९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १४।×२।

(१) **जीवोपदेशपंचाशिका** पत्र १-३। **भा.** स। **का.** ५०।

(२) **उपदेशकुलक** पत्र ३-५। **भा.** प्रा.। **गा.** २५।

(३) **हितोपदेशकुलक** पत्र ५-६। **भा.** प्रा.। **गा.** २५।

(४) ,, पत्र ६-७। **भा.** प्रा.। **गा.** २५।

(५) **पंचपरमेष्ठिस्तव** पत्र ७-९। **भा.** प्रा.। **गा.** ३७।

(६) **नवतत्त्वप्रकरणभाष्य** पत्र ९-१७। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १५१।

(७) **प्रकीर्णकगाथाव्याख्या** पत्र १८ मु। पत्र १७ मु नथी। अन्त्य पत्रमां शोभन छे।

(८) **हरिवंशपुराणगत उद्देशत्रय** पत्र १७। **भा.** अप.।

(९) **संजमाख्यानक** पत्र ४। **भा.** प्रा.।

(१०) **पञ्चोत्तररत्नमालिका** पत्र १५ मुं। **भा.** स.। **क.** विमलाचार्य। **आ.** २८।

(११) **नेमिनाथस्तोत्र** पत्र १५-१८। **भा.** स.। **क.** विजयसिंहाचार्य। **का.** २३। **ले. सं.** ११६९। पत्र १७ मु नथी।

आदि— नेमिः समाहितधियां यदि दैवयोगाश्चित्त०

अन्त— दुरितविजयसिंघः स्तौतु नेमिः शिवाय ॥२३॥

॥ कृतिरियं श्रीविजयसिंहाचार्याणां ॥ मगल महाश्रीः ॥ संवत् ११६९ द्वि. श्रावण सुदि १ शुक्रे ॥ खंडप्रसादे ॥ मगलं महाश्रीः ॥

(१२) **पद्मावतीस्तोत्र** पत्र १। **भा.** अप.।

आदि— नमिरनरामरविद्याधरकुसुमसमूहअचिय।

(१३) **सरस्वतीस्तोत्र** पत्र १-२। **भा.** अप.।

नमो सरयससिसरिससंपुण्णवयणे। नमो विमलवरकमलदलदीहनयणे ॥

क्रमाङ्क १७२

प्रशमरतिप्रकरण सटीक अपूर्ण पत्र २०१। **भा.** स.। **क.** उमास्वाति वाचक। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** १५॥×२।। २४५ आर्या पर्यन्त छे।

क्रमाङ्क १७३

कर्मप्रकृति वृत्तिसह अपूर्ण पत्र २२६। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलयगिरिसूरि। **ले सं.** अनु १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥×२।। पत्र १, २, ४-११, २२, २३, २७, २९, ३२, ३५, १२१, १६४, १६७, १७२, १७४, १७५, २२२ नथी.

क्रमाङ्क १७४

पंचसंग्रह सटीक प्रथमखंड पत्र ४३२। **भा.** स.। **मू. क.** चन्द्रर्षि महत्तर। **टी. क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २२।×२।।

पत्र १, ३४, ३८, ३९, ४५, ७०, १९९, २०० नथी। अंक विनानां २ पत्र वधारानां छे।

क्रमाङ्क १७५

कर्मविपाक-प्राचीन प्रथमकर्मग्रंथ विवरण सहित पत्र ७१। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** १२२१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।.

अन्त—

चेति गाथार्थः ॥छ॥छ॥ कर्मविपाकविवरण समाप्तमिति ॥ मगलं महाश्रीः ॥ शिवमस्तु सर्व्वजगतः ॥छ॥छ॥ छ॥ संवत् १२२१ वर्षे माघ सुदि ६ भौमे ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क १७६

(१) **कर्मविपाक-प्राचीन प्रथम कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र ४३। **भा.** स.।

(२) **कर्मस्तव-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र १-५२। **भा.** सं.। **क.** गोविंदगणि।

(३) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरणवृत्ति-प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र ४३। **भा.**

सं.। क. हरिभद्रसूरि बृहद्गच्छीय। र. सं. ११७२। ग्रं. ८५०। ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. १४॥×२।

क्रमाङ्क १७७

(१) **कर्मस्तव-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र १०६। **भा.** सं.। **क.** गोविंदगणि। **ग्रं.**१०९०।
(२) **कर्मविपाक-प्राचीन प्रथम कर्मग्रंथवृत्ति** पत्र १११। **भा.** सं।
ले. सं. १२९५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×२.

अन्त—

कालादेवेति गाथार्थ. ॥ छ ॥
कासद्रहीयगच्छे वंशे **विद्याधरे** समुत्पन्न। सद्गुणविग्रहयुक्तः सूरिः श्री**सुमति**विख्यातः ॥
तस्यास्ति पादसेवी सुसाधुजनसेवितो विनीतश्च। धीमान् [सु]बुद्धियुक्तः सद्वृत्तः पडितो **वीरः** ॥
कर्मक्षयस्य हेतोः तस्याज(?) धीमता विनीतेन। **म**दनागश्रावकेणेषा लिखिता चारुपुस्तिका ॥ छ ॥

सवत् १२९५ वर्षे अद्येह श्रीम**ह्नल**के। समस्तराजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीमज्**ज**यतुगिदेवकल्याणविजयराज्ये महाप्रधान पच०श्री**धर्म**देवे सर्वमुद्राव्यापारान् परिपथयतीत्येव काले प्रवर्त्तमाने। श्री**उपकेश**वंशीय सा० **आसापुत्रे**ण श्री**चित्र**कूटवास्तव्येन चारित्रिचूडामणिश्री**जिन**वल्लभसूरिसन्तानीयश्री**जिनेश्वर**सूरिपदपकजे मधुकरेण श्री**शत्रुंजयो**ज्जयन्तादिमहातीर्थसार्थयात्राकारणसफलीकृतसघमनोरथेन सुगुरूपदेशश्रवणसजातश्रद्धातिरेकप्रारब्धसिद्धान्तादिसमस्तजैनशास्त्रोद्धारोपक्रमेण सघ० सा० **राल्हा**केन भ्रातृ**दे**दासहितेन **क**र्मस्तव-**क**र्मविपाक लेखिता ॥ प० **धरणी**धर**शा**लायां प० **चाहडे**न॥ मङ्गल महाश्री ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

क्रमाङ्क १७८

(१) **बंधस्वामित्वप्रकरण-प्राचीन तृतीय कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र ४-५०। **भा** सं.। **क.** हरिभद्राचार्य बृहद्गच्छीय। **ग्रं.** ५६०। **र. सं.** ११७२। **ले. सं.** ११७२। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×१॥

अन्त—

इति बंधस्वामित्वप्रकरणवृत्तिः समाप्ता ॥ ॐ ॥ सवत् ११७२ ॥ छ ॥

(२) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण वृत्तिसह** पत्र १-७८। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **वृ. क.** हरिभद्राचार्य बृहद्गच्छीय। **ग्रं.** ८५०। **र. सं.** ११७२। **ले. सं.** ११७२। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×१॥

अन्त—

सवत् ११७२ ॥ छ ॥ मगल महाश्रीः ॥ छ ॥ प्रथाग्र ८५० ॥ अभयकुमारस्य ॥

क्रमाङ्क १७९

(१) **कर्मस्तव-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ वृत्ति** पत्र १-५६। **भा.** सं.। **क.** गोविंदगणि। **ग्रं.** १०९०।

(२) **शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ चूर्णी** पत्र ५७-१७५। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** ११७५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२.। अन्य पत्रमां **शो**भन छे।

अन्त—

॥ **श**तकचूर्णिः समाप्ता इति ॥ सवत् ११७५ कार्त्तिक वदि ५ रवौ ॥

क्रमाङ्क १८०

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ चूर्णी पत्र १४७। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २२००। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२।

क्रमाङ्क १८१

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ चूर्णी पत्र १७३। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** ११९६। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×२।पत्र ८३-८७, ९३-९८, १००-१०४, १२०-१२३ नथी।

अन्त—

॥ शतकचूर्णिः समाप्ता ॥ सवत् ११९६ श्रावण वदि २ गुरौ लिखित पारि वेवराजेन ॥छ॥

क्रमाङ्क १८२

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ सटीक त्रुटक अपूर्ण पत्र २४४। **भा** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×२। आ प्रतिमा अर्द्धो अर्द्ध पानां नथी।

क्रमाङ्क १८३

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ वृत्ति सहित पत्र २९१। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १४॥।×२.

अन्ते नव्यलिखिता पुष्पिका—

स० १४२३ वर्षे सा० मेहा सुश्रावकपुत्र सा० उदयसिंहेन पुत्र सा० लूणावयराभ्यां युतेन स्वपुत्रिका-याश्वांपूश्राविकायाः पुण्यार्थं शतकवृत्तिपुस्तिका मूल्येन गृहीता। निजखरतरगुरुश्रीजिनोदयसूरीणां प्रादायि ॥शुभं भवतु॥

क्रमाङ्क १८४

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ वृत्ति अपूर्ण पत्र १८४। **भा.** म.। **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **ले सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** १७। × २।

पत्र १, ३, ५, ८१, ९५-१०३, १०८, ११०, ११२, १२९, १३१, १३४, १३८, १४७-१४८, १५०-५३, १५७-१६०, १६३, १६४, १७६, १८२, १८३ नथी। पत्रांक कपाएल १४ पानां छे। आ प्रतिमां घणां पानाना टुकडा थइ गया छे।

क्रमाङ्क १८५

शतक-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ वृत्ति सहित पत्र २३९। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलधारी हेमचद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५। × २।

क्रमाङ्क १८६

सार्द्धशतकप्रकरण-सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति सह पत्र २४६। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **वृ. क.** चक्रेश्वरसूरि। **र. सं.** ११७१। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारंभ। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६ × २।

प्रथम पत्रमां तथा अन्य पत्रमां सरस्वती, भगवान् तथा श्रावक श्राविकानां चार चार मळीने कुल आठ अतिसुदरतम चित्रो छे।

क्रमाङ्क १८७

शतक-नव्य पंचम कर्मग्रंथ स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र १२८। **भा.** प्रा. सं.। **क.** देवेन्द्रसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ४३४०। **ले. सं.** १३५४। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८। × २॥

अन्त—॥छ॥ सं १३५४ वर्षे कार्त्तिक वदि ८ भौमे ठ. सलषाकेन श्रेयसे लिखापितमिति ॥छ॥ॐ॥

क्रमाङ्क १८८

आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रंथ सटीक त्रुटक पत्र ७४। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **वृ. क.** हरिभद्रसूरि। **र. सं.** ११७२। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५॥ × १॥।। आ प्रतिमां चोथा भाग जेटलां ज पानां छे।

क्रमाङ्क १८९

सप्ततिका-षष्ठ कर्मग्रंथ टिप्पनक गाथाबद्ध पत्र ५६। **भा.** प्रा.। **क.** रामदेवगणि। **ले. सं.** १२११। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥ × २

आदि—

सुगइगमसरलसरणिं वीरं नमिऊण मोहतमतरणिं। सत्तरिए टिप्पेमी किंची चुन्नी उ अणुसरिउ ॥

अन्त—

इय एउ सुमरणत्थं टिप्पणमित्त पि किं पि उद्धरिय। लक्खणछंदवियारो न य कायव्वो य को वि इह ॥

इत्थ य सुत्तविवन्न महमोहा किं पि उद्धरिय होज्जा। सोहिंतु जाणमाणा मज्झ य मिच्छुक्कडं होउ ॥

कृतिरियं श्रीरामदेवगणेः ॥ सवत् १२११ अश्विन वदि १ बुधदिने पूर्वभद्रपदनाम्नि मूलयोगे तृतीययामे प० माणिभद्रशिष्येण यशोवीरेण पठनार्थं कर्मक्षयार्थं च लिखित ॥छ॥

क्रमाङ्क १९०

पंचसंग्रह त्रुटक अपूर्ण पत्र १३२। **भा.** प्रा.। **क.** चद्रर्षि महत्तर। **ले सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८॥। × २।।

पत्र १थी ३, ६थी १०, १२, १४, १६, २०, २६, २७, २९, ३२, ३४, ३५, ४१, ४४, ४८, ५५, ५७, ५८, ६४, ६५, ६८, ६९, ७१थी ७८, ८०, ८१, ८३, ९७थी९९, ११८, १२२, १२४, १२५, १२९, १३० नथी।

क्रमाङ्क १९१

प्रकरणपुस्तिका पत्र ६८+१४+२+२=८६। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८।×२॥

(१) **जीवसमासप्रकरण** पत्र. १-१७। **भा.** प्रा। **गा.** २९१।

(२) **पुलाकोद्देशसंग्रहणी-पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण** पत्र १७-२४। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १०६।

(३) **प्रज्ञापनातृतीयपदसंग्रहणी** पत्र २४-३२। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १३३।

(४) **श्रावकप्रज्ञप्तिप्रकरण** पत्र ३२-५८। **भा.** प्रा.। **क.** उमास्वाति वाचक। **गा.** ३९६।

(५) **आणाचित्तप्रकरण** पत्र ५९-६४। **भा.** प्रा.। **गा.** ८१।

(६) **श्रावकविधिप्रकरण** पत्र ६४-६६। **भा.** प्रा.। **गा.** २२।

(७) **संजममंजरीप्रकरण** पत्र ६६–६८। **भा.** प्रा.। **गा.** ३५।

(८) **धर्मपत्र-धर्मशिक्षाप्रकरण** पत्र १–११। **भा.** स.। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** ४०।

आदि—

॥ ॐ नमो वीतरागाय।

नत्वा भक्तिनतांगकोऽहमभय नष्टाभिमानक्रुध विश्वे वर्द्धितशोणिमक्रमनखं वर्ण्यं सतामिष्टदम्।
विद्याचक्रविभु जिनेन्द्रमसकृल्लब्धार्थपाद भवे वंद्य ज्ञानवतां विमर्श्यं विशद धर्म्म्य पद प्रस्तुवे ॥१॥
भक्तिश्चैत्येषु १ शक्तिस्तपसि २ गुणिजने सक्ति ३ र्थे विरक्तिः ४
प्रीतिस्तत्त्वे ५ प्रतीतिः शुभगुरुषु ६ भवाद् भीति ७ रुदूघाऽऽत्मनीतिः ८।
क्षान्ति ९ र्दान्तिः १० स्वशान्तिः ११ सुखहृति १२ रबलावान्ति १३ रभ्रान्तिरार्ते १४
र्जीप्सा १५ दित्सा १६ विधित्सा १७ श्रुतधनविनयेष्वस्तु धीः पुस्तके च १८ ॥३॥

अन्त—

सगाराण्णवनौर्विपद्वनदवः कोपाग्निपाथोनिधिर्मिथ्यावासविसारिवारिदमरुन्मोहान्धकारांशुमान्।
तीव्रव्याधिलताशितासिरखिलांतस्तापसर्पत्सुधासारः पुस्तकलेखन भुवि नृणां सज्ज्ञानदानार्पणम् ॥३८॥
मिथ्यात्वोदन्वदौर्वे व्यसनशतमहाश्वापदे शोकशाकातकायावर्त्तगर्त्ते मृतिजननजरापारविस्तारिवारि।
आधिव्याधिप्रबन्धोद्धुरतिमिनिकरे घोरसंसारसिंधौ पुसां पोनायमानं ददति कृतधियः पुस्तकज्ञानदानम् ॥३९॥
शिक्षा भव्यनृणां गणाय मयकाऽनर्थप्रदर्मस्तक दग्ध वह्निरभाणि येयमनया वर्त्तेत यो मत्सरः।
नम्य चक्रभृतां जिनत्वमपि सल्लब्धाभ्युपादः पर रनाऽसौ शिवसुन्दरीस्तनतटे रंदे नरः सादरम् ॥४०॥ **चक्रम्** ॥

॥ **धर्मशिक्षेयम्** ॥ छ ॥

(९) **सिग्घमवहरउस्तोत्र** पत्र ११–१२। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** १४।

(१०) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र १२–१४। **भा.** स.। **क.** जिनदत्तसूरि। **का.** १२।

आदि—

तव जिनपते स्तोत्र कर्त्तुं क्षमोऽस्मि न मंदधी–

अन्त—

अत्रजिन **जि**नदत्तोदारनिर्वाणरामा समरससविलासा भूयसी भक्तिरस्तु ॥१२॥

॥छ॥ **पार्श्व**स्तवनम् ॥छ॥

(११) **सुभाषितगाथा** पत्र २। **भा.** प्रा.। **गा.** १५।

(१२) **नेमिनाथस्तोत्र** पत्र २। **भा.** स.। **क.** जिनचन्द्रसूरि। **ग्रं.** १४।

आदि—नरनाकिनभश्चरयोगिनत।

क्रमाङ्क १९२

बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण सटीक पत्र ३४२। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** १४८९। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५॥×२॥। पत्र २, ५ नथी।

अन्त—

संवत् १४८९ वर्षे अश्विनशुदि ३ बुधे अद्येह श्री**स्तम्भ**तीर्थे श्री**खर**तरगच्छे भट्टारकश्रीश्री**जिनभद्रसू**रिविजयराज्ये। परी॰ **गू**र्जरसुत परी॰ **धरणा**केन **क्षे**त्रसमासटीकापुस्तक पुरोहित**ह**रियाकेन लिखितं ॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥
अर्हंतो मंगल सिद्धा मगल मम साधवः। मंगल मंगलं धर्मस्तान् मगलमशिश्रियमिति ॥१॥

क्रमाङ्क १९३

बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण सटीक टिप्पणीसह पत्र २४९। **भा.** प्रा. सं। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** मलयगिरिसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥×२।। प्रति अतिशुद्ध छे।

क्रमाङ्क १९४

बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण सटीक अपूर्ण पत्र २६७। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×२ पत्र ३–७, ६१,६२, ७२, ७४, ७५, १२०, १२१, १२३–१४४, १५४, १५७, १५८ नथी।

क्रमाङ्क १९५

बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरण सटीक पत्र २११। **भा.** प्रा सं। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** सिद्धसूरि उपकेशगच्छीय। **ग्रं.** ३०८०। **र. सं.** ११९२। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२॥.। पत्र ७, ३१, ७५, ७८, ७९, १०५, १२४–१२७, १५० नथी

आदि—

ॐ नमो वीतरागाय ॥

नत्वा वीरं वक्ष्ये जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणपूज्यैः। रचिते क्षेत्रसमासे वृत्तिमहं स्वपरबोधार्थम् ॥१॥

जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणो मङ्गलाभिधेयार्थं गाथामाह।

अन्त—

क्षेत्रसमासप्रकरणवृत्तिः श्रीमदूकेशीयश्रीसिद्धाचार्यकृता समाप्तेति ॥छ॥छ॥

प्रसिद्ध ऊकेशपुरीयगच्छे श्रीकक्कसूरिर्विदुषां वरिष्ठः। साहित्यतर्कागमपारदृश्वा बभूव सल्लक्षणलांछिताङ्गः ॥१॥
तदीयशिष्योऽजनि सिद्धसूरिः सद्देशनाबोधितभव्यलोकः। निर्लोभतालङ्कृतचित्तवृत्तिः सज्ज्ञानचारित्रदयान्वितश्च ॥२॥
श्रीदेवगुप्तसूरिस्तच्छिष्योऽभूद्विशुद्धचारित्रः। वादिगजकुम्भभेदनपटुतरनखरायुधसमानः ॥३॥
तच्छिष्यसिद्धसूरिः क्षेत्रसमासस्य वृत्तिमयमकरोत्। गुरुभ्रातृयशोदेवोपाध्यायज्ञातशास्त्रार्थः ॥४॥
उत्सूत्रमत्र किञ्चिन्मतिमान्द्याज्ञानतो मयाऽलेखि। निर्व्याजं विद्वद्भिस्तच्छोध्यं मयि विधाय दयाम् ॥५॥
खेः षण्णवत्याङ्कश्चतुःषष्ट्या द्वात्रिंशताक्षरैः। श्लोकमानेन चैव त्रिसहस्रा ग्रन्थसङ्ख्याऽत्र ॥६॥
अब्दशतेष्वेकादशसु द्विनवत्याधिकेषु ११९२ विक्रमतः। चैत्रस्य शुक्लपक्षे समर्थिता शुक्लत्रयोदश्याम् ॥७॥
यावज्जिनेश्वरो धर्मः समेरुर्वर्त्तते भुवि। भव्यैः पापठ्यमानोऽयं तावन्नन्दतु पुस्तकः ॥८॥

ग्रन्थसङ्ख्या ३०८०। शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥छ॥

क्रमाङ्क १९६

जंबूद्वीपक्षेत्रसमासवृत्ति पत्र २६। **भा.** प्रा. सं.। **क.** हरिभद्राचार्य। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।

आदि—

नत्वा जिनेन्द्रवीरं चतुर्विंशातिशयसयुतं धीरम्। वक्ष्ये सुखावबोधां क्षेत्रसमासस्य वृत्तिमहम् ॥
इहाचार्यो मङ्गलादिप्रतिपादिकां प्रथमगाथामुवाच।

अन्त—

इति क्षेत्रसमासवृत्तिः समाप्ता । विरचिता श्रीहरिभद्राचार्यैरिति ॥छ॥
लघुक्षेत्रसमासस्य वृत्तिरेषा समासतः । रचिता बुधबोधार्थं श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥१॥
पञ्चाशीतिकवर्षे विक्रमतो व्रजति शुक्लपञ्चम्याम् । शुक्रस्य शुक्रवारे शस्ये शस्ये च नक्षत्रे ॥२॥
धात्री धात्रीधरा यावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ । तावदज्ञानविध्वंसाय यादेषा सुवृत्तिका ॥छ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क १९७

जंबूद्वीपक्षेत्रसमासवृत्ति पत्र ११४। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** विजयसिंहसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५॥×२.।

आ प्रतिमां अर्धा करतां पण ओछां पानां छे तथा प्रशस्ति अपूर्ण छे।

क्रमाङ्क १९८

बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र ११९। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१×२॥.

क्रमाङ्क १९९

बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र २६१। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ५०००। **ले. सं.** १२९६। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२॥.।

अंतिम पत्रमां शोभन छे।

अन्त—

संवत् १२९६ वर्षे आसोय शुदि ३ गुरावद्येह राजावलीसमलंकृतमहाराजाधिराजश्रीमत्भीमदेवकल्याणविजयराज्ये प्रवर्त्तमाने महामण्डलेश्वरराणकश्रीवीरमदेवराजधानौ विद्युत्पुरस्थितेन श्री............

क्रमाङ्क २००

बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक किंचिदपूर्ण पत्र १५६। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** शालिभद्रसूरि। **ग्रं.** २५००। **र. सं.** ११३९। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।

क्रमाङ्क २०१

बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र १८९। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** शालिभद्रसूरि। **ग्रं.** २५००। **र. सं.** ११३९। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२। अन्य पत्र जीर्ण छे।

क्रमाङ्क २०२

बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र १५०। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **टी. क.** शालिभद्रसूरि। **ग्रं.** २५००। **र. सं.** ११३९। **ले. सं.** १२०१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२

आदि—

नमो वीतरागाय।

केवलविमलज्ञानावलोकलोचनसुदृष्टसर्वार्थम्। त्रिदशासुरेन्द्रवन्दितमानम्य जिनं महावीरम् ॥
वक्ष्यामि संग्रहण्या जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणपूज्यैः। रचितायाः विवृतिमिह गुरूपदेशेन संक्षिप्ताम् ॥

हरिभद्रसूरिभिरिह व्याख्याताभ्योऽधिकान्यगाथानाम्। दृष्टानां व्याख्यानात् प्रयाससाफल्यमस्माकम् ॥
तत्र चादावेवाचार्यः शिष्टसमयपरिपालनाय विघ्नविनायकोपशमनाय च परममङ्गलभूतमिष्टदेवतानमस्कारं श्रोतृजनप्रवर्त्तनाङ्गभूतमभिधेयप्रयोजनसम्बन्धत्रयं च प्रतिपिपादयिषुरिदं गाथात्रितयमाह ॥छ॥

अन्त—

तत् क्षन्तव्यं श्रुतदेवतयेति ॥छ॥
यदनवबोधानुपयोगतः किमपि वितथमन्यथाऽत्र मया। तच्छोध्यं सूरिवरैः कृताञ्जलिः प्रार्थयेऽहमिति ॥
संग्रहणीविवृतिमिमां कृत्वा यदवापि पुण्यमत्र मया। तेनागमसग्रहणप्रवणोऽस्तु सदैव भव्यजनः ॥
थारापद्रपुरीयगच्छनलिनीषण्डैकचण्डद्युतिः, सूरिः पण्डितमूर्द्धमण्डितमणिः श्रीशीलभद्राभिधः।
आसीत्तस्य विनेयतामुपगतः श्रीपूर्णभद्राह्वयस्तेषां शिष्यलवेन मन्दमतिना वृत्तिः कृतेयं स्फुटा ॥१॥
एकादशवर्षशतैर्नवाधिकस्त्रिंशताऽधिकैर्यातैः। विक्रमतोऽरचयदिमां सूरिः श्रीशालिभद्राख्यः ॥२॥
सहस्रद्वितयं सार्द्धं ग्रन्थोऽयं पिण्डितोऽखिलः। द्वात्रिंशदक्षरश्लोकप्रमाणेन सुनिश्चितम् ॥छ॥
संग्रहणिवृत्तिः समाप्ता ॥छ॥ सम्वत् १२०१ माघ वदि १४ भौमे विजयचन्द्रगणिजोग्या लिखितेति ॥
॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क २०३

संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र १३०-२५९। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** श्रीचन्द्रसूरि। **वृ. क.** देवभद्रसूरि। **ग्रं.** ३५००। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×१॥. आदिनां १२९ पत्र नथी.

क्रमाङ्क २०४

प्रवचनसारोद्धारवृत्ति प्रथमखंड पत्र १९५। **भा.** सं.। **मू. क.** नेमिचन्द्रसूरि। **वृ. क.** सिद्धसेनाचार्य। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२

क्रमाङ्क २०५

पिंडविशुद्धिप्रकरण सटीक पत्र १८४। **भा.** प्रा. स। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **टी. क.** यशोदेवसूरि। **टी. ग्रं.** २८००। **र. सं.** ११७६। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२.

आदि—

यदुदितलवयोगाद्देहिनः स्युः कृतार्थास्तमिह शुभनिधानं वर्द्धमानं प्रणम्य।
स्वपरजनहितार्थं पिण्डशुद्धेर्विधास्ये जिनपतिमतनीत्या वृत्तिमल्पां सुबोधाम् ॥
तत्र चार्हत्प्रणीतसमयसम्पर्कावदातमतिजलधिर्भगवान् जिनवल्लभगणिर्दुःषमाकालदोषादत्यन्तं हीयमानायुर्बुद्ध्यादीन् सम्प्रतिकालसाध्वादीनवलोक्य तदनुग्रहार्थं विस्तरवत्पिण्डैषणाध्ययनसारमादाय संक्षिप्ततरं पिण्डविशुद्ध्याख्यं प्रकरणं चिकीर्षुरादावेव विघ्नव्रातनिरासार्थं शिष्टसमयपरिपालनार्थं च इष्टदेवतास्तुतिरूपमत्यन्ताव्यभिचारि भावमङ्गलं श्रोतृजनप्रवृत्त्यर्थमभिधेयादि च प्रतिपादयन्निमां गाथामाह ॥छ॥

अन्त—

चशब्दो बोधनक्रियापेक्षया समुच्चयार्थ इति। शार्दूलच्छन्दोवृत्तार्थ इति ॥१०३॥छ॥
आसीच्चन्द्रकुलोद्गतिः शमनिधिः सौम्याकृतिः सन्मतिः, सलीनः प्रतिवासरं निलयगो वर्षासु सुध्यानधीः।
हेमन्ते शिशिरे च शार्वरहिमं सोढुं कृतोर्ध्वस्थितिः, मास्वच्चण्डकरे निदाघसमये चाऽऽतापनाकारकः ॥१॥
आदेयतात्यागव्याख्याकृत्वादिसद्गुणैः। लोकोत्तरविशालश्च श्रीमद्वीरगणिप्रभुः ॥२॥

श्रीचन्द्रसूरिनामा शिष्योऽभूत्तस्य भारतीमधुरः । आनन्दितभव्यजनः शंसितसंशुद्धसिद्धान्तः ॥३॥
तस्यान्तेवासिना दृब्धा श्रीयशोदेवसूरिणा । सुशिष्यपार्श्वदेवस्य साहाय्यात् प्रस्तुता वृत्तिः ॥४॥
श्रुतोपयोगोऽशुभकर्मनाशनो विपक्षभावप्रतिबन्धसाधनः। परोपकारश्च महाफलाबहो विचिन्त्य चैतद्विहितोऽयमुद्यमः ॥५
पिण्डविशुद्धिप्रकरणवृत्तिं कृत्वा यदवाप्तं मया कुशलम् । तेनाऽऽभवमपि भूयाद्भगवद्वचने ममाभ्यासः ॥६॥
श्रुतहेमनिकषपट्टैः श्रीमन्मुनिचन्द्रसूरिभिः पूज्यैः । सद्बोधितेयमखिला प्रयत्नतः शेषविबुधैश्च ॥७॥

ग्रन्थाग्र २८०० ॥छ॥ ग्रन्थाग्र प्रतिवर्णतो गणनया न्यून सहस्रत्रय शतद्वयेनेति । वस्वाजीवुद्दिमांशुभिः ११७६ परिमिते वर्षे गते विक्रमाज्जिष्पन्नेयमिति ॥छ॥

पश्चालिखिता—

सवत् १३९४ वर्षे माघ शुदि ११ दिने सा. नयणाश्रावकपुंगंग श्रीदेवगुर्वाज्ञाचिन्तामणिभूषितमस्तकेन सा. खेलश्रावकेण मौल्येनादाय श्रीजिनपद्मसूरीणां पिण्डविशुद्धिवृत्तिपुस्तिका प्रयलाभि ।

क्रमाङ्क २०६

प्रवचनसारोद्धार वृत्तिसह पत्र ४३८ । **भा.** प्रा. सं. । **मू. क.** नेमिचन्द्रसूरि । **वृ. क.** सिद्धसेनगणि । **ग्रं.** १८००० । **वृ. र. सं.** १२४२ । **ले. सं.** १२९५ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३२॥×२॥.

पत्र २ जामां भगवान् महावीरनुं पारिपार्श्विकसहित चित्र छे, पत्र ४३६ मां देवीनुं चित्र छे अने पत्र ४३७ मां आचार्य शिष्यने वाचना आपे छे। आ त्रणेय चित्रो अनिसुंदर छे।

अन्त—श्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्तिः समाप्ता ॥छ॥छ॥छ॥

इषुमहरविसंख्ये [१२९५] श्रीविक्रमनृपतिवत्सरे पौषे । शुक्लाष्टम्यां गुरुवारे लिखिताऽसौ प्रतापसिंहेन ॥
॥छ॥ मगल महाश्री· ॥छ॥छ॥ शिवमस्तु ॥छ॥
श्रिय पुष्णन्तु वः शान्तेः पादांबुरुहरेणवः । कर्मद्रुन्मूलने विश्वे मदोन्मत्तकरेणवः ॥१॥
कल्याणैकनिकेतन सुमनसां वासो गुरुष्वग्रणीः सेव्यः पुण्यजनः प्रतीतधनदैर्गोत्रेषु जातोन्नतिः ।
यः सानुमहसूरसौम्यकविभिस्तेजस्विभिः सेवितः सोऽय मेरुरिवास्ति नन्दनवरः प्राग्वाटनामान्वयः ॥२॥
तत्राऽऽसीद् वैरसिंहः सकलजनमनःकल्पनाधिक्यदानाज्जेता कल्पद्रुमस्य प्रतिदिवससमसौ भग्नदारिद्र्यमुद्रः ।
नीरक्षीरोदताराशशिविशदतरैः पूरिते यद्यशोभिर्लक्ष्यन्ते नैव भावास्त्रिभुवनकुहरे नीलपीतादयस्ते ॥३॥
तस्य सूनुरनूनश्रीः सीहकोऽभूद्विवेकधीः । स्पर्द्धयेव व्यवर्द्धन्त गुणाः सर्वे परस्परम् ॥४॥
भार्या सुषमता तस्य शस्यशीलव्रताऽभवत् । मण्डन हि कुलस्त्रीणां शीलमेव विदुर्बुधाः ॥५॥
सिंहधाव इवोर्जस्वी तेजस्वी भानुमानिव । यशस्वी सकले विश्वे जगत्सिंहस्तयोः सुतः ॥६॥
जगत्सिंहस्य जायाऽस्ति मायावचविवर्जिता । नागिनी नागवल्लीव प्रसृता पुत्रपत्रकैः ॥७॥

तथाहि—

चडांशुप्रौढतेजाः स जयति सुकृती चण्डसिंहाभिधानो, जीयात् सामतसिंहो नयविनयकलालकृतिस्तु द्वितीयः ।
तार्तीयीकोऽरिसिंहः सकलजनमनोहारि चारित्रपात्र, पुत्राश्चैते पवित्राः शशिविशदयशोराशिभिर्भासिताशाः ॥८॥
लाबुका लूणदेवीति तथा शृङ्गारदेविका । धर्मकर्मरताः पुत्र्यस्तयोस्तिस्रः क्रमादिमाः ॥९॥
चण्डसिंहस्य भार्याऽस्ति पद्मलेत्यभिधानतः । प्रतापसिंहस्तत्पुत्रः पुत्री धांधलदेविका ॥१०॥
आद्या प्रतापसिंहस्य भार्या पृथिविदेविका । प्रतापदेवीत्यपरा तस्यास्ति प्रथिता पुनः ॥११॥
ख्याता सामतसिंहस्य पत्नी सहजलाभिधा । तत्पुत्रौ विजयसिंहपूर्णसिंहाविमौ पुनः ॥१२॥
द्वे इमे च तयोः पुत्र्यौ नाल्ह-माधलदेविके । सर्वज्ञचरणाम्भोजसुरभीकृतमानसे ॥१३॥
इतश्चात्रैव वंशेऽभूद् धनपालः स मन्त्रिराट् । यथाऽऽत्मसदृशो मेने श्रीदेवानन्दसूरिभिः ॥१४॥

पूनाकस्तनयस्तस्य पुत्रिका **लील्**काभिधा । नाम्ना **बउल**देवीति **पूना**कस्य सधर्मिणी ॥१५॥
पद्मसिंह-भीमसिंहौ पुत्रौ तत्कुक्षिजाविमौ । तनया च तयोरस्ति **गङ्गा**नामेति विश्रुता ॥१६॥
अरसिंहस्य सा पाणिगृहीती प्रथिता ततः । **सीता**देवी सतीरत्न शीलादिगुणभूषिता ॥१७॥
प्रवाहा इव जाह्नव्याः पुरुषार्था इवाङ्गिनः । तत्कुक्षिसरसीहसास्त्रयः पुत्रा जयन्त्यमी ॥१८॥
आद्यः कुमरसिंहाख्यो द्वितीयः **पेथडा**भिधः । **सोमसिंह**स्तृतीयोऽयं सर्वेऽपि गुणशालिनः ॥१९॥
सूमला वीण्हुका चैव **राणिका चांपला** तथा । सन्ति पुत्र्यश्चतस्रोऽपि विनयादिगुणान्विताः ॥२०॥
प्रिया कुमरसिंहस्य नाम्ना **सूहवदे**विका । अस्ति **नायकदे**वीति **पेथडस्या**पि गेहिनी ॥२१॥
श्रीम**न्माणिक्य**सूरीणां वचनामृतमन्यदा । सुधीः **कुमरसिंहो**ऽत्र शुश्राव श्रावकाग्रणीः ॥२२॥
तीर्थकरा हि प्रययुः शिवपदमुपदिश्य धर्मतत्त्वानि । सम्प्रति तु तदुपदिष्टं पुस्तकगतमेव जागर्त्ति ॥२३॥
तद् यः खलु लेखयति श्रुत विशुद्धेन चेतसा मतिमान् । मिथ्यात्वपङ्कमग्न स एष ....॥२४॥
इत्याकर्ण्य....................................। जनक**स्यार**सिंहस्य स्वश्रेयोवृद्धये सुधीः ॥२५॥
आवश्यकस्य वृत्तिं **वृत्तिं भव**भावनाप्रकरणस्य ।.......... ....॥२६॥ **युग्मम्** ॥
राजहसाविमौ यावद्व्योमाभोगसरोवरे । स्वेच्छया क्रीडतस्ताव.....................॥२७॥छ॥

मगलं महाश्रीः ॥

पश्चाल्लिखित—

सवत् १४८४ वर्षे प्रथमाषाढ सुदि दशमीदिने श्री**स्तंभ**तीर्थे ठ० **वि**जयसिंहसत्पुत्रेण ठ० **बाल्हा**लसुश्राव-केण श्री**प्र**वचनसारोद्धारवृत्तिपुस्तक मूल्येन गृहीत ॥

क्रमाङ्क २०७

चैत्यवंदनभाष्य संघाचारटीकासह पत्र २६१। **भा.** प्रा. स.। **मू क** देवेन्द्रसूरि। **टी क.** धर्मघोषसूरि। **ग्रं.** ७८०८। **ले. सं** १३२९। **संद्द** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं प** ३०1×२॥

नोंध—आ पोथी **टी**काकार आचार्य श्री**धर्म**घोषसूरिनी पोतानी छे।

अन्त—

॥छ॥ इति श्री .... .रचितायां श्री**सं**घाचारटीकायां चैत्यवन्दनाधिकारः प्रथमः समाप्तः ॥छ॥ ग्रन्थाग्र ७८०८ ॥छ॥ सवत् १३२९ वर्षे पौष वदि १२ भौमेऽद्येह **पयरोड**ग्रामवास्तव्य **गूजरा**भिज्ञ**वाल**ज्ञातीय ठ० **चण्ड**सुत ठ० **लक्ष्म**णेन लिखित ॥ इदं पुस्तक पु.... ....तिलकश्री**धर्म**घोषसूरीणां आचद्रार्क नदतु ॥
यदक्षरपरिभ्रष्ट मात्राहीन च यद् भवेत् । क्षतव्य तद् बुधैः सर्व कस्य न स्खलते मनः ॥१॥
यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥२॥

शुभ भवतु सकलसघ. ....

क्रमाङ्क २०८

पंचाशकप्रकरण वृत्ति पत्र २६२। **भा.** स.। **वृ. क.** अभयदेवाचार्य। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी। **संद्द** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** २५×२.

नोंध—सं० १२०७ मां **अजयमेरु**ना भग पछी फरीथी आ प्रतिने पूर्ण करवामां आवी छे.

आ प्रतिमां दरेक **पंचाशक**नी समाप्तिना सूचन तरीके पत्र ४०, ५५, ७१, ८५, १०२, ११३, १२३, १३३, १४३, १५५, १७२, १८६, २००, २१२, २२५, २३७, २४५, २५५, २६२ मां विविध शोभनो छे।

अन्त—

सप्तोत्तरसूर्यशते विक्रमसंवत्सरे स्वजयमेरौ । पल्लीभङ्गे त्रुटितं पुस्तकमिदमग्रहीत् तदनु ॥
अलिखत् स्वयमत्र गत श्रीमज्जिनदत्तसूरिशिष्यलवः । स्थिरचन्द्राख्यो गणिरिह कर्मक्षयहेतुमात्मनः ॥

क्रमाङ्क २०९

पंचाशकप्रकरणवृत्ति पत्र. १८१ । **भा.** स. । **क.** अभयदेवाचार्य । **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०॥×२॥.

पत्र ३७, ४२, ६२, ८४, ८७, ९५, १२०, १२१, १२८, १३०, १३२–१३५, १५४, १५६, १५७, १५९, १६१–१६५, १६८–१७०, १७२, १७३, १७७, १७९, १८० नथी.

अन्त—

आसीदसीमगुणगौरवरज्यमाननानाप्रकारनरनाथनमस्कृतांह्रिः ।
थंडेरकीयगुरुगच्छशिरःकिरीटमाटीकमानमहिमा भुवि शान्तिसूरिः ॥
तस्यांह्रिपङ्कजरजःकणकीर्णभालो व्यालोकिताखिलविलोलभवस्वभावः ।
ख्यातः क्षमी जगति जेल्हक इत्यभूत् स वाग्मी वणिग्भणितमुख्यकलासु दक्षः ॥
पत्नी विनीतवनितावलिमौलिरत्नमन्यायजल्पनजडा जिनदेविनाम्नी ।
तस्याऽभवन्नवनवश्रुतसङ्ग्रहैकलीलाविनोदरसिका वसिकानुकामा ॥
पार्श्वनागो यशोनागो वीरनागस्तथाऽपरः ।
इति त्रयस्तयोर्जज्ञुः पुत्राः पात्रं परं श्रियाम् ॥
निष्प्रत्यशेषशमिनां धुरि वीरनागनामाऽनुजः सुजनभूषणमेषु मध्ये ।
लेभे शुचिः सहचरीं गुणदेविसंज्ञामज्ञानपानकनिकारकथा यथावत् ॥
धर्मे पथि प्रथितपुण्यमनोविनोदौ तौ दम्पती निपुणपालितशीलसारौ ।
उच्चखनतु स्वजनचेतसि शोकशङ्कुं प्रद्युम्नशाम्बसुतजन्ममहोत्सवेन ॥
तस्याः सदोदितमुदो हृदि दुःखलक्षदावानलोपशमवारिधरोपमानम् ।
[...] भवत्यवितथ कुपथापहारि सारं सुबोधविबुधाहितमुद्वहन्त्याः ॥
जज्ञेऽवज्ञातमानः कृतवितनु[तनु]त्रासमहासोऽसमान...नैकः काललीलावशत इति ततोऽस्या विशुद्धधियश्च ।
निश्चित्यातश्च मृत्यु निकटतममयाचिष्ट शिष्ट पतिं स्व, श्रेयोऽथ जीवशब्दोपपदमिह भवांल्लेखयेत् पुस्तकं मे ॥
ततश्च सुचिरारूढप्रौढधर्मभरः सुधीः । वेहको लेखयामास [श्री]पञ्चाशकपुस्तकम् ॥छ॥

पश्चाल्लिखित—

नवाङ्गीवृत्तिकारखरतरगुरुश्रीअभयदेवसूरिकृता पञ्चाशकवृत्तिः सम्पूर्णा । चारित्रसिंहगणि लि. ॥

क्रमाङ्क २१०

पिंडविशुद्धिप्रकरण सटीक पत्र २०६ । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** जिनवल्लभगणि । **टी. क.** यशोदेवसूरि । **वृ. ग्रं.** २८०० । **र. सं.** ११७६ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३॥×२।.

पत्र १, १९, २१–२४, २७, ३५, ४१–४३, ४७, ६०, ६१–६४, ६८, ७३–७६, ७८–८६, ८८–९०, ९३, १०३, १०४, १०८, १११, ११२, ११४, १२४, १२७, १७७, १८१–१८४, १८६–१९२, १९४, १९५, १९७ नथी.

अन्त— श्रीप्रभावतीमहत्तरासत्कपुस्तिका ॥

क्रमाङ्क २११

पंचाशकप्रकरणलघुवृत्ति अष्टादशपंचाशकपर्यन्त पत्र २६५। **भा.** प्रा.। **क्ट.** यशोभद्रसूरि। **ग्रं.** ३९२५। **ले. सं.** ११२१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२॥.

आदि—

सर्वातिशयसम्पन्नमनादिनिधनस्फुटम्। जैन.... ... ...विच्छेदचतुरं वचः ॥

स्तुत्य सरस्वति न .... देवि भूया यस्याः प्रसादवशतो भुवि निर्मलत्वम्।

वार्त्ता भवत्यवितथास्फलितप्रबन्ध विद्वद्भिरर्चितगुणं गुणवद्भिरम्यम् ॥

अन्त—

॥छ॥ साधुप्रतिमाप्रकरणम् ॥छ॥छ॥१८॥ प्रथमान ३९२४ ॥छ॥ कृतिरियं श्रीश्वेतांबराचार्ययशोभद्रस्येति ॥छ॥ संवत् ११२१ ज्येष्ठ सुदि ११ बुधदिने जसोधरेण लिखित ॥छ॥

ससहरकुलम्मि विउले आसि ससहरकरसरिसगुणकलिओ। कलिमलकलंकमुक्को सिरिसूरिजिणेसरो नाम ॥१॥

तस्सऽत्थि सीसपवरो सीसो जिणसासणसाहणेक्कतल्लिच्छो। जिणचंदसूरिनामो दिणनाहो व्व पसिद्धओ तवसा ॥२॥

अण्णो वि अत्थि पवरो भव्वो भव्वाण बोहणिक्करओ। सिरिअभयदेवसूरी थिरो थेरो इव अत्थि वेयविऊ ॥३॥

तत्तो वि य दढधम्मो धम्मरुई धम्मदेसओऽत्थि मुणी। लद्धुवज्झायपओ सीसो सिरिधम्मदेवो त्ति ॥४॥

अह लाडयम्मि देसे अत्थि पुर सुद्धजणवयसमिद्धं। नरवइरयणसमुद्द वडउद्द जिणहरसमिद्धं ॥५॥

तत्थ य निवसइ सड्ढो सम्मत्तदढो वियड्ढगुणजुत्तो। जीवायपयत्थविऊ धणधण्णसमाउलो विमलचित्तो ॥६॥

णाऊण मच्चलोए अणिच्चय जोव्वण धणं धण्ण। अम्मबो कयकिच्चो अम्मो णामेण वरसड्ढो ॥७॥

तस्सऽत्थि थिरसहावा भावियभवभावणा विमलचित्ता। सवेयपरा वि तहा अवितहवक्का वि विणयरया ॥८॥

जिणपूयकज्जनिरया निरया गुरुसाहुदाणकज्जेसु। धम्मेसु चेव निरया तवसजमउज्जुया चेव ॥९॥

दाणमई रूयमई सहावकरुणापवन्नचित्ता वि। जिणवयणभावियमई होला णामेण भज्ज त्ति ॥१०॥

वीमसिऊण तेण सह णियजायाइ सम्मभावेण। कयणाणदाणराओ जिणधम्मपवन्नओ पवरो ॥११॥

तत्तो सुअसद्धाए निज्जरहेउ त्ति अ[म्मऽ]मच्चेण। सिरिधम्मएवउज्झायकारणे कलिय कलिकाल ॥१२॥

पंचासयाण वित्ती असुभनिवित्ती य भवविरहकित्ती। सुत्तसहिया वि[लिहिया] विमला वण्णजसकित्ति व्व ॥१३॥

जाव य मेरुस्स सिहा जाव य ससिसूरमंडलप्पयारो। जाव य गहनक्खत्ता ताव य नदउ इम पोत्थ ॥१४॥

सुकयत्थो होइ नरो सुयणाणपयाणओ असंदेह। लहइ पसस लोए ण य आवइभायण होइ ॥१५॥

णाणेण होइ णाया सव्वपयत्थाण मच्चलोयम्मि। णाणेण पूयणिज्जो सलाहणिज्जो वि लद्धजसो ॥१६॥

णाणं विवेयजणय णाण सिवसोक्खकारण परम। णाण जिणवरभणिय णरयगहणिवारगं एक ॥१७॥

णाणं दिंतो वि नरो ण पावए अयसपकय कह वि। लघेइ भवपवच सुणाणदाणेण अवियार ॥१८॥

णाणस्स फलं विरई विरइभावाओ आसवनिरोहो। आसवनिरोह सवर सवरओ होइ तव विउलो ॥१९॥

तवसो फल च निज्जर निज्जरओ होइ कम्महाणी वि। कम्माण खये जीवो सिद्धो बुद्धो हवइ निच्चो ॥२०॥

क्रमाङ्क २१२

प्रथमपंचाशकप्रकरण चूर्णि सह अपूर्ण पत्र २१०। **भा** प्रा.। **चू. क.** यशोदेवसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२।.

पत्र ७, ८, १२–१४, १७, १९–२५, २७, ३२, ३६, ४१–४७, ५०, ५३–५५, ५७, ५८, ६२, ६३, ६५, ६७, ६९–७१, ७५–७७, ८०, ८१, ८३, ८४, ८६, ८७, ८९, ९४, ९५, १२४, १२५, १६१, १६६, १९९, २०० नथी

क्रमाङ्क २१३

द्रव्यसंग्रह सटीक प्रथमखंड पत्र ६८। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि दिगंबर। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२.। पत्र १, ७, ८, २२ नथी।

क्रमाङ्क २१४

(१) **उपदेशपदप्रकरणलघुटीका** पत्र १९२। **भा.** स.। **टी. क.** वर्धमानसूरि। **ग्रं.** ६५१३। **टी. र. सं.** १०५५। **ले. सं.** १२१२। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥।×२।.। अंत्य पत्रमां शोभन छे।

आदि—

॥५०॥ ॐनमः सर्वज्ञाय ॥

वन्दे देवनरेन्द्रवृन्दविनुतं स्वर्गापवर्गास्पदं लोकालोकविसर्पिकेवलकरप्रध्वस्तदोषोदयम्।
भव्यांभोरुहषडमोहमुकुलध्वंसोष्णरश्मिं जिनं कर्म्माद्रिद्रुतदारणैककुलिशं श्रीनाभिभूपांगजम्॥
सिद्धं सर्वज्ञसार्वीयं वीरं नत्वा जिनेश्वरम्। उपदेशपदव्याख्यां प्रत्यात्मस्मृतये यते॥
हरिभद्रवचोव्याख्यां कः कुर्याद् यो विचक्षणः। स्वशक्तिमविचार्यैव तथाप्यभ्युद्यतोऽत्र यः॥

इहोपदेशपदाख्यप्रकरणमारिप्सुराचार्यः शिष्टसमयानुसरणाय विघ्नविनायकोपशांतये प्रयोजनाद्यभिधानार्थं चेदं गाथायुगलमाह ॥छ॥ णमिऊण० वोच्छं उव० गाथे॥ तत्राद्यगाथयेष्टदेवतास्तवो वाच्यः, अयं च भावमंगलरूपो वर्त्तते॥ वोच्छं उवएसपए इत्यादिनाऽभिधेयपदमुक्तम्।

अन्त—

येन किन्नाम्नेत्याह। श्रीहरिभद्राचार्याभिधानेन जगद्विश्रुतेन जैनेन्द्रशासनमन्दिरप्रदीपकल्पेन। किमर्थमित्याह। भवः संसारस्तस्य विरहोऽभावस्तमिच्छताऽभिलषता, अन्यत्र किल द्वितीयनाम्ना भवविरहाह्वयोऽप्यसौ सूरिरभिधीयत इति ॥छ॥

सिद्धेः संसारभयात् पार्श्विलगणिवचनतः प्रथममेषा। स्नेहादलेखि शीघ्रं मुनिना नन्वाम्रदेवेन॥
कर्मक्षयाय प्रतिरियेषा वर्णिना यशोविमुखैः। पार्श्विलगणिना तेषां स्तुतिरियमुपवर्णिता भक्त्या॥
प्रशमविजितकोपैर्मार्दवन्यस्तमानैः ऋजुगुणहतमायैस्तोषसन्त्यक्तलोभैः।
जिनवचनविचारे नित्यमासक्तयोगैः सुविमलगुणरत्नैर्वर्द्धमानव्रतीन्द्रैः॥
इयमुपदेशपदानां टीका रचिता जनावबोधाय। पञ्चाधिकपञ्चाशद्युक्ते संवत्सरसहस्रे १०५५॥
कृतिरियं जैनागमभावनाभावितान्तःकरणानां श्रीवर्द्धमानसूरिपूज्यपादानामिति ॥छ॥
अक्षरघटनामात्रं सम्यगविज्ञाय यत् कृतं धाष्टर्यात्। गम्भीरपदार्थानामुपदेशानां मया स्मरणहेतोः॥
विद्वद्भिरागमधरैरवधानपरैः परोपकाररतैः। मय्यनुकम्पैकरसैस्तच्छोध्यं मर्षणीयं च ॥छ॥

उपदेशपदटीका समाप्ता ॥छ॥ ग्रन्थाग्रमुद्देशतः सार्द्धा षट्सहस्री ॥६५१३॥छ॥ संवत् १२१२ चैत्र सुदि १३ गुरौ अद्येह श्रीअजयमेरुदुर्गे समस्तराजावलीविराजितपरमभट्टारकमहाराजाधिराजश्रीविग्रहराजदेवविजयराज्ये उपदेशपदटीकाऽलेखीति ॥छ॥ कल्याणमस्तु॥

(२) **पंचवस्तुकप्रकरणवृत्ति अपूर्ण** पत्र १९३–३५०। **भा.** सं.। **क.** हरिभद्रसूरि स्वोपज्ञ। **ले. सं.** अनु. १२मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं.प.** २४॥।×२।.

पत्र २२२, २२३, २३५, २३६, २३८, २७९, २८८, २९८, २९९, ३०२, ३०६, ३०७, ३०९, ३१२, ३४८ नथी। आ ग्रंथनो प्रारंभ १९३ मा पत्रथी थाय छे।

क्रमाङ्क २१५

उपदेशपदप्रकरणलघुटीका सपूर्ण पत्र १४९–२९९। **भा.** सं.। **टी. क.** वर्धमानसूरि। **टी. ग्रं.** ६५१३। **र. सं.** १०५५। **ले. सं** ११९३। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५×२॥

अन्त—सवत् ११९३ ज्येष्ठ सुदि २ रवौ ॥छ॥ शुभं भवतु ॥

क्रमाङ्क २१६

योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित पत्र ३१९। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्रसूरि स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १४०७। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२॥×२।

पत्र. १११, १३०, १३२, १३५, १४२–१४४, १४६, १४८, १५६, २२६, ३०८, ३१०–३१२, ३१४–३१७ नथी.

क्रमाङ्क २१७

प्रश्नोत्तररत्नमालिका वृत्तिसहित पत्र १८२। **भा.** स.। **मू. क.** विमलसूरि। **वृ. क.** हेमप्रभसूरि। **ग्रं.** २१३४। **र. सं.** १२२३। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×२। । पत्र १, २, ५, १६१, १६६, १६७, १७०–७२, १७४ नथी। आ **पोथी कागळ** उपर लखेली छे।

रचिता **सित**पटगुरुणा, विमला **विमलेन** रत्नमालेव। **प्रश्नोत्तरमालेयं**, कण्ठगता क न भूषयति ? ॥

अस्य व्याख्या—विभूषयति अलङ्करोति क क न ?, अपि तु सर्वमपि। काऽसौ कर्त्री ? इय प्रश्नोत्तररत्नमाला। केव ? रत्नमालेव। किंविशिष्टा ? 'विमला' प्रश्नोत्तराणामविरोधित्वान्निर्दोषा, उपमानपक्षे पुन 'विमला' त्रासहीनत्वादवदाता। पुनः किंविशिष्टा ? 'रचिता' निर्मिता। केन ? 'सितपटगुरुणा' सिता श्वेताः पटाः वस्त्राणि येषां ते सितपटास्तेषां गुरु सितपटगुरुस्तेन सितपटगुरुणा श्वेताम्बराचार्येण। किंविशिष्टेन ? विमलेन विगतो मलः पापरूपो यस्मात् स विमलस्तेन विमलेन निःपापेन, अथ च ग्रन्थकारो गम्भीरोक्तिरस्मिन् पदे निजनामाऽपि प्रतिपादयाञ्चकार, विमलेन **विमलाचार्येणेत्यर्थः**। अत्र च विमलेनेति नामैकदेशप्रयोगेऽपि विमलाचार्य इति समुदायो गम्यते, यथा भीमो भीमसेन इति॥ अधुना रत्नमालया सह प्रश्नोत्तररत्नमालाया श्लेषो भण्यते। तथा हि—

अत्यन्तविशदवर्णा, गुणगणरम्या महार्थविषया च। योग्या क्षमाधराणामनेकवर्यप्रभावयुता ॥१॥
प्रश्नोत्तरमालेयं, धत्ते वररत्नमालया समताम्। वर्यार्थाश्चर्यकरी, दत्तमहानन्दपदविभवा ॥२॥
एवं समर्थिताऽसौ, **प्रश्नोत्तररत्नमालिकावृत्तिः**। विबुधानन्दविधात्री, शुभरसपात्री च गङ्गेव ॥३॥
लक्ष्मीर्गुणानुबन्धान्नृत्यति यस्मिन् मुदा समागत्य। वंशः **प्राग्वाटाख्यो गुरुपर्वाऽऽस्ते स उत्तुङ्गः** ॥१॥
आसीत् तत्र सरस्वतीव विबुधव्याख्यातशास्त्रावलिर्बाल्यात् पालितसप्रभावविमलश्रीब्रह्मचर्यव्रता।
विख्याता गुणिनां गणे निजगुणैः सा **नागिणी** श्राविका, यस्याः सर्वगुणावधेः कथयितुं शक्यः क एको गुणः ? ॥२॥
भ्रातृजपुत्रस्तस्याः **ऊदलनामा** बलाधिपो जज्ञे। वास्तव्यो **झेरिंडकनगरे** धार्मिकजनप्रवरे ॥३॥
प्रकटितकमलोल्लासा निर्मलपक्षद्वया सदाचारा। **ऊदलभार्या समभूदुदयश्री** राजहंसीव ॥४॥
श्रीमद्देवगुरुक्रमार्चनविधिप्राप्तप्रतिष्ठावधिः, सौजन्यादिगुणौघरत्नजलधिर्नीतिश्रुतीनां निधिः।
गाढ दानरतिः सदागममतिः सर्वत्र लब्धोन्नतिः, सजातो **हरिपाल** इत्यभिधया ख्यातस्तयोर्नन्दनः ॥५॥
बभूव **शुल्कशालायामाशापल्यां** महत्तमः। सर्वतोमुखनिष्क्रान्तसाधुवादः स भूतले ॥६॥

अन्यच्च—

श्रीजैनशासनाम्भोधिसमुल्लाससुधांशवः । जज्ञिरे जगति ख्याताः श्रीचन्द्रप्रभसूरयः ॥७॥
धर्माधारतया सुदुश्चरतपश्चारित्रतेजस्तया नानासूरिविनेयसेवितितया तैस्तैर्गुणैर्विश्रुतः ।
श्रीचन्द्रप्रभसूरिपट्टतिलको निर्ग्रन्थचूडामणिर्जज्ञे श्रीजयसिंहभूपतिनुतः श्रीधर्मघोषः प्रभुः ॥८॥
तदीयहस्तपद्मेन लब्धश्रीसूरिसम्पदः । बभूवुर्जंगमं तीर्थं, श्रीयशोघोषसूरयः ।।९॥
आवर्जिते गुणग्रामैर्येषां गम्भीरिमादिभिः । रूपलक्ष्मीसरस्वत्यौ समायातां स्वयं तले ॥१०॥
तेषां सपुण्यलावण्यरूपपाण्डित्यसम्पदाम् । स्वहस्तदीक्षितैः शिष्यैः श्रीहेमप्रभसूरिभिः ॥११॥
भुवनश्रुतिरविसङ्ख्ये[१२२३] वर्षे हरिपालमन्त्रिविज्ञप्तैः । एषा चक्रे वृत्तिः प्रश्नोत्तररत्नमालायाः ॥१२॥
कनकगिरिकनकदण्ड, धत्तेऽम्बरमेघडम्बरं छत्रम् । जगति जयतो यावत्, वृत्तिरियं वर्त्ततां तावत् ॥१३॥
ग्रन्थाग्रन्थ २१३४ । प्रश० १८ एवं ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥ ॥ शुभं भवतु श्रीसङ्घस्य ॥
५० ॥ अर्हम् ॥ गुरुगिरिविहितास्थः साधुराजप्रतिष्ठोर्जितसुगुणपताकोऽत्यन्तचैत्योर्ध्वभक्त्या ।
सरलतर उरुः सल्लक्षणश्चारुपर्वोन्नत उदित इहोर्व्यां श्रीमदूकेशवंशः ॥१॥
तत्राभिजात्यशुभवृत्तमहार्घताढ्यो, मुक्तोपमोऽजनि महर्द्धिकसाढसाधुः ।
यः प्रत्यहं पथिकयाचकपङ्क्तये, माहेश्वरोऽन्नघृतदानमदीदपत् सदा ॥२॥
काले कियत्यपि गते लघुकर्मकत्वान्माहेश्वरत्वमुपकेशपुरे विहाय ।
श्रीवीतरागमुनिपुङ्गवभक्तिशाणैः, सम्यक्त्वरत्नमुदवीदिपदत्र यः ॥३॥ युग्मम् ॥
पुत्रस्तस्य सहस्रपत्ररुचिरः श्रीपद्मदेवाभिधः, साधुः सौरभवासितत्रिभुवनः पद्मानिवासोऽजनि ।
यः श्रीनागपुरोपकण्ठकुडिल्लपुर्यां मुदाऽकारयत् नीथ......देवसद्म विदधात्यद्यापि यत्कौतुकम् ॥४॥
क्षेमधरः साधुरजायताऽस्य, सूनुर्गुरुं श्रीजिनचन्द्रसूरिम् ।
विध्यध्वधर्मं च शशिप्रतिष्ठामाप्य लली यो मरुकोट्टदुर्गे ॥५॥
यो दा. त् षोडश श्रीअजयपुरि विधिमन्दिरे मण्डपाये,
पारुत्थानां सहस्रान् सकलनिजकुलश्रेयसे तीर्थयात्राम् ।
कृत्वा प्रद्युम्नसूरिं विविधमपि जनाध्यक्षमेवाऽऽत्मपुत्र,
श्याशापल्ल्यां श्रुतोक्त्या जिनपतिगुरुभिर्मानयामास चैत्यम् ॥६॥ युग्मं ॥
जगद्धरः साधुरभूत्तदङ्गभूः, कृत्वा श्रियं यश्चपलामपि स्थिराम् ।
अत्यद्भुतं श्रीजिनपार्श्वमन्दिरं, व्यधापयज्जेसलमेरुपत्तने ॥७॥
पुत्रास्तस्य त्रयोऽभूवन्, यशोधवल आदिमः । साधुर्भुवनपालोऽन्यः, सहदेवाभिधः परः ॥८॥
यशोधवलिताखिलत्रिजगदुच्चकैः पुण्यवान्, यशोधवलसाधुराट् समजनिष्ट सत्याभिधः ।
मरुस्थलसुरद्रुमः प्रतिदिनान्यदेशागतप्रभूतसमधार्मिकाशनदानसम्मानतः ॥९॥
अजनि भुवनपालः साधुराट् पुण्यलक्ष्म्या, कलितविपुलभालः कीर्त्तिवल्ल्यालवालः ।
अधरितसुधवाण्यावर्जितक्षोणिपालः, स्वधनसुकृतकृत्यज्ञापितात्मत्रिकालः ॥१०॥
षण्मासान् भूमिशय्यां स्वशिरसि कुसुमाक्षेपमेकाशनत्वं,
चास्नानं ब्रह्मचर्यादिमबहुनियमान् बिभ्रता येन यूना ।
निर्जित्याऽरीन् विधाप्य स्वगुरुजिनपतेः स्तूपरत्नं पताका-
ऽऽरोपि श्रीसोमसिंहप्रतितनुकजगत्सिंहसाहाय्यमाप्य ॥११॥
श्रीमन्माण्डलिकं विहारमपरं श्रीभीमपल्ल्यां पुरि, प्रासादं गगनाग्रलग्नशिखरं निर्माप्य लोकोत्तरम् ।
श्रीमत्सूरिजिनेश्वरैर्युगवरैस्तस्य प्रतिष्ठाप्य यः, श्रीवीरप्रभुमूर्त्तिमद्भुततमां सस्थापयामासिवान् ॥१२॥
त्रिभिर्विशेषकम् ॥

तत्पत्नी पुण्यिनी नाम्ना, नित्योपार्जितपुण्यका। त्रिभुवनपालधीदा, जज्ञे पुत्रद्वयप्रसूः ॥१३॥
तदाद्यः क्षेमसिंहोऽभूत्, सिंहवत् सज्जितक्रमः। लीलया दलयामास, यः प्रतिपक्षदन्तिनः ॥१४॥
द्वितीयोऽभयचन्द्रोऽस्ति,साधुराजो द्विधा भुवि। द्रव्यतः श्रीपतित्वेन, शिष्टाचारेण भावतः ॥१५॥
श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्वगुरुणा चक्रेशिना तन्वता, यात्रां मोहनरेन्द्रनिग्रहकृते श्रीसङ्घसैन्ये कृतः।
यः सेनाधिपतिः स्वविक्रमनयैस्तद्गृह्यभौतारीन्, स्वस्वाम्यंह्रितले प्रपात्य तदिम दासं व्यधात् स्वप्रभोः ॥१६॥
येनात्यद्भुतदानमानविनयैः श्रीतीर्थसङ्घार्चनावात्सल्यादिगुणैश्चमत्कृतिकरं श्रीतीर्थयात्रोत्सवम्।
निर्माया नरनिर्जरैः कीर्त्तिवनिता त्रैलोक्यरङ्गाङ्गणे, चन्द्रेऽलेखितमां स्वनामकलशः स्वीये कुले चाटितः ॥१७॥
कर्णेऽभ्यर्णमुपागते सुरपतौ पातालमूलं बलौ, नष्टेप्यत्र कलौ सुरद्रुममुखेष्वन्द्देषु तुच्छेष्वपि।
पश्यत्यूर्ध्वमधश्च याचकजने दीनानने दुःखिते, तत्पुण्यादुदितो य एव भुवने दाता तदस्मारकः ॥१८॥
कल्पद्रोऽभयचन्द्र! कल्पलतिका ते प्रेयसी लक्ष्मिणी, श्रीधींधाजगसिंहसूरविलसत्तेजोऽभिधानाङ्गजैः।
पुत्रीभ्यामपि पद्मिनीकुमरिकाभ्यां सत्फलैरिष्टदा, स्तात् साखाप्रमुखैर्भवांश्च सुफलैः पौत्रप्रपौत्रादिभिः ॥१९॥

.. . .

[श्रीजिनेश्वरसूरीणां पादाभोजमधुव्रतैः। श्रीदेवमूर्त्युपाध्यायैर्निर्मितैषा प्रशस्तिका ॥२५॥
॥ इति प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्ति पु० साधुअभयचन्द्रलेखितायाः प्रशस्तिः समाप्ता ॥]

क्रमाङ्क २१८

(१) द्वादशकुलक विवरणसहित पत्र १-१५७। भा. प्रा स.। मू. क. जिनवल्लभसूरि। वि. क. जिनपालोपाध्याय। ग्रं. ३३६३।

(२) रत्नचूडकथा विषमपदविवरण टिप्पनक पत्र १५७-१५८। भा. स.। ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ११।×३.।

आ प्रति कागळ उपर लखेली छे।

क्रमाङ्क २१९

स्वप्नसप्ततिका वृत्तिसहित अपूर्ण पत्र ४८। भा. प्रा स.। ले. सं. १४ शताब्दी उत्तरार्ध। संह. श्रेष्ठ। द श्रेष्ठ। लं. प. १७×१॥।। पत्र ३, ४, ७, १६, १८, २१, २३, २४, २७, २९, ३१, ४५-४७ नथी अने केटलांक पानांना टूकडा थई गया छे।

क्रमाङ्क २२०

उपदेशमाला अवचूरि त्रुटक अपूर्ण पत्र १११। भा. स। ले. सं. अनु. १३मी शताब्दी। संह जीर्णप्राय। द. श्रेष्ठ। लं. प. १३।×१॥।

पत्र. ५६, ६६, ६८, ७०-७६, ७८-८०, ८२, ८४, ८६, ८९, ९१, ९२, ९४, ९७, ९८, १०२, १०५-११० नथी।

क्रमाङ्क २२१

नवपदप्रकरण बृहद्वृत्ति सहित पत्र २६६। भा. प्रा. सं.। मू. क. जिनचंद्रसूरि। वृ. क. यशोदेवसूरि। ग्रं. ९५००। ले. सं. अनु. १३मी शताब्दीनो अंत। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. १३×२।। पत्र २५६ मु नथी।

क्रमाङ्क २२२

नवपदप्रकरण बृहद्वृत्तिसहित पत्र २५९। **भा.** प्रा सं.। **मू. क.** जिनचन्द्रसूरि। **वृ. क.** देवेंद्रसूरि। **ग्रं.** ९०००। **र. सं.** ११८२। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारभ। **सं.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३२×२.। पत्र १००, २४०, २४८, २४९, २५१, २५७ नथी।

अन्त—

नवपदप्रकरण समाप्तमिति ॥छ॥

दूरापास्तसमस्तकुश्रुतितमाः स्फीतप्रभः स्फारधीः सद्वृत्तो गतलाञ्छनोऽपि शशिनः साम्य परं धारयन्। आसीच्चन्द्रकुले हृताङ्गिकुमुदव्यामोहनिद्राभरः, सूरिः सद्गुणपूगपूरिततनु श्रीसर्वदेवाभिधः ॥१॥ लब्धप्रतिष्ठः प्रथितोरुकीर्त्ति पापेणकोऽत्रासनबद्धकक्षः। दुर्दान्तवादिद्विपभङ्गदक्ष. तस्मादभूच्छ्रीजयसिंहसूरिः ॥२॥ आनन्दसस्वापहृताघपूरान् सर्वोपकारप्रकृतिप्रवृत्तः। तस्मान्मनोज्ञाच्छुभसयमश्रिय. देवेन्द्रसूरि समजायताऽत्र ॥३॥ अभिनवनवपदसूत्र वृत्तिश्च कृता सुखावबोधेयम्। देवेन्द्रसूरिणा श्रीजयसिंहाचार्यशिष्येण ॥४॥

यदत्र किञ्चिद्वितथ ममोक्त व्यामोहतो वा मतिमान्द्यदोषात्।
सदागमज्ञै. स्वधिया विमृश्य सशोधनीय महताऽऽदरेण ॥५॥

एकादशवर्षशते विक्रमकालाद् द्वयशीतिसयुक्ते ११८२। सितपक्षे मार्गसिरे गुरुवारे प्रतिपदादिवसे ॥६॥ संगमखेटकनगरे स्थितैरिवानिरचिता वरा वृत्तिः। प्रथमा च प्रतिः पूर्णा तस्यै. श्राद्धैर्विलेखिता ॥७॥ ग्रन्थोऽय श्लोकमानेन सहस्रनवनिश्चितः। गणित्वाऽमरचन्द्रेण स्थाने स्थाने निदर्शित ॥८॥ यावच्चन्द्रार्कबिम्बे विचरणनिरते व्योम्नि विद्योतमाने, यावन्मेरु शिखाग्रस्थितजिनसदनश्चारुशोभां बिभर्ति। [अपूर्ण]

क्रमाङ्क २२३

दर्शनशुद्धिप्रकरण विवरणसहित पत्र १८६। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** चन्द्रप्रभसूरि। **वि. क.** देवभद्रसूरि। **ले. सं.** १४ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १५॥×२।। पत्र ५५, ६८, ६९, ८३, ११२, १३९, १४५, १७७ नथी।

क्रमाङ्क २२४

प्रकरणपुस्तिका पत्र १५+६४। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी प्रारभ। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×२.

(१) सुबाहुचरित पत्र १५। **भा.** प्रा.। **गा.** २१६। **ले. सं** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ।

(२) लोकतत्त्वनिर्णय पत्र १-१६। **भा.** स.। **क.** आचार्य हरिभद्रसूरि। **ग्रं** १४४।

(३) बोधप्रदीपपंचाशिका १६-२५। **भा.** स.। **का.** ५०।

आदि—चूडोत्तसितचारुचन्द्रकलिकाचञ्चच्छिखाभास्वरो०

(४) पार्श्वजिनस्तोत्र पत्र २५-२९। **भा.** स.। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** २४।

आदि—समुद्यन्तो यस्य क्रमनखमयूखाः विदधिरे०

अन्त—

इत्थ तीर्थपतेः पितुस्त्रिजगतः श्रीआश्वसेनेः पुरः, प्राज्ञः सश्रुभदञ्जलिर्विलसदानन्दोल्लसल्लोचनः।
प्रोद्यच्छन्पुलकच्छलप्रविकसत्पुण्याङ्कुरो यः स्तुयाल्लीलाभाजि न वल्लभो न स वसेत् स्वःश्रीशिवश्रीहृदि ॥२४॥
॥ इति पार्श्वस्तोत्रम् ॥

(५) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र २९-३२। **भा.** सं.। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** १७।
आदि—विनयविनमदिन्द्र मन्मनोऽम्भोधिचन्द्र०
अन्त—स खलु निखिले न स्याल्लोकेशराजि न वल्लभः ॥१७॥
॥ इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ॥

(६) **पंचकल्याणकस्तव** पत्र ३२-३५। **भा.** स.। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** १२।
आदि—प्रीतद्वात्रिंशदिन्द्रोदितविततगुणाधारपुत्रावतार०
अन्त—स्वःसाम्राज्यादि भुक्त्वा जिनपदसहितं वल्लभं सल्लभन्ते ॥१२॥
॥ पंचकल्याणकस्तवः ॥

(७) **धर्मशिक्षाप्रकरण** पत्र ३५-४३। **भा.** स। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** ४०। **ग्रं.** १०५।
अन्त—॥४०॥ चक्रम् ॥ धर्मशिक्षाप्रकरणम् ॥ कृतिर्जिनवल्लभगणेरिति ॥ **ग्रं.** १०५।

(८) **धर्मबिंदुप्रकरण** पत्र ४३-६४। **भा.** स.। **क.** आचार्य हरिभद्रसूरि।
अन्त—समाप्त चेद धर्मबिन्द्वाख्य प्रकरण कृतिराचार्यश्रीहरिभद्रस्य ॥छ॥ मगल महाश्री: ॥

क्रमाङ्क २२५

धर्मबिंदुप्रकरण वृत्तिसह पत्र १५५। **भा.** स.। **मू. क.** हरिभद्रसूरि। **वृ. क.** मुनिचद्रसूरि। **ग्रं.** ३०००। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १६×२॥.
अन्त—

इति श्रीमुनिचन्द्रसूरिविरचितायां धर्मबिन्दुप्रकरणवृत्तौ विशेषतो धर्मफलविधिरष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥छ॥
नावि·कर्तुमुदारतां निजधियो वाचां न वा चातुरीमन्येनापि च कारणेन न कृता वृत्तिर्मयाऽसौ परम्।
तत्त्वाभ्यासरसादुपात्तसुकृतोऽन्यत्रापि जन्मन्यह, सर्वार्दीनवहात्वितोऽमलमना भूयाममुच्चैरिति ॥छ॥
इति श्रीमुनिचन्द्रसूरिविरचिता धर्मबिन्दुप्रकरणवृत्ति· समाप्ता ॥छ॥ प्रत्यक्षर ग्रन्थ ३००० ॥
५० ॥ अर्हम् ॥
सदा नवप्रवालश्रीवशोऽस्त्यूकेशसञ्ज्ञकः। यस्याहार्यस्थितिं दृष्ट्वा कस्य न प्रीयते मन ॥१॥
देवनागाभिधः श्राद्धस्तत्राऽभूद्धर्मकर्मभूः। तस्याऽपि दूअकनामा तुक् जज्ञेऽथ विरक्तधीः॥२॥
तस्यापि भुवणिग-सुमति-लूणिग-पद्माभिधाश्च चत्वारः। धर्मार्थकाममोक्षप्रसाधनार्थं ध्रुव सुता जज्ञुः ॥३॥
महेन्द्रश्रीदा धणदेवीनाम्नी पत्नी सपत्नीकृतकृष्णकान्ता।
तत्रादिमस्येह यथा वृषस्याऽभूत् सद्वतिः मातनिखातकल्पा ॥४॥
श्रीतीर्थनाथपदपङ्कजभागिभालः सत्स्फूर्तिकीर्तिसितपद्मवनीमरालः।
धैर्यादिलक्षणगुणाऽभयवासशालस्तस्याः सुतः समुदपादि कुमारपाल. ॥५॥
द्वितीयः सुमतिनामाऽभूद् यः परीक्ष्य क्षमातले। श्रीमज्जिनपतिं सूरिं गुरुबुद्धया न्यषेवत ॥६॥
जगमतगणिनीपुत्री श्रीजिनपतिसूरिभिर्दिदीक्षेऽस्य। पुत्रश्च जिनेश्वरसूरिभिरिह जयसेननामर्षिः ॥७॥
मातृश्रेयोहेतो· कुमारपाल· प्रधानपुस्तिकयो:। पञ्चनमस्कारविवरण-धर्मबिन्दुविवृती अलेखयत ॥८॥
अदोद्विपुस्तिकाव्याजाद् भव्यदशनशुद्धये। कृते कुमारपालेन सुधाञ्जनशलाकिके ॥९॥
ततश्च—

यत्कीर्त्या धवलीकृते त्रिभुवने कैलासलीलान् नगांच्छ्रीकण्ठानिव तद्गणांस्तत इतः प्रेक्ष्याम्बिका विस्मिता।
रुद्राङ्गं स्वसतीत्वखण्डनभिया त्यक्त्वा हिमाद्रावगात्, तत्रास्यानुपलक्षणाकुलतया मृते हहा किं न्विदम् ॥१०॥
श्रीजिनेश्वरसूरीणां तेषां भक्तिपुरस्सरम्। दत्ते कुमारपालेन ते च द्वे अपि पुस्तिके ॥११॥

यावद्व्योमकटिप्रकेतन इतः सप्तैव यानादरात्, क्षितानक्षवलक्षिताक्षतकणान् भोक्तुं परिभ्राम्यतः ।
पक्षद्वन्द्वविकाशनप्रतिदिने द्वौ राजहसौ मुदा, तावद् द्वे अपि पुस्तिके बुधजनैः स्तां वाच्यमाने इमे ॥१२॥
स्वगुरुवचःसारस्वतमन्त्रध्यानात् प्रशस्तिमकृतेमाम् । मुगुरुजिनेश्वरसूरेरन्तेवासी प्रबोधचन्द्रगणिः ॥१३॥छ॥

क्रमाङ्क २२६

श्राद्धदिनकृत्य बृहद्वृत्तिसह अपूर्ण पत्र २४८। भा. प्रा. सं.। क. देवेंद्रसूरि स्वोपज्ञ। ले. सं. अनु. १५ मी शताब्दी। संद्द. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. २६॥×२॥।

पत्र १, ३, ५, १५१–१७१, १७३–२२१, २२३–२२७, २३१, २३९ नथी।

क्रमाङ्क २२७

उपदेशमालादोघट्टीवृत्ति पत्र ३१८। भा. प्रा. म. अप.। क. रत्नप्रभाचार्य। ले. सं. अनु. १३ मी शताब्दी। संद्द. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. २८॥×२॥ प्रशस्ति अपूर्ण छे।

क्रमाङ्क २२८

उपदेशमाला बृहद्वृत्तिसह प्राकृतकथासह पत्र ३३१। भा. प्रा. म.। ले. सं. अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। संद्द. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. २९॥×२॥। पत्र २ जु नथी

प्रथमपत्रमां बे पारिपार्श्विक चामरधरसहित शांतिनाथ भगवाननु चित्र छे।

अन्त—

॥छ॥ उपदेशमालाविवरण समाप्तम् ॥छ॥ कृतिरियं जिनजैमिनिकणभुक्सौगतादिदर्शनवेदिनः सकलग्रन्थार्थनिपुणस्य श्रीसिद्धर्षिमहाचार्यस्येति ॥छ॥

सिद्धविरचिता वृत्तिः कथानकैर्योजिता स्वबोधार्थम्। प्राक्तनमुनीन्द्ररचितैश्चारुभिरुपदेशमालायाः ॥
यदविधिना सूत्रोक्तं न सम्यगिह लिखितम्। जैनेन्द्रमताभिज्ञैस्तच्छोध्यं मर्षणीयं च ॥छ॥
सत्यर्था (?) सगुणः कलंकरहितः पत्रावलीसयुतः, सच्छायः सुमनोहरः सुखकरः श्रेयस्करः प्राणिनाम्।
शाखाभिर्विततः सदैव सरलः सद्रत्नपूर्णान्तरः, श्रीमद्भूकटनामधेयवणिजां वंशोऽस्ति वंशोपमः ॥१॥
अत्र ख्यातो धरणिरमणीमौलिकोटीरकल्पः, सत्कल्याणप्रकटमहिमापुण्यसप्राप्यमूर्तिः।
अस्यामेव्यो विविधविबुधैरूर्ध्वसर्वैरर्हतां च, प्राज्याश्चर्यः सुरगिरिसमः श्रीमद्भूकेशगच्छः ॥२॥
गच्छस्यास्य विशेषकोऽस्ति विदुषां शस्यः प्रशस्तैर्गुणैः, सूरिः श्रीककुदाभिधः सुचरितश्चारित्रचूडामणिः।
शस्याख्यावरमंत्रसंस्मरणतो भव्या लभन्ते क्षितौ, मर्त्यादित्यशिवोद्भवा द्रुततरं सर्वा इमाः संपदः ॥३॥
जयतु जिनकदर्पो श्वार्यागणधारकः। ईशान इव संपूज्यः सूरिः श्रीककुदाभिधः ॥४॥

गच्छेऽत्र पाररहितं बहुसत्त्वयुक्तं, लब्धप्रभावपुरुषोत्तमसेव्यमध्यम्।
पाथोधिकल्पमसमं गुणरत्नपूर्णं, गोत्रं समस्ति हरिपाटकनामधेयम् ॥५॥

बभूव गोत्रेऽत्र गुणैरुपेतः, सुश्रावकः स्योहडनामधेयः। सद्दान-सद्ध्यान-जिनेन्द्रपूजा-गुर्वंह्रिसेवादिषु धर्मयुक्तः ॥६॥
तस्य पत्नी सदाचारा, देवश्रीर्देवपूजिका। विनयादिगुणोपेता, शुद्धशीला सुदर्शना ॥७॥
जज्ञाते द्वौ सुतौ तस्याः, प्राच्याश्चन्द्रोष्णभाविव। प्रथमो देवचंद्राह्वो, देवपूजाकृतोद्यमः ॥८॥
द्वितीयः कोल्हणाह्वानः, स्वजनाह्लादकारकः। द्वावप्येतौ शुभाचारौ, चन्द्रवास्यबोधकौ ॥९॥
प्रथमस्याभवत् पत्नी, देवकी देवकी यथा। जिनकथाकृताश्चर्या, यशोदा ददायिका ॥१०॥
गुरुजनपदसेवा निश्चला काऽप्यपूर्वा, मधुमधुरिमसारा काऽपि वाणी च यस्याः।

उपशमदमयुक्ता सुव्रता शीलरम्या, स्खलितजलधिगर्वा चारुगम्भीरिमा च ॥११॥
तस्या अहे तनूजोऽथ, जिल्हणाख्यः समोनिधिः । दयादानकृतोद्योगः, स्थिरधीर्जैनदर्शने ॥१२॥
द्वितीयस्याऽभवद्भार्या, भव्या देवतपुत्रिका । भुवनी भवनिर्विन्ना, शुभभावा जिनार्चिका ॥१३॥
संजाता जिल्हणस्यापि, प्रेयसी रासलाभिधा । तिहुणीनामिका पुत्री, तयोर्जाता गुणान्विता ॥१४॥
अन्यदा भावयामास, देवकी श्राविकाऽथ सा । जिल्हणेन भुवण्या च सहेद भवविस्तरम् ॥१५॥ यथा—
असारः संसारः पवनचपल जीवितमिद, धन क्षाराम्भोधिप्रचललहरीपूरललितम् ।
इमे भोगाः रोगाः कुगतिनिगमा दुःखजनकाः, स्वबधूनां सग तरुणरमणीचित्तचटुलम् ॥१६॥
तन्नास्ति जीवलोकेऽस्मिन्, प्रतिबधो विधीयते । यत्र वस्तुन्यपास्यैक, जिनधर्मं सनातनम् ॥१७॥
धर्मस्याऽस्य भवति साधनविधौ यद्यप्युपायाः शुभा, दानाद्या अपरेऽपि कर्ममथकाः संसारविच्छेदिनः ।
श्रेष्ठ मुख्यतया तथापि गदित ज्ञान तु तेषां जिनैर्येनेदं प्रविलोक्यते सुकृतिभिः सर्व त्रिलोकीतलम् ॥१८॥
यतः—

ज्ञान मोहमहामहीधरशिरःसकंदनास्त्रोपम, ससारार्णवमध्यमग्नजनतासत्पोतलीलास्पदम् ।
ज्ञान मुक्तिनितबिनीकुचयुगव्यासंगसत्कार्मण, धन्यास्ते तदहो त्रिलोकनयन येलेखित पुस्तके ॥१९॥
समस्तजनसद्बोधदायक पुस्तके शुभे । लेखयामि महाशास्त्र, किंचित् सिद्धान्तसुन्दरम् ॥२०॥
इत्येव बहुधा विचिन्त्य मनसा बद्धेनम्गां वेश्मनो, वृत्तान्त विदुषां मनःस्थिरकर संसारवारांनिधे. ।
सार्द्ध जिल्हणसूनुना वरधिया तस्या भुवण्यास्तथा, श्रेयोऽर्थं स्वकुटुम्बकस्य च तत. सा देवकी श्राविका ॥२१॥
सिद्धान्तोद्धारभूताया, निर्वाणपथदीपकम् । वृद्धोपदेशमालाया, लेखयामास पुस्तकम् ॥२२॥
यावद्वेवतमार्गवयमुरज काष्टासु वध्रीदृढ, मूह गाढदिनेशचन्द्रपुटक वात. स्फुटो वादकः ।
नित्य शब्दयति स्वभावपुरत. समाररगक्षितौ, तावन्नन्दतु पुस्तक शुभमिद व्याख्यायमान बुधैः ॥छ॥२३॥
॥ मगल महाश्रीः ॥ श्रीवीरमस्तु ॥ छ ॥ ॥ शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥

क्रमाङ्क २२९

उपदेशमाला बृहद्वृत्तिसह प्राकृतकथासह अपूर्ण पत्र २७२ । **भा.** प्रा. स । **ले सं** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संह** श्रेष्ठ । **द** श्रेष्ठ । **लं. प.** २८x२॥

क्रमाङ्क २३०

उपदेशमाला बृहद्वृत्ति प्राकृतकथासह पत्र २९० । **भा.** प्रा स । ग्र ९५०० । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३३॥x२
अन्त—

उपदेशमालाविवरणं समाप्तम् ॥ छ ॥ छ ॥
कृतिरियं जिनजैमिनिकणभुक्सौगतादिदर्शनवेदिन. सकलग्रन्थार्थनिपुणस्य श्रीसिद्धर्षेर्महाचार्यस्येति ।
सिद्धर्षिकृता वृत्तिः कथानकैर्योजिता स्वबोधार्थम् । प्राक्तनमुनीन्द्ररचितैश्चारुभिरुपदेशमालायाः ॥
यदविधिना सूत्रोक्त न सम्यगिह लिखितम् । जैनेन्द्रमताभिज्ञैस्तच्छोध्य मर्षणीयं च ॥ छ ॥
उपदेशमालाविवरण समाप्तमिति ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्र सहस्र ९५०० ॥ मङ्गलमस्तु ॥ छ ॥
शोभाजनोऽर्जुनाभिख्यस्तुङ्गश्च प्रियकस्तथा । अहो ऊकेशवशोऽस्तितरां पृथ्वीतले कलिः ॥१॥
महीन्द्रः श्रावकस्तत्र मुक्ताकारत्वमाश्रयत् । उत्सङ्गालिङ्गन प्रापुः शङ्के निर्वृतियोषितः ॥२॥
चत्वारश्चतुराः पुत्राः पवित्रास्तस्य जज्ञिरे । विश्रान्तधर्मकारुण्यपल्यङ्कस्य पदा इव ॥३॥

प्रथमोऽभूत् कुलधरः सच्चतुर्विधधर्मभाक्। क्रोधारिघातुकेष्वद्धामोहारेरङ्गरक्षभृत् ॥४॥
द्वितीयो जेसलाख्योऽभूद् यस्य जन्म परार्थकृत्। नहि चन्दनवृक्षस्य स्वोपकाराय सौरभम् ॥५॥
नामभ्रान्त्येव यं कामो नादर्शच्चाश्रयद् वृषः। स कपर्दी तृतीयोऽभूत् परस्त्रिभुवनाऽभिधः ॥६॥
जिनागराख्याय दीक्षां श्रीजिनपतिसूरयः। कपर्दिने ददुर्बाढां मुक्तिपुर्यार्पने ध्रुवम् ॥७॥
शङ्के सज्जमभूपस्य मोहमुन्मूल्य तस्थुषः। बभौ पञ्चकुली तस्य पुरे पञ्चमहाव्रती ॥८॥
द्वितीया दुलही केषां भोजनामोदिकाऽभवत्। नो आयस्य शुभोजस्य कलाद्वन्द्वविभूषिता ॥९॥
एकस्तस्याऽम्बडाख्योऽभूत् पुत्रः शृङ्गवत् खड्गिन। यथा विद्या विनीतस्य गोमीनाम्नी च पुत्रिका ॥१०॥
शीलालङ्कारमाश्रित्य स्वर्णभूषोत्कर हृदि। मन्यते या शिलारूप शिव गोनमगीरिव ॥११॥
कल्याणकार्थं पञ्चाशद् द्रमी नाभिभुवे ददौ। लातु वृष मुक्तिपुर्यो गन्तुकामापणं ध्रुवम् ॥१२॥
जेसलस्याऽभवद् रत्नी वल्लभा या स्वमानमम्। यशोहसाभिजाषेव शोलक्षीराश्रित दधे ॥१३॥
तस्य पुत्रत्रयी वेदत्रयीवाऽत्र जगत्त्रयीम्। क्रमेण पवते धर्मरथचक्रत्रयीव या ॥१४॥
आद्यो विद्याविदां वर्ण्य आस्ते सोमटिनामकः। द्वितीयः कुलचन्द्राख्यः परो वोहडिसञ्ज्ञकः ॥१५॥

इतश्च—

वंशेऽस्मिन्नेव सजज्ञे धीदुकः श्रावकः सुधी। आसीन्नानधराख्योऽस्य तनयो विनयी नयी ॥१६॥
कूपरूपा रमे शान्ते दीपरूपा निजे कुले। नीपरूपा यशःपुष्पे गोर्मा तस्य प्रियाऽभवत् ॥१७॥
गुणयन्त्या नमस्कारानयाऽसौ पराजिता। इति शङ्के कर यस्या अक्षमाला निषेवते ॥१८॥

इतश्च—

कल्पलक्ष्मीविमुक्त न न कलङ्करवाश्रितम्। न श्यामामङ्गत भूम्यामास्ते चान्द्र कुल नवम् ॥१९॥
उद्गच्छन्ति स्म ते तत्र श्रीजिनपतिसूरयः। यत्कीर्तिरूर्ध्वगामिन्या वर्त्तिनीव सुरापगा ॥२०॥
ते तत्पट्टप्रकटका श्रीजिनेश्वरसूरयः। पुष्कर समलञ्चक्रे येषां कीर्तिमरालिका ॥२१॥
येषां रसमरस्वत्या सरस्वत्या जिताविव। इक्षुखण्डसुधासारौ वप्राजाश्रितौ स्थितौ ॥२२॥
गोमी सुश्राविका श्रद्धाबन्धुरा सा तदन्तिके। चकार दर्शनादृशा भूतिदानैर्मलोज्झितम् ॥२३॥
यातारममृतस्थानमितीवासौ मुदाऽन्यदा। तेषां कर्णकलशीया वचोऽमृतस्य श्रिता ॥२४॥
कल्पद्रुः समयो नृणा मरौ कालेऽत्र लेखनम्। तस्य हेतु श्रियो धर्मे केतुः सेतुर्भवार्णवे ॥२५॥
श्रुत्वेत्थं सा मनश्चक्रे सविना तस्य लेखने। उपाध्यायस्य हि प्राज्ञो न वचो द्विरपेक्षते ॥२६॥
श्रीकथारत्नकोशस्य सा पुस्तकमलेखयत्। तथोपदेशमालोरुवृत्तजग्राह मूल्यतः ॥२७॥
सिद्धान्तलेखने तस्या धर्मपुत्रमजीजनत्। भावनाढ्यति यौ यूपमुशलावुच्छ्रितौ ध्रुवम् ॥२८॥
श्रीजिनेश्वरसूरिभ्यो गुरुभ्यस्तत्पणेन सा। अक्रीणादिव महार्घ्ये ते रत्ने तत्त्वे विशारदा ॥२९॥
यावत्तारान् कपर्दान् हिमरुचिकितव पद्मिनीकान्तधूर्तः, प्रातर्जित्वा गृहीत्वांशुकमपि च करैः पद्मिनीषु प्रियासु।
दाता प्रोन्नीयतेऽसौ नवजयफलिकां तत्र वाराटकश्लोकालोकेन तावज्जगति विजयते पुस्तकद्वन्द्वमेतत् ॥३०॥
श्रीमत्सूरिजिनेश्वरपादाम्भोजेषु भृङ्गतां बिभ्रत्। शस्तां प्रशस्तिमेतां विरचितवानभयतिलकगणिः ॥३१॥छ॥

क्रमाङ्क २३१

भवभावनाप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र ३५०। **भा.** प्रा. ग.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** १३०००। **र. सं.** ११७०। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद्द** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १९॥×२॥। पत्र ११-१३, १५, ३३२ नथी.

अन्त—

श्रावणरविपक्षमीदिवसे ॥११॥ॐ॥ शुभं भवतु ॥ॐ॥

वंशः प्रांशुरसौ समस्ति भुवने शाखाभिरामद्युतिः, पात्रश्रेणिफलावलीढतनुना प्राप्तप्रभावो महान् ।
प्रोच्चैर्भूधरराजलब्धमहिमा श्रीमल्लताबेष्टितः, प्राग्वाटः प्रथितः सदा सुकविलापात्र पवित्रोदयः ॥१॥
तस्मिन्नस्ति समस्तविश्वविदितः सूक्तिप्रियः शारणिगो मुक्तारत्नमिवातिकोमलरुचिः श्राद्धः प्रसिद्धः सुधीः ।
स्वच्छत्वेन परेण यः स्वकजनेऽलङ्कारचूडामणित्वामोऽप्युज्ज्वलतां न च प्रचकटे छिद्रावलेपं पुनः ॥२॥
ब्रह्मदेव इति नाम विश्रुतस्तस्य सूनुरभवन्निरामयः । योऽश्वसाधनविराजितो भुवि, संचचाररूपदत्तविक्रमः ॥३॥
वीतरागपदपद्मरजोभिर्यो बभार किल देहपुंशनम् । भूषणं च शिरसो गुरोर्नतिः, शीलमेव परमं तनोः सदा ॥४॥
त्यक्त्वा प्रेमपरम्पराक्रमयशःप्रज्ञाभिमानोद्धतान्, राज्ञां श्रीः पुरुषान् सदाऽवगिरा पूतं विमृश्येव यम् ।
चापल्येऽस्थिरतां विधाय महमा शिश्राय हृष्टा सती, स्वच्छं धर्मरतं विवेककलितं सत्त्वोपकारक्षमम् ॥५॥
यथार्थनामिका तस्य बभूव श्रीरिति प्रिया । प्रसन्नवदना वश्या दाननोषितमार्गणा ॥ ६ ॥
गेहिण्या च तया रेजे ब्रह्मदेवोऽधिकाधिकम् । विद्युतेव नवांभोदः स्वाहयेव हुताशनः ॥ ७ ॥

तथा—

भोगास्तुङ्गगिरीन्द्ररोहविषमा लक्ष्म्योऽप्यसद्यौवनं, ज्ञात्वा मंटजिनेशमन्दिरवरे श्रीवीरदेवगृहम् ।
श्रीचक्रेश्वरसूरिसद्गुरुवचः श्रुत्वा च सत्पुस्तकं, वैराग्योपनिषद् धनैः प्रमुदितौ तौ कारयामासतुः ॥ ८ ॥
सुतमजनिषातां तावांबसरणनामकम् । पवित्रमक्षयं वृत्तमद्वितीयं कलानिधिम् ॥ ९ ॥
प्रामाध्यक्षपदं प्राप्य यः सदा नृपशासनात् । जनानुरागतामेव धत्ते विस्फारमानसः ॥१०॥
सरोवरस्येव जलं फलं पुण्यतरोरिव । यस्यैश्वर्यमभूत् केषां केषां नैव विभूतये ॥११॥
यः शश्वज्जिनपूजने कृतरतिः प्रायश्चिसन्ध्यं गुरौ, शुश्रूषानिरतः परोपकृतिषु स्वाध्यायबद्धादरः ।
श्रीमन्मंटजिनेशितुः प्रतिपदं यात्रासु कल्याणिके, भक्त्युत्साहमनाश्चकार नितरां द्रव्यव्ययं चाधिकम् ॥१२॥
यस्योदयमती कान्ता प्रथमा वल्लभाऽभवत् । यस्यामजायत सुतः पुण्यराशिरिवांगवान् ॥१३॥
जयतक इति नाम्ना विश्रुतश्चारुमूर्त्तिर्नृपतिजनपदानां चेतसो तृप्तिपूर्त्तिः ।
सकलगुणसमुद्रो दिक्षु विख्यातकीर्त्तिर्जिनचरणसरोजद्वद्वभावाद् गतार्त्तिः ॥१४॥
द्वितीयाऽपि द्वितीया स्याद् द्वितीयेव हि सेउका । कलामात्रोऽपि पूज्यः स्याद् जयाचंद्र इव प्रियः ॥१५॥
लक्ष्मसीह इति ख्यातः सुतः सर्वजनप्रियः । धर्मज्ञः सत्यवादी च बभूव प्रियदर्शनः ॥१६॥
अथांबशरणे स्वर्गं प्राप्ते स्वगृहमुत्तमम् । अवीवृधज्जयतको विनेश इव धीधनः ॥१७॥
मायूरातपवारणः परिचलच्चञ्चत्तुरंगास्पदः, सूक्ष्मक्षोमविभूषितोऽतिविलसन् ग्रैवेयकश्रेणिकः ।
यो वैतालिकवृदकोमलगिरा प्रस्तूयमानोऽनिशं, प्रौढप्रेमपदातिभिः परिवृतः स्वैरं चचार क्षमाम् ॥१८॥
तस्याभवत् प्रिये द्वे तु चांदु-सीदू मनोहरे । धर्मिष्ठे कुलजे दक्षे प्रियभाषणतत्परे ॥१९॥
वोसरिर्लिम्बचन्द्राख्य.......... ...स्तृतीयकः । पुत्री सज्जननामाऽस्ति सीतुकाया........ ...॥२०॥
ब्रह्मदेवाऽऽसचंद्राख्यकीकाहृवबालचन्द्रकाः । चांदुकाया इमे पुत्राः पूनसीहस्तु पञ्चमः ॥२१॥
आद्ययोः पुत्रयोः पत्न्यौ कुलजे रूपसयुते । हंसलाऽनुपमादेवी समभूतां मनोहरे ॥२२॥
भवे परपरस्याश्च तनयो जनवल्लभः । दृष्ट्वा धर्मफलं पुत्रे तत्परा सज्जनाऽप्यभूत् ॥२३॥

तथाहि—

उपधानतपश्चक्रं तदुद्यमनकं तथा । तीर्थेषु सघयात्रासु धनव्ययमचीकरत् ॥२४॥
उपद्रवविनष्टं च श्रुत्वा पुस्तकमादिमम् । ययोद्धृतं च पुण्याय जीर्णोद्धारे यथा महत् ॥२५॥

भवभावनायाः सत्क श्रिया यल्लिखित पुरा। पुस्तक सा तदुद्धारं कारयामास भक्तितः ॥२६॥
इतश्च बृहद्गच्छेऽस्मिन् सर्वदेवाख्यसूरयः। शालिभद्रास्ततोऽपि स्युर्वर्द्धमानास्तु सूरयः ॥२७॥
यः सिद्धान्तसमुद्रतो मणिमिव स्वीकृत्य सार सुधीर्नानार्थप्रभृतिप्रबंधघटनामासूत्र्य तद्वैभवम्।
क्षुद्रक्षुद्रधियामपि प्रतिपद दत्ते स्म कीर्तिप्रिय, श्रीचक्रेश्वरसूरिरभवत्तत्रचारित्रचूडामणिः (?) ॥२८॥
ततोऽपि परमानन्दसूरयः प्रथितौजस। यद्वक्त्रशैलात् प्राभूद् वज्रस्वामिकथानदी ॥२९॥
तदनु निरुपमश्रीः श्रीयशःसूरिवर्यो, विबुधहृदयहारी वीरसूरिस्ततोऽपि।
समजनि जयसिंहाचार्यपर्यस्तपापः, सुविहितजिनदत्ताचार्यवर्यस्ततश्च ॥३०॥
श्रीपद्मचन्द्रमुख्यान् सुप्रसन्नमनास्ततः। अवीवदच्चतुर्दिक्षु सुयशोडिंडिम गुणैः ॥३१॥
श्रीपद्मचन्द्रमुनिपतिपट्टपूर्वाद्रिदिनपतिसमानः। जयति जयदेवसूरिर्भव्यांभोजप्रबोधनः ॥३२॥
क्रमागतगुरूणां सा क्रमसेवापरायणा। उपदेशामृत चेय कणाजलिपुटैः पपौ ॥३३॥

तथा च—

पीठक फलक शय्या वस्त्र पात्र च कम्बलम्। पुस्तक चान्नपान च दत्त स्याच्छ्रेयसेतराम् ॥३४॥
इत्थ वचश्चेतसि सज्जनाऽसौ, वाचयमानां बहुधा विचाय।
तद्द्धृतं पुस्तकमद्वितीय, ददौ गुरुभ्यः कृतसाधुपूजना ॥३५॥
युगमुनिरविसख्ये १२७४ वर्षे विक्रमतो गते। मत्पत्रपाठकाद्वत्य समुद्धार. शुभाक्षरैः ॥३६॥
शेषो निश्शेषमेष क्षितिभरमतुल सवहन् यावदास्ते, यावन्मेरुर्नभेरुद्रुमकलितितल स्वर्गिणां सन्निवासः।
चन्द्रार्कौ यावदेतौ निबिडतमतमोध्वमहेतू चकास्तस्तावन्नयान्मुनीशैः मुनिपुणधिषणैः पुस्तकः पठयमानः ॥३७॥
लिखित रामदेवेन ॥ शुभ भवतु ॥

क्रमाङ्क २३२

भवभावनाप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र ३८६। भा प्रा ग। क मलधारी हेमचन्द्रसूरि स्वोपज्ञ। र. सं ११७०। ग्रं. १३०००। ले सं. १२८०। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ३०॥×२१.।

अन्त—

आसीन्मेडतकस्थाने बोधित्थः श्रावको धर्मा। पाहिका नाम तद्भार्या शीलादिगुणसयुता ॥१॥
सौवर्णिकः प्रसिद्धोऽत्र समायातः सुतस्तयो.। सामनामाऽन्यनामा तु साधारणसमाह्वयः ॥२॥
सोहिणिनाम्नी भार्या पुत्रो लक्ष्मीधरोऽस्ति तस्येह। छत्रापल्ल्यां च तथा वीरश्रेष्ठ्यन्वसम्भूतः ॥३॥
श्रेष्ठी यशोदेव इति प्रसिद्धो गेहे तयोर्वृत्तिरिय समग्रा।
स्थितगृहे वेल्लकनामकस्य श्रेष्ठेस्तथा वीरकनन्दनस्य ॥४॥
निष्पादिताऽस्माभिरतोऽप्यमीषां निःशेषकाणामपि मुक्तिहेतुः।
सम्पद्यतां शीघ्रमसौ सहायकर्माश्रितानामपराङ्गिनां च ॥५॥छ॥
अत्र प्रत्यक्षरगणनया प्रथाग्र १३००० ॥छ॥छ॥छ॥

प्रथमा प्रशस्ति—

आसीह थंभणच्छे पद्मउरे अम्मसायवरसेट्ठी। अइहवदेवी भज्जा ताणुप्पन्ना सुया तिन्नि ॥१॥
सज्जण-केल्हण-पासुयनामाणो तह धूया य चत्तारि। नन्नी लड्डी देवी फूदी नामा य अणुकमसो ॥२॥

इतश्च -

वासप्पयम्मि गामे सड्ढो बालप्पसायनामो त्ति। जयसिरिभिहाण कन्ना ताण सुओ अम्मओ नाम ॥३॥
तस्स य जाया जाया नन्नीनामा विसुद्धवरसीला। पसवइ कमेण वीसल-जयतीनाम च सुय-धूयं ॥४॥
वीसलमहिला पउमी आणदो नाम नाण अगरुहो। तवचरणकरणनिरया एव ठिए चिंतए नन्नी ॥५॥
अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः। नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसङ्ग्रहः ॥६॥
इय चिंतिऊण तीए संवेगकरी लिहाविया रम्मा। भवभावणा य एसा भवदुक्खनिवारिणी निच्च ॥७॥
सुन्नसमुद्दाइच्चे १२४० गयम्मि कालम्मि विक्कमनिवाओ। वक्खाणिय च पंद्र भवणे सिरिरिसहनाहस्स ॥८॥
सिरिदेवसूरिमुणिवइविणेयमुणिचंदसूरिनामेहिं। सिरिवीरसूरिपयम्मठिएहिं भव्वाण बोहत्थं ॥९॥
वसुसायरआइच्चे १२४८ गयम्मि कालम्मि दुइयवेलाए। तह कालसराइच्चे १२५३ वखाणिय तइयवेलाए ॥१०॥
जाव य जिणिंदवयण भव्वाण मणम्मि कुणइ परिओस। ताव य नदउ एय भवभावणपुत्थय पवर ॥११॥

द्वितीया प्रशस्ति—

सच्छायः सरलः ममुन्नतिधर शाखाभिरापूरितो भूभृल्लब्धपदः सुपर्वनिचितः सद्धर्मकमक्षम ।
सद्वृत्तोचिततास्पद सुमनसामापत्ररम्याकृतिर्वंशो वश इवोत्तमोऽस्ति जगति श्रभिल्लमालाह्वयः ॥१॥
आम्बप्रसाद इति तत्र वणिक् प्रधान पद्राभिधे समजनिष्ट .....कीर्त्तिः।
तस्य प्रियाऽविधवदेव्यनघा बभूव श्रेयोमतिर्गजगतिर्वसतिर्गुणानाम् ॥२॥
गुणत्रयं च कृतिवत् सृष्टिवद् भुवनत्रयम् । रत्नत्रय क्षमावच्च सा सुषुवे सुतत्रयम् ॥३॥
तत्राद्यः सज्जनाह्वानः सज्जनाम्भोजभास्करः। गाम्भीर्यस्थैर्यधैर्यादिगुणरत्नमहोदधिः ॥४॥
कौशल्य हृदि पौरुष भुजयुगे दानप्रसङ्गः करे, मत्या वाग् वदने गुरोर्गुणनुतिः कण्ठे मतिर्मस्तके।
आस्ते यस्य विनाऽपि काञ्चनमहो! स्वाभाविकं भूषणं, सोऽय केल्हण इत्युदारचरितो जातो द्वितीयः सुतः ॥५॥
विशालवशः करुणाभिरामः, सश्रीफलः सत्तिलकः सुजातिः।
आरामभूभागसमस्तृतीयो, विराजते पासुकनामधेयः ॥६॥
नीतय इव शस्यतरा बुद्धय इव सर्वकामदायिन्यः। नानी लाडी देदी फूदी पुत्र्यश्चतस्रश्च ॥७॥

इतश्च --

श्रेष्ठी बालप्रसादाख्योऽभूद् ग्रामे वासपाभिधे। जयश्रीनाम तद्भार्या तयोः पुत्रौ बभूवतु ॥८॥
ज्येष्ठः सच्चेष्ठ आमाको द्वितीय आसकाभिधः। आमाकस्य प्रिया जज्ञे नानी धर्मप्रिया सुधीः ॥९॥
वीसलाख्यः सुतस्तस्याः पुत्री मूर्त्तिमती रमा। जयतीति गुणैराढ्या शीलालङ्कारशालिनी ॥१०॥
वीसलस्य प्रिया पद्मी पुत्रश्च गुणमन्दिरम्। बालोऽप्यबालचरित आनन्दाख्यो जनप्रियः ॥११॥
नानी नित्य तपोदानशीलसद्भावनामयम्। धर्म चतुर्विध चक्रे विजितेन्द्रियमानसा ॥१२॥
विज्ञाय धनमनित्य तप उद्यापनानि च। तीर्थयात्रा मुकुटे तु पद्रे नाभेय-नेमिनोः॥१३॥ युग्मम ॥
ज्ञानफलमतिश्रेष्ठ श्रुत्वा सद्गुरुसन्निधौ। अलेखयदिमां भव्यचमत्कृद्भवभावनाम् ॥१४॥

इतश्च—

श्रीमान् ब्रह्माणगच्छेऽस्ति चन्द्रशाखासमुद्भवः। रोहणाद्रिरिवात्युच्चैः साधुरत्नविभूषितः ॥१५॥
तत्राभवन् गुणैः ख्याताः श्रीदेवचन्द्रसूरयः। तत्पट्टश्रीललामानो जाताः श्रीवीरसूरयः ॥१६॥
तदनु विदिततत्त्वः पालिताशेषसत्त्वः कुमतकुमुदसूर्यः पञ्चधाचारधुर्यः।
परहितरतचित्तः साधुधर्मैकचित्तः समजनि मुनिचन्द्रः सूरिरत्न मुनीन्द्रः ॥१७॥

तैः शून्याब्धिरवौ १२४० वर्षे सञ्जाते विक्रमादिदम्। व्याख्यात पुस्तक पद्मग्रामे नाभेयमन्दिरे ॥१८॥
तच्छिष्यवाचनाचार्याभयकुमारसञ्ज्ञिना । व्याख्यायि वसुसिन्ध्वर्के १२४८ वर्षे द्वितीयवेलया ॥१९॥
[तथा कालशरा]दित्ये वर्षे तृतीयवेलया । व्याख्यात श्रेयसे स्वस्य त्रिर्नानीदमवीवचत् ॥२०॥
व्याख्यापितं जयत्या गत्वेः तिमिरपाटके तुर्याम् । वेलां बाणरसार्के १२६५ वर्षे नान्याः सुकृतहेतोः ॥२१॥
पंडितनेमिकुमारो नभोदस्वर्कवत्सरे १२८० । व्याचख्यौ पञ्चमी वेलामिद परमवीवचत् ॥२२॥
जयती स्वकुलाम्भोजहसी भक्तिमती गुरौ । आत्मनः श्रेयसे पद्र समेत्य देवपत्तनात् ॥२३॥ युग्मम् ॥
पण्डिताभयकुमारगणये पुस्तक ददे । वाचनार्थं जयत्येद स्वमात्रोः पुण्यवृद्धये ॥२४॥
भानुर्भाभिर्भुवनवलय यावदिद्धं विधत्ते, चन्द्रो यावत् कुमुदकलिकां बोधयत्यंशुभिस्तु ।
यावज्जैन वचनममल भव्यचेतः प्रमार्ष्टि, तावन्नन्द्यात् सुमतिभिरिदं पुस्तक वाच्यमानम् ॥२५॥
शुभमस्तु ॥ छ ॥ ॐ ॥ छ ॥

क्रमाङ्क २३३

भवभावनाप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र ३८५ । **भा.** प्रा. स । **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि स्वोपज्ञ । **ग्रं.** १३००० । **र. सं.** ११७० । **ले. सं.** १२६० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०×२॥ ।
आदिनां दस पानांना टूकडा छे, तथा पत्र ३३९ नो टुकडो नथी ।

अन्त—

श्रावणरविपञ्चमीदिवसे ॥१५॥छ॥ ग्रथाग्र ॥ १३१०० ॥ ॐ ॥छ॥

सवत् १२६० वर्षे श्रावण सुदि १४ गुरावद्येह श्रीमदणहिलपाटके महाराजाधिराजभीमदेवकल्याण-विजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि महामात्य राण० श्रीचाचाकः श्रीश्रीकरणादिसमस्तमुद्राव्यापारान् परिपथयतीत्येव काले प्रवर्त्तमाने रुद्रपल्लीयश्री...... देवसूर्यादेशेन भवभावनावृत्तिपुस्तकं विषयपथके कांसाग्रामवास्त० लेख० मोहडउत्रमहिपालेन भव्याक्षरैः शुद्धाक्षरैश्च लिखितमिति ॥छ॥ शुभ भवतु ॥

क्रमाङ्क २३४

धर्मरत्नप्रकरण बृहद्वृत्तिसहित त्रूटक अपूर्ण २९४ । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** शांतिसूरि । **वृ. क.** देवेन्द्रसूरि । **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी । **संह.** जीर्णप्राय । **द.** मध्यम । **लं. प.** ३२॥×२. ।
आ प्रतिनां लगभग अर्धा जेटलां पानां नष्ट थइ गयां छे ।

क्रमाङ्क २३५

संवेगरंगशाला पत्र ३४८ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनचन्द्रसूरि । **गा.** १००५३ । **र. सं.** ११२५ । **ले. सं.** १२०७ । **संह** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प** ३०×२।

अन्त—

एवमिमेह समप्पइ सपइ संवेगरगसाल त्ति । आराहणा इयाणि तस्सेस किं पि जंपेमि ॥
आसि उसभाइयाणं तित्थयराणं अपच्छिमो भयव । तेलोक्कपहियकित्ती चउवीसइमो जिणवरिंदो ॥
दित्ततरगरिउवग्गगजणज्जियजहुत्तवीरत्थो । तेलोक्करगमज्झे अतुल्लमल्लो महावीरो ।
लीलालल्लणसुहम्मो सजमलच्छीए तस्स य सुहम्मो । सीसो तत्तो जंबू गुणिजणसउणीण वरजबू ॥
णाणाइगुणप्पभवो तत्तो य अभू महापभू पभवो । तयणंतरं अभयव आसी सेज्जभवो भयवं ॥
अह तस्स महापहुणो मूलाओ चेव न हु जडाणुगए । न जहुत्तरं तणुतरे परिमियपव्वे चिय न चेव ॥३०॥

सव्वंग सारे च्चिय न अप्पवोच्छेयदच्छतुच्छफले। पत्तमासाडरहिए समंतओ निव्वसच्छाए ॥
न य अन्नेसिं मम्मे अकंटए निरवसाणवुड्ढिगुणे। तुगमहीधरमुद्धाणुगे वि भुवि पावियपइट्ठो ॥
अच्चत सरले च्चिय अपुव्ववसम्मि परिवहतम्मि। जातो य वइरसामी महापभू परमपयगामी ॥
तस्साहाए निम्मलजसधवलो सिद्धिकामलोयाण। सविसेसवदणिज्जो य रोयणा थोरथवगो व्व ॥
कालेणं संभूओ भयवं सिरिवद्धमाणमुणिवसभो। निप्पडिमपसमलच्छीविच्छड्डाखडभडारो ॥
ववहारनिच्छयनय व्व दव्वभावत्थय व्व धम्मस्स। परमुन्नइजणगा तस्स दोण्णि सिस्सा समुप्पण्णा ॥
पढमो सिरिसूरिजिणेसरो त्ति सूरे व्व अम्मि उइयम्मि। होत्था पहावहारो दूरं तेयस्सिचक्कस्स ॥
अज्ज वि य जस्स हरहासहंसगोर गुणाण पब्भार। सुमरता भव्वा उव्वहति रोमंचमंगेसु ॥
बीओ उण विरइयनिउणपवरवागरणपमुहबहुसत्थो। नामेण बुद्धिसागरसूरि त्ति अहेसि जयपयडो ॥
तेसि पयपकउच्छगसगसपत्तपरममाहप्पो। सिस्सो पढमो जिणचदसूरिनामो समुप्पन्नो ॥४०॥
अन्नो य पुन्निमाससहरो व्व निव्ववियभव्वकुमुयवणो। सिरिअभयदेवसूरि त्ति पत्तकित्ती पर भुवणे ॥
जेण कुबोहमहारिउविहम्ममाणस्स नरवइस्सेव। सुयधम्मस्स दढत्त निव्वत्तियमंगवित्तीहिं ॥
तस्सऽब्भत्थणवसओ सिरिजिणचदेण मुणिवरेण इमा। मालागारेण व उच्चिणित्तु वरवयणकुसुमाइं ॥
मूलसुयकाणणाओ गुथित्ता नियमइगुणेण दढ। विविहत्थसोरभभरा निम्मवियाऽऽराहणामाला ॥
एयं च समणमहुयरहियियर अत्तणो सुहनिमित्त। सव्वायरेण भव्वा विलासिणो इव निसेवतु ॥
एसा य सुगुणमुणिजणपयप्पणामप्पवित्तभालस्स। सुपसिद्धसेट्ठिगोद्धणसुयविस्सुयजज्जणागस्स ॥
अंगुब्भवाण सुपसत्थतित्थजत्ताविहाणपयडाण। निप्पडिमगुणज्जियकुमुयसच्छहातुच्छकित्तीण ॥
जिणबिबपइट्ठावणसुयलेहणपमुहधम्मकिच्चेहिं। अनुक्कामगदुक्कुहचित्तचमक्कारकारीण ॥
जिणमयभावियबुद्धीण सिद्धवीराभिहाणमेत्तीण। माहेज्जेण परमेण आयरेण च निम्मविया ॥
एईए विरयणेण य जमज्जिय किं पि कुसलमम्हेहिं। पावितु तेण भव्वा जिणवयणाराहण परम ॥५०॥
छत्तावल्लिपुरीए जज्जयसुयपासणागभवणम्मि। विक्कमनिवकालाओ समइक्कतेसु वरिसाण ॥
एक्कारससु सएसु पणुवीसासमहिएसु निप्फत्ति। सपत्ता एसाऽऽराहण त्ति फुडपायडपयत्था ॥
लिहिया य इमा पढमम्मि पोत्थए विणयनयपहाणेण। सिस्सेणमसेसगुणालएण जिणदत्तगणिण त्ति ॥छ॥
तेवण्णब्भहियाइं गाहाण इत्थ दस सहस्साइ। सव्वग्ग ठविय निच्छिऊण सम्मोहमहणत्थ ॥छ॥ ॐ ॥छ॥

अकतोपि ॥ छ ॥ सर्वाग्र गाथा १००५३ ॥ छ ॥। इति श्रीजिनचद्रसूरिकृता तद्विनेयश्रीप्रसन्नचंद्राचार्यसमभ्यर्थितगुणचद्रगणिप्रतिसस्कृता जिनवल्लभगणिना च सशोधिता संवेगरगशालाभिधानाराधना समाप्ता ॥ छ ॥ ॐ ॥ छ॥ मंगल महाश्रीः ॥५०॥ सवत् १२०७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १४ गुरौ अद्येह श्रीवटपद्रके दड० श्रीवोसरिप्रतिपत्तौ संवेगरगशालापुस्तक लिखितमिति ॥छ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥छ॥

५० ॥ जन्मदिनचरणभाराक्रान्तशिरःसुरगिरेरिवाम्नन। रुक्मरुचिसचयेन स्फुरत्तनुर्जयति जिनवीरः ॥१॥
सद्राजहंसचक्रक्रोडाक्रमवति विलासिदलकमले। श्रीमदणहिलपाटकनगरे सरसीव कृतवासः ॥२॥

श्रीभिल्लमालगुरुगोत्रसमुद्भूति यश्चकंऽभिरामगुणसम्पदुपेतमूर्तिः ।
ताराधिनाथकमनीययशाः स धीरः श्रीआंबवानिति मतो भुवि ठक्कुरोऽभूत् ॥३॥

भद्रः प्रकृत्यैव यथाम्यनागः सदाऽभवत् सत्कृतवीतरागः ।
कटप्रविस्तारितभूरिदानस्तन्नन्दनः ठक्कुरवर्धमानः ॥४॥

तस्य चाजनि सत्पत्नी नवीनाथप्रियागमा । यशोदेवीति गगेव सुमनोहरचेष्टिता ॥५॥

पुत्रः प्रेयानेतयोश्चन्द्रतुल्यो जज्ञे शश्वत्कौमुदाप्यानहेतुः ।
प्राप्तः स्फातिं हृदये वेबुधानामीशश्लाघ्यः ठक्कुरः पार्श्वनामा ॥६॥
यत्कारित वीरजिनेन्द्रसद्म चतुर्मुखं भाति कुमारपल्ल्याम् ।
छत्रं कनत्कांचनकुंभमुच्चैः शृंगं हिमाद्रेर्ज्वलदोषधीव ॥ ७ ॥
सत्पादजंघिकात्रिकमध्यसुखाभरणबहुविधविलासम् । यच्छालिभजिकागणमुद्वहति स्वमिव सुशिरस्कम् ॥ ८ ॥
निःसपत्नाऽभवत् पत्नी तस्य शस्यचरित्रभूः । गौरीव गिरिशालीना धंधिका बन्धुवत्सला ॥ ९ ॥
पुत्राः पंचाजनिषुरनयोर्लोकपालायमाना मानम्लानिप्रथनपटवः क्षुद्रजिह्वाल्तानाम् ।
सर्वेशार्चामुनिवितरणन्यायसंस्थापनोत्था कीर्त्तिर्येषां विचरति शरच्चन्द्रकुन्दावदाता ॥ १० ॥
महत्तमो नन्नुक एषु पूर्वजो द्वितीयकः ठक्कुरलक्ष्मणः सुधीः ।
वञ्जीव नासत्यकृतप्रतिष्ठितिस्तृतीय आनन्दमहत्तमः कृती ॥ ११ ॥
वाणी यस्य प्रसरति रसात् सोदरी शर्करायाः चेतोवृत्तिर्विलसति तुलां कल्पयन्ती सुधायाः ।
सत्कर्पूरांजनमिव लसच्चेष्टित शिष्टदृष्टीः पुष्टिं नित्य नयति यदि वा सुन्दर किं न यस्य ॥ १२ ॥
धनपालनागदेवौ ठक्कुरौ तुर्यपचमौ । श्रियादेवी च सत्पुत्री जातैका शीलशालिनी ॥ १३ ॥
एतेष्वानदमहत्तमस्य पत्न्यौ क्रमादभूतां द्वे । धृतशस्यशीलसंपत् पूर्वा वसुधेव विजयमतिः ॥ १४ ॥
इतश्च—
भिल्लमालकुलव्योमसोमः श्रावकसोहिकः । ज्योत्स्नेव लक्खुका तस्य पत्नी सन्नीतिभूरभूत् ॥ १५ ॥
गुरूत्तरः सौम्यकान्तिश्छड्ड्कस्तनयस्तयोः । मतिबुद्धिसमे जाते राजिनीसीलुके सुते ॥ १६ ॥
तत्रोपयेमे विधिवद् विनीतामानन्दमन्त्री किल राजिनी ताम् ।
पतिव्रतां यां प्रविलोक्य लोकाः स्मरति शीतादिमहासतीनाम् ॥ १७ ॥
अजनि सचिवाऽऽनन्दस्यांगोद्भवो भुवि ठक्कुरः शरणिग इति ख्यातो नाम्ना महीशपुरस्कृतः ।
विजयमतितस्त्रासापेतः स रोहणमद्रिरेर्मणिरिव खनेर्यस्तेजस्वी स्वगोत्रविभूषणः ॥ १८ ॥
सोदरा भगिनी चास्य शांताऽपीष्टसतीव्रता । सदुत्तराऽपि सर्वेषां दक्षिणा धांउकाभिधा ॥ १९ ॥
राजिन्यथांगजमसूत वराकलंक पूर्णप्रसादकृतनामकमिष्टबधुम् ।
भ्रातुः प्रिय शरणिगस्य नमस्यनम्रा रामस्य लक्ष्मणमिव प्रसरत्सुमित्रम् ॥ २० ॥
तनया पूर्णदेवी च तस्याः समुदपद्यत । नदांभःस्थाननिरता हसीव मृदुवादिनी ॥ २१ ॥
अथान्यदाऽऽनन्दमहत्तमोऽसौ शुश्राव सम्यग् गुरुसन्निधाने ।
धर्मं श्रुतज्ञानचरित्ररूपं मोक्षार्थिसपादितमोक्षमुच्चैः ॥ २२ ॥
तत्रापि विज्ञानविनाकृतायाः साफल्यमाहुर्न जिनाः क्रियायाः ।
तद्दानमादावत एव सर्वदानेषु शसति पठन्ति चैवम् ॥ २३ ॥
ये ज्ञानदानमपर परिपाठय यद्वा सत्पुस्तकादि च विलेख्य समाचरति ।
ते नष्टमोहतिमिराः किल केवलेन सम्यग् विलोक्य भुवन विभवा भवन्ति ॥ २४ ॥
न ते नरा दुर्गतिमाप्नुवन्ति न चान्धतां बुद्धिविहीनतां च ।
न मूकतां नैव जडस्वभावं ये लेखयन्तीह जिनस्य वाक्यम् ॥ २५ ॥
श्रुत्वेदमिमां संवेगरंगशालामलीलिखद् रम्याम् । निजपत्न्या राजिन्याः पुण्याय महत्तमाऽऽनन्दः ॥ २६ ॥
प्रासादः सिद्धिरर्हन् नृपतिरनुपमा तत्प्रिया ज्ञानलक्ष्मी-
र्नीतिः सिद्धांतगीः श्रीव्ययकरणसमौ साधुसद्वास्थधर्मौ ।

कारा धर्मादिरावीनविषु गुणिषु तु स्वःशिवश्रीनियोगः
साम्राज्य यावदित्थ प्रतपतु भुवने पुस्तकस्तावदेषः ॥ २७ ॥
॥ मगल महाश्रीः ॥ छ ॥

क्रमाङ्क २३६

धर्मविधिप्रकरण पत्र १८६। **भा.** प्रा.। **क.** नन्नसूरि। **ग्रं.** ६९५०। **र. सं.** ११९०।
ले. सं. ११९०। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८॥×२॥.

आदि— ॥ नमो जैनागमाय ॥

विज्जाहरनरकिन्नरदणुवइसिरमउडघट्टपयवीढ। सिरिवच्छछकियवच्छं पणमामि जिणेसर रिसहं ॥१॥
निद्दलियअट्ठकम्म अट्ठमहापाडिहेरकयसोह। अट्ठदसदोसरहियं थुणामि देव महावीर ॥२॥
बावीस तित्थयरे सम्म परिमलियरायमयणोहे। वदामि अह निच्च ससारसमुद्दवरपोए ॥३॥
गोयमगणहरपमुहे पयडजसे सयलभुवणविक्खाए। सुयसागरपारगए नमिउ सेसे वि कइवसहे ॥४॥
कमलदलदीहनयण कमलमुहीं कमलगब्भसमकंर्ति। कमलकियकरचरण नमिउ वागीसरिं देविं ॥५॥
वोच्छमह धम्मविहि समत्थसत्थाण उद्धरेऊण। सुविचारसारदिट्ठतनिवहजहलिहियअत्थेहिं ॥६॥
दाणेण य १ सीलेण २ तवेण ३ तह चेव भावणाए य ४। जिणपूयाए ५ य तहा दसणसुद्धी हवइ जम्हा ॥७॥
सावज्जवयणपरिवज्जणम्मि जीवाण सोक्खहेउम्मि ६। जिणपन्नत्तो धम्मो होइ इमो मोक्खफलजणओ ॥८॥
परपीडकारयम्मि वि कज्जे हासेण वज्जिए धम्मो ७। चेइयदव्वस्स तहा परिरक्खण ८ वुड्ढिकरणे य ९॥९॥
विसयपमायस्स तहा चाइम्मि य १० एत्थ दस य दिट्ठता। मंगलकलसाईया जहक्कम चेव नायव्वा ॥१०॥छ॥

अन्त—

दाणाइयम्मि धम्मे मंगलकलसाइणो य दिट्ठता। विविहफलमाहगा इह भणिया तह मोक्खहेउ त्ति ॥
नाणाविहगंथेसु विभिन्नसम्बन्धबद्धअत्थेसु। जह लिहिया चेव इमे सुपसिद्धा एत्थ गंथम्मि ॥
दिट्ठताण परोप्परसंबधा मेलिऊण मुहबोहा। भवियजणबोहणत्थ सुसचिया नन्नसूरीहिं ॥
धम्मविहिपगरणमिम विसोहग नाणदसणगुणाण। दसदिट्ठतेहिं जुय सम्मत्त देउ सिवसोक्ख ॥ छ ॥
एक्कारसनउएहिं ११९० [विक्कमनिवकालओ अईयम्मि।] कत्तियपडिवइयाए निप्फन्न पगरण एय ॥ छ ॥

उयहिकुलगिरिंदा सूरदेविंदचदा धरणियलममाण जाव धम्मो जिणाण।
मुणिवरनियरेहिं ताव वक्खायमाणं वरपगरणमेय.................. ॥

[धम्मविहिपगरण] सम्मत्त ॥ छ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्र ६९५० ॥ छ ॥ सम्वत् ११९० पोष वदि ३ शुक्रे ॥
नहगहरुद्दकजुए ११९० काले सिरिविक्कमस्स वट्टंते। पोसासियतइयाए लिहियमिण सुक्कवारम्मि ॥ छ ॥
कीर्त्या कुन्दसमत्विषा धवलिते विश्वत्रय...त्वया, तस्मान्नाथ ममापि पापतिमिर निर्मूलमुन्मूलय।
इत्युच्चैः कथयन्ति कुन्तलसटाव्याजेन भृङ्गाङ्गनाः, कर्णान्ते कलधौतचम्पकरुचि त नाभिसूनु स्तुवे ॥१॥
मिथ्यात्वांबुधिमज्जमानभविनां निश्छिद्रपोतायते, दुष्टाष्टाशुभकर्मकुञ्जरघटाव्यापादने केसरी ॥
यस्याद्यापि सुतीर्थमत्र विमल क्लेशापह वर्त्तते, स श्रीवीरजिनेश्वरो भवभय छिन्द्यादर देहिनाम् ॥२॥
सद्वृत्तः सरलः सुवर्णमहिमः पर्वाभिरामः सदा, सच्छायः सफलो मनोहरगिरिप्राप्तप्रतिष्ठोदयः।
धर्मार्थः परपत्रवान् गुरुतरः संराजते वंशवद्, वंशो हुंबटसञ्ज्ञकः स्फुटतर ख्यातो धरित्रीतले ॥३॥
अस्मिन् वंशे समुत्पन्नः श्रेष्ठी श्रेष्ठगुणालयः। सुधामा धामनामेति पुरा सद्गुरुसेवक. ॥४॥

सोहिणिर्नामतः ख्याता भार्या तस्य वरानना। तयोः पुत्रास्त्रयो जाता दातारो लोकवल्लभाः ॥५॥
प्रथम आमणागाख्यो द्वितीयो बाहडस्तथा। तृतीय आम्रदत्ताह्वस्ततः पुत्र्यौ सुलोचने ॥६॥
प्रथमा मुञ्जला नाम्ना सीतासञ्ज्ञा द्वितीयका। तत्राऽऽम्रदत्तसत्पत्नी सुधवा नाम विश्रुता ॥७॥
त्रयः पुत्राः समुद्भूताः सज्जनानन्ददायकाः। ताभ्यां धर्मार्थकामानां प्रत्यक्षा इव मूर्त्तयः ॥८॥
अग्रज आसदेवाख्यः सर्वदेवो द्वितीयकः। पार्श्वदत्तस्तृतीयश्च तेषां भगन्यः शुभाशयाः ॥९॥
प्रथमा केल्हिका नाम्ना द्वितीया च सलक्षणा। सरस्वती तृतीया च आमीसञ्ज्ञा चतुर्थिका ॥१०॥
कलत्रमासदेवस्य पद्मी सुकुलसम्भवा। सर्वदेवस्य सद्भार्या रली रमणभूषिता ॥११॥
सा पुनः श्रेष्ठिनः पुत्री सिद्धस्य क्षमया युता। राजुकया धृता कुक्षौ विज्ञातव्या पितुर्गृहे ॥१२॥
श्रियादेव्यभिधानेन केतकीव विराजते। दधाना शीलसौरभ्यं गुणालीनां तु याऽनिशम् ॥१३॥
गृहिणी पार्श्वदत्तस्य लक्ष्मीर्लक्षणलक्षिता। सर्वदेवस्य रत्न्याश्च पुत्राः पञ्च सबुद्धयः ॥१४॥
आद्यो यशोधवलाख्यो जेसलश्च द्वितीयकः। तृतीयः साभटाख्यश्च आम्रेश्वरश्चतुर्थकः ॥१५॥
पञ्चमो नागदेवश्च तेषां भगन्यः मुनिर्मलाः। चतस्रो गुणसम्पूर्णा नामतः कथ्यतेऽधुना ॥१६॥
सम्पूर्णा प्रथमा ज्ञेया चाहिणिश्च द्वितीयका। राणूस्तृतीयका जज्ञे लाखूनाम्नी चतुर्थिका ॥१७॥
केसवस्य यथाऽभीष्टा कमलेन्दुमुखी तथा। सलक्षणाऽभिधा जाता जेसलस्य प्रियाऽवरा ॥१८॥
साभडस्यापि सजज्ञे गृहिणी सज्जनिस्तथा। यशोराजाह्वकः पुत्रो जेसलयाऽजनि प्रियः ॥१९॥
जेसलसाभडाह्वानौ श्रुत्वा ज्ञानस्य देशनाम्। गुरुप्ररूपितां हृद्यां ज्ञानदानं शिवप्रदम् ॥२०॥
सज्ज्ञानाज्जायते सर्वा कृत्याऽकृत्यविचारणा। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन ज्ञाने यत्नो विधीयताम् ॥२१॥
ज्ञात्वेदमलीलिखतां सद्वर्णैर्वरपत्रकम्। श्रेयसे मातृपित्रोस्तौ धर्मविधेः सत्पुस्तकम् ॥२२॥

उक्तं च—

ते धन्या धनिनस्त एव भुवने ते कीर्त्तिपात्रं परं, तेषां जन्म कृतार्थमर्थनिवहं ते चाऽऽवहन्त्वन्वहम्।
ते जीवन्तु चिरं नराः सुचरिता जैनं शुभं शासनं, ये मज्जद्गुरुदुःषमांबुधिपयस्यभ्युद्धरन्ति स्थिराः ॥२३॥
किं किं तैर्न कृतं न किं विढपितं दानं प्रदत्तं न किं, का वाऽऽपन्न निवारिता तनुमतां मोहार्णवे मज्जताम्।
नो पुण्यं किमुपार्जितं किमु यशस्तारं न विस्तारितं, सत्कल्याणकलापकारणमिदं यैः शासनं लेखितम् ॥२४॥

इतश्च—

चन्द्रवच्चन्द्रगच्छोऽयं तमोभीतो गवालयः। साधूनामुदयाभीष्टोऽस्मिन् लोके विराजते ॥२५॥
सूरयो वर्द्धमानाख्या वर्द्धमाना इवाऽभवन्। गच्छे चन्द्राभिधे तस्मिन् मङ्गल्या भक्तिपूरिताः ॥२६॥
तद्विनेयो देवसूरिः सजज्ञे देवसूरिवत्। विबुधैः सस्तुतो वन्द्यो विद्यया निरवद्यया ॥२७॥
गेहं रूपस्य तच्छिष्या बभूवुर्हेमसूरयः। कामो दृष्ट्वाऽऽत्मसं...दग् तत्याज लज्जयेव तान् ॥२८॥
नाम्ना सूरिर्यशश्चन्द्रो जातस्तत्पट्टभूषणः। ....वैरिणम् ॥२९॥
सूरयस्तस्य चिद्रूपाः श्रीमुनिचन्द्रसञ्ज्ञकाः। सरस्वत्या निजा विद्या मन्ये तेषां समर्पिता ॥३०॥

यतः—

नित्यं व्याकरणे कृतोद्यमवशाः काव्येषु शास्त्रेषु च, दक्षाश्छंदसि ज्योतिषे पटुधियस्तर्के वितर्काः सदा।
काव्यालङ्करणे रताश्च समये तन्नेह शास्त्रं क्षितावस्ति............मुरुधिया ज्ञातं न यत्तैर्भृशम् ॥३१॥
सूरिः श्रीकमलाख्योऽस्तिसमस्तत्पादपद्मसेवायाम्। नो दत्ते यो वासं स्वपुरे कामादिशत्रूणाम् ॥३२॥
श्रेष्ठिना पासडाख्येन श्रीधर्मविधिपुस्तकम्। स्वमातृपितृपुण्यार्थं दत्तं कमलसूरये ॥३३॥

अवनितलमिदं हि यावदासप्तलोक.......................................।
निपुणमतिभिरेतत् पुस्तकं वाच्यमान विमलगुणनिधान नन्दतात् तावदेव ॥३४॥

॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥छ॥

गृहिणी पार्श्वदत्तस्य लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिवापरा । प्रथमः सूमकः पुत्रो यशश्चन्द्रो द्वितीयकः ॥१॥
यशोवीरस्तृतीयस्तु वर्द्धमानश्चतुर्थकः । पञ्चमाम्रकुमाराख्यो आम्रवृक्ष इवोत्तमः ॥ २ ॥

प्रथमं सूमशाखायाम्—

सूमाकस्य हि भार्याऽभूत् **साईनाम्नेति** विश्रुता। पुत्र' **थयराऽभिधस्ताभ्यां** पत्नी **सावित्री तस्य हि** ॥३॥
तयोः पुत्राश्च चत्वारः पुरुषार्था इव क्षितौ । **नायकः** व्यवहारी तु द्वितीय**स्त्वीश्वराभिधः** ॥ ४ ॥
तृतीयो **लाखणश्रेष्ठी बहुदेवो** बहुदायक । **नायकेन** सुतो जज्ञे **खेतसिंहोऽभिधानतः** ॥ ५ ॥
बहुदेवस्य भार्याऽभूत् **श्रियादेवीति** विश्रुता । द्वौ पुत्रौ तु तयोर्जातौ **सहदेवाऽऽसाख्यसंज्ञकौ** ॥ ६ ॥
पार्श्वदत्तस्य पुत्रोऽभूत् **यशश्चन्द्रो** द्वितीयक । तस्य पुत्रद्वय जात पवित्र **पुण्यकारकम्** ॥ ७ ॥
यशोधवलस्तु प्रथम स्वकीर्त्या धवलितक्षितिः । द्वितीयो **वयरसिंहाख्यः** सिंहः सर्वेषु **कर्मसु** ॥ ८ ॥
यशोधवलस्य सद्भार्या **मोषू** मोक्षाभिलाषिणी । पवित्रा पञ्चपुत्रास्तु तयोः पञ्चाननोपमाः ॥ ९ ॥
ऊदलः प्रथमः श्रेष्ठी पुण्यकर्मरतः सदा । **प्रहलादन** द्वितीयस्तु विश्व**स्याह्लादकारकः** ॥ १० ॥
जगत्सिंहस्तृतीयस्तु श्रेष्ठी **रत्नश्चतुर्थकः** । **पुण्याख्य** पञ्चमो जज्ञे पुण्यपूरितमानस ॥ ११ ॥
ऊदलस्य हि भार्याऽभूद् **रुक्मिणी** रूपशोभिता । **प्रह्लादनस्य** सत्पत्नी **हंसला** हंसगामिनी ॥ १२॥
जयतसिंहस्तयोः पुत्रः प्रथमः पृथिवीतले । द्वितीयो **विजयसिंहस्तु देदाख्यस्तु** तृतीयकः ॥ १३ ॥
विजयसिंहस्य सद्भार्या **राणी** शीलसमन्विता । तया पुत्रत्रयी जज्ञे रत्नत्रयविभूषिता ॥ १४ ॥
प्रथमः खीमसिंहाख्यः खेतलस्तु द्वितीयक । तृतीयो वीरमश्रेष्ठी शिष्टः सर्वेषु कर्मसु ॥ १५ ॥
श्रेष्ठिनो **जगसिंहस्य** भार्या **वयजलदेविका** । सप्त पुत्रास्तयोः जाता सप्त**ऋक्षोपमा** भुवि ॥ १६ ॥
धांधाख्यः प्रथमो जज्ञे भार्या तस्य हि **माणिकि** । पुत्रस्तु **देवसिंहाख्य** देवार्चनरतः सदा ॥ १७ ॥
द्वितीयः **वीरधवलश्च** भार्या **सहिजलाऽभिधा** । **आसकाख्यस्तृतीयस्तु** चतुर्थो **मदनाभिधः** ॥ १८ ॥
पञ्चमो **भीमसञ्ज्ञस्तु** निर्भय सर्वकर्मसु । पुत्रस्तु **मूलकः** श्रेष्ठी **धनसिंहस्तु** सप्तम ॥ १९ ॥
रत्नस्य श्रेष्ठिनो भार्या **रत्नादेवीति** विश्रुता । तयोः पुत्राश्च चत्वारः ज्येष्ठो **साहणसञ्ज्ञकः** ॥ २० ॥
द्वितीयः **सीहडश्चाऽभूत् साङ्गणश्च** तृतीयकः । चतुर्थः **पासडाख्यस्तु** स प्राप्तः परलोकताम् ॥२१॥

अथ—

वैरिसिंहस्य भार्याऽभूत् **ललतू** लावण्यपूरिता । षट् पुत्राश्च तयोर्जाता षड्दर्शनपूजकाः ॥२२॥
प्रथमो **वयजलः** श्रेष्ठी **अरसिंहो** द्वितीयकः । तृतीयो **लूणकाख्यस्तु आमसिंहश्चतुर्थकः** ॥२३॥
तिहुणाख्यः पञ्चमो जज्ञे षष्ठो **वाहलाकनामतः** । **वयजलस्य** हि भार्याऽभूत् **पद्मला** पद्मिनीसमा ॥२४॥
पञ्च पुत्रास्तयोर्जाताः पञ्चाननपराक्रमा । **झांझण** भीमसञ्ज्ञस्तु **अर्जसीहस्तृतीयक** ॥ २५ ॥
साहडश्च चतुर्थोऽभूत् पञ्चमो **मोक्षनामतः** । **अरसिंहस्य** शाखायां रम्यो **रामाभिधः** सुतः ॥२६॥
लूणकस्य हि भार्याऽभूत् **जासला** जिनपूजिका । पुत्रः **प्रतापसिंहाख्यः सामन्ताख्यो द्वितीयकः** ॥२७॥
तिहुणाकस्य हि भार्या लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिवाऽपरा । **पुत्रस्तु मण्डलीकाख्य पद्मनामा द्वितीयकः** ॥२८॥
श्रीकमश्च तृतीयोऽभूद् **अभयसिंहश्चतुर्थकः** । **पील्हाकस्य** हि भार्याऽभूत् **तिहुणदेवीति** विश्रुता ॥२९॥
तयोः पुत्रः पवित्रोऽभूत् **भीमो** भीमपराक्रमः ।.......................... ....[अग्रे अपूर्णा]

क्रमाङ्क २३७

चउपन्नमहापुरिसचरिय पत्र ३२४। **भा.** प्रा.। **क.** मानदेवसूरिशिष्य शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १४०००। **ले. सं.** १२२७। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९॥×२॥। पत्र ३२१मां **शोभन** छे।

अन्त—

इय नियमाउय पालिऊण संबोहिऊण भवियजण। कम्मावलेवमुक्को गणहारी सिवपय पत्तो ॥छ॥

॥ इति **म**हापुरिसचरिए **व**द्धमाणसामिचरियं परिसम्मत्तं ॥छ॥

चउपण्णमहापुरिसाण एत्थ चरियं समप्पए एयं। सुयदेवयाए पयकमलकतिसोहाणुहावेण ॥

आसि जसुज्जलजोण्हाधवलियनेव्वुयकुलबरामोओ। तुहिणकिरणो व्व सूरी इहह सिरिमाणदेवो त्ति ॥

सीसेण तस्स रइयं **सी**लायरिएण पायडफुडत्थं। सयलजणबोहणत्थं पाययभासाए सुपसिद्धं ॥छ॥

ग्रन्थाग्रं १४००० ॥छ॥ सवत् १२२७ वर्षे मागसिर सुदि ११ शनौ अद्येह श्रीम**द**णहिलपाटके समस्तराजावलीसमलंकृतमहाराजाधिराजश्रीमत्**कु**मारपालदेवकल्याणविजयराज्ये तत्प्रसाद मा. ह. **बाहू**बलश्रीश्रीकरणादौ समस्तव्यापारान् परिपंथयति **वि**षयदण्डाज्यपथके **पा**लउद्रग्रामे वास्तव्य ले. **आ**णदेन **म**हापुरिषचरितेन पुस्तकं समर्थयति ॥छ॥

....................प्येकवद्रे मार्गे सद्यो जडा अपि जनाः परिसञ्चरन्ति।

अन्तः स्फुरन्ति किल वाङ्मयतत्त्वसारास्तामिन्दुधामधवलां गिरमानतोऽस्मि ॥१॥

वंशे श्रीमति **हैं**बटे समभवत् सत्सर्वदेवाभिधः, श्राद्धः शकरवत् सदा गतनया स .... ।

.... विशुद्धाशया, जातास्सप्त तयोस्सुतारसुचरिता भूमण्डले विश्रुताः ॥२॥

चक्रेश्वरसाधारणशान्तिसज्जनबन्धकाः। सुस्वच्छाऽऽम्मुकसिद्धकयुक्ता मिथ्यात्वनिर्मुक्ताः ॥३॥

अत्यन्ताद्भुतदाननिर्जितबलेस्सद्बुद्धिवाचस्पतेः, गाम्भीर्याम्बुनिधेः प्रतापकलितस्फूर्जत्सुतेजोरवेः ।

जाता.... ....स्य गृहिणी सम्नायिकाख्या दयादाक्षिण्यादिगुणान्विता गतमदद्वेषादिदोषोत्करा ॥४॥

कमलिनीवनवत् कमलाश्रिता न पुनराश्रितकण्टकविग्रहाः ।

त्रिनयना इव भूतिविभूषिताः परमसवरवैरिपराजिताः ॥५॥

श्रामि-सन्तुक-नेमिकुमार-**सिद्ध**धवलाभिधास्सदाचाराः। चत्वारः प्रवरसुता जिनमतनिरतास्तयोर्जाताः ॥६॥

गाम्भीर्यदाक्षिण्यदयादमाद्यैः शश्वद् गुणैः स्वैरमलैरसख्यैः ।

सस्मारयामास जनस्य सम्यगानन्दमुख्यान् सदुपासकान् यः ॥७॥

सन्तुकश्रेष्ठिनस्तत्र तस्याऽऽसीत् प्रेयसी प्रिया। लावण्याढ्याऽब्धिवेलेव शुद्धशीला **स**लक्षणा ॥८॥

जातौ तयोः शाठ्यविमुक्तचित्तौ कान्तौ सुतौ धर्मरतौ विनीतौ ।

सामायिकाद्युत्तमधर्मकृत्यनित्योद्यतौ श्रीजिनसाधुभक्तौ ॥९॥

मतिविभवविजितसुरगुरुमाहात्म्योऽभयकुमारनामाऽऽद्यः। अपरः **पार्श्व**कुमारः सुविचारश्चारुचरितरतः ॥१०॥

अभूत् **पार्श्व**कुमारस्य **सु**न्दरी नाम गेहिनी। शुद्धसत्पात्रदानेन यत्करे कङ्कणायितम् ॥११॥

सपुण्यः कोऽपि सजज्ञे **सा**धारणस्तदङ्गजः। हृदये यस्य निःशंषं जिनो वासमसूत्रयत् ॥१२॥

यशोधवलकः कीर्त्तिवल्लीप्रारोहभूरुहः। **वि**मलो दर्पणः श्रीणां कुसुमं नीतिवीरुधः ॥१३॥

समभूत् **प**द्मिकासञ्ज्ञा तनया विनयास्पदम्। खानिर्विवेकरत्नस्य जन्मभूः शीलसम्पदः ॥१४॥

अन्या **सी**ताभिधा पुत्री मूर्त्तिमती कीर्त्तिरविहतप्रसरा।

कुलकमलभानुरन्या समजायत संपिका नाम्नी ॥१५॥

कान्ता साधारणस्याभूद् रोहिणीव हिमद्युते.। इन्द्राणीव सुरेशस्य लक्ष्मीरिव मुरद्विषः ॥१६॥
शीलेन सुलसा सीता रेवती च सुभद्रिका। शीलमत्यभिधानेन चैता उपमिता यया ॥१७॥
तस्यैवान्यतरा भार्या जज्ञरे (जज्ञेऽथ ?) शीलशालिनी। प्रतीता सूहवा नाम्नी सुभक्ता निजभर्त्तरि ॥१८॥
शीलमत्याः सुतो जातः प्रथनः श्रीकुमारकः। द्वितीयो नागदेवाहृवः प्राप्ता साऽथ दिवौकसम् ॥१९॥

इतश्च—

चान्द्रे कुले श्रीमति सोमकल्पे समुज्ज्वले शुद्धयशोमयूखे।
सद्वृत्तशालिन्यकलङ्कभाजि सदोदयानन्दितसज्जने च ॥२०॥
गणधर इव साक्षाद्गौतमादि व्यहार्षीदतिशयगुणगेह यो धरायामधृष्यः।
स्वपरसमयसिन्धोः पारदृश्वा प्रसिद्धोऽजनि जितमदनः श्री..............॥२१॥
सुविहितशिरोरत्न श्रीमज्जिनेश्वरसूरिरित्यगणितभयो दुःसघीयाद् गणाद् गुणसागरः।
नृपतिविदितः सत्साधूनां प्रवृत्तिविधायकोऽणहिलनगरे पट्टे तस्याभवद् बुधसम्मतः ॥२२॥
जाता जिनेश्वरमुनीश्वरमुख्य ....सा।
आराधनाभिधकृतिं सुरसुन्दरीं च चक्रे क्रमेण हि ययेह नवाङ्गवृत्तीः ॥२३॥
आद्यः श्रीजिनचन्द्रसूरिरखिलाचारप्रचारे चिरं, स्कन्धं बिभ्रदद्भ्रनिर्मलयशा धौरेय.......... ।
ख्यात. श्रीजिनभद्रसूरिरपरः प्राज्यप्रभावान्वितस्तस्माद्विस्मयकारिचित्रचरितश्चारित्रचूडामणिः ॥२४॥
प्राप्तो नव्ययुगप्रधानपदवीं नैस्तैर्गुणैर्भारतेऽस्मिन् क्षेत्रेऽभयदेवसूरिरभयो निर्णीतजैनागमः।
मान्योऽन्यस्तु ततः समस्तजगतः प्रोत्सर्पिताहन्मतः सघस्याभिमत समुन्नतिमन. श्रीदेवताध्यासित ॥२५॥
पट्टे श्रीहरिभद्रसूरिरभवत् तस्याथ पूज्यक्रमाम्भोजस्याभयदेवसूरिसुगुरोर्नव्याङ्गवृत्तेर्वराम्।
यो व्याख्यां विदधेऽणहिल्लनगरे विद्वन्मुनिष्वग्रतो, बिभ्राणेषु घनध्वनि. कपरिकाशीतिं चतुःसंयुताम् ॥२६॥
तच्छिष्यः श्रीयशश्चन्द्रसूरिर्भूरिसमश्रियाम्। जातः पदे पदे तस्य पद्मदेवमुनीश्वरः ॥२७॥
श्रीमान् समुज्झितसमग्रधनोऽप्युपात्तधर्म्मा न शल्यकलितः कलिकाममुक्त.।
कामाकृतिः खलु कलावपि पूर्णकामः, पार्श्वप्रभोऽभयसूरिगुरोः प्रमादात् ॥२८॥
बभूव भूमण्डलमण्डनैककीर्त्तिः स्वमूर्त्या जनयन् जनानाम्।
अमन्दमानन्दमिवाऽऽत्मबन्धुरनन्यलावण्यगुणेन सिन्धुः ॥२९॥
चरणकमलभृङ्गस्तस्य निर्मुक्तसङ्गः समजनि जिनभद्राचार्यवर्योऽजितश्रीः।
इति गुरुजनवंशं शीलका सप्रशस स्म कथयनिमित्त लेखने पुस्तकस्य ॥३०॥

ज्ञात्वा ज्ञान प्रबोधोदधिशितकिरणः दुर्गतिद्वाःपिधान, रागद्वेषद्विपेन्द्रांकुशसदृशमुरोरप्रमादस्य हेतुम्।
सेतु दुःखाम्बुराशेः प्रथितसुरसुखश्रीविधान निधान कल्याणानां प्रधान शिवपुरगमने पूर्णकुम्भोपमानम् ॥३१॥
त्रिदिवप्रयाणसमये शीलमती प्राह सुसुरभर्त्तारौ। मम श्रेयसेऽथ पुस्तकलेखनविषये प्रयतनीयम् ॥३२॥
तथा श्रीशान्तिनाथस्य बिम्बमुत्तमकारितम्। यतो जन्मान्तरे बोधिं प्राप्नुयाम् विमले कुले ॥३३॥
नागदेवस्य श्रेयोर्थं शीलमत्यास्तथैव च। पार्श्वकुमारकः श्रेष्ठी साधारणसमन्वितः ॥३४॥
चतुःपञ्चमहापुरुषचरिताख्यां देववद्वराम्। लेखयामास सद्वर्णं सुपत्र पुस्तकं वरम् ॥३५॥
जम्बूद्वीपसुमेरुसागरमहानद्यो महीमण्डले यावद् व्योमतले मृगाङ्कमिहिरौ नक्षत्रमालास्तथा।
राजन्ते जिनशासनोन्नतिकर मोहव्यपोहाय व. स्तात तावद् वचनामृत श्रवणयोः पुण्णन्नय पुस्तकः ॥३६॥
शीलमत्याः पितृपक्षौ कथ्येते। यथा—

कटुकासनवास्तव्यो अश्वदेवाभिधानकः। वासः समग्रनीतीनां अभूतां ह्नौंबटे कुले ॥३७॥

सद्धर्मकर्म्मसंयुक्तः सर्वदेवस्ततोऽपरः । सर्वदेवो दयाधाम दाक्षदाक्षिण्यवानतः ॥३८॥
तृतीयो बाहडो नाम प्रष्ठः श्रेष्ठगुणैः सताम् । दृढधर्मानुरागेण शके यं श्रेणिकात्मजम् ॥३९॥
अश्वदेवस्य भार्याऽभूत् समग्रगुणशालिनी । सूहवेति प्रतिख्याता चन्द्रलेखेव निर्म्मला ॥४०॥
चत्वारस्तनयाश्चतुर्षु विदिता दिग्मण्डलेष्वेतयोर्जातास्तत्र पवित्रचित्रचरितश्चारित्रिषु प्रीतिमान् ।
ज्येष्ठः श्रेष्ठतम नयस्य भवन लक्ष्मीधरो विश्रुतः, ख्याति बिभ्रदद‍भ्रशुभ्रयशसा श्वेतीकृतः स्वान्वयः ॥४१॥
मूलदेव-धवलाख्यौ यथाश्चन्द्रस्ततस्त्रयः । त्रिकाल पूजयामासुर्ये त्रिकालविदो जिनान् ॥४२॥
राजीमतीति विख्याता तनया गुणराजिनी । सैव शीलमती जाता पाणिग्रहणादनन्तरम् ॥४३॥
यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयताम् ॥४४॥
भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा तथा दृष्टिरधोमुखी । कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिपालयेत् ॥४५॥
शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाश सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥
॥छ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क २३८

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र तृतीयपर्वपर्यन्त-शीतलनाथस्वामिचरित्र पर्यंत पत्र २४८। **भा** स । **क.** हेमचद्राचार्य । **ले सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संह** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३१।×२॥. । **प्रथमपर्व** पत्र १-१२३ । **द्वितीयपर्व** १२४-२०६ । **तृतीयपर्व** पत्र २०७-२४८ ।

क्रमाङ्क २३९

(१) **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र प्रथमपर्व** पत्र १-१३१ ।
(२) ,, ,, **दशमपर्व** पत्र १३२-३०९ । **भा.** स. । **क.** आचार्य हेमचद्र । **ग्रं.** १३८६६ । **ले सं.** १३१९ । **संह** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं प.** ३१×२।. ।

आ प्रतिमां घणां पानांना टुकडा थयेला छे अने घणां पानां खूटे छे ।

अन्त—

॥ ग्र ५२०० ॥छ॥ मगल महाश्रीः ॥ शुभ भवतु लेखक-पाठका-ऽवधारणादिसमस्तजनश्रावकाणां ॥छ॥ स. १३१९ वर्षे माघवदि १० शुक्रे ठः विक्रमसिहेन पुस्तकमिद लिखितमिति ॥छ॥छ॥

सद्वृत्तः सरलस्तुगः शोभितश्च सुपर्वभिः । श्रीमान् प्राग्वाटवशोऽस्ति भूभृल्लब्धमहोदयः ॥ १ ॥
सद्गुरुस्तत्र गतत्रासो मुक्तामणिरिवामलः । मत्री कुमरसिहस्त्रिभुवनदेवी तत्प्रिया ॥ २ ॥
आसराजामृतपालौ तत्पुत्रौ नयशालिनौ । पुत्री च सुभटादेवी सुभटा धर्मकर्मसु ॥ ३ ॥
प्रियाऽनुपमदेवीति ज्येष्ठस्यानुपमा गुणैः । सुता च पद्मलदेवी धर्मपद्मरालिका ॥ ४ ॥
कनिष्ठस्यामृतदेवी भार्याऽऽल्हाकश्च तत्सुतः । जज्ञे केल्हणदेवीति द्वितीया तस्य वल्लभा ॥ ५ ॥
मत्री कुमरसिंहोऽथ सकुटुम्बोऽपि शुद्धधीः । क्रियायाः प्रथम ज्ञान श्रुत्वेति सुगुरोर्मुखात् ॥ ६ ॥
त्रिषष्टिशलाकापुसां प्रथमान्त्यार्हत्पुस्तकम् । अलेखयदिद धन्यो मुक्तिश्रीशासनोपमम् ॥ ७ ॥
द्वियुग्माक्षींदुसंख्याने १३२२ वर्षे श्रीसंघमध्यतः । व्याख्यानयच्च त भक्त्या श्रीमद्देवेन्द्रसूरिभिः ॥ ८ ॥
यावद् व्योमसरःक्रोडे राजहसौ विराजतः । तावत् कृतिकृतानन्दो नन्दतादेष पुस्तकः ॥ ९ ॥

७० ॥ संवत् १३४३ आषाढ सुदि १ साधुवरदेवसुतेन सकलदिग्वलयविख्यातावदातकीर्त्तिकौमुदीविजितनामचंद्र-साधुश्रीचद्रभ्रात्रा अमलगुणरत्नरोहणेन साधुमहणश्रावकेण स्वेन श्रीयुगादिदेवचरित्रादिपुस्तकं गृहीत्वा श्रीजिन-चन्द्रसूरिसुगुरुभ्यः प्रदत्तं व्याख्या[पित च ॥]

क्रमाङ्क २४०

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र तृतीयपर्व संभवनाथचरित्रथी शीतलनाथचरित्र पर्यन्त पत्र २-१४०। **भा.** स.। **क.** आचार्य हेमचन्द्र। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×२.

क्रमाङ्क २४१

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र महाकाव्य द्वितीयतृतीयपर्व-संभवनाथ-अभिनन्दनचरित पत्र १०१। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×२.। पत्र ६१मु नथी।

क्रमाङ्क २४२

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र सप्तमपर्व-रामायण प्रकीर्णक पत्र। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥।×२।.।

आ पोथीमां २५ जेटलां पत्र छे।

क्रमाङ्क २४३

कथाकोश सटीक त्रूटक अपूर्ण पत्र १८५-३३९। **भा.** प्रा.। **मू. क.** जिनेश्वरसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×२.।

आ पोथीमां लगभग १०० जेटला पानां छे।

क्रमाङ्क २४४

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र अष्टमपर्व नेमिनाथ चरित अपूर्ण पत्र २६२। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्रसूरि। **ले. सं** अनु. १४मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २०।×२।

पत्र १लामां नेमिनाथ भगवाननु चित्र छे अने पत्र २जामा आचार्य शिष्यने वाचना आपे छे ते भावनुं सामान्य कलामय चित्र छे। पत्र २५२थी ६१ नथी।

क्रमाङ्क २४५

जंबूस्वामिचरित्र गाथाबद्ध पत्र ३२६। **भा.** प्रा.। **क.** गुणपाल। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२.। पत्र २६१ मु नथी।

आदि—॥ नमो वीतरागाय ॥

नमिउ दुक्खत्तसमत्थसत्तभवजलहितारणसमत्थे। पाए चक्कंकुसकुलिसलंछिए जिणवरिंदाण ॥१॥
नमिउ पणयामरमउडकोडिसघट्टघट्ठकमकमल। मिच्छत्तविसविणासं भत्तीए जुयाइतित्थयरं ॥२॥
सगमयामरबहुजणियबहुविहउवसग्गकरणअक्खुहिय। नमिउ भवभयमहण जएक्कबधू महावीर ॥३॥
मिच्छत्तामयसघत्थजंतुसिवदाणअगयदुल्ललिए। सेसे वि य जिणवज्जे बावीसं भावओ नमिउ ॥४॥.........
इय जंबुणामचरिए पयवन्तपसत्थविविहनिम्मविए। नामेण कहावीढो पढमुद्देसो समत्तो त्ति ॥छ॥

अन्त—

भव्वकुमुओहपडिबोहपच्चलो पावतिमिरनिट्ठवणो। आसी ससि व्व सयलो सूरी पज्जुन्नवरनामो ॥१॥
जो दंसणनाणचरित्तसीलतवसंजमेसु कुसलमई। जइयणगुणगणकलिओ मुत्तो धम्मो व अवयरिओ ॥२॥

तस्स य पयम्मि जाओ आयरिओ वीरभद्दनामो त्ति । परिचिंतियदिन्नफलो आसी सो कप्परुक्खो त्ति ॥३॥
सेसेण व भुवणभरं धरियं लीलाए नियगणं जेण । जिणभवणसाहुसावयभित्तच्च विय कच्छलो जो य ॥४॥
संदंसणे य जस्स य परिमुइओ होइ जो अभव्वो वि । अमयं व जस्स वाणी सुहजणणी सव्वसत्ताणं ॥५॥
जस्स य सीसो पयडो पयडियगूढत्थसत्थपरमत्थो । दसणचारित्तधरो सूरी पज्जुन्ननामो त्ति ॥६॥
अन्ने वि जस्स बहवे सीसा जइयणगुणेहिं परिकलिया । सजाया धम्मरया सहसणनाणचरणजुया ॥७॥
गुणपालणेक्कनिउणेण साहुणा पवयणत्थभत्तेण । सीसेण तस्स रइयं चरियमिमं जंबुनामस्स ॥८॥
इय मंगलमालियमुत्तमय परमेट्ठिमहामुणिकित्तणयं । गुणपालणखंतिसमाहिरया पढिऊण सिवं जह जंति नरा ॥छ॥
एयाइं मंगलाइं पुरिसोत्तमथुइपहाणवयणाइं । भवियाण हुंतु सया जिणभणियमत्थ सुणंताणं ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क २४६

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र गद्य-शांतिनाथ चरित्र पर्यन्त पत्र १६१ । **भा.** सं. । **क.** विमलसूरि । **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५॥×२।

पत्र ५४ मां ऋषभदेवचरित पूर्ण थाय छे त्यां ग्रथकारनु नाम छे । पत्र १५९ मुं नथी ।

आदि—

देवः स वः स्वपदमायति नो ददातु यस्यांसयोरसितकेशसटे चकास्तः ।
ऊरुस्थलंछनवृषस्य ययोः कलापौ दूर्वावणद्वितयस श्रममादधाते ॥
श्रीहेमसूरेर्मुनिवृन्दवृन्दारकस्य तस्यास्तु नतिर्मदीया ।
यद्ग्रंथसिद्धांजनसज्जबोधचक्षुर्भिरीक्षेत जनोऽखिलार्थम् ॥

अन्त—

विद्योतते हृदयवेश्मनि यस्य दीप्रः श्रीशान्तिनाथसुचरित्रमणिप्रदीपः ।
तद्दर्शनस्य महिमा प्रसरन् कदापि व्यालुप्यते न खलु मोहमहांधकारे ॥

क्रमाङ्क २४७

द्वादशव्रतकथा गाथाबद्ध अपूर्ण पत्र १२१ । **भा.** प्रा. । **ले. सं** अनु. १३ मी शताब्दी । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥।×२।. ।

पत्र ५१, ५५, ५७–५९, ६१, ६३–७०, ७३–७५, ७८–८२, ८४–८८, ९०, ९३, १०१, १०३, १०७–१११, ११३, ११४, ११६ नथी ।

क्रमाङ्क २४८

महावीरचरित्र गाथाबद्ध पत्र १५७ । **भा.** प्रा. । **क.** नेमिचंद्रसूरि । **ग्रं.** ३००० । **र. सं.** ११४१ । **ले. सं.** ११६१ । **संद.** जीर्णप्राय । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३×१॥।
अन्त—॥ संवत् ११६१ चैत्रवदि ११ भौमे ॥छ॥ मंगलं महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क २४९

(१) **अतिमुक्तकचरित्र** पत्र १–२१ । **भा.** सं. । **क.** पूर्णभद्रगणि । **ग्रं.** २११ । **र. सं.** १२८२।
(२) **धन्यशालिभद्रचरित्र** पत्र २२–१३८ । **भा.** सं. । **क.** पूर्णभद्रगणि । **ग्रं.** १४९० । **र. सं.** १२८५ ।

(३) **कृतपुण्यचरित्र** पत्र १३९-२२१। **भा.** सं.। **क.** पूर्णभद्रगणि। **र. सं.** १३०५। **ले. सं. अनु.** १५ मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२।.
आ प्रति कागळ उपर लखाएली छे।

क्रमाङ्क २५०

आदिनाथचरित्र गाथाबद्ध पंचावसरमय पत्र ३६३। **भा.** प्रा.। **क.** वर्धमानसूरि। **ग्रं.** ११०००। **र. सं.** ११६०। **ले. सं.** १३३९। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३३×२॥

आदि—॥ नमो वीतरागाय ॥

नमह जुगाइजिणिंद पुरिसोत्तिमनाभिसंभव पयड। वरनाणदसणरविं सुगयमणंत महादेवं ॥१॥
एगमणेगसरूव दुल्लक्ख परमजोगिपच्चक्ख। अव्वयमसखमक्खयमोसप्पिणिपढमतित्थयर ॥२॥
संकुद्धसक्कविक्खित्तदित्तदभोलिदहणभयभीओ। सरण सरण ति तुम भगव! मह होह जंपतो ॥३॥
जस्स भुवणेक्कगुरुणो पयतर पाविऊण असुरिंदो। सक्काओ वि न सकइ सो सरण मह महावीरो ॥४॥
अजियाई जयपयडे अरिहते परमपूयमरिहते। अरहते अरुहते नमामि सिरिपासनाहते ॥५॥
सुयसायरपारगय भरहसुय रिसहगणहर पढम। वियसियपुंडरियमुह पुंडरिय गणहर वंदे ॥६॥
खंतिखम विजियक्ख दक्ख किरियासु मोक्खगयलक्खं। वीरस्स पढमसीस गोयमगणहारिण नमिमो ॥७॥
जाओ अजोगयस्स वि जाण पसाएण मज्झ गुणजोगो। ताणमणंतगुणाण गुरूण पयपकय सरिमो ॥८॥
अण्णे य महाकइणो वरमुणिणो जे य के वि इह गुणिणो।
कलिकयवरकमलसमा जयन्तु ते पिंडिया सव्वे ॥९॥
एगेण वामहत्थेण पोत्थय बीयएण मणियालिं। तयएण य वरपत्त करेण कमल धरेमाणी ॥१०॥
सरलगुलिविवरविणिस्सरतलायन्नजलपवाहेण। तुरिएण तिहुयणस्स वि वरप्पयाण करेमाणी ॥११॥
वियसियवरकमलगया सियवसणा कुदकलियसयदसणा। कवियणमुहकयवासा सरस्सई जयइ सुपसाया ॥१२॥

अन्त—

पुन्ने परे पवित्ते कल्लाणे मगले सिवे धन्ने। सिरिरिसहनाहचरिए समत्थिओ पचमोऽवसरो ॥
पचावसरनिबद्ध कल्लाणयपचरयणचिंचइय। वोच्छामि रिसहचरिय ज भणिय त ठियमियाणिं ॥
एत्तो य सम्ममूलस्स साहुजणधम्मकप्परुक्खस्स। सीलगकुसुमवरपत्तफलभरोणमियडालस्स ॥
खधाओ निग्गयाए बहुविहसमणस्सयगउणभरियाए। दूरुण्णयखरलाए जयपायडवइरसाहाए ॥
चंदकुले चदजसो दुक्करनवचरणसोसियसरीरो। अप्पडिबद्धविहारो सूरु व्व विणिग्गयपयावो ॥
एणपरिग्गहरहिओ विरहियसारगमग्गहो णिच्च। मयलक्खविजयपयडो एगससारभयभीओ ॥
इंदियतुरियतुरगमवसियरणसुसारही महासत्तो। धम्मारामुल्लूरणमणमक्कडरुद्धवावारो ॥
खमदमसजमगुणरयणरोहणो विजियदुज्जयाणगो। आसि सिरिवद्धमाणो सूरी सव्वत्थ सुपसिद्धो ॥
सूरिजिणेसर-सिरिबुद्धिसागरा सागरो व्व गभीरा। सुरगुरुसुक्कसरिच्छा सहोयरा तस्स दो सीसा ॥
वायरण-च्छद-निघट-कव्व-नाडय-पमाण-समएसु। अणिवारियप्पयारा जाण मई सयलसत्थेसु ॥
ताण विणेओ सिरिअभयदेवसूरि त्ति नाम विक्खाओ। विजियक्खो पच्चक्खो कयविग्गहसग[हो] धम्मो ॥
जिणमयभवणब्भतरगूढपयत्थाण पयडणे जस्स। दीवयसिहि व्व विमला विसुद्धबुद्धी पवित्थरिया ॥
ठाणाइनवगाणं पंचासयपमुहपगरणाण च। विवरणकरणेण कओ उवयारो जेण सघस्स ॥
एक्को व दो व तिण्णि व कह व तुल्लगेण जइ गुणे होंति। कलिकाले जम्मि पुणो वुत्थं सव्वेहिं वि गुणेहिं ॥
सीसेहिं तस्स रइयं चरियमिणं वद्धमाणसूरीहिं। होउ पढतसुणताण कारण मोक्खसोक्खस्स ॥

पणमामि पासपाए दुहग्गिसंतत्तसत्तसुहछाए । गुणगरुयनियगुरूण वि नमामि पयपकय पयओ ॥
तिहुयणभरिउव्वरिएण नियजसेण धवलियसरीरा । कवियणमुहकयवासा सरस्सई जयउ सुपयासा ॥
गिरिसरियापूरपरज्झमाणपक्खलंतपयपयारिल्ला । दुब्बलगोणि व्व गिरा मह जेण सुधीवरेणेव ॥
संवाहिऊण तीरं नीया नीसेसगुणनिहाणेण । आचंद सो नंदउ विमलमई विमलजसनिलओ ॥
पढम चिय लिहियमिण पोत्थयपत्तेसु पासचंदेण । गणिणा गुणड्ढिएण कुसग्गमइणा विणीएण ॥
अबुहजणबोहणट्ठा नियचित्तनिरोहणट्ठया चेव । सुचरियसंभरणट्ठाए एस पयासो मए विहिओ ॥
अवहत्थिया वि वंका तुच्छा पयईय बीयचंद व्व । भीरु मुणग व्व भसणा मसगो विव तिक्खतुंडाला ॥
पिसुणा ता ताणऽब्भत्थणा वि विहला न तीए मह कज्ज । अत्थाणपत्थणे जं गरुयाण वि होइ लहुयत्तं ॥
ता जमिहासबद्ध छंदालंकारवज्जिय ज च । ज सिद्धतविरुद्ध सुयणा सोहिंतु तं सव्व ॥
सिद्धंतसारकुसला खमंतु सुयदेवया वि मह खमउ । ज डिंभविहियदुव्विलसिएसु गरुया न दीसंति ॥
विक्कमनिवकालाओ सएसु एक्कारसेसु सट्ठेसु ११६० । सिरिजयसिंहनरिंदे रज्जं परिपालयंतम्मि ॥
खंभायत्थठिएहिं सियपक्खे चित्तविजयदसमीए । पुस्सेण सुरगुरुणा समत्थियं चरियमेयं ति ॥
लोगोत्तमचरियमिण काऊण जमज्जियं सुहं किं पि । उत्तमगुणाणुराओ भवे भवे तेण मह होज ॥
पुव्वावरेण गणियस्स सव्वसखा इमस्स गंथस्स । एक्कारस उ सहस्सा सिलोगसखाए नायव्वा ॥छ॥

॥ श्रीवर्द्धमानाचार्यविरचिते पञ्चमोऽवसरः समाप्तः ॥छ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥
अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यञ्जनसन्धिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरेव मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥छ॥

स. १३३९ वर्षे लौकिक आषाढ सुदि प्रतिपद्दिने रवौ पुष्यनक्षत्रे दिक्कूलङ्कषकीर्तिकल्लोलिनीजलधिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमत् सारङ्गदेवकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि महामात्यश्रीकान्हे समस्तश्रीश्रीकरणव्यापारान् परिपंथयति सति चतुरोत्तरमण्डलकरणमध्यस्थितवदरसिद्धिस्थानस्थितेन श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ. हीराकेन बृहत्श्रीयुगादिदेवचरितपुस्तकं लिखितमिति ॥छ॥श्रीः॥७४॥

पट्टिका उपर—

श्रीआदिनाथदेवप्राकृतचरित्रपुस्तक नवलक्षकुलोद्भवेन सा जावडसुश्रावकेण द्रव्येण गृहीत्वा श्रीखरतरगच्छे प्रदत्तम् । नवांगीवृत्तिकारकश्रीअभयदेवसूरिशिष्यैः श्रीवर्धमानसूरिभिः कृतः ।

क्रमाङ्क २५१

सुपार्श्वनाथचरित्र गाथाबद्ध अपूर्ण पत्र ३०१। **भा** प्रा.। **क.** लक्ष्मणगणि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३४॥×२।। पत्र २४३ सुधी व्यवस्थित छे. अने ते पछी अव्यवस्थित अने केटलाक पानाना टुकडा छे।

क्रमाङ्क २५२

चंद्रप्रभस्वामिचरित्र गाथाबद्ध दशपर्वात्मक पत्र १७८। **भा.** प्रा.। **क.** यशोदेवसूरि। **ग्रं.** ६४००। **र. सं.** ११७८। **ले. सं.** ११७८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१×२॥

आदि—

॥ ९० ॥ नमो वीतरागाय ॥

जस्सारुणचरणनहप्पहाणुरत्ता नमंतअमरपहू । अंतोअमतनीहरियभत्तिराग व्व दीसंति ॥१॥

सो जयउ जयप्पवरो वरकंचणकमलकणियागोरो । गोरयणअंकिओरू रिसहजिणो जिणियकम्मरिऊ ॥२॥ जुयलं ॥
ससिकिरणविमलदेहप्पहाए ओहाडिया उ अन्नियडे । रयणीए वि रयणपईवपंतियाउ व्व रेहंति ॥३॥
तं पणमह पणयसुरासुरिंदअइरुंदविहियजम्ममहं । महमंदरम्मि सियकिरणलक्खणं लक्खणातणयं ॥४॥ जुयलं ॥
असिवीवसमी जाओ जयस्स गब्भागए वि जम्मि लहु । संतिजिणिंदो संतिं करेउ सो सयलसंघस्स ॥५॥

जन्नामपईवम्मि वि मणभवणगए जणस्स जाइ खयं ।
दुरियगणो तिमिरभरो व्व हरउ पासो स मह विग्घं ॥६॥

कलिकालमाहप्पेण वि जस्स न विज्झाइ सासणपईवो । सो वद्धमाणतित्थस्स नायगो जयइ जिणवीरो ॥७॥
इयरनरा वि हु आणाइ जाण निक्कंदिऊण कम्मरिऊ । पत्ता सासयठाणं ते वंदे सेसजिणचंदे ॥८॥
खयरिंदपणयपाया गोविंदपसायणी सुराणंदा । कयणंतनमोक्कारा सिरि व्व वाणी सया जयउ ॥९॥
जाण पसाएण जडो वि किं पि जाओ बुहोहमज्झे हं । गणणिज्जपए तेसिं गुरूण पाए पणिवयामि ॥१०॥
इय सयलनमोक्कारप्पहावपडिहणियविग्घसंघाओ । सिरिचंदप्पहजिणवरचरियमहं संपवक्खामि ॥११॥
एयं च दुक्करं जइ वि मज्झ पडिहाइ मंदबुद्धिस्स । दिट्ठेण पहेण तहा वि संचरंतस्स किं विसमं ॥१२॥

जओ—

जेह विजयसिंहसूरिरइयपबंधम्मि दिट्ठमेय मे । सत्तभवप्पडिबद्धं तहेव गाहाहिं वोच्छमहं ॥१३॥
सव्वं पुण एयं चिय जम्हा सव्वन्नुगोयर चरियं । चंदप्पहस्स कत्थ व कत्थ व मइदुब्बलो अहयं ॥१४॥
एवं च मए जलही भुयाहिं तरिउं इमो समाढत्तो । एएण पडियाणं उवहासपयं भविस्समहं ॥१५॥

जइ वा—

आहारवसेण गुणाण पयरिसो सो य एत्थ ससिनाहो ।
ता तप्पहावउ च्चिय होहामि न सूरिहसणिज्जो ॥ १६ ॥
एत्थ य सुयणपसंसा निक्कज्ज च्चिय जओ स पयईए ।
अपसंसिओ वि गुणगहणवावडो दोसविमुहो वा ॥१७॥

दुज्जणजणो य पाय पसंसिओ वि हु न मुंचए पयई । निद्दोसे वि हु कव्वे जो कह उप्पायए दोसं ॥१८॥
ता किं इमाए चिंताए मज्झ पारद्धविग्घभूयाए । जो जस्स सहावो त स माणऊ इत्थ किमजुत्तं ॥१९॥
नियगुणविक्खाय च्चिय महाकई तेसि मह सलाहाए । किं होज्ज भुवणपायडजसाण महहीणरइयाए ॥२०॥
पत्थुयमेव भणिज्जइ अओ इम विजयसिंहसूरीहिं । रइयं सक्कयभासाए सग्गबंधेण महकव्वं ॥२१॥
अहयं पुणऽपसत्ती पाइयभासाए तेण विरइस्सं । दसपव्वरइयअत्थाहिगारगाहाहिं पाएण ॥२२॥
तत्थ य पढमे पव्वे रन्नो कणगप्पहस्स जह जायं । वेरग्ग निययसुयस्स रज्जदाणं च पव्वज्जा ॥२३॥
बीए तत्तणयस्सेव पउमनाहस्स पुव्वभवसुणण । सिरिहरमुणिंदपासे सिरिधम्मो तत्थ पढमभवे ॥२४॥

जह जाओ जह से रज्जसपया जह वय च देवत्तं ।
तइयम्मि य तइयभवे जह जाओ अजियसेणो सो ॥२५॥
जुवरायत्तम्मि ठिओ य जह हिओ पिउसहाए मज्झाओ ।
हणिऊण महिंदमिव धरणिद्धखयरनाहं च ॥ २६ ॥
परिणइ ससिप्पहं दिव्वकवयं नियपुरिं च जह एइ ।
तुरियम्मि य अजियजयतप्पिउणो जह वयग्गहणं ॥२७॥

पंचमएऽजियसेणस्स चेव जह अच्चुयम्मि उप्पत्ती । छट्ठम्मि वेजयंते उप्पाओ पउमनाहस्स ॥२८॥
सत्तमए चंदप्पहजिणस्स गब्भागमो य जम्ममहो । अट्ठमए रज्ज तित्थकरणउच्छाहणा दिक्खा ॥२९॥

नवमम्मि केवल देसणा य दसमम्मि जह य मोक्खगमो। तह सपबंध सव्व पव्वे पव्वे भणिस्सामि ॥३०॥
इइ चंदप्पहचरिए पढमे पव्वम्मि पीढियाबंधो। भणिओ एत्तो उड्ड कहागरीराणुग वोच्छं ॥३१॥

अन्त—

इइ चंदप्पहचरिए......जसदेवसारबिंबम्मि। सपसंगुद्दिट्ठत्थ दसम पव्व परिसमत्त ॥
इयं चउवीसमतित्थंकरस्स तित्थम्मि अत्थि सुपसिद्धो। चंदकुले वरगच्छो ऊएसपुराओ नीहरिओ ॥
जो साहुरयणनिलओ गुरुसत्ताहिट्ठिओ समज्जाओ। जलहि व्व नदीणवई गंभीरो विबुहजणमहिओ ॥
उव्वहियखमो नरयंतकारओ तत्थ आसि विण्हु व्व। सिरिदेवगुत्तसूरी अवहत्थियदाणवारी वि ॥
सिद्धतमहोयहिपारगेण पुरिसोत्तमत्तण पहुणा। अखलियपयरणकरणेण अत्तणो जेण सच्चविय ॥
सिद्धंत-कम्मगथाण जेण नाणाविहाणुओगपडा। सीसजणस्स हियट्ठा उद्धरिया जिणमयाहिंतो ॥२९०॥
जस्स य नवपय-नवतत्तपयरणत्थस्स किं पि अवगम्म। अइधिट्ठिमाए अहमवि पत्तो तव्वित्तिगारपयं ॥
सिद्धत-तक्क-लक्खण-साहिच्चविसारओ महाबुद्धी। तस्साऽऽसि पवरसीसो विक्खाओ कक्कसूरि त्ति ॥
चिइवंदणमीमंसा पंचपमाणी य दो वि वित्तिजुए। भवियावबोहणत्थं विणिम्मिए जेण जिणमयओ ॥
तस्स वि अंतेवासी सुपसिद्धो सिद्धसूरिनामो त्ति। जाओ अमावओ वि हु जो जुत्तो सावयसएहिं ॥
गग्गय-चंदप्पहमाइसावए जेण किंच भणिऊण। रिद्धिमसिद्धे चउवीसजिणवरायथणपरिगरियं ॥
अणहिल्लवाडपुरपट्टणम्मि सिरिवीरनाहजिणभवणं। कारविय विबुहमणोरमं व जियसुरवइविमाण ॥
सिरिदेवगुत्तसूरी तस्स वि सीसो अहेसि सच्चरणो। तस्स विणेएण इम आइमघणदेवनामेण ॥
उज्झायपए पत्तम्मि जायजसएवनामधेज्जेण। सिरिचंदप्पहजिणचरियमइ कयं मदमइणा वि ॥
सिरिधवलभडसालियकारविए पाससामिजिणभवणे। आसावल्लीपुरीए ठिएण एयं च आढत्तं ॥
अणहिल्लवाडपत्तेण तयणु जिणवीरमंदिरे रम्मे। सिरिसिद्धरायजयसिंहदेवरज्जे विजयमाणे ॥
एक्कारसवाससएसु अइगएसुं च विक्कमनिवाओ। अडसत्तरीए अहिएसु ११७८ किन्हतेरसिए पोसस्स ॥३००॥
निप्फत्ति उवणीयं च एयमिह देवगुत्तसूरिस्स। अंतेवासिम्मि गग पालिते सिद्धसूरिम्मि ॥
सुकवित्तपत्तनिम्मलकित्तीहिं असेससत्थकुसलेहिं। सोहियमिमं च गुणिगुणजुएहिं सिरिवीरसूरीहिं ॥

जीए पसाएण अविग्घमस्स पार गओ म्हि चरियस्स।
सयलजणसलहणिज्जा सा जयउ मया वि सुयएवी ॥
काऊण चरियमेयं च ज मए सुकयमज्जियं किं पि।
तत्तो जिणचरियरओ होउ जणो सुणणकरणेहिं ॥३०५॥
गथग्गमिमस्स पुणो छ सहस्सा समहिया चउसएहिं ॥६४००॥
नायव्वा विउसेहिं गाहाहि सवायमाणेण ॥३०६॥

॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥ मङ्गलमस्तु ॥ छ ॥ सवत् १२१७ चैत्र वदि ९ बुधौ ॥ छ ॥
श्रीब्रह्माणगच्छे प. अभयकुमारस्य ॥

क्रमाङ्क २५३

चंद्रप्रभस्वामिचरित्र पद्य पत्र २३९। **भा.** स.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **ले. सं. अनु.** १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संद.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२

पत्र १, ५–१२, १६, १७, १९, ७१, ९३, १०१, १०२, १४१–१७०, १७२–१७४, १७६, १७८–१८१, २२९, २३१, २३३–२३८ नथी।

क्रमाङ्क २५४

वासुपूज्यस्वामिचरित्र पद्य पत्र ३५९ । **भा.** सं. । **क.** वर्धमानसूरि । **ग्रं.** ५४९४ । **र. सं.** १२९९ । **ले. सं.** १३२७ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २१।×२

अन्त—

नृपविक्रम संवत् १३२७ वर्षे अश्विनवदि १० बुधे श्रीमदर्ज(र्जु)नदेवकल्याणविजयराज्ये श्रीवासुपूज्यचरितं लिखितं ॥

क्रमाङ्क २५५

शांतिनाथचरित्र गाथाबद्ध पत्र ३९७ । **भा.** प्रा. । **क.** देवचन्द्रसूरि । **ग्रं.** १२१०० । **र. सं.** ११६० । **ले. सं.** अनु १३ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०×२१. । पत्र ३७७, ३७९ ना टूकडा नथी ।

क्रमाङ्क २५६

मुनिसुव्रतस्वामिचरित्र पद्य पर्वत्रयात्मक पत्र १५७ । **भा.** स । **क.** पद्मप्रभसूरि । **ग्रं.** ५५६८ । **र. सं.** १२९४ । **ले. सं.** १३०४ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३१×२॥. । प्रति शुद्ध छे ।

॥ इत्याचार्यश्रीपद्मप्रभविरचिते श्रीमुनिसुव्रतस्वामिचरिते भवत्रयनिबद्धे पर्वत्रितयप्रमाणे स्वामिनिर्वाणकल्याणकप्रपचः पचदशः प्रस्तावः ॥छ॥ समर्थितं चेदं तृतीयं पर्व ॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

पूर्वं चंद्रकुले बभूव विपुले श्रीवर्द्धमानप्रभुः सूरिर्मगलभाजनं सुमनसां सेव्यः सुवृत्तास्पदम् ।
शिष्यस्तस्य जिनेश्वरः समजनि स्याद्वादिनामग्रणी र्बंधुस्तस्य च बुद्धिसागर इति त्रैविद्यपारगमः ॥१॥
सूरिश्रीजिनचन्द्रोऽभयदेवगुरुर्नवांगवृत्तिकरः । श्रीजिनभद्रमुनीन्द्रो जिनेश्वरविभोरमी शिष्याः ॥२॥
चक्रे श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरुभिर्युयः प्रसन्नाभिधस्तेन ग्रन्थचतुष्टयीस्फुटमतिः श्रीदेवभद्रप्रभुः ।
देवानन्दमुनीश्वरोऽभवदतश्चारित्रिणामग्रणीः समारावुधिपारगामिजनताकामेषु कामं सखा ॥३॥
यन्मुखावासवास्तव्या व्यवस्यति सरस्वती । गतुं नान्यत्र स न्याय्यः श्रीमान् देवप्रभप्रभुः ॥४॥
मुकुरतुलामकुरयति वस्तुप्रतिबिंबविशदमतिवृत्तम् । श्रीविबुधप्रभचित्तं न विधत्ते वैपरीत्यं तु ॥५॥
तत्पदपद्मभ्रमरश्चक्रे पद्मप्रभश्चरितमेतत् । विक्रमतोऽतिक्रांते वेदग्रहरविमिते समये १२९४ ॥६॥

इतश्च—

क्षितिभृत्कृतप्रतिष्ठे गूर्जरवंशेऽजनिष्ट पाजाकः । लेभे स यशःपालं नयपालनलालसं तनयम् ॥७॥
गुणधवलितदिग्वलयं तदनु यशोधवलमगजमलब्ध । येन किल राजनगरे प्रथितं श्रीपार्श्वचैत्यं च ॥८॥
अजनि यशःपालसुतो विश्वाबालस्फुरद्यशःशाखी । श्रीपार्श्वजिनपदांबुजयुगहंसः पार्श्वदेवोऽथ ॥९॥
अजनिषत तस्य पुत्रास्त्रयश्चरित्रैः सतां पवित्रहृदः । प्रथमोऽत्र रत्नसिंहस्ततो जगत्सिंहसामन्तौ ॥१०॥
लघुनाऽप्यलघुसहोदरभक्तिभृता येन राजनगरेऽत्र । अप्रतिबिंबमकार्यत मुनिसुव्रततीर्थकृद्बिंबम् ॥११॥
नन्दीश्वरस्य नयनानन्दी जगताममदविनयेन । सुजनप्रियेण विजितेन्द्रियेण पार्श्वप्रभोश्चैत्ये ॥१२॥
स्फटिकवैडूर्यबिंबद्युत्या नित्यं विनिर्ममे येन । गगायमुनावेणीसगम इव दलितकलुषभरः ॥१३॥
जीर्णोद्धारधुरीणः सप्तक्षेत्रोपयुज्यमानधनः । अभवदिह हेतुः कर्ता सामन्त[:] स्वपरशुभवृद्धये ॥१४॥
यावत् तपति दिनपतिर्विश्वं धवलयति वा सुधारश्मिः । अपनुदतु तमस्तावच्चरितमिदं शुभदशामनिशम् ॥१५॥
प्रथमादर्शालिखनसाहाय्ये धर्मकीर्त्तिगणिनाऽत्र । विहितेऽपूर्यत पचकचतुष्टयांकं चरित्रमदः ॥१६॥

॥छ॥ प्रथाग्र ५५६८ ॥छ॥

॥ प्रख्याते विमलेऽत्र धर्कटकुले यस्योन्नतिः शर्मदा वांछातीतवितीर्णदाननिकरप्रीतार्थिकल्पद्रुमः ।
आधिव्याधिनिरस्तमानसगतिः सर्वज्ञधर्मे रतिः स श्रीमान् सुमतिर्बभूव सुमतिस्तस्याम्रवीरात्मजः ॥१॥

अम्बेश्वरस्तस्य सुतः प्रतीतो गांभीर्यमाधुर्यगुणैरगाधः ।
दानादिधर्मेषु विवृद्धचेता धुर्यो हि यो धर्ममहारथस्य ॥२॥

अम्बेश्वरस्य चत्वारः पुत्राः सन्ततिशालिनः । उपया इव भूभर्त्तुर्बभूवुरुदयोन्मुखाः ॥३॥

आद्यस्तेषां शालिगः साधुवृत्तः स्फीतः पुण्यैः पार्श्वदेवो द्वितीयः ।
सूमाकः श्रीसौम्यमूर्त्तिस्तृतीयो वर्यस्तुर्यो स्याद् यशोवीरनामा ॥४॥

शालिगस्य च चत्वारः पुत्राः प्राज्यगुणान्विताः । वरदेवो(व) कालकोऽथ वीरडश्च तथाऽम्बडः ॥५॥

लीन यशोवीरमनो जिनेन्द्रे श्लाघ्ये च संघे विशदातिभक्तिः ।
सुधानिधान वचन यदीयं परोपकारैकरस वपुश्च ॥६॥

यशोवीरस्य षट् पुत्राः षड्गुणा इव विश्रुताः । शोल्हिकायां महासत्यां नीतौ जन्माऽऽपुरद्भुतम् ॥७॥
तदाद्यो बोहडिः श्रेष्ठी द्वितीयो राउतस्ततः । तृतीयो गांगदेवस्तु चतुर्थो देल्हकः सुधीः ॥८॥
पचमो धांधुकस्तेषु षष्ठः षोषन इत्यमी । सर्वेऽप्यमी जिना धर्मकर्मण्युद्यतमानसाः ॥९॥
बोहडिप्रेयसी देविण्यभूद् युवतिमडनम् । आम्रसीहः सुतस्तस्याः पौत्रो धीणिग इत्यथ ॥१०॥
राजपुत्रस्य षट् पुत्रा राल्हू-मोहिणिसभवाः । आमणो वोडसिहोऽभयडो नउलकस्तथा ॥११॥
सेवाको मोहणश्चाथ शान्ती वइजू मते शुभे । सेवाप्रिया भोपला तु कूरला कालकस्य च ॥१२॥
शतपत्राभिधग्रामे वोहडिप्रमुखैः मतैः । नेमिश्रीपार्श्वयोर्बिंबे पित्रोः पुण्याय कारिते ॥१३॥
अभयत्स्य लक्ष्मश्रीः प्रिया पुत्रश्च गोल्हणः । मूलदेवोऽपरः सील पुत्री राउतसन्ततौ ॥१४॥

प्राचीनसीतादिसतीगणस्य मध्ये यथाऽऽत्मा विहितः स्वशुद्धया ।
सा सूमिणिर्देल्हुकगेहलक्ष्मीरभूत् पुनश्चापलतां न मेजे ॥१५॥
तस्याश्चतस्रस्तनया बभूवुरुन्निद्रशीलाभरणप्रकाशाः ।
यासां ध्वनिः श्रोत्रपुटैर्निपीय सौहित्यमापुः पशवोऽनभिज्ञाः ॥१६॥

आद्ये चंपलचाहिण्यौ गीतविज्ञानकोविदे । अन्ये सोहिणिमोहिण्यावेताः कस्य मुदाय न ॥१७॥
धांधुकस्य प्रिया पातू गतानी नेव सोऽभवत् । षोषनस्य प्रिया लाडी पच पुत्राः सुताद्वयम् ॥१८॥
साल्हणः प्रथमः पुत्रस्तथा धरणिगोऽपरः । यशोधवलस्तृतीयस्तु खीमसिहश्चतुर्थकः ॥१९॥
पचमो भीमसिहोऽथ लाछूरूपलपुत्रिके । षोषनस्य बभूवेय सततिः शुभशालिनी ॥२०॥
इतश्च देल्हुकसुता प्रागुक्ता प्रथमोद्भवा । पित्रोः श्रेयोऽर्थमत्यर्थं धर्मकर्मणि सा वरा ॥२१॥
आबाल्यात् कुमुदेन्दुकांतिविशद यच्छीलमापालित यद्भक्तिस्त्रिजगत्प्रतीतमहसि श्रीवीतरागेऽधिका ।
यत्पूजा च चतुर्विधे भगवति श्रीसघभट्टारके तेनेय विशदान्वयेति मुदती सलक्ष्यते चांपला ॥२२॥
तया तु छत्रापल्लीयश्रीपद्मप्रभसूरितः । देशनामृतमाकर्ण्य वैराग्योत्सुकयाऽधिकम् ॥२३॥
स्वभुजार्जितवित्तेन श्रीपार्श्वप्रतिमा गृहे । कारिता सुव्रतस्येद चरित्र लेखितं तथा ॥२४॥
पूर्वोक्तबिंबयोः पार्श्वे श्रीयुगादिजिनालये । श्रीमहावीरबिंब च कारित सपरिच्छदम् ॥२५॥
उदधिखवह्निक्षितिजे १३०४ नृपविक्रमवत्सराद् गते वर्षे । परिपूर्णमिदं जात सद्गुरूणां प्रमादतः ॥२६॥कुलकम् ॥
चंद्रार्कावुदय यावत् कुरुतः प्रतिवासरम् । मेदिनी विद्यते यावत् तावन्नंदतु पुस्तकः ॥२७॥

प्रशस्तिः समाप्तेति ।

७॥ संवत् १३४३ आषाढ शुदि १ साधुवरदेवसुत दिग्वलयविख्यातकीर्तिकौमुदीविनिर्जित आमचंद्र साधुहेमचंद्रभ्रात्रा विशदगुणरत्नरोहणेन मा०महणश्रावकेण श्रीमुनिसुव्रतनाथचरित्रादिपुस्तकसप्तक मूल्येन गृहीत्वा श्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरुभ्यो व्याख्यानाय प्रदत्त ॥छ॥

विप्रकीर्णपत्रगता प्रशस्तिः—

.... ।
पूर्वं चन्द्रकुले विशालविलसद्भव्यालिपद्माकरोल्लासे भानुनिभो बभूव यतिपः श्रीवर्द्धमानाभिधः ॥
श्रीजिनेश्वरसूरिश्रीबुद्धिसागरसूरिसुविहितवेधाः । प्रभो......... ....॥
पंचाशकानिश्रीपार्श्व...श्रीदड्छत्रापल्लीयता ॥
भारत्याः कति नाम नामलधियः पुत्राः पवित्राः पर श्रीदेवप्रभसूरिणैव हृदय तस्याः समावर्जितम् ।
वक्तृत्वं कविता विवेचनमिति स्व सारमर्म स्वय देव्या येन वितीर्यते स्म जननादारभ्य सं......॥
रूप क्वापि मनोहर क्वचिदपि...................सकला क्वचित क्वचिदपि प्रौढार्थकाव्यक्रिया ।
चातुर्य वचसां क्वचित् परमहो येष्वेव सर्वे गुणा अन्योन्यं विरहासहा इह स । सर्वात्मनाऽपि स्थिताः ॥
संसारार्णवपातभीतभविनां रक्षाव्रत बिभ्रत सिद्धान्तांबुधिपारगां यतिजने कल्पद्रुकल्पां कलौ ।
....॥
मह० मुंजालदेवाख्यः श्रद्धासबधबन्धुरः । मातुः श्रेयोविधानाय व्याख्यापर्यात पुस्तकम् ॥ [अपूर्णा]

क्रमाङ्क २५७

मुनिसुव्रतस्वामिचरित्र पद्य पर्वत्रयात्मक पत्र १९१। **भा.** सं.। **क.** पद्मप्रभसूरि। **ग्रं.** ५५६८। **र. सं.** १२९४। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥.। पत्र १९०मां द्विभुजा सरस्वतीदेवीनुं उभी मुद्रामां चित्र छे। पत्र १९१ मा मुनिसुव्रतस्वामिनी अधिष्ठात्री वैरोट्यादेवीनु चित्र छे।

क्रमाङ्क २५८

मुनिसुव्रतस्वामिचरित्र पद्य पर्वत्रयात्मक पत्र २२१। **भा.** स.। **क.** पद्मप्रभसूरि। **ग्रं.** ५५६८। **र. सं.** १२९४। **ले. सं.** १४ मी शताब्दी। **संद्द.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१॥×२॥

पत्र १–६, ९०–२२१ प्राचीन पत्र खोवाइ जवाथी लगभग ते ज समयमां कागळ उपर लखावीने मूकेलां छे। प्रति शुद्ध छे।

क्रमाङ्क २५९

नेमिनाहचरिउ पत्र ३०४। **भा.** अप.। **क.** बृहद्गच्छीय हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** ८०३२। **र. सं.** १२१६। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९॥।×२।.।

पत्र ३०४ मां शोभन छे।

पहु अणतरु हुयउ पासु पासाउ वि वीरजिणु, इंद्रभूइ अह तह सुहम्मु वि।
ता जंबूसामि अह पहवु तयणु गुरुगणु असंखु वि ।
अह कोडियगणि चंदकुलि, विउल वइरसाहाए । अइगच्छंतिहि अणुकमिण, बहुगणहरमालाए ॥
हुयउ ससहरहारनीहारकुंदुज्जलजसपसरभरियभुवण वडगच्छमंडणु।

जिणचंदसूरिपिडु धरकव्वभविमणाहिवरंजणु ।
तहु पुणु पट्टह असकलहु, आसि जगुत्तिमु सीसु । अवितहत्थनामिण पयड, सिरिजिणचंदमुणीसु ॥
पहु पयडु वि हुयउ हरिभद्दसूरि त्ति [चि]णेयव्वु असमविविहगुणरयणभूरिहि ।
सारयससिविमलजसभरियधरह सिरिचंदसूरिहि ।
तह सिरिमालपुरुब्भविउ, पोरवाडअभिहाणु । चिट्टइ वंसु असखगुणनरमाणिक्कनिहाणु ॥
जो य सठिउ नयरि सिरिमालि लच्छीए पयडीहविवि विहियअसमसव्वंगरिद्धिउ ।
गंभूयपुरीए गउ वट्टमाणसुहिसयणबुद्धिउ ।
हत्थि तुरंगम सहुसय, नय–किरियाण य धामु । तम्मि वंसि सुपसिद्धु हुउ, ठक्कुरु निन्नयनामु ॥
अवर अवसरि जणयबुद्धीए वणरामनराहिविण नीउ संतु अणहिल्लवाडइ ।
विज्जाहरगच्छि कयउसहभवणत्तयकलसि भम्वाडइ ।
नियमकित्तिकामिणि दिसिहिं, नीसेसिहि वि ललत । जह अज्ज वि कोउगु कामु वि, तासु नियउ पसरत ॥
तयणु सरयसमयरयणियरकिरणावलिनिम्मलिहि गुणिहि पत्तअसरिसमडप्फरु ।
हुउ निन्नयअगरुहु लहरनामु दढधरु मणहरु ।
तेण य विज्झगिरिहिं गइण, गहिय अणेग करिंद । निज्जिय पुणु करिहरणमण, बहुविह समरि नरिंद ॥
धणुहि विहियइ जीए अवयारि लीलाइ वि रिउ जिणिय अजु वि देवि सा विंजवासिणि ।
तिण कारिय संडथल गामि अत्थि दुरिओहनासिणि ।
किंतु लहर नामिण स तहिं, धणुहावि त्ति पसिद्ध । हूय सयलधरणियलकयपूयविसेससमिद्ध ॥
तत्थ पत्तिण हत्थिदसणिण वणरायनराहिविण सुप्पसन्नचित्तेण लहरह ।
त चेव य संडथल गामु दिण्णु कज्जे थइयह ।
तसु पुणु लच्छि–रारस्सईहि, देविहि विहिय पसाउ । महियलविलसिर जसपसरु, असमगुणिहिं विक्खाउ ॥
टंकसालह सिरिविरुवलद्ध जिण ठवियउ चित्तपडु लच्छि निवेसिय मुद्दासु जेण य ।
जसु संचिण वहइ इह मूलराय मज्जाय तेम्वय ।
मूलराय चामुडनिव, वल्लहरायह कालि । दुल्लहरायह चुलुगकुलतिलयह रज्जि विसालि ॥
दसह एगह सचिवपयभारउद्धारणि सु धुरधवलु वीरनामु हुउ सचिवपुगवु ।
अतम्मि य सुगुरुपयमूलि चरणु सेविवि अणासवु ।
आणिवि पुन्नु सव्वायरिण, नियजीवियफलु लेइ । सरवसुदिसिवरिसम्मि १०८५, जससेसत्तणु पावेइ ॥
तसु वि नदणु विउसु सुकुलीणु सुसमत्थउ खंतिपरु सीलवंतु सोहग्गसुंदरु ।
नेढु त्ति अमच्चु हुउ जसु पसन्नु सिरिभीमनरवरु ।
बीउ वि दडाहिवपयपावियअसमपइट्ठु । विमलनामु नदणु हुयउ, असरिसगुणिहिं गरिट्ठु ॥
अवर अवसरि भीमनरराय वयणेण विवक्खजयहेउ विमलु चउरगसेन्निण ।
सिरिचड्डावल्लिवरविसइ पत्तु नियसत्तिजोगिण ।
अह संगहियविवक्खसिरि कयनियपहु अ [......] । तत्थ वसंतु सु सचवइ, अब्बुउ सिहरिविसेसु ॥
तवणु पसरियगरुयउच्छाहु सिरिअंबाएविवरवसिण दिट्ठअसरिसवसुंधरु ।
तक्कालु वि लद्धु सिरिभीम–सेढआएसु सुदरु ।
अब्बुयगिरिरायसिहरि, निम्मलफालिहवन्नु । उसहजिणेसरचेइहरु, कारावेइ रवन्नु ॥
तयणु हरिकरिरयणसगयह सव्वगियलक्खणह निलउ संढनामिण य तियसिण ।

निच्चं पि हु विहियबहुसन्निहाणु गुरुभत्तितरसिण।
निरु नवाविय कित्तिबहु, भुवणरगमज्झम्मि। उवजुंजिय मणि–कणय–धणु, सयण–सुयणकज्जम्मि ॥
हुयउ नेठह तणउ धवलु त्ति सिरि भीमएवंगरुहकुमरएवनिवइहि महामइ ।
तसु वि जयसिंहनिवरज्जसमइ पसरतसंपइ ।
धणुहाविहिं पविइत्तवरु,कयरेवतपसाउ । आणंदु त्ति जहत्थअभिहाणु सचिवु संजाउ ।।
चंदनिम्मलसीलकयसोह निक्कारणकारुणिय सुगुणवत पणमंतवच्छल ।
पउमावइ नाम तसु हुय दइय सद्धम्मपच्चल ।
अह सिद्धाहिव–कुमरनिवसुकयभरिण भज्जत । न अवलोइवि सयल धर असुहियजणसजुत्त ॥
विहिण करुणारसिण सित्तेण सिद्धाहिव–कुमरनिवरज्जकालि नयमग्गनिद्विउ ।
वयगरणस्सिरिगरणभारधवलु ससिसमदिट्ठिउ ।
सचिवाहिवइ विणिम्मविउ, सिरिआणदह पुत्तु। सरसइवरउवलद्धसिरि पुहइपालु निरुत्तु ॥
तेण अब्बुयगिरिहिं सिरिविमलनिम्माविर्यजिणभवणि असमरूवु मडवु कराविवि ।
तसु पुरउ करेणुगय सत्त मुत्ति पुव्वयह ठाविवि ।
नियजणयह पुणु सि. कइ, जालिहरइ गच्छम्मि । जणणीए वि पंचासरइ, पासजिणदगिहम्मि ॥
मायमायह सोणिनामाए पुणु चड्डावल्लियह वीरनाहजिणहरह पगणि ।
इह मंडव कारविय असमरूव अणहिल्लपट्टणि ।
तह रोहाइय वारहइ, सायणवाडइ गामि। सजणणि–जणयह वोल्हयह, सेयकज्जि अभिरामि ॥
तिजयतिलयह संतिनाहस्सु काराविउ जिणभवणु सयलनीइसत्थुत्तविहिण।
नर–नारि–तुरग–करिरयणविसयलक्खणविसिट्ठिण,
तयणु लिहाविवि पुत्थयह, सइहि सयल सिद्धंत । आराहिवि तित्थाहिवह, चलण जणियजम्मंत ॥
समणसंघु वि विविहवत्थूहिं पडिलाहिवि अप्पु कयकिच्चु करिवि सद्धम्मकम्मिण।
नियजणणी जणयइ वि धम्महेउ जिणनाहभत्तिण ।
पुहइपाल महामइह अब्भत्थणह वसेण। इहु हरिभद्दमुणीसरिण, चरिउ रइउ लेसेण ॥
मह न तारिसु वयणविन्नाणु न य मत-तत्तफुरणु जइ वि तह वि पहुभत्तिजोगिण ।
इहु नेमिजिणेसरह चरिउ रइउ मइ गुरुपसाइण।
इय इहु भुवणसुहावणउ सुयणहु सुणहु चरित्तु। अहव सय पि हु ते विबुह, चिंतामणिसुपवि० ॥
कुमरवालह निवह रज्जम्मि अणहिल्लवाडइ नयरि अनणुसुयणबुहयणह सगमि।
सोलुत्तर बारसई १२१६ कत्तियम्मि तेरसि समागमि ।
अस्सिणि रिक्खिण सोमदिणि, सुप्पवित्ति लग्गम्मि। एहु समत्थिउ कह वि नियपरियणसाहज्जम्मि ॥
पच्चक्खरगणणाए, सिलोगमाणेण इह पत्रथम्मि। अट्ठव य स्सहस्सा, बत्तीस ८०३२ सिलोगया होंति ॥
ज किंचि मए अणुचियमुवइट्ठ तुच्छमइविसेसाओ। त पसिउ मह सुयणा, सोहंतु कयप्पसाय त्ति ॥
यस्यांह्रिद्वयनखमणिमयूखसङ्क्रांतसुरपतिश्रेणिः। निजलघुतामिव कथयति, वपुषाऽपि जयत्वसौ नेमिः ॥
यावच्चन्द्रो यावद् दिवाकरो यावदमरगिरिरत्र। राजति तावज्जीयात् श्रीनेमिजिनेन्द्रचरितमदः ॥
उद्यल्लक्षणशास्त्रसंचयनिधीन् सद्धर्ममुद्रावधीन्, सिद्धान्तैकसहस्रपत्रतरणीन् सद्वादिचूडामणीन् ।
तर्काध्वन्यतरून् मनोभववधूवैधव्यदीक्षागुरून् ,साहित्यामृतसागरान् मुनिवरान् श्रीचन्द्रसूरीन् स्तुवे ॥३०॥
॥ इति श्रीचन्द्रसूरिक्रमकमलभसलश्रीहरिभद्रसूरिविरचितं नवभवोपनिबद्धं श्रीनेमिनाथचरितं समाप्तम् ॥छ॥

क्रमाङ्क २६०

(१) अरिष्टनेमिचरित्र (भवभावनावृत्त्यंतर्गत.) पत्र २५५। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **ग्रं.** ५१००। **र. सं.** ११७०। **ले. सं.** १२४५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥×२॥

आदि—

द ॥ नमः श्रीमदरिष्टनेमये ॥

अज्ज वि जस्स पवत्तइ धम्मो नीई य भरहवासम्मि। त पढमजिणवर पणिवयामि निद्दलियदुरिओह ॥१॥
निब्भिन्नसक्कहियया वि जस्स हिययम्मि वज्जघडिए व्व। कुळत्त पडिवन्ना मयणसरा जयउ सो नेमी ॥२॥
धरणिंदसणाहाओ जं विज्जादेवयाओ सेवंति। सो मज्झ पसीयउ पासजिणवरो जणियजयसोक्खो ॥३॥
नामग्गहणम्मि वि जस्स ल्हसइ सयलो वि दुरियसंघाओ। उवसग्गकरिघडाकढिणकेसरी जयउ सो वीरो ॥४॥
अजियाइणो जिणिंदा सेसा वि जयंति निज्जियारिगणा। नरसुरपट्ठहि पयपंकएसु भसलाइयं जाण ॥५॥
सिरिगोयमाइयाण सूरीण समत्थसत्थजलहीण। पत्थियफलाइ पयपकयाइ पणमामि पयओ ह ॥६॥
लेसं पि जस्स उवजीविऊण पावति निव्वुइ जीवा। वीरवयणामय त सया वि परिणमउ मह सव्वं ॥७॥
गुरुणो जयंति परमोवयारिणो जाण तोसलेसेण। एवं जपेमि कइ व्व किंपि अहमवि असुणियप्पा ॥८॥
सा जयउ जीए सुयदेवयाए सुयभत्तितोसियमणाए। असरिसपारद्धाइ वि सिग्घमविग्घ समप्पति ॥९॥
थोयव्ववत्थुसथववज्जविणिद्दलियविग्घवग्गोह।निव्विण्णदुत्थसत्थो पत्थुयमत्थ पवक्खामि ॥१०॥
धम्मो अत्थो कामो पुरिसत्था एत्थ तिण्णि सुपसिद्धा। चचापुरिसगरिच्छा होंति नरा ताण विरहम्मि ॥११॥
कामाओ तत्थ गरुओ अत्थो तव्वज्जियाण ज कामो। अहिलसमाणाण पि हु न होइ दारिद्ददड्ढाण ॥१२॥
अत्थाओ वि हु गरुओ धम्मो च्चिय जेण सयलधन्नाण। मेहो व्व इमो हेऊ नीसेससमीहियत्थाण ॥१३॥
अणुहविऊणं अइसयजुयाइ सुरनरसमिद्धिसोक्खाइ। धम्माउ च्चिय निव्वुइसुह पि पावति ज जीवा ॥१४॥
सोहग्गारोग्गजणाणुरायबलरूवरिद्धिमाईय। धम्मेण सुह सयउ पि अण्णहा अइपसगो उ ॥१५॥
धम्मो य दाणसीलाइभेयओ भन्नए चउवियप्पो। तत्थ वि तवो विसिस्सइ ज भणियं वीयरागेहिं ॥१६॥
पुव्विं दुच्चिण्णाण मोक्खो कम्माण वेइयाणऽहवा। तवसोसियाण तेसिं वोच्छेओ होइ सयलाण ॥१७॥

सज्झायझाणम्मि रयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जं सि रयं पुरेकडं, समीरिय रुप्पमल व जोइणा ॥१८॥

जहा महातडागस्स सन्निरुद्धे जलागमे। उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥१९॥
एमेव संजयस्सावि पावकम्माणऽणासवे। भवकोडीसचिय कम्म तवसा निज्जरिज्जइ ॥२०॥
सव्वासि पयडीणं परिणामवसादुवक्कमो भणिओ। पायमनिकाइयाण तवसा उ निकाइयाण पि ॥२१॥
बारसभेए य तवे धम्मज्झाणाइहेउभावेण। सज्झाओ च्चिय दिट्ठो बहूवयारि त्ति ज भणियं ॥२२॥

बारसविहम्मि वि तवे सब्भिंतरबाहिरे जिणक्खाए।
न वि अत्थि न वि अ होही सज्झायसम तवोकम्मं ॥२३॥

एत्तो सव्वन्नुत्तं तित्थयरत्त च जायइ कमेण। इय परम मोक्खग सज्झाओ होइ नायव्वो ॥२४॥
तं नत्थि ज न पासइ सज्झायविऊ पयत्थपरमत्थ। गच्छइ य सुगइमूल खणे खणे परमसवेय ॥२५॥
कम्ममसंखेज्जभवं खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो। अण्णयरम्मि वि जोगे सज्झायम्मी विसेसेणं ॥२६॥
वायण पुच्छण परियट्टणाऽणुपेहा तहेव धम्मकहा। पंचविहो सज्झाओ विसिस्सए तत्थ धम्मकहा ॥२७॥
जम्हा अत्तुवगारो परोवयारो य जायइ इमीए। अत्तुवगारफल च्चिय पाय सेसा भवे भेया ॥२८॥

अक्खेवणी य विक्खेवणी य संवेयणी य तह चेव। निव्वेयणी चउत्थी धम्मकहा होइ नायव्वा ॥२९॥
इय भावेऊण अह धम्मकह भणियरूवमक्खेमि। उत्तमपुरिसोदाहरणसंगता सा वि उक्करिस ॥३०॥
जेतूण जणइ निच्च लोए सव्वुत्तमा य तित्थयरा। तन्नामग्गहणं पि हु सुहय जंतूण तो जम्हा ॥३१॥
ते केवि जए जायंति जाण नामक्खरोवलम्भे वि। हरिसियमणं कयत्थं अप्पाण मन्नइ जयं पि ॥३२॥
नामे च्चिय सकंता नूण गुणा परिभमति गरुयाण। ज तग्गहणे वि बुहा मुणति कयकिच्चमप्पाणं ॥३३॥
अन्नेसिं पि हु सुहयाइ होंति चरियाइ जिणवरिंदाणं। सोहग्गमहानिहिणो विसेसओ नेमिनाहस्स ॥३४॥
पिक्काइ चूयतरुणो केवलयाणि वि फलाणि सरसाइ। सहियाणि सक्कराए सरसत्त ताण किं भणिमो ? ॥३५॥
सुहयाइं केवलस्स वि सिरिनेमिजिणस्स विमलचरियाइ। राइमईसहियस्स उ ताइ जए कं न सुहयति ? ॥३६॥
इय राइमईए समन्नियस्स सिरिनेमिजिणवरिंदस्स। सम्मत्तुवलभाओ नवभवसबद्धचरियमिणं ॥३७॥
हरिवंसपमुहबहुसत्थदुद्धजलहीओ उद्धरेऊणं। अमय पिव सुहजणय सज्जणजतूण वियरेमि ॥३८॥
न जओ अमएण सम जुज्जइ कइया वि कालकूडविसं। तो अमयतुल्लमेय न अरिहए दुज्जणो सोउ ॥३९॥
न य जणइ मणे सोक्ख कयाइ सूरुग्गमो उलूयस्स। ससिजुण्हा वि न निव्वुइमावहइ कुसीलवग्गस्स ॥४०॥
असओ वि जणइ दोसे सते वि गुणे पणासए सव्वे। विहिपरिणामस्स व दुज्जणस्स विसमा गई लोए ॥४१॥
खलसंथवे य अलिय पाव निंदाए होइ विहियाए। तह जत्तसथुओ वि हु दोसे च्चिय जपए एसो ॥४२॥
निंदिज्जंतो य पुणो दोसं सविसेसमेव सो जणइ। पावाण खलाण तओ अलं कहाए वि पावाए ॥४३॥
खलनिंदणे य जायइ खलत्तण अप्पणो वि थुइवाए। तस्स य अलिय तम्हा जुत्ता अवहीरणा तेसिं ॥४४॥
तो गभीरा लहुकम्मुणो य मज्झत्थमाणसा धीरा। सवणम्मि सज्जण च्चिय जोग्गा एयस्स चरियस्स ॥४५॥
तेसिं पुण निंदाए गरुय पाव थुई वि अम्हेहिं। तुच्छमईहिं असक्का ताणमणतगुणनिलयाण ॥४६॥
थुइविरहे वि य गिण्हति ते गुण छाययति पुण दोस। कव्वस्स जेण एसा पगइ च्चिय ताण धीराण ॥४७॥
अब्भत्थेयव्व च्चिय तो ते सुयणा सकव्वसवणम्मि। तेण भणामि निसामह अवहियचित्तेण भो सुयणा ! ॥४८॥
सिरिनेमिजिणस्स तहा सिरिरायमईए नवभवसमेय। वोच्छामि चरियमेय ते य इमे नव भवा कमसो ॥४९॥

धण धणवइ १ सोहम्मे २ चित्तगई खेयरो य रयणवई ३।
माहिंदे ४ अपराजिय पीइमई ५ आरणे तत्तो ६ ॥५०॥

संखो जसमइभज्जा ७ तत्तो अपराजिए विमाणम्मि ८। नेमी राइमई वि य ९ नवमभवे दो वि वदामि ॥५१॥
आसि इह भरहवासे कमलवण पिव सुपत्तसकिन्न। कयरायहससोह भमरहिय मिरिनिवास च ॥५२॥

अन्त—

॥ इति नवभवप्रतिबद्ध श्रीमन्नेमिजिनचरिताख्यानक समाप्तम् ॥छ॥ ॐ ॥छ॥ ग्रथाग्र ५१०० ॥छ॥

श्रीप्रश्नवाहनकुलांबुनिधिप्रसूत· क्षोणीतलप्रथितकीर्तिरुदीर्णशाखः।
विश्वप्रसाधितविकल्पितवस्तुरुच्चैश्छायाश्रितः प्रचुरनिर्वृतभव्यजन्तुः ॥१॥
ज्ञानादिकुसुमनिचितः फलितः श्रीमन्मुनीन्द्रफलवृन्दैः। कल्पद्रुम इव गच्छः श्रीहर्षपुरीयनामाऽस्ति ॥२॥
एतस्मिन् गुणरत्नरोहणगिरिर्गाम्भीर्यपाथोनिधिस्तुङ्गत्वानुकृतक्षमाधरपतिः सौम्यत्वत्तारापतिः।
सम्यग्ज्ञानविशुद्धसयमतपःस्वाचारचर्यानिधिः शान्त· श्रीजयसिंहसूरिरभवन्निःसगचूडामणिः ॥३॥
रत्नाकरादिवैतस्माच्छिष्यरत्न बभूव तत्। स वागीशोऽपि नो मन्ये यद्गुणग्रहणे प्रभुः ॥४॥
श्रीवीरदेवविबुधैः सन्मंत्रायतिशयप्रवरतोयैः। द्रुम इव यः ससिक्तः कस्तद्गुणकीर्त्तने विबुधः ॥५॥

तथाहि—

आज्ञा यस्य नरेश्वरैरपि शिरस्यारोप्यते सादरं य दृष्ट्वाऽपि मु। मजन्ति परमां प्रायोऽतिदुष्टा अपि ।
यद्वक्त्राम्बुधिनिर्यदुज्ज्वलवचःपीयूषपानोद्यतैर्गीर्वाणैरिव दुग्धसिंधुमथने तृप्तिर्न लेभे जनैः ॥६॥
कृत्वा येन तपः सुदुष्करतरं विश्वं प्रबोध्य प्रभोस्तीर्थं सर्वविदः प्रभावितमिदं तैस्तैः स्वकीयैर्गुणैः ।
शुभ्रीकुर्वदशेषविश्वकुहरं भव्यैर्निबद्धस्पृह यस्याशास्वनिवारितं विचरति श्वेतांशुशुभ्र यशः ॥७॥
यमुनाप्रवाहविमलश्रीमन्मुनिचन्द्रसूरिसंपर्कात् । अमरसरितेव सकलं पवित्रितं येन भुवनतलम् ॥८॥
विस्फूर्जत्कलिकालदुस्तरतमःसतानलुप्तस्थितिः सूर्येणेव विवेकभूधरशिरस्यासाद्य येनोदयम् ।
सम्यग्ज्ञानकरैश्चिरतनमुनिक्षुण्णः समुद्योतितो मार्गः सोऽभयदेवसूरिरभवत् तेभ्यः प्रसिद्धो भुवि ॥९॥
निजशिष्यलवश्रीहेमचन्द्रसूरेर्मुखेन तेनेदम् । श्रीरिष्टनेमिचरितं विहितं श्रुतदेवतावचनात् ॥१०॥
सप्तत्यधिकैकादशवर्षशतैः ११७० विक्रमादतिक्रान्तैः । निष्पन्नं चरितमिदं श्रावणरविपंचमीदिवसे ॥११॥छ॥
॥ सं १२४५ वर्षे चैत्र शुदि १४ रवौ चरितमिदं लिखितमिति ॥छ॥

(२) जिनदत्ताख्यान पत्र २६५–२९४ । **भा.** प्रा. । **क.** सुमतिगणि । **ग्रं.** ७५० । **ले. सं.** १२४६ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २४॥×२। ।

पत्र २५६–२६४ सुधीना अंको लेखकनी भूलथी रही गया छे.

अन्त—

संवत् १२४६ वर्षे ॥ श्रावणवदि ६ गुरावद्येह श्रीमदणहिलपाटके श्रावकरांदेवेन निजपितृव्यश्रेयोर्थं श्रीमदरिष्टनेमिचरितं जिनदत्तकथासमं लिखापितं पुस्तकं ॥छ॥

क्रमाङ्क २६१

पार्श्वनाथचरित्र पत्र २२९ । **भा.** प्रा । **क.** देवभद्रसूरि । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २८×२॥ । पत्र ३४ मुं नथी । ग्रन्थकारनी प्रशस्ति अपूर्ण छे ।

क्रमाङ्क २६२

पार्श्वनाथचरित्र किंचिदपूर्ण पत्र २९२ । **भा.** सं. । **क.** माणिक्यचन्द्रसूरि । **ले. सं.** अनु. **१५** मी शताब्दी उत्तरार्द्ध । **संह.** जीर्णप्राय । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २०×२।

जुनां पानां १०६ नी साथे नवा लखेलां १२६ पानानो संबंध जोडाय छे। पत्र १५, १२६, २६९, २८५, २८६ नथी ।

क्रमाङ्क २६३

महावीरचरित्र गद्यपद्यबद्ध पत्र ३६३ । **भा.** प्रा. । **क.** गुणचन्द्रसूरि । **ग्रं.** १२०२५ । **र. सं.** ११३९ । **ले. सं.** १२४२ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०×२॥

पत्र ३६२ मां सिद्धायिकादेवीनुं चित्र छे ।

पत्र ३६३ मांनां त्रण चित्रो पैकी एकमां आचार्यने महावीर चरित्रनुं व्याख्यान करता बताववामां आव्या छे, बीजामां श्रावको अने श्राविकाओनुं चित्र छे अने पाछळ पूर्णकळशनुं अर्धु उखडीगएलुं चित्र छे ।

अन्त—

॥ छ ॥ संवत् १२४२ कार्त्तिक सुदि १३ गुरौ ॥ छ ॥ॐ॥ छ ॥ छ ॥
विक्कमनिवगयकाले बायालहिए य बारससए य । कत्तियतेरसिए गुरुवासरे सोहणमुहुत्ते ॥
ससारोयहितरिय सयत्थभरिय दुहोहपरिहरिय । सिरिवीरनाहचरिय लिहिअमिण सूमणवुहेण ॥ छ ॥

क्रमाङ्क २६४

पउमचरियं गाथाबद्ध पत्र २६०। **भा.** प्रा.। **क.** विमलाचार्य। **ग्रं.** १०३००। **र. सं.** वीरसंवत् ५३०। **ले. सं.** ११९८। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २८×२।। अत्य पत्रमां **शोभन छे।**

अन्त—

यच्छन्देकसमाश्रयो यदपि च द्रव्यत्वपात्र पर, यद्धास्वत्खचितं यदङ्गविभुतासम्भावितं सर्वतः ।
यत् प्रोद्यत्कविमण्डलैकनिलय यन्मङ्गलोल्लासभूस्तद्वयोमप्रतिमं समस्ति जगति श्रीभैल्लमालं कुलम् ॥१॥
अभूच्चन्द्रप्रभस्तत्र दीप्रः सत्करशोभितः। स्वकुलोत्पलिनीषण्डचण्डमार्त्तण्डसन्निभः ॥२॥
लज्जामन्दिरमुद्यमैकवसतिः शीलैकसवासभूर्धर्मारामपयःप्रवुद्धजनतानेत्रोत्सवेदुद्युतिः ।
प्रावीण्याम्बुजहसिकाकुलवधूः धर्मैकपुण्याश्रम, पत्नी तस्य वभूव राजिणिरिति श्रद्धाविशुद्धाशया ॥३॥

या च—

रोमाञ्चकञ्चकचिताञ्चितगात्रयष्टिः, स्पष्टोल्लसद्विशदमोक्षसुखाभिलाषा ।
श्रीमन्मुनीन्द्रमुनिचन्द्रगुरोः समीपे सुश्रावकव्रतधुरां विधिना प्रपेदे ॥४॥

ज्येष्ठ सा च यशोधन निरुपमप्रावीण्यपण्यापण, पुत्रं पुण्यनिबन्धनैकवसतिं प्रासूत नीतिप्रियम् ।
यत्राऽऽरोप्य कुटुम्बभारमखिलं स न्यस्तचित्तव्यथः, सत्साधून् सदुपासकानहरहः सम्यक् सिषेवे पिता ॥५॥
आराधितजिनदेव शोभनदेव तथा पर पुत्रम्। पित्रोर्येन पवित्र पदाम्बुज सेव्यते सततम् ॥६॥
अन्यदा राजिणिश्चके पुत्रवर्गसमन्विता। संसारासारतां ज्ञात्वा ज्ञाने स्वनिर्मल मनः ॥७॥

तथाहि—

प्रादुर्भवद्विविधकोविदबुद्धिवृद्धौ, दुर्बोधयोधयुधि लब्धजयं यतन्ते ।
जैनेन्द्रशासनमवाप्य न के मनुष्या, दृष्टा विलेखनविधौ जिनपुस्तकानाम् ॥८॥
प्रायेण प्रतिवासर सरभस दोषान्धकारोदये, छन्नाशेषगुणाल्ये हतकलौ कालेऽत्र मसर्पति ।
सर्वज्ञः प्रतिपादितो यदि पर त्राता भवेन्मादृशा, विश्वव्याप्यनुभावसम्पदुचितो ज्ञानांशुमाली किल ॥९॥
राजिणिः परिभाव्येद ज्ञानस्य गुणमुत्तमम्। इद पुस्तकमत्युच्चविधानेन व्यलीलिखत् ॥१०॥
यावद्विद्योतमानस्त्रिभुवनभवनाभ्यन्तरे बोधदीप, सद्ध्यानस्नेहपूर्णः शमितमनसिजोत्तापचञ्चत्पतङ्गः।
सद्दृष्टीना विशिष्टस्फुरितरुचिगुणो विद्यते तावदत्र, प्राज्ञै पापठ्यमानो जगति विजयतां पुस्तकोऽय प्रशस्तः ॥छ॥

सम्वत् ११९८ कार्त्तिक वदि १३ ॥छ॥ महाराजाधिराजश्रीजयसिंघदेवविजयराज्ये भृगुकच्छसमावस्थितेन लिखितेय सिल्लणेन ॥ छ ॥ मङ्गल महाश्री. ॥

क्रमाङ्क २६५

समराइच्चकहा पत्र ३०७। **भा.** प्रा । **क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** १००००। **ले. सं.** १२५०। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३०।×२।

अन्त—॥छ॥ सवत् १२५० वर्षे लिखित

क्रमाङ्क २६६

कुवलयमालाकथा पत्र २५४। **भा.** प्रा.। **क.** दाक्षिण्यांक उद्योतनसूरि। **ग्रं.** १३०००। **र. सं.** ७०० शाके। **ले. सं.** ११३९। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५।×२

अन्त—

॥ इति कुवलयमाला नाम संकीर्णकथा परिसमाप्ता ॥ मगल महाश्री ॥ छ ॥
संवत् ११३९ फाल्गु वदि १ रविदिने लिखितमिद पुस्तकमिति ॥

क्रमाङ्क २६७

विलासवईकहा पत्र २०६। **भा.** अप.। **क.** साधारणकवि। **र. सं.** ११२३। **ग्रं.** ३६२०। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२१.। पत्र १०८ मुं नथी।

आदि—

५० ॥ बहुरयणमणोहरु निम्मलपद्दयरु सगुणु सुवन्नाहिट्टियउ ।
भण कस्स न सोहइ जणमणु मोहइ कव्वहारु कठट्ठियउ ॥१॥
पढमउं पणमेप्पिणु उसहसामि पुणु अजिउ विणिज्जियभय थुणामि ।
संभवु भावेविणु भवविणासु वंदेवि अभिनंदणु गुणनिवासु ॥
सुमरेमि सुमइ सुगिहीयनामु कीरइ पउमप्पहजिण पणामु ।
आएवि जिण सुपससिउ सुपासु चंदप्पहु चिंतिवि चत्तपासु ।
विप्फुरियकत्तु जिणु पुप्फयतु सीयलु दुरियारिमहक्कयतु ।
सेयसु असेससुहाण खाणि वसुपुज्जो विरजियसयलपाणि ।
जिणविमलु अणतु वि सभरेवि तह धम्म संति सथुइ करेवि ।
पय नमवि कुंथु–अरसामियाह गउ सरणु मल्लि–मुणिसुव्वयाह ।
नमि पणमवि तह य अरिट्ठनेमि पुणु पास वीर वदणु करेमि ।
पणमेप्पिणु सिद्धह नाणसमिद्धहं आयरिउज्झह मुणिहिं ।
कयपोत्थयहत्थहि नाणमहत्थहि सुमरेप्पिणु सुयसामिणिहि ॥१॥

अन्त—

ए कह निसुणेविणु सारु मुणेविणु मयलय पावइ परिहरहु ।
असुह मणु खंचहु जिणवरु अचहु साहारणु मणु थिरु धरहु ॥ छ ॥ॐ॥
॥ ईय विलासवईकहाए एगारसमा सन्धी समत्ता ॥छ॥ समत्ता विलासवइकहा ॥

वाणिज्जे मूलकुले कोडियगणविउलवइरसाहाए ।
विमलमि य चंदकुले वसंमि य कच्चकल्लाणे ॥
संताणे रायसहासेहरिसिरिखप्पहट्टिसुरिस्स ।
जसभद्दसुरिगच्छे महुरादेसे सिरोहाए ॥
आसि सिरिसंतिसूरी तस्स पए आसि सुरिजसदेवो ।
सिरिसिद्धसेणसूरी तस्स वि सीसो जडमई सो ॥

साहारणो त्ति नामं सुपसिद्धो अत्थि पुव्वनामेण। थुइथोत्ता बहुमेया जस्स पढिज्जति देसेसु ॥
सिरिभिल्लमालकुलगयणचदगो वइरिसिहरनिलयस्स। वयणेण साहुलच्छीहरस्स रइया कहा तेण ॥
समराइच्चकहाओ उद्धरिया सुद्धसधिबधेण। कोउहल्लेण एसा पसण्णवयणा विलासवई ॥
एकारसहिं सएहिं गएहिं तेवीसवरिसअहिएहिं। पोसचउद्दसिसोमे सिद्धा धंधुक्कयपुरंमि ॥
एसा य गणिज्जंती पाएणाणुट्ठुमेण छदेण। सपुण्णाइ जाया छत्तीस सयाइ वीसाइं ३६२० ॥
जं चरियाओ अहिय किं पि इह कप्पियं मए रइय। पडिबोहकारणेणं खमियव्व मज्झ सुयणेहिं ॥
जयइ तियसिंदसुंदरिवदियपयपंकया कयारूढा। बुहयणविदिन्नवाणी सरस्सई सयलसुहखाणी ॥छ॥

क्रमाङ्क २६८

विलासवईकहा पत्र २०३। **भा.** अप.। **क.** साधारण कवि। **र. सं.** ११२३। **ग्रं.** ३६२०। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×२।.। प्रशस्ति अपूर्ण छे।

क्रमाङ्क २६९

आवश्यकादिगतकथासंग्रह गद्यपद्य पत्र २५७। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।।।×१।।।.। पत्र १६२, १८९ नथी।

क्रमाङ्क २७०

(१) **धन्यशालिभद्रचरित्र** पत्र १–१५६। **भा.** सं.। **क.** पूर्णभद्र। **ग्रं.** १४६०। प्रशस्तिसह **ग्रं.** १४९०। **र. सं.** १२८५। **ले. सं.** १३०९। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।।×१।।

आदि—

द० ॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

श्रीनाभिनन्दनो भास्वान् सत्पथं प्रथयत्वसौ। गोभिराविश्वकारार्थान् यः सच्चक्राभिनन्दनः ॥१॥
हरिं यः प्रीणयामास मधुरैर्वचनामृतैः। श्रीमान् पार्श्वजिनो नेमिर्वीरः स भवतोऽवतात् ॥२॥
मनोरमपदन्यासा सद्गरुचिरा सदा। नन्द्याद् गीर्विशदश्लोका जिनमूर्त्तिरिवामला ॥३॥
वाग्मिग्रामशिरोरत्नं वन्दे मर्त्येश्वरस्तुतम्। भक्त्या सुमेधसां धुर्यं श्रीमज्जिनपतिं गुरुम् ॥४॥
इतिस्तुत्यस्तुतिक्षुण्णप्रत्यूहव्यूहसम्भवः। प्रथयामि कथापीठं सूत्रधार इवाऽऽदितः ॥५॥
मानुष्यं प्राप्य दुःप्रापं भ्रष्टं रत्नमिवाम्बुधौ। धर्म एव विधातव्यो नरैः स्वहितकामिभिः ॥६॥
दानशीलतपोभावभेदैः स च चतुर्विधः। कथितस्तीर्थनाथार्वनिःश्रेयससुखप्रदः ॥७॥
तत्र शीलं सुदुःपालं गृहिभिर्गृहसंस्थितैः। बाह्यमाभ्यन्तरं चैव तपोऽप्यत्यन्तदुश्चरम् ॥८॥
कुटुम्बचिन्तनव्यग्रमानसानां निरन्तरम्। सदारम्भप्रवृत्तानां भावनाऽपि सुदुर्लभा ॥९॥
तस्माद्दानं गृहस्थानामुचितं रुचितं हितम्। भवमर्वकषं हेतुर्मर्त्यामर्त्यामृतश्रियः ॥१०॥
धन्यश्च शालिभद्रश्च कृतपुण्यादयो नराः। साधुदानप्रभावेण बभूवुः सुखभाजनम् ॥११॥
सरसानि चरित्राणि तेषामेकैकशोऽपि हि। खण्डाज्यपायसानीव किं पुनर्मिलितान्यहो ॥१२॥
आदौ धन्यमुनेस्तत्र चरित्रं परिकीर्त्यते। शालिभद्रचरित्रेण पवित्रेण विमिश्रितम् ॥१३॥

अन्त—

ज्ञात्वेवं निर्निदानप्रतिवितरणतः सच्चमत्कारकारि, श्रीसंप्राप्तिं नरत्वेऽनुपमसुररमासंगमं स्वर्गलोके।
सर्वोपाधिप्रमुक्तातुलममृतसुखं चेभ्य–गोभद्रसून्वोः, पात्रेभ्यो दत्त दानं ननु सकलशिवान्यापुमिष्टानि वश्चेत् ॥१३७॥
नम्यं पूज्यमनेकनमलियशाःशील सुरेन्द्रस्तुतं, सद्गुणं गुणदं जिनं कलरवं दुःकृच्छ्भङ्गप्रदम्।
मित्रं भव्यतमस्तमिस्रलवने शान्तं सुपार्श्वं ध्रुवं, वन्दे मानमहिंसकं भ्रमगदापकच्छिदं सुस्तवम् ॥१३८॥
पूर्णभद्रगणिनेदमलङ्कृत इति नामाङ्क चक्रम्। इति श्रीधन्यशालिभद्रमहर्षिचरिते शालिभद्रपूर्वजन्मभणनादि-
धन्यशालिभद्रसर्वार्थसिद्धिगमनमहाविदेहविजयभाविमुक्तिप्राप्तिफलप्रतिपादनपर्यन्तव्यावर्णनो नाम षष्ठः परिच्छेदः ॥६॥
समाप्तं चेदं धन्यशालिभद्रमुनिपुङ्गवयोश्चरित्रमिति ॥छ॥ अनुष्टुभां १४६० ॥छ॥

श्रीमद्गुर्ज्जरभूमिभूषणमणौ श्रीपत्तने पत्तने, श्रीमद्दुर्लभराजराजपुरतो यथार्थत्यवासिद्विपान्।
निर्लोठ्यागमहेतुयुक्तिनखरैः वासं गृहस्थालये, साधूनां समतिष्ठिपन्मुमिसृगाधीशोऽप्रधृष्यः परैः ॥१॥
सूरिः स चान्द्रकुलमानसराजहंसः श्रीमज्जिनेश्वर इति प्रथितः पृथिव्याम्।
जज्ञे लसच्चरणरागमृदिद्विशुद्धपक्षद्वयः शुभगतिं सुतरां दधानः ॥२॥

तच्छिष्यो जिनचन्द्रसूरिरमृतज्योतिर्नवीनोऽभवत्, पद्मोद्भासनमृत्कलकविकलो दोषोदयध्वंसनः ।
सुस्थैर्यो जडिमापहारचतुरः सच्चक्रमोदावहो, दूरीभूततमोवृत्तिर्न कुटिलो न व्योमसंस्थानकृत् ॥३॥
अन्योऽपि शिष्यतिलकोऽभयदेवसूरिः, श्रीमज्जिनेश्वरगुरोः श्रुतकेतुरासीत् ।
पञ्चाशका-ऽष्टक-नवाङ्गमनोज्ञटीकाकारः सुचारुधिषणः सुमनःप्रपूज्यः ॥४॥
आकर्ण्याऽभयदेवसूरिसुगुरोः सिद्धान्ततत्त्वामृतं, येनाज्ञायि न सङ्गतो जिनगृहे वासो यतीनामिति ।
तं त्यक्त्वा गृहमेधिगेहवसतिर्निर्दूषणा शिश्रिये, सूरिः श्रीजिनवल्लभोऽभवदसौ विख्यातकीर्त्तिस्ततः ॥५॥
भास्वांस्ततः समुदगाज्जिनदत्तसूरिर्भव्यारविन्दचयबोधविधानदक्षः ।
गावः स्फुरन्ति विधिमार्गविकासनैकतानास्तमोविदलनप्रवणा यदीयाः ॥६॥
बाल्ये श्रीजिनदत्तसूरिविभुभिर्ये दीक्षिता. शिक्षिता, दत्त्वाऽऽचार्यपदं स्वयं निजपदे तैरेव संस्थापिताः ।
ते श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिगुरवोऽपूर्वेन्दुबिम्बोपमा, न ग्रस्तास्तमसा कलङ्कविकलाः क्षोणौ बभूवुस्ततः ॥७॥
यैर्वादीन्द्रकरीन्द्रदर्पदलने सिंहैरिव स्फूर्जितं, मोहध्वान्तविनाशने भुवि सदा सूर्यैरिवोज्जृम्भितम् ।
भव्यप्राणिसमूहकैरववने चन्द्रैरिवेहोद्गतं, ते श्रीमज्जिनपत्यभिख्यगुरवोऽभूवन् यतीशोत्तमाः ॥८॥
तेषु स्वर्गाधिरूढेष्वहह बहुगुणस्तद्विनेयावतंसः, साधुर्वीरप्रभाख्यः सकलगणधुराधुर्यवर्योर्जितश्रीः ।
आचार्यैः सर्वदेवैर्विहितगुरुपदोऽधिष्ठितस्तन्महिम्ना, नामान लम्भितः श्रीवसतिनिवसतिस्थापनाचुंचुसूरेः ॥९॥
श्रीचन्द्रगच्छमभिनन्दति शास्ति पाति तीर्थं प्रभावयति सम्प्रति जैनचन्द्रः ।
यः श्रीजिनेश्वर इवाप्रतिमैर्वचोभिर्वृत्तैरिव त्रिभुवनं पृणति प्रनीतः ॥१०॥
तदाज्ञया सद्गुणसर्वदेवाचार्यैः समं जैसलमेरुदुर्गे ।
स्थितो गिरैषां स्वपरोपकारहेतोः समाधिं मनसोऽभिलष्यन् ॥११॥
शरवसुरविसंख्ये १२८५ वैक्रमे वत्सरेऽस्मिन्, वहति नपसि मासे शुक्लपक्षे दशम्यां ।
जिनपतिगुरुशिष्यः पूर्णभद्राभिधानो, गणिरकृत चरित्रं धन्यगोभद्रसून्वोः ॥१२॥
चरितमिदमखिलं निर्मलविद्याकूपारपारदृश्वानः । वाचकमुख्याः सूरप्रभाभिधाः शोधयाञ्चक्रुः ॥१३॥
धन्यसाधुमुनिशालिभद्रयोः प्रीतिकारि चरितं विधाय यत् ।
पुण्यमत्र समुपार्जितं मया स्तात्ततो जगदिदं सुखास्पदम् ॥१४॥
गगनसरसि यावन्निर्मले शारदेन्दु, कलयति कलहंसस्फारलीलातिरेकम् ।
जगति जयति तावत् पठ्यमानं सुधीभिः, सुचरितमिदमुच्चैर्धन्यगोभद्रसून्वोः ॥१५॥छ॥
सर्वसंख्यया प्रशस्तिरियं श्लोक २९ चरितं तु सर्वसंख्यया श्लोक १४९० ॥

(२) **कृतपुण्यचरित्र** पत्र १५७–३२८। **भा** ग.। **क.** पूर्णभद्र। **र. सं.** १३०५।

आदि—

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ अर्हं ॥
प्रथमजिनवरेन्द्रः प्रह्वसर्वामरेन्द्रः प्रदिशतु स सुखानि श्रायसश्रीमुखानि ।
व्रतमहसि महिष्ठे सद्यवाकूरपूराविव चिकुरवतंसौ व्यावभस्तां यदंसौ ॥१॥
श्रीशान्तिः शान्तये सोऽस्तु यत्पादौ सरलायतौ । धत्तः सिद्धिमहासौधतोरणस्तम्भविभ्रमम् ॥२॥
सद्धर्मचक्रनेमिर्वो नेमिर्बोधिश्रियं क्रियात् । येनालावि कलाकेलिलीलाकोमलकन्दली ॥३॥
श्रीमतेऽस्तु नमः पार्श्वचन्द्रायामृतहेतवे । सदैव कौशिकव्यूहलोचनानन्ददायिने ॥४॥
महावीरः श्रियं दिश्यात् स्वपुराद् भूतवासिनी । येनान्तरारिपटली धर्म्मद्वारा प्रवासिता ॥५॥
धन्यश्च शालिभद्रश्च कृतपुण्यादयो नराः । मुनिदानप्रभावेन बभूवुः सुखभाजनम् ॥६॥

इत्युक्तं यत्तत्र तावद्धन्यश्रीशालिभद्रयोः। कथोक्ता कृतपुण्यस्य चरितं कीर्त्तयिष्यते ॥७॥
विशेषः पुनरत्राय पुरा दानान्तरायतः। प्राप्तानामपि भोगानां विघ्नोऽभूदन्तराऽन्तरा ॥८॥

अन्त—

रमणभवसुमुनिपायसदानावसरे त्रिभागकरणेन। दानान्तरायदोषादस्याभूद्भोगविघ्नोऽपि ॥१८०॥
तदन्तरायोज्झितमेव दानं पात्राय दत्ताऽऽदरतो विशुद्धम्।
येनामरीं सम्पदमाप्य शस्यां सम्पूर्णभद्रं शिवमाप्नुत द्राक् ॥१८१॥
पूर्णज्ञानरमो भयापहतिकृद् रम्याङ्गचङ्गः स्फुटं, सत्पाणिद्वितयः स्वनेकपगमोऽदम्भोऽस्तशीर्षव्यथः।
छिन्नारवतति सुराश्रितपदो वर्णाक्षतेन्दीवरः, स्यान्माने च हरिर्विमुक्तिविधये सधाय पार्श्वो जिनः ॥१८२॥
पूर्णभद्रगणिनेदं व्यरचि इति नामाङ्कं छत्रम् ॥छ॥
श्रीहरिभद्रजिनेश्वरसूरिकृतौ प्रचुरकथककथाकोशौ। आवश्यकवृत्तिकथां दृष्ट्वैतच्चरितमतिरम्यम् ॥१८३॥
एतदनुसारतोऽपि हि कृतपुण्यमहामुनेर्मया चरितम्।
व्यरचि यदत्रानुचितं तन्मिथ्यादुष्कृतं मेऽस्तु ॥१८४॥ युग्मम् ॥
धन्यसाधुमुनिशालिभद्रयोरादितश्चरितमादधे मया।
साम्प्रतं तु कृतपुण्यसन्मुने सच्चरित्रमिदमादरात् कृतम् ॥१८५॥
इति चरमजिनश्रीवीरशिष्यावनमत्रितयचरितमेतच्चारुवर्णावलीकम्।
नगरमिव विशालं पूरितं भूरिकालं जयति जगति विज्ञैः पठ्यमानं सदैव ॥१८६॥

इति युगप्रवरागमश्रीमज्जिनपतिसूरिशिष्यवाचनाचार्यपूर्णभद्रगणिविरचिते कृतपुण्यमहर्षिचरिते देवदत्ताकृतसर्वस्वापहारपृच्छोत्तरकृतपुण्यजातिस्मरणदीक्षाभिलाषामारिघोषणादिसघवात्मल्यपर्यन्तदीक्षामहोत्सवद्विविधशिक्षाग्रहणविहारकरणानशनप्रतिपत्तिकरणस्वर्गगमनभाविप्रत्यागमनसिद्धिसौधाधिरोहव्यावर्णनो नाम सप्तमः परिच्छेदः ॥छ॥ समाप्तं चेदं श्रीकृतपुण्यमहर्षिचरितमिति ॥छ॥ नमः श्रीजिनपतिपादपद्मेभ्यः ॥ मङ्गलमस्तु ॥छ॥

आसीच्चान्द्रकुले जिनेश्वरगुरुर्निर्धूतवादिद्विपाहङ्कारो हरिणेशितेव भुवने निर्भीकचूडामणिः।
तच्छिष्यो जिनचन्द्रसूरिरभवत् संवेगशास्त्रामृतत्रिस्रोतोहिमवन्महीधरनदः प्रोद्दामपद्मालयः ॥१॥
स श्रीसूरिजिनेश्वरस्य सुगुरोरन्योऽपि शिष्याग्रणीरास्ते स्माऽभयदेवसूरिमुनिपः प्रज्ञालचूडामणिः।
अङ्गानां विवृतिं वरां विरचयन् यो जैनचन्द्रागमप्रासादोपरि शातकुम्भकलशं नूनं समारोपयत् ॥२॥
श्यामां मूर्त्तिमवेक्ष्य यस्य सुतपःशापाप्रभाभासुरां निस्वानं च निशम्य भव्यशिखिनः सान्द्रं दधुः संमदम्।
प्रावृट्कालमहापयोमुत इवाशेषाङ्गिनां वल्लभो जज्ञेऽसौ जिनवल्लभो मुनिपतिः क्षिप्तारिभीतिस्ततः ॥३॥
पट्टे श्रीजिनवल्लभस्य सुगुरोः श्रीदेवभद्रप्रभुस्तस्मिंः सर्वगुणैरलङ्कृततनून् संस्थापयामास यान्।
यद्वा सिंहपदे मृगाधिपतयो योग्या शृगाला न वै, ते श्रीमज्जिनदत्तसूरिगुरवोऽभवन् मुनिस्वामिनः ॥४॥
जल्पन्तोऽनिर्विकल्पजालजटिलं मध्येमहीमृत्सभं बालेनापि सता जिता मतिमता येनेह वादीश्वराः।
भज्यन्ते लघुना न किं बलवता सिंहेन तुङ्गा गजाः, स श्रीमान् जिनचन्द्रसूरिरभवद् रूपास्तदेवाधिपः ॥५॥
ये भव्यप्राणिराजीनवकुमुदवनीबोधने चन्द्रपादा मिथ्यामार्गान्धकारप्रकरविमथने भानवो भानवीयाः।
स्फूर्जद्वादीभकुम्भस्थलदलनविधाविद्धसारंगराजाः श्रीमन्तस्ते बभूवुः प्रभुजिनपतयोऽनन्तरं सूरिवर्याः ॥६॥
तेषां शिष्यवरा मुदं विदधतं सम्प्रत्यपि प्राणिनां, श्रीमत्सूरिजिनेश्वरा ध्वनिजितप्रावृट्पयोदस्वराः।
सम्यग्ज्ञानमहानिधानकलशा सद्दर्शनालङ्कृताः, सच्चारित्रपवित्रगात्रवचनस्वान्तारविन्दाः सदा ॥७॥
तेषामाज्ञाकरः श्रीजिनपतिसुगुरोः पूर्णभद्रो विनेयो, भद्रासूनोः सुसाधोश्चरितमिह गणिर्वाचनासूरिराधात्।
दुर्गे श्रीजेसलाख्यावनिपतिनगरे बाणशून्यानलक्ष्मैसङ्ख्येऽब्दे मार्गशीर्षासितदशमदिने स्वान्यनिःश्रेयसाय ॥८॥

कृतपुण्यमहामुनिसच्चरितं प्रविधाय यदर्जितमत्र शुभम् ।
विधिधर्मरतो लघु तेन जनः सुखितो भवतादरिभीरहितः ॥९॥
यावत्क्षेत्रमेतद् वरविजयमुखस्फारकेदाररम्यं, सीतासीतोदकादिप्रचुरतरनदीचारुकुल्यावलीकम् ।
नानार्हत्स्वादिलक्ष्मीफलदलपटलैर्नन्दप्रत्यग्निचेतस्तावच्चित्रं पवित्रं जगति विजयतां कार्त्तपुण्यं चरित्रम् ॥१०॥
॥ प्रशस्तिः समाप्ता ॥ छ ॥

शिष्याः सूरिजिनेश्वरस्य सकलग्रन्थार्थसंवेदिनस्तर्कव्याकरणद्वयावगमनाविर्भूतविस्फूर्त्तिना ।
सल्लक्ष्मीतिलकाह्वयेन गणिना सार्द्धं परार्थोद्यता, आचार्या जिनरत्नसूरय इदं सशोधयांचक्रिरे ॥१॥
गणिरपि च पूर्णकलशः प्रमोदमूर्त्तिर्मुनिश्च शास्त्रचणः । सशोधितवानेतद् बोधिकृते भवतु भव्यानाम् ॥२॥
गणिना माणिभद्रेण चरित्रप्रथमा प्रतिः । उद्घ्रेऽसमलपत्रेभ्यः कर्ममुक्त्यै सदक्षरैः ॥छ॥ शुभमस्तु ॥छ॥

(३) अतिमुक्तकचरित्र पत्र ३२९–३४७। **भा.** सं.। **क.** पूर्णभद्र। **र. सं.** १२८२।

आदि— ॥नमः श्री सरस्वत्यै ।

श्रीमद्विश्वत्रयीनाथं नाथं कल्याणसम्पदाम् । वर्द्धमानगुणश्रेणिं वर्द्धमानमुपास्महे ॥१॥
नत्वा जिनपतीं देवान् गुरूनप्यार्हतीं गिरम् । अतिमुक्तकबालर्षेश्चरितं परिकीर्त्यते ॥२॥

अन्त—

स्थानाङ्गपञ्चमसदङ्गकर्मापस्तवेभ्यो दृष्ट्वा जडप्रकृतिनाऽपि मया विदृब्धम् ।
चित्रं चरित्रमिह देवगुरुप्रसादाच्चञ्चन्मनेर्वरमुनेरतिमुक्तकस्य ॥१८॥
श्रीमत्प्रह्लादनपुरवरे पूर्णभद्रो गणिर्द्राक्, शिष्यः श्रीमज्जिनपतिगुरोश्चारु चक्रे चरित्रम् ।
चित्राश्चर्यं विजयतनयस्यातिमुक्तस्य साधोर्द्व्यष्टार्काब्दे दितिसुतगुरौ कार्त्तिके पूर्णमास्याम् ॥२११॥छ॥
समाप्तं चेदमतिमुक्तकमुनिचरितम् ॥छ॥

(४) दशश्रावकचरित्र गाथाबद्ध पत्र ३४८–३७८। **भा.** प्रा.। **क.** पूर्णभद्र। **र. सं.** १२७५।

आदि—५० ॥

जस्स पयनहप्पहाभरपञ्जरमज्झट्ठिया तिलोई वि । पडिहासइ निच्चलमालहि व्व तं नमिय जिणवीरं ॥१॥
आणंदाइदसण्ह उवासगाण कहाउ वुच्छामि । दट्ठूण सत्तमंग समासओ आयसरणत्थं ॥२॥
तत्थ संगहणिगाहाओ—

आणंदे १ कामदेवे य २ गाहावइ चुलणीपिया ३ । सुरादेवे ४ चुल्लसयए ५ गाहावइकुंडकोलिए ६ ॥३॥

अन्त—

सोहम्मे चउपलिओऽरुणकीलविमाणअहिवई देवो । होउ महाविदेहे सिज्झिस्सइ खीणकम्ममलो ॥५॥
लंबियापियाकथानकं ॥छ॥ ५० मंगलं महाश्री ॥

आणंदाईण एयं सुचरियदसगं सत्तमंगाणुसारा, संखेवेण विचित्तं कयमिह गणिणा पुन्नभद्देण भद्दं ।
सीसेणं वाईविंदप्पहुजिणवइणो विक्कमाइच्चवासे, वट्टंते बाणसेलामिसिरकरमिए कण्हछट्ठीए जिट्ठे ॥१॥
ग्रन्थाग्रं गाथा ३४४ ॥छ॥

गुरुगिरिविहितास्थः पुण्यपर्वप्रवालः सुभगविमलमुक्ताशङ्कयानेकहेतुः ।
सफलमृदुलताढ्यः स्फारतेजोविभूतिस्त्रिजगति वरिवर्त्ति श्रीमदूकेशवंशः ॥१॥
साधुस्तत्र बभूव भूमिविदितः क्षेमधरः श्रीधरः, सत्यासक्तमना व्रतप्रगयवान् कौमोदकीभावभृत् ।
यश्चकेऽजयमेरुनाम्नि नगरे श्रीपार्श्वनेतुः पुरः, प्रेम्णा सदूनककष्टवृष्टिहतये शैलं महामण्डपम् ॥२॥

रेजुर्यस्य महोदधेर्बहुतरा रत्नोपमाः सूनवः सम्पूर्णा गुणसद्‌व्रजैः सुरुचयो देवश्रियः कुक्षिजाः ।
कोऽप्येतेषु जगद्धरः सुकृतिनामग्रेसरः कौस्तुभः, श्रीश्रीमत्पुरुषोत्तमैकहृदये वासित्वमैद् यो गुणैः ॥३॥
श्रीमत्पार्श्वस्य नेतुः सदनममदन भव्यनेत्राब्जमित्रं, पुर्यां श्रीजेसलस्य व्यरचयदचिराच्चाभितो भूषणानि ।
गेहे सार्धर्मिकोर्वीरुहवनमनु चाछिन्नवात्सल्यकुल्यां, पूरेणावीवहद् यो मरुषु किमपरं प्राप कल्पद्रुमत्वम् ॥४॥
शालीनतालीश्रीशील यदात्मजमपालयन् । तस्य साढलही नाम्ना सा बभूव सधर्मिणी ॥५॥

तस्याऽऽसतेऽक्षतनयास्तनयास्त्रयोऽमी, तेषामय धुरि यशोधवलो यशोब्धिः ।
माध्यंदिनो भुवनपाल इलापससदुज्ज्वालकीर्त्तिरनुजः सहदेव एषः ॥६॥
इह हि भुवनपालः प्रीतदिक्चक्रवालः सुगुरुजिनपतीशस्तूपमूर्ध्नि ध्वजस्य ।
विघटितमधिरोहं कारयामास यष्ट्या जिनपतिरथयानं चक्रवर्तीव पद्मः । ॥७॥

तस्य प्रिया त्रिभुवनपालधीदा रघुप्रभोरिव जनकस्य धीदा ।
पुत्रद्वयं समजनि खीम्वसिंहा-ऽभयाह्वयं कुशलवलीलमस्य ॥८॥

स धन्यकृतपुण्यतां सततशालिभद्रात्मतां किलातनितुमात्मनो मुनिचरित्ररम्यामिमां ।
सुधार्मिकजनव्रजोपवनसारणिः श्रीभरः स्म लेखयति पुस्तिका भुवनपालसाधुर्मुदा ॥९॥
मेघास्याम्बुदवृन्दमुक्तसलिलापूरे मणिज्योतिरुद्योतिच्छत्रपरीतचक्रिपृतनाभूचर्मरत्नश्रियम् ।
मध्येम्भोधिमहीतलं दिनमणीभास्वन्नभः सत्वरं, यावद् विन्दति तावदत्र जयतादेषाऽधिकं पुस्तिका ॥१०॥

(५) **दशश्रावकचरित्रचूर्णि** पत्र ३७८-३८४ । **भा.** सं । **क.** पूर्णभद्र । **ले सं.** १३०९ । **सं.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥×१॥

आदि—

आनन्दकथायां किञ्चिल्लिख्यते । दिसिजत्तिय०गाहा ॥२७॥ दिग्गिजत्तियाण त्ति । दिग्यात्रा देशांतरगमनं प्रयोजनं येषां तानि दिग्यात्राणि । संवहणियाण त्ति । संवहनं क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्टधान्यादेर्गृहादावानयनं तत्प्रयोजनानि सांवहनिकानि ।

अन्त—

पभणेइ० गाहा ॥३९॥ अलसरोगअभिभूय त्ति अलसकेन विसूचिकाविशेषलक्षणरोगेण ग्रस्ता । तल्लक्षणं चेदम्—नोर्द्धं व्रजति नाधस्तादाहारो न च पच्यते । आमाशयेऽलसीभूते तेन सोऽलसकः स्मृतः ॥ **सप्तमाङ्गचूर्णिः** ॥ ग्रन्थाग्र श्लोक १०१ ॥छ॥ **मेदपाटे** वरग्रामवास्तव्य श्रे० **अभयीश्रावकपुत्रसमुद्धरश्रावकभार्यया कुलधरपुत्र्या साविति**श्राविकया **धन्यशालिभद्रकृ**तपुण्यमहर्षिचरितादिपुस्तिका स्वश्रेयोनिमित्तं लेखिता ॥छ॥ संवत् १३०९॥

क्रमाङ्क २७१

पृथ्वीचंद्रचरित्र पत्र २६० । **भा.** प्रा. । **क.** शांतिसूरि । **ग्रं.** ७५०० । **र. सं.** ११६१ । **ले. सं.** १२२५ । **संद** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २७×२।

अन्त—

संवत् १२२५ वर्षे पौष शुदि ५ शनौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावलीविराजितमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारिकउमापतिवरलब्धप्रसादप्रौढप्रतापनिजभुजविक्रमरणांगणविनिर्जितशाकंभरीभौपालश्रीमत्कुमारपालदेवकल्याणविजयिराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि महामात्यश्रीकुमरसीहे श्रीश्रीकरणादौ समस्तमुद्राव्यापारान् परिपंथयति सति ॥

क्रमाङ्क २७२

प्रत्येकबुद्धचतुष्कचरित्र पद्य पत्र २५०। **भा.** स.। **क.** लक्ष्मीतिलक। **ग्रं.** १०१३०। **र. सं.** १३११। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८॥×२।

आदि—॥ अर्हं ॥

कांतोदारानतिशयान् य ऊहेऽष्टसहस्रशः। युगपच्छेशवेऽपि श्रीवीर: स श्रेयसेऽस्तु वः ॥१॥
जिनेन्द्राय मुनीन्द्राय महेन्द्राभ्यर्हितांहये। मिथिलामेरुभूक....... .... ॥२॥
मातर्वाग्देवि! मद्वाचि सौमनस्य नवं क्रियाः। प्रणमामि येन सत्काव्यस्रज सहृदयप्रियाम् ॥३॥
अथातः श्रीनमिमहाराजर्षिचरितामृतम्। वचसाऽमन्दरागेण श्रुताम्भोधेः प्रकाश्यते ॥४॥

अन्त—

इति श्रीप्रत्येकबुद्धमहाराजर्षिचतुष्कचरिते जिनलक्ष्म्यङ्के महाकाव्ये श्रीकरकण्डुश्रीद्विमुखश्रीनमिश्रीनग्गतिमहाराजर्षिचतुष्कमिथःसम्बन्धमोहराजपराजयप्रबन्धकेवलज्ञानोल्लासस्वदेशनाप्रकाशभवोपग्राहिकर्मनिर्मूलनश्रीसिद्धिमहासौधाध्यासनव्यावर्णनो नाम सप्तदशश्चूलिकासर्गः समाप्तः। तत्समाप्तौ च समाप्तं श्रीप्रत्येकबुद्धमहाराजर्षिचतुष्कचरितं ॥ नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः। नमः सम्प्रदायै श्रीसारदायै ॥छ॥छ॥ सप्रशस्तिचूलिकासर्गग्रन्थाग्रं १३२० ॥

॥ अर्हम् ॥ यत्तीर्थे मुक्तितीर्थे त्रिभुवनभवनामोदिगानावदाना धर्माख्यानैकताना प्रतिपदयुगपद्भावचित्रं दधानाः। एते प्रत्येकबुद्धा ययुरुदयपदं यत्प्रतिच्छदका नु स्थेयः श्रेयः स वीरश्चरमजिनपतिः स्वाग वितेतीयतां वः॥१॥
शिष्यास्तस्येन्द्रभूतिर्भुवनयशा अग्निवाय्वोश्च भूती, श्रीव्यक्तः श्रीसुधर्मा युगवरतिलको मण्डिको मौर्यपुत्रः। निष्कम्पोऽकम्पितश्चाचलमतिरचलभ्रातृमेतार्यसंज्ञौ, ज्ञानोल्लासः प्रभासः स च गणपतयोऽभ्यासुरेकादशैते ॥ २ ॥
सौधर्मः स्वामिजम्बूर्यमतिसुभगमाप्यान्यमत्र मुक्तिमूर्ती त्वस्य प्रभावः प्रभवगुरुरिदं धाम शय्यम्भवश्च। एतद्भद्र तु भद्रो यशउपपदभाक् तस्य सम्भूत-भद्रबाहू श्रीस्थूलभद्रोऽन्तिपदजनि तयोः षट् समस्तश्रुतज्ञाः॥३॥
तच्छिष्यौ च महागिरिः स दशपूर्वीन्द्रः सुहस्ती तथा यत्पादाब्जपरागतबोधकमलः श्रीसम्प्रतिर्भूपतिः। मिथ्यात्वारिविनिग्रहादिव जयस्तम्भान् विहारान् जिनाधीशाना व्यतनोत् त्रिखण्डभरतावन्या मुनीनामपि ॥ ४ ॥

अथ सुस्थितसुप्रतिबद्धगुरुगणनायकतामुररीकृतवान्।
यत एष गणो धुरि कोटिक इत्यवनौ विदितोऽजनि नन्दितया ॥ ५ ॥

जज्ञे तत्र गणेऽगणेयमहिमावासे यशस्पादपे, सद्वृन्दारकवृन्दनित्यरुचिते शाखाप्रशाखाद्भुते। नानाश्रीदशपूर्वधारिषु फलेषूद्भूतवस्तुक्रमाद्, वज्रस्वामिगुरुर्गरिष्ठफलवत् श्रीसिंहगिर्यन्तिषत् ॥६॥
यः कर्णाभ्यटनेन पालनगतोऽप्येकादशाङ्गीं पपौ, शैक्ष्ये भैक्षविधौ परीक्ष्य विबुधा यस्मै च विद्यां ददुः। यस्याचार्यपदे महामहिमते व्यातेनिरे लब्धिभिस्तीर्थं योऽन्त्यदिदीपदत्र दशपूर्वीभृच्च यः पश्चिमः ॥७॥
तस्माज्जाम हिमालयान्मुनिजनैः ससेव्यपादावनेरत्र ज्ञानचणे गणे त्रिपथगा वाज्रीति शाखाऽभवत्। भग्नीभिर्नु सद्धोच्चनागरिकया विद्याधरी-मध्यमाभ्यां शाखाभिरिलातलं परिपुनत्याबाब्धि या पप्रथे ॥ ८ ॥
उदन्वत्कल्पायामिह जिनपदोपास्तिरसिक, सदा मन्दक्ष्मानन्दनकविमहासौम्यगुरुभृत्। दधत्प्रादक्षिण्यं सततमचले तत्र च शिवे, कुलं चान्द्रं गान्द्रप्रभमुदयमासादयदथ ॥ ९ ॥

तत्र ज्योतिःस्वरूपाः प्रतिपदममृतश्राविणः श्रीमुनीन्द्रा,
नैकेऽनेके प्रथीयोऽतिशयमहिमभिर्विश्वमाभासयन्तः।
तद्वश्यो देवसूरिस्तदनु समुदगान्नेमिचन्द्रो यतीन्द्रः,
श्रीमानुद्योतनोऽतः परमगुरुपदं द्योतयामास पृथ्व्याम् ॥ १० ॥

को नामामुत्र मंत्रे वसति सुर इति ध्यानलीनोऽहिराजा,
सद्यो दिष्ट्या प्रभोऽस्मि स्मृत इति वदताऽभ्येत्य सस्तूयमानः ।
यो न्यांजीद् दुःषमायां निशि बत महिमाचार्यमन्त्रैकभानोः,
स्वामी श्रीवर्द्धमानः स पदि सपदवी सूरिराजामविन्दत ॥ ११ ॥

चातुर्वेद्यविदग्रणीरपमलब्राह्मण्यभृद्ग्रामणीयः श्रीगौतमवद्विलोक्य विलसद्धाम्नां निधिं त प्रभुम् ।
सद्यः सोदरबुद्धिसागरपरीवारान्वितः प्राव्रजत्, स श्रीसूरिजिनेश्वरः खरतरत्व साध्वथासेदिवान् ॥ १२ ॥
मिथ्याज्ञानदुरन्तशक्तितरसा श्रीपत्तने पत्तने, गाढाधिष्ठितकारिणश्चतुरशीत्याचार्यदुश्चेटकान् ।
यः श्रीदुर्लभराट्सभे श्रुतमहामन्त्रैर्निगृह्य क्षणादर्शाणां शिवसपद सुविहितश्रेणीविहारैर्व्यधात् ॥ १३ ॥
तर्कादीन् बहु यः स्वय यदनुजः शब्दानुशास्त्यादिकानेता श्रीसुरसुन्दरीं च जिनभद्राख्यो यदायान्तिषत् ।
यच्छिष्यान्तिषदुत्तराध्ययनसद्व्याख्यामशोकेन्दुरातेने वागधिदेवताकुलमिव क्षोणीतले यत् कुलम् ॥१४॥
ज्योतिश्चक इवास्य शिष्यपटले शीतांशुसूर्यप्रभौ जज्ञाते स्वपरागमामरपथाध्वन्यौ विनेयावुभौ ।
तत्राऽऽद्यो जिनचन्द्रसूरिरसृजत् संवेगरङ्गोत्तरां, शालां सर्वसमानमत्र भुवने संवेगसत्रं तु यः ॥१५॥
अन्यथाऽभयदेवसूरिरुदयल्लोकोत्तरप्रातिभः, कतु स्वात्मनि सयमश्रियमविश्रान्ता प्रसन्नामिव ।
अत्यन्त सहचारिणीं प्रियसखीं तस्या नवाङ्गीमिमा, व्याख्यारत्नविभूषणैः किमपि यः प्रासीसदत् सर्वतः ॥१६॥
साक्षाच्छासनदेवतावचनतः प्रस्थाय दूरान्मुदा, श्रीसंघेन चतुर्विधेन सहितः श्रीधर्मचक्रीव यः ।
सेढीस्वस्तटिनीतटे प्रकटयामासेह तात्कालिकप्राह्वात्रिंशिकया द्रुत नवनिधिप्रायं च पार्श्वप्रभुम् ॥१७॥
मुक्त्वा काककुलायतर्जनिमुर त चैत्यवासालयं, यः पुस्कोकिलकान्तिरात्मविदुरो वर्तिष्णु तत्र प्रभौ ।
माकन्दे परपुष्टसाधुकुलमाशिश्राय सत्सिद्धये, स श्रीमान् जिनवल्लभस्तत उदैद् विश्वत्रयीवल्लभः ॥१८॥
यः श्रीमान् मन्दरागो विबुधसमुदयैः पर्युपास्यः समन्तात्, सिद्धान्तक्षीरवार्धेरतिदुरधिगमागाधमध्य विगाह्य ।
स्राक् कर्मग्रन्थ-पिण्डप्रकरणमुखसद्ग्रन्थपीयूषकुण्डैः, प्रैतरन्नैश्च भिन्दन् सकलसुमनसोऽभूत् क्षमाभृद्वतंसः ॥१९॥
तत्पट्टे जिनदत्तसूरिरुदभूत् श्रीकृष्णमूर्त्तिर्दधद्, विंशद्यादित्रिपदो य एष नरकप्रष्ठान् त्रपद्वेषिणः ।
बिभ्राणान् भुवि भावभासुरसपाचकैः परानित्यनः, स्थानेऽसेव्यत यो निदेशमनिशं दिष्ट्येच्छुभिर्दैवतैः ॥२०॥

तदनु च जिनचन्द्रसूरिरिह समर्जनि शैशवशालिनाऽपि येन ।
प्रबलमदभरान्धवादिदन्तावलदलना खलु लीलयैव चक्र ॥२१॥

सकलज्योतिरुदयलक्ष्मीकृतिकामिकनीर्थमद्भुत शुभनमसततभाविपूर्वस्थितिसुभगम्भावुकोन्नतम् ।
तत्पदमेतदुदयधरणीवरमलमकृतातिभास्वरत्रिभुवनरञ्जनैकधामर्द्धिजिनपतिसूरिभास्करः ॥२२॥

यस्याग्रे न परो गुरुर्न च कविर्नो वा बुधः प्रागुतत्,
प्रागल्भी न कलावतो न तमसः क्षुद्रग्रहाणां न च ।
वादीन्द्राश्च भयंकरा अपि ययुः स्राग् घूकरन्मूकतां,
धाम्नां धाम य एक एव भुवने किन्तूद्दिदीपेऽभितः ॥२३॥

सूरिः श्रीसर्वदेवः सहविजयपदी देवसूरिः क्रमीन्द्र-
स्तर्कश्रीयानपालः स जगति जिनपालोऽभिषेकावतंसः ।
श्रीमान् सूरप्रभः सर्घहितयुत उपाध्याय इत्येवमाद्या,
विद्यानद्यर्णवाः क्ष्मातलमतिलकयन् यस्य शिष्यांशुदण्डाः ॥२४॥

श्रसंघपट्टकपरिष्कृतपद्मलिप्स्याः, सिद्धान्तदिव्यसरसीसरसीरुहिण्याः ।
अश्रान्तसन्तमससंहतिहृद्रवीभिर्विस्तार्य यः परिमलं प्रकटीचकार ॥२५॥

त्रिभुवनसुभगम्भविष्णुमूर्त्तिः प्रतिदिशमेदुरकीर्त्तिकौमुदीकः ।
अयमुदयमिहाऽऽससाद सद्यस्तदनु जिनेश्वरसूरिपूर्णिमेन्दुः ॥२६॥
अनन्तान् सिद्धान्तान् बहुतिथमिद लक्षणविद, तमस्यर्कास्तर्कान् जननि ! सदलंकारपटलम् ।
कथं धत्से स्वच्छे गिरमिति ब्रुवन् हृद्यननव, तदास्य यस्यास्य तदनु कुतुकाद्वैतमचकात् ॥२७॥
यस्यास्ये शारदाऽऽस्ते ध्रुवमयमिति निर्माति सद्यः प्रबन्धं,
वाक्ये वाचस्पतिश्च स्पृहयति विबुधश्रेणिरुच्चैस्तदस्मै ।
हस्ते सर्वाऽपि सिद्धिस्तदिह शिरसि मन्येव सा स्फूर्त्तिमीर्त्ते,
मूर्त्तौ पर्वेन्दुबिम्बं क्षिपति जनदृशोस्तेन पीयूषमेषा ॥२८॥
तस्यास्य स्वगुरोः परस्वसमयालकारतर्कादिसद्विद्यास्वर्णमहाखनेरविरतोपास्त्या सुवर्णोत्करान् ।
प्राप्य श्रीजिनरत्नसूरिरुदयन्सारस्वतप्रातिभोऽसौ लक्ष्मीतिलको गणिश्च किमपि त्रैविद्यचूडामणिः ॥२९॥
श्रीलीलास्पदपद्मदेवतनयक्षेमधरोद्धान्वयक्षीराम्भोधिसुधांशुना जगधरश्राद्धेशितुः सुनुना ।
श्रीप्रह्लादनपत्तने भुवनपालेनामुना साधुना, पद्माकस्य सुतेन साढलमहाश्राद्धेन चाभ्यर्थितः ॥३०॥
स्वपूर्वजश्रीमदशोकचन्द्र–श्रीनेमिचन्द्रादिमसूत्रधार- ।
दृब्धोत्तराध्यायविवृतिसूत्रानुसारतश्चार्वतिमघटग्य ॥३१॥
यस्मिन् भान्त्यनुपर्वकाननमहो श्रीसर्गसिद्धालयाश्चत्वारः स्फुरदद्भुतायतनभूः सर्गोऽन्तिमश्चूलिका ।
विष्वग्वैबुधहृन्मनोरमतम प्रत्येकबुद्धर्षिराट्चातुर्यस्य चरित्रमेतदतुल चक्रे सुवर्णाचलम् ॥३२॥
चतुर्भिः कलापकं ॥
श्रीमत्सूरिजिनेश्वरप्रभृतिभिः साहित्यसिंधोः पिवैः, श्रीद्विव्याकरणं(?)सुधीभिरमलीचक्रे प्रयत्नाच्च तत् ।
प्रेक्षावत्प्रवरैः परैश्च विमलीकार्य विचार्याऽऽदराद्, रुद्राग्नीदु १३११ शरत्तपस्यविमलैकादश्यहेऽपूरि च ॥३३॥
सोदर्यौ गणिवीर-कीर्तिकलशौ धुर्यौ मनीषावतामात्मोपजवदादरेण तदिद श्रेयोमुख स्वात्मनः ।
आदर्श प्रथमे समक्रमयतां निर्वणनायाभितो, मान स्पष्टमनुष्टुभाऽयुतमिह त्रिंशैकशत्या युतम् ॥३४॥
अङ्कतोऽपि १०१३० ॥
हारस्तेजस्विसारः किमपि सरभसान् रत्नवाणिज्यभाजः, सद्यो यद्वद्विदध्याच्च चणकवणिजोऽप्येवमेतत् प्रतीतम् ।
तच्चेन्चेतस्सु सौधद्रव इव सहृदां मद्वचस्तत्किमन्यैः, यद्वाऽन्येऽप्येतदुक्त्या सहृद इदमतः सार्विकं सौधसत्रम् ॥३५॥
मध्येस्वर्गितरङ्गिणीपरिवृढोद्यत्पद्मपद्माकर, क्षोणीपृष्ठबकस्थले नवनवारामाभिरामेऽभितः ।
यावद्देवगृहश्रियं कलयति स्वर्धामलीलाचलस्तावच्चित्रमिद चरित्रमुदियाद् विश्वस्य कर्णोत्सवः ॥३६॥
गुरुगिरिविहितास्थः पुण्यपर्वप्रवालः, सुभगविमलमुक्ताशब्दधर्मैकहेतुः ।
सफलमृदुलताढ्यः स्फारतेजोविभूतिस्त्रिजगति वरिवर्त्ति श्रीमदूकेशवंशः ॥१॥
साधुस्तत्रास्त्यगाढः किमपि परममाहेश्वरः श्रीनिवासः,
प्रेक्ष्य व्यासस्य दौष्टय समजनि सकुलः श्राद्धरत्नं क्षणाद् यः ।
तत्सूनुर्जामुणागो निरवधिविभवस्तस्य वोहित्थसाधु-
स्तत्पुत्रः पद्मदेवोऽग्रजनन इतरः शुद्धधीर्वील्हनामा ॥२॥
दीपः प्रदीपादिव पद्मदेवात् क्षेमधरोऽभूदनुरूपरूप ।
यद्वाहुगेह गुणलिप्सयेव चक्रे रमा साध्व्यपि नित्यवास ॥ ३ ॥
महेन्द्र-प्रद्युम्नौ यतिपरिवृढौ स्वाग्रजसुतौ, य उत्प्रेक्ष्योत्सूत्राचरितभणिती सात्त्विकमणिः ।
परौ वा सत्यज्याऽऽश्रयत जिनचद्र गुरुमथो, महेन्द्रप्रद्युम्नौ न हृदि जिनचंद्रक्षणकणे ॥४॥
यो व्यातनोद्वजयमेरुपुरे पुरस्तात् पार्श्वप्रभोः किमपि मण्डपमद्भुतश्रि ।

विश्वत्रयभ्रमपरिश्रमविह्वलाया विश्राममन्दिरमिव स्वककीर्त्तिलक्ष्म्याः ॥५॥
कलत्रद्वयमस्याभूत् क्रमशः क्रमशालिनः । पुण्यश्रीर्नु यशोदेवी फलश्रीरिव हंसिनी ॥६॥
जज्ञुस्तस्य महोदधेर्बहुतरा रत्नोपमाः सूनवः, सम्पूर्णा गुणसम्पदा भुवि यशोदेवीसरित्कुक्षिजाः ।
कोऽप्येतेषु जगद्धरः सुकृतिनामग्रेसरः कौस्तुभश्रीः श्रीमत्पुरुषोत्तमस्य हृदये वासित्वमैद् यो गुणैः ॥७॥
श्रीमत्पार्श्वस्य नेतुः सदनममदन स्वर्विमानोपमान, पुर्यां श्रीजेसलस्य व्यररचदचिराच्चाभितो भूषणानि ।
गेहे साधर्मिकोर्वीरुहवनमनु चाञ्छिन्नवात्सल्यकुल्यां, पूरेणावीवहद् यो मरुषु किमपर प्राप कल्पद्रुमत्वम् ॥८॥
शालीनतालीश्रीशील यदात्मजमपालयत् । तस्य साडलही नाम्ना सा बभूव सधर्मिणी ॥९॥
तस्याभवन्मतनया. सुनयास्त्रयोऽमी, तेषामय धुरि यशोधवलो यशोब्धिः ।
माध्यदिनो भुवनपाल इलापससदुज्ज्वालकीर्तिरनुजः सहदेवनामा ॥१०॥
आमुला हीरलेत्येषा भगन्यौ चन्दनवर्द्धिके । भारतीश्रीश्रियौ ये च कुलद्वयमभूषताम् ॥११॥
इह च भुवनपालः प्रीतदिकचक्रवाल., स्वगुरुजिनपतीशस्तूपमूर्त्ति ध्वजस्य ।
विघटितमधिरोहं कारयित्वा बलाद् यो, जगति जयपताकां प्रापयामास सघम् ॥१२॥
नित्य श्रीगुरुपर्युपास्तिरसिक सप्रीतसाधर्मिकः, षोढावश्यककर्मशौचरुचित सद्ब्रह्मचर्यादृतः ।
अश्रान्त स्मृतवान् नमस्कृतिमहामत्र प्रतिष्ठापनाव्याजाद्धीरजिन सुवर्णपुरुष सशोधयामास यः ॥१३॥

तस्य प्रिया त्रिभुवनपालधीदा रघुप्रभोरिव जनकस्य धीदा ।
पुत्रद्वय समजनि खीम्वसिंहाऽभयाह्वय कुशलवल्लीलमस्य ॥१४॥
आश्चर्यवर्यमणिरोहणरोहणाद्रिं प्रत्येकबुद्धचरित ललित विभाप्य ।
साधु सुधीर्भुवनपाल उदारचेता एष स्वपुण्यमिव लेखयति स्म मूर्तम् ॥१५॥
सूरिर्जिनवल्लभ सुगुरुर्जिनदत्त इत्यनु च जिनचन्द्र उदगात्ततो जिनपतिः ।
तत्पदोदधिर्जिनेश्वरसुगुरुमरये पुस्तिकाद्वयमदोऽसौ ददे प्रवचिदे ॥१६॥

एकस्तम्भे सुरशिखरिणा भूगुन स्वत्रगेऽस्मिन् प्रासादेऽर्केन्दुसपरिवृतोऽहत्प्रतापः सुराजा ।
यावद् राज्य सृजति भुवमेकातपत्र हि तावत् सूरिव्यासाः प्रतिपदमिद तत्पुरो वाचयतु ॥१७॥ छ ॥
॥ मङ्गलमस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क २७३

प्रत्येकबुद्धचरित्र पद्य पत्र २४८। **भा.** स.। **क.** लक्ष्मीतिलक। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १८।×२।

पत्र ६३-६५, ६७, ६९, ७५, ७७-७९, ८३, ८५, ८७, ९३, ९५, ९७, ९८, १००, १०१, १३०, १३१, १४५, १४९, १५३-१५८, १८४-१८९, १९१, १९२, १९४, २०३, २०४, २११, २१३-२१५, २१७, २१८, २३३-२३७, २४०, २४२, २४४, २४७ नथी।

क्रमाङ्क २७४

नरवर्मचरित्र-सम्यक्त्वालंकार अपूर्ण पत्र ३२४। **भा.** स.। **क.** वाचनाचार्य विवेकसमुद्रगणि। **ले. सं.** १५ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८॥×२ ।

पत्र ५८, ६०, ६४, ६५, ७२, ८२, ८६, ८७, १२२, १४९, १५१, १६६, १९१, १९४, १९७, २०१, २१३, २१४, २१८, २२०, २२१, २२२, २३४, २३७, २४४, २६४, २६९, २७१, २७४, २७६, २७८, २७९, २८१, २८६, २८८, २८९, २९२, २९३, ३०२-३०४, ३२३ नथी।

क्रमाङ्क २७५

सामाचारी बीजकसह पत्र १८८। **भा.** स.। **क.** तिलकाचार्य। **ले. सं.** १४०९। **संह** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×२॥

अन्त—

इति श्रीतिलकाचार्यविरचिता सामाचारी समाप्ता ॥छ॥श्री.॥ सवत् १४०९ वर्षे पोष शुदि १० रवौ श्रीपूर्णिमापक्षीय प्रथमशाषीय। श्रीसर्व्वाणदसूरिपट्टे श्रीजयसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणप्रभसूरि शिष्य वीरचंद्रेन वचावाग्रामे सामाचारीपुस्तिका लिखिता ॥छ॥श्रीः॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृश लिखित मया। यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥
भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा हन्युमन्युस्तथैव च। कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिपालयेत् ॥२॥
उदकानलचौरेभ्यो मूषकेभ्यस्तथैव च। कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिपालयेत् ॥३॥

क्रमाङ्क २७६

अभयकुमारचरित्र पत्र २२०। **भा.** स.। **क.** चद्रतिलकोपाध्याय। **ग्रं.** ८९६४। **र. सं.** १३१२। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२॥।

पत्र २८, ३४, ५४, ५५, १११, १४२, १४४ नथी।

क्रमाङ्क २७७

अभयकुमारचरित्र त्रूटक पत्र २९४। **भा.** स। **ले. सं** अनु. १५ मी शताब्दी। **संह.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८×२॥। वचमां केटलांक पानां नथी।

क्रमाङ्क २७८

ऋषिमंडलप्रकरण वृत्तिसह प्रथमखंड पत्र १९९। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** १३८०। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १७॥×२।

अन्त—सवत् १३८० आषाढ सुदि ५ भौमे ॥छ॥

क्रमाङ्क २७९

(१) आशापल्लीयउदयनविहारस्थजिनबिम्बअवन्द्यत्वमतव्यवस्थापन पत्र २-४२। **भा.** स.। **क.** प्रद्युम्नसूरि। पत्र ३१–३२ नथी

आदि—

स्याद्वादामृतसंसिक्ताः कदाग्रहविषापहाः। वन्दे जैनेश्वरीर्वाचः परास्तसुमनःशुच ॥१॥

अन्त—

ततश्च निःशेषदोषप्रमोषपोषितः परतीर्थिकापरिगृहीतत्वे सति श्वेताम्बरयतिप्रतिष्ठितार्हद्‌बिम्बत्वादिति हेतुः स्वसाध्यं साधयन्न गीर्वाणप्रभुणाऽप्यपहस्तयितु पार्यते इति। तथा च—

औष्ट्रिकमतकालकूटकुम्भो भुवनातङ्कनिमित्तमत्र योऽभूत्।
उपपत्तिपरम्पराप्रहारैः सोऽयमभञ्जि सभासदां समक्षम् ॥१॥

आसीत् खर्वितवादिगर्वगरिमा श्रीदेवसूरिप्रभुस्तत्पादाब्जमधुव्रतः समजनि श्रीमन्महेन्द्रप्रभुः।
शिष्यस्तस्य पितुः प्रबोधविधये सिद्धान्तसिन्धोः सुधामुद्धृत्यास्खलित विचारमचिरात् प्रद्युम्नसूरिर्व्यधात्॥छ॥ ॥

(२) **आशापल्लीयउदयनविहारस्थजिनबिम्बावन्द्यत्वमतनिरास (अपूर्ण)** पत्र ४२-११० । **भा.** स. । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३॥।×२।. । पत्र ८४–८६ नथी

आदि—

५० ॥यस्यान्तःसभमायतांसलभुजास्तन्वंश्चतस्रः स्म, भान्ति स्म च्युततान्तिकान्तिलहरीलोलत्त्रिलोकश्रियः ।
शंके वल्गदुदग्रविग्रहभवोपग्राहिकर्मद्विषाऽमा स्यूता विजिगीषया भगवता पायात् स **वीरो** जिनः ॥१॥

इह हि भगवदागमेषु बहुधा निर्णीतमायतनानायतनविभाग धीशतया यथावदधिगामुका अप्यधीशतया कदभिनिवेशावेशास्कन्दितमानसा मानसानुमच्छिखराधिरोहप्ररोहदुच्चावचवचनाम्बराः केचित् सिताम्बराः 'आयतनमेवार्हद्बिम्बम् न तु कथञ्चिदनायतनमपीति बाहुदण्डमुद्धृत्य मुग्धेभ्यः प्रतिदिशमनिशमुपदिशन्तः **श्रीगूर्जरत्रोदरे श्रीमदाशापल्लीपुरे**ऽसख्यसंख्यावन्मुख्यस्वपक्षपरपक्षसामाजिकसमाजसमक्ष बहुशो निःप्रश्नव्याकरणीकृत्यास्माभिः सिद्धान्तरहस्यसुधारस पायिता अपि भाग्यविपर्ययात् तमुद्वम्य स्ववसतिकोणके प्रविश्य प्रतिपदमसभ्यवाग्वर्षणेन स्वयमेव प्रकृतप्रमेयस्य सभानर्हतां सूचयन्त आजन्मप्रपीतोत्सूत्रसूत्रणविषोद्गारप्रकार प्रेक्षावतामनुपादेय प्रमेयं चिकीर्षन्तः प्रकृतिस्वच्छस्य कज्जलसन्निधेः कालिम्नावभासिनः स्फटिकस्येव निसर्गायतनस्य पार्श्वस्थादिपरिग्रहेणानायतनतया प्रतिभास्वरस्यापि तस्यायतनत्वसिद्धयेऽनुमानप्रमाणमेवमुपन्यस्यन्ति–**आशापल्लीवदनतिलकायमानोदयनविहारान्तर्वर्तीन्यर्हद्बिम्बानि** यतिगृहिणां वन्दनीयानि, परतीर्थिकापरिगृहीतत्वे सति श्वेताम्बरयतिप्रतिष्ठितार्हद्बिम्बत्वात् । यदेव तदेवं यथोभयवादिसम्प्रतिपन्नमनिश्राकृत, तथा चैतानि, तस्माद् वन्दनीयानि इति ॥

अन्त—

उद्धृत्य श्रुतवारिधेर्निरवधेः प्राकसूरिवृन्दारकैर्न्यस्ता शस्यरहस्यमहतिसुधा सद्ग्रन्थकुण्डेष्वियम् ।
तामेतां ग्रसमान उद्धततमोरूपो निरूप्यैषको, निष्कण्ठ कठिनेतराद्भुतनि(गि)राचक्रेण चक्रि(के) बुधाः॥
पूज्यश्री**जिनवल्लभ**प्रभुपदाभ्यारोहरोहद्यश:सूरिश्री**जिन**दत्तदत्तपदवीराजीवर्नाभास्वता (तः) ।
शिष्य. श्री**जिन**चन्द्रसूरिसुगुरोर्विद्यासरस्वानिति, व्यध्वध्वसविधेर्व्यधा**ज्जिन**पति. सूरि: **प्र**बोधोदयम् ॥

क्रमाङ्क २८०

गणधरसार्द्धशतकप्रकरण वृत्तिसह द्वितीय खंड पत्र ३१६ । बीजी गाथाथी शरु । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** जिनदत्तसूरि । **वृ. क** सुमतिगणि । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारभ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५॥×२

आदि—

आद्यजिनप्रथमगणधरनमस्कारमाविष्कृत्येदानीं शेषतीर्थकृद्दशेषगणधारिणः स्तुवन्नाह ॥
अजियाइजिणिंदाण जणियाणदाण पणयपाणीण । थुणिणोऽदीणमणो ह गणहारीणं गुणगणोह ॥ २ ॥

अन्त—

इति श्री**यशोभद्राचार्य-संभूतविजयाचार्य-भद्रबाहुस्वाम्याचार्य-स्थूलभद्रस्वाम्याचार्याणां युगप्रधानानां चरितानि** समाप्तानि ॥१३॥छ॥ॐ॥ शुभ भवतु ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क २८१

गणधरसार्द्धशतकप्रकरण वृत्तिसह तृतीयखंड पत्र ३९३ । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** जिनदत्तसूरि । **वृ. क.** सुमतिगणि । **र. सं** १२९५ । **ग्रं.** १२१०५ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारभ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५॥।×२।

आदि—

इह च यद्यप्यार्यसम्भूतविजयादीन् सूत्रकारो भगवानग्रे प्रणंस्यति, तेषामपि चरितानां यशोभद्रयुगप्रवरचरिता-नुषक्तत्वेन तान्यप्यत्रैव प्रतिपादितानीति । अत्र च यशोभद्राचार्यस्य गृहस्थपर्यायो द्वाविंशति २२ वर्षाणि, व्रतपर्याय-श्चतुर्दश १४ वर्षाणि, युगप्रधानपद पञ्चाशत् ५० वर्षाणि, सर्वायुष्क षडशीति ८६ वर्षाणि मास ४ चतुष्क दिन ४ चतुष्टय च । तथा सम्भूतविजयाचार्याणां द्विचत्वारिंशत् ४२ वर्षाणि गृहस्थपर्यायः, चत्वारिंशत् ४० वर्षाणि व्रतपर्यायः, अष्टौ ८ वर्षाणि युगप्रधानपदम्, सर्वायुः ९० नवतिवर्षाणि मास ५ पचक दिन ५ पञ्चक च ॥

अन्त—

इति श्रीजिनदत्तसूरियुगप्रवरविरचितस्य श्रीगणधरसार्धशतकाख्यप्रकरणस्य वृत्तिः समाप्ता ।।छ।।

जज्ञे श्रीजिनदत्तसूरिसुगुरोः पट्टाचलोद्योतनस्फूर्जज्ज्ञानरुचिप्रतानतनुतानीता नतोद्यत्तमाः ।

सूरिः श्रीजिनचन्द्र इत्यपमलप्राज्ञत्सुवृत्तातुलः, सौन्दर्यादिकवर्ण्यनिर्मलगुणैश्चित्रीयितक्ष्मातलः ॥१॥

तस्याऽभूद् भूपमूर्द्धोद्धटमुकुटतटीकोटिघृष्टाङ्घ्रिपद्मः, शिष्यः शस्यो बुधौघैर्जिनपतिरिति सन्नामतः सूरिरुच्चैः ।

विख्यातः क्षोणिपीठे सुविहितयतिराट्चक्रचकाधिनाथश्छन्दोलङ्कारतर्कप्रमुखनिखिलसद्ग्रन्थविस्तारितार्थः ॥२॥

प्रतिदिनमपि सिद्धिप्रयसीसगसौख्यानुगतनवकथास्वाक्षिप्तचित्त निरीक्ष्य ।

क्षणमपि दयित तज्ज्ञानचारित्रलक्ष्मौ मुमुचतुरुदिता......त्मर्मीत्येव य च ॥३॥

सगुणनिजपत्नीना कालदोषादभावे ध्रुवमतिगुरुशोकात् सवविद्याः समेत्य ।

बत हृदयसमुद्रऽस्ताघगाम्भीर्यभाजि प्रकटितगुरुसत्त्वे यस्य सद्यो निपेतु. ॥४॥

तस्य स्वाचारनिष्ठाप्रसरगुरुतरावद्धकक्षस्य शश्वत्, निःक्लेशः शिष्यलेशः सुमतिगणिरिति ज्यातप्रसिद्धाभिधानः ।

निर्देशात् सद्गुरूणा सुनिबिडजडताश्लिष्टधीरप्यधीताऽल्पग्रन्थस्तत्प्रसादाद् व्यरचयदमला वृत्तिमेनां सुचेताः ॥५॥

प्रारब्धा श्रीस्तम्भतीर्थवेलाकूले कुले श्रियाम् । मण्डपदुर्गे विबुधै: स्वर्गे चेथ समर्थिता ॥६॥

तथा प्राय.—

प्रथमादर्शे लिखिता वृत्तिरिय श्रीजिनेश्वरगुरूणाम् । अस्मद्गुरुगुरुपट्टप्रतिष्ठितानां प्रभाववताम् ॥७॥

शिष्येण परोपकृतौ तपसि च बद्धोद्यमेन सदमेन । कायोत्सर्गेऽनन्द्रेण साधुना कनकचन्द्रेण ॥८॥

किञ्चित्—

हेमप्रभः शालिभद्रोऽमृतमूर्तिरिहाभवन् । लेखनात् पट्टिकामार्ष्टेर्घुटनाच्चोपकारिणः ॥९॥

इह यदनवबोधाद्राभसिक्यान्मया वा उत पत्तदुपयोगादन्यथा किञ्चिदुक्तम् ।

तदलमनलसाः प्राग ज्ञातसिद्धान्ततत्त्वा, मयकि कृतकृपाः श्रीधीधनाः शोधयन्तु ॥१०॥

कृत्वेमां विवृतिं यत्पुण्य समुपार्जित मया किमपि । तेन विविधधर्मरागी भूयाल्लोक समस्तोऽयम् ॥११॥

शरनिधिदिनकरसख्ये १२९५ विक्रमवर्षे गुरौ द्वितीयायाम् । राधे पूर्णीभूता वृत्तिरिय नन्दतात् सुचिरम् ॥१२॥

इति श्रीजिनपतिसूरियुगप्रवरविनेयपण्डितसुमतिगणिनामधेयविरचिता श्रीगणधरसार्द्धशतकवृत्तिः समाप्ता ॥छ॥ मङ्गलमस्तु समस्तसंघस्येति ॥छ॥ संवत् १२९५ वर्षे श्रीमज्जारापुरीनगरकच्छकादिकृतविहारकवेण सुमतिगणिना श्रीमण्डपदुर्गे वृत्तिरिय समर्थितेति । प्रथाग्र १२१०५ श्लोकमानेन ॥छ॥ॐ॥छ॥

यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥

भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा स्तब्धदृष्टिरधोमुखः । कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन प्रतिपालयेत् ॥छ॥

विदुषा जल्हणेनेद जिनपादाम्बुजालिना । प्रस्पष्ट लिखित शास्त्र वन्द्यं कर्मक्षयप्रदम् ॥शुभं भवतु ॥छ॥

क्रमाङ्क २८२

सुखबोधासामाचारी पत्र १११ । **भा.** प्रा. । **क.** श्रीचंद्रसूरि । **ग्रं.** १३११ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारभ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५×२. । पत्र १–५, ८१, ९२–९५, ९७ नथी ।

क्रमाङ्क २८३

अणुव्रतविधि पत्र ७७। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १७००। **ले. सं.** ११६९। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।×२।

आदि—नमो जिनागमाय ॥

नमिऊण भुवण.........................महावीर । वोच्छ सावगधम्म जिणवरदिट्ठ समासेण ॥

तुब्भे पुण तवचरण काऊण गेवेज्जेसु अहमिंदा देवा भविस्सह । एव वागरिए एयाओ सोउं वदिऊण गया देवलोय ॥ ग्रंथ श्लोक। १७०० ॥

एय अणुव्वयविहिं जो पढइ सुणेइ भावए णिच्च। सो सयलमलविमुक्को सासयसुहभायण होइ ॥छ॥

अणुव्वयविही सम्मत्ता ॥छ॥छ॥ॐ॥ सवत् ११६९ अश्वयुज सुदि ५ शुक्रदिने लिखितेति ॥छ॥

अणुव्रतानां सुविधेर्विवृत्तेः श्राद्धव्रजस्याऽस्युपकारिकायाः ।
श्रेयःकृते श्राद्धवरेण शुद्धश्रद्धामृता वेल्हकदेहजेन ॥१॥
ऊकेशवश्येन विवेकधाम्ना सत्पुस्तिका देवडशस्तनाम्ना ।
व्यतीर्यतैषा जिनपत्यभिख्याचार्याय वर्याय गुणौघभाजा ॥२॥

कांनकमलांकममल चद्रमरस्तरुणनयनमृगयूथाः । सतृषः सरंति यावत्ताव ज्जयादिय लोके ॥३॥छ॥

क्रमाङ्क २८४

(१) **तपोटमतकुट्टनशत** पत्र १-७। **भा.** स.। **क.** जिनप्रभसूरि।

आदि—

निर्लोठितशठकमठ त्रैलोक्यप्रथितचारुकारुण्यम् । प्रणिपत्य श्रीपार्श्व तपोटमतकुट्टन वक्ष्ये ॥१॥

अन्त—

इति जिनप्रभसूरिकृत तपोमतविकुट्टनशास्त्रममत्सर ।
भवति सूक्ष्मधिया परिभावयन् बुधजनो विधिमार्गविचक्षण ॥१०२॥
॥ इति तपोटमतकुट्टनशतम् ॥

(२) **तपोटर्षिमतखंडन स्वोपज्ञवृत्ति सह** पत्र ७-२०। **भा.** स। **क.** गुणप्रभसूरि। **ले. सं.** अनु. १६ मी शताब्दी। **संद्द** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।। आ प्रतिना अक्षरो घसाइ गया छे।

आदि—

श्रीवर्धमानमानम्य तथा जिनप्रभ गुरुम् । स्वोपज्ञकाव्यटीकेय क्रियते बोधहेतवे ॥१॥

प्रोद्भूत सगुणो गणो खरतरोऽशीत्यभ्रचन्द्रप्रमे १०८०
वर्षे नन्दखरुद्र ११०९ कालजनितो राकीयपक्षोऽपरः ।
अब्ध्येकांशुमिते तदाऽञ्चलमत विश्वाग्निके त्रैस्तुतः
कायाग्नीनमिते १२३६ यतिक्षणिगुणो ह्यवह्निचेवेसरः ॥१॥

व्याख्या—पूर्व सुविहितत्वेन प्रसिद्धो (इत्यादि)

अन्त—

अतस्तपोटर्षीणा जमाल्यन्वयोद्भूतित्व न विरुद्धमिति। यदुक्त श्रीगुरुभिः-

एषां जमालिसाधर्म्यं पूर्वयुक्त्या प्रतिष्ठिते । निह्नवत्व कथकार न श्रद्धेय विवेकिभिः ॥

इत्यादि मत्वा एतान् तपोटर्षीन् परिहृत्य सर्वसुविहितेष्वादरः कार्य इति ॥छ।। श्रीमज्जिनप्रभसूरिपौत्रेण गुणप्रभेण कृत तपोटर्षिमतखडन समाप्त ॥छ॥शुभ भवतु ॥छ॥

क्रमाङ्क २८५

कातंत्रव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विवरणपंजिका टिप्पणी सह–तद्धितपाद पर्यंत अपूर्ण पत्र १८१। **भा.** सं.। **क.** त्रिलोचनदास। **ले. सं.** अनु १४ शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२।

आदि—

॥ ॐ नमः सरस्वत्यै ॥

प्रणम्य सर्वकर्त्तारं सर्वदं सर्ववेदिनम्। सर्वीयं सर्वगं शर्वं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥

दुर्गसिंहोक्तकातत्रवृत्तिदुर्गपदान्यहम्। विवृणोमि यथाप्रज्ञमज्ञसज्ञानहेतुना ॥

तत्रादौ तावदिष्टदेवतानमस्कारप्रतिपादनार्थं शास्त्रस्य सम्बन्धप्रयोजनाभिधानार्थं च वृत्तिकारः श्लोकमेकं चकार। देवदेवमित्यादि ॥

क्रमाङ्क २८६

कातंत्रव्याकरण दुर्गसिंहवृत्ति विवरणपंजिका–आख्यातवृत्ति पत्र २०३। **भा.** स.। **क.** त्रिलोचनदास। **ले. सं.** १३०८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥×२।

आदि—

ॐ सिद्धिः ॥ अथ इह यद्यपि प्रश्नानतर्यमगलाधिकारेष्वथशब्दो वर्त्तते तथाऽप्यानंतर्यार्थे एव युज्यते। तथाहि–प्रश्न पर्यनुयोग उच्यते। स च सामान्यरूपेणावगतस्य विशेषरूपतयाऽनवधारितस्य वस्तुनो भवति। यथा अथ किमिदमिति। त्यादीनि तु सर्वथाऽविदितान्येव, न तस्यावकाशः। अधिकारार्थोऽपि न युज्यते।

अन्त –

इति त्रिलोचनदासविरचितायां दुर्गसिंहोक्तकातत्रवृत्तिपंजिकायामाख्यातेऽष्टमः पादः समाप्तः ॥ छ ॥ संवत् १३०८ वर्षे आषाढ वदि १ गुरावद्येह नलकच्छकपुरे समस्तराजावलीविराजिमहाराजाधिराजप्रौढप्रतापलिम्बार्यावरलब्धश्रीकश्रीमज्जयवर्म्मदेवराज्ये आख्यातवृत्तिपंजिका लिखिता ॥

क्रमाङ्क २८७

कातंत्रव्याकरणदुर्गसिंहवृत्तिविवरणपंजिका–आख्यातवृत्ति तथा कृद्वृत्ति पत्र १९६। **भा.** सं.। **क.** त्रिलोचनदास। **ले. सं.** १४११। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२।

अन्त—

॥छ॥ इति त्रिलोचनदासविरचितायां दुर्गसिंहविरचितकातन्त्रवृत्तिविवरणपंजिकायां कृत्सु षष्ठः पादः समाप्तः ॥छ॥छ॥छ॥ सवत् १४११ वर्षे पौष शुदि ७ सोमे अद्येह श्रीमदणहिल्लपुरपत्तने खरतरगच्छीय भट्टारिकश्रीजिनचद्रसूरिशिष्येण प. सोमकीर्त्तिगणिना आत्मावबोधनार्थं वृत्तित्रितयपंजिका लिखापिता ॥ लिखित प. महिपाकेन ॥छ॥छ॥छ॥

यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखित मया। यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥ १ ॥

क्रमाङ्क २८८

(१) **कातंत्रव्याकरणदुर्गसिंहवृत्ति विवरणपंजिका–आख्यातवृत्ति** पत्र २७०। **भा.** सं.। **क.** त्रिलोचनदास।

(२) **कातंत्रव्याकरणदुर्गसिंहवृत्ति विवरणपंजिका–कृद्वृत्ति** पत्र १६४। **भा.** सं.। **क.** त्रिलोचनदास। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२।। पत्र ५९–६० नथी।

क्रमाङ्क २८९

कातंत्रव्याकरणदुर्गसिंहवृत्ति दुर्गपदप्रबोध पत्र १९१। **भा.** स.। **क.** प्रबोधमूर्ति गणि। **ग्रं.** ७४९१। **र. सं.** १३२८। **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी उत्तरार्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×२

आदि—

॥ अर्हम् ॥ अथ। सूत्रे द्योतकादथशब्दात् सिः। कश्चित्तु वृत्तावनन्तराणीति दर्शनाज्जसित्याचष्टे। द्वयस्या-ऽप्यव्ययात्चेति लोप.। परस्मैपदानीत्यत्रालुक्समासः ॥१॥ अथशब्द आनन्तर्य च तद्धितपादमपेक्ष्य वेदितव्यम्। तादृश चानन्तर्य त्यादीनामेवास्ति, न तु सन्नादीनामपि, तेषामनेन पादेन व्यवहितत्वादित्याह। अथानन्तराणि त्यादीनि स्यामहिपर्यन्तानीति।

अन्त—

इति श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्यलेशप्रबोधमूर्त्तिगणिविरचिते वृत्तिदुर्गपदप्रबोधे कृत्सु षष्ठः पादः समाप्तः ॥छ॥

ग्रन्थ सम्यगमु विभाव्य निखिलां वृत्तिं प्रसङ्गात्तथा, क्वापि क्वापि च पञ्जिकामपि सभावार्थां विदित्वा जनाः। विज्ञाय क्रमशस्ततोऽखिलमतग्रन्थार्थसार समालोच्याऽऽसेव्य च मुक्तिमार्गमचिराज्ज्ञानं लभन्तां परम् ॥१॥

चान्द्रे कुलेऽजनि गुरुर्जिनवल्लभाख्योऽर्हच्छासन प्रथयिताऽद्भुतकृच्चरित्रः।

तच्छिष्यमौलिर्जिनदत्तगुरुप्रवीरश्चक्रेऽखिलं विधिपथ सुवह समन्तात् ॥२॥

तच्छिष्यो जिनचन्द्रसूरिरुदगाच्चित्रैरनन्तैर्गुणैः, सौन्दर्यादभिरुच्यते स्म कृतिभिय· पद्मविशो जिनः। तत्पट्टाब्जसितच्छदो जिनपतिः सूरिः प्रतापाद्भुतो, मायद्वादिगजेन्द्रसिंह उदयन्सौभाग्यभाग्यावधिः ॥३॥ ज्ञानस्वर्द्रुमवर्वरस्तवसुमं· सत्सौरभरद्भुतैस्तत्कालप्रथितैर्जिनौकसि जिनान् येऽभ्यर्चयन्त्यन्वहम्। यत्कीर्त्तिप्रसवस्रजा तु जनता भूषत्यशेषा दिशस्ते श्रीसूरिजिनेश्वरा युगवरास्तत्पट्टमध्यासते ॥४॥ वृत्तेर्दुर्गपदप्रबोधरसवत्येषा जगत्यं भृश निःस्वेनापि धिया व्यधायि सुगुरोरस्य प्रमादान्मया। तन्निःशेषविशेषबोधनिपुणैरेषाऽधिक सस्पृहैः सद्बुद्धयन्नविवृद्धये रविविभा यावन्मुदा स्वाद्यताम् ॥५॥ षट्तर्कागमशब्दलक्ष्ममुखसद्विद्याब्धिकुम्भोद्भवैः· काव्य मुखशुक्तिज कृतधियां निर्दूषण सद्गुणम्। दीप्र चाऽपि कृत सतामधिहृद हारायते तरसौ, श्रीलक्ष्मीतिलकाभिषेकतिलकैर्ग्रन्थो ह्युदज्वल्यत ॥६॥ विक्रमनृपवर्षेऽष्टाविंशत्यधिके त्रयोदशशतेऽस्मौ १३२८। पूर्णः शुच्यां प्रतिपदि राधेऽश्विन्यां गुरौ वारे ॥७॥ चतुःसप्ततिशत्यस्यैकनवत्यधिका मितिः । चतुःसप्ततिमाधत्ता........ ..मतां मताम् (?) ॥८॥ सप्रशस्तिग्रन्थाग्र ७४९१ ॥छ॥

क्रमाङ्क २९०

(१) **कातंत्रोत्तर विद्यानंदिवृत्ति-पंचसंधिपर्यंत** अपूर्ण पत्र ७४। **भा.** स.। **क.** विजयानद।

(२) **कातंत्रोत्तर विद्यानंदिवृत्ति-नामद्वितीयपादपर्यंत टिप्पणीसह** पत्र ४६। **भा.** सं.। **क.** विजयानद। **ले. सं.** १२४५।

॥छ॥ इति विजयानन्दविरचिते कातत्रोत्तरे विद्यानदापरनाम्नि नाम्नि द्वितीयः पादः समाप्तः ॥ सवत् १२४५ अशिनि (अश्विन) सुदि २ शुक्रे। शिवमस्तु सर्व्वे[षा]म् ॥

(३) **कातंत्रोत्तर विद्यानंदिवृत्ति-कारकप्रकरण** पत्र २७। **भा.** स.। **क.** विजयानद। **ले. सं.** १२४५। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×२।।

अन्त—

॥छ॥ इति विजयानन्दविरचिते कातंत्रोत्तरे विद्यानदापरनाम्नि कारकप्रकरणं समाप्तमिति ॥छ॥छ॥ सम्वत् १२४५ ।।छ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क २९१

कातंत्रोत्तर विद्यानंदवृत्ति-तद्धितप्रकरण पर्यन्त पत्र २०९ । **भा.** स. । **क.** विजयानन्द । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी अन्त । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १८।×२।

क्रमाङ्क २९२

पंचग्रंथी-बुद्धिसागरव्याकरण पत्र ३७४ । **भा.** स. । **क.** बुद्धिसागरसूरि । **र. सं.** १०८० । **ग्रं.** ७००० । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १७×२।. । पत्र २०१ नथी ।

क्रमाङ्क २९३

सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद्वृत्ति सप्तमाध्याय पत्र १९३ । **भा.** स. । **क.** हेमचन्द्राचार्य । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १६।×२।

क्रमाङ्क २९४

सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद्वृत्ति-आख्यातवृत्ति तथा कृद्वृत्ति पत्र २७७ । **भा.** सं. । **क.** हेमचन्द्राचार्य । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२।×२।

क्रमाङ्क २९५

सिद्धहेमशब्दानुशासनबृहद्वृत्ति-तद्धितप्रकरण अपूर्ण पत्र २६५ । **भा.** स. । **क.** हेमचद्राचार्य । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १९॥।×२।.। पत्र २०, २५ नथी ।

क्रमाङ्क २९६

(१) **सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद्वृत्ति द्वितीयाध्याय तृतीयपाद** पत्र ५४–८६ । **भा.** स. । **क.** हेमचद्राचार्य । **ले. सं.** १३मी शताब्दी अत । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३।×२।

अन्त—

॥छ॥ मगलमस्तु आचार्यश्रीचंद्रप्रभसूरेः ॥छ॥छ॥

(२) **सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद्वृत्ति तृतीयाध्याय द्वितीयपाद** पत्र २०४–२४८ । **भा.** सं । **क.** हेमचंद्राचार्य । **ग्रं.** ८१२ । **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी अत । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३।×२।

पत्र २४८ मां सरस्वतीदेवीनु ऊर्मीमुद्रामां सुदर **चित्र** छे ।

क्रमाङ्क २९७

सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति पंचमाध्याय-कृद्वृत्ति पत्र ९१ । **भा.** स. । **क.** हेमचंद्रसूरि । **ग्रं.** १६७८ । **ले. सं.** १२०६ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×१॥

अन्त—

॥छ॥ इत्याचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितायां सिद्धहेमचन्द्राभिधानस्वोपज्ञशब्दानुशासनलघुवृत्तौ पंचमोऽध्यायः समाप्तः ॥छ॥ शिवमस्तु सर्वभूतानां ॥छ॥ प्र. श्लो. १६७८ । संवत् १२०६ आषाढ वदि ५ सोमे ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क २९८

सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति तृतीयाध्याय तृतीयपादथी पंचमाध्याय चतुर्थपादपर्यन्त-आख्यातवृत्ति तथा कृद्वृत्ति पत्र १२३। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **ग्रं.** १६००। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२

क्रमाङ्क २९९

सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति-तद्धितवृत्ति अपूर्ण पत्र १७१। **भा.** सं.। **क.** हेमचन्द्राचार्य। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥।×२,। पत्र ९९-१३२ नथी।

क्रमाङ्क ३००

सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति षष्ठ सप्तमाध्याय-तद्धितवृत्ति टिप्पणीसह पत्र १९८। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **ले. सं.** अनु. १३ शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११×२।। **टिप्पणी** बृहद्वृत्त्यनुसारिणी।

क्रमाङ्क ३०१

सिद्धहेमशब्दानुशासन रहस्यवृत्ति (सिद्धहेम लघुवृत्तिसंक्षेप) पत्र १६०। **भा.** सं.। **ले. सं.** १२१८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३॥।×२।

अन्त—

॥छ॥ इत्याचार्यश्रीहेमचद्रविरचितायां स्वोपज्ञसिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनरहस्यवृत्तौ सप्तमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः ॥ सप्तमोऽध्यायः ॥छ॥ शुभं ॥छ॥ सवत् १२१८ वर्षे ॥ श्रावण वदि ७ रवौ मंडलीवास्तव्य-श्रीजाल्योधरगच्छसंतानके आसदेवसुः ले० पल्हणेन श्रीभद्रेश्वरसूरियोग्या पुस्तक लिखितमिति ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ३०२

सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुन्यास (दुर्गपदव्याख्या)-व्याकरणचतुष्कावचूर्णि षष्ठपाद-पर्यन्त पत्र १८६। **भा.** स.। **क.** कनकप्रभसूरि। **ग्रं.** २८१८। **ले. सं.** १२७१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×२.। **प्रथम आदर्श** (?)।

अन्त—

व्याकरणचतुष्कावचूर्णिकाया षष्ठ पादः समाप्तः ॥ प्रथमपुस्तिका प्रमाणीकृता ॥छ॥ सवत् १२७१ वर्षे कार्तिक शुदि षष्ठयां शुक्रे श्रीनरचन्द्रसूरीणां आदेशेन प. गुणवल्लभेन समर्थितेय पुस्तिकेति ॥छ॥ ग्रन्थाग्र २८१८ ॥ मगलमस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ३०३

(१) **धातुपाठ** पत्र १८। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. १३ शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×२

आदि—

ॐ नमः शिवाय ॥ भू सत्तायामुदात्तः। एध वृद्धौ। स्पर्द्ध सहर्षे। गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च। बाधृ लोटने। नाथृ याच्ञोपतापैश्वर्याशी षु।

अन्त—

श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकाणामश्वतरेतकलोपश्चपुच्छादिषु धात्वर्थे इति सिद्धम् ॥छ॥

चुरादयो ण्यन्ताः ॥छ॥ इति धातवः सम्पूर्णाः ॥छ॥

(२) **विभक्तिविचार** पत्र १६। **भा.** सं.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२

आदि—

७॥ नमो जिनाय॥ सुप्तिङ्न्त पद। अत्र सुपिति स्यादयः सप्त विभक्तयो युज्यते। तत्र प्रथमा, प्रथममवगता प्रथमैव तावद्विचार्यते, का पुनरिय प्रथमा? सि औ जसिति। तस्याः पुनरेतल्लक्षण, प्रातिपदिकार्थेत्यादि, तत्र प्रातिपदिकार्थः सत्ताऽद्वयवादीनामेतद्दर्शन, सत्ता प्रातिपदिकार्थ इति, तथा च तेषां दर्शन–सत्ता नाम काचिदनादिनिधनरूपा नित्यत्वेन व्यवस्थिता सर्वशब्दैरभिधीयत इति। तदुक्त–सबधिभेदात्सत्तव विद्यमाना गवादिषु जातिरुच्यते। तस्यां सर्वे शब्दा व्यवस्थिताः, प्राप्तक्रमविशेषेषु क्रियैवाभिधीयते। क्रमरूपस्य सहारे तत्सत्त्वमिति चोच्यते। अतस्तासां प्रातिपदिकार्थं धात्वर्थं च प्रचक्षते। सा नित्या सा महानात्मा तामाहुस्तत्वलादयः।

अन्त—

तथाहि–पाकोऽधिश्रयण तुषसंप्रक्षेपेण दर्विघटनलक्षणो देवदत्तव्यापारो नासौ काष्ठादीनां भवितुमर्हति। काष्ठस्य व्यापारो ज्वलन। स्थाल्याश्च सभवधारण। तस्मात्प्रतिकारक क्रियाभेदो अंगीकतव्यः। यद्यव क्रियाभेदेन परस्परासबंधादसत्येकवाक्यत्वे देवदत्तः काष्ठैः स्थाल्यामोदन पचतीति ॥छ॥ विभक्तिविचारः समाप्तः ॥०॥ श्रीम**जिज**नचन्द्रसूरिशिष्येण **जि**नमतसाधुना पुस्तकमिदमलेखि ॥छ॥

क्रमाङ्क ३०४

स्याद्यंतप्रक्रिया पत्र ९४। **भा.** स.। **क.** सर्वधरोपाध्याय। **ले. सं** १२०७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२।

आदि—

ॐ ॥ सर्वज्ञाय नमः ॥

प्रणम्य शिरसा सार्धं सर्वज्ञ जगतां गुरु। स्याद्यन्तप्रक्रियां वक्ष्ये सविशेष समासतः ॥

रूढिशब्दाः प्रकीर्त्यन्ते पुसि क्लीबे स्त्रियामपि। गुणद्रव्यक्रियायोगात् त्रिलिंगास्तदनतरम् ॥

विप्राग्निसखिपत्यशुक्रोष्टृप्रतिभुवः पिता। ना प्रशास्ता च रा गो ग्लौ. स्वरान्ताः पुसि कीर्त्तिताः।

तत्र विप्रशब्दस्य धातुविभक्तिवर्जमर्थवल्लिगमिति लिंगसज्ञायामेकवाक्यतापक्षे तस्मात् परा विभक्तय इत्यादिना सि औ जसित्यादीनि सप्त त्रयाणि सप्त विभक्तयः प्रथमादिशब्दवाच्या भवति ॥

अन्त—

॥छ॥ भवति चात्र सग्रहश्लोकाः ॥

एकादिका भवेत्सख्या सख्येये च दशावधेः। ऊनर्विशत्यादिस्त्वेके सदा सख्येयसख्ययोः ॥

ऊनविंशत्यादेर्भेदे वृत्तिर्द्वित्वादिकेष्वपि। आद्यतर त्रिलिंगेषु निर्लिङ्गान्तदशावधेः ॥

स्त्रियां वा नवतेस्तत्र शतादिस्तु नपुसके। स्त्रीनपुसकयोर्लक्षमर्बुदं पुनपुसकम् ॥

स्त्रियामेव भवेत्कोटिर्भूम्नि कतिरलिंगकः। यतिस्ततिरपीत्येके स्त्रियां पक्तिर्दशार्थिका ॥छ॥

इत्युपाध्यायसर्वधरविरचितस्याद्यतप्रक्रियायां त्रिलिंगकाण्डश्चतुर्थः समाप्तः ॥छ॥ सवत् १२०७ माघ सुदि २ रवौ मंगलम् ॥

क्रमाङ्क ३०५

प्राकृतप्रकाश अपूर्ण पत्र २८। **भा.** सं.। **क.** वररुचि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२

क्रमाङ्क ३०६

हैम लिंगानुशासन स्वोपज्ञविवरणसह पत्र १०३। **भा.** सं.। **क.** हेमचंद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ३३८४। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी अत। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५×२।

क्रमाङ्क ३०७

हैम उणादिगण स्वोपज्ञ विवरणसह पत्र ८३। **भा.** सं.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **ग्रं.** ३००२। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी अत। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५×२।

क्रमाङ्क ३०८

धातुपारायण पत्र १८१। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ५५००। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी अत। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २४॥×२।

क्रमाङ्क ३०९

हैम अनेकार्थकोश अनेकार्थकैरवाकरकौमुदीटीकासह प्रथमखंड त्रिस्वरकांड१२६श्लोक-पर्यन्त पत्र ३३६। **भा.** स। **मू. क.** हेमचंद्राचार्य। **टी. क.** महेन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारंभ। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १९×२।

क्रमाङ्क ३१०

हैम अनेकार्थकोश अनेकार्थकैरवाकरकौमुदीवृत्तिसह द्विस्वरकांडपर्यन्त प्रथमखंड अपूर्ण पत्र २६४। **भा.** स.। **मू. क.** हेमचंद्राचार्य। **वृ. क.** महेन्द्रसूरि। **ले. सं** अनु १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×२। पत्र १९५, २०५, २२२-२२७ नथी।

आदि—९०॥ अर्हम् ॥

परमात्मानमानम्य निजाऽनेकार्थसङ्ग्रहे। वक्ष्ये टीकामनेकार्थकैरवाकरकौमुदीम् ॥१॥

विश्वप्रकाश-शाश्वत-रभसा-ऽमरसिंह-मंख-दुर्गाणाम्। व्याडि-धनपाल-भागुरि-वाचस्पति-यादवादीनाम् ॥२॥

शास्त्राणि वीक्ष्य शतशो धन्वन्तरिनिर्मितं निघण्टुं च। लिङ्गानुशासनानि च क्रियतेऽनेकार्थटीकेयम् ॥३॥

लिङ्गानुशासनेऽस्माभिर्वर्णितो लिङ्गनिर्णयः। अतो न प्रथितः सूत्रं ग्रन्थगौरवभीरुभिः ॥४॥

इह सोऽप्यर्थविज्ञानहेतवे दर्शयिष्यते। गुणशब्दो गुणे पुंसि वाच्यलिङ्गस्तु तद्वति ॥५॥

प्राणिजातिध्वनिर्यस्तु पुल्लिङ्गः पुंसि दर्शितः। तस्यैव वर्तमानस्य स्त्रियां स्त्रीलिङ्गता मता ॥६॥

कुत्राऽपि रूपभेदेन क्वचिच्च प्रत्ययादिभिः। लिङ्गानां निर्णयो ज्ञेयो विशेषस्त्वभिधास्यते ॥७॥

व्युत्पत्तिर्लिङ्गनिर्णीतिर्विषमार्थप्रकाशनम्। प्रायेण दृष्टदृष्टान्तो वाच्यमत्र चतुष्टयम् ॥८॥

अथ ग्रन्थारम्भे सूत्रकारः शिष्टसमयपरिपालनाय प्रत्यूहव्यूहोपशान्तये अभिधेयप्रयोजनसम्बन्धप्रतिपादनाय च समुचितेष्टदेवतानमस्कारपूर्वकमुपक्रमते।

ध्यात्वाऽर्हतः कृतैकार्थशब्दसन्दोहसङ्ग्रहः। एकस्वरादिषट्काण्ड्या कुर्वेऽनेकार्थसङ्ग्रहम् ॥१॥

क्रमाङ्क ३११

हैम अनेकार्थकोश अनेकार्थकैरवाकरकौमुदीवृत्तिसह त्रिस्वरकांड द्वितीयखंड पत्र २३९। **भा.** सं.। **मू. क.** हेमचंद्राचार्य। **वृ. क.** महेन्द्रसूरि। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **ल. प.** १५।×२।

आदि—

९० ॥ अर्हं ॥ अथ तृतीय त्रिस्वरकांडमारभ्यते ॥ तत्रादौ कांताः ॥छ॥ अणुको निपुणेऽल्पे च । निपुणोऽणुकः ।

अन्त—

इत्याचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितायामनेकार्थकैरवाकरकौमुदीत्यभिधानायां स्वोपज्ञाऽनेकार्थसङ्ग्रहटीकायां त्रिस्वरकाण्डस्तृतीयः परिपूर्णः ॥छ॥

श्रीहेमसूरिशिष्येण श्रीमन्महेन्द्रसूरिणा । भक्तिनिष्ठेन टीकेयं तन्नाम्नैव प्रतिष्ठिता ॥१॥
सम्यग्ज्ञाननिधेर्गुणैरनवधेः श्रीहेमचन्द्रप्रभोर्ग्रन्थे व्याकृतिकौशलं विलसति क्वास्मादृशां तादृशम् ।
व्याख्यामः स्म तथापि तं पुनरिदं नाऽऽश्चर्यमन्तर्मनस्तस्याऽजस्रमपि स्थितस्य हि वयं व्याख्यामनुब्रूमहे ॥२॥
यल्लक्ष्यं स्मृतिगोचरे समभवद् दृष्टं च शास्त्रान्तरे, तत् सर्वं समदर्शि किन्तु कतिचिन्नो दृष्टलक्ष्याः क्वचित् ।
अभ्यूह्य स्वयमेव तेषु सुमुखैः शब्देषु लक्ष्यं बुधैर्यस्मात् सम्प्रति तुच्छकश्मलधियां ज्ञानं कुतः सर्वतः ॥३॥
एकत्रापि कृताऽभिधेयविषये व्युत्पत्तिरर्थान्तरे, कर्त्तव्या स्वयमेव दर्शितदिशा निर्वेदवन्ध्यैर्बुधैः ।
वर्णाद्यं क्रमवर्णनं च न कृतं तच्चापि कार्यं स्वयं, यत्कृत्स्नप्रतिपादनेन विवृतिः कामं वरीवृध्यते ॥४॥
मङ्गलं महाश्रीः॥

क्रमाङ्क ३१२

हैम अनेकार्थकोश अनेकार्थकैरवाकरकौमुदीवृत्तिसह तृतीयखंड चतुःस्वरकांडथी अंतपर्यंत पत्र १३४ । **मू. क.** हेमचंद्राचार्य । **वृ. क.** महेन्द्रसूरि । **ले. सं.** १२८६ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२।

आदि—

ए० ॥ अर्हं ॥ अथ चतुर्थं चतुःस्वरकांडमारभ्यते ॥ तत्रादौ कान्ताः ॥छ॥

अन्त—

इत्याचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितायामनेकार्थकैरवाकरकौमुदीत्यभिधानायां स्वोपज्ञाऽनेकार्थसंग्रहटीकायामनेकार्थशेषाव्ययकाण्ड. सप्तमः ॥छ॥छ॥

श्रीहेमसूरिशिष्येण श्रीमन्महेन्द्रसूरिणा । भक्तिनिष्ठेन टीकेयं तन्नाम्नैव प्रतिष्ठिता ॥१॥
सम्यग्ज्ञाननिधेर्गुणैरनवधेः श्रीहेमचन्द्रप्रभोर्ग्रन्थे व्याकृतिकौशलं विलसति क्वास्मादृशां तादृशम् ।
व्याख्यामः स्म तथापि तं पुनरिदं नाऽऽश्चर्यमन्तर्मनस्तस्याजस्रमपि स्थितस्य हि वयं व्याख्यामनुब्रूमहे ॥२॥
यल्लक्ष्यं स्मृतिगोचरं समभवद् दृष्टं च शास्त्रान्तरे, तत् सर्वं समदर्शि किन्तु कतिचिन्नो दृष्टलक्ष्याः क्वचिद् ।
अभ्यूह्य स्वयमेव तेषु सुमुखैः शब्देषु लक्ष्यं बुधैर्यस्मात् सम्प्रति तुच्छकश्मलधियां ज्ञानं कुतः सर्वतः ॥३॥
एकत्रापि कृताऽभिधेयविषये व्युत्पत्तिरर्थान्तरे, कर्त्तव्या स्वयमेव दर्शितदिशा निर्वेदवन्ध्यैर्बुधैः ।
वर्णाद्यक्रमवर्णनं च न कृतं तच्चापि कार्यं स्वयं, यत्कृत्स्नप्रतिपादनेन विवृतिः कामं वरीवृध्यते ॥४॥छ॥
परिपूर्णा चेयमनेकार्थसंग्रहटीकाऽनेकार्थकैरवाकरकौमुदीत्यभिधानेति ॥छ॥छ॥छ॥

लेखकप्रशस्ति—

सुदृढश्रेयोमूलः परार्ध्यशाखाप्रपञ्चरोचिष्णुः । वंशोऽस्ति धर्कटानां फलभृदपि न नश्वरप्रकृतिः ॥१॥
तत्राऽऽसीत् पार्श्वनागाख्यः श्राद्धः श्रद्धालुतानिधिः । तस्याङ्गजः सतां मुख्यो गोल्लः प्रोल्लासिकीर्तिभाक् ॥२॥
जिनदत्तसूरिसुगुरोराज्ञां चूडामणीमिव प्रवराम् । बिभराञ्चकार निजमूर्ध्नि दलितदारिद्र्यमुद्रां यः ॥३॥

यः प्रातरेव रचयाञ्चकार चिन्तां सधर्मणां नृणाम् । ग्लानानां निःस्वानां निजौषधार्थैर्महाश्राद्धः ॥४॥
पुरे च यः श्रीमरुकोट्टनामनि क्षोणीपतेः सिंहबलस्य सन्मतेः ।
कान्त निशान्त नितरामचीकरच्चन्द्रप्रभस्योत्तमतुङ्गशृङ्गभृत् ॥५॥
तच्च शुचिरुचिरचरितैर्गुरुणा वादिद्विपेन्द्रकेसरिणा । जिनचन्द्रसूरिगुरुणा मुदा प्रतिष्ठापयामास ॥६॥
तस्याऽऽसंश्चत्वारः पुत्राः प्रत्यस्तनिखिलमिथ्यात्वाः । सम्यक्त्वाद् यच्चेतो न चलति सुरशिखरिशिखरमिव ॥७॥
लक्ष्मीधरो लक्षितधर्मलक्ष्यः समुद्धरः सद्गुरुभक्तिदक्षः ।
नाम्ना गुणागः कृतमुक्तिरागस्तथाऽऽसिगो बन्धुरशुद्धबुद्धिः ॥८॥
तत्राऽऽसिगस्य पुत्रास्त्रयोऽभवन् वीरपालनामाऽऽद्यः । आशापालः शुभधीस्तार्तीयीको जयतिपालः ॥९॥
तेषामाशापालः साधुः श्राद्धः प्रवर्द्धितश्रद्धः । यः शेषामिव जिनपतिसुगुरोराज्ञां वहति मूर्ध्ना ॥१०॥
देवगुरुकृत्यकुशलो गाम्भीर्यौदार्यधैर्यमुख्यगुणैः । रत्नालङ्कारैरिव नितरां यो भूषयाञ्चक्रे ॥११॥
कुलचन्द्र-वीरदेवाख्य-पद्मदेवैः सुतैर्विहितसेवः । साधूनां साध्वीनां श्राद्धानां श्राविकाणां च ॥१२॥
प्रचकारोपष्टम्भ योऽशनवरपानवस्त्रपात्राद्यैः । शुभमिणिनाम्नी भार्या शीलनिधिर्भ्राजते यस्य ॥१३॥
स बुद्ध्वा सज्ज्ञानप्रवितरणमत्यस्तकलुषं भवक्षाराम्भोधिप्रपतितजनोत्तारतरणिम् ।
महामोहव्यूहव्यपनयनदक्ष क्षतभयः समस्तानां श्रीणां प्रभवमवदातोत्तमगुणम् ॥१४॥
स्वर्गापवर्गसंसर्गकारण पापवारणम् । कल्याणानां परार्ध्यानां निधान ध्यानवर्द्धनम् ॥१५॥
अभिधानकोशमेतद्नेकार्थ लिलेख भोः । दृष्टिवसुसूरसङ्ख्ये १२८६ विक्रमभूपवत्सरे ॥१६॥
सुलेखकोऽत्र लावण्यसिंहनामा प्रसिद्धिभाक् । सदक्षरविनिर्माता ब्राह्मणोऽय प्रकीर्तितः ॥१७॥छ॥
॥ मङ्गल महाश्री· ॥छ॥

क्रमाङ्क ३१३

(१) **अभिधानचिंतामणिनाममाला स्वोपज्ञवृत्तिसह चतुर्थकांड** पत्र १८३ । **भा.** स. । **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञ । **ग्रं.** २६३० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२

(२) **अभिधानचिंतामणिनाममाला स्वोपज्ञवृत्तिसह पंचमषष्ठकांड** पत्र ८९ । **भा.** सं. । **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञ । **ग्रं** ११२० । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२

क्रमाङ्क ३१४

(१) **जयदेवछंदःशास्त्र** पत्र १० । **भा.** स । **क.** जयदेव । **ले. सं.** ११९० । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥।×१॥।

आदि—

१॥ गायत्र छन्दसां पूर्व वर्द्धमानाक्षर परम् । वाग्मण्डनकर नौमि चित्रवृत्तप्रसिद्धये ॥१॥

अन्त—

इति जयदेवच्छन्दसि अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥छ॥छ॥ सवत् ११९० मार्ग शुदि १४ सोम दिने श्रीसर्वदेवाचार्यशिष्यस्य देवचन्द्रस्यार्थे प श्रीधरेण जयदेवच्छन्दमूलसूत्रमलेखि ॥

पञ्चम लघु सर्वत्र सप्तम द्विचतुर्थयोः । षष्ठं गुरु विजानीयादेतच्छ्लोकस्य लक्षणम् ॥१॥छ॥

(२) **जयदेवछंदःशास्त्र वृत्तिसह** पत्र १–५५ । **मू. क.** जयदेव । **वृ. क.** हर्षट । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३×२।

आदि—५०॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

सङ्करं शाश्वतं सौरिं प्रणम्य विवृणोम्यहम्। जयदेवानि सूत्राणि स्वरूपविधिना स्फुटम् ॥१॥

अन्त—

भट्टमुकुलकात्मजहर्षटविरचितायां जयदेवच्छन्दोविवृतावष्टमोऽध्यायः ॥छ॥ समाप्तं जयदेवच्छन्दोविवरण ॥छ॥ शुभमस्तु ॥छ॥छ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥छ॥

(२) **कइसिट्ठ छंदःशास्त्र प्राकृत गाथाबद्ध** पत्र ५६-८९। **भा.** प्रा.। **क.** विरहाङ्क।

आदि—५०॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

देइं सरस्सइं पणमिऊण गरुअकइगंधहत्थि च। सब्भावलछणं पिंगल च अवलेवइण्ह च ॥१॥

अन्त—

इअ कविसिट्ठवित्तजाईसमुच्चये छट्ठो णिअमो समत्तो ॥छ॥ कइसिट्ठछद समत्त॥छ॥छ॥ सुभमस्तु ॥छ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥५॥

(४) **कइसिट्ठछंद शास्त्रवृत्ति** पत्र ९०-१८३। **भा.** स.। **क.** भट्ट गोपाल। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२।

आदि—५०॥

एतै[...]दामितसरोजदलाभिरामा कान्तिर्जितेत्यसहमान इवाञ्जनेन।

शून्यानि यस्त्रिदशवैरिविलासिनीनां नेत्रोत्पलानि विदधेऽस्तु स वो हिताय ॥१॥

नत्वा पिङ्गलसैतवकात्यायन भरतकम्बलाऽश्वतरान्। विरहाङ्कविरचितायाश्छन्दोविचितेः करोम्यह व्याख्याम् ॥

पुस्तकलेखकदोषादसंस्कृतानां मुखे च पतितत्वात्। प्रभ्रष्टा ये पाठाये चान्यैरन्यथा रचिताः ॥

तानाप्तेभ्यो नामा (ज्ञात्वा) पुस्तकसंदर्शना[त्] समाहृत्य।

अन्येभ्यः शास्त्रेभ्यः स्वधिया च विचार्य रचितेयम् ॥

प्रथम तावद्गाथायुगलेनाभिमतदेवादिनमस्कारश्चव्यापारो(?) दर्शयितुमाचार्य आह ॥छ॥ देइं सरस्सइमिति ॥

देवीं सरस्वतीं प्रणम्य गुरुककविगन्धहस्तिन च। सद्भावलाञ्छन पिङ्गल चाऽवलेपचिह्न च ॥

कामिनीकपोलपत्रपरितनुबुद्धिविभवोऽपि दयितायै। साधयति समुच्चय विरहलाञ्छनो वृत्तजातीनाम् ॥

वृत्तजातीनां समुच्चय छन्दोऽवचयविशेषसारसङ्ग्रह विरहलाञ्छनाख्य आचार्य दयितायै साधयति कथयति। किं कृत्वा? देवीं सरस्वतीं भगवतीं वागीश्वरीं प्रणम्य स्तुत्वा, सद्भावलाञ्छन स्वगुरु च स्तुत्वा, कीदृशम्? गुरुकविगन्धहस्तिनम्, गुरव एव गुरुकाः, स्वार्थे कः, अन्ये त्वाहुः प्राकृतभाषायामेव लालित्यार्थमेव रूपम्, न तु संस्कृते, अर्थान्तरासम्भवात्, तेन गुरवश्च ते कवयः गुरुकवयः इत्येव साधीयः, गन्धहस्ती वरगन्धहस्ती, गुरुकवीनां गन्धहस्ती गुरुकविगन्धहस्ती, तं हि गन्धहस्तिभयाद्धि सामान्यद्विपाः स्वजन्मभूमिं वनमप्युत्सृजन्ति, किमु सम्मुखा भविष्यन्ति?। किञ्च-पिङ्गलं प्रणम्य छन्दःशास्त्राचार्यम्। अवलेपचिह्न च कविमुख्य विशेषेण नत्वेति योजनीयम्। किम्भूतो विरहलाञ्छनः? कामिन्या उत्तमाया योषितः कपोललक्ष्मणा गण्डशोभावयवेन सदृशः परितनुबुद्धिविभवो मतिविस्तारो यस्य, अनेन स्वविशेषणद्वारेण नासूक्ष्मदर्शितारोऽस्मिन् सुखेनावगतिरिति दर्शिता। देवतादिनमस्कारेणानेककल्मषप्रभवविघ्नोपशमार्थ सर्वकार्यारम्भेषु अभिमतदेवतानमस्कारो विधेयः।

अन्त—

चक्रपालात्मजगोपालविरचितायां कृतशिष्टविवृतौ षष्ठो नियमः ॥छ॥ समाप्तेय कैसट्ठटीका ॥छ॥ कृतिर्भट्टचक्रपालसूनोर्गोपालस्य ॥छ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥छ॥

(५) **छंदोनुशासन** पत्र २८। **भा.** सं.। **क.** जयकीर्तिसूरि। **ले. सं.** ११९२। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२।

आदि—ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीवर्द्धमानमानम्य छन्दसां पूर्वमक्षरम्। लक्ष्यलक्षणमावीक्ष्य वक्ष्ये छन्दोऽनुशासनम् ॥

छन्दःशास्त्र वहित्र तद् विक्षोः काव्यसागरम्। छन्दोभाग् वाङ्मय सर्व न किञ्चिच्छन्दसा विना ॥

अन्त—

माण्डव्य-पिङ्गल-जनाश्रय-सेतवाख्य-श्रीपादपूज्य-**ज**यदेवबुधादिकानाम्।

छन्दांसि वीक्ष्य विविधानपि सत्प्रयोगान् **छन्दोनुशासनमिद ज**यकीर्तिनोक्तम् ॥

इति **ज**यकीर्तिकृतौ **छन्दोनुशासने**.......... । नमो देवेभ्यः। स्वस्ति प्रज्यभ्यः। ॐ नमः शिवाय। ॐ नमो नारायणाय। ॐ नमो ब्रह्मणे। ॐ नमो सर्वदेवेभ्यः। शिवमस्तु पाठकलेखकयोरिति। सवत् ११९२ आषाढ शुदि १० शनौ लिखितमिदमिति ॥छ॥

(६) **वृत्तरत्नाकर** पत्र १५। **भा.** सं.। **क.** भट्ट केदार। **ले. सं** अनु. १४ मी शताब्दी **उत्तरार्द्ध**। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२।.। पत्र १० मुं नथी।

क्रमाङ्क ३१५

छंदोनुशासन स्वोपज्ञ छंदश्चूडामणिवृत्तिसह पत्र २१४। **भा.** सं.। **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ४१००। **ले. सं.** १४९०। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×१॥।

अन्त—

इत्याचार्यश्री**हे**मचन्द्रविरचितायां स्वोपज्ञछन्दोऽनुशासनवृत्तौ प्रस्तारादिव्यावर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥छ॥ सपूर्ण **छं**दोऽनुशासनमिति ॥छ॥ ग्रन्थाग्र ४१०० ॥छ॥

सवत् १४९० वर्षे आषाढ शुदि ६ शनिदिने श्रीमति **स्तंभ**तीर्थे अविचलत्रिकालज्ञाज्ञापालनपटुतरे विजयिनि श्रीमत्**खरतरगच्छे जिन**राजसूरिपट्टे लब्धिलीलानिलयमधुरबहुबुद्धिबोधितभूवलयकृतपापपूरप्रलयचारुचारित्रचदनतरुमलययुगपवरोपममिथ्यात्वतिमिरनिकरदिनकरप्रसरसमश्रीमद्गच्छेशभट्टारकश्री **जिन**भद्रसूरीश्वराणामुपदेशेन प. **गूजर**सुतेन रेषाप्राप्तसुश्रावकेन प. **धरणा**केन पुत्र**साई**यासहितेन **छंद**श्चूडामणिपुस्तक लखापित ॥छ॥छ॥श्रीः॥ पुरोहित **हरी**याकेन लिखितम् ॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥॥श्री॥छ॥

क्रमाङ्क ३१६

(१) **कल्पलताविवेक (कल्पपल्लवशेष) तृतीयपरिच्छेद अपूर्ण पर्यन्त** पत्र २५९। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध।

(२) **कल्पलताविवेक (कल्पपल्लवशेष) चतुर्थ परिच्छेद** पत्र १४८। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×२।

क्रमाङ्क ३१७

कल्पलताविवेक (कल्पपल्लवशेष) पत्र ३८९। **भा.** स.। **ग्रं.** ६५००। **ले. सं.** १२०५। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५।×२॥.। अत्य पत्रमां **शोभन** छे।

आदि—

यत् पल्लवे न विवृत दुर्बोधं मन्दबुद्धिभिश्चापि। क्रियते कल्पलतायां तस्य **विवेकोऽयमतिसुगमः** ॥

सूर्याचन्द्रमसाविति। "खद्योतपोतकौ यत्र सूर्याचन्द्रमसावपी"ति पाठे प्राकरणिकानुवादेनाप्राकरणिकस्य स्वगुणोपसंक्रमणद्वारेण विधेयता न भवेदित्यनुवाद्ययोः सूर्याचन्द्रमसौरादावुपादानमिति। एष चार्थो रूपके कल्पलतायामविमृष्टविधेयांशवाक्यदोषे कल्पपल्लवे च वितत्य वक्ष्यते।

अन्त

अनुद्भटमतमिति। उद्भटो ह्यलङ्कारान्तरप्रतिभोत्पत्तिहेतुमेव श्लेषं प्रतिजानीते। तेन "येन ध्वस्तमनोभवेने"-त्यत्रापि तुल्ययोगिताप्रतिभया सङ्कर एव स्यादिति श्लेषस्य निर्विषयत्वापत्तिस्तदवस्थैवेति। जयतीति। सर्वोत्कर्षेण वर्त्तते ॥छ॥

इति कल्पपल्लवशेषे कल्पलताविवेकेऽर्थालङ्कारनिर्णयो नाम चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः ॥छ॥ इति समाप्तः कल्पलताविवेकाऽभिधानः कल्पपल्लवशेषः ॥छ॥छ॥

कल्पपल्लवमात्रेण न ये कल्पलतां विदुः। कल्पपल्लवशेषोऽय निर्मितस्तद्विदेऽपरः ॥छ॥१॥छ॥

अपर इति। एकस्मिन् विवरणे कृतेऽपरविवरणकरण श्रोतृणामबोधहेतुतया श्रेयस एवेत्यर्थः ॥छ॥

पल्लवकलशविराजिनि कल्पलताविबुधमन्दिरे रचितः। शेषध्वजो विजयतां छेदपरुर्ध्वनिपताकोऽयम् ॥छ॥

सम्वत् १२०५ श्रावण शुदि १४ शनौ ॥छ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क ३१८

काव्यमीमांसा (कविरहस्य) पत्र ९०। **भा.** सं.। **क.** राजशेखर। **ले. सं.** १२१६। **संद.** अतिजीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×२।

अन्त—

इह सिद्धो महाकविः ॥छ॥ इति श्रीराजशेखरकृतौ काव्यमीमांसायां कविरहस्ये प्रथमेऽधिकरणे कालविभागो नाम समीक्षा अष्टादशोऽध्यायः ॥छ॥ समाप्त चेदं कविरहस्यं प्रथममधिकरणमष्टादशोऽध्यायः ॥छ॥ शुभमस्तु ॥ लेखकपाठकयोः ॥छ॥ मगल महाश्री ॥छ॥छ॥ संवत् १२१६ फाल्गुन वदि ९ सोमदिने ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ३१९

काव्यादर्श (काव्यप्रकाशसंकेत) सप्तम उल्लास पर्यन्त पत्र २०७। **भा.** सं.। **क.** सोमेश्वर भट्ट। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×१॥

आदि—॥ स्वस्ति ॥

पदार्थकुमुदव्रातसमुन्मीलनचन्द्रिकाम्। वन्दे वाचं परिस्पन्दजगदानन्ददायिनीम् ॥

समुचितेति यत् किल प्रस्तुतं वस्तु काव्यालङ्करण तदधिदैवतरूपा च वक्ष्यमाणरामणीयकहृदयहारिणी वाणी। अनन्यपरतन्त्रामिति। कवेरपेक्षयाऽन्यशब्दनिर्देशः।

अन्त—

येषां ताण्डवमाधत्ते चित्ताध्वनि रसध्वनिः। त एवास्य सुवर्णस्य परीक्षाकषपट्टकाः ॥

इति भट्टश्रीसोमेश्वरविरचिते काव्यादर्शे काव्यप्रकाशसङ्केते सप्तम उल्लासः ॥छ॥ शुभ भवतु ॥छ॥

क्रमाङ्क ३२०

काव्यादर्श (काव्यप्रकाशसंकेत) पत्र २२२। **भा.** सं.। **क.** सोमेश्वर भट्ट। **ले. सं.** १२८३। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×२।

अन्त—

इत्येष इति। एष मार्गोऽद्भुतं वर्त्म विदुषां ध्वनिकारादीनां नानाग्रन्थतया विभिन्नोऽप्यनेककल्पोऽपि एकरू-

पतया यद्भाति तत्र सङ्घटनाविसंस्थुलस्य सुखप्रतीत्यर्थमेकत्र समग्रहः सैव हेतुस्तद्दशादेकात्मता प्रतीतेः, तत्तद्ग्रन्थानामन्नान्तर्भाव इति भावः। अथ च सुधियां विकासहेतुग्रन्थोऽय कथञ्चिदपूर्णत्वादन्येन पूरितशेष इति द्विखण्डोऽप्यखण्ड इव यद्भाति तत्रापि सङ्घटनैव सन्निमित्तम् ॥

स्वीकृत्य कल्पतरुतो मरुतः पराग दृष्टेः क्षतिं विदधते जगतोऽपि किं तैः।
भृङ्गः कृती तु परितः सुमनोमुखेभ्यः पीत मधूद्वमति येन मद करोति ॥छ॥
इति भट्टश्रीसोमेश्वरविरचिते काव्यादर्शे काव्यप्रकाशसङ्केते दशम उल्लासः ॥छ॥
भरद्वाजकुलोत्तसभट्टदेवकसूनुना। सोमेश्वरेण रचितः काव्यादर्शः सुमेधसा ॥१॥

सम्पूर्णश्च काव्यप्रकाशसङ्केत इति शुभम् ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः। शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥छ॥ संवत् १२८३ वर्षे आषाढ वदि १२ शनौ लिखितमिति ॥छ॥

क्रमाङ्क ३२१

काव्यप्रकाशअवचूरि पत्र ५३। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८।×२.। पत्र १ नो टूकडो ८, ११, १६, १९, २९, ३३, ३७, ४१, ४३ नथी।

इतीति। विदुषां ध्वनिकृत्प्रभृतीनां एष मार्गः स्वसिद्धान्तस्तत्तद्ग्रन्थमतत्वेन पृथक्पृथगवस्थितोऽप्येकरूपतया प्रतिभाति तत्र सङ्घटनैव निमित्त, विक्षिप्तस्य सुखाऽवबोधायैकत्र समग्रहण या सङ्घटना तद्वशादेवैकात्मताप्रतिभासात्। एतेन च महामतीनां प्रसरणहेतुरेष ग्रन्थो ग्रन्थकृता [कृतः,] तेन कथमप्यसमाप्तत्वादपरेण च पूरितावशेषत्वाद् द्विखण्डोऽप्यखंडात्मतया यदवभासते तत्र सङ्घटनैव साध्वी हेतुः। नहि सुघटितस्य सन्धिबन्धः कदाचिल्लक्ष्यत इत्यर्थशक्त्या ध्वन्यते ॥छ॥ काव्यप्रकाशसङ्केते दशम उल्लासः ॥छ॥

अन्त—

क्रमाङ्क ३२२

काव्यप्रकाश टिप्पणीसह पत्र १७८। **भा.** स.। **क.** राजानक मम्मट अने अलक। **ले. सं.** १२१५। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १५॥×१॥

अन्त—

सपूर्णमिद काव्यलक्षणम्। काव्यप्रकाशे अर्थालंकारनिर्णयो नाम दशम उल्लासः ॥
इत्येष मार्ग्गो विदुषां विभिन्नोऽप्यभिन्नरूप. प्रतिभासते यत्।
न तद्विचित्र यदमुत्र सम्यग्विनिर्मिता सघटनैव हेतुः ॥छ॥

समाप्तोऽय काव्यप्रकाशः काव्यलक्षणम्। कृती राजानकमम्मटालकयोः ॥ सवत् १२१५ अश्विन सुदि १४ बुधे अद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावलीविराजितमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकउमापतिवरलब्धप्रसादप्रौढप्रतापनिजभुजविक्रमरणांगणविनिर्जितशाकंभरिभूपाल श्रीकुमारपालदेवकल्याणविजयराज्ये पडित लक्ष्मीधरेण पुस्तकं लिखापितम् ॥

क्रमाङ्क ३२३

काव्यप्रकाश पत्र १३९। **भा.** स.। **क.** राजानक मम्मट अने अलक। **ले. सं.** १४ मी शताब्दी। **सं.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५॥×२।.। वचमां वचमां थईने ९० जेटलां पानां नथी।

अन्त—

विनिर्मिता सघटनैव हेतुः ॥छ॥छ॥ समाप्तोऽय काव्यप्रकाशाभिधानोऽलंकारः ॥ स्वस्ति ॥

क्रमाङ्क ३२४

काव्यप्रकाश अवचूरि पत्र ९२ । **भा.** सं. । **ग्रं.** १२५० । **ले. सं.** अनु. १४ शताब्दी प्रारंभ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १३।×२ । प्रथम पत्रनो टूकडो नथी।

आदि—

प्रभावनिर्माप्यत्वात् भारतीसमुचिता । परामृशतीति स्मरति । नियतीत्यादि

अन्त—

इतीति । विदुषां ध्वनिकृत्प्रभृतीनां य एष मार्गः स्वसिद्धान्तस्तत्तद्ग्रन्थमतत्वेन पृथगवस्थितोऽपि एकरूपतया प्रतिभाति । तत्र संघटनैव निमित्तम्, विक्षिप्तस्य सुखावबोधायैकत्र सम्रहणं सघटना, तद्वशादेवैकात्मताप्रतिभासादिति ॥छ॥ इति काव्यप्रकाशावचूर्णौ दशम उल्लासः समाप्तः ॥छ॥

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ । व्यक्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः ॥छ॥छ॥
ग्रन्थाग्र १२५० ॥

क्रमाङ्क ३२५

व्यक्तिविवेक काव्यालंकार पत्र १९८ । **भा.** स. । **क.** राजानक महिम । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी अत । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥×२

पत्र—२, ३, ५, ६, ८, १९, २०, २३, ३१, ३४, ३७, ३९, ४१, ४४, ४८–५०, ५३, ५७, ६४-६६, ७१, ७८, ८०–८२, ८६, ९१, ९२, ९५, ९७, १०४, ११२, ११८, १२३, १२८, १२९, १४७ १४९, १५०, १८० नथी ।

आदि—॥ स्वस्ति ॥

अनुमानान्तर्भावं सर्वस्यैव ध्वनेः प्रकाशयितुम् । व्यक्तिविवेकं कुरुते प्रणम्य महिमा परं वाचम् ॥
युक्तोऽयमात्मसदृशां प्रति मे प्रयत्नो नास्त्येव तज्जगति सर्वमनोरमं यत् ।
केचिज्ज्वलन्ति विकसन्त्यपरे निमीलन्त्यन्ये यदभ्युदयभाजि जगत्प्रदीपे ॥
इह सम्प्रतिपत्तितोऽन्यथा वा ध्वनिकारस्य वचोविवेचनं नः ।
न च त यशसे प्रपत्स्यते यन्महतां मस्तव एव गौरवाय ॥
सहसा यशोऽभिसर्तुं समुद्यता दृष्टदर्पणा मम धीः । स्वालङ्कारविकल्पप्रकल्पने वि...कथमिवावद्यम् ॥
ध्वनिवर्त्मन्यतिगहने स्खलितं वाण्याः पदे पदे सुलभम् । रभसेन यत्प्रवृत्त्या प्रकाशकं चन्द्रिकाद्यदृष्ट्वैव ॥

अन्त—

व्यक्तिविवेके काव्यालङ्कारेऽन्तर्भावोपदर्शनं नाम तृतीयो विमर्शः ॥छ॥ समाप्तश्चायं व्यक्तिविवेकाख्यः काव्यालङ्कारः ॥छ॥

आधाय व्युत्पत्तिं नप्तृणां क्षेमयोगभोगानाम् । स सुप्रथितनयानां मीमस्यामितगुणस्य तनयनम् ॥छ॥
श्रीधर्य्यस्याङ्गभुवा महाकवेः श्यामलस्य शिष्येण । व्यक्तिविवेको विदधे राजानकमहिमनाम्नाऽयम् ॥
प्रतिपाद्यबुद्धयपेक्षौ प्रायः सक्षेपविस्तरौ वक्तुः । तेन न बहुभाषित्वं विद्वद्भिरसूयितव्यं नः ॥ इति ॥
अन्यैरनुल्लिखितपूर्वमिदं ब्रुवाणो न्यूनं स्मृतेर्विषयतां विदुषामुपेयात् ।
हासैककारणगवेषणया नवार्थतत्त्वावमर्शपरितोषसमीहया वा ॥छ॥
॥ मङ्गल महाश्रीः ॥

क्रमाङ्क ३२६

(१) काव्यादर्श तृतीय परिच्छेद पर्यन्त पत्र ३९। **भा.** स.। **क.** दडी कवि। **ले. सं.** ११६१। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×१॥।

आदि—५० ॥ नमः सरस्वत्यै ॥

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम। मानसे रमतां दीर्घं सर्वशुक्ला सरस्वती ॥

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च। यथासामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणम् ॥

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्वथा। वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥

अन्त—

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः।

वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरेक्षणाभिर्धन्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥छ॥

इत्यतिशयकवेराचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे दुःकरदोषविभागो नाम तृतीयः परिच्छेदः ॥छ॥ सम्वत् ११६१ भाद्रपदे ॥

(२) अलंकारदर्पण पत्र १३। **भा.** प्रा.। **गा.** १३४। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२

आदि—ॐ नमः सरस्वत्यै ॥

सुंदरपअविण्णास विमलालंकाररेहिअसरीर। सुइदेविअं च कव्वं च पणविअ पवरवण्णड्ढ ॥१॥

सव्वाइ कव्वाइ सव्वाइ जेण होंति भव्वाइं। तमलंकार भणिमोऽलंकार कुकविकव्वाण ॥२॥

अच्चन्तसुन्दरं पि हु निरलंकार जणम्मि कीरत। कामिणिमुह व कव्व होइ पसण्ण पि विच्छाअं ॥३॥

ता जाणिऊण णिउण लक्खिज्जह बहुविहे अलंकारे। जेहिं अलंकरिआइ बहुमण्णिज्जंति कव्वाइं ॥४॥

अन्त—सअलपअजमअ जहा—

तुह कज्जे साहसिआ केण कआ वदणेण साहसिआ। भणिऊण सा हसिआ सहिआहिं फुड साहसिआ ॥१३३॥

असेविऊण असेसाण होंति सम्मग्गआधिणो कव्वे। तेण वि अन्नो भावोपएसो चेअ दट्ठव्वो ॥१३४॥

॥ इति अलंकारदर्पणं समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥

(३) काव्यादर्श तृतीयपरिच्छेदटिप्पनक पत्र २४। **भा.** स.। **ग्रं.** ४५०। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×२

आदि—७० ॥ॐ॥ नमो जिनाय ॥

अव्यपेतव्यपेतात्मेत्यादि। अव्यपेतात्मा अव्यवहितस्वरूपः। यथा वक्ष्यति। मानेन मामेनेत्यादि। व्यपेतात्मा व्यवहितस्वरूपः। यथाऽभिधास्यति। मधुरेण दृशामित्यादि।

अन्त—

पूर्वाचार्यैरेताः षोडश प्रहेलिका निर्दिष्टाः। ताश्च व्याख्याताः सोदाहरणाः। किमेता एव? न, दुष्टा अपि चतुर्दश तैरभिहिताः। भवता किं नाभिहिताः? तदाह। दोषानपरसङ्ख्येयानित्यादि। ताः पुनः कथ विज्ञेयाः? तदाह। ता दुष्टा यास्त्वलक्षणा इति ॥ मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क ३२७

वक्रोक्तिजीवित (काव्यालंकार) सटीक त्रुटक अपूर्ण पत्र २३४। **भा.** सं.। **क.** कुन्तक कवि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२।।

पत्र १०८ मां प्रथना नामनो उल्लेख छे। प्रति आखी भांगी गएली अने अतिजीर्ण छे।

क्रमाङ्क ३२८

वक्रोक्तिजीवित (काव्यालंकार) सटीक अपूर्ण पत्र ३००। **भा.** सं.। **क.** कुन्तक कवि। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×१॥।

आदि—

जगत्त्रितयवैचित्र्यचित्रकर्मविधायिनम्। शिव शक्तपरिस्पन्द...............॥
यथातत्त्व विविच्यन्ते भावास्त्रैलोक्यदर्शिभिः। यदि तन्नाद्भुत नाम दैवरक्ता हि किंशुकाः ॥
वन्दे कवीन्द्रवक्त्रेन्दुलास्यमन्दिरनर्तकीम्। देवीं सूक्ति...........सुन्दराभिनयोज्ज्वलाम् ॥
वाचा विषयनैयत्यमुत्पादयितुमुच्यते। आदिवाक्येऽभिधानादि निर्मितेर्मानसूत्रवत् ॥
लोकोत्तरचमत्कारकारिवैचित्र्यसिद्धये। काव्यस्याऽयमलङ्कारः कोऽप्यपूर्वोऽभिधीयते ॥

पत्र २५२ मध्ये—इति कुन्तकविरचिते वक्रोक्तिजीविते द्वितीयोन्मेषः ॥

अन्त—

तस्य स्वात्मनि क्रियाविरोधादलङ्करणत्वानुपपत्तेः। अथवा रसस्य सश्रयो रसेन संश्रयो यस्तस्मा...

क्रमाङ्क ३२९

उद्भटकाव्यालंकारलघुवृत्ति पत्र ८६। **भा.** स.। **वृ. क.** प्रतीहारेंदुराज। **ग्रं.** १६३९। **ले. सं.** ११६०। **संद्द** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८।×१॥

अन्त—

एतच्चेह बहुवक्तव्यत्वान्न वेतत्येन प्रपञ्चितम्। कुशाग्रीयबुद्धीनां हि दिग्मात्र एवोपदर्शिते सति बुद्धिवल्ली प्रतानशतैर्नानादिग्व्यापित्वेन विस्तारमासादयतीति ॥छ॥ महाश्री ॥ प्रतीहारेन्दुराजविरचितायामुद्भटालङ्कारसारसङ्ग्रहे लघुविवृतौ षष्ठोऽध्याय. ॥छ॥

मीमांसासारमेघात् पदजलधिविधोस्तर्कमाणिक्यकोशात्
साहित्यश्रीमुरारेर्बुधकुसुममधोः सौरिपादाब्जभृङ्गात्।
श्रुत्वा सौजन्यसिन्धोर्द्विजवरमुकुलात् कीर्त्तिवल्ल्यालवालात्,
काव्यालङ्कारसारे लघुविवृतिमधात् कौङ्कणः श्रीन्दुराजः ॥छ॥

मङ्गल महाश्रीः ॥छ॥ ग्रन्थाग्र १६३९ उद्देशतः ॥ संवत् ११६० कार्त्तिकवदि ६ सोमे लिखितमिति ॥

क्रमाङ्क ३३०

उद्भटालंकारलघुवृत्ति पत्र १४२। **भा.** स.। **वृ. क.** प्रतीहारेंदुराज। **ग्रं.** १६३९। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×२

क्रमाङ्क ३३१

अभिधावृत्तिमातृका पत्र ३१। **भा.** सं.। **क.** भट्ट मुकुल। **ग्रं.** ५१४। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** [११×२]

अन्त—

ग्रथाग्रं ५१४। भट्टकल्लटात्मजमुकुलविरचिता अभिधावृत्तिमातृका समाप्तेति ॥छ॥ श्रीमज्जिनपतिसूरीणां पुस्तिकेयम् ॥छ॥

क्रमाङ्क ३३२

रुद्रटालंकारटिप्पनक तृतीयाध्यायथी पंचमाध्याय पर्यंत पत्र ४६। **भा.** सं.। **क.** श्वेतांबर [नमिसाधु]। **ले. सं.** १२०६। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३×२।

आदि—

द०॥ ॐ नमः शिवाय ॥ अथेदानीं यमकलक्षणमाह। तुल्यश्रुतीत्यादि।

अन्त—

॥ इति श्वेताम्बरविरचिते रुद्रटालकारटिप्पणके चित्राध्यायः पचमः समाप्तः॥ मंगलं महाश्रीः॥ सवत् १२०६ आषाढ वदि ५ गुरुदिने लिखितमिति॥ शुभमस्तु॥ सर्वकल्याण॥

क्रमाङ्क ३३३

वामनीय काव्यालंकार स्वोपज्ञवृत्ति टिप्पणीसह पत्र १२०। **भा.** स.। **क.** वामन स्वोपज्ञ। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संद्द.** मध्यम। **द.** श्रेष्ठ। **उंदरे करडेली पोथी.**

आदि—९०॥ ॐ नमो वीतरागाय॥

प्रणम्य परम ज्योतिर्वामनेन कविप्रिया। काव्यालंकारसूत्राणा स्वेषा वृत्तिर्विधीयते॥छ॥ काव्य ग्राह्यमलकारात्॥

अन्त—॥ इति काव्यालकारे प्रायोगिके पचमेऽधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ३३४

रघुवंश महाकाव्य पत्र २३०। **भा.** स.। क. महाकवि कालिदास। **ले. सं.** अनु १५ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९×२।

क्रमाङ्क ३३५

द्वयाश्रयमहाकाव्य वृत्तिसह प्रथमखंड पंचम सर्ग पर्यन्त पत्र २९७। **भा.** स.। **मू. क.** हेमचद्राचार्य। **वृ. क.** अभयतिलकगणि। **वृ. र. सं.** १३१२। **ले. सं.** अनु १४मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८॥।×२

पत्र १मां भगवान पार्श्वनाथनु चित्र छे। पत्र २मां हेमचद्रसूरि तथा अभयतिलकगणिनुं चित्र छे।

क्रमाङ्क ३३६

द्वयाश्रयमहाकाव्य वृत्तिसह द्वितीयखंड. सर्ग ६थी १२मा सर्ग पर्यन्त पत्र ३००। **भा.** स.। **मू. क.** हेमचंद्राचार्य। **वृ. क.** अभयतिलकगणि। **वृ. र सं.** १३१२। **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८॥।×२।

क्रमाङ्क ३३७

कविरहस्य सटीक (कविगुह्यकाव्य अपरनाम अपशब्दाभास कूटकाव्य सटीक) पत्र ७४। **भा.** स। **मू. क.** हलायुध। **टी. क.** रविधर्म। **ग्रं** १४००। **ले सं.** १२१६। **संद्द.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×२।। अन्य पत्रमां सुदर शोभन छे।

आदि—॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय॥

पीत्वैव श्रुततोयानि यस्याः शुध्यन्ति देहिनः। मुनिहंससमाकीर्णा तां नमामि सरस्वतीम्॥१॥

कविगुह्य प्रसस्यादिभावगम्यमनेकधा। यस्य येनोपसर्गेण धातोः कविपद च यत्॥२॥

अर्थतः शब्दतो वाऽपि समान् धातून् निबध्नता । तथा हलायुधेनेद कृत कविरहस्यकम् ॥३॥
आभासन्ति पदान्यत्र प्रचुराण्यपशब्दवत् । तद्विषम स्वभावेन निबन्धनमपेक्षते ॥४॥
ततष्टीका प्रसिद्धार्था व्याख्यातुरुपयोगिनी । मुग्धबुद्धिप्रबोधार्थं क्रियते रविधर्मणा ॥५॥
गुणान्वितां सुवर्णाढ्यां बहूवर्थां विपुलां घनाम् । इमामह न मुञ्चामि क्षुद्रभीतेर्युगामिव ॥६॥
नौरिवेह भवाम्भोधिरुत्ताराय सतामियम् । गाढबधसमायोगा भिद्यते न जडैर्दृढा ॥७॥
विचारयन्तु तां सन्तो मात्सर्येण विवर्जिताः । हलायुधकथाख्याने नून नारायणः क्षमः ॥८॥
कविः स्वकाव्यस्यादाविष्टदेवतानमस्कार करोति । तन्नमस्कारकरणात् पुण्यसम्भारो भवति । पुण्यसम्भाराद् विघ्ननाशो जायते । त विघ्नविनाश मन्यमानो हलायुधः प्राह ॥छ॥
जयन्ति मुरजित्पादनखदीधितिदीपिकाः । मोहान्धकारविध्वसान्मुक्तिमार्गप्रकाशिकाः ॥

अन्त—

श्रीशब्दः समाप्तौ मगलवाचको दर्शितः ॥छ॥
काव्य हलायुधकृत कविगुह्यनामख्याते.........रविधर्मकृताऽस्ति टीका ।
अभ्यस्यतां यदि वदति बुधा विवादे स्पष्टंक्रियेतरपदैर्विजय लभते ॥
अपशब्दाभासाढ्ये काव्ये टीका शतानि चतुर्दशानि । रचितानि कविरहस्य नामक............॥
सवत् १२१६ चैत्र सुदि ५ सोमे । श्रीअजयमेरुदुर्गे पुस्तकमिद लिलिखे ॥

क्रमाङ्क ३३८

भट्टिकाव्य (रामकाव्य) पत्र १४४ । **भा.** स. । **क.** भट्टि कवि वलभीवास्तव्य । **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी प्रारभ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२।. । अन्य पत्रमां **शोभन** छे ।

अन्त—

काव्यमिद विहित वलभ्यां श्रीधरसेननरेन्द्रपालितायाम् ।
कीर्ति.........वतान्नृपस्य क्षेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम् ॥
॥ इति वलभीवास्तव्यश्रीस्वामिसूनोर्भट्टिब्राह्मणस्य कृतौ रामकाव्य समाप्तम् ॥छ॥

क्रमाङ्क ३३९

भट्टिकाव्य वृत्ति सर्ग ८थी १५ पर्यन्त. पत्र १८९-४१५ । **भा.** सं. । **वृ. क.** पडित अनिरुद्ध । **ले. सं.** अनु १३मी शताब्दी उत्तरार्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२।×२

क्रमाङ्क ३४०

द्व्याश्रयमहाकाव्य वृत्तिसह तृतीयखंड १३मा सर्गथी संपूर्ण पत्र २७३ । **मू. क.** हेमचंद्राचार्य । **वृ. क.** अभयतिलकगणि । **सर्वग्रं.** १७५७४ । **वृ. र. सं.** १३१२ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं प.** १८॥×२. । पत्र २७३मां **जिनेश्वरसूरि** अने सा. **विमलचद्रनुं** चित्र छे ।

अन्त—

इति श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्यलेशाभयतिलकगणिविरचितायां श्रीसिद्धहेमचद्राभिधानशब्दानुशासनद्व्याश्रयवृत्तौ विंशतितमः सर्गः समर्थितः ॥छ॥ सपूर्ण चेद द्व्याश्रयमहाकाव्य । तत्संपूर्णौ(र्त्तौ) च तद्वृत्तिरपीति शुभमस्तु ॥छ॥ नमः श्रीपार्श्वनाथश्रीजिनदत्तगुरुपादपद्मेभ्यः ॥ प्रसीदंतु श्रीजिनेश्वरसूरिगुरुपादाः ॥ सदासप्रसन्नस्यै तत्रभगवत्यै सरस्वत्यै नमोऽस्त्विति ॥छ॥ ग्रथाग्र ८६१ ॥छ॥

श्रीचांद्रे विपुले कुलेऽतिविमले श्रीवर्धमानाभिधाऽऽचार्येन्द्रस्य जिनेश्वरोऽन्तिषदभूत् सूरिर्द्विजानांपतिः ।
श्रीमद्दुर्लभसम्मुखं खरतरप्रख्यातिमुपोत्य यः साधून् साधुविहारिणो व्यरचयच्छ्रीगूर्जरत्रावनौ ॥१॥
संवेगरंगशालां सुधाप्रपां त्वकृत शिवपथिकहेतोः । योऽन्तःसिद्धिपथं तत्पदे स जिनचन्द्रसूरिरवैत् ॥२॥
तत्पट्टेऽभयदेवसूरिरभवद् यः पार्श्वकल्पद्रुम सच्छाय श्रितदत्तवांछितफल श्रीस्तंभनेऽरोपयत् ।
जंतूनां हितहेतवेऽत्र सुघटा अर्थैः सदोद्यद्रसैः संपूर्णाश्च नवांगवृत्तिसरसीः श्रेयोर्थ्यसोसृज्यत ॥३॥
तच्छिष्यो जिनवल्लभो गुरुरभाच्चारित्रपाविञ्यतः सारोद्धारसमुच्चयो नु निखिलश्रीतीर्थसार्थस्य यः ।
सिद्धाकर्षणमन्त्रको न्वखिलसद्विद्याभिरालिंगनात् कीर्त्या सर्वगया प्रसाधितनभोयानाम्यविद्यो ध्रुवम् ॥४॥
तत्पट्टांबरसूरडंबरधरः कृष्णद्युतिर्दैवतैः सेव्यः श्रीजिनदत्तसूरिरविभः प्राम्यां युगाग्रीयताम् ।
केनाप्यस्खलितः प्रतापगरुडो यस्य त्रिलोक्यां स्फुरत्त्रोटत्रोटमपास्यते श्रितवतां विघ्नाहिपाशान् क्षणात् ॥५॥
तत्पट्टाचलचूलिकांचलमलंचक्रेऽष्टवर्षोऽपि स श्रीसांद्रो जिनचंद्रसूरिसुगुरुः कंठीरवाभोपमः ।
य लोकोत्तररूपसपदमपेक्ष्य स्वं पुलिंदोपमं मन्वानो नु दधौ स्मरस्तदुचित चाप शरान् पच च ॥६॥
आरुह्य क्षितिभृत्सभाचतुरिकां निर्जित्य दुर्वादिनस्तेजोऽग्नौ ज्वलिते लसत्यनुदिश नादे यशोदुंदुभेः ।
पाणौकृत्य जयश्रियो गुरुमहैर्यः शारदां मातर पृथ्वीं चोन्मुदितां व्यधाज्जिनपतिः सूरिः स जज्ञे ततः ॥७॥
प्रासादोत्तमतुंगशृंगसुभग पर्यष्करोत् तत्पद श्रीमान् सूरिजिनेश्वरोऽत्रभगवान् गांगेयकुंभप्रभः ।
माधुर्यातिशयश्रिया निरुपमां यद्वाचमन्वर्हतो नून साऽपि सिता सुधा च लवण वारीव चोत्तारणाम् ॥८॥
यो रूपातिशयाद् विदूषकमिवानग हसत्यंजसा सौम्यत्वान्नु ददाति लक्ष्ममिषतः पत्रावलब विधौ ।
नानासिद्धिरमाद्भुतात् करकजाज्जित्वैकलक्ष्म्याश्रित पद्म चात्ततृणानन वितनुते मन्ये मृणालच्छलात् ॥९॥

सूरिजिनरत्न इह बुद्धिसागरसुधीरमरकीर्त्तिः कविः पूर्णकलशो बुधः ।
श्रौ प्रबोधेंदुगणिलक्ष्मितिलकौ प्रमोदादिमूर्त्यादयो यद्विनेयोत्तमाः ॥१०॥

स्वस्य गुरोरादेशात् सकर्णकर्णोत्सव विवृतिमेताम् । स्वमतिविभवानुसारान्मुनिर्व्यधादभयतिलकगणिः ॥११॥
आम्राती सर्वविद्यास्वविकलकविताकेलिकेलीनिवासः कीर्त्याऽब्धेः पारदृश्वा त्रिभुवनजनतोपक्रियास्वात्तदीक्षः ।
नि.शेषग्रथसार्थे मम गुरुरिह तु द्व्याश्रयेऽतिप्रकाम टीकामेतां...लक्ष्मीतिलककविरविः शोधयामास सम्यक् ॥१२॥
अभ्ये द्वादशभिस्त्रयोदशशते १३१२ श्रीविक्रमाब्देष्विय श्रीप्रह्लादनपत्तने शुभदिने दीपोत्सवेऽपूर्यत ।
मेधामांद्यमदात् कथंचिदिह यच्चायुक्तमुक्त मया शोध्य स्वल्पमतौ प्रसद्य मयि तन्निर्मत्सरैर्मेधिरैः ॥१३॥
सप्तदश सहस्राणि श्लोकाः पच शतानि च । चतुःसप्ततिरप्यस्या वृत्तर्मान च निश्चितम् ॥१४॥
प्रक्रीडत्परिमाद्यदंगिसुभगा श्रीभूर्भुवःस्वस्त्रयी सर्वेषां परमेष्ठिनां सितयशोभिः श्वेतिताः सर्वतः ।
यावद्दीपमहोत्सव प्रबिभृते तेषां प्रतापज्वलद्दीपैस्तावदिय करोतु विवृतिः प्राज्य सुराज्य भुवि ॥१५॥

तृतीयखडग्रथाग्र ८८५८ सकलग्रथग्रथाग्र १७५७४ ॥छ॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥छ॥मगल महाश्री ॥छ॥

विस्फूर्जत्क्षीरवारांनिधिविविधलसत्कल्लोलकल्लोललीलालुंटाकोद्दामदेहद्युतिततिललितोत्संगसंगेन रगत् ।
यस्यांकस्थः शशांको जनयति जनताचक्षुषां सौधवर्षं हर्षोत्कर्ष जनानां स जिनपरिवृढश्चन्द्रप्रभेशः प्रतन्यात् ॥१॥
प्रद्विष्टानां स्वमुपरितनं जानतां सप्तलोक्यां मन्ये वक्रप्रहतिविधये वक्रवक्राश्चपेटाः ।
एषां केषामपि नतिमतां पृष्ठहस्तायमाना नृणां लक्ष्मीं प्रददतु फणाः सप्त पार्श्वाधिनेतुः ॥२॥
आरक्तोत्पलहेमकंदलमहःसर्वस्वसर्वंकष यस्यांग जनुरुत्सवेषु पयसां किर्म्मीरित विबुधैः ।
रक्ताशोकतरोर्नवीनजलभृत्पाथःकणोत्कर्षिणो लक्ष्मीमाबिभरांबभूव स भवेत् श्रीवासुपूज्यः श्रिये ॥३॥
यन्नाम्नः स्मरतां नृणां वनमपि श्रीपत्तनोव्यायतेऽनूपायेत च जंगलोऽपि विषमः सोऽयं गणाधीश्वरः ।
निःशेषाभिमतप्रपूरकतया स्वर्धेनुचिंतामणिस्वर्द्रूणामपि चित्रमादधदलं श्रीगौतमः स्तान्मुदे ॥४॥

वद्धानां दुर्गतानां समवगदगणैर्बाधितानां च नृणां हस्तालंबायमानो हृदयमपि महीभृत्ततेरावसंश्च ।
अर्हद्बिंबप्रतिष्ठाप्रथिमसुपृथुलां पाथमीं विभ्रदुच्चैः श्रीमानूकेशवंशः क्षितितलमखिलं लीलया पोपवीति ॥५॥
कीर्त्तिश्चैत्यप्रसररमयोद्योतिता कुदु...वः स्फारस्फूर्जत्तमगुणगणैर्विश्वविश्वे प्रसिद्धः ।
मांगल्यश्रीपरिचयचणो विश्वरूपीयमानः पार्श्वः साधुप्रवर इह च श्रीध्वजायां बभूव ॥६॥
चत्वारस्तस्य पुत्रा अजनिषततरां तत्र चाद्यः श्रियाढ्यः श्रेयःसद्मा प्रणियस्मरपरिचरणो मानदेवः शिवार्थी ।
नामान्वर्थं दधानः कुलधर इतरः सर्वसामान्यलक्ष्मीरन्यौ मान्यौ वदान्यौ त्रिजगति बहुदेवो यशोवर्द्धनश्च ॥७॥
व्यद्योततत्तमां त्रयोऽत्र धनदेवो राजदेवस्तथा नींबाकोऽपि च मानदेवतनयास्तेओजितान्निग्रयाः ।
माहात्म्यात् त्रितया इवादिपुरुषाः पाविभ्यतः किं त्रये वेदा ये बिभरांबभूवुरखिलां लोकत्रयीं कीर्तिभिः॥८॥
पुण्यापुण्यविवेचनैकचतुरं विश्वोपकारोत्तर क्रीडावेश्म वसुवजस्य विबुधाध्वन्यध्वनीनं सदा ।
सूर्येन्दुद्वितय यथा कुलधरस्याऽऽसीत्तनूजद्वय साधुर्देवधरो[......]र्स्मिहृत्तोहदेवस्तथा ॥९॥
तुग् याशोवर्धनः श्रीजिनपतिसुगुरुर्जज्ञिवान् जैनचंद्रे पट्टेऽनते कृताभ्युन्नतिरपि लघुकः पूर्ववातप्रतापात् ।
सर्वस्वद्वयां(?) प्रसृत्य क्षितितलमतनोद् वाक्सुधावृष्टिसृष्ट्या श्रेयोंकूरोद्भिदाकृत्प्रमदपरवशं पुष्करावर्त्तवद् यः ॥१०॥
शश्वत्सद्गुरुवक्त्रपार्वणसुधामीशूच्छलद्देशनाज्योत्स्नापानविधौ चकोरचतुरो दासानुदासोऽर्हताम् ।
नाट्यप्रेक्षणकक्षणेऽतिरसिकाक्षो बाहुदेवायनिः सजज्ञे जयदेवसाधुरमलार्थोत्पादनासत्कविः ॥११॥
लक्ष्मीर्नाम्नाऽस्य धुर्या समजनि दयिता रूपलावण्यलक्ष्म्या लक्ष्म्या मान लुनाना प्रगुणगुणखनिः शीलभूषाधिराजम् ।
सर्वांगीण प्रवीण परिदधतितमां या तथाऽभात् त्रिलोकीचूडामण्याऽपि मुक्त्या झगिति निजसखीत्वे यथोत्कण्ठते स्म ॥१२॥

बलेन धर्मस्य चतुर्भिदः क्षिपत्तमा चतुर्दुर्गतिनो मुखे रजः ।
याऽनतरायं विचरेच्छिवाध्वनि प्रिया द्वितीयाऽस्य च साऽस्ति लक्ष्मिका ॥१३॥

मदनापमानावहरूपधेयौ वरदेव-धींधीतिसुनामधेयौ ।
जयदेव-लक्ष्म्योः शुभभागधेयौ तनयावभूतां रमयाऽभिधेयौ ॥१४॥

तत्राऽऽद्योऽजनि दीर्घदर्शितिलकः प्राज्ञः सभावर्जकः प्रष्टव्यः समुपस्थितेऽतिविषमे कार्ये गुरुर्वाग्मिनाम् ।
उद्यत्प्रातिभवैभवश्च समवातीर्णो विदेशो महीपृष्ठे द्योतयितुं ध्रुवं सुरगुरुः सौव मतेर्वैभवम् ॥१५॥
श्रीजाबालिपुरे च वीरभवने श्रीपार्श्वतीर्थेशितुः सौव पुण्यमहो नु देवगृहकं नैर्मल्यशाल्युन्नतम् ।
यः प्राचीकरदुद्ध्वजं हिमवता कूट तनूजं निज स्वर्णधाऽऽत्मजया सह प्रहितमद्वाद्वोपचारैः कृते(?) ॥१६॥
संतुष्टोदयसिंहराट्प्रहितया नांदीनिनादस्पृशा श्रीकर्याऽलमकारि धींध इतरः स्थास्नुः स्व एवौकसि ।
श्रीदेव्या स्वयमेतया कुलकलाप्रव्यर्जुतासत्यतासाधुत्वप्रियवादितादिकगुणैराकृष्टयेवोच्चकैः ॥१७॥
आद्याऽभूद् वरदेवसाध्वधिपतेः प्राणेश्वरी वाहिनी शालिन्यद्भुवनीगुणोल्बणमणीखानी जनानंदिनी ।
अम्लानां शुभसौरभां विकसितां श्रीशीलमालां सदा बिभ्राणा हृदये भृशं दश दिशो या मोदयांचकुषी ॥१८॥

तस्याश्च पुण्यजलधेस्तनयस्त्रिलोक्या आह्लादने किल गृहीतसुचिह्नपट्टः ।
यथापदं विमलचंद्र इहास्ति कामायुष्टोमयज्वनृपतिर्वसतिः कलानाम् ॥१९॥

नाचित्रीयत कस्य यः प्रणयिनां दारिद्र्यचूडोत्खनौ निष्णातो व्यवहारिधार्मिकजने धुर्यासन प्राप्नुवन् ।
नित्याराधनयाऽर्हतः सुरतरोः संपूर्यमाणेप्सितस्तिष्ठन् सद्गुरुशासनस्य विधये चोत्पाटितैकांह्रिणा ॥२०॥
श्रीप्रह्लादनपत्तने जिनपतिं शांतिं प्रतिष्ठापयाञ्चक्रे सूरिजिनेश्वरैस्तदनु यः संस्थापयामासिवान् ।
प्रासादे प्रवरे सुशर्मनगरे मन्ये प्रतिष्ठां जने स्वं प्रापय्य ततः सुशर्मनगरे संस्थापयिष्यन् शिवे ॥२१॥
अम्भोधौ विमलः स्थलेऽपि विमलो द्वेधा धरित्रीभृतामप्यतर्विमलस्तथैव विमलो ग्रामे पुरे नीवृति ।
यद्वोच्चैर्विमलैकमय्यजनि यत्कीर्त्या त्रिलोकी ततः "सर्वं विष्णुमयं जगत्" स्मृतिरियं मिथ्येव जज्ञेऽधुना ॥२२॥

तस्याः साऊ-रूयडे नाम पुत्र्यौ श्रेयोधाम्यौ[......]गुणानाम् ।
धर्मग्रंथाधीतिमार्गाध्वनीने प्रज्ञापाने श्राद्धसद्धर्म्मलीने ॥२३॥
वर्षती वसुसचय बहु चतुर्वर्णेऽत्र संघे सती भूयस्तारकुटुबडबरवती पीयूषनिर्मातनुः ।
सौम्याऽतीव च कौमुदी कुमुदिनी प्राणेशमूर्त्तेः प्रतिराजूर्नाम रमैकधामविमलेत्यस्य द्वितीया प्रिया ॥२४॥
विश्वव्याप्तिकृतो यशोव्यवहृतेः कामं मिथःसगताः षट् पुत्रा गुणधाभिधो भुवनकोऽसौ हेमचंद्रस्तथा ।
सत्यस्या महिपाल-रत्न-महनाख्याः षट् पदार्था यथा तिस्रः पुत्रितमाश्च घांग्यथ परा नोतूस्तथा तील्हिका॥२५॥
एकच्छत्र नृपत्व जगति विदधतः श्राद्धधर्मक्षितींदोरौचित्येन प्रयोगेऽभिमतसकलसत्कर्मनिर्माणशूराः ।
षट् पुत्रास्ते पवित्राः सुमृशमबिभरुर्मूर्तषाड्गुण्यलक्ष्मीमेताः पुत्र्यस्तु तिस्रोऽप्रतिहतमहसो मूर्त्तशक्तित्रयाभाम्॥२६॥
अर्कस्यापि करासहेव वसनैः सर्वगमगात्रता नीरगीस्थगितानना वितरणे कंङ्कुलहस्तद्वया ।
आघाटः कुलयोषितां विमलचद्रस्य प्रिया प्रेयसी षोढावश्यककृत्यकृद् विमलमत्याख्या विजेजीयते ॥२७॥
मन्ये ज्ञापयितु जने गुणधनश्रीलक्ष्मनाथ निज या दीप्र बिभृते सदा हृदि गृहे सम्यक्त्वदीपाधिपम् ।
शकेऽन्तर्वसतः सदा जिनगुरू कांत च दृष्ट्वांतिके लज्जालुर्मितभाषिणी विनयभाग् योत्तिष्ठते श्रेयसे ॥२८॥
एतस्याः स्तः क्षेमसिंहनामोद्दामश्चाहडनामकश्च पुत्रौ ।
विविधममहामहीभृतः श्रीकरणिव्ययकरणिश्रियं श्रयतौ ॥२९॥

तत्र च—

ज्येष्ठो वैक्रियलब्धिमानिव सम स्वांते गुरूणां वसेद् ज्ञात्वाऽस्मादिव हेतुतो गुरुजनच्छदोऽनुवर्तेत सः ।
हस्तालब्रमसौ ददाति पततो दानस्य पके कलौ प्रत्यष्ठान्निजधर्ममत्र च जिन धर्म प्रतिष्ठाप्य सः ॥३०॥
पाणौकृत्य द्वितीयः सुखयति पुरुषद्वेषिणो दानलक्ष्मीं साधूनां स्वांतसार हरति स लभते साधुवाद बतोच्चैः ।
दष्टॄणां दृक्षु दर्पप्रसृनमति मदा न च्छिनत्येव तृष्णां नैकोऽप्युद्यद्गुणौघजगति विजयते कीर्तिभिः सक एव ॥३१॥
भांति स्वर्णविभूषणाः सुवसना रूप्याधिपा भोपला देदी नाम च लोहिनी त्रिभुवनी चास्याश्चतस्रः सुताः ।
मूर्त्ताः किं प्रहिता निजाश्चतसृभिर्दिग्देवताभि श्रियस्तुष्टाभिर्विमलस्य कीर्त्तिकुसुमैरभ्यर्चनेनान्वह ॥३२॥

इतश्च—

श्रीमान् सूरिजिनेश्वरोऽजनि कुले चांद्रेऽतिसांद्रे श्रिया यः श्रीदुर्लभभूपतेरधिसभ श्रीपत्तनेऽस्थापयत् ।
लुप्त चैत्यनिवासिभिर्गृहिगृहे वास मुनीनां भृश तान् न्यत्कृत्य कृती प्रतीतिमहितैः सिद्धान्तपत्राक्षरैः ॥३३॥
जज्ञेऽथो जिनचद्रसूरिरिह यः संवेगशालामृतैरात्मारामगण नृणामसिचत श्रेयःफलप्राप्तये ।
पट्टेऽस्याभयदेव आविरभवत् श्रीसूरिचक्रेश्वरो यश्चकेऽङ्गनिधीन् नव स्फुटतमार्थान् पुण्यवृत्तिश्रिया ॥३४॥
तत्पट्टे जिनवल्लभः प्रभुरुदैच्छ्रीमान् युगाग्रेसरः सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनदलैः किं केवलैर्निर्मितः ।
प्रजे श्रीजिनदत्तसूरिरथ तत्पट्टाचले यद्यशोदकानां निनदः प्रबोधयति दुर्मोहेन सुप्तान् जनान् ॥३५॥
आसीच्छ्रीजिनचद्रसूरिरथ तत्पट्टोदयाद्रौ रविर्यो रूपेण समाधिनाऽनवधिनाऽप्युच्चैर्विजिग्ये स्मरम् ।
सूरींद्रोऽजनि तत्पदे जिनपतिर्यस्योच्छलन् दुर्द्धरो गीष्पूरोऽस्खलि वादिभिर्नृपसमे स्वाग मौनमुद्राविधेः ॥३६॥
गुरुगुरुप्रवरोऽथ जिनेश्वरः समनुशास्ति जिनेश्वरशासनम् ।
कृतयुग त्ववतीर्णमिहानुज कलिकृत प्रतिबोधयितु कलिम् ॥३७॥

वृत्तो तुगमिहोत्तमाङ्गमभवच्छत्र यदस्या मुख पूर्णेन्दुप्रतिम च नर्ममुकुरः प्रखे प्रलबे श्रुती ।
सौवर्णोज्ज्वलनालकेलिकमलौ रक्तौ करौ सद्भुजौ व्यूढोरःकृशमध्यपीवरकटीयुक्तासनं चूडिकम् ॥३८॥
ऊरू क्रीडास्थले चांगुलिनखघुटिकभ्राजितावध्यजघौ
पादौ केल्यौ च शाखाकिशलफलकलौ पादपौ सुप्रकांडौ ।

सेवाकारी जनश्चागणितगुणगणः सजमश्रीर्वयस्या

तस्माद् यस्याऽऽत्मसंधे विलसति बत योगाम्यलक्ष्मीः सुखेन ॥३९॥ युग्मम् ॥

अमुष्य सुगुरोर्गिरो विमलचन्द्रसाधुः सुतृट् सुधामधुरिमस्पृशः परिपपौ मनोहृत्य ये ।

परेद्यवि कथाक्षणेऽह्नि रविविम्बिषा तापितश्चकोर इव चन्द्रिकां शरदि पूर्णिमाया निशि ॥४०॥

तथाहि—

निबिडतिमिरपूर्णे दुःषमाकालदर्शे जिनसुसमयदीपो वस्तुसार्थावभासी ।

इह न तदवबोधः शब्दसाहित्यविद्यासु द्रुतद्रुतवहस्योद्बोधनामतरेण ॥४१॥

साहित्योद्यल्लक्षणोद्बोधरूपा चेषा हैमद्व्याश्रयग्रथवृत्तिः ।

भो भो भव्या नव्यसूत्रैरमुष्याः श्रेयः श्रेयोऽकारण लेखन तत् ॥ ४२ ॥ युग्मम् ॥

स्वादु कृत्वेति पीत्वा गुरुवचनसुधां हर्षनृत्यन्मनोब्धिः साधुर्द्धो वारदेविर्धनमुपल्लवायापि नो मन्यमानः ।

पत्रेषु श्रीपवित्रेष्वतुललिपिकृताऽस्याः प्रती अप्रती द्वे वृत्तेः श्रेयस्कृतेऽलीलिखदमृतकरेऽङ्कच्छलान्नाम च स्वम् ॥४३॥

अर्धांगे वासवत्या सहभुविलसतः शब्दविद्याधिराश्या साहित्यक्षोणिनेतुर्वशितदिश इद पुस्तकानां चतुष्कम् ।

पुष्णात्याशाचतुष्के न्यसितुमुरुयश स्तम्भमरभमगी नृत्तस्तभप्रभां चाधिकल्पयति चतुर्वर्णचक्षुर्नटानाम् ॥४४॥

चतुर्गतिचतुर्वार्द्धीस्तरीतु तरणिश्रियः । गुरवे लेखयित्वाऽमौ चतुरः पुस्तकानदात् ॥४५॥

क्रोडाक्रीडेऽन्तरिक्षे विकसितकुसुमे तारकैस्तारतारैः स्वर्णया केलिनद्या रुचिरपरिसरे ज्योत्स्नया पट्टदेव्या ।

राजा नु क्रीडमानो विविध विलसितैर्यावदुत्कठयेन् नूनेनेै श्रीपुस्तका. स्वश्रवणमनुबुधास्तावदुत्कंठयतु ॥४६॥

प्रातः प्रातर्निवेश्य त्रिभुवनजननी भारती चित्तपट्टे भक्तिक्षीरे प्रक्षाल्य क्रमकमलयुग सन्नमस्यन्नमुष्याः ।

दासः पार्श्वस्य जैनेश्वरचलनकजासेवने षट्पदश्रीरेतां सोमुत्र्यते स्माभयतिलकगणिः सुप्रशस्तां प्रशस्तिम् ॥४७॥

पश्चाल्लिखिता—

संवत् ग्रहतुरसेंदु१६६९प्रमिते आश्विनमासि सकलतार्किकचक्रचूडामणिश्रीसाधुकीर्त्युपाध्यायानां विनेयवरेण्य-पडितविमलतिलकगणिशाब्दिकविद्यासाक्षात्कृतगोनर्दीयोपमावाचनाचार्यश्रीसाधुसुंदरगणीनां शिष्येण प. विमल-कीर्तिमुनिना प्रतिरियमस्माद् भांडागारपुस्तकाल्लिखिता पठिता च । प. विजयकीर्तिसहितानाम् तेषां श्रीविमलकीर्त्तीनां शिष्य प. विमलचन्द्रगणिः । तच्छिष्यो वाचकश्रीविजयहर्षगणिविजयमानस्तस्य शिष्य उपाध्यायश्रीधर्मवर्धनगणिभिः शिष्यजयसुंदर-कीर्तिसुंदराभ्यां सहितैः शोधिता विकीर्णपत्राणामनुक्रमांकीकरणात् । स. १७४५श्रावण सुदि १३ दिने जैसलमेरमध्ये ॥

क्रमाङ्क ३४१

नैषधचरितमहाकाव्य (शशांकसंकीर्त्तन महाकाव्य) पत्र ३१७ । **भा.** स. । **क.** श्रीहर्षकवि । **ले. सं.** १३७८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १५॥×२।

अन्त—

श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुत श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचय मामल्लदेवी च यम् ।

द्वाविंशो नवसाहसाङ्कसाचरिते चम्पूकृतोऽय गतः, काव्ये तस्य कृतौ नलीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः ॥१४७॥

शशाङ्कसङ्कीर्त्तनं नाम ॥छ॥ सम्वत् १३७८ श्रीश्रीमालकुलोत्तंसेन श्रीजिनशासनप्रभावनाकरणप्रवीणेन सा० हेदापुत्र रत्नेन सा० आनासुश्रावकेण सत्पुत्र उदारचरित्र सा० राजदेव सा० छजल सा० जयतसिंह सा० अभराज प्रमुखपरिवारपरिवृतेन युगप्रवरागमश्रीजिनकुशलसूरिसुगुरूपदेशेन श्रीनैषधसूत्रपुस्तिका मूल्येन गृहीता ॥छ॥

क्रमाङ्क ३४२

नैषधचरित्रमहाकाव्य पत्र ३४९। **भा.** स.। **क.** श्रीहर्षकवि। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×१॥.। पत्र १८३ मु नथी।

अन्त—

छायाङ्कसङ्कीर्त्तन नाम ॥छ॥

यथा यूनस्तद्वत् परमरमणीयाऽपि रमणी कुमाराणामन्तःकरणहरण कैव कुरुते ।
मदुक्तिश्चेतश्चेन्मदयति शुचीभूय सुधिय किमस्या नाम स्यादरसपुरुषानादरभरैः ॥१४९॥
दिशि दिशि गिरिग्रावाणस्तां वमन्तु सरस्वती तुलयति मिथस्तामापातस्फुरद्ध्वनिडम्बराम् ।
न परमपरः क्षीरोदन्वान् यदीयमुदीयते मथितुरमृत खेदच्छेदिप्रमोदनमोदन ॥१५०॥
॥ मङ्गल महाश्रीः लेखकपाठकयोः ॥

क्रमाङ्क ३४३

नैषधीयमहाकाव्य साहित्यविद्याधरीटीका प्रथमखंड द्वादश सर्ग पर्यन्त पत्र ३७७। **भा.** स.। **क.** विद्याधर पंडित। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** २५॥×२।

क्रमाङ्क ३४४

नैषधीयमहाकाव्य साहित्यविद्याधरीटीका द्वितीयखंड १३ मा सर्गथी चालु पत्र ७७ त्रटक अपूर्ण। **भा.** सं। **क.** विद्याधर पंडित। **ले. सं.** अनु १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५॥×२।.। वचमां घणां पाना नथी।

क्रमाङ्क ३४५

नैषधचरित्रमहाकाव्य साहित्यविद्याधरीटीका चतुर्थसर्ग पर्यन्त पत्र ६-२१८। **भा.** स। **क.** विद्याधर पंडित। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५॥×२

क्रमाङ्क ३४६

(१) **विक्रमांककाव्य टिप्पणीयुक्त** पत्र १५८। **भा.** स। **क.** बिल्हणकवि। **ग्रं.** २५४५।

आदि—

भुजप्रभादड इवोर्द्धगामी स पातु वः कंसरिपो कृपाण ।
यः पाञ्चजन्यप्रतिबिम्बभङ्ग्या धाराम्भसः फेनमिव व्यनक्ति ॥१॥
श्रीधाम्नि दुग्धोदधिपुण्डरीके यश्चञ्चरीकद्युतिमातनोति ।
नीलोत्पलश्यामलदेहकान्तिः स वोऽस्तु भूत्यै भगवान् मुकुन्दः ॥२॥
वक्षःस्थली रक्षतु सा जगति जगत्प्रसूतेर्गरुडध्वजस्य ।
श्रियोऽङ्गरागेण विभाव्यते या सौभाग्यहेम्नः कषपट्टिकेव ॥३॥

अन्त—

यस्य स्वेच्छाशबरचरितालोकनत्रस्तयेव, न्यस्तश्चडाशशिकलिकया क्वापि दूरे कुरङ्गः।
स व्युत्पत्ति सुकविवचनेष्वादिकर्त्ता श्रुतीनां देवः प्रयानचलदुहितुर्निश्चलां वः करोतु ॥१०८॥
इति श्रीत्रिभुवनमल्लदेवविद्यापतिकाश्मीरकभट्टश्रीबिल्हणस्य कृतिर्विक्रमाङ्काभिधान समाप्तम् ॥छ॥ एव जात ग्रन्थाग्र २५४५।

(२) **घटकर्परकाव्य** पत्र २। **भा.** स.। **का.** २१।

आदि—

निचित खमुपेत्य नीरदैः प्रियहीना हृदयावनीरदैः ।
सलिलैर्निहित रजः क्षितौ रविचन्द्रावपि नोपलक्षितौ ॥१॥

अन्त—

भावानुरक्तवनितासुरतैः सपेय आलभ्य चाम्बु तृषितः करकोशपेयम् ।
जीयेय येन कविना यमकैः परेण तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण ॥२१॥

॥ घटकर्परकाव्य समाप्तम् ॥छ॥

(३) **मेघाभ्युदयकाव्य** पत्र ३–६। **भा.** म.। **का.** ३८।

आदि—

काचित् काले प्रमुदितनदन्नीलकण्ठघनागे व्योमाटव्या प्रतिदिशमलं मञ्चरन् मेघनागे ।
बद्धारम्भ वदति वनिता स्म प्रवासाय कान्त कामश्चाप वहति हितदा विस्फुरच्छायकान्तम् ॥१॥

अन्त—

विद्युल्लता लसति काञ्चनसन्निभाऽऽर धाम्नो वहन्ति घनर्वान्त न भाति भारम् ।
उच्चै रसत्यविरत जलदोऽस्तवारिरस्मिन् प्रयातु समये प्रिय यस्तवारिः ॥३८॥छ॥

॥ इति मेघाभ्युदयकाव्य समाप्तमिति ॥छ॥२॥

(४) **वृन्दावनमहाकाव्य** पत्र ६–१०। **भा.** स.। **क.** मानाक कवि। **का.** ५२।

आदि—

वरदाय नमो हरये पतति जनोऽय स्मरन्नपि न मोहरये ।
बहुशश्चक्रं हता मनसिदितियेन दत्यचक्रं दहता ॥१॥

अन्त—

इत्याह पीतवाससमायतनेत्रमस्त कमासुरान् पशुमतामायतने त्रस्तम् ।
हसितानां विमलतया महलीलाजाना छायां विकरन् दशनैः सह लीलाजानाम् ॥५२॥छ॥

॥ इति वृन्दावनमहाकाव्य समाप्तम् ॥छ॥

(५) **मधुवर्णनकाव्य** पत्र १०–१५। **भा.** स.। **क.** केलिकवि। **का.** ६९।

आदि—

मुदमुपैतु बुधो मधुवर्णनात् सुकविकेलिकृतात् कृतनिस्वनात् ।
अलिकुलादिव बद्धसचम्पकविमरकेसरकेसरकेलितः ॥१॥

अन्त—

अदयमयमभूत् कृतप्रकामविधुरतनुर्मधुरा वयो रटन्ति ।
प्रियतम दिवसा वृथा च येषु विधुरतनुर्मधुरा वयो रटन्ति ॥६९॥

॥ इति केलिकृत मधुवर्णन नाम काव्य समाप्तम् ॥छ॥

(६) **विरहिणीप्रलापकाव्य (षड्ऋतुवर्णनकाव्य)** पत्र १५–१८। **भा.** सं.। **क.** **केलिकवि।**
का. ५५।

आदि—

सा बोध्या भारती भव्या न नताऽमरसेनया । एकया भक्तिपरया न न तामरसेन या ॥१॥

अन्त—

अकार्षीत् स इदं काव्यं केलिं सज्जनयोगतः । श्लाघ्यतां यस्य सत्काव्यकेलिः सज्जनयोगतः ॥५५॥
॥ इति केलिकृत विरहिणीप्रलापनाम काव्यं समाप्तमिति ॥छ॥

(७) चंद्रदूतकाव्य पत्र १८–२० । **का.** २३ ।
ले. सं. १३४३ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२।

आदि—

यदतिसितशराप्रप्रस्तमापन्नदुःख त्यजति जगदशेष दीनमापन्नदुःखम् ।
स्मरत तदत नूनं सर्वदा शासनस्य प्रभुमजरमनन्तं श्रीभिदाशासनस्य ॥१॥

अन्त—

इति विविधवचोभिश्चन्द्रमायामवत्या गदित उदयमानो दीनमायामवत्याम् ।
कथयितुमिव तस्मै तूर्णमध्वन्यवध्वा सरति रतिमिवाभूत्यम्बराध्वन्यवध्वाः ॥२३॥

॥इति चन्द्रदूताभिधानं काव्यं समाप्तम् ॥छ॥ सम्वत् १३४३ वैशाख शुदि ६ भा. **घांघलसुत भां. भीम** भा. श्रीछाहडसुत भां. जगसिंह भां खेतसिंहश्रावकैः श्रीचित्रकूटवास्तव्यैः मूल्येनेयं पुस्तिका पुनर्गृहीता ॥

क्रमाङ्क ३४७

(१) वृन्दावनकाव्य सटीक पत्र १–३१ । **भा.** सं. । **मू. क.** मानांक । **टी. क.** शांतिसूरि पूर्णतल्लगच्छीय । **ले. सं.** १२१५ ।

आदि—॥ नमः सर्वज्ञाय ।

वर्द्धमानं सुधामानं देवेन्द्रैः कृतसत्क्रियम् । वर्द्धमानं महामानं तथा देशितसत्क्रियम् ॥१॥
वृन्दावनादिकाव्यानां यमकैरतिदुर्विदाम् । वक्ष्ये मन्दप्रबोधाय पञ्चानां वृत्तिमुत्तमाम् ॥२॥

आदौ तावत् काव्यकरणे प्रवर्त्तमानः उग्रसेनतनयो मानाङ्को मङ्गलप्रतिपादनाय शिष्टसमाचारपरिपालनाय चेष्टदेवतायै विष्णवे नमस्कारमाह ।

वरदाय नमो हरये पतति जनोऽयं स्मरन्नपि न मोहरये । बहुशश्चक्रं हता मनसि दितिर्येन दैत्यचक्रं दहता ॥१॥

अन्त—

वृन्दावनाख्यकाव्यस्य कृत्वा वृत्तिं मुनिर्मलाम् । यदर्जितं मया पुण्यं तेन निर्वान्तु देहिनः ॥
श्रीपूर्णतल्लगच्छसम्बन्धिश्रीवर्द्धमानाचार्यस्थापितश्रीशान्तिसूरिविरचिता वृन्दावनकाव्यवृत्तिः समाप्तेति ॥छ॥
मङ्गलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥

(२) घटकर्परकाव्य सटीक पत्र ३२–४२=११ । **भा.** सं. । **टी. क.** शांतिसूरि पूर्णतल्लगच्छीय ।

आदि—॥ नमो जिनाय ॥

निचितं खमुपेत्य नीरदैः प्रियहीना हृदयावनीरदैः । सलिलैर्निहितं रजः क्षितौ रविचन्द्रावपि नोपलक्षितौ ॥१॥

प्रोषितप्रमदयेदमुच्यते इति वक्ष्यति । तत्रश्चायमर्थः । प्रोषितप्रमदया गतभर्तृकया सख्याऽपन इदं पूर्वोक्तं निचितमित्यादिकं वक्ष्यमाणं चान्यते ॥

अन्त—

श्रीपूर्णतल्लगच्छसम्बन्धिश्रीवर्द्धमानाचार्यनिजपदस्थापितश्रीशान्तिसूरिविरचिता घटकर्पराख्यकाव्यवृत्तिः समाप्ता ॥
घटकर्परकाव्यस्य वृत्तिं कृत्वा सुनिर्मलाम् । यदर्जितं मया पुण्यं तेन निर्वान्तु देहिनः ॥छ॥

(३) शिवभद्रकाव्य सटीक पत्र ४३–८७=४५ । **भा.** सं. । **मू. क.** शिवभद्र कवि । **टी. क.** शांतिसूरि पूर्णतल्लगच्छीय ।

आदि—७०॥ॐ नमो वीतरागाय ॥ साम्प्रत **शि**वभद्राख्यकाव्यस्य वृत्तिः क्रियते ।

तत्र चादौ **शि**वभद्रनामा कविरिष्टदेवतायै नमस्कार मङ्गलार्थमाह ॥छ॥

प्रणमत सदसिगदतं चैद्यमहन्योऽप्रियाणि सदसिगदतं । चूर्णितचक्रतुरग रुक्मिणममुञ्चच यस्य चक्रतुरग ॥१॥

अन्त—

वीक्ष्य शरन्मुखमुडुपतिविशेषकोपे त प्रणयेन वर्त्तमान विशेषकोपेतम् ।

कृत उपकारः सख्य न वञ्चनामेति अस्मद्विधमनुगमयन् नव च नामेति ॥४६॥

स लक्ष्मणो न वञ्चनां स्खलनामेति गच्छति । किं कारयन् अनुगमयन् योजयन् । कथमस्मद्विध मासदृश । कमनुगमयन् त राम । कथ कृत उपकारः सख्य न वञ्चनामेति कृतो विहितोऽस्माभिर्भवतामुपकारस्ताराम-सर्पणलक्षणः तथा सख्य मित्रत्व च नव नूतन कृत भवद्भिः सहास्माभि· कथ नाम व्यक्तमित्यनेन प्रकारेण । कीदृश तं वर्त्तमान तिष्ठन्त । क विशेषकोपे । किं कृत्वा वीक्ष्यावलोक्य । किं तत् शरन्मुख शरत्कालप्रारम्भ । कीदृशमुडु-पतिविशेषकोपेत चन्द्रतिलकयुक्त । केन वीक्ष्य प्रणयेन प्रीत्या ॥छ॥

श्रीपूर्णतल्लगच्छसम्बन्धिश्वेताम्बरश्रीशान्तिसूरिविरचिताया **शि**वभद्रकाव्यवृत्तौ द्वितीय आश्वासकः समाप्तः ॥छ॥

(४) मेघाभ्युदयकाव्य सटीक. पत्र ८८–११४=२७ । **भा.** स. । **टी. क.** शांतिसूरि पूर्णतल्लगच्छीय ।

आदि—

शिवभद्रवृत्तिरुक्ता । साम्प्रत **मे**घाभ्युदयस्य वृत्ति· क्रियते । तत्र चाय सम्बन्धः । काचिद्वनिता मेघागमसमये प्रियतम प्रवसन्त वदति समाप्तिं यावदाह । तत्र चाद्य· श्लोक· ॥छ॥

अन्त—

श्रीपूर्णतल्लगच्छसम्बन्धिश्रीवर्द्धमानाचार्यस्वपदस्थापितश्रीशान्तिसूरिविरचिता **मे**घाभ्युदयकाव्यवृत्तिः समाप्ता: ॥

(५) चंद्रदूतकाव्य सटीक पत्र ११५–१३२=१८ । **भा.** स. । **मू. क.** जंबूनाग । **टी. क.** शांतिसूरि पूर्णतल्लगच्छीय ।

आदि—७०॥ ॐ नम· सर्वज्ञाय ॥

जम्बूनागकविश्चन्द्रदूतकाव्यकरणे प्रवर्त्तमान आदौ मङ्गलार्थ इष्टदेवतायै नमस्कारमाह ॥छ॥

अन्त—

चन्द्रदूतस्य काव्यस्य वृत्ति कृत्वा सुनिर्मलाम् । यदर्जित मया पुण्य तेन निर्वान्तु देहिनः ॥१॥छ॥

(६) राक्षसकाव्य सटीक पत्र १३३–१४६=१४ । **भा.** स. । **क.** जिनचन्द्र ।

आदि—॥नमः सरस्वत्यै ॥

कश्चिद्वन बहुवन विचरन् वयस्थोऽपश्यं वनात्मवदनां वनितां वनार्द्राम् ।

तर्वर्यरिप्रदमुदीक्ष्य समुत्थित खे नागामिमा मदकलः सकलां बभाषे ॥१॥

कश्चिदित्यनिर्दिष्टनामधेय· । ना इति पुरुष· । वन काननम् । बहूनि वनानि जलानि यत्र तद् बहुवनम् ।

अन्त—

काव्यराक्षसस्य टीका परिसमाप्ता ॥ मङ्गलमस्तु ॥छ॥

चरणकरणदक्ष· क्षीणदोषो जिताक्षः क्षपितविधिविपक्षः क्षान्तिमान् बद्धकक्ष· ।

यतिपति**जि**नदत्ताचार्यदत्तोपदेशास्खलितमहिमयोगात् कान्तकीर्त्तिर्मुनीन्द्रः ॥१॥

समजनि **जि**नचन्द्रश्चन्द्रवच्चारुरोचिर्गणधरपदलाभाल्लब्धलोकप्रतिष्ठः ।

जिनमतयतिरेतत् तद्विनेयः सुशान्तो व्यलिखदमलबुद्धिः कृत्स्नकर्मक्षयाय ॥२॥

शरचन्द्रसूर्यसङ्ख्ये १२१५ सम्वद्विक्रमभूपतेः । अतियाति नभोमासे पञ्चदश्यां तिथौ रवौ ॥३॥

यावज्जिनप्रवचन प्रवरप्रभाव यावज्जिनागमविदो यतिनोऽपपापाः ।
यावत् सुदर्शनभृतः स्थिरधीरचित्ताः तावत् सुपुस्तकमदः सुधियः पठन्तु ॥४॥ ॥ इति शुभम् ॥

(७) घटकर्परकाव्य सटीक पत्र ३९-५३ । **भा.** स. । **टी. क.** पूर्णतल्लगच्छीय शांतिसूरि । **ले. सं. संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११॥।×१॥।

क्रमाङ्क ३४८

वासवदत्ता आख्यायिका टिप्पणी सहिता पत्र ४७ । **भा.** स. । **क** सुबधु महाकवि । **ले.सं.** १२०७ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२×२॥

अन्त —

इति महाकविसुबधुविरचिता वासवदत्ता नाम कथा समर्थिता ॥ सवत् १२०७ श्रावण वदि १४ सोमे । रुद्रपल्लीसमावासे राजश्रीगोविंदचद्रदेवविजयराज्ये श्रीयशोधरेण आचार्याणा कृते लिखितेय वासवदत्तेति ॥
शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवतु भूतगणाः । दोषा. प्रयान्तु नाश सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥
॥छ॥ मगल महाश्री. ॥छ॥

क्रमाङ्क ३४९

चक्रपाणिविजयमहाकाव्य पत्र ११७ । **भा** स. । **क** लक्ष्मीधर भट्ट । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥×३॥।

आदि—द० ॥ स्वस्ति ॥ ॐ नम सर्व्वविदे ॥

कालिंदीजलकालकालियकुलक्रीडाविनाशैषिणा दुष्टारिष्टकठोरकठवलनव्यात्श्लिष्टकठस्रजा ।
रोहत्केशिकिशोरदर्पदवीक्लिष्टेन पुष्णातु वो दोष्णा दुद्धरदैत्यदर्पदलनद्वारेण दामोदरः ॥१॥

अन्त—

पुष्पश्रीममलकृत मधुमिव प्रायानिरुद्ध ततः सार्द्ध दानवकन्यया त्रिभुवनभ्रान्तप्रतापोदय. ।
बिभ्राण: स्वरविभ्रमं स भगवाननन्तः प्रविश्याखिलामुन्मत्तामिव तां चकार परितः पौरोत्सवैर्द्वारकाम् ॥६३॥
॥छ॥ इति भट्टलक्ष्मीधरकृतौ चक्रपाणिविजये महाकाव्ये बाणदोखडन नाम विंशतितमः सर्गः समाप्तः ॥
॥छ॥ मगलं महाश्री ॥

क्रमाङ्क ३५०

शब्दभेदप्रकाश नाममाला पत्र ३६ । किंचिदपूर्ण । **भा.** स. । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥×१॥।

आदि—॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

प्रबोधमाधातुमशब्दिकानां कृपामुपेत्यात्र गता कवीनाम् ।
कृतो मया रूपमवाप्य शब्दभेदप्रकाशोऽखिलवाङ्मयाब्धेः ॥१॥

अन्त—

श्रीसाहसाङ्कचरितप्रमुखाः सुगद्यपद्यप्रबन्धरचनास् वितन्वतेः ....।
व्युत्पत्तिमुज्ज्वलतमां परमां च शास्त्रमुल्लासिता जगति येन सरस्वतीयम् ॥
निःशेषवैद्यकमताम्बुधिपारदृश्वा शब्दागमांबुरुहषण्डरविः कवीन्द्र. ।
यत्नान्महेश्वरकविर्निरमात् प्रकाम आलोच्यता सुकृतिभिस्तदमावनघः ॥४६॥

नामपारायणोणादिनिरुक्तोक्तविकल्पितः । शब्दार्णवविधेश्चान्तैः सन्दब्धोऽप्येष साधुभिः ॥४७॥
कर्त्तुं चेतश्चमत्कार............[अपूर्ण]

क्रमाङ्क ३५१

निर्वाणलीलावतीमहाकथाउद्धार (*लीलावतीसार*) **पद्य** पत्र २६७ । **भा.** स. । **क.** जिनरत्नसूरि । **र. सं.** १३४१ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११॥×२॥। आ पोथी कागळ उपर लखेली छे ।

आदि—

.........त्सगसंगिरादांबुजन्मने । नमो. . .. .शसेव्यायने ....॥१॥
वर्द्धमानप्रभोः पादा. स्नाद् दर्श नत्यशालिनः । मोक्षाचलारोहि.. . ...श्रये ॥२॥
द्वाविंशतेर्जिनेन्द्राणा गाव पांतु रवेरिव । ... ...यो वासरसगताः ॥३॥

अन्त—

तदिदमनुपमान मुक्तिशर्मातिमान मततमनुभवन्त सर्वतः क्षेमवन्तः ।
सुगुरुसमरसेनाढ्या मुनीन्द्राश्चतुर्विंशतितमजिनरत्नश्रीसुसङ्ग पृणतु ॥५९॥

इति श्री**निर्वाण**लीलावतीमहाकथेतिवृत्तोद्धारे **लीला**वतीसारे जिनाङ्के श्री**सिंह**सूरिश्रीपद्मकेसरराजर्षि**लीला**वती-**सुर**सुन्दरी**र**मणमनीश्रीकान्तवीर्यसद्गुरुकेवलज्ञाननिर्वाणव्यावर्णनो नाम एकविंशतितम उत्साह समाप्त. ॥छ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽय श्री**ली**लावतीसारो नाम महाकथाविशेष । एव च—

कौशाम्ब्यां **वि**जयादिसेनतृप इत्याद्यौ मया यत् प्रतिज्ञात तन्महसा **जिनेश्वर**गुरुश्रीपादपङ्केरुहाम् ।
गीर्देव्या. स्फटिकेन्दुकुन्दकुमुदप्रालेयशङ्खद्युतेरश्रान्त प्रणिधानतश्च सधिया सिद्धि समभ्यासितम्॥१॥छ॥ग्र ११५॥
तीर्थे श्री**वर्द्ध**मानस्य **सुधर्म**स्वामिनोऽन्वये । श्री**वर्द्धमान** सुगुरु सधर्मस्वाम्युदयन ॥१॥
तच्छिष्यमौलिमणिरधत **गू**जरत्रासुत्रामदुर्लभनरेश्वरमूर्द्धसेव्य ।
श्रीमान् **जिनेश्वर**गुरुगुरुधामपूर. सूर विजित्य बत सत्पथमक्षयद् य ॥२॥
सन्नीतिरत्नाकरमुद्यतर्कान श्रीअष्टकादेर्विवृतीश्च सृष्ट्वा ।
चम्पूमिमामद्भुतवाग्विलासां **ली**लावतीं य सुकथामसूत ॥३॥
तत्पादपद्ममधुपो **जि**नचन्द्रसूरिरायोऽद्युतन्निखिलवाङ्मयसिन्धुसिन्धुः ।
सवेगसारसरितो ......त्तन्निबन्धमिषतः परितो निरीयु ॥४॥
श्री**स्तम्भ**नाभिधसुतीर्थमणिप्रदीपोऽनू...... ....रोऽभयदेवसूरिः ।
आशैशवादपि हि यो विमुखो नवाङ्गया वृत्ति......त कश्चिदहो नवाङ्गयाः ॥५॥
तत्पट्टनेताऽतुलसौविहित्यज्ञानाम्बुधिः श्री**जिन**वल्लभोऽभूत् ।
यद्दत्तसद्ग्रन्थसुधाप्रपास्ताः सेव्याः समस्तैरपि मुक्तिपान्थैः ॥६॥
तदीयगच्छाम्बुजषण्डचण्डभानुर्बभौ श्री**जिन**दत्तसूरिः ।
यत्पादसेवा बत राजभिस्तैः सर्वांगसम्पूर्णतमैर्वितेने ॥७॥
तदनु च **जिनचन्द्र**सूरिसिंहः समजनि शैशवशालिनाऽपि येन ।
प्रबलमदभरान्धवादिदन्तावलदलना खलु लीलयैव चक्रे ॥८॥
तत्पट्टपूर्वाचलहेलिकेलिः प्रद्योतनः श्री**जिन**पत्यधीशः ।
यस्योदये संप्रससार धाम नान्यस्य कस्यापि हि सर्वदिक्षु ॥९॥

अथाभ्युदयमासदत् प्रभुजिनेश्वरश्चन्द्रमा रमास्पदमिद गणाम्बुधिविलासजाग्रत्करः ।
जिनेन्द्रभवनाचलाः प्रतिपदं यदीयोदये बभुः प्रथमचन्द्रिकात् कनककुम्भचण्डाद्भुताः ॥१०॥
यस्तात्कालिकनव्यकाव्यकुसुमैरार्चीत् त्रिसन्ध्य जिनान् नानालब्धिनदीनदीपरिवृढो योऽनुव्यधाद्गौतमम् ।
श्रीक्ष्माऽभूष्यत यत्प्रतिष्ठिततमैः शिष्यैर्विहारैर्द्विधा, यद्वा यो विधिधर्मसीम्नि सुकृताद्वैत बताऽधात् कलौ॥११॥
सुगुरुसुरतरुस्ततोऽभ्युदीत' पृणति जगति जिनप्रबोधसूरिः ।
समयमसुमति प्रभावनाभिर्वत सुषमासुषमां न य............॥१२॥
...वाक्यात् सतत मनीषितलताविस्ताराधाराधरान् श्रीसूरीन्द्रजिनेश्वरस्य सुगुरोः शिष्यावतसाग्रणीः ।
एष श्री...... ....जन्निर्वाणलीलावतीसार सारमुदारभक्तिमधुरः प्राक् सूरिपादाम्बुजे ॥१३॥
स्तुमः प्रभु जिनेश्वर....... ....गुरु कवित्वपदविद्गुरु यतिपसर्वदेवप्रभुम् ।
प्रमाणपदवीगुरु विजयदेवसूरिं महाभिषेक ....गमगुरुं नमस्कुर्महे ॥१४॥
लीलावती द्विनवते शरदां सहस्रे श्रीवैक्रमेऽरचि जिनेश्वरसूरि......।
... . सचितिरिय पुनरेकचत्वारिंशत्त्रयोदशशतेषु मया वितेने ॥१५॥
संहव लक्ष्मीतिलकानु[जिन प्रत्येक]बुद्धं चरित व्यधाम ।
लीलावतीसारमम् तु जैनेश्वरप्रबधेन सहाग्रजेन ॥१६॥
प्राचीनसद्गुरुजिनेश्वरसूरि . .. लीलावतीसमभिधानकथेति वृत्तम् ।
पीयूष . विदधे मयेति हस्ते प्रगृह्य तदिद सुधियो धयन्तु ॥१७॥
मार्गा. दि . ..थि पुष्ययोगे, जावालिपत्तनवरेऽथ समर्थितोऽयम् ।
प्रत्यक्षरं गणनया पञ्चाशनाद्ध, गाद्धत्रिशत्यधिकमुक्तमनुष्टुभा भो ॥१८॥
अङ्कतोऽपि ५३५० ॥

व्या .. श्रुतप्रार्थिकेन जिनप्रबोधयतिपतिना । समशोधि रा गणनाऽसौ सौम्यमूर्तिगणिना च ॥१९॥
छदो याकरणप्रमाण ..... काग्यागिणश्री. काव्यजातविधानशोधनकलाचातुर्य... ....।
आदर्शे प्रथमे समकलयताप्य सौम्यमूर्तिगणिः माहात्म्य. .. गणिप्रष्ठाः समेऽप्यादधुः ॥२०॥
सर्वद्वीपसरस्वतां [?] मेरु मिथो वि... . . ..जन्मरत्नकनकप्राग्भारसारश्रियम् ।
यावत् प्राप्नति रत्नमानुशिखरी निर्वाणलीलावतीमारमनावद्य नितान्तमुदियाद् व्याख्यायमानो बुधैः ॥२१॥
इतिग्रन्थप्रशस्ति सम्पूर्णा ॥छ॥ शुभमस्तु चतुर्विधश्रमणगच्छस्य ॥छ॥

[श्रीयुत ची. डा. दलाले जणाव्युं छे के—आ प्रतिमां एक कागळनी चीरमा "श्रीजिनरत्नाचार्यविरचिता निर्वाणलीलावतीकथा।" एम लखेलुं छे पण आ चीर त्यां मारा जोवामां आवी नथी ।]

क्रमाङ्क ३५२

लीलावतीकथा गाथाबद्ध-महाराष्ट्रीय देशीभाषामय पत्र १४३। **भा. प्रा.। क. भूषणभट्ट** पुत्र कुतूहल कवि। **ले सं.** १२६५। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×१॥

अन्त—

॥ सवत् १२६५ वर्षे पौष सुदि द्वादश्यां शनौ लीलावती नाम कथा समाप्तेयम् ॥छ॥ मङ्गमस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ३५३

अपभ्रंशकाव्यत्रयी त्रुटक पत्र १०७। **भा.** अप.।

(१) चर्चरीरासक सटीक. पत्र १–३७। **भा.** अप स। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **टी. क.** जिनपाल। **टी. र. सं** १२९४।

(२) **धर्मरसायनरासक सटीक** पत्र १८-(?)। **भा.** अप. सं.। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ।

पत्र १७, १९, २०, २२, २४, ५३, ६१-६३, ६५, ६८, ७०, ७१, ७३, ७४, ७६, ७८-८१, ८३-८७, ८९, ९४, ९६-१०३, १०५ नथी.

क्रमाङ्क ३५४

गउडवहोमहाकाव्य सटीक पत्र २४८। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** वाक्पतिराज। **टी. क.** भट्ट उपेन्द्रहरिपाल। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी अत। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।।।×२

क्रमाङ्क ३५५

अनर्घराघवनाटक पत्र १६९। **भा.** प्रा. स.। **क.** मुरारि कवि। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४।।।×२।

क्रमाङ्क ३५६

अनर्घराघवनाटक टिप्पनक पत्र २०३। **भा.** स.। **क.** मलधारी नरचन्द्रसुरि।

ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×१।।।

आदि—

परब्रह्ममयं ज्योतिः प्रणिधाय विधीयते। इदं मुरारिमाहात्म्यव्याख्यानोत्साहसाहसम् ॥१॥
नमस्तेभ्यो मतिर्येषां जगदुल्लङ्घ्य वर्तते। मादृशाः सन्ति ये केचित्तदर्थमयमुद्यमः ॥२॥
उत्साद्य मत्सरध्वान्त विवेकालोकसम्पदा। अस्मिन् गुणांश्च दोषांश्च विचिन्वन्तु सचेतसः ॥३॥

अन्त—

समाप्तमिदमनर्घराघवटिप्पनकम् ॥छ॥
जज्ञे हर्षपुरीयगच्छमविता श्रीमान्मुनीन्दुप्रभुर्देवानन्द इति प्रभुः स विजयी देवप्रभश्च प्रभुः।
तत्पादाब्जनखांशुभिः प्रशमिते ध्वान्तेऽमरेन्दोर्मतिमात्रेऽस्मिन् पदपद्धतिं व्यपगतव्यासगमासूत्रयत् ॥१॥
मुरारिवाचामुच्चैर्यो महिमा नहि मादृशः। किन्तु किञ्चिन्निबन्धोऽय यथाबुद्धि व्यधीयत ॥२॥
शब्दप्रमाणसाहित्यत्रिवेणीसङ्गमश्रियाम्। श्रीमन्मलसूरीणामिदमुद्यमवैभवम् ॥३॥
॥ समाप्तमिदं टिप्पनकम्। कृतिरियं श्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥ ग्र. ६६१ ॥छ॥

क्रमाङ्क ३५७

(१) **मुद्राराक्षसनाटक टिप्पणी सह** पत्र १-९५। **भा.** प्रा. स.। **क.** विशाखदेव। **ले. सं.** १३१४।

अन्त—

॥ सवत् १३१४ वर्षे लौ. आषाढ वदि शनौ अद्येह श्रीवामनस्थल्यां स्थित मह० वेयड सुत ठ. आसाधीतेन पुस्तकं लिखितमिति। शुभ भवतु लेखकपाठकवाचकानां अन्येषामेव ॥

(२) **प्रबोधचन्द्रोदयनाटक टिप्पणी सह** पत्र ९६-१६५। **भा.** प्रा. स.। **क.** कृष्णमिश्र। **ले. सं.** १३१८। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×२।।।

अन्त—

॥ संवत् १३१८ वर्षे...शुदि ६ रवौ अद्येह श्रीभृगुकच्छे सा० मह. वेयड सुत ठ. आसाधीत्यस्य स्वार्थे प्रबोधचंद्रोदय नाम नाटक लिखितं ॥छ॥ शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥

क्रमाङ्क ३५८

वेणीसंहारनाटक पत्र ७३। **भा.** प्रा. स.। **क.** भट्ट नारायणकवि। **ग्रं.** १३५०।
ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥×१॥।

क्रमाङ्क ३५९

(१) **हम्मीरमदमर्दननाटक** पत्र ९०। **भा.** प्रा. स.। **क.** जयसिंहसूरि। **ग्रं.** ९००। **ले. सं.** १२८६। **संद** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प** १८×२

अन्त—

॥ संवत् १२८६ वर्षे आषाढ वदि ९ शनौ हम्मीरमर्दन नाम नाटक ॥छ॥ ग्र. ९०० ॥

(२) **वस्तुपालप्रशस्ति** पत्र १-१३। **भा.** स.। **क.** जयसिंहसूरि। **का.** ७७। **ग्रं.** १८०।

(३) **वस्तुपालस्तुतिकाव्य** पत्र १३-१६। **भा.** स.। **का.** १३। अन्य पत्रमां **शोभन** छे।

क्रमाङ्क ३६०

नागानंदनाटक पत्र ५६। **भा.** प्रा स। **क.** श्रीहर्षकवि।
ले सं अनु. १३मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं प.** १४।×२

क्रमाङ्क ३६१

चंद्रलेखाविजयप्रकरणनाटक पत्र २०३। **भा.** प्रा स.। **क.** देवचन्द्रमुनि हेमचन्द्रशिष्य। **ले. सं.** अनु १३ शताब्दी पूर्वार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९।×१॥।

आदि—

॥ अर्हम् ॥

चिन्मयमूर्त्तिः परमो ब्रह्मादिभ्योऽपि यः परः पुरुषः। अकलितकलाभिरामो दिशतु शिवं नाभिसूनुर्वः ॥१॥

अपि च—

त्रिभुवनजयोद्दामभ्राम्यच्छिलीमुखशालिनः कुसुमधनुषः प्रध्वसेनाजितो विदितः प्रभुः।
भवजलनिधौ मज्जद्विश्वं समुद्धरति स्म यः सुभगहृदयः स श्रेयांसि द्वितीयजिनः क्रियात् ॥२॥

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः— (समन्तादवलोक्य) कथं प्रभातप्रारम्भः ? । तथाहि—

व्योमाभोगविजृम्भिभास्वरमहःस्फारस्फुरत्केसरं विश्वव्यापिसहस्रपादमुदितं प्राचीगुहामध्यतः।
दृष्ट्वा नव्यहरिं विहङ्गमरुतैश्चीत्कारमुच्चैस्तरां मुञ्चन्नेष निलीयते गुरुगिरिद्रोण्यां तमोवारणः ॥३॥

अपि च—

दृष्ट्वाऽन्धकारकलितं पङ्कमग्नमिवाम्बरम्। अरुणेन गिरेर्मूर्ध्नि क्षणं दध्रे रवेः रथः ॥४॥

येनाशेषमपीदमन्धतमसं ज्योत्स्नाजलैः क्षालितं कामोऽनङ्गतयापि येन विलसत्याकल्पमुर्वीतले।
स श्रीकण्ठविभूषणं शशधरः शृङ्गारलीलागृहं धत्ते राजतदर्पणश्रियमयं प्रातः प्रतीच्यां दिशि ॥५॥ इति।

(नेपथ्याभिमुखम्)

आर्ये! इतस्तावत्।

(प्रविश्य)

नटी— आणवेदु अज्जो।

सूत्रधारः—आदिष्टोऽस्मि सततार्चिततरुणरोहिणीरमणचूडामणिप्रसादसमासादितोत्कटप्रतापालकृतराज्यकमलाविलाससदनस्य समराजिरविजृम्भमाणप्रचण्डदोर्दण्डकलितकोदण्डविस्तृतशिलीमुखमण्डलखण्डितशाकम्भरीश्वरकीर्तिकुसुमस्य मालवभूपालवल्लालमौलिकमलार्चितरणाङ्गणाधिदेवतस्य आजन्मनिर्वाहितसत्यव्रततिरस्कृतकुन्तीसुतस्य प्रत्यर्थिभूपालविलासिनीनिःश्वासपवनप्रेङ्खोलनानवरतप्रज्वलिताद्भुतप्रतापदहनस्य निरन्तरदानवाहिनीप्रवाहपूरप्लवमानयशोराजहंसस्य अमन्दकीर्तिमन्दाकिनीपूरपवित्रितत्रिभुवनस्य सर्वतोमुखप्रसरदमेयमहिमचमूचक्राक्रान्तसकलभूपालमौलिमण्डलीमुकुटमणीकिरणचुम्बितचरणनखचन्द्रस्य श्रीकुमारपालदेवनरेन्द्रस्य परिषदा, यदय श्रीकुमारविहारवामपार्श्वावस्थितश्रीमदजितनाथदेवस्य वसन्तोत्सवे त्रैविद्यस्य श्रीदेवचन्द्रमुनेः कृतिः चन्द्रलेखाविजय नाम प्रकरणमभिनेतव्यमिति। (सचमत्कारम्)

दृष्टः क्वापि श्रुतो वा कथयत सदसि प्रेक्षकाः! कोऽपि भूपः
सत्ये शौर्ये सदाने शरणमितवतां रक्षणे बद्धकक्षः।
एन मुक्त्वा नरेन्द्र समिति हठहृतारातिलक्ष्मीप्रसक्त्या
बिभ्राण विक्रमाङ्क दिशि दिशि निहितप्रस्फुरत्कीर्तिहारम् ॥६॥

अपि च—

एकाकिनैव वीरेण येनाऽर्णोराजमन्थनात्। अनात्तमन्दरागेण हठाल्लक्ष्मीः करे धृता ॥७॥

नटी—(सविस्मयम्) अज्ज! एदस्स सप॰ को नरवदी समाणो भोदि?।

सूत्रधार—मुग्धे!

मान्धातृप्रमुखान् विहाय महत. पट्चक्रवर्तिप्रभृतेतस्याऽय कुमारपालनृपतेः कस्तुल्यतामञ्चति?।
य. कान्तविजयाक्षने रणमखप्राग्ने हासिद्धये कीर्तिक्षीरभरेण वाञ्छति चरु सिद्ध प्रतापाग्निना ॥८॥

नटी—अहो! अज्जमुअस्स सा का वि उत्तिवेचित्ती ज रन्नो वन्नणे वि पत्थुदपबधत्थो वित्थरीअदि। इति। (सचिन्तम्) अज्ज! कद इत्थ मए सुत्थिदाए वन्नियापरिग्गहो कादव्वो? ज मज्झ गुरू केणावि रत्तवडधारिणा मुडियसीसेण पलोहिय देसतर णीदो। तत्थगदस्स य अन्नेण धुत्ततिलएण कि पि अपुव्व इदजाल दसिऊण काम्व गहिलत्तण सपादिद।

सूत्रधार—प्रिये! अलमनया चिन्तया,

विकल. स्वस्थितचेष्टो मितवागपरिग्रहो द्विधा चित्त। परमस्पृहणीयोऽय भविता तत्त्वप्रपञ्चनात्यागात ॥९॥

नटी—अग्य! एव उवदिसतेण तए मज्झ किं सबोहण कद भोदि? ज सो पर असलाहणीयो भविस्सदि।

सूत्रधारः—(विहस्य) प्रिये! मुग्धाऽसि, उक्तस्यास्य व्याख्या इत्थमवगन्तव्या, यत्-विशिष्टकलावान् स्वर्गायावस्थितव्यापारः मितवाग् निस्सङ्ग एकमनास्तत्त्वप्रपञ्चनया अविमुक्त. प्रकृष्टस्पृहणीयो भविष्यति।

नटी—(सानन्दम्) अग्य! अन्न च मे सुम्वरिद, जेण सो विप्पयारिय देसतर णादो तस्स वि तत्तपबधो णाम, ता किं तस्सेव सगेण सलाहणिज्जो भविस्सदि?।

सूत्रधारः—प्रिये! एवमपि। अन्यच्च—

अनुज्झतस्तत्त्वहितोपदेश प्रवर्त्तमानस्य यथानथापि।
पुसोऽभियुक्तस्य महत्यपीह सिद्धिः खलु स्यान्ननु सम्मुखी ना ॥१०॥

नटी—(सविस्मयम्) एद पि मह पडिबोहण तारिस ज्जेव इति। (सकौतुकम्) अवि एदस्स कइणो पबधेण रजिदव्वा एसा सहा।

सूत्रधारः—

यो भाष्यार्णवमन्थमन्दरगिरिः षट्तर्कविद्यागुरुः साहित्यामृतसिन्धुरद्भुतमतिप्रख्यात काचित.।
सूक्तैस्तस्य पवित्रितत्रिभुवनैः श्रीचित्रचिन्तामणिश्लोकोन्मीलितषट्प्रबन्धललितैः को नाम न प्रीणितः? ॥११॥

अपि च—

श्रोतोभिः कमशास्त्रिभिस्त्रिभुवनं दृष्ट्वा विगाह्य स्थितामेतां स्वर्गतरङ्गिणीं हरिदिशो हारश्रियं बिभ्रतीम् ।
एकश्लोकपथप्रवृत्तिमभजद् यस्याऽऽस्य सारस्वतं श्रोतः प्लावयितुं जगन्ति युगपत् कल्लोललीलायितैः ॥१२॥

अथवा किं तस्य कवेर्वर्णनया ?

संसारोर्जितकर्ममर्मभिदुरश्वेतांशुबिम्बामलध्यानोन्मीलितबिन्दुमध्यविलसन्मिःशेषदश्वप्रभुः ।
लीलानिर्दलितत्रिलोकविकसत्कन्दर्पदर्पग्रहः कारुण्यावनिरेष यस्य स गुरुः श्रीहेमचन्द्रो मुनिः ॥१३॥

नटी—अज्ज ! कथ एम कई नाडयपबधपयट्टो पयरण वित्थरेदि ? ।

सूत्रधारः—प्रिये ! नाटकरचना हि इतिवृत्तमनुसरन्ती क्षुण्णक्षोदनमावहति । तथाहि—

क्षुण्णे मार्गे सूत्रयन्तः पदानि के वाऽभूवन्नात्र यातानुयाताः ।
यन्नैवाऽऽसीत् सर्वथा यन्न भावि तत्तत् किञ्चित् क्लृप्तमस्मिन्ननेन ॥१४॥

अन्यच्च—

भाषा प्रपञ्चितरसा मसृणाश्वतत्त्वः श्रव्यं वचो भणितिरप्रतिमेव यस्याम् ।
एतस्य विश्रुतकवीनपि मुद्रयन्ती सेयं कृतिर्विजयते जयवैजयन्ती ॥१५॥

नटी—(अग्गतो विलोक्य) एस आणामिद्धभूमिं चिन्तण णाणबोहखधणिवेसिदहत्थो पत्तो य्येव रंगमिही ।

सूत्रधारः—आर्ये ! नदेत्यावामपि अनन्तरकरणीयाय सज्जीभवाव । (इति निष्क्रान्तौ ।)

॥ प्रस्तावना ॥छ॥

अन्त—

धवलयति सुधाभिर्यावदिन्दुस्त्रिलोकीं जनितजनगमूर्द्धा शेषराजाऽमराजौ ।
कृतसकलविशेषौ नन्दतस्तावदेषा विलसतु जगति श्रीदेवचन्द्रस्य कीर्तिः ॥

अपि च—

विद्याम्भोनिधिमन्थमन्दरगिरिः श्रीहेमचन्द्रो गुरुः सान्निध्यैकरतिर्विशेषविधये श्रीशेषभट्टारकः ।
यस्य स्तः कविपुङ्गवस्य जयिनः श्रीदेवचन्द्रस्य सा कीर्तिस्तस्य जगत्त्रये विजयतां शार्दूललीलायितैः ॥छ॥

॥ इति श्रीदेवचन्द्रमुनिप्रणीतचन्द्रलेखाविजयप्रकरणे निर्वहणसन्धौ महासिद्धिलाभो नाम पञ्चमोऽङ्कः ॥ॐ॥

कलयति भुजगेन्द्रो मौलिना यावदुर्वी प्रमदमुकुलिताक्षा यावदेते कवीन्द्राः ।
नवरसवसतिश्रीदेवचन्द्रप्रणीतप्रकरणमधुधारा श्रोत्रपात्रे पिबन्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ३६२

अनेकांतजयपताका टिप्पनक पत्र १३१ । **भा.** स. । **क** मुनिचन्द्रसूरि । **ले. सं.** ११७१ । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥×१॥।

आदि—॥ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

शेषमतमतिशयाना यस्याऽनेकान्तजयपताकेह । हर्तुमशक्या केनापि वादिना नौमि तं वीरम् ॥१॥
कतिपयविषमपदगतं वक्ष्येऽनेकान्तजयपताकायाः । वृत्तेर्विवरणमहमल्पबुद्धिबुद्ध्यै समासेन ॥२॥
ननु शब्दार्थयोस्तादात्म्यतदुत्पत्तिसंबन्धविरहात् वाच्यवाचकभाव एव नास्ति, ततः कथं सद्भूतवस्तुवादित्व-लक्षणश्चतुर्थोऽतिशयो घटते इत्याशङ्क्योक्तम् ।

अन्त—

इति श्रीमुनिचन्द्रसूरिविरचितेऽनेकान्तजयपताकावृत्तिटिप्पणके मुक्तिवादाधिकारः समाप्तः ॥छ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तमिदं निजविनेयरामचन्द्रगणिकृताभ्यर्थनान्तरगसाहाय्येन श्रीमदनेकांतजयपताकावृत्तिटिप्पणकमिति ॥छ॥

कष्टो ग्रंथो मतिरनिपुणा संप्रदायो न तादृक् शास्त्रं तन्त्रान्तरमतगत सन्निधौ नो तथापि ।
स्वस्य स्मृत्यै परहितकृते चात्मबोधानुरूप मा गामागःपरमहमिह व्यामृतश्चित्तशुद्धया ॥छ॥
॥ इत्यनेकांतजयपताकाटिप्पणकं समाप्तमिति ॥छ॥ सवत् ११७१ ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रे । लिखितेय रामदेवनेति ॥छ॥

क्रमाङ्क ३६३

सम्मतितर्कप्रकरण तत्त्वबोधविधायिनी वृत्ति सह द्वितीयखंड किंचिदपूर्ण पत्र २–२५२ । **भा.** प्रा. सं. । **मू. क.** सिद्धसेन दिवाकर । **वृ. क.** अभयदेवसूरि तर्कपंचानन । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २३×२. ।

पत्र १, ८, १५, २२, ७६, १०९, २३०–२३३ नथी ।

क्रमाङ्क ३६४

(१) **न्यायावतारसूत्रवृत्ति टिप्पणी सह** पत्र १–१३७ । **भा.** स. । **वृ. क.** सिद्ध साधु । **टि. कर्त्री** ज्ञानश्री आर्यिका (?) ।

अन्त—

इति सनिधाय चित्ते ज्ञानश्रीरार्यिका गुणैर्वर्या । आचार्यसर्वदेवैर्निजगुरुभि· प्रेरिता सपदि ॥छ॥

(२) **न्यायबिंदुवृत्ति टिप्पणी सह** पत्र १३७–२४५ । **भा.** स. । **क** धर्मोत्तर ।

(३) **न्यायप्रवेशवृत्तिपंजिका** पत्र २४५–३४७ । **भा.** स. । **क.** पार्श्वदेवगणि ।

आदि—॥ॐ नमः सरस्वत्यै ॥

दुर्वारमारकरिकुम्भतटप्रभेदकण्ठीरव जिनपर्ति वरद प्रणम्य ।
न्यायप्रवेशक इति प्रथिते सुशास्त्रे प्रारभ्यते तनुधियाऽपि हि पञ्जिकेयम् ॥१॥

येऽवज्ञां मयि विदधु· किञ्चन जानन्ति तानपास्यैषः । मत्तोऽपि जडमतीनामुपकाराय प्रयासो मे ॥२॥

इह हि शिष्टानामय समाचारो यदुत शिष्टा· क्वचिदिष्टे वस्तुनि प्रवृत्तिमभिलषन्तो विघ्नविनायकोपशान्तये इष्टदेवतानमस्कारपूर्वक प्रवर्त्तन्ते । अतोऽयमपि हरिभद्राख्य सूरिर्नहि न शिष्ट इति न्यायप्रवेशकाख्यशास्त्रविवरण-करणे प्रवर्त्तमान इष्टदेवतानमस्कारार्थं श्रोतृजनप्रवृत्तये शास्त्रस्याभिधेयादिप्रदर्शनार्थं च श्लोकद्वय चकार । सम्यगित्यादि । व्याख्या ।

अन्त—न्यायप्रवेशकपञ्जिका समाप्तेति ॥

न्यायप्रवेशशास्त्रस्य सद्वृत्तेरिह पञ्जिका । स्वपरार्थं दृष्ट्वा (दृब्धा) स्पष्टा पार्श्वदेवगणिनाम्ना ॥छ॥

(४) **न्यायावतारसूत्र** पत्र ३४८–३५० । **भा.** स । **क.** सिद्धसेन दिवाकर । **ग्रं.** ३२ ।

(५) **न्यायबिंदु** पत्र ३५०–३५९ । **भा.** स. । **क.** आचार्य दिग्नाग । **ले. सं.** १४९० । **सं.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १६॥×१॥।

अन्त—

सवत् १४९० वर्षे मार्गशिर शुदि ३ रवौ श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीश्रीजिनभद्रसूरिराज्ये परीक्षगूर्जरसुत प० धरणाकेन लिखापित ॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ न्यायबिंदुसूत्रवृत्ति न्यायावतारसूत्र-वृत्ति ॥......पुरोहित हरियाकेन लिखित ॥छ॥छ॥

क्रमाङ्क ३६५

न्यायकंदली टीका अपूर्ण पत्र ३८७ । **भा.** सं. । **क** श्रीधर भट्ट । **ले. सं** अनु. १३ मी शताब्दी प्रारभ । **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२।×२

क्रमाङ्क ३६६

(१) **द्रव्यालंकार सटीक द्वितीयपरिच्छेद** पत्र ११७। **भा.** सं.। **क.** रामचंद्र-गुणचंद्र **स्वोपज्ञ।** पत्र ९१-९२, १२८ नथी।

आदि—॥९ अर्हम् ॥

एवं तावद् द्रव्यपंचकमध्याज्जीवद्रव्यं स्वपरपरिज्ञानसंपदा सकलद्रव्याणां मूर्द्धाभिषिक्तं प्रथमं व्याख्यायाधुना तदत्यतोपकारकं पुद्गलद्रव्यं व्याख्यातुं तल्लक्षणमुच्यते। लक्षणं च क्वचिदभिन्नं भवति यथाग्नेरौष्ण्यं। क्वचित्तु भिन्नं यथा-ऽग्नेरेव धूमः। तदत्र पुद्गलद्रव्यस्याभिन्नं लक्षणमभिधातुकामः प्राह ।

अन्त—

रूपं च सत्त्वमथ वादिविटैर्विलुप्तमित्थं यदा स्थितिमनीयत पुद्गलानाम् ।

तन्मा कदाचिदपि पुद्गलतामर्मी नौ सद्दीदृशन् यदि भवतितमां कृतज्ञाः ॥

॥ इति **राम**चंद्र-गुणचंद्रविरचितायां **स्वो**पज्ञद्रव्यालंकारटीकायां द्वितीयः पुद्गलप्रकाशः समाप्तः ॥छ॥ॐ॥छ॥

(२) **द्रव्यालंकार सटीक तृतीयपरिच्छेद** पत्र ११३। **भा.** स.। **क.** रामचंद्र-गुणचंद्र **स्वोपज्ञ।** **ले. सं.** १२०२। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४॥।×१॥।

आदि—

॥ अर्हम् ॥ प्रथमप्रकाशे तावदशेषद्रव्याणां प्रधानमात्मा स्वरूपभेदैः प्रमाणप्रतिष्ठितः कृतः, तदनु द्वितीयप्रकाशे तदत्यतोपकारकाः पुद्गलाः। संप्रति पुनर्गतिस्थित्यवगाहदानेनोपकारकाणां धर्मादीनामवसरः, ततस्तेऽपि स्वरूपतः प्रमाणप्रतिष्ठिता क्रियन्ते। तत्र प्रत्येकं परिसमाप्तं लक्षणमनुदाहृत्यैव सर्वेषामेकप्रकाशप्रपंचनानिबंधनं सामान्यधर्माभि-धायि प्रथममधिकारसूत्रमाह ॥ अथाकपानीति। अथध्वनिरधिकारार्थो मंगलार्थो वा, अस्मिन् प्रकाशेऽकपानि त्रीणि द्रव्याण्यधिक्रियते।

अन्त—

अकपानां वृत्तौ यदर्जनि शुभं तेन पदवीं रिपुर्वा मित्रं वा सपदि लभतां ता जनगणः ।

अकांडे कोधांधप्रभुविहितदंडप्रतिभयाच्च वपते यस्याः परिजनवपुषि क्षणमपि ॥

पूर्वैर्यस्य समुद्धृतिर्न विहिता धीरैः कुतोऽप्याशयादावाभ्यां स समुद्धृतः श्रुतनिधेद्रव्योत्करो दुर्लभः ।

एन यूयमनंतकार्यनिपुणं गृह्णीत तत्कोविदाः स्वात्मन्यप्रसवा यदीच्छत चिरं सर्वार्थसिद्धिं हृदि ॥

मध्ये बौद्धामृतजलनिधेर्गाढवान् भ्रान्तवांश्च न्यायाटव्यां वचनशठताप्रोन्मिषत्कंटकायाम् ।

आम्नातीर्वाविषमविफलप्रक्रिये यो विशेषे शास्त्रारंभे यदि परमसौ दक्षतां लक्षयन्तौ ॥

नोत्प्रेक्षावहुमानतो न च परस्पर्द्धासमुल्लासतो नापादुद्युतिनिर्मलाय यशसे नो वा कृते संपदः ।

आवाभ्यामयमादृतः किमु बुधा द्रव्यप्रपंचश्रमः सदभ्यंतरनिर्मितावनवमप्रज्ञाप्रकर्षश्रिये ॥छ॥

इतिश्री**राम**चंद्र-**गुण**चंद्रविरचितायां **स्वो**पज्ञद्रव्यालंकारटीकायां तृतीयोऽकंपप्रकाश इति ॥छ॥ संवत् १२०२ सहजिगेन लिखितमिति ॥ छ ॥

क्रमाङ्क ३६७

(१) **प्रमाणमीमांसा** स्वोपज्ञ टीका सह। पत्र १-१११। **भा.** सं.। **क.** हेमचन्द्राचार्य **स्वोपज्ञ।**

(२) **परीक्षामुखसूत्र** पत्र ११२-११९। **भा.** सं.।

(३) **सर्वज्ञसिद्धि** पत्र १२०-१३९। **भा.** सं.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५।×२।। पत्र १३८ मु नथी।

आदि—॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय। लक्ष्मीभृद्वीतरागः क्षतमतिरखिलार्थज्ञताश्लिष्टमूर्तिः

क्रमाङ्क ३६८

रत्नाकरावतारिका पत्र २६१। **भा.** स.। **क.** रत्नप्रभाचार्य। **ले. सं.** १२२५। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १८×२।

अन्त—

॥ सवत् १२२५ वर्षे कार्त्तिक शुदि ७ बुधे अद्येह श्रीवटपद्रके पंडितप्रभाकरगणिनाऽऽत्मार्थे रत्नाकरावतारिकापुस्तक लिखापितमिति ॥छ॥ शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥ शांतिर्भवतु ॥ मंगल महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क ३६९

प्रमालक्ष्मलक्षणसटीक पत्र २७२। **भा.** स.। **क.** बुद्धिसागरसूरि। **ले. सं.** १२०१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×२।

अन्त—

छव्वाससएहिं नउत्तरेहिं तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स।

कबलियाण दिट्ठी वलहिपुरीए समुप्पन्ना ॥छ॥

तस्मान्नाय मोक्षावह पथा इति। तथा च किं जातमित्याह ॥

श्रीबुद्धिसागराचार्यैर्वृत्तैर्व्याकरण कृतम्। अस्माभिस्तु प्रमालक्ष्म बृद्धिमायातु सांप्रतम् ॥

श्रीबुद्धिसागराचार्यैः पाणिनि-चंद्र-जैनेन्द्र-विश्रात-दुर्गटीकामवलोक्य वृत्तबधैर्धातुसूत्रगणोणादि वृत्तबधैः कृत व्याकरण संस्कृतशब्द-प्राकृतशब्दसिद्धये। अस्माभिस्तु प्रमालक्ष्मलक्षणम अत एव पूर्वाचार्यगौरवदर्शनार्थ वार्त्तिकरूपेण। तत्रापि स्वाभिप्रायनिवेदनार्थ वृत्तिकरणेन च। ततः किम् ? वृद्धिमायातु सांप्रतमधुनेति ॥ छ ॥छ॥छ॥ मगल महाश्री ॥छ॥ सवत् १२०१ माह वदि ८ बृहस्पति लिखितेति ॥

क्रमाङ्क ३७०

धर्मोत्तरटिप्पनक पत्र ९४। **भा.** स.। **क.** आचार्य मल्लवादी। **ग्रं.** १३००। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १५×१॥। पत्र ८७ थी ९३ नथी।

आदि—५०॥ॐ नमो वीतरागाय ॥

प्रणिपत्य जिना [धीशान्]............ ....।

[श्री]न्यायबिन्दुटीकायाः क्रियते टिप्पनक (न) मया ॥१॥

इह हि शिष्टाः क्वचिदिष्टे वस्तुनि प्रवर्त्तमानाः शिष्टसमयपरिपालनाय विघ्नविनायकोपशान्तये चेष्टामीष्टाधिकृतदेवतानां मध्येऽन्यतरस्या एकस्या अपि नमस्कारपुरस्सरमेव प्रवर्त्तन्ते। ततश्च धर्मोत्तरन्यायबिन्दुप्रकरणविकरणनिवेशितान्तःकरणः सन्निष्टदेवतास्तवमाह जयन्तीत्यादि।

अन्त—

इति धर्मोत्तरटिप्पनके श्रीमल्लवाद्याचार्यकृते तृतीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥छ॥ ग्रन्थाग्रं १३०० ॥छ॥ मगल महाश्रीः ॥ॐ॥

क्रमाङ्क ३७१

धर्मोत्तरटिप्पनक पत्र ७७। **भा.** सं.। **क.** आचार्य मल्लवादी। **ग्रं.** १३००। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। पत्र १-४, ६, ७, ३०, ४४, ५४, ७५ नथी।

क्रमाङ्क ३७२

वार्त्तिकवृत्ति पत्र १५५। **भा.** सं.। **क.** शांतिसूरि। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×१॥.। अंतनां ५ पत्र अति जीर्ण छे।

क्रमाङ्क ३७३

सर्वसिद्धांतप्रवेश (षड्दर्शनसमुच्चय जेवो गद्य ग्रंथ) पत्र १७। **भा.** सं.। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×१॥

आदि—द० ॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

सर्वभावप्रणेतारं प्रणिपत्य जिनेश्वरम्। वक्ष्ये सर्ववि(र्वाधि ?) गमेषु यदिष्ट तत्त्वलक्षणम् ॥१॥

सर्वदर्शनेषु प्रमाणप्रमेयसमुच्चयप्रदर्शनायेदमभिधीयते—नैयायिकदर्शने तावत् प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्त-सिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः।

अन्त—इति लौकायतिकानां सङ्क्षेपतः प्रमाणप्रमेयस्वरूपम्। इति **लोकायतराद्धान्तः** समाप्तः ॥छ॥ **नैयायिक-वैशेषिक-जैन-सांख्य-बौद्ध-मीमांसक-लोकायतिकमतानि** सङ्क्षेपतः समाप्तानि ॥छ॥

क्रमाङ्क ३७४

न्यायप्रवेश पत्र ११। **भा.** सं.। **क.** आचार्य दिङ्नाग। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×१॥

क्रमाङ्क ३७५

(१) **न्यायप्रवेशसूत्र** पत्र १-१७। **भा.** सं.। **क.** दिङ्नाग।

(२) **सर्वसिद्धांतप्रवेश** पत्र १७-४१। **भा.** सं.।

(३) **न्यायप्रवेशटीका** पत्र ४२-१३४। **भा.** सं.। **क.** आचार्य हरिभद्र। **ले. सं.** १२०१। **ग्रं.** ५९७। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×१॥

अन्त—

न्यायप्रवेशक यद् व्याख्यायावाप्तमिह मया पुण्यम्। न्यायाधिगमसुखरस लभतां भव्यो जनस्तेन ॥छ॥

कृतिः श्वेताम्बरश्रीहरिभद्राचार्यस्यन्यायप्रवेशप्रवेशकटीका समाप्तेति ॥छ॥छ॥ग्रंथ ५९७ ॥

संवत् १२०१ वर्षे माघमासीयचरमशकले तुरीयतिथौ तिमिरासहनवासरे **भृगुकच्छस्थितिमता** पण्डितेन यशसा सहितेन धवलेन पुस्तिकेयमलेखि ॥

क्रमाङ्क ३७६

(१) **न्यायबिंदु (लघुधर्मोत्तरसूत्र)** पत्र ७। **भा.** सं। **क.** आचार्य धर्मकीर्ति।

(२) ,, **टीका** पत्र ८१। **भा.** सं.। **क.** आचार्य धर्मोत्तरपाद। **ग्रं.** १४७७। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ।

क्रमाङ्क ३७७

तत्त्वसंग्रहसूत्र पत्र १८७। **क.** शान्तरक्षित। **भा.** सं.। **ग्रं.** ३९९७। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२।। पत्र १८६ मु नथी।

क्रमाङ्क ३७८

तत्त्वसंग्रहपंजिकावृत्ति पत्र ३१३। **भा.** सं.। **क.** आचार्य कमलशील। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २५॥×२॥ पत्र ६१, ११३, ३०२, ३११ नथी।

क्रमाङ्क ३७९

न्यायकंदलीटीका पत्र २८९ । **भा.** स. । **क.** श्रीधर भट्ट । **र. सं.** शाके ९१३ । **ग्रं.** ३७१६ । **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारंभ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४॥।×२॥

क्रमाङ्क ३८०

न्यायकंदलीटीका पत्र २३९ । **भा.** स । **क.** श्रीधर भट्ट । **र. सं.** शाके ९१३ । **ग्रं.** ३७१६ । **ले सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४।×२

क्रमाङ्क ३८१

(१) **न्यायकंदलीटिप्पनक** पत्र १–१६४ । **भा.** स. । **क.** नरचंद्रसूरि मलधारी ।

अन्त —

॥ इति श्रीमलधारिशिष्यपंडितश्रीनरचन्द्रकृतौ कंदलीटिप्पनके समवायः पदार्थः समाप्तः ॥छ॥

पृथ्वीधरः सकलतर्कवितर्कसीमा धीमान् जगौ यदिह कंदलीकाररहस्यम् ।

व्यक्तीकृत तदखिल स्मृतिबीजबोधप्ररोहणाय नरचन्द्रमुनीश्वरेण ॥

समाप्तमिद कंदलीटिप्पनकम् ॥ मगल महाश्री ॥छ॥श्रीः॥

(२) **न्यायावतारटिप्पनक** पत्र १६५–२३० । **भा.** स । **क.** मलधारी देवभद्रसूरि हर्षपुरीयगच्छ । **ले. सं.** अनु. १४८९ । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४।×२. । [धरणाक लेखित] ।

अन्त—

अक्षामधाम्नोऽभयदेवसूरेर्भानोरिवोज्जृम्भितभव्यपद्मात् ।

अभूत्ततो हर्षपुरीयगच्छे श्रीहेमचन्द्रप्रभुरङ्गुराशिः ॥१॥

जीयात्तृणीकृतजगत्त्रितयो महिम्ना श्रीचन्द्रसूरिरिति शिष्यमणिस्तदीयः ।

क्षीरोदविभ्रमयशःपटलेन येन शुभ्रीकृता दश दिशो मलधारिणाऽपि ॥२॥

शैशवेऽभ्यस्यता तर्के रतिं तत्रैव वाञ्छता । तस्य शिष्यलवेनेद चक्रे किमपि टिप्पनम् ॥३॥

न्यायावतारविकृतौ विषम विभज्य किञ्चिन्मया यदिह पुण्यमवापि शुद्धम् ।

सन्त्यज्य मोहमखिल भुवि शश्वदेव भद्रैकभूमिरमुनाऽस्तु समस्तलोक ॥४॥छ॥

इति न्यायावतारटिप्पनक समाप्तम् ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥श्री॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे श्रावण शुदि त्रयोदश्यां तिथौ लिखितम् ॥छ॥श्री॥

क्रमाङ्क ३८२

न्यायवार्तिक पत्र २–१५५ । **भा.** स. । **क.** उद्योतकर । **ले. सं.** अनु. १४मी शताब्दी । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२×२।.। वचमां वचमां थईने लगभग अर्धोअर्ध पानां नथी ।

क्रमाङ्क ३८३

(१) **प्रशस्तपादभाष्य पदार्थधर्मसंग्रह अपूर्ण** पत्र २३ । **भा.** स. । **क.** प्रशस्तपाद । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥×२

(२) **न्यायकन्दलीटीका अपूर्ण** पत्र ८७ । **भा.** स. । **क.** श्रीधर भट्ट । **र. सं.** शाके ९१३ । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी उत्तरार्धे । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२॥×२.। पत्र ८५ मुं नथी ।

क्रमाङ्क ३८४

खंडनखंडखाद्यशिष्यहितैषिणीवृत्ति टिप्पणीयुक्त पत्र १८१। **भा.** स.। **ग्रं.** ७०२५। **ले. सं.** **अनु.** १३ मी शताब्दी अंत। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६॥×२।.। प्रति शुद्ध छे।

क्रमाङ्क ३८५

खंडनखंडखाद्य पत्र २६१। **भा.** स.। **क.** श्रीहर्ष। **ले. सं.** १२९१। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×२

अन्त—

॥ इति श्रीश्रीहर्षकृतावनिर्वचनीयसर्वस्वे खंडनखंडखाद्ये तुरीयः सकीर्णपरिच्छेदः समाप्तः ॥छ॥ सवत् १२९१ वर्षे श्रावण वदि ७ बुधे पुस्तिका लिखितेति भद्रम् ॥छ॥

क्रमाङ्क ३८६

न्यायमंजरीग्रंथिभंग पत्र १८६। **भा.** स.। **क.** चक्रधर। **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×२॥.। पत्र ७९, ८०, १८५, १८६ मां शोभनो छे।

पत्र २–५, १०, ३३, ३४, १०२, ११५, १२२, १३१, १३३, १३५, १३६, १३९, १७०, १७२, १७८, १८१ नथी।

आदि—॥ नमः शिवाय ॥

नमोऽनवसितासक्तचित्क्रियाशक्तिसंपदे। विष्णवे त्रिजगद्व्यापिपरमाश्चर्यमूर्त्तये ॥

संकल्पितफलावाप्तिकल्पपादपमञ्जरीम्। स्वान्तितापतमस्सं.. दका नौमि चडिकाम् ॥

मधुरासु प्रसन्नासु प्रथयोऽतिरसार्स्वापि। जयन्तोक्तिषु दृश्यन्ते क्वचिदिक्षुलतास्विव ॥

सुकुमाराशयाः केचित्सति तद्भगविक्रवा.। अतस्तेभ्यो व्यधत्ते...श्रीशंकरात्मजः ॥

प्राप्य चक्रधरश्चक्रमिव सर्वविदः श्रुतम्। शशांकधरतोऽमेयग्रंथिभेदाहितोद्यमः ॥

अन्त –

सति वेदाङ्गत्वेन व्याकरणात् प्रमाणभूतादर्थनिश्चये वेदस्याप्रतिपादकत्वाभावात् प्रामाण्यम्। सति च तत्प्रामाण्ये तदगत्वेन व्याकरणप्रामाण्यमिति यदितरेतराश्रय तत् कुतस्त्यम्। भोगिमतश्रुतरागिभिः भोगी शेषः तन्मत महाभाष्य तच्छतेन सगशीला ये भर्तृहरिप्रभृतय. आर्या इति भद्रम् ॥ भट्टश्रीशंकरात्मजचक्रधरकृते न्यायमंजरीग्रंथिभंगे षष्ठमाह्निक समाप्तम् ॥छ॥

॥ॐ॥ जयत्येकशराघातविदारितपुरत्रयः। धनुर्द्धराणां धौरेयः पिनाकी भुवनत्रये ॥छ॥

क्रमाङ्क ३८७

(१) शाबरभाष्य प्रथम अध्याय पत्र ५१। **भा.** स.।

आदि—द०॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

अथातो धर्मजिज्ञासा। लोके येष्वर्थेषु प्रसिद्धानि पदानि तानि सति सम्भवे तदर्थान्येव सूत्रेष्वित्यवगन्तव्यम्। नाध्याहारादिभिरेष्यकल्पनीयोऽर्थः परिभाषितव्यो वा। एव वेदवाक्यान्येभिर्विचार्यन्ते। इतरथा वेदवाक्यानि च व्याख्येयानि(!) स्वपदार्थाश्च व्याख्येयास्तत्र गौरव प्रसज्येत। तत्र लोकेऽयमथशब्दो वृत्तादनन्तरस्य प्रक्रियार्थे दृष्टः, न किञ्चिदिह वृत्तमुपलभ्यते, भवितव्य तु तेन, यस्मिन् सत्यनन्तर धर्मजिज्ञासा च कल्पते।

अन्त—

कथ वनस्पतयः सर्पा वा सत्रमासीरन्निति, उच्यते, विनियुक्तं हि दृश्यते परस्परेण सम्बन्धार्थ ज्योतिष्टोम

इत्यभिधाय कर्त्तव्यः इत्युच्यते। केनेत्याकाङ्क्षिते सोमेनेति। किमर्थमिति स्वर्गायेति। कथमिति चेत्थमिति। एवमवगच्छन्तः पदार्थैरभिसम्भूत पिण्डित वाक्यार्थं कथमुन्मत्तवाक्यसदृशमिति वक्ष्यामः। नन्वनुपपन्नमिद दृश्यते वनस्पतयः सत्रमासतेत्येवमादिनाऽनेनानुपपन्नेनाग्निहोत्र जुहुयात् स्वर्गकाम इत्येवमाद्याः उपपन्नाः स्युः ।

अपि च वनस्पतयः सत्रमासतेत्येवमाद्यापि नाऽनुपपन्नाः, स्तुतयो ह्येताः सत्रस्य, वनस्पतयोऽपि नानाचेतनाः इदं सत्रमुपासितवन्तः किं पुनर्विद्वांसो ब्राह्मणा इति, तद्यथा, लोके सन्ध्यायां मृगा अपि न चरन्ति किं पुनः, ब्राह्मणाः इति । अपि चाविगीतः सुहृदुपदेशः कथमिवाशङ्क्यतोन्मत्तबालवाक्यसदृश इति तस्माच्चोदनालक्षणो धर्म इति ॥छ॥ प्रथमस्य प्रथमः पादः समाप्तः ॥छ॥ श्रेयोऽस्तु ॥

(२) **प्रमाणान्तर्भाव** पत्र ५१-९७। **भा.** सं.। **क.** देवभद्र तथा यशोदेव। **ले. सं.** ११९४। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×२।

आदि—पत्र ५१—

यस्य प्रज्ञाप्रकाशः कवलयति जगच्चक्रमेवाकलङ्कः, सत्त्वार्थं वा विधातु यदपर उदयी नासमर्थोऽकलङ्कः ।
तन्नत्वा स्वार्थसम्पत्सुहितमनुपमो मञ्जुवाग् यो न दीनः, प्रत्यक्ष वाऽनुमा धे(वे)न्यत उदितमिद येन तुल्यो नवीनः॥
प्रत्यक्ष चानुमानं च प्रमाणमिदमेव हि । प्रमाणसम्प्लवायोगात् प्रमेयद्वयसङ्गते ॥
शब्दादिक प्रमाण हि भ्रान्तिमात्रात्तदन्यथा । प्रमाणलक्षणायोगात् प्रमाणाभ बहिःस्थिते ॥

पत्र ६४-६५ मां—

इत्यर्थिसङ्क्लिव्यवहारसिद्ध शाब्द निजार्थेऽनुमितिप्रथसि (प्रयासे)।
बाह्य तु नेवास्य पर प्रमाण यथाकथञ्चिज्जगतामिहाऽऽस्था ॥

प्रमाणान्तर्भावे शाब्दः । प्रमाणान्तर्भावे शाब्दप्रमाणान्तर्भावः प्रथमः परिच्छेदः ॥छ॥
उपमाऽपि प्रमा कैश्चिदिष्यते न्यक्षबुद्धिभिः । सादृश्येन परिच्छेदः परोक्षेऽर्थे न तां विना ॥
सादृश्यस्य च वस्तुत्व न शक्यमपबाधितुम् । भूयोऽवयवसामान्ययोगो जात्यन्तरस्य तत् ॥
उपमाऽपि हि सादृश्ये परोक्षे वित्तिरीक्ष्यते । नानुमालक्षण तत्र प्रथमं सदृशग्रहात् ॥

पत्र ७१ मां—

इत्यनिन्द्यविधिना निरूपित नोपमानमनुमानतः परम् । एवमन्यदपि तेन गीयता प्रज्ञया नहि स दृश्यतेऽधिकः ॥
उपमानान्तर्भावो द्वितीयः परिच्छेदः ॥छ॥
प्रमाणबहुर्वविज्ञातो यत्रार्थो नान्यथाभवन् । अदृष्ट कल्पयेदन्य साऽर्थापत्तिरुदाहृता ॥
ननु दृष्टः श्रुतो वाऽर्थ इति भाष्यकृतो वचः । तत्कथ दृष्टिमात्रेण साऽर्थापत्तिर्निरूपिता ॥
अग्रे कृत्वा स नियममनु सयम वत्सक त, पूता शान्तिः सुरभिरभितो लिप्सुना वत्सलोच्चैः ।
दुग्धा स्निग्ध मधुरमधिक ज्ञानदुग्ध ..मुग्ध, येनानून जिनपतिमिन नाभिसूनु प्रणम्य ॥१॥

पत्र ८२—

या तन्त्रमन्त्रजडधीर्न विवेकभाजि तत्त्वे प्रवर्त्तनमुपैति न मे कथञ्चित् ।
अन्धस्य तस्य न जातु मतेविशेषस्तस्य स्खलद्गतिनिवर्त्तनमेतदस्तु ॥
प्रमाणान्तर्गतौ तृतीयोऽर्थापत्तिपरिच्छेदः ॥छ॥
प्रमाणान्तरभावोऽपि भाष्यकृत्प्रतिपादितः । अभावोऽपि प्रमाभावो नास्तीत्येतद् विनिश्चये ॥
अर्थस्यासन्निकृष्टस्य तथा चाह कुमारिलः । भाष्यकारोक्तमेवार्थमुपपत्त्योपदर्शयन् ॥
प्रमाणपञ्चक यत्र वस्तुरूपे न जायते । वस्तुसत्तावबोधार्थ तत्र(त्रा)भावप्रमाणता ॥

पत्र ९६, ९७—

इत्यद्भुताभावनिराक्रियेयं प्रतीतिसंस्पर्शितया प्रबन्धात् ।
विपरीत्य फल्गु स्फुरति परेषां सदर्थनीतेरयमेव सारः ॥छ॥
प्रमाणान्तर्भावः समाप्तः ॥छ॥

श्रीदेवानन्दगच्छान्वयशिशिरकरे काशिभव्यारविन्दे, सूराबुद्योतनाख्ये प्रतपति तपने वादिकुमुदा(कुन्दा)वलीनाम् ।
हारीज्ये सानुभावा समभवदमला साधुकूर्चालवाणी, वन्द्या विद्यारविन्दस्थितचरणयुगा सद्यशोवर्द्धनाख्या ॥१॥
तत्पुत्रौ साधुशिष्यौ गुरुपरिचरणप्राप्तबुद्धी विबोद्धु, ज्येष्ठोऽसौ देवभद्रोऽपरलघुकवयाः सद्यशोदेवनामा ।
एतामुन्नाम्यमानां कतिपयरचनां बौद्धमीमांसकानां, व्यालेखिष्टां विशिष्टा निजगुरुपदवीमीप्समानौ प्रतीताम् ॥२॥छ॥
स. ११९४ भाद्रपदे ॥छ॥

प्रकीर्णकपत्रे श्लोकत्रयमधिकम्—

पादाः पापावसादा विदलितदुरिताः सन्तु सन्तानवृद्धिं, कर्त्तारः कीर्त्तिवल्लीवलयपरिपुषः सद्यशोवर्द्धनानाम् ।
येषां पुण्यप्रसादैरुपचितमतयो मादृशा मन्दमेधा, अप्येते सम्भवन्ति त्वरितकवियशोदेवलक्ष्मीभृतस्ते ॥३॥
बुद्धिर्बोधे विशुद्धा विनयिनि विहित..................आदेय कर्मकान्त कविसदसि लसत्साधुवाद सदैव ।
वाणी व्यापारसिद्धिः समधिकगुणिना साधुसन्तानवृद्धिः,..................जगति गुरु सद्यशोवर्द्धनानाम् ॥४॥
पूर्त्तिः सर्वमनोरथस्य लसिता धूर्त्तिर्महाव्यापदां, गूर्त्तिगौरवकारिणी गुणगणे जूर्त्तिर्मदीनत्वे ।
तूर्त्ति ....चूर्णिर्द्विषत्सन्ततेर्मूर्त्ति सम्मूर्तिर्मायुर्षा हि भवतामस्मासु लक्ष्मीपुषाम् ॥५॥

क्रमाङ्क ३८८

(१) **इष्टसिद्धि वृत्ति सह अपूर्ण** पत्र ८९ । **भा.** स । **क.** परमहंस विमुक्तात्माचार्य स्वोपज्ञ ।
आदि—ॐ स्वस्ति ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

याऽनुभूतिरजाऽमेयाऽनन्ताऽऽत्मानन्दविग्रहा । महदादिजगन्मायाचित्रभित्तिं नमामि ताम् ॥
इष्टानिष्टाप्तिहानीच्छोस्तत्सिद्धिर्यद्दृशा श्रुते । न मा नत्वेष्टसिद्ध्यर्थं विष्णोम्यात्मसदृशे ॥

येति स्वतः प्रसिद्धतां द्योतयत्यनुभूतेः, अनुभाव्यत्वे घटादिवदननुभूतित्वप्रसङ्गात् । न च स्वतः प्रसिद्धस्य प्रागभावादयस्स्वतोऽन्यतो वाऽभिव्यक्त्यतोजा । अतो स्थानान्येऽपि भावविकाशः जन्मादित्वात्तेषाम् । चेत्यानां च न सिद्धर्मत्व रूपादिवत् । अतोऽमेया नास्यामेयो धर्मोऽप्यस्तीत्यर्थः । अतोऽनन्ताः, तस्यापि मेयत्वे तद्धर्मत्वादमेयत्वे-प्यनन्यत्वान्न तद्वत्ता, चितः कालतस्तावदानन्त्य सिद्ध जन्माभावात् । अत एव देशतोऽधस्ततोऽपि अन्यथा घटादि-वज्जन्मप्रसङ्गात् । नह्यज विभागयस्ति । नाणुना चाजत्वम् । रूपादिमत्त्वाद् घटादिवत । न चानंशस्य समस्तदिक्सम्बन्धात् ।

मध्ये—

अतोऽति सिद्ध कर्मोपासनादिवाक्यानां चाविद्यावत् कल्पितेष्टानिष्टप्राप्तिपरिहारोपायज्ञापकानामविद्यावत् छायामेव प्रत्यक्षादीनामिवाबोधाबोधात् स्वप्नवत् छायामिव प्रामाण्यमिति । न वेदान्तवेद्यवस्तुविरुद्धरूपवस्तुसत्यतेत्यात्मैव सम्यक्प्रमाणवस्तु नान्यत् किञ्चिदिति स्थितम् ॥छ॥ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाव्ययात्मपूज्यपादशिष्यविमुक्तात्मा-चार्यस्य कृताविष्टसिद्धौ प्रथमोऽध्यायस्समाप्तः ॥छ॥छ॥

(२) **भगवद्गीता भाष्यसह** पत्र १३० । **भा.** स । **भा. क.** शंकरस्वामी । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी अंत । **संद.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प** २४॥×२॥ । पत्र १२९–१३० मां शोभन छे ।

क्रमाङ्क ३८९

गौतमीयन्यायसूत्रवृत्ति पत्र १२४। **भा.** स । **ले. सं.** १२०८। **संह.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १४×२।.। पत्र १२३ मां शोभन छे।

आदि—ॐ नमः सर्वज्ञाय ।

एव किलात्र शब्यते। यदशक्यानुष्ठानोपायोपदेशक तदशक्यार्थकम्। यथा ज्वरहरतक्षकचूडारत्नालङ्कारोपदेशक वचन तादृशं चेद शास्त्रमिति ।. .... न तावदर्थे प्रतिपत्तिः प्रवृत्तिहेतुः, अपि तु तदर्थजातीयश्रेयो-हेतुतामसकृदुपलभ्य सम्प्रत्युपलभ्यमानस्यार्थस्य तज्जातीयतया श्रेयोहेतुभावानुमानसहितो विनिश्चयः प्रवृत्तिहेतुः, सेय श्रेयःसाधनतानुमानसहिता प्रमाणतोऽर्थप्रतिपत्तिर्विनिश्चित. समर्थप्रवृत्तिनिमित्तमुक्ता। न चार्थविनिश्चयः प्रामाण्यावधारण-मन्तरेण, प्रामाण्यावधारण चार्थश्रेयोहेतुतानुमाननिमित्तव्याप्तिग्रहण च न समथा प्रवृत्ति विना ।

अन्त—

परमाणुवियती द्विधा घटबुद्धी इव द्वेधा ॥छ॥ सवत् १२०८ वैशाख वदि ३ बुधे।
यादृश पुस्तक दृष्ट तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥

क्रमाङ्क ३९०

भाष्यवार्त्तिकवृत्तिविवरणपंजिका द्वितीयाध्यायथी पंचमाध्याय पर्यन्त पत्र ११७। **भा.** स.। **क.** अनिरुद्ध पडित। **ले. सं.** अनु १३मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** १३।×१॥

आदि—

॥९०॥ ॐ नम शिवाय॥ स्यादेतत्प्रथमाध्याये प्रमाणादय पदार्था उद्दिष्टा, यथोद्देशश्च सजातीयव्यावृत्ता लक्षणतोऽधिगतास्तत्किमपरमवशिष्यते यदथ द्वितीयाद्यध्यायत्रयमारभ्यत इत्यत आह वार्त्तिककारः॥ त्रिविधेत्यादि ॥

अन्त—

पण्डितश्रीअनिरुद्धविरचिताया भाष्यवार्तिकटीकाविवरणपंजिकायां पचमोऽध्याय. समाप्तः॥ शुभमस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ३९१

(१) **सांख्यसप्ततिकाभाष्य** पत्र १२-८३। **भा.** स। **क.** गौडपाद । **ले. सं.** १२००।

पत्र—३६-४०. ४२, ४३, ४५-४७, ४९, ६६-७५, ८२ नथी

अन्त—

सांख्य कपिलमुनिप्रोक्त ससारमुक्तिकारण, यत्र सप्ततिरार्यामूलसूत्रमेतद् भाष्य गौडपादकृत इति ॥

सवत् १२०० श्रावणवदि ८ गुरौ अद्येह श्रीमूलनारायणदेवीयमठावस्थितपरमभागवततपोधनिकश्रीऋषिमुनींद्र-शिष्यस्य मध्यदेशरत्नाकरकौस्तुभस्य परमार्थविदः श्रीसल्हणमुनेराज्ञया पण्डितधारादित्येन सांख्यसप्ततिभाष्यपुस्तक लिखितमिति मगल ।

(२) **सांख्यसप्ततिकाटीका-सांख्यतत्त्वकौमुदी** पत्र ९०-१८४ (७-९१)। **भा.** स.। **क.** वाचस्पतिमिश्र। पत्र ९३, ९४, ९६-९८, १०१-१०४, १०७, १०९, ११६-१३० नथी ।

(३) **सांख्यसप्ततिका** पत्र ९। **भा.** स.। **क.** ईश्वरकृष्ण। आर्या. ७२। **ले. सं** [१२००]। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×२ ।

क्रमाङ्क ३९२

(१) **सांख्यसप्ततिका** पत्र ७। **भा.** स.। **क.** ईश्वरकृष्ण। आर्या. ७२ ।

(२) **सांख्यसप्ततिकाटीका-सांख्यतत्त्वकौमुदी** पत्र १-८०। **क.** वाचस्पतिमिश्र।
पत्र ८० मां **शोभन** छे.

(३) **सांख्यसप्ततिकाभाष्य** पत्र १-७०। **भा.** स.। **क.** गौडपाद। **ग्रं.** ८५५। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२

क्रमाङ्क ३९३

सांख्यसप्ततिका वृत्तिसह पत्र ८९। **भा.** स.। **ग्रं.** १३००। **ले. सं.** ११७६। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥।×१॥।.। पत्र ५७, ५८, ६०-६३, ६६-७४, ७६-७९ नथी.

आदि—

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ। दृष्टे साऽपार्था चेत् नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥१॥

अस्या आर्याया उपोद्घात इत्यत्र ....**क**पिलो नाम भगवान् महर्षिः तस्योत्पन्नशरीरः, तस्योत्पद्यमानस्य सकाशाच्चत्वारो भावाः सहोत्पन्नाः—धर्मो ज्ञान विरागमैश्वर्यमिति। तेनाऽऽत्मगतेन ज्ञानेन स भगवानिद जगदन्धे तमसि वर्त्तमान ददर्श। तदा कारुण्यादुत्पन्नम्-अहो खल्विद जगदन्धे तमसि वर्त्तते ससारपारम्पर्येणेति उत्पन्नकारुण्यः ब्राह्मणविशेष वर्षसहस्रयायिनं अन्तर्हितो गत्वोवाच-भो **आसुरे**! रमसे गृहस्थधर्मे?। 'अस्मि' स तमुवाच **आसुरिः**-रमे भोः!। स एवमुक्तो निर्जगाम। भूयो वर्षसहस्रे पूर्णे प्रत्यागम्य स तमुवाच-भो **आसुरे**! रमसे गृहस्थधर्मे? इति। त प्रत्युवाचासुरिः-रमे भोः!। स भगवान् ततो निर्जगाम। भूयो[ऽपि] तृतीये वर्षसहस्रे पूर्णे प्रत्यागम्य स तमुवाच-आसुरे! रमसे गृहस्थधर्मे इति। तमुवाच भगवन्त **क**पिलमासुरिः—न रमे भोः!। तथोक्तो भगवता-उत्सहसे ब्रह्मचर्य कर्त्तुमिति। त प्रत्युवाचाऽऽसुरिः—बाढमित्यमिति। स एव गृहस्थधर्म परित्यज्य कपिलस्य शिष्यो बभूव। तत्र कश्चिद् ब्रूयात्-कुतस्तस्य जिज्ञासा समुत्पन्ना आसुरिसगोत्रस्य ब्राह्मणविशेषस्य? यया जिज्ञासया गृहस्थधर्मं परित्यज्य गुरुमभिगत इति। अत्रोच्यते—"दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा"।

अन्त—

शिष्यपरम्परयागत **ई**श्वरकृष्णेन चैतदार्याभिः। सक्षिप्तमार्यमतिना सम्यग विज्ञाय सिद्धान्तम् ॥

अत्र शिष्यपरम्परयाऽऽगत इत्यत्र **क**पिलादासुरिं प्राप्त, **आ**सुरेरपि पञ्चशिखम्, **प**ञ्चशिखाद् **गा**र्ग्यम्, **ख्**कवंचलिप्रभृतीनां शत तेभ्य ईश्वरकृष्णेन एतद् ज्ञानमार्याभिः आर्याणा सप्ततिः प्रमाण दुःखत्रयाभिघातादित्येवमादि। एतत् पवित्रमित्येवप्रमाण सप्तति कृत्वा एभिरार्याभि सक्षिप्तमार्यमतिना। आर्या मतिर्यस्य स भवत्यार्यमतिः, भावितमतिनेत्यर्थः। सम्यग विज्ञाय सिद्धान्तमिति॥ **सां**ख्यवृत्ति समाप्ता॥छ॥ ग्रन्थाग्र ग्रन्थमानेन श्लोक १३००॥ मगलं महाश्री॥ संवत् ११७६ ॥

क्रमाङ्क ३९४

सांख्यसप्ततिका वृत्तिसह पत्र १०२। **भा.** स। **मू. क.** ईश्वरकृष्ण। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×१.। अत्य पत्रमां **शोभन** छे।

आदि—ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

कपिलाय नमस्तस्मै येनाविद्योदधौ जगति मग्ने। कारुण्यात् साङ्ख्यमयी नौरिव विहिता प्रतरणाय ॥

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ। दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततो भावात् ॥छ॥

अस्यामार्यायामुपोद्धात उच्यते-इह हि भगवान् महर्षिः **क**पिलो नाम बभूव। तस्योत्पद्यमानस्याकस्मात्चत्वारो भावाः समुत्पन्नाः-धर्मो ज्ञान वैराग्यमैश्वर्यमिति। स तेनात्मज्ञानेन सहोत्पन्नज्ञानो भगवानिद जगदन्धे तमसि वर्त्तमान ददर्श। तद् दृष्ट्वा तस्य कारुण्यमुत्पन्नम्—अहो खल्विद जगदन्धे तमसि वर्त्तते ससारपारम्पर्ये-

णेति। स एवमुत्पन्नकारुण्यो भगवान् महर्षिश्चिन्तयितुमारब्धः-कथ मयाऽस्यान्धस्य जगतोऽनुग्रहः कर्तव्य इति। एवं विचिन्त्यासुरिसगोत्रब्राह्मणविशेष वर्षसहस्रयायिन दृष्ट्वाऽन्तर्हितो भूत्वा वाचमुवाच-भो भो आसुरे रमसे गृहस्थधर्मेणेति। स तमुवाच-रमेऽह भोः। स एवमुक्तो निर्जगाम। भूयोऽपि द्वितीयवर्षसहस्रे पूर्णे प्रत्यागम्योवाच-भो भो आसुरे रमसे गृहस्थधर्मेणेति। स तमुवाच-रमेऽह भो.। तत् श्रुत्वा पुनः स भगवान् निर्जगाम। भूयोऽपि तृतीयवर्षसहस्रे पूर्णे प्रत्यागम्योवाच-भो भो आसुरे ! रमसे गृहस्थधर्मेण ?। स तमुवाच—न भो रमेऽहम्। स तेनोक्तः किं भूत्वाऽब्रवीत्-दुःखत्रयाभिघातादिति। ततः स तेनोक्तो भगवता-उत्सहसे ब्रह्मचर्यवासं वस्तुमिति। तदमीषां दुःखानां नि.............. मुपदेश्याम.। सोऽब्रवी...............क्त इति। स एव गृहस्थधर्मं परित्यज्य पुत्रदारांश्च प्रव्रजितो भगवतः कपिलस्य शिष्यो बभूव। तत्र यदि कश्चिद् ब्रूयात्-कुतोऽस्य जिज्ञासा समुत्पन्ना यया जिज्ञासया गुरुकुलमभिगत इति। तस्यैव वक्तव्यम्-दुःखत्रयाभिघाताद् जिज्ञासेति। तत्र दुःखानां त्रय दुःखत्रयम्, त्रीणि वा दुःखानि दु.खत्रयम्, दु.खत्रये अभिघातो दु.खत्रयाभिघातस्तस्मात् दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा समुत्पन्ना। ज्ञातुमिच्छा जिज्ञासा, यथा पातुमिच्छा पिपासा सोऽर्थः। किमिह परलोके याथातथ्य किं निःश्रेयसं किं कृत्वा कृतार्थतामेतीति मत्वा गुरुकुलमभिगत इति।

अन्त—

शिष्यपरम्परयागतमीश्वरकृष्णेन चैतदार्याभिः। सक्षिप्तमार्यमतिना सम्यग विज्ञाय सिद्धान्तम् ॥७२॥

शिष्यपरम्परयागतमिति। कपिलादासुरिणा प्राप्तम्, आसुरेः पञ्चशिखेन, पञ्चशिखाद् भार्गवोलूकवाल्मीकिहारीतप्रभृतीनां गतम्, ततस्तेभ्य ईश्वरकृष्णेन प्राप्तम्। तेनेद षष्टितन्त्रमार्याभि· साक्षिप्तमार्यमतिना विस्तीर्णमतिना सम्यग विज्ञाय सिद्धान्त कार्यकारणसिद्धस्य शरीरस्यान्तो न पुनर्भावो मोक्ष इति तत् सिद्धान्त षष्टितन्त्रमिति ॥७३॥

सप्तत्या किल येऽर्थास्तेऽर्था कृत्स्नस्य षष्टितन्त्रस्य। आख्यायिकाविरहिता परवादविवर्जिताश्चेति ॥७३॥

ये षष्टितन्त्रे पदार्था अभिहितास्ते सप्तत्या व्याख्याता· कथितास्तदुच्यते॥

पञ्च विपर्यय. भ... . ... .. परार्थमन्यत्वमथो निवर्त्ति।

योगो वियोगि पुमास: स्थिति· शरीरस्य च शेषवृत्ति·॥

तत्र भेदानां परिमाणादित्येभि: पञ्चभिरर्थो। हेतुभि· प्रधानस्यास्तित्वमेकत्वमथार्थत्व सिद्धम्। सङ्घातपरार्थत्वादिति परार्थता सिद्धा। तद्विपरीतस्तथा च पुमानिति प्रधानपुरुषयोरन्यत्व सिद्धम्। रागस्य दर्शयितेति निवृत्ति सिद्धा। पुरुषस्य दर्शनार्थमिति सयोग सिद्ध·। प्राप्तशरीरभेद इति वियोग· सिद्ध·। जन्ममरणकरणानामिति पुरुषत्वबहुत्व सिद्धम्। चक्रभ्रमवदिति शेषवृत्तिसिद्ध·। एकषष्टिपदार्थाः षष्टितन्त्रे, सप्तत्यामप्येतदेव। किञ्चान्यत्-आख्यायिकाविरहिता स्थापनाया शिष्यायस्तयथा परवादविवर्जिताश्चेति परेण मवादा· परवादास्ते वर्जिता: परवादविवर्जिताश्चेति। परिसमाप्तिमित्यत्राह। कथमेतत् कल्पग्रन्थ शास्त्र कृत्स्नार्थवाचक भवतीत्यत्रोच्यते ॥७३॥

तस्मात् समासदृष्ट शास्त्रमिद नार्थतश्च परिहीणम्। तन्त्रस्य बृहत्सूत्रे दर्पणसङ्क्रान्तिमिव बिम्बम् ॥छ॥

यस्मात् षष्टितन्त्रमिति हेतुः समासदृष्ट सक्षेपतो ग्रन्थितमित्यर्थः। शास्त्रमिति शास्त्र तीर्थोदकमहद्बल कर्त्ता भोक्ता भोज्यो मोक्षश्चिन्त्यते। अथवा दुःखानां शास्त्रवच्छास्त्रमिति इद इमा सप्तर्ति दर्शयति। नार्थतश्च परिहीणम्। तेन प्रतिषेधः। अर्थ इति षष्ठीप ....परिहीणमित्यर्थः। तन्त्रस्य बृहन्मूर्त्तौ दर्पणसङ्कान्तमिव बिम्बम्। यथा खल्वेति दर्पणे महतो रूपस्य व्यक्तिरूपेणा.. ... .शास्त्रे कृत्स्नस्य षष्टितन्त्रस्याभिव्यक्त भवतीति समाप्ताऽऽचार्येश्वरकृष्णप्रोक्तायाः साङ्ख्यसप्तत्या वृत्ति.। कृतिराचार्यम......स्येति ॥छ॥ साङ्ख्यसप्ततिवृत्तिः ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥

क्रमाङ्क ३९५

(१) **पातंजलयोगदर्शनभाष्य वृत्ति** पत्र १-१६०। **भा.** स.। **सू. क.** वाचस्पतिमिश्र।

(२) **पातंजलयोगदर्शनभाष्य किंचिदपूर्ण** पत्र १६१-२१७=५७। **भा.** स.। **भा. क.** व्यासर्षि। **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद्द.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२।

पत्र १, ३४, ६६, ६७-७३ ८५, ९५, १०५, १२५, १२६, १३०, १३३, १३६-१४०, १४३, १४४, १४९, १५२, १६६, १८०, १८२, १८९, १९२, १९३, २०५, २०७, २११, २१२ नथी।

क्रमाङ्क ३९६

(१) **सुपार्श्वनाथ चरित्र (सुपासनाह चरिय)** गाथाबद्ध। **भा.** प्रा.। **लं. प.** ३१।।।×२।।

पत्र अस्तव्यस्त अने टकडा थएल छे।

(२) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र अने वृत्ति** जीर्ण अस्तव्यस्त पानां

(३) **कल्पलघुभाष्य** पत्र १५ त्रुटक-अपूर्ण।

(४) **कल्पचूर्णि** पत्र ६ त्रूटक पानां।

क्रमाङ्क ३९७

(१) **प्रत्यंगिरास्तोत्र** संपूर्ण पत्र ४-७। **भा.** स.। **का.** २५। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **लं. प.** १५×२।

आदि—स्तोत्र गोत्रभिदादिकैरपि सुरै०

(२) **सुभाषितषट्पंचाशिका** पत्र १२। **भा.** स। **का.** ५६। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **लं. प.** १३।×१॥

(३) **भक्तामरस्तोत्र** पत्र ५। **भा.** स। **क.** मानतुंगसूरि। **का.** ४४। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **लं. प.** १३।×१॥

(४) **श्वानशकुनावलि** पत्र ३। **भा.** स। **ग्रं.** ३७। **ले. सं** अनु १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **लं. प.** १३।।।×१॥

(५) **श्रावक विध्युपदेश** पत्र २। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी प्रारभ। **लं. प.** १३।×१॥

आदि—

भो भो महाणुभावा! अच्चंत भवविरत्तचित्तेहिं। तुम्हेहिं पढमसत्तुट्ठिएहिं परिचिंतियव्वमिणं ॥

अन्त—

हियबुद्धीए अम्हेहिं तु संसारसुहविरत्ताण। एसुवएसो दिन्नो ज जाणह त करिजासु ॥छ॥

(६) **ज्ञाननमस्कार** पत्र १७४ मु। **भा.** प्रा.। **गा.** ७।

आदि—साणद सुरासुरराय०

(७) **ज्ञानस्तोत्र** पत्र १७४-१७५। **भा.** प्रा। **गा.** ६।

आदि—अट्ठावीसवियप्प

(८) **ज्ञानलवणादिवृत्तानि** पत्र १७५-१७६। **भा.** स। **का.** १३।

आदि—ऊप्फुल्लफुल्लरसलुद्धभमतभूरिभिंगावलिविहियगेयरवाभिरामा।

(९) **ज्ञानपरिधापनिकावृत्त** पत्र १७६ मु। **भा.** सं.। **का.** २।

(१०) **पच्चक्खाण** पत्र १७७-१७८।

(११) बृहत्प्रतिमास्नात्रविधि पत्र १७८ मु। का. ३।

आदि—मीनकुरंगमदागुरुसारं सारसुगंधिनिशाकरतारम् ।

(१२) सर्वजिनस्तोत्र पत्र १७८ मु। भा. प्रा.। गा. ६। ले. सं. अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। लं. प. १३×२।

आदि—जय जय तिहुयणसामिय! जय जय जियरागरोसमयमोह! ।

क्रमाङ्क ३९८

अर्थशास्त्रवृत्ति पत्र १२-८८। भा. स.। ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। लं. प. १३॥।×१॥।। आ प्रतिनां छूटक छूटक बधां मळीने १२ पानां छे।

क्रमाङ्क ३९९

शृंगारमंजरी पत्र ३ (पत्र ३९, ९७, १५५)। भा. स.। क. महाराजा भोजदेव। ले. सं. अनु. १२ मी शताब्दी। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ११॥।×२

क्रमाङ्क ४००

(१) सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण-सार्द्धशतकप्रकरण पत्र ११। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १५१। ले. सं. अनु. १२ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ११×२.। पत्र २जु नथी।

(२) श्रावकधर्मविधितंत्रप्रकरण पत्र ८। भा. प्रा.। क. हरिभद्रसूरि। गा. ७७। ले. सं. अनु. १३मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ११॥।×२

(३) श्रावकविधिप्रकरण पत्र ४। भा. प्रा। गा. २२। ले. सं. अनु. १३मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. प. ११॥।×२

(४) ॐकारपंचाशिका अपूर्ण पत्र ५। ग्रं. श्लोक ३९ पर्यन्त। ले सं. अनु. १३मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। संह. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं प. ११॥।×२

(५) सुभाषितपद्यसंग्रह पत्र ३। भा. स.।

क्रमाङ्क ४०१

दशवैकालिकलघुवृत्ति अपूर्ण पत्र २५२। भा. स.। क. सुमतिसूरि। ले. सं. अनु. १४ मी शताब्दी प्रारंभ। संह. जीर्णप्राय। द. मध्यम। लं. प. १५×१॥।। आ प्रतिमां वच्चमां वच्चमां बधां मळीने अर्धा उपरांत पानां नथी।

क्रमाङ्क ४०२

तिलकमंजरी कतिचित् अतिजीर्ण अने टूकडा थएलां पानां। भा. स.। क. धनपाल। ले. सं. [११३० ची. डा० दलाल] संह. अतिजीर्ण। द. श्रेष्ठ। लं. प. २२×२

क्रमाङ्क ४०३

उपमितभवप्रपंचाकथाप्रतित्रिकपुष्पिकात्रिक आदि।

(१) प्रथमप्रतिपुष्पिका ले. सं. १३०५—

परस्परपरिस्यूतनयगोचरचारिणी। अनेकान्तामृत दुग्धे यद्गवी त जिन स्तुमः ॥१॥

अस्त्यस्ताघः पूर्णराजप्रसादाद् वृद्धिं प्राप्तः सुस्थितश्रीनवीनः ।

श्रीश्रीमालो नाम वंशो विशालश्चित्र आडपानाश्रयोऽपारिजातः ॥२॥

वंशेऽत्र तेजोगुणवृत्तशाली मुक्तामणिः पाल्हणठक्कुरोऽभूत् ।
रामाभिरामश्चरितेन सीतादेवीधवत्वेन च यश्चकासे ॥३॥
..............सनजैत्रसिंहस्तदङ्गजः ठक्कुरजैत्रसिंहः ।
श्रीर्देहिनीव स्फुटगेहनीतिज्ञा गेहिनी जाल्हणदेविरस्य ॥४॥
तत्सूनुराद्यो रणसिंहनामधेयो जगत्सिंह इति द्वितीयः ।
आभ्यां रदाभ्यामिव हस्तिराजो विराजते ठक्कुरजैत्रसिंहः ॥५॥

इतश्च—

श्रीचन्द्रप्रभसूरिगच्छविभवक्षीरोदचन्द्रोदयः, पूज्यश्रीगुरुधर्मघोषगणभृद्वंशावतंसध्वजः ।
श्रीचक्रेश्वरसूरि......कुलोद्योतप्रदीपः पदे, पूर्वाद्रौ दिवसेश्वरः सुमतिसिंहाचार्यचूडामणेः ॥६॥
नृपसभासु कृताखिलदिग्जयः प्रबलवादिमरट्टविघट्टनः । विविधदेशविहारपरायणोऽजनि कुलप्रभसूरिरिह प्रभुः ॥७॥
तत्पट्टलक्ष्मीतिलकानुकारः प्रणाशिताशेषमहाविकार । ज्ञानादिकानर्घ्यगुणौघभूरिरजायत श्रीमहसेनसूरिः ॥८॥
तत्पट्टपूर्वाचलचूलिकावचूलायमानो जयताज्जगत्याः । प्रबोधन श्रीजयसेनसूरिसूरश्चिर दूरमपास्ततेजाः ॥९॥

ततश्च—

तदेव सार सार हि सप्तक्षेत्र्यां यदुच्यते । कुन्तस्य नवहस्तस्य सारमग्र्य यदुच्यते ॥१०॥
दालिद्द दोहग्ग कुजाइ-कुसरीर-कुमइ-कुगईओ । अवमाण-रोग-सोगा न हुंति जिणबिंबकारीण ॥११॥
ज्ञानावारकमोहसङ्गतनिरन्ताणुक्षये जायते, श्रीसामायिकदण्डकोक्तिसमये केत्यक्षरोच्चारणा ।
एकस्यापि तदक्षरस्य महते पुण्याय दान ततो, यस्त लेखयते ददाति गुरवे तत्पुण्यमान कुतः ॥१२॥
दीपः सद्गतिमार्गस्य तृतीय नेत्रमागमः । सद्गुरुणा मुखाम्भोजात् श्रुत्वैव वैशनागिरः ॥१३॥
माणिक्यपाटकपुरस्फुरदालवाले श्रीवीरसद्मसुकृतद्रुममूलकन्द ।
आरोपितः पितुरनीयत येन वृद्धि खेलायते यदुपरि ध्वजपल्लवोऽयम् ॥१४॥
उपमितभवप्रपञ्च लेखितवरभूरिपुस्तक स कथाम् । बाणखगुणैकवर्षे १३०५ स्वस्य च पन्याश्च पुण्याय ॥१५॥
अलीलिखज्जैत्रसिंहः श्रीजयसेनसूरयः । व्याख्यु. प्रशस्ति चक्रेऽस्या महीतिलकपण्डितः ॥१६॥
तमःपुञ्ज यावद्विकिरति करैरम्बरमणि शशी यावज्ज्योत्स्नाल्हरिभिरभिप्लावयति च ।
स्फुरत्तारापुष्पप्रकररचना खेलति नभोऽङ्गणे यावत्तावज्जयतु भुवने पुस्तकमिदम् ॥१७॥
सवत् १३०५ वर्षे ठ० पाल्हणसुत ठ० जैत्रसिंहेन श्रीउपमितभवप्रपञ्चाप्रतिर्लेखि । शुभमस्तु ॥छ॥

(२) द्वितीयप्रतिपुष्पिका ले. सं. १३०५—

....प्रणीः स्यात् ॥१२॥
दृष्टे बिम्बे साक्षाज्जिनो गृहेऽस्येक्षते समवसरणम् । लोकालोकालोकः श्रुतलेखनया तु केवलविदेव ॥१३॥
महर्द्धिक श्रुतज्ञान केवल तदनन्तरम् । आत्मनश्च परेषां च यस्मात्तदवभासकम् ॥१४॥
रागद्वेषहरो रुषादिव.. भूमृत्कुञ्जगर्त्ते भवारण्ये घोरपरीषहोग्रचरटे स्पर्शादिकिंपाकिनि ।
सन्नद्धाः शिवधाम गन्तुमनसाऽर्हत्सार्थवाहेन ये, यातास्तेन तु यान्ति सम्प्रति पुन कल्पोपमादागमात् ॥१५॥
पुस्तके वाच्यमाने यत् सम्यक्त्वारोपणादिकम् । श्रोतॄणां स्यात्तदशेन गृह्यते पुस्तकार्पकः ॥१६॥
माल्य निर्माल्य स्वल्पतृप्तये भोजनादि स्यात् । क्षणकृतभावा यात्रा श्रुतदान स्थिराय पुण्याय ॥१७॥
अन्नदानात् सुखी नित्य नीरुगौषधदानत । ज्ञानदानाद् भवेज्ज्ञानी निर्भयोऽभयदानतः ॥१८॥
ज्ञानावारकमोहसङ्गतनिरन्ताणुक्षये जायते, श्रीसामायिकदण्डकोक्तिसमये केत्यक्षरोच्चारणा ।
एकस्यापि तदक्षरस्य महते पुण्याय दान ततो, यस्त लेखयते ददाति गुरवे तत्पुण्यमान कुतः ॥१९॥

दालिद्द दोहग्ग-कुजाइ-कुसरीर-कुमइ-कुगईओ । अवमाण-रोग-सोगा न हुंति जिणबिम्बकारीण ॥२०॥
दीपः सद्गतिमार्गस्य तृतीयं नेत्रमागमः । सद्गुरूणां मुखाम्भोजात् श्रुत्वैव देशनागिरः ॥२१॥
माणिक्यपाटकपुरस्फुरदालवाले श्रीवीरसद्मसुकृतद्रुममूलकन्दः ।
आरोपितः पितुरनीयत येन वृद्धिं खेलायते यदुपरि ध्वजपल्लवोऽयम् ॥२२॥
उपमितभवप्रपञ्चां लेखितवरभूरिपुस्तकः स कथाम् । बाणखगुणैकवर्षे १३०५ स्वस्य च पत्न्याश्च पुण्याय ॥२३॥
अलीलिखज्जैत्रसिंहः श्रीजयसेनसूरयः । व्याख्यु' प्रशस्तिं चक्रेऽस्या महीतिलकपण्डितः ॥२४॥
तमःपुञ्ज यावद् विकिरति करैरम्बरमणिः, शशी यावज्ज्योत्स्नालहरिभिरभिप्लावयति च ।
स्फुरत्तारापुष्पप्रकररचना खेलति नभोऽङ्गणे यावत्तावज्जयतु भुवने पुस्तकमिदम् ॥२५॥
सवत् १३०५ वर्षे ठ० पाल्हण सुत ठ० जैत्रसिंहेन श्रीउपमितभवप्रपञ्चाकथापुस्तकं लेखयाञ्चक्रे । शुभ भवतु श्रीचतुर्विधश्रमणसघस्य ॥छ॥छ॥

(३) तृतीयप्रतिपुष्पिका ले. सं.[१३०५ ?]—

९० ॥ शिवमस्तु ॥छ॥ एवं प्रत्यक्षरगणनया सर्वग्रथाग्रथ जातानि त्रयोदश सहस्राणि अष्टषष्ठ्यधिकानि अष्ट शतानि च । अङ्कतोऽपि १३८६८ ॥छ॥

परस्परपरिस्यूतनयगोचरचारिणीं । अनेकान्तामृत दुग्धे यद्गवी न जिन स्तुमः ॥१॥
अस्त्यस्ताघः पूर्णराजप्रसादाद् वृद्धिं प्राप्तः सुस्थितश्रीनदीन. ।
श्रीश्रीमालो नाम वंशो विशालश्चित्र जाड्यनाश्रयोऽपारिजात' ॥२॥
वशे तस्मिन्नुदयनसुत ....!
......बिभ्रद् गुणमनुपम य सुवृत्त सुतेजास्तस्यौ केषां नहि हृदि जलच्छायया किन्तु मुक्तः ॥३॥
श्रीदेवी तद्भार्या पद्मपरीक्षकसुता विरेजे या । निजवश................................॥४॥
...................ये गवीश्रिया विवये । कलहसकगामिनया भानो नालीकगेहतया ॥५॥
भीमसिंहोऽथ विक्रमसिंहो विजयसिंहक. । तथाऽऽह्लादनसिंहाख्य ....॥६॥
.... । तनयैस्तथा चतुर्भिर्भाति श्रीदेवसिंहोऽयम् ॥७॥
श्रीचन्द्रप्रभसूरिगच्छविभवक्षीरोदचन्द्रोदय., पूज्यश्रीगुरुधर्मघोषगणभृद्वशावतसध्वजः ।
श्री चक्रेश्वरसूरि .... कुलोद्योतप्रदीपः पदे, पूर्वाद्रौ दिवसेश्वर' सुमतिसिंहाचार्यचूडामणे. ॥८॥
नृपसभासु कृताखिलदिग्जय' प्रबलवादिमरट्टविघट्टनः । विविधदेशविहारपरायणोऽजनि कुलप्रभसूरिरिह प्रभुः ॥९॥
तत्पट्टलक्ष्मीतिलकानुकारः प्रणाशिताशेषमहाविकारः । ज्ञानादिकानर्घ्यगुणौघभूरिरजायत श्रीमहसेनसूरिः ॥१०॥
तत्पट्टपूर्वाचलचूलिकावचूलायमानो जयताज्जगत्या. । प्रबोधनः श्रीजयसेनसूरिसूरश्चिर दूरमपास्ततेजाः ॥११॥
ततश्च—

तदेव सार सार हि सप्तक्षेत्र्यां यदुप्यते । कुक्षेत्रस्य नवहस्तस्य सारमप्य यदुच्यते ॥१२॥

विशेषतश्च—

दालिद्द दोहग्गं कुजाइ-कुसरीर-कुमइ-कुगईओ । अवमाण-रोग-सोगा न हुंति जिणबिम्बकारीणं ॥१३॥
.... नेश्वराणाम् ।
स्वर्गाधिपत्यफलरिद्धिसुखानि भुक्त्वा पश्चादनुत्तरगतिं समुपैति धीमान् ॥१४॥
यस्तृणमयीमपि कुटीं कुर्याद्दद्यात्तथैकमपि पुष्पम् । भक्त्या परमगुरुभ्य. पुण्योन्मानं कुतस्तस्य ? ॥१५॥
............गृहिणस्तत्तु तपो न क्षमाश्रितान्तेषु न तेषु भावघटना दानं घटेताप्यतः ।
साफल्याय धनस्य तस्य विषयः क्षेत्राणि सप्तोदितस्तत्राऽपि स्फुटमा................॥१६॥

....धर्ता नैव जडस्वभावम् ।
न मूकतां बुद्धिविहीनतां च ये लेखयन्तीह जिनस्य वाक्यम् ॥१७॥
ज्ञानत्रये त्रुटिमिते तरणेरिवास्ते छन्ने तमोभिरिह मोक्ष........... ।
....प्रणी स्यात् ॥१८॥
दृष्टे बिम्बे साक्षाज्जिनो गृहेऽस्येक्षते समवसरणम् । लोकालोकालोकः श्रुतलेखनया तु केवलविदेव ॥१९॥
महर्द्धिक श्रुतज्ञान केवलं तदनन्तरम् । आत्मनश्च परेषां च यस्मात्तदवभासकम् ॥२०॥
रागद्वेषहरो रुषादिव...भूभृत् कुञ्जगर्त्ते भवारण्ये घोरपरीषहोग्रचरटे स्पर्शादिकिम्पाकिनी ।
सन्नद्धाः शिवधाम गन्तुमनसाऽर्हत्साथवाहेन ये, यातास्तेन तु यान्ति सम्प्रति पुनः कल्पोपमादागमात् ॥२१॥
पुस्तके वाच्यमाने यत् सम्यक्त्वारोपणादिकम् । श्रोतॄणा स्यात्तदशेन गृह्यते पुस्तकापकः ॥२२॥
माल्यं निर्माल्य स्वल्पतृप्तये भोजनादि स्यात् । क्षणकृतभावा यात्रा श्रुतदान स्थिराय पुण्याय ॥२३॥
............भीतानां तत्प्रतीकारमिच्छताम् । धर्मोपदेशा .... ॥२४॥
ज्ञानावारकमोहसन्ततिनिरन्ताणुक्षये जायते, श्रीसामायिकदण्डकोक्तिसमये केऽप्यक्षरोच्चारणा ।
एकस्यापि तदक्षरस्य महते पुण्याय दान ततो, यस्त लेखयते ददाति गुरवे तत्पुण्यमान कुतः ॥२५॥
दीपः सद्गतिमार्गस्य तृतीय नेत्रमागमः । सद्गुरूणां मुखाम्भोजात् श्रुत्वेव देशनागिरः ॥२६॥
श्रीदेवसिंहमन्त्री स्वसुभा. .... । .... ॥२७॥
... ... । . ... सङ्कल्पे ॥२८॥ युग्मम् ॥
अस्मिन .... । . ... ॥२९॥
तमःपुञ्ज यावद्विकिरति करैरम्बरमणि, शशी यावज्ज्योत्स्नालहरिभिरभिप्लावयति च ।
स्फुरत्तारापुष्पप्रकररचना खेलति नभोऽङ्गणे यावत्तावज्जयतु भुवने पुस्तकमिदम् ॥३०॥छ॥

(४) प्रकीर्णकपत्रगता पुष्पिका ले. सं. १३४८ —

.... .पयः । यन्नात. क्षारससारसिन्धौ पीयूषकूपिका ॥१॥
इहाऽऽस्ते निस्तीर्णक्षतिगतिथसपर्कर्षाचमान्न नक्षत्रस्पर्शी न खलु कलयाऽपीप्सितभवः ।
विदोषः प्राग्वाटान्वय उदयवानस्तविकलः, कुरङ्गाङ्को नै .. . . ॥२॥
.... शे स्वकीयकुलकाननसुप्रदीपः ।
श्वेताब्जनैकरुचिरां सगुणां दधान्तामन्यद्भुतां दधदजायत पूर्णदेवः ॥३॥

अपि च—

शशिन इव कलङ्कं क्षालितुं कुन्दकान्ति, गवितुरिव निहन्तु तापमेकान्तमीता ।
विष..... .... म ॥४॥
यशोधनसुता तेन परिणिन्ये प्रिया प्रिया । दयेव जिनधर्मेण सोमना सत्यशोभना ॥५॥

तथाहि—

वर वपुःक्लेशमुपैयिवानह न चापि दैन्य वचसाऽपि दर्शिनम ।
इति प्रिय सत्त्वमगत्वरग्रनासु .... ॥६॥
....भिधा । प्रातः सन्ध्येव निस्तन्द्रा प्राची वासरयोरिव ॥७॥
आमाधरस्तनूजश्च प्रयोनन इवेनयोः । माधुचक्रार्पितानन्द उपयेव . .. . ॥८॥
....वाहिता, दाने तत्परता गुरौ विनयिता विद्यार्ज्जने लौल्यता ।
बन्धौ स्नेहलता श्रुतौ चतुरता तीर्थे च वन्दारुता, मन्तोषे सुखितेव यस्य म न किं लोकोत्तरः सद्वरः ॥९॥

अन्यच—

वक्त्र सत्यलतालवालरचना...... ....।
कर्णौ याचकगीःपयोदविगलद्वारोन्नमच्चातकौ, पाणिस्त्यागकलाशशी किमपर यस्याऽखिलाङ्ग गुणि ॥१०॥
आसामती नाम पतिंवरा प्रिया तेनोपयेमे पतिभक्तिशालिनी ।
वेलेव दुग्धोदधिना स .... ॥११॥
.................भूत् कालेन देगाभिधः, पुत्रो देवधरश्च देसल इति ख्याता जगद्देविका ।
ज्योत्स्नायाममृतद्युतेरिव जनालोकः प्रमोद. शुचिन्यायः सीतलतेति कार्यपटली विश्वप्रिया स्वैर्गुणैः ॥१२॥
देमतिः स्थिरमति...................... .. । ....॥१३॥
इति सकलकुटुम्बाडम्बरेणाधिकाभोऽभवदभिसरणीयच्छाययाऽऽशाधरोऽसौ ।
वरतरुरिव वल्ली वैभवेनावृतात्मा प्रतिजनमुपकारी साधु नैस्तैर्गुणैः स्वैः ॥१४॥
.. .. [अत्रान्तरे पत्र विनष्टम्] ।
तुच्छानि दुःखमूलानि भवभावसुखानि विरसनिधनानि । पामाकण्डूयनसुखसमानि हेयानि तत्त्वविदाम् ॥२३॥
एकतरुपरितशकुनं सन्ध्यासमयागतैरिव स्वजनैः । प्रातर्दिक्षु गतैस्तैः सवासः केवल मोह. ॥२४॥
पापानि यन्निमित्त कुर्वन्ति जनाश्चलं परायत्तम् । परमार्थतो विचिन्त्य वपुरपि स्वजनैरशुचिगेहम् ॥२५॥
सा मूढता किल जरोपरि जर्जराङ्गा यद् भुञ्जतेऽर्थविषयान् स्थिरवस्तुबुद्धया ।
शुद्ध विशुद्धमनसा परिहृत्य मनसां (?) कार्य न कार्यमपर भुवने यतोऽस्ति ॥२६॥
तृप्तिर्नास्ति सुखेन चाप्यभिमुखदुःखघने खिन्नता, पुगां मोहविषार्त्तचित्तवपुषां सोपक्रमाल्पायुषाम् ।
लक्ष्मीयौवनजीवितादि सकल यच्च प्रिय प्राणिनि, तत्सर्व क्षणदृष्टनष्टमहहा मोक्षस्य सौख्य विना ॥२७॥
स्पृहयति सुखानि जीव. सर्व सर्वत्र वित्तपरिणामः । तत्कारक न धर्म करोति करुणादिकारणजम् ॥२८॥
गमयति दिनानि जन्तु. प्रमादमदिरामदेन संयुक्तः । सासारिकसुखकारणमसाधुदेहार्थमभिलषति ॥२९॥
त्राण न तेन किञ्चित् स्वकुचकेनेव मरणकालेऽपि । तस्मादवश्यमेव हि सुधर्मकर्मोद्यमः कार्यः ॥३०॥
सच्चारित्रपवित्रचारुचरिताः श्रीभद्रगुप्ताभिधास्तत्पादाम्बुजसेवनैकनिरत श्रीभद्रबाहुप्रभुः ।
दक्षाः श्रीजिनभद्रसूरय इति तेषा च पट्टे वरस्तत्पादाम्बुजबोधनैकतरणिः श्रीहेमभद्राभिध ॥३१॥
श्रीहेमभद्रसूरिभ्यो धर्म श्रुत्वाऽथ नाइकि. । धर्म चकार दानाद्य भवदुःखौघनाशनम् ॥३२॥
कार्यविदा स चतुर्द्धा धर्म. कार्य सदैव दानाद्य. । दाने त्रिविधेऽपि पर दातव्य तच्छ्रुतज्ञानम् ॥३३॥
यतयत समस्तपुरुषार्थसाधन बोधन भवनिधानबुद्धीनाम् । तच्छास्ति कथापुस्तकधृतिमिति तल्लेखन युक्तम् ॥३४॥
इत्याद्य भवरूप च विभाव्य चित्र यद्धृदि । नाइकिर्विमला सन्तस्त्रेत्राराधनहेतवे ॥३५॥
एव विभाव्य चित्तेन अपुत्रैर्वृषभप्रभु—चरित्रं लेखयामास स्वपत्यु श्रेयसे वरम् ॥३६॥
त्रयोदशशते जातेऽष्टचत्वारिंशताऽधिके । वैशाखश्वेतपञ्चम्या वासरे विक्रमान्नृपे ॥३७॥
व्याख्याप्य विस्तरेण श्रीमद्भ्यो हेमभद्रसूरिभ्य । भव्यान प्रबोधाय ददौ प्रभावभावनापूर्वम् ॥३८॥
तिथिश्रीपत्रश्रीसुहृदमुदुपुष्पस्तबकिनां , वियद्वार्टी सन्ध्याकिसलयतता मालिक इव ।
प्रतिप्रातस्तिग्मद्युतिरिव चिनोति प्रसूमरैः, करैर्यावत्तावद् भुवि विजयतां पुस्तकमिदम् ॥३९॥
॥ शुभ भवतु । मङ्गल महाश्रीः ॥श्री ॥

पंचनो भंडार—जेसलमेर

क्रमाङ्क ४०४

योगशास्त्र स्वोपज्ञटीकासह पत्र ३१८। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १३४३। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९×२।

अन्त—

॥७०॥ संवत् १३४३ आषाढ सुदि १ साधु **वरदेवसुतेन** साधु **गुणचंद्र** सा० **भुवनचंद्रसकलदिग्वलय-विख्यातावदातकीर्त्तिकौमुदीविनिर्जितामलचंद्र** साधु **हेमचंद्र-महिपाल** सा० **रत्न** भ्रात्रा **सकलगुण....णेन** सा० **महणश्रावकेण** श्री......**जिनप्रबोधसूरिशिष्यावतंसानां** श्री**जिनचंद्रसूरिसुगुरूणां** व्याख्यानाय **प्रदत्त** ॥छ॥

क्रमाङ्क ४०५

स्याद्वादरत्नाकर प्रथमखंड पत्र ३७३। भा. स.। **क.** वादी देवसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** १६०००। **ले. सं** अनु १३ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** ३१×२।

क्रमाङ्क ४०६

मुनिसुव्रतस्वामिचरित्र गाथाबद्ध पत्र ३७९। **भा.** प्रा। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **गा.** १०९९४। **र. सं.** ११९३। **ले. सं.** ११९८। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९॥×२।

अन्त—

संवत् ११९८ आश्विन वदि १ गुरौ ॥ अद्येह श्रीमद**णहिल्लपाटके** समस्तराजावलीसमलंकृतमहाराजाधिराज-त्रिभुवनगण्डसिद्धचक्रवर्त्तिश्रीमज्जयसिंहदेवकल्याणविजयराज्ये। तस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने श्री**श्रीचंद्राचार्याणामादेशेन** ऊमताग्रामावस्थितेन ल.....श्री**मुनिसुव्रतस्वामिचरितपुस्तकं** लिखितम्।

क्रमाङ्क ४०७

(१) **पंचकल्पमहाभाष्य** पत्र १-१०६। **भा.** प्रा.। **क.** संघदासगणि क्षमाश्रमण। **गा.** २५७४। **ग्रं.** ३२१८।

(२) **पंचकल्पचूर्णी** पत्र १०७-२०१। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३१२५। **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९॥×१॥।

अन्त—

पंचकल्पचूर्णि समाप्ता ॥छ॥ ग्रन्थप्रमाण सहस्रत्रय शतमेकं पंचविंशत्युत्तरं। लिखितं श्रीम**दाम्रदेवाचार्यकृते** **पंचकल्पपुस्तकं**। अंकतोपि ग्रंथप्रमाण ३१२५ ॥छ॥ मंगलमस्तु ॥छ॥

क्रमाङ्क ४०८

हरविजयमहाकाव्य पत्र १०७। **भा.** स.। **क.** रत्नाकरकवि वागीश्वराङ्क। **ले. सं.** १२२८। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २९×२।

अन्त—

इति श्री**बालबृहस्पत्यनुजीविनो** वागीश्वराङ्कस्य कवे **रत्नाकरस्य** कृतौ **हरविजये** महाकाव्ये **देवदेवप्रतिष्ठापनो** नाम पंचाशः सर्गः ॥छ॥

श्री**दुर्गदत्त**निजवंशहिमाद्रिगङ्गानुगङ्गाहृदोदयसुतामृतभानुसूनुः।

रत्नाकरो ललितबंधमिदं व्यधत्त चंद्रावचूलचरितक्रमचारु **काव्यम्** ॥

स किल कविरेवमुक्तवान्—

ललितमधुराः सालंकाराः प्रसादमनोरमाः, विकटयमकश्लेषोदारप्रबंधनिरर्गलाः ।
असदृशगतीश्चित्रे मार्गे समुद्गिरते गिरो, न खलु नृप[ते'] चेतो वाचस्पतेरपि शक्नुते ॥
सान्द्रानंदामृतरसपरिस्पंदनिष्यंदिनीनामस्मद्वाचामतिशयजुषां वस्तुतत्त्वाभिधाने ।
प्रौढा ज्योत्स्ना धवलविकसद्दिग्वधूकर्णपूर[. .. .] ब्रह्मास्तबकयशसां कोऽपि टंकारटंकः ॥
नानाकाव्यप्रबंधप्रणिहितमनसः श्रोत्रपेयः कवीनां, भाषापंकेऽपि यस्य क्वचिदपि न गता भारती भंगुरत्वम् ।
प्राप्तश्रेयावसादस्फुरदमलतरप्रातिभज्ञानसंपत्, सोऽहं रत्नाकरस्ते सदसि कृतपदः क्ष्माप ! वागीश्वरांकः ॥
यस्योदयेऽन्धतमसन्नुदतो विशुद्धिराविर्भवत्यनिशमेव जलाशयानाम् ।
उद्ग्रस्तवाङ्मयसमुद्रमवेहि राजरत्नाकर सदसि मामगस्त्यमौर्यम् ॥
दृब्धं सत्प्राज्ञकैर्यन्न जगति कविभिर्वस्तु नास्तीहि(ह) किंचित्,
क्षुण्णो क्षुन्नत्वभिन्ना गहनविषयता तस्य दूरेऽस्तु तावत् ।
तत्सदर्भप्रगल्भप्रसरगुरुगिरामग्रणीर्बाण एको,
राजन् ! रत्नाकरश्च ज्वलनवदन नौ जाज्वलीति द्वितीयः ॥

॥ इति हरविजयं नाम महाकाव्यं समाप्तम् ॥छ॥ ॥ मंगलं महाश्रीः ॥ संवत् १२२८ वैशाख सुदि १ अद्येह श्रीमदणहिल्लपाटकस्थितेन विविधलिपिज्ञेन पंडितसूपटेन लिखितमिति ॥

क्रमाङ्क ४०९

वसुदेवहिंडी प्रथमखंड पत्र १५८ । **भा.** प्रा. । **क.** संघदासगणि वाचक । **ग्रं.** ११२०० । **ले. सं.** [१२२८] । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २९×२।

अन्त—

तस्स एसा दारिया दायव्व त्ति ॥छ॥ बालयंदालंभो सम्मत्तो ॥ॐ॥छ॥ वसुदेवचरितप्रथमखंड समाप्तम् ॥ॐ॥छ॥ मंगल महाश्री. ॥छ॥ प्रथाग्रथ ११२०० ॥ उ. श्रीक्षमाप्रमोदैर्वाचित ॥ प० लक्ष्मीरंगैर्वाचित ॥ सं. १८५५ फाल्गुण सुदि २

क्रमाङ्क ४१०

(१) **दशवैकालिकसूत्रचूर्णि** पत्र १८४ । **भा.** प्रा. । **क.** स्थविर अगस्त्यसिंहसूरि।

(२) **नंदीसूत्रचूर्णि** पत्र १८५–२२३ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदासगणि महत्तर । **र. सं.** शाके ५९८।

(३) **अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी** पत्र २२४–२७५ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदासगणि महत्तर । **ले. सं.** अनु. १३ मी शताब्दी । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २५×२॥

क्रमाङ्क ४११

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य अष्टमपर्व-नेमिनाथचरित्र पत्र १६१ । **भा.** सं. । **क.** हेमचंद्राचार्य । **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०॥×२।

क्रमाङ्क ४१२

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य दशमपर्व-महावीरचरित्र पत्र १७१ । **भा.** सं. । **क.** हेमचंद्राचार्य । **ले. सं.** अनु. १३मी शताब्दी पूर्वार्द्ध । **संद्द.** श्रेष्ठ । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ३०॥×२।

क्रमाङ्क ४१३

(१) **स्कंदपुराण उत्कलखंडगत पुरुषोत्तम माहात्म्य पूर्वार्द्ध २० मा अध्याय पर्यंत** पत्र १-८५। **भा.** सं.। **ले. सं.** अनु. २० मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६×१॥

(२) **स्कंदपुराण उत्कलखंडगत पुरुषोत्तममाहात्म्य उत्तरार्द्ध २१ मा अध्यायथी संपूर्ण.** पत्र ८६-१६५। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. २० मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १६ × १॥

अन्त—

॥ इति श्रीस्कंदपुराणे चतुरशीतसाहस्रे उत्पलखंडे जैमिनिऋषिसंवादे पुरुषोत्तममाहात्म्ये अष्टचत्वारिंशत्तमोध्याय : ४८॥ पुरुषोत्तममाहात्म्य सपूर्ण॥ श्रीकृष्ण रक्षा करिवे नीलकंठ रथकु॥ ॥श्रीकृष्णाय नम :॥

क्रमाङ्क ४१४

अंगविज्जा प्रथमखंड ३१ अध्यायपर्यंत पत्र २९९। **भा.** प्रा.। **ले सं.** १४ मी शताब्दी। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १७॥ × २

क्रमाङ्क ४१५

(१) **पंचाशकप्रकरण** पत्र १-५४। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा** १०००।

(२) **कर्मप्रकृतिसंग्रहणी** पत्र ५४-७८। **भा.** प्रा। **क.** शिवशर्मसूरि। **गा.** ४७५।

(३) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रंथ** पत्र ७८-८३। **भा** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि।

(४) **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण-सार्धशतकप्रकरण** पत्र ८३-९०। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १५०।

(५) **बृहत्संग्रहणीप्रकरण** पत्र ९१-१२०। **भा** प्रा। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** ५१४।

(६) **प्रवचनसंदोह** पत्र १२१-१३८। **भा.** प्रा।

(७) **कर्मस्तवकर्मग्रंथ-प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ** पत्र १३९-१४२। **भा.** प्रा.।

(८) **कर्मविपाककर्मग्रंथ-प्राचीन प्रथम कर्मग्रंथ** पत्र १४२-१५१। **भा.** प्रा। **क.** गर्गर्षि। **गा.** १६६।

(९) **शतककर्मग्रंथ-प्राचीन पंचम कर्मग्रंथ** पत्र १५१-१५६। **भा.** प्रा.। **क.** शिवशर्मसूरि। **गा.** ११०।

(१०) **सप्ततिका कर्मग्रंथ-षष्ठ कर्मग्रंथ** पत्र १५६-१६१। **भा.** प्रा.।

(११) **भवभावनाप्रकरण** पत्र १६२-१९१। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **गा.** ५३१। **ले. सं.** १२०६। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२॥×२।

अन्त—

संवत् १२०६ कार्त्तिक शुदि १३ रवौ लिखितेति ॥छ॥ शिवमस्तु सर्वसघस्य ॥छ॥ मंगलं महाश्रीः ॥
उदाहीरलक्खणयाइ सुद्धसीलगजलसमिद्धाण। वाहीए रयणप्पहसुगुरूण पुत्थिया दिन्ना ॥१॥

क्रमाङ्क ४१६

पाक्षिकसूत्र वृत्तिसह पत्र २४०। **भा.** प्रा. स.। **वृ. क.** यशोदेवसूरि। **ग्रं.** २७००। **र. सं.** ११८०। **ले. सं.** अनु. १४ मी शताब्दी पूर्वार्द्ध। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १४×२

क्रमाङ्क ४१७

(१) जीतकल्प चूर्णीसहित पत्र १–११६। **भा.** प्रा.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **चू. क.** सिद्धसेनसूरि। **ग्रं.** ११००।

(२) जीतकल्पचूर्णीटिप्पनक पत्र ११६–१८७। **भा.** स.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं.** ११२०। **र. सं.** १२२७। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १९॥।×१॥।

क्रमाङ्क ४१८

(१) जीतकल्पसूत्र पत्र १–८। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** १०५।

(२) जीतकल्पसूत्र वृत्ति सह पत्र ८–१०१। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** तिलकाचार्य। **ग्रं.** १७००। **र. सं.** १२७४। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्द्ध।

(३) श्राद्धजीतकल्पसूत्र-श्रावकसामाचारी पत्र १०१–१०३। **भा.** प्रा.। **क.** तिलकाचार्य। **गा.** २०।

(४) श्राद्धजीतकल्पसूत्र-श्रावकसामाचारी वृत्ति स्वोपज्ञ पत्र १०३–१०९। **भा.** सं.। **वृ. क.** तिलकाचार्य स्वोपज्ञ। **ले. सं.** अनु. १५ मी शताब्दी उत्तरार्ध। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १९॥।×२

क्रमाङ्क ४१९

पांडवचरित्रमहाकाव्य पद्य पत्र २४६। **भा.** स.। **क.** मलधारी देवप्रभसूरि। **ले. सं.** १४२९। **संह.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** २०×८.। आ प्रति कागळ उपर लखेली छे।

पत्र १ मा भगवान् श्रीनेमिनाथनु चित्र छे। पत्र २ मां पांच पांडवो मोक्ष सिधाव्यानु चित्र छे। पत्र ३ मां अधु उखडेलु सुदर चित्र छे। पत्र २४६ मां भगवान् श्रीनेमिनाथ अने पांडवचरित्रनु व्याख्यान करता आचार्य अने व्याख्यान सांभळता चतुर्विध श्रीसघनुं अतिसुंदर अने सहज घसाएलु आखा पाना उपर लांबु चित्र छे।

अन्त—

इति मलधारिश्रीदेवप्रभसूरिविरचिते पांडवचरिते महाकाव्ये बलदेवस्वर्गगमनश्रीमन्नेमिनाथमोक्षगमनपांडवनिर्वाणवर्णनो नामाष्टादशमः सर्गः ॥छ॥

श्रीकोटिकाख्यगणभूमिरुहस्य शाखा या मध्यमेति विदिता विटपोपमेऽस्याः।
श्रीप्रश्नवाहनकुले सुमनोऽभिरामः ख्यातोऽस्ति गच्छ इह हर्षपुरीयगच्छः ॥१॥
तत्राऽजनि श्रुतसुधांबुधिरिन्दुरोचि:स्पर्द्धिष्णुकीर्तिविभवोऽभयदेवसूरिः।
शान्तात्मनोऽप्यहह निस्पृहचेतसोऽपि यस्य क्रियाऽखिलजगज्जयिनी बभूव ॥२॥

सवत् १४२९ आखाढादिशावर्ण भाद्रवा वदि ६ षष्ठ्यां तिथौ गुरुदिने श्रीपूर्णिमापक्षीयभट्टारकश्रीअभयदेवसूरिशिष्यैः श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः आत्मपठनार्थ श्रीपाण्डवचरित्रपुस्तक सद्गुरुश्रीअभयदेवसूरिपुण्यविवर्द्धये पुस्तक लिखित लेखयांचक्रे। श्रीचतुर्विधसघस्य शान्तिर्भवतु। शुभ भवतु। मगलमस्तु। कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः।

अक्षरमात्रपदस्वरहीन वर्णविवर्द्धितवर्जितरेफम्। साधुभिरत्र मम क्षमनीय कोऽपि न मुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥१॥
चौराद् रक्ष जलाद् रक्ष रक्ष मां श्लथबधनात्। परहस्ताच्च मां रक्षेत्येव वदति पुस्तकम् ॥२॥छ॥

क्रमाङ्क ४२०

कल्पसूत्र सचित्र रौप्याक्षरी पत्र १६९। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** १२१६। **ले. सं.** १५६२। **संह.** जीर्णप्राय। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४॥.। आ प्रति कागळ उपर लखेली छे।

अन्त—

पज्जोसवणाकप्पो वुत्तासुयक्खधस्स अट्ठमज्झयण सम्मत्त। ग्रन्थाग्र १२१६ शुभ भवतु॥ सवत् १५६२ वर्षे चैत्र सुदि ७ दिने श्रीउपकेशज्ञातौ मंडोवरासज्ञायां सा. सांगण तद्भार्या बाई कुंअरिनाम्न्या तयोः पुत्र सा. राजपालसहितया रूपाक्षरैः श्रीकल्पपुस्तिका लिखापिता। प्रदत्ता स्वपित्रोः गुरवे। शुभ भूयात कल्याण च। लिखिता जो० वडुआकेन॥

पत्र २, १९, ४४, ४५, ६०, ६६-७९, ९६, ९७, १००, १११, १२३, १२९, १३२, १४८, १५३, १६८, नथी.

क्रमाङ्क ४२१

कालिकाचार्यकथा सचित्र रौप्याक्षरी पत्र १५। **भा.** प्रा.। **क.** भावदेवसूरि। **गा.** १००। **संद.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४॥.। आ प्रति कागळ उपर लखेली छे।

क्रमाङ्क ४२२

कालिकाचार्यकथा सचित्र गद्यपद्य किंचिदपूर्ण पत्र २१। **भा.** प्रा.। **संद.** जीर्ण। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४॥.। कागळ उपर लखेली प्रति।

क्रमाङ्क ४२३

प्रकरणपोथी पत्र ९८-४४०। **भा.** प्रा. म. अप। **ले. सं.** अनु १४ शताब्दी। कागळ उपर लखेली।

क्रमाङ्क ४२४

देववंदनभाष्यादि प्रकरणसंग्रह पत्र १२०। **भा.** प्रा. म। कागळ उपर लखेली प्रति।

क्रमाङ्क ४२५

(१) **कल्पसूत्र सचित्र** पत्र १-११२। **भा** प्रा.। **क** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं** १२१६।

(२) **कालिकाचार्यकथा गद्यपद्य सचित्र** पत्र ११३-१४६। **भा** प्रा। **ग्रं.** ३६९।

संद मध्यम। **द.** अतिश्रेष्ठ। आ प्रतिनां चित्रो अतिसुंदरतम अने अतिसुरक्षित छे। आ प्रति कागळ उपर लखेली छे।

क्रमाङ्क ४२६

कल्पसूत्र संदेहविषौषधि वृत्ति पत्र १०२। **भा.** सं.। **क.** जिनप्रभसूरि। **र. सं.** १३६४। **ले. सं.** १४९७। **संद.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** १२×३

अन्त—

सवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्रीजिनभद्रसूरीणामुपदेशेन स. जगपालभार्यया सं. नायकदे-श्राविकया निजपुण्यार्थं श्रीसंदेहविषौषधी नाम श्रीपर्युषणाकल्पपंजिका लेखिता। वाच्यमाना चिर नद्यात्॥छ॥ वा. कमलराजगणिभिः संवत् १५१६ वर्षे कल्पपुस्तक इद वाचितम्॥

॥ श्रीगौतमाय नमः॥

वृक्षवचारुशाखायुग् श्रियो वास. पयोजवत्। श्रीमानूकेशवशोऽय चिर नद्यान्महीतले॥१॥ तत्र च—
श्रेष्ठिरंककशाखायां यक्षदेवस्य नन्दनः। अभूत् झांबटकाभिख्यस्तत्सूनुर्धांधलोत्तमः॥२॥
श्रीराजू-भीमसिंहाख्यावभूतां धांधलांगजौ। राजूकस्य गणदेवो मोक्षदेवस्तथा सुतौ॥३॥
मेघा-जेसल-मोहण-वेहूनामान इति च विख्याताः। गणदेवस्य रसालाश्चत्वारो जज्ञिरे पुत्राः॥४॥

जैसलभार्या **पूरी** तत्पुत्रास्त्रय इमे गुणैः ख्याताः । लक्ष्मीवतो यशसा भुवनत्रयमंडनप्रवराः ॥५॥
आंबाकः प्रथमस्तत्रापरो **जीं**दाभिधस्तथा । तृतीयो **मूल**राजाख्यो जातः पुण्यजनाग्रणीः ॥६॥
आंबराजस्य भार्येयं **बहुरी** तत्सुताविमौ । **शिवराज-महीराजौ राणी स्याणी** च पुत्रिके ॥७॥
वल्लभा **मूलराजस्य माल्हणदे**ऽभिधा बुधा । **सहस्र**राजस्तत्सूनुः श्रीदेवगुरुभक्तिभाक् ॥८॥
मोहणभार्या **पुंजी** चतुरास्तत्सूनवश्च चत्वारः । **कीहट-पासा-देल्हा-धन्नाः** सघाधिपतयोऽमी ॥९॥
कीहटभार्या जाता **कर्पूरी** तत्सुताश्च चत्वारः । प्रथमश्च**ोसभदत्तो धामा-कान्हाख्य-जगमाला**: ॥१०॥
सरसति-कउतिगदेव्यौ द्वे भार्ये साधु**पाम**दत्तस्य । **वील्हा-विमला** बधू **सरस्वती**नंदनौ जातौ ॥११॥
कउतिगदेवीपुत्राः कर्मण-हेमाख्य-ठक्कुराः प्रवराः । **देल्हा**कस्योत्पन्नौ पुत्रौ **जीव**द-**कुंपाख्यौ** ॥१२॥
आल्ही सुवल्लभा जज्ञे **धन्ना**सघपतेस्तयोः । **जगपाल**स्तथा **नाथू-अमराख्यौ** सुता इमे ॥१३॥
धन्यस्य **जगपालस्य** सती **नायकदे** प्रिया । सुते **चंद्रा**वली हस्तू इत्याख्ये च मनोहरे ॥१॥
नायकदेश्राविकया गुरुवर**जिन**भद्रसूरिवचनेन । पुण्यार्थमलेखि तया **संदेह**विषौषधीग्रथः ॥२॥

इतश्च—

आंब्रको भुवि चतुर्दशे शते बाणबाहुमितवत्सरेऽकरोत् १४२५ ।
देवराजपुरि यात्रयोत्सव श्री**जि**नोदयगुरूपदेशनात् ॥१४॥
उच्चानगर्यां यवनाकुलायां यः कारयामास महाप्रतिष्ठाम् ।
मुनिद्विविद्याप्रमिते १४२७ शुभाब्दे विस्तारतः सूरि**जि**नोदयाख्यैः ॥१५॥
तथा मनुष्यलक्ष यः स्फुटघोटकपेटकम् । शकटानां सहस्राणि मीलयित्वा महाजनम् ॥१६॥
मार्गणानां समस्ताशागर आपूरयन् धनम् । सद्दानधारया वर्षन् मार्गे भाद्रपदाम्बुवत् ॥१७॥
चतुर्दशशते वर्षे षट्त्रिंशदधिके वरे १४३६ । श्री**जि**नराजसूरीणां पादाब्जं शिरसा स्पृशन् ॥१८॥
श्री**आंब**राज आदाय सघेशपदमुत्तमम् । **शत्रुञ्जयो**ज्जयन्तादितीर्थे यात्रां विनिर्ममे ॥१९॥
श्रेष्ठि**कीहटधन्ना**द्यैर्मातृ**पुं**जीयुतैस्तथा । श्री**शत्रु**ंजय-**तार**गा-**ऽऽरासण**ेषु नुता जिनाः ॥२०॥
पुनरस्तोकलोकं यो धनेश्वरमनोहरम् । अत्याडम्बरतः सघं विधाय शकटोद्भटम् ॥२१॥
साधर्मिकादिवात्सल्यं कुर्वन् दानं ददन्मुदा । श्रीसघेशपदं लात्वा श्री**जि**नराजसूरियुक् ॥२२॥
चतुर्दशशते वर्षे नदवेदमितेऽकरोत् १४४९ । यात्रां **शत्रु**जये तीर्थे **रै**वते चापि **कीहट** ॥२३॥
तथा श्री**कीहटा**द्यैश्च **पुं**जीमातुः सुबान्धवैः । मालारोपोत्सवोऽकारि श्री**जि**नराजसूरिभिः ॥२४॥
तदा व्रतोत्सवो **भाव**सुंदरस्य यतेरपि । चतुर्दशशते वेदबाणप्रमितवत्सरे १४५४ ॥२५॥
धन्ना-धामाभिधानाभ्यां पञ्चम्युद्यापनं महत् । **साग**रचन्द्रसूरीणामुपदेशात् कृतं वरम् ॥२६॥
इतश्चास्मिन् महादुर्गे चतुर्दशशते मुदा । त्रिसप्ततितमे १४७३ वर्षे सफलीकुर्वता धनम् ॥२७॥
सघाधिपतिना श्रेष्ठि**धन**राजेन साधुना । **ज**गपालसुताद्यात्मपरिवारयुतेन वै ॥२८॥
सर्वसघं समाकार्य मानादेशनिवासिनम् । विशिष्टा सुप्रतिष्ठेयं बिबाना कारितोत्तमा ॥२९॥
एवंविधानि सद्धर्मकार्याणि प्रतिवासरम् । कुर्वाणास्ते चिरं श्राद्धा विजयन्ते महीतले ॥३०॥

इतश्च—

श्रीवीरतीर्थैकरराजतीर्थे स्वामी सुधर्मा गणभृद् बभूव ।
तदन्वये **चंद्र**कुलावतंस **उद्योतनः** श्रीगुरु**वर्द्धमानः** ॥३१॥
जिनेश्वरः श्री**जि**नचन्द्रसूरिः सविग्नभावो**ऽभय**देवसूरिः ।
वैरगिकः श्री**जि**नवल्लभोऽपि युगप्रधानो **जि**नदत्तसूरिः ॥३२॥

भाग्याधिकः श्रीजिनचंद्रसूरिः क्रियाकठोरो जिनपत्तिसूरिः ।
जिनेश्वरः सूरिरुदारचेता जिनप्रबोधोऽपि तमोऽपनेता ॥३३॥
प्रभावकः श्रीजिनचंद्रसूरिः सूरिर्जिनादिः कुशलावसानः ।
पद्मापद श्रीजिनपद्मसूरिर्लब्धेर्निधान जिनलब्धिसूरिः ॥३४॥
सैद्धांतिकः श्रीजिनचंद्रसूरिर्जिनोदयः सूरिरभूदभूरिः ।
ततः पर श्रीजिनराजसूरिर्वाक्चातुरीरजितदेवसूरिः ॥३५॥
स्वबधुजीदाभिधमूलराजसयुक्तसघाधिप आंबराजः ।
अलेखयत् पुस्तकमात्ममातृपूरीसुपुण्याय गिराऽथ तेषाम् ॥३६॥छ॥

शुभ भवतु ॥ श्री चतुर्विधसंघस्य ॥छ॥
यावन् मेरुर्महीप(पी)ठे यावद्दिवि शशी रविः ।
वाच्यमानो बुधैस्तावन्नंद्यात् पुस्तक एषकः ॥३७॥ श्रीरस्तु ॥छ॥

सवत् १४९७ वर्षे अश्वयुजि मासि बलक्षपक्षे १० विजयदशम्यां सोमेऽद्येह श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीवैरिसिंहभूमृति राज्य प्रतिपालयति सति श्रीखरतरगणगगनदिननाथायमानश्रीजिनराजसूरिपट्टसारसहकारवनवसतायमानप्रभुश्रीमत्श्रीजिनभद्रसूरीश्वरविजयराज्ये श्रीकल्पपुस्तकप्रशस्तिः समर्थिता ॥छ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः ॥श्री॥छ॥

॥ अर्हम् ॥

२ कागळ उपर लखेली प्रतिओ

श्रीजेसलमेरुदुर्गस्थ खरतरगच्छीय युगप्रधान श्रीजिनभद्रसूरि ज्ञानभंडारस्थित कागळ उपर लखेल ग्रंथोनुं सूचीपत्र

पोथी १ ली

क्र. १ आचारांगसूत्र पत्र ५–२७ [५ थी २७]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** २५५४। **स्थि.** अतिजीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥.। उदरे खाधेली अने कपाई गएली छे।

क्र. २ आचारांगसूत्रनिर्युक्ति पत्र ४ [२८ थी ३१]। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ४००। **पं.** २३। **लं. प.** १३॥×५॥.। अतिजीर्ण अने कपाई गएली छे।

क्र. ३ आचारांगसूत्रवृत्ति प्रथम खंड पत्र १०३ [३२ थी १३४]। **भा.** स.। **क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** ९६६१। **र. सं.** गुप्तसंवत् ७७२। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २०। **लं. प.** १३॥×५॥.। प्रथम तस्कंधवृत्त्यात्मक प्रथम खड।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे चैत्र सुदि २ भौमदिने श्रीमदणहलपुरपत्तने लिखितम्। शुभ भूयात् लेखकपाठकयो. ॥ छ ॥ श्री ॥

क्र. ४ आचारांगसूत्रवृत्ति द्वितीय खंड पत्र २७ [१३५ थी १६१]। **भा.** स.। **क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं** २३३९। [समग्र टीका **ग्रं.** १२०००]। **र. सं.** गुप्त स. ७७२। [**ले सं.** १४८८]। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥.। प्रति शोधेली छे।

अन्त—

सवत् १५१७ वर्षे माघ शुक्ल ७ दिने श्रीराडद्रहनगरे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरीन्द्राणां पार्श्वे शिष्यधर्मधीरगणि–कल्याणचन्द्राभ्यां अर्थतो वाचितोऽय ग्रन्थ.। प्रतिश्चेय ताभ्यां शोधितेति ॥श्रीः॥

क्र. ५ सूत्रकृतांगसूत्र पत्र २२ [१६२ थी १८३]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २३। **लं. प.** १३॥×५॥.। प्रति शुद्ध करेली छे।

अन्त—

पद्मोपम पत्रपरम्परान्वित वर्णोज्ज्वल सूक्तमरन्दसुन्दरम्।
मुमुक्षुभृङ्गप्रकरस्य वल्लभ जीयाच्चिरं सूत्रकृदङ्गपुस्तकम् ॥छ॥

क्र. ६ सूत्रकृतांगसूत्रनिर्युक्ति पत्र ३ [१८४ थी १८६]। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** २०८। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥

क्र. ७ सूत्रकृतांगसूत्रवृत्ति पत्र १३४ [१८७ थी ३२२]। **भा** सं.। **क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १२८५३। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** १४×५॥

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे पोष वदि ३ शुक्रे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि शिष्य सुमतिसेन श्रा. तेजा ल.।

क्र. ८ स्थानांगसूत्र पत्र ३९ [३२३ थी ३६०]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** ३७५०। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १४×५॥

अन्त—

॥ सम्मत्तं च ठ्ठाणमिति ॥छ॥ ग्रन्थाग्र ३७५० **प्र**तिशुद्ध कृतम् ॥ सवत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष वदि त्रयोदश्यां रवौ श्री**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नभद्रसूरिविजयराज्ये श्री**ठा**णांगसूत्रं भांडागारे लिखित ॥

क्र. ९ स्थानांगसूत्रवृत्ति प्रथम खंड पत्र ६० [३६१ थी ४२०] । **भा** स. । **क.** अभयदेवसूरि । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं** २१ । **लं प** १४×५॥।

क्र. १० स्थानांगसूत्रवृत्ति द्वितीय खंड पत्र ९० [४२१ थी ५१०] । **भा.** स. । **क.** अभयदेवसूरि । **ग्रं.** १४२५० । **र. सं.** ११२० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** २१ । **लं. प.** १४×५॥।

क्र. ११ समवायांगसूत्र पत्र १७ [५११ थी ५२७] । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मस्वामी । **ग्रं.** १६६७। **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** २१ । **लं प.** १४×५॥।

क्र १२ समवायांगसूत्रवृत्ति पत्र ३९ [५२८ थी ५६५] । **भा.** स. । **क.** अभयदेवसूरि । **ग्रं.** ३५७५ । **र सं.** ११२० । **ले. सं.** १४८९ । **स्थि** जीर्णप्राय । **पं.** २१ । **लं. प.** १३॥।×५॥।
अत्य पत्रना बे टूकडा छे ।

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे माघ वदि १३ त्रयोदश्यां भौमे अद्यह श्री**पत्त**नमध्ये श्री**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नभद्रसूरिविजयराज्ये श्रीभांडागारे श्री**स**मवायांगसूत्र-वृत्ती लेखिते । वाच्यमानमिद चिर नन्दतात् ॥छ॥ शुभ भवतु ॥ **स**मवायागवृत्ति **प्र**तिशुद्धीकृता ॥

क्र. १३ भगवतीसूत्र पत्र १५८ [५६६ थी ७२३] । **भा.** प्रा । **क.** सुधर्मस्वामी । **ग्रं.** १६००० । **ले. सं.** १४८९ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** २१ । **लं. प.** १३॥।×५॥।. । आदिनां बे पाना टुकडा थएलां छे ।

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दशम्यां शुक्रे अद्येह श्री**पत्त**ने श्री**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नभद्रसूरिभाण्डागारे श्री**भ**गवतीसूत्र लिखापित ॥ ग्रन्थाग्र १६००० ॥छ॥

राज्ये **जे**सलमेरुदुर्गनगरे श्री**जै**त्रकर्णेशितु: पूज्यश्री**जि**नहससूरिषु गणेश्वय दधानेषु च ।
वर्षेऽष्टाक्षतिथिप्रमे १५५८ **भ**गवतीसिद्धान्त एष प्रगे व्याख्यायां मुनि**मे**रुवाचकवरै: प्रस्तावित: सोत्सवम् ॥१॥

क्र. १४ भगवतीसूत्रवृत्ति पत्र २०७ [७२४ थी ९३०] । **भा.** स. । **क.** अभयदेवसूरि । **ग्रं** १८६१६ । **र. सं.** ११२८ । **ले. सं** १४८८ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** २१ । **लं. प.** १३॥।×४॥।

अन्त—

स्वस्ति सवत् १४८८ वर्षे वैशाख वदि द्वितीयायां गुरौ श्री**ख**रतरगच्छे श्री**जि**नभद्रसूरीणां भाण्डागारे **भ**गवतीवृत्ति लिखिता **प्र**तिशुद्धीकृता ॥छ॥ शुभ भवतु ॥ ग्रन्थाग्र १८६१६ ॥ शुभ भूयात् ॥छ॥

क्र. १५ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र ४७ [९३१ थी ९७७] । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मस्वामी । **ग्रं.** ५४६५ । **स्थि.** सारी । **पं.** २१ । **लं प.** १४×५॥।

पोथी २ जी

क्र. १६ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र ४५ [९७८ थी १०२२] । **भा.** स. । **क.** अभयदेवसूरि । **र. सं.** ११२० । **ले. सं.** १४८९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** २१ । **लं. प.** १४×५॥।. । अन्तनां पानां बे फाटी गयां छे ।

अन्त—

स्वस्ति । सवत् १४८९ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुदिने स्वातिनक्षत्रे प्रीतियोगे भट्टारक-

प्रभुश्री[**जिनभद्र**]सूरिपुस्तकभाण्डागारे **ज्ञा**ताधर्मकथांगटीका मन्त्रि **आसा** लिखित ॥छ॥श्री॥

क्र. १७ उपासकदशांगादि सूत्र पत्र ४३ [१०२३ थी १०६६]।

(१) **उपासकदशांगसूत्र** पत्र १ थी ९ [१०२३ थी १०३२]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** ८१२।

(२) **अंतकृद्दशांगसूत्र** पत्र ९ थी १७ [१०३२ थी १०४०]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** ७९०।

(३) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र** पत्र १७ थी १९ [१०४० थी १०४२]। **भा.** प्रा.।**क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं०** १९२।

(४) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र** पत्र १९ थी ३९ [१०४२ थी १०५४]। **भा.** प्रा।**क.** सुधर्मस्वामी।

(५) **विपाकसूत्रांग** पत्र ३२ थी ४३ [१०५५ थी १०६६]। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** ११७०।

स्थि. जीर्ण। **पं** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र १८ उपासकदशांगादिपंचांगीसूत्रवृत्ति पत्र ७५ [१०६७ थी ११४२]।

(१) **उपासकदशांगसूत्रवृत्ति** पत्र १ थी ११ [१०६७ थी १०७७]। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि।

(२) **अंतकृद्दशांगसूत्रवृत्ति** पत्र ११ थी १५ [१०७७ थी १०८१]। **भा.** स।**क.** अभयदेवसूरि।

(३) **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्रवृत्ति** पत्र १५-१६ [१०८१ थी १०८२]।**भा** स.।**क.** अभयदेवसूरि। त्रणेय वृत्तिना **ग्रं** १३००।

(४) **प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्रवृत्ति** पत्र १६ थी ६६ [१०८२ थी ११३३]। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि।

(५) **विपाकसूत्रवृत्ति** पत्र ६६ थी ७५ [११३३ थी ११४२] **भा.** स.। **क** अभयदेवसूरि। पचांगीवृत्ति ग्रथाग्रम् ६४००। **स्थि.** जीर्ण। प. २० थी २६। **लं प** १४×५॥।

क्र १९ औपपातिकोपांगसूत्र पत्र १२ [११४३ थी ११५४]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ११६७। **स्थि.** सारी। **पं.** २१। **लं. प.** १४×५॥।

क्र. २० औपपातिकोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ३१ [११५५ थी ११८५]। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। ग्र. ३१३५। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** सारी। **पं.** २१। **लं प.** १४×५॥।

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे मार्गशीर्ष शु[दि] तृतीयायां भौमे अद्येह श्री**पत्तन**मध्ये भट्टारकश्री**जिनभद्रसूरि**विजयराज्ये श्री**खरतरगच्छे** भाण्डागारे श्री**औपपातिकसूत्रवृत्ति** प्रतिशुद्धा कृता लिखिता ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥

क्र. २१ राजप्रश्नीयोपांगसूत्र पत्र २२ [११८६ थी १२०७]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २०७९। [**ले. सं.** अनुमान १५ मा सैकानु अन्त्य चरण]। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १५॥।×५॥।

अन्त—

॥ श्री**खरतरगच्छे** श्री**जिनभद्रसूरि**राज्ये लिखित भाण्डागारे **राजप्रश्नीयसूत्र** लिखित ॥छ॥श्री॥ शुभ भवतु ॥ **जिनभद्रसूरि** चिर राज्य कुरु ॥छ॥श्री॥छ॥

क्र. २२ राजप्रश्नीयोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ३७ [१२०८ थी १२४४]। **भा.** सं.। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ३७००। **ले. सं.** १४८९। **स्थि** जीर्णप्राय। **पं.** २१। **लं. प.** १४×५॥।

अन्त—

स्वस्ति श्री संवत् १४८९ वर्षे प्रथम आषाढ शुदि ६ बुधे अद्येह श्रीपत्तनमध्ये सर्वदर्शनप्रधानोत्तमजिनानां सर्वेषां मध्ये श्रीश्रीशृगार-हारखरतरगच्छेशश्रीजिनभद्रसूरीश्वरविजयराज्ये भाण्डागारे राजप्रश्नीयोपांगवृत्तिः प्रतिशुद्धा कृता ॥

क्र. २३ जीवाभिगमोपांगसूत्र पत्र ४८ [१२४५ थी १२९२]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४७००। **स्थि.** सारी। **पं.** २५। **लं. प.** १४×५॥।

क्र. २४ जीवाभिगमोपांगसूत्रवृत्ति पत्र १३० [१२९३ थी १४२२]। **भा.** स। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** सारी। **पं.** २२। **लं. प.** १४×५॥।

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे चैत्र शुदि प्रतिपत्तिथौ रविवासरे अद्येह श्रीपत्तनमध्ये श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये श्रीभाण्डागारे श्रीजीवाभिगमटीका लिखिता प्रतिशुद्धा कृता। वाच्यमाना चिर नन्दतात् ॥छ॥

क्र. २५ प्रज्ञापनोपांगसूत्र पत्र ८३ [१४२३ थी १५०५]। **भा.** प्रा.। **क.** श्यामाचार्य। **ग्रं.** ७७८७। **ले. सं** १४८९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १४×५॥।

अन्त—

प्रत्यक्षरगणनया अनुष्टुपच्छन्दसा मानमिदं ग्रन्थसख्या ७७८७॥छ॥ सवत् १४८९ वर्षे वैशाख शुदि ११ गुरौ लिखित ॥छ॥ श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये भाण्डागारे पण्णवणासूत्र सुमतिसेनगणिना लिखापित ॥छ॥ पण्णवणासूत्र प्रतिशुद्ध कृतं ॥

क्र. २६ प्रज्ञापनोपांगसूत्रवृत्ति पत्र १४४ [१५०६ थी १६५०]। **भा** स.। **क** आचार्य मलयगिरि। **ले सं.** १४८९। **स्थि.** मध्यम। **पं** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

स्वस्ति सवत् १४८९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १३ त्रयोदश्यां रवौ अद्येह श्रीपत्तने श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां भांडागारे प्रज्ञापनावृत्तिर्लिखिता ॥छ॥

यावल्लवणसमुद्रो यावन्नक्षत्रमण्डितो मेरु। यावच्चन्द्रादित्यौ तावदिद पुस्तक जयतु ॥

॥ शुभ भवतु श्रीसघस्य ॥छ॥

क्र. २७ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र ४६ [१६५१ थी १६९६]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४४५४ **ले. सं.** अनु. १५ शताब्दी अन्त्य चरण। **स्थि.** सारी। **पं.** २०। **लं. प.** १४×५॥।

अन्त—

श्रीजेसलमेरुपुरे स्कन्दाननजलधिरसशशि १६४६ मिताब्दे। श्रीभीमभूपराज्ये विजयिषु जिनचन्द्रसूरिषु च ॥१॥

श्रीपुण्यसागरमहोपाध्यायविनेयपद्मराजेन। सशोधितमिह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमिदम् ॥२॥

पुस्तकमिदमतिकूट विशोधितं स्युस्तथापि कूटानि। तान्यपनेयानि जवाद् वाचयता विबुधवृन्देन ॥३॥

क्र. २८ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रचूर्णी पत्र १६ [१६९७-१७१२]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १८६०। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २३। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—जंबुद्दीवकरणाण चूर्णि सम्मत्ता ॥छ॥ ग्रन्थाग्र १८६० ॥श्री॥ सवत् १४८९ वर्षे भाद्रपद वदि ११ शनौ श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणां जय. ॥

क्र. २९ चंद्रप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र १७ [१७१३-१७२९]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २०००। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २५। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ३० चंद्रप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रवृत्ति पत्र ९६ [१७३०-१८२५]। **भा.** सं.। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ९५००। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—सवत् १४८९ वर्षे अश्विनमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां वारशुक्रे श्रीमत् अणलहपुरे लिखितं ॥

क्र. ३१ (१) निर्यावलिकाउपांगसूत्र पत्र १२ [१८२६-१८३७]। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ११०९।

(२) **निरयावलिकाउपांगसूत्रवृत्ति** पत्र १२-१९ [१८३७-१८४४]। **भा.** स.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **ग्रं.** ६३७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २३। **लं. प.** १३॥।×५॥।

पोथी ३ जी

क्र. ३२ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति-लघुभाष्य-वृत्तिसह प्रथमखंड पत्र १७१ [१८४५-२०१५]। **भा.** प्रा. स.। **मू.** तथा **नि. क.** भद्रबाहुस्वामि। **लघुभा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि तथा क्षेमकीर्ति। **र. सं.** १३३२। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—इति श्रीकल्प प्रथमखड पुस्तक ॥ छ ॥ छ ॥ इद पूर्वखड प्रतिशुद्ध कृत ॥ छ ॥ सवत् १४८८ वर्षे वैशाख शुदि २ गुरौ।

क्र. ३३ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति-लघुभाष्य-वृत्तिसह द्वितीयखंड पत्र १२८ [२०१६-२१४६]। **भा.** प्रा. स.। **मू.** तथा **नि. क.** भद्रबाहुस्वामि। **लघुभा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** आचार्य क्षेमकीर्ति। **र. सं** १३३२। **ग्रं.** १४१६०। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २३। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ३४ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति-लघुभाष्य-वृत्तिसह तृतीयखंड पत्र १२२ [२१४७-२२६८]। **भा.** प्रा. स.। **मू** तथा **नि. क.** भद्रबाहुस्वामि। **लघुभा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** आचार्य क्षेमकीर्ति। **ग्रं.** ९५५१। **ले सं.** १४८८। **स्थि** जीर्ण। **पं.** २५। **लं प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

स्वस्ति सवत् १४८८ वर्षे प्रथम आषाढ वदि ३ सोमेऽद्येह श्रीपत्तने खरतरगच्छे भट्टारकप्रभुश्रीजिनभद्रसूरीणा विजयराज्ये भांडागारे श्रीबृहत्कल्पटीकायां तृतीयखड समाप्त। प्रतिशुद्ध कृत ॥छ॥

क्र. ३५ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र ३३। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **ग्रं.** ३१००। **ले. सं.** १४८७। **स्थि.** जीर्ण। **पं** २१। **लं. प** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८७ वर्षे चैत्र सुदि १४ भौमदिने पुस्तिका लषिता ॥ आवश्यकसूत्र प्रतिशुद्धं कृतं ॥ शुभं भवतु॥

क्र. ३६ आवश्यकसूत्रलघुवृत्ति पत्र १५३ [३४-१७४]। **भा.** स.। **क.** तिलकाचार्य। **ग्रं.** १२३२५। **र. सं.** १२९६। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प** १३॥।×५॥।

आदि अंतनां पत्र अतिजीर्ण अने फाटेलां छे.

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे मार्गशीर्ष..... तिथौ गुरुवासरे श्रीपत्तनमध्ये श्रीखरतरगच्छे भट्टारक श्रीजिनभद्रसूरीणामादेशेन शिष्यपठनार्थं श्रीश्रीतिलकाचार्यविरचिता श्रीआवश्यकसिद्धान्तलघुवृत्ति.........लेखकेन लिखिता ॥ अय प्रथः प्रतिशुद्धः कृत. ॥छ॥

क्र. ३७ आवश्यकसूत्रबृहद्वृत्ति-शिष्यहिता प्रथमखंड पत्र १३४ [१७५-३०८]। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** १२३८४। **ले. सं.** १४८७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥।५॥।

अन्त—

अथ ग्रंथः प्रतिशुद्धः कृतः ॥ स्वस्ति सवत् १४८७ वर्षे श्रावण शुदि ९ बुधे श्रीमदणहिल्लपुरे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये श्रीआवश्यकप्रथमखंडं लिखितं ॥

क्र. ३८ आवश्यकसूत्रबृहद्वृत्ति-शिष्यहिता द्वितीयखंड पत्र ९२ [३०९-४०१]। **भा.** प्रा. स.। **वृ. क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** १०६१६। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २०-२५। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ३९ आवश्यकसूत्रटिप्पनक पत्र ४१ [४०२-४४२]। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **ग्रं.** ४७२०। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २६। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे भाद्रवा वदि १० शुक्रे अद्येह श्रीपत्तने खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां धर्मराज्ये पातसाहश्रीअहमदविजयराज्ये श्रीआवश्यकटिप्पनक लिखित ।।छा।

क्र. ४० ओघनिर्युक्ति पत्र १४ [४४३-४५६]। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **गा.** ११४६। **ग्रं.** १०३२। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २२। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

स्वस्ति संवत् १४ आषाढादि ८९ वर्षे द्वि. आषाढ शुदि २ रवौ अद्येह श्रीमदणहिल्लपुरे खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये भाडागारे ओघनिर्युक्तिसूत्र लिखित। प्रतिशुद्ध। चिर नदतु ।।छा।

क्र. ४१ ओघनिर्युक्तिभाष्य पत्र ३० [४५७-४८६]। **भा.** प्रा। **गा.** २५१७। **स्थि** जीर्णप्राय। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ४२ ओघनिर्युक्तिवृत्ति पत्र ७३ [४८७-५५९]। **भा** प्रा. स.। **क.** द्रोणाचार्य। **ग्रं** ७०००। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

संवत् १४८८ वर्षे भाद्रपद शुदि १२ रवौ लिखिता ॥ श्रीओघनिर्युक्तिवृत्ति प्रतिशुद्धा कृता ॥

क्र. ४३ दशवैकालिकसूत्र पत्र ७ [५६०-५६६]। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यभवसूरि। **ग्रं.** ७००। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २५। **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ४४ दशवैकालिकनिर्युक्ति पत्र ५ [५६७-५७१]। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **गा.** ४४०। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २५। **लं. प.** १३॥।×५॥।

पोथी ४ थी

क्र. ४५ दशवैकालिकसूत्रबृहद्वृत्ति पत्र ७२ [५७२-६४३]। **भा.** स। **क.** आचार्य हरिभद्रसूरि। **ले. सं.** १४८७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २०-२३। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

स्वस्ति सवत् १४८७ वर्षे श्रावण वदि ८ अष्टम्यां बुधे श्रीमदणहिल्लपुरे खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये भांडागारे श्रीदशवैकालिकटीका हारिभद्री लिखिता ॥ चिर नदनात् ॥ श्रीः ॥ अथ ग्रंथः प्रतिशुद्धः कृतः ॥ छ ॥

क्र. ४६ दशवैकालिकसूत्रचूर्णी पत्र ७५ [६४४-७१७]। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १४८८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २५। **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे माघ वदि १० अनतरएकादश्यां सोमेऽद्येह श्रीमदणहिल्लपुरे खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये भाण्डागारे दशवैकालिकचूर्णि प्रतिशुद्धा कृता चिर नदतात् ।।छा।

क्र. ४७ पिंडनिर्युक्ति वृत्तिसह पत्र ७४ [७१८-७९०]। **भा.** प्रा. स.। **नि. क.** भद्रबाहुस्वामि। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ७०००। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे श्रीविधिपक्षमुख्याभिधान ज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयसावधान श्रीखरतरगच्छेश्वरकुमततमोराशिनिरासनदिनेश्वर श्रीजिनभद्रसूरीश्वरसद्गुरूपदेश सुमतिसेनगणिना लघापिता श्रीपिंडनिर्युक्तिसूत्रवृत्ति॥ पिंडनिर्युक्तिसूत्रवृत्ति प्रतिशुद्धा कृता॥

क्र. ४८ नंदिसूत्र पत्र ८ [७९१-७९८। **भा.** प्रा.। **क.** देववाचक। **ग्रं.** ७००। **स्थि.** अतिजीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥

क्र. ४९ नंदिसूत्रवृत्ति पत्र ८५ [७९९-८८३]। **भा.** सं। **क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ७७३२। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥.। प्रति **शुद्ध** छे।

क्र. ५० अनुयोगद्वारसूत्र पत्र १८ [८८४-९०१]। **भा.** प्रा। **क** आर्यरक्षितसूरि। **ग्रं.** २०००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २३। **लं. प** १३॥×५॥

क्र ५१ अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति पत्र ५४ [९०२-९५५]। **भा** स। **क.** मलधारी हेमचद्रसूरि। **ग्रं.** ५७००। **ले. सं.** १४८९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २२। **लं. प** १३॥×५॥

अन्त—

सवत् १४८९ वर्षे शाके १३५४ श्रीखरतरगच्छे मुलासी लिखित श्रीअणल्हपुरनगरे ॥छ॥

क्र. ५२ अनुयोगद्वारसूत्रलघुवृत्ति पत्र ३१ [९५६-९८६]। **भा.** स। **क.** आचार्य हरिभद्रसूरि। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं** २१। **लं. प** १३॥×५॥

क्र ५३ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र २४ [९८७-१०१०]। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २०। **लं. प.** १३॥×५॥

क्र. ५४ उत्तराध्ययनसूत्रनिर्युक्ति पत्र ७ [१०११-१०१७]। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **ग्रं.** ७००। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २५। **लं. प.** १३॥×५॥

क्र. ५५ उत्तराध्ययनसूत्रबृहद्वृत्ति-पाइयटीका पत्र १८४ [१०१८-१२०१]। **भा.** स.। **क** वादिवेताल शांतिसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं प.** १३॥×५॥

अन्त—

श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे। श्रीपूज्यश्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये लिखिता शोधिता च॥ श्रीजिनचद्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः॥

क्र. ५६ उत्तराध्ययनसूत्रचूर्णी पत्र ५८ [१२०२-१२५९]। **भा** प्रा। **क.** गोपालिकमहत्तरशिष्य। **ग्रं.** ५८५०। **ले. सं** १४८८। **स्थि** मध्यम। **पं.** २३। **लं प.** १३॥×५॥

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे वैशाख सुदि भूमेऽद्येह श्रीपत्तनमध्ये खरतरगच्छे भट्टारकश्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये भांडागारे श्रीउत्तराध्ययनचूर्णिर्लिखिता॥ चिर नदतात्॥ प्रतिशुद्धा कृता चूर्णिः॥

क्र. ५७ विशेषावश्यकमहाभाष्य पत्र ४५ [१२६०-१३०४]। **भा** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ग्रं.** ३६५०। **स्थि** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प** १३॥×५॥

क्र. ५८ सन्मतितर्कप्रकरण तत्त्वबोधविधायिनीवृत्ति सह प्रथम खंड पत्र १२६ [१६३३-१७५७]। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** सिद्धसेन दिवाकर। **वृ. क** आचार्य अभयदेव तर्कपंचानन। **ग्रं.** १२८३८। **ले. सं.** १४८७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १३॥×५॥

अन्त—

संवत् १४८७ वर्षे चैत्र सुदि द्वादश्यां तिथौ वाररवौ श्रीखरतरगच्छेन तेजा लिखितं ॥छ॥

क्र. ५९ सन्मतितर्कप्रकरण तत्त्वबोधविधायिनीवृत्तिसह द्वितीय खंड पत्र ९६ [१७५८–१८५३] । **भा.** प्रा. सं. । **मू. क.** सिद्धसेन दिवाकर । **वृ. क.** आचार्य अभयदेव तर्कपंचानन । **ग्रं.** १२१६२। **स्थि.** मध्यम । **पं.** २३ । **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—श्रीजिनभद्रसूरीणां ॥

क्रं. ६० ज्योतिष्करंडकप्रकीर्णक वृत्तिसह पत्र ५३ [१८५४–१९०८] । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि । **ले. सं.** १४८८ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** २२ । **लं प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे माघ वदि तृतीयायां रवौ अद्येह श्रीपत्तने श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिविजयराज्ये भांडागारे ज्योतिःकरंडकटीका मंत्रिदुवे आकाकेन लिखिता ॥छ॥

पोथी ५ मी

क्र. ६१ आचारांगसूत्रचूर्णी पत्र ८३ [१९०९–१९९१] । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १४८८ । **स्थि** मध्यम । **पं.** २१ । **लं प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ भूमे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये भाडागारे प. सुमतिसेनगणिना आचारांगचूर्णिर्लिखापिता ॥छ॥

क्र. ६२ सूत्रकृतांगसूत्रचूर्णी पत्र ९८ [१९९२–२०८९] । **भा.** प्रा । **ले. सं.** १४८८ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** २५ । **लं. प.** १३॥।×५॥।

अन्त—

सवत् १४८८ वर्षे प्र आषाढ वदि १३ बुधेऽद्येह श्रीपत्तने खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणां विजयराज्ये भांडागारे श्रीसूयगडांगचूर्णिर्लिखिता । प्रतिशुद्धा कृता ॥

क्र. ६३ कल्पविशेषचूर्णी पत्र १०४ [२०९०–२१९८] । **भा** प्रा । **ग्रं.** ११००० । **स्थि** जीर्ण । **पं.** २१ । **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र ६४ सूर्यप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र २५ [२१९९–२२३३] । **भा.** प्रा । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** २३ । **लं. प.** १३॥।×५॥।

क्र. ६५ सूर्यप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रवृत्ति पत्र ९३ [२२३४–२३३३] । **भा.** सं. । **क.** आचार्य मलयगिरि । **ग्रं.** ९५०० । **ले. सं.** १४८९ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** २० । **लं. प.** १३॥।×५॥।. ।

अन्तनां बे पत्र अति जीर्ण छे ।

अन्त—

संवत् १४८९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ चतुर्थ्यां शनौ अद्येह श्रीपत्तनमध्ये श्रीजिनभद्रसूरिविजयिराज्ये श्री-खरतरगच्छे श्रीभांडागारे सूर्यप्रज्ञप्तिटीका लिखिता प्रतिशुद्धा कृता ॥ चिर नंदतात् ॥

क्र. ६६ दर्शनसप्ततिकाप्रकरणवृत्ति पत्र ५७ [२९३–३४९] । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** सघतिलक-सूरि । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १९ । **लं. प.** १३॥×५॥

क्र. ६७ न्यायभाष्य टिप्पणीसह पत्र ५७ । **भा.** स. । **क.** वात्स्यायनमुनि । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १३×५

क्र. ६८ न्यायवार्त्तिक टिप्पणीसह पत्र १४२ [५८–२००] । **भा** स. । **क.** भारद्वाजमुनि । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १३×५

पोथी ६ ठी

क्र. ६९ न्यायवार्त्तिकतात्पर्यवृत्ति टिप्पणीसह पत्र २०१ [२०१–४०१] । **भा.** स. । **क.** वाचस्पति मिश्र । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १३×५. । अंतिम पत्रनो टूकडो छे ।

क्र ७० न्यायतात्पर्यपरिशुद्धि टिप्पणीसह पत्र १६५ [४०२–५६६] । **भा.** स. । **क.** उदयनाचार्य । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १३×५.। पत्र ५४०, ५४९ मु नथी ।

क्र ७१ न्यायटिप्पनक श्रीकंठीय पत्र ४९ [५६७–६१५] । **भा.** सं. । **क.** श्रीकंठ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प** १३×५

पोथी ७ मी

क्र. ७२ पंचप्रस्थान न्यायमहातर्कविषमपदव्याख्या न्यायालंकार पत्र २०६ [६१६–८२१] । **भा.** स । **क.** अभयतिलकगणि । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प** १३×५

क्र ७३ न्यायवार्त्तिकभाष्यवृत्तिविवरण पत्र २६ [८२२–८४७] । **भा** स. । **क.** अनिरुद्ध पंडित । **स्थि.** जीर्ण । **पं** १५ । **लं प.** १३×५. । **न्यायवार्त्तिक-भाष्य-टीका**त्रयसंमिलित विवरण ।

क्र. ७४ नवतत्त्वप्रकरण भाष्यवृत्तियुक्त पत्र [?] । **भा.** प्रा. स । **मू. क.** देवगुप्तसूरि । **भा क** अभयदेवसूरि । **वृ. क** यशोदेवसूरि । **र सं.** ११७४ । **ले. सं.** १४९९ । **ग्रं.** २४०० । **स्थि.** अतिजीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १३×५. । प्रति अस्तव्यस्त अने खवाएली छे ।

अन्त—

संवत् १४९९ वर्षे चैत्र सित पूर्णिमास्यां भृगुदिने **जेसलमेरौ खरतरगच्छाधीशश्रीजिनभद्रसूरिवरैः** पुस्तकमिदं लेखितम् । लिखितं च **विप्रपञ्चाननेन** ॥छ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः ॥छ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥छ॥श्री.॥

क्र. ७५ धर्मसंग्रहणीप्रकरण वृत्तिसह पत्र [?] । **भा** प्रा. सं । **मू क** आचार्य हरिभद्र । **वृ.क.** आचार्य मलयगिरि । **स्थि.** अतिजीर्ण । **पं.** १७ । **लं प** १३×५. । प्रति अस्तव्यस्त अने खवाएली छे ।

क्र. ७६ सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति षष्ठाध्यायपर्यंत पत्र ५१–१२२ । **भा.** सं. । **क.** हेमचन्द्राचार्य । **स्थि** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** १३×५. । पत्र ५१ थी ६७ उदरे करडेला छे ।

क्र. ७९ सिद्धहेमशब्दानुशासन सूत्रपाठ, धातुपाठ तथा लिंगानुशासन पत्र २२ । **भा.** स. । **क.** हेमचंद्रसूरि । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** १३×५।

क्र. ८० भगवतीसूत्र आलापक पत्र ५५ । **भा** प्रा. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १६ । **लं. प.** १३×५॥

क्र. ८१ आचारांगसूत्रवृत्ति पत्र ३३२ । **भा.** स. । **क** शीलांकाचार्य । **ग्रं.** १२००० । **र. सं.** ७९८ गुप्त संवत् । **ले. सं.** ११८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १२।×५।

अन्त—

आचार्याद् विदितात् समस्तभुवने श्रीमत्कृपाचन्द्रतः सस्था लोकदिगकचद्रगणिते सवत्सरे संस्थितिम् ।
लेमे जेसलमेरपत्तनवरे जीर्णागमोद्धारिणी भव्यानां सुविचारकारणमिद लोके तयोल्लिखितम् ॥१॥
सवत् १९८३ रा मीती आसो सुदी ९ नवु वार सुकरवार चदरमा मकरको ॥

पोथी ९ मी

क्र. ८२ (१) उपासकदशांगसूत्र पत्र १–१६ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मास्वामी । **ग्रं.** ८१२ ।
(२) अंतकृद्दशांगसूत्र पत्र १६–३१ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मास्वामी । **ग्रं.** ७९० ।
(३) अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र पत्र ३१–३५ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मास्वामी । **ग्रं.** १९२ ।
(४) प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र ३५–५८ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मास्वामी । **ग्रं.** १२५० ।
(५) विपाकसूत्र पत्र ५८–८१ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मास्वामी । **ग्रं.** १२१६ ।
ले. सं. १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ८३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रचूर्णी पत्र ४० । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १८६० । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ८४ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रचूर्णी पत्र ३९ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १८६० । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १२।×५।

अन्त—

लेखक माहात्मा दुलीचद नीवासी बीकानेर सवत १९८३ मीती फागण सुद ५ श्रीरस्तु ।
श्रीमान् सूरिवरो महामुनिकृपाचन्द्रः कलौ धर्मराट् प्राप्तो जेसलमेरनाम्नि नगरे क्ष्मां पावयन् स्थापिता ।
ससत्तेन वरा परोपकृतये जीर्णागमोद्धारिणी वर्षे वह्निवसुग्रहेन्दुगणिते ग्रन्थस्तया लेखित ॥१॥

क्र. ८५ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रवृत्ति पत्र २३५ । **भा.** स. । **क.** पुण्यसागर महोपाध्याय । **ग्रं.** १३२७५ । **र. सं.** १६४५ । **ले सं.** १९८५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं प** १२।×५।

अन्त—

इति श्रीबृहत्खरतरगच्छावतस श्रीजिनहससूरिशिष्यश्रीपुण्यसागरमहोपाध्यायविरचिता श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-वृत्तिः समाप्ता ॥

श्रीमच्चन्द्रकुले सुधर्मगणभृत्पट्टानुपूर्वीभवाः, श्रीउद्योतनसूरयः समभवन् ज्ञानक्रियाशालिनः ।
ध्यानाराधितनागराट्प्रकटितश्रीसूरिमन्त्रस्फुरन्माहात्म्या गुरवस्ततो रुरुचिरे श्रीवर्द्धमानाभिधा ॥१॥
श्रीमद् दुर्लभभूमिवल्लभसभाध्यक्ष पुरे पत्तने, वर्षे पुष्करदिग्गजाभवसुधासख्ये सुसख्यावता ।
जित्वा चैत्यनिवासिनः खरतरेत्याख्या समासादयामासे येन जिनेश्वरः स भवतात् सूरीश्वर श्रेयसे ॥२॥
संवेगरगशाला विनिर्ममे यैः कथानकरसाला । तेऽभूवन् जिनचन्द्राः सूरिवराः प्रणतकविचन्द्राः ॥३॥
गुरुगमनयभगीसगरगन्नवाङ्गीनवविवृतिविधानव्यक्तिविस्फारकीर्तिः ।
सुगुरुरभयदेवः स्तंभनाधीशपार्श्वप्रकटनपटुरासीच्चक्रवर्ती बुधानाम् ॥४॥
चामुण्डिकाप्रकटबोधनबद्धकक्षा सूत्रोक्तमार्गभणनाचरणैकदक्षाः ।
चित्ते वसतु जिनवल्लभनामधेयाः सूरीश्वरा भुवनभासुरभागधेयाः ॥५॥
येषां रैवतकाचले कृततपःश्रीनागदेवाभिधश्राद्धाराधितयांबया किल युगप्राधान्यमाविःकृतम् ।
श्रीजैनेन्द्रमतप्रकाशनपटुप्रागल्भलक्ष्मीजुषस्ते श्रीमज्जिनदत्तसूरिगुरवो यच्छतु मे वांछितम् ॥६॥
तत्पदकमलमरालं ददत फलमतुलमीप्सितविशालम् । नरमणिमण्डितभाल स्तवीमि जिनचन्द्रसुरसालम् ॥७॥

भूमृत्सभामध्यममध्यगच्छद् वादेषु षट्त्रिंशति य जयश्रीः ।
अभूत् स विद्वज्जनवृन्दचक्री ततस्ततः श्रीजिनपत्तिसूरिः ॥८॥
श्रीमज्जिनेश्वरगुरु जितवादियोध सूरीश्वर तदनु नौमि जिनप्रबोधम् ।
श्रीजैनचन्द्रसुगुरु नुतनिर्विरोध सद्देशनाकृतचतुर्नृपतिप्रबोधम् ॥९॥
यत्सस्मृतिप्रवणमानसमानवानामाविर्भवन्ति भुवि सर्वसुखप्रतानाः ।
प्रत्यूहसहतिभुजगमवैनतेय सूरिं जिनादयकुशल तमहं भजेयम् ॥१०॥
जिनपद्मसूरिराज जिनलब्धिगुरु नतोत्तमसमाजम् । जिनचन्द्र निर्व्याज जिनोदय नौमि जिनराजम् ॥११॥
पट्टे तदीये जिनभद्रसूरि· सौभाग्यभाग्यैकनिधिर्दिदीपे । सूत्रार्थजांबूनदसत्परीक्षाकषोपलप्रख्यविशुद्धबुद्धिः ॥१२॥
निरुपमप्रतिभाप्रतिभासनः स जिनचन्द्रविभु· शुभशासनः ।
तदनु तस्य प्रशस्यगुणोदधिर्जिनसमुद्रगुरु सुपददधि· ॥१३॥
तदीयपट्टांबुजराजहसाः सुरप्रसादाप्तजनप्रशसाः । विचक्षणश्रेणिशिरोवतसा· कृतोल्लसन्मुक्तिरमारिरसाः ॥१४॥
येश्चक्रे प्रथमाङ्गस्य दीपिकाऽर्थप्रदीपिका । ते जिनहससूरीन्द्राः जीयासुर्गुरवो मम ॥१५॥ युग्मम् ॥
तत्पट्टलक्ष्मीतिलकानुकारा बभूवुरुद्दामगुणैरुदाराः । सूरीश्वरा लब्धनरेन्द्रमाना· श्रीजैनमाणिक्यवराभिधानाः ॥१६॥
तत्पट्टोदयशैलराजशिखरप्रद्योननोद्योतिनो, राजते जिनचन्द्रसूरिगुरवस्ते सांप्रत भूतले ।
यत्प्रौढप्रकटप्रतापमहिमामुद्वीक्ष्य विस्तारिणीं, प्रोन्मादिप्रतिवादिकौशिककुल त्रस्त समस्त क्षणात् ॥१७॥
सप्राप्य तदादेश श्रीमज्जिनहसंसूरिशिष्यवरैः । श्रीपुण्यसागरसद्वोपाध्यायैरल्पमतिगम्या ॥१८॥
एषा जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृत्तिरादराद विदधे । श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वर-निजगुरुविशदप्रसादवशात् ॥१९॥
श्रीअभयदेवसूरिश्रीमन्मलयगिरिकृतविविधवृत्तीः । सम्यग् विचार्य बुद्ध्या विलोक्य चान्यानि शास्त्राणि ॥२०॥
त्रिभि कुलकम् ॥
वाचकाः पद्मराजाख्या अत्र साहायक व्यधु· । तथा विशुद्धिमेतस्या युक्तायुक्तविवेचका· ॥२१॥
आलस्यमपास्य निज प्रथमादर्शे लिलेख सोल्लासम् । वृत्तिमिमां सन्महिमां विशुद्धधीर्ज्ञानतिलकगणि· ॥२२॥
मोहाद्यदत्राभिहित विरुद्ध सम्प्रदायस्य वियोगतो वा । दयालुचित्तैर्हृदयालुभिस्तन्मात्सर्यमुत्सार्य विशोधनीयम् ॥२३॥
श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे श्रीभीमभूमीपतौ, राज्य शासति बाणवारिधिरसक्षोणीमिते वत्सरे ।
पुष्यार्के मधुमासि शुक्लदशमीसद्वासरे भासुरे, टीकेय विहिता सदैव जयतादाचन्द्रसूय भुवि ॥२४॥
त्रयोदश सहस्राणि द्वे शते पचसप्ततिः । प्रायेणास्या ग्रंथमान प्रत्यक्षरनिरूपणात् ॥२५॥

ग्रथाग्र १३२७५ शुभ भवतु । सवत् १६५२ वर्षे राउल श्रीभीमजीविजयराज्ये युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूरिसूरीश्वरविजयराज्ये आचार्यश्रीजिनसिंहसूरियौवराज्ये श्रीपुण्यसागरमहोपाध्यायानामुपदेशेन श्रीऊकेशवशे श्रीशंखलवालगोत्रे सा. कोचरसताने सा. राजा तत्पुत्र सा. सारग तत्पुत्र सा. रतनसी सा जइतसी तत्पुत्र सा थिरराजसुश्रावकेण स्वपितुर्द्रव्यश्रेयोथ ज्ञानभक्त्यर्थं च श्रीजेसलमेरुसत्कज्ञानकोशे श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिप्रतिरेषा ॥ सा वाच्यमाना चिर नदतु ।

इद पुस्तक लिखित सवत् १९८५ वईशाखमासे कृष्णपक्षे १५ अमावास्या शुक्रवारे समाप्तम् ॥ लिखित माहात्मा टीकमचंद नीवासी बीकानेर हाल जेसलमेर समाप्तम् । शुभ भवतु । श्री । श्री ॥ जयशीलमेरुवास्तव्येन वैद्यमनःसुखदासात्मजेन व्यासज्येष्ठमल्लकाव्यतीर्थेन सशोधिता ।

क्र. ८६ चंद्रप्रज्ञप्तिउपांगसूत्रवृत्ति पत्र १६५ । **भा.** स. । **क.** आचार्य मलयगिरि । **ग्रं.** ९५००। **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ८७ (१) गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिका सटीक पत्र १-१६ । **भा.** प्रा. स. । **क.** रत्नशेखरसूरि स्वोपज्ञ ।

(२) **बलिनरेन्द्रकथा-भुवनभानुकेवलिचरित्र(भवभावनावृत्त्यंतर्गत)** पत्र १६-४० । **भा.** स। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम । **पं.** १९ । **लं. प** १२।×५।

क्र. ८८ **समरादित्यचरित्रसंक्षेप त्रूटक अपूर्ण पद्य** पत्र ४२-८१ । **भा.** स. । **क.** प्रद्युम्न-सूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ८९ शांतिनाथचरित्र पद्य पत्र ८० । **भा.** स. । **क.** मुनिदेवसूरि । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १७ । १२।×५।.। पत्र ३-२७ नथी।

क्र. ९० उपदेशमाला दोघट्टी वृत्ति पत्र ९२-२५४ । **भा.** प्रा. स. अप. । **क.** रत्नप्रभसूरि । **ग्रं.** ११८२९ । **र. सं.** १२३८ । **ले. सं.** १४८१। **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** २८ । **लं. प.** १२।×५।

अन्त—

आसीन्मन्त्रिदलीयवशतिलकः सङ्ख्यातिरिक्तैर्गुणैस्तैस्तैः सद्भिरुपस्तुत. प्रतिदिन स्वाचारमुद्रापरः ।
श्रीतीर्थङ्करधर्मकर्मनिपुण· सर्वार्थिसार्थप्रद. पुण्योपार्जितसत्पथः क्षतमलः श्री**गाङ्ग**देवः क्षितौ ॥१॥
श्री**गाङ्ग**देवतनयः सनयः सदयः सदाश्रितः सततम् । श्री**दे**वचन्द्र इति यः ख्यातः कलिकालकल्पतरुः ॥२॥
जैनागमापारपयोधिसारसभारसस्कारविशिष्टबुद्धिः ।
जीयाज्जिनेन्द्रार्चनलग्नचित्तः श्री**दे**वचन्द्रः सुगुणाप्तचित्तः ॥३॥
चन्द्रवसुभुवनपरिमितविक्रमसवत्सरे नभोमासि। श्री**दे**वचन्द्रसुधियः पाठार्थमिद व्यलीलिखत्**कूर्म**ः ॥४॥छ॥
शुभमस्तु ॥छ॥ सवत् १४८१ श्रावणे मासि ॥छ॥ ॥छ॥

पोथी १० मी

क्र. ९१ **आवश्यकसूत्रचूर्णी** पत्र ३३८ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ११५४५ । **ले. सं** १९८५ । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९२ **आवश्यकसूत्रबृहद्वृत्ति द्वितीयखंड** पत्र २२३ । **भा.** स. । **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले सं.** १९८६ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९३ **आवश्यकसूत्रबृहद्वृत्ति द्वितीयखंड** पत्र २२१ । **भा.** स. । **क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं** १९८५। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं प** १२।×५।

पोथी ११ मी

क्र. ९४ **आवश्यकसूत्रलघुवृत्ति प्रथमखंड** पत्र १५० । **भा.** स. । **क.** तिलकाचार्य। **ले. सं.** १९८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं प.** १२।×५।

क्र. ९५ **दशवैकालिकसूत्रचूर्णी** पत्र १५३। **भा.** प्रा.। **ले सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९६ दशाश्रुतस्कंधसूत्रनिर्युक्ति पत्र १-४। **भा.** प्रा. । **क** भद्रबाहुस्वामी।

(१) **दशाश्रुतस्कंधसूत्रचूर्णी** पत्र ४-४१ । **भा.** प्रा. ।

(२) **दशाश्रुतस्कंधसूत्र** पत्र ४१ ७४। **भा** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी।

ले. सं. १९८२ । **पं.** १६। **स्थि** श्रेष्ठ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९७ कल्पचूर्णी पत्र २८५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १४७८४। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९८ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्तिभाष्यवृत्तिसह पीठिकार्धं पत्र ७७। **भा.** प्रा. सं.। **मू.** तथा **नि. क.** भद्रबाहुस्वामी। **भा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** मलयगिरि। **ग्रं.** ४६००। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ९९ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्तिभाष्यवृत्तिसह प्रथमखंड (पीठिकार्धथी आगळ) पत्र ११९। **भा.** प्रा. स.। **मू. नि. क.** भद्रबाहुस्वामी। **भा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** क्षेमकीर्ति। **ग्रं.** १५४००। **र. सं.** १३३२। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १२ मी

क्र. १०० बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्तिभाष्यवृत्तिसह द्वितीयखंड पत्र ३०५। **भा.** प्रा. सं.। **मू. नि. क.** भद्रबाहुस्वामी। **भा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** क्षेमकीर्ति। **ग्रं.** १४१६०। **र. सं.** १३३२। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १०१ बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति भाष्यवृत्तिसह तृतीय खंड पत्र २८४। **भा.** प्रा. स.। **मू. नि. क.** भद्रबाहुस्वामी। **भा. क.** सघदासगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** क्षेमकीर्ति। **ग्रं.** १२६५१। **र. सं.** १३३२। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १०२ पंचकल्पचूर्णी पत्र ६४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३२३५। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १०३ व्यवहारसूत्रचूर्णी पत्र २२७। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १२०००। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १३ मी

क्र. १०४ व्यवहारसूत्रवृत्ति द्वितीयखंड पत्र २२७। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** १३७१९। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र १०५ निशीथसूत्र पत्र १५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ८१२। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १०६ निशीथसूत्रभाष्य पत्र १४३। भा. प्रा.। **ग्रं.** ७४००। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १०७ निशीथसूत्रचूर्णी द्वितीयखंड पत्र २८३। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १४ मी

क्र. १०८ निशीथसूत्रचूर्णी द्वितीयखंड पत्र ३१९। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदासगणि महत्तर। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

अन्त—

जिणदासगणिमहत्तरेण रइया। नमो सुयदेवयाए भगवईए। वीसइमो उद्देसो समत्तो। नमस्तीर्थकरेभ्यः। शुभ भवतु। सवत् १६६९ वर्षे कार्तिक वदि ६ दिने शनिवारे श्रीमज्जेसलमेरुमहादुर्गे सकलक्षितिपालमणुन श्रीभीमभूमीपतौ विजयति श्रीखरतरविधिपक्षे सकलजिनशासनरक्षाकरणदक्षसाहिसलेमप्रदत्त सवाईयुगप्रधान जिनशासनपातसाह बिरदद्वयधारक जिनचन्द्र सूरीश्वरेषु तत्पट्टालङ्कार भट्टारकश्रीजिनसिंहसूरिषु विजयिषु भणसालीगोत्रीय

श्रीमलसाह पुत्र थिरराजेन पुत्र हरिराजयुतेन स्वकृतनूतन भण्डागारे श्रीनिशीथचूर्णि द्वितीयखण्डो सम्मत्तो। श्रीजिनकुशलसुरसाखे वा. श्रीस्वर्णप्रभगणि प. कमलोदय प. देवसार प गुणराज प. थिरराज प. कर्मचंद प. उदयसंघ लिपीकृतं। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु।

सं. १६७१ वर्षे श्रीजेसलमेरुदुर्गे श्रीजयसोममहोपाध्यायशिष्यश्रीगुणविनयोपाध्यायैश्शोधितं स्वशिष्य पं. मतिकीर्तिकृतसहायकैर्निशीथचूर्णेर्द्वितीय खण्ड सविदासम्पदे श्रीरस्तुपदे पदे कल्याणमस्तु श्रीखरतरसघस्य। चिर जीव्यात् ज्ञानभाण्डागारविधायकसाहथिरराजश्चिरंजीवि साह हरिराज येनङ्गविराजितः श्रीविलास विदधानः सबहुमानः श्रीयुगप्रधानश्रीजिनसिंहसूरिराज्ये प्रवर्त्तमाने सर्वदोदय लभतामर्कवत्।

स्वस्ति श्रीशुभकार्यसिद्धिकरणश्रीपार्श्वनाथार्हति, चैत्ये सद्विधिना विवेकिनिकरैः सपूज्यमाने सदा।
राज्ये राउलभीमनामनृपतेः कल्याणदासस्य च, वर्षे विक्रमतस्तु षोडशशते एकोनसप्तत्यति ॥१॥
वृद्धे खरतरगच्छे श्रीमज्जिनभद्रसूरिसन्ताने। जिनमाणिक्ययतीश्वरपट्टालङ्कारदिनकारे ॥२॥
जाग्रद्भाग्यजये प्रबुद्धयवनाधीशप्रदत्ताभये साक्षात् पञ्चनदीशसाधनविधौ सम्प्राप्तलोकस्मये।
यावज्जैनसुतीर्थदण्डकरयोः सम्मोचनाख्यालये, गोरक्षाजलजीवरक्षणधनप्राप्तप्रतिष्ठाश्रये ॥३॥
साधुव्यंसकदोषदुष्टितमनःश्रीनुरदीरजनात्, देशाकर्षणसाधुदुःखदलनात् कारुण्यपुण्याश्रये।
श्रीमच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरौ यौगप्रधाने चिर, राज्य कुर्वति जैनसिंहसुगुरौ सद्यौवराज्ये किल ॥४॥
कोट्टे जेसल्मेरे उपकेशज्ञातिमण्डन जातः। भणसालिकगोत्रीयः आसासाहः सदोत्साहः ॥५॥
तत्पुत्रो वस्ताख्यः तत्तनयः पुंजराज इति नाम। तत्पुत्रो जसधवलः तत्सूनुः पूनसीसाहः ॥६॥
तत्कुलदीपप्रतिमः श्रीमल्लः तस्य पुत्रवररत्नम्। चाम्पलदेऽम्बाकुक्षिस्वर्णाचलकल्पवृक्षाऽस्ति ॥७॥
भुवि जन्तुजातरक्षास्मारितसुकुमारपालभूपालः। जिनवरगुरुपरमाज्ञातिलकितभालो विशालगुणः ॥८॥
धर्मस्थानव्ययितद्रविणप्रवरः प्रधानशीलेन। जीर्णोद्धारधुरीणो दीनानाथादिदुःखहरः ॥९॥
स्वालयदेवगृहे शंभवाधिपस्थापनामहे सम्यक्। प्रत्येक श्राद्धानां प्रददे यो राजतीं मुद्राम् ॥१०॥
मिष्टान्नभोजनेऽनाथान् सतोष्य वर्षनिष्टासु(?)। अष्टाहिकासु घुसृणैः वर्णौघैः पूजयाञ्चक्रे ॥११॥
सार्द्धसहस्रचतुष्टयप्रमिता. प्रतिमाश्च सप्तचैत्येषु। द्रव्यस्तवाधिकारी भावस्तवसङ्गतः सततम् ॥१२॥
नगरजनराजमान्यो विधिपक्षाराधको विधिज्ञश्च। दुष्कालकबहस्तो न दुर्वचनो गर्वमदरहितः ॥१३॥
श्रीथाहरुसुनामा अग्रजहरिराजमेघराजाभ्याम्। युक्तः कनकां भर्त्ता आढ्यः सुश्रावको द्रव्यैः ॥१४॥
ज्ञानप्राप्तिनिमित्तं भवे भवे बोधिबीजशुद्धयर्थम्। सज्ज्ञानकोशमेन शुद्ध सलेखयाञ्चक्रे ॥१५॥अष्टभिः कुलकम्॥
चित्कोशलेखनेन हि पुण्यं यदवापि थाहरूकेण। हर्षात्तेन प्राज्ञाः जिनागम वाचयन्तु सदा ॥१६॥
शुभ सवत् १९८३ मिति कार्त्तिक वदी ९ वार शुक्रवार।
श्रीमान् सूरिवरो महासुनिकृपाचन्द्रः कलौ धर्मराट्, प्राप्तो जेसलमेरनाम्नि नगरे क्ष्मां पावयन् स्थापिता।
सत्सत्तेन वरा परोपकृतये जीर्णागमोद्धारिणी, वर्षेऽथाब्धिवसुग्रहेन्दुगणिते ग्रन्थस्तदा लेखितः ॥१॥
लेखक महात्मा दुलीचन्द निवासी बिकानेर।

क्र. १०९ महानिशीथसूत्र पत्र ८०। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४५४४। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ११० अंगविद्याप्रकीर्णक पत्र १८७। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ९०००। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १११ जीतकल्पसूत्र वृत्तिसह पत्र ३६। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** तिलकाचार्य। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ११२ (१) सिद्धप्राभृतसूत्र पत्र १-४। **भा.** प्रा.। **गा.** १२१।

(२) सिद्धप्राभृतसूत्रवृत्ति पत्र ४-२२। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ११३ (१) सिद्धप्राभृतसूत्र पत्र ४१-४४। **भा.** प्रा.। **गा.** १२१।

(२) सिद्धप्राभृतसूत्रवृत्ति पत्र ४४-६३। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ११४ कर्मप्रकृतिचूर्णी पत्र ११४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** सारी। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १५ मी

क्र. ११५ शतककर्मग्रंथ वृत्तिसह पत्र ७३। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलधारि हेमचंद्रसूरि। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प** १२।×५।

क्र. ११६ नवपदप्रकरण बृहद्वृत्तिसह पत्र १८३। **भा.** प्रा. स.। **मू.** जिनचंद्रसूरि। **वृ.** यशोदेवोपाध्याय। **वृ. र. सं.** ११६५। **ले. सं.** १९८३। **ग्रं.** ९५००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र ११७ उपदेशपदप्रकरणलघुवृत्ति पत्र १३७। **भा.** स.। **क.** वर्धमानसूरि। **ग्रं.** ६५००। **र. सं.** १०५०। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र. ११८ उपदेशप्रकरणलघुवृत्ति पत्र १४३। **भा.** स.। **क.** वर्धमानसूरि। **ग्रं.** ६५००। **र. सं.** १०५०। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। १२×५।

क्र. ११९ चैत्यवंदनाभाष्य संघाचारवृत्तिसह पत्र १८८। **भा** प्रा. स.। **मू. क.** देवेन्द्रसूरि। **वृ क.** धर्मघोषसूरि। **ग्रं.** ७८००। **ले सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं प.** १२।×५।

क्र. १२० ऋषिमंडलप्रकरण वृत्तिसह प्रथम खंड पत्र ७१। **भा.** प्रा. स.। **मू.** धर्मघोषसूरि। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १६ मी

क्र. १२१ उपदेशमाला हेयोपादेयावृत्तिकथासह पत्र २११। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १२२ संयमाख्यान पत्र ३। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १२३ चउपन्नमहापुरिसचरिय पत्र १९६। **भा.** प्रा.। **क.** शीलाचार्य। **ग्रं.** १३३००। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १२४ समराइच्चकहा पत्र २२७। **भा.** प्रा.। **क** आचार्य हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** १०००० **ले. सं** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं प.** १२।×५।

क्र. १२५ प्रत्येकबुद्धचरित्र पद्य पत्र ११४। **भा.** स.। **क.** लक्ष्मीतिलकगणि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १२६ अतिमुक्तकचरित्र पद्य पत्र ७। **भा.** स। **क.** पूर्णभद्रगणि। **ग्रं.** २३०। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १२७ (१) दशउपासककथा पत्र १-९। **भा.** प्रा.। **क.** पूर्णभद्रगणि। **ग्रं.** ३४४। **र. सं.** १२७५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

(२) दृष्टाउपासककथाचूर्णी पत्र १०-१२। भा. स.। क. पूर्णभद्रगणि। ग्रं. १०१। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।

क्र. १२८ गणधरसार्धशतक बृहद्वृत्तिसह प्रथम खंड (प्रथमगाथाव्याख्या) पत्र ६८। भा. प्रा. सं.। वृ. क. सुमतिगणि। र. सं. १२९५। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १२।×५।

पोथी १७ मी

क्र. १२९ गणधरसार्धशतकबृहद्वृत्तिसह द्वितीय खंड पत्र १९१। भा. स.। वृ. क. सुमतिगणि। ग्रं. १२१०५। र. सं. १२९५। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं.प. १२।×५।

क्र. १३० विधिप्रपा पत्र ७३। भा. प्रा. स.। क. जिनप्रभसूरि। ग्रं. ३५७४। र. सं. १३६३। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १२।×५।

क्र. १३१ कथासंग्रह पत्र ७५। भा. प्रा. स.। स्थि श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२×५।

क्र. १३२ अणुव्वयविहि पत्र ३२। भा. प्रा.। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

क्र. १३३ (१) षडावश्यकसूत्र पत्र १-४। भा. प्रा.।

(२) आवश्यकविधिप्रकरण-प्रतिक्रमणसामाचारी पत्र ४-५। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ४०।

(३) पंचलिंगीप्रकरण पत्र ५-७। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०१।

(४) षट्स्थानकप्रकरण-श्रावकवक्तव्यता पत्र ७-९। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०३।

(५) पिंडविशुद्धिप्रकरण पत्र १-१२। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १०३।

(६) आगमोद्धारगाथा पत्र १२-१३। भा. प्रा.। गा. ७१।

(७) पौषधविधिप्रकरण पत्र १३-१७। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि।

(८) पंचकल्याणकस्तोत्र पत्र १७-१८। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. २६।

(९) लघुअजितशांतिस्तव-उल्लासिक्कमनक्ख० स्तोत्र पत्र १८ मुं। भा प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १७।

(१०) अजितशांतिस्तव पत्र १८-२०। भा. प्रा.। क. नदिषेण। गा. ४०।

(११) पर्यंताराधनाप्रकरण पत्र २०-२२। भा. प्रा.। क. अभयदेवसूरि। गा. ८३।

(१२) आतुरप्रत्याख्यान पत्र २६ मु। भा. प्रा.। गा १६।

(१३) धर्मलक्षण पत्र २२-२३। भा. सं.।

(१४) प्रश्नोत्तररत्नमालिका पत्र २३मु। भा स.। क. विमलाचार्य। आर्या २७।

(१५) नवतत्त्वप्रकरणभाष्य पत्र २३-२७। भा. प्रा.। क. अभयदेवसूरि। गा. १५२।

(१६) नवपदप्रकरण पत्र २७-३१। भा. प्रा.। क. जिनचंद्रगणि। गा. १३९।

(१७) श्रावकधर्मविधिप्रकरण पत्र ३१-३२। भा. प्रा.। क. हरिभद्रसूरि। गा. ७०।

(१८) कर्मप्रकृतिसंग्रहणी पत्र ३२-४३। भा. प्रा.। क. शिवशर्मसूरि। गा. ४७६।

(१९) विंशतिका पत्र ४३-४४। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ३५।

(२०) बोटिकनिराकरणप्रकरण पत्र ४४-४७। भा. प्रा.। गा. ११५।

(२१) **स्वप्नसप्ततिकागत अधिकार सटीक** पत्र ४७-५१ । **भा.** प्रा. सं. । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. १३४ (१) **पर्यंताराधनाप्रकरण** पत्र १-३ । **भा.** प्रा. । **क.** सोमसूरि । **गा.** ६९ ।

(२) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र ३-७ । **भा.** प्रा. । **क.** आसड । **गा.** ११४ । **र. सं.** १२७८ ।

(३) **चतुःशरणप्रकीर्णक** पत्र ७-८ । **भा.** प्रा. । **गा.** २७ ।

(४) **आउरपच्चक्खाणप्रकीर्णक** पत्र ८-९ । **भा.** प्रा. ।

(५) **आराधनाप्रकरण** पत्र ९-१२ । **भा.** प्रा. । **क.** अभयदेवसूरि । **गा.** ८५ ।

(६) **क्षामणाकुलक** पत्र १२ मु । **भा.** प्रा. । **गा.** १६ ।

आ कुलकनां बीजां नामो **मिथ्यादुष्कृतकुलक** अने **भावनाकुलक** पण छे ।

(७) **आलोचनाकुलक** पत्र १२-१३ । **भा.** प्रा. । **गा** १२ ।

(८) **आलोचनाकुलक** पत्र १३ मु । **भा.** प्रा. । **गा.** २४ ।

(९) **भावनाकुलक** पत्र १३-१४ । **भा.** प्रा. । **गा.** ११ ।

(१०) **भावनाकुलक** पत्र १४-१५ । **भा.** प्रा. । **गा.** २९ ।

(११) **सुलसआराधनाप्रकरण** पत्र १५-१७ । **भा.** प्रा. । **गा.** ७४ ।

(१२) **नवकारफलकुलक** पत्र १७-१८ । **भा.** प्रा. । **गा.** ३३ ।

(१३) **मिथ्यादुष्कृतकुलक** पत्र १८ मु । **भा.** प्रा. । **गा.** २० ।

(१४) **संवेगमंजरीप्रकरण** पत्र १८-१९ । **भा** प्रा. । **क.** देवभद्र । **गा.** ३२ ।

(१५) **संयममंजरीप्रकरण** पत्र १९-२० । **भा** प्रा. । **क.** महेश्वरसूरि । **गा.** ३५ ।

(१६) **सुगुरुदांगडउ** पत्र २०-२१ । **भा.** अपभ्रंश । **गा.** २१ ।

(१७) **सुगुरुदांगडउ** पत्र २१-२३ । **भा.** अपभ्रंश । **क.** जिनप्रभसूरि । **गा.** ३२ ।

(१८) **आराधना** पत्र २३-२४ । **भा.** स. । **ग्रं.** ४० ।

(१९) **भावनासंधि** पत्र २४-२६ । **भा.** अपभ्रंश । **क.** यशोदेव । **गा.** ५६ ।

(२०) **आराधना** पत्र २६ मु । **भा.** प्रा. । **गा.** ८ ।

(२१) **भावनाकुलक** पत्र २६-२७ । **भा.** प्रा. । **क.** सोमदेव । **गा.** १७ ।

(२२) **आराधनाकुलक** पत्र २७-२८ । **भा.** प्रा. । **गा.** २७ । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. १३५ हरिवंशपुराणगत उद्देशद्वय पत्र १० । **भा.** अपभ्रंश । **ले. सं** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प** १२।×५।

क्र. १३६ (१) **जीवोपदेशपंचाशिका** पत्र १-२ । **भा** प्रा. । **का** ५० ।

(२) **उपदेशकुलक** पत्र २-३ । **भा.** प्रा. । **गा.** २५ ।

(३) **हितोपदेशकुलक** पत्र ३ जु । **भा.** प्रा. । **गा.** २५ ।

(४) **हितोपदेशकुलक** पत्र ३-४ । **भा.** प्रा. । **गा.** २५ ।

(५) **पंचपरमेष्ठिस्तव** पत्र ४-५ । **भा.** प्रा. । **गा.** ३७ ।

(६) **नवतत्त्वप्रकरणभाष्य** पत्र ५-९ । **भा.** प्रा. । **क.** अभयदेवसूरि । **गा.** १५१ । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १२।×५।

क्र. १३७ व्याकरणचतुष्कावचूरि-हैमलघुन्यास द्वितीयाध्याय द्वितीयपादपर्यंत पत्र ५४। भा. स.। क. कनकप्रभसूरि। ग्रं. २८१८। ले. सं. १९८३। स्थि श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।

क्र. १३८ अनेकार्थकोश अनेकार्थकैरवाकरकौमुदीटीकायुक्त तृतीय खंड पत्र ५२। भा. सं.। मू. क. हेमचंद्रसूरि। टी. क. महेंद्रसूरि। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।

क्र. १३९ कहसिट्ठवृत्ति पत्र ३४। भा. स.। क. गोपाल पंडित। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १२।×५।

क्र. १४० कविकल्पलताविवेक पत्र १५१। भा. स.। ले. सं. १९८४। स्थि श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

पोथी १८ मी

क्र. १४१ कविकल्पलताविवेक द्वितीयखंड पत्र ४७। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

क्र. १४२ कविकल्पलताविवेक पत्र ८५। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं प. १२।×५।। वचमांनो केटलोक भाग आमां लखाएल नथी.

क्र. १४३ अभिधावृत्तिमातृका पत्र ९। भा स.। क. मुकुल भट्ट। ग्रं. ५१४। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प १२।×५।

क्र. १४४ (१) घटकर्परकाव्य पत्र १-२। भा. स। का. २१।

(२) मेघाभ्युदयकाव्य पत्र २-३। भा स। का ३८।

(३) वृंदावनमहाकाव्य पत्र ३-५। भा. स.। का. ५२।

(४) मधुवर्णनकाव्य पत्र ५-७। भा. स.। क. केलिकवि। का. ६९।

(५) विरहिणीप्रलापकाव्य पत्र ७-९। भा. स। क. केलिकवि। का ५३।

(६) चंद्रदूतकाव्य पत्र ९-१०। भा. स.। का. २३।

(७) विक्रमांकमहाकाव्य पत्र १०-६६। भा. स.। क. बिल्हणकवि। ग्रं. २५४५। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।

क्र. १४५ चक्रपाणिविजयकाव्य पत्र ४१। भा स.। क. लक्ष्मीधर। ले. सं १९८४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

क्र. १४६ कविरहस्य-अपशब्दाभासकाव्य सटीक पत्र ३३। भा. सं.। मू. क. हलायुध। टी. क रविधर्म। ले. सं. १९८४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।। अपरनाम कविगुह्यकाव्य।

क्र. १४७ न्यायकंदलीटिप्पनक पत्र ७७। भा. स.। क. नरचंद्रसूरि। ले. सं. १९८३। स्थि श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

क्र. १४८ न्यायभाष्यविवरण पत्र ४६। भा. स.। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १२।×५।

क्र. १४९ न्यायप्रवेशवृत्तिपंजिका पत्र ३४। भा. स। क. पार्श्वदेवगणि। ले. सं. १९८३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १२।×५।

क्र. १५० द्रव्यालंकार स्वोपज्ञवृत्ति सह द्वितीयप्रकाश टिप्पणीसह पत्र ५५। भा. स.। क. रामचंद्र गुणचंद्र। ले. सं. १९८४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १२।×५।

क्र. १५१ द्रव्यालंकार स्वोपज्ञवृत्ति सह तृतीय प्रकाश टिप्पणी सह पत्र ३५। **भा.** सं.। **क.** रामचंद्र गुणचद्र। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५२ प्रमाणमीमांसा स्वोपज्ञ वृत्ति सह पत्र ३९। **भा.** सं.। **क.** आचार्य हेमचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५३ (१) प्रमाणमीमांसा स्वोपज्ञवृत्ति सह पत्र १–४१। **भा.** स.। **क.** आचार्य हेमचद्र।

(२) परीक्षामुखप्रकरण पत्र ४१–४३। **भा.** स.।

(३) सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण पत्र ४४–५०। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५४ अनेकांतजयपताकावृत्तिटिप्पनक पत्र ३४। **भा.** स.। **क.** मुनिचद्रसूरि। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५५ अनेकांतजयपताकावृत्तिटिप्पनक पत्र ३५। **भा** स। **क.** मुनिचद्रसूरि। **ले. सं.** १९८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १६। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५६ परीक्षामुखप्रकरण पत्र ३। **भा.** स.। **ले. सं** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प** १२।×५।

क्र. १५७ सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण पत्र ७। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ले सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १२।×५।

क्र. १५८ सर्पसिद्धांतप्रवेश पत्र ४। **भा.** स। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२।×५।

पोथी १९ मी

क्र १५९ व्यवहारसूत्र निर्युक्तिभाष्यवृत्तिसह पत्र ७१६। **भा** प्रा. स.। **मू. नि क.** भद्रबाहुस्वामी। **वृ. क** आचार्य मलयगिरि। **ग्रं.** ३४०००। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प** ११॥×५

क्र. १६० परमात्मप्रकाश सस्तबक अपूर्ण पत्र ३०। **भा.** अप गू.। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ११।×५।। वचमां घणां पाना नथी.

क्र. १६१ (१) मीमांसासूत्र साबरभाष्य प्रथमअध्याय प्रथमपाद पत्र १–१३। **भा.** स.।

(२) प्रमाणान्तर्भाव पत्र १३–२३। **भा.** स.। **क.** देवभद्र यशोदेव। **ले सं.** १९८२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ११।×५।

क्र. १६२ सर्वज्ञसिद्धि पत्र ४। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ११।×५॥

क्र. १६३ कृतपुण्यमहर्षिचरित्र पद्य पत्र ४८। **भा.** स। **क.** पूर्णभद्रगणि। **र. सं.** १३०५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ११।×५॥

क्र. १६४ शालिभद्रचरित्र पद्य पत्र ३६। **भा.** स.। **क** पूर्णभद्रगणि। **ग्रं.** १४९०। **र. सं.** १२८५। **ले. सं.** १९८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ११।×५॥

पोथी २० मी

क्र. १६५ भगवतीसूत्र पत्र २–२६२। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५ **लं. प.** १२।×४॥।। अतिम पत्र नथी।

क. १६६ उपदेशमाला कर्णिकावृत्तिसह पत्र २०–२७५। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** धर्मदासगणि। **वृ. क.** उदयप्रभसूरि। **ग्रं.** १२२७४। **र. सं.** १२९९। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १२×४।

क. १६७ द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसंग्रहणी पत्र ५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २००। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प.** १२×४॥

क. १६८ निर्यावलिकासूत्रवृत्ति पत्र ११। **भा** सं.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १२।×४॥

क. १६९ धातुपारायण पत्र अस्तव्यस्त। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्रसूरि। **ले सं.** १४८६। **स्थि.**। अतिजीर्ण। **लं. प.** १२×४॥

क. १७० वंदारुवृत्ति त्रुटक पत्र ४८। **भा.** स.। **क.** देवेंद्रसूरि। **ग्रं.** २२२७। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १८। **लं. प.** १२×४॥। प्रतिमां मात्र १३ पत्र छे।

क १७१ संघपट्टकप्रकरण सटीक पत्र ४१। **भा** स.। **मू. क.** जिनवल्लभसूरि। **वृ. क.** जिनपतिसूरि। **ग्रं** ३६००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** १२×४॥

क. १७२ ओघनिर्युक्तिवृत्ति पत्र ९८। **भा.** प्रा.स.। **क.** द्रोणाचार्य। **ग्रं.** ७०००। **ले. सं.** १६२९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं प.** १२×४॥

अन्त—

श्रीवेगडगच्छेऽभूत् श्रीजिनेश्वरनामकः। ततः शमसुधाम्भोधिर्बभूव जिनशेखरः ॥१॥
तत्पट्टे जिनधर्मसूरिरभवद्वादीन्द्रचूडामणि· सद्विद्याकरदामिनीचयद्युतिप्रद्योतितक्ष्मोऽस्मर।
तत्पट्टे जिनमेरुसूरिसुगुरुजज्ञेऽत्र तन्त्रप्रदः, भव्याम्भोजवनप्रबोधनरविर्भूजानिमिर्वन्दित· ॥२॥
जिनगुणप्रभसूरिवरस्ततो विजयतेऽत्र महोज्ज्वलसंयम·। कुमतिमानतिमरतरणिर्घृणिः घनघनाघनघोषवरो ननु ॥३॥
भूपे श्रीहरिराजे राज्ये सति हस्तिवाजिरथपदुगे·। युक्ते जेसलमेरौ वरजिनगृहमण्डिते तारे ॥४॥
ग्रहनेत्रकलावर्षे १६२९ इमां वृत्तिमलीलिखत्। शुक्रे कृष्णत्रयोदश्यां सुधीः कमलमंदिर· ॥५॥
यावद् व्योम्नि वरीवर्ति यावद् राजति वारिधिः। तावन्नदत्विय प्रति· प्रवरा पृथिवीतले ॥६॥श्री ॥

क. १७३ मुरारिनाटक टिप्पणीसह पत्र ४०। **भा.** स.। **क.** मुरारि कवि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२×४॥

क. १७४ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र महाकाव्य सप्तमपर्व-रामायण पत्र १३९। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १२×४।

पोथी २१ मी

क. १७५ मलयसुंदरीचरित्र-ज्ञानरत्नोपाख्यान पद्य पत्र ९३। **भा.** स.। **क.** जयतिलकसूरि। **ग्रं.** २४३०। **ले. सं.** १५६८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** ११॥।×४॥

क. १७६ अभिधानचिंतामणि नाममाला द्वितीयकांड पत्र ६। **भा.** सं.। **क** हेमचन्द्राचार्य। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥।×४॥

क. १७७ अभिधानचिंतामणि नाममाला अपूर्ण पत्र १३। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११॥।×४।

क. १७८ अभिधानचिंतामणि नाममाला त्रुटक-अपूर्ण पत्र १०। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. १७९ **अभिधानचिंतामणिनाममाला** पत्र १३–२८। भा. सं.। क. हेमचन्द्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १४ । लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८० (१) **पिंडविशुद्धिप्रकरण** पत्र १–३। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १०३।

(२) **षट्स्थानकप्रकरण-श्रावकवक्तव्यता** पत्र ३–४। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०२।

(३) **पंचलिंगीप्रकरण** पत्र ४–६। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०२।

(४) **दर्शनसप्ततिकाप्रकरण–श्रावकधर्मविधितंत्रप्रकरण** पत्र ६–८। भा. प्रा.। क. हरिभद्रसूरि। गा. १२०।

(५) **आगमोद्धारगाथा** पत्र ८–९। भा. प्रा.। गा. ७१।

(६) **लघुक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र ९–११। भा. प्रा.। गा, १०९।

(७) **संदेहदोलावलीप्रकरण** पत्र ११–१४। भा. प्रा.। क. जिनदत्तसूरि। गा १५१। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८१ **संदेहदोलावलीवृत्ति** पत्र ७३। भा. स.। ग्रं. ४७५०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८२ **शीलोपदेशमालाप्रकरण** पत्र ४। भा. प्रा.। क. जयकीर्तिसूरि। गा. ११६। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८३ (१) **शीलोपदेशमाला** पत्र १–३। भा. प्रा.। क. जयकीर्तिसूरि। गा. ११६।

(२) **आत्मानुशासन** पत्र ३–५। भा. स.। क. पार्श्वनाग। आर्या. ७७। र. सं. १०४२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८४ **कातंत्रव्याकरण दौर्गसिंहीवृत्ति–तद्धितप्रकरणपर्यंत टिप्पणी सह** पत्र ३६। भा. स। क. दुर्गसिंह। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ११॥×४॥.। आदिनां १६ पत्र चोंटेलां छे।

क्र. १८५ **सामाचारी–यतिदिनचर्या** पत्र १२। भा. प्रा.। क. देवसूरि। ग्रं. ७७५। ले. सं. १५६२। स्थि. मध्यम। पं १७। लं प. ११॥×४॥

अन्त—

इति श्रीमुक्तावलीरूपा यतिदिनचर्या सम्पूर्णा। ग्र. श्लोक ७७५। श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टालङ्कारश्रीजिनमेरुसूरिविजयराज्ये प. ज्ञानमदिरमुनिनाऽलेखि। स. १५६२ वर्षे पोष मासे १५।

क्र. १८६ **कर्मस्तवकर्मग्रंथावचूरि** पत्र ११। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८७ **ओघनिर्युक्तिअवचूरि** पत्र २८। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. १९। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८८ **श्रावकप्रतिक्रमणचूर्णी** पत्र ३६–८४। भा. प्रा.। क. विजयसिंहसूरि। ग्रं. ४५९०। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. ११॥×४॥

क्र. १८९ **आवश्यकनिर्युक्ति** पत्र ५९। भा. प्रा.। क. भद्रबाहुस्वामी। ले. सं. १५५५। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ११॥×४॥

अन्त—

सवत् १५५५ वर्षे श्रीखरतरगच्छे पूज्यश्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे पूज्यश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टे श्रीजिनशेखरसूरिपट्टे

श्रीजिनधर्मसूरिपट्टोदयाद्रिद्युमणिपूज्यश्रीजिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये उपाध्यायश्रीदेवचन्द्रशिष्यउपाध्यायश्रीक्षमासुंदरशिष्य प. नयसमुद्रेण लिखितम् । श्री ॥ श्रीआवश्यकसूत्रम् ॥छ॥श्री॥ श्रीवीरमगामे ॥श्री॥ शुभ भवतु ॥छ॥

क्र. १९० कालिकाचार्यकथा गाथाबद्ध पत्र ४ । **भा.** प्रा. । **क.** भावदेवसूरि । **गा.** १०६ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १३ । **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. १९१ कर्पूरमंजरीनाटिका टिप्पणीसह पंचपाठ अपूर्ण पत्र १६ । **भा.** स. आदि । **क.** राजशेखर कवि । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. १९२ अध्यात्मकल्पद्रुम तथा अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका पत्र ९ । **भा.** स । **अध्या. क.** मुनिसुन्दरसूरि । **अ. द्वा. क.** हेमचन्द्राचार्य । **अध्या. का** २७८ । **अ. द्वा. का.** ३२ । **स्थि.** मध्यम । **पं** १६ । **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. १९३ कर्पूरप्रकर पत्र १० । **भा.** स. । **क.** हरिकवि । **ग्रं.** ३४५ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १२। **लं. प.** ११॥।×४॥. । आ प्रति पाणीमां भीजाएली छे ।

क्र. १९४ (१) **गणधरसार्द्धशतकप्रकरण** पत्र १-३ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** १५० ।

(२) **पंचनमस्कारफलस्तव** पत्र ३-५ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनचन्द्रसूरि । **गा.** ११८ ।

(३) **नाणाचित्तप्रकरण** पत्र ५-७ । **भा.** प्रा. । **गा.** ८१ ।

(४) **कथानककोश** पत्र ७ । **भा** प्रा. । **क** जिनेश्वरसूरि । **गा.** ३० ।

(५) **व्यवस्थाकुलक** पत्र ७-८ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** ७५ ।

(६) **षष्टिशतप्रकरण** पत्र ८-११ । **भा.** प्रा. । **क** नेमिचद्र भडारी । **गा.** १६१ ।

(७) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र ११-१४ । **भा** प्रा. । **क.** आसड कवि । **गा** १४४ । **र सं** १२४८ । **स्थि** मध्यम । **पं** १८ । **लं प** ११॥।×४॥

क्र १९५ भावशतक पत्र २-६ । **भा.** स । **क.** नागराज । **का.** १०४ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १७ । **लं. प.** ११॥×४।

क्र. १९६ कर्मस्तव द्वितीयकर्मग्रंथ पत्र २ । **भा** प्रा । **क.** देवेन्द्रसूरि । **गा.** ३४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १० । **लं. प** ११॥×४॥

क्र. १९७ कर्मग्रंथचतुष्क पत्र ६ । **भा.** प्रा. । **क.** देवेन्द्रसूरि । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं** १६ । **लं. प.** ११।×४॥

क्र. १९८ नवतत्त्वप्रकरण सावचूरि पंचपाठ पत्र ४ । **भा.** प्रा. स. । **मू. गा.** २७ । **ले. सं.** १५३८ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** २५ । **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. १९९ आवश्यकसूत्रलघुवृत्ति पत्र २२५ । **भा.** स. । **क.** तिलकाचार्य । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** ११॥।×४॥. । प्रथम पत्रना टुकडा छे ।

क्र. २०० नैषधमहाकाव्य अपूर्ण पत्र ३६ । **भा.** स. । **क.** श्रीहर्ष । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ११ । **लं प.** ११॥।×४॥. । प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

पोथी २२ मी

क्र. २०१ उपदेशमालाप्रकरण सावचूरि पंचपाठ पत्र ५४ । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** धर्मदासगणि । **मू. गा.** ५४३ । **ले. सं.** १४४८ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १४ । **लं. प.** १२×४॥।. । पत्र ३०, ३१, ५४ नथी ।

क्र. २०२ संग्रहणीप्रकरण सटीक अपूर्ण पत्र ४६। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** श्रीचन्द्रसूरि। **वृ. क.** देवभद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १२×४।।।

क्र. २०३ सप्तपदार्थीटीका पत्र १९। **भा. सं**। **ले. सं.** १५४६। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २०४ द्वादशकुलक पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **ले. सं.** १६३१। **स्थि.** अति-जीर्ण चोंटेली। **पं.** २२। **लं. प.** १२×४।।।

क्र. २०५ योगशास्त्रविवरण पत्र २-३०। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञ। **स्थि.** जीर्ण-प्राय। **पं.** २०। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २०६ लघुसंघपट्टकप्रकरण पत्र ३। **भा** स.। जिनवल्लभगणि। **का.** ४०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २०७ सिंदूरप्रकर पत्र १०। **भा** स। **क.** सोमप्रभाचार्य। **का.** ९८। **स्थि** जीण। **पं.** ११। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २०८ सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण-सार्धशतकप्रकरण टिप्पणीसह पंचपाठ पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २०९ सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणटिप्पनक पत्र २४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १४५७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ११।।×४।।

क्र. २१० पंचलिंगीप्रकरण विवरणसह पत्र १८। **भा.** प्रा.। **मू. क.** जिनेश्वरसूरि। **वि. क.** सर्वराजगणि वाचनाचार्य। **ग्रं.** १४००। **ले. सं.** १५३५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प** ११।।।×४।।

क्र. २११ सामाचारी पत्र ६। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **प** १५। **लं. प.** ११।।।×४।

क्र. २१२ काव्यकल्पलता कविशिक्षावृत्तिसह पत्र ५२। **भा.** स.। **क.** अमरचन्द्रसूरि। **ले. सं.** १५११६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१३ काव्यकल्पलता पत्र ३१। **भा.** स। **क.** अमरचद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ८। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१४ वाग्भटालंकार पत्र ११। **भा.** स.। **क.** वाग्भट। **ले. सं.** १५४८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१५ साधुवंदनारास अपूर्ण पत्र १४। **भा.** गू.। **स्थि** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१६ सूत्रकृतांगसूत्रावचूरि अपूर्ण पत्र ७५। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १९। **लं प.** ११।।।×४।।

क्र. २१७ मुरारिनाटक टिप्पणीसह पत्र ५५। **भा.** स.। **क.** मुरारि कवि। **ले. सं.** १५५४। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१८ षडावश्यकबालावबोध अपूर्ण पत्र ३१-६२। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २०। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २१९ अमरुशतक टिप्पणीसह पत्र १०। **भा.** स.। **क.** अमरुक कवि। **ग्रं.** २८०। **ले. सं.** १५४२। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १२। **लं. प.** ११।।।×४।।

क्र. २२० प्रयोगविवेकसंग्रह पत्र १५। **भा.** सं.। **क.** वररुचि। **लै. सं.** १५४४। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११॥।×४॥.। व्याकरणविषयक मौलिक जेवो ग्रंथ।

क्र. २२१ बलाबलसूत्र पत्र ४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२२ बलाबलसूत्रवृत्ति टिप्पणीसह पत्र १४। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १२। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२३ अष्टप्रकारपूजाकथा (विजयचंद्रकेवलिचरित्रांतर्गत) पत्र ११। **भा.** प्रा.। **क.** चंद्रप्रभ महत्तर। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२४ दशवैकालिकसूत्र पत्र ११। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं.** ७००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२५ सिद्धान्तविचारसंग्रह (सिद्धांतगत आलापक) पत्र १७। **भा** से.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२६ अंतकृद्दशांगसूत्रवृत्ति पत्र ६। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ३३७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. २२७ (१) ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र १-७४। **भा.** सं.। **क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ४२५५। **ले. सं.** १५५६। **र. सं.** ११२०।

पत्र ७४ मा-सवत् १५५६ वर्षे अश्विनि वदि ११ रवौ लिखिता ॥ श्रीमद्अणहिल्लपत्तने ॥छ॥

(२) उपासकदशांगसूत्रवृत्ति पत्र ७४-८७। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ११॥।×४॥

पोथी २३ मी

क्र. २२८ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र महाकाव्य दशमपर्व-महावीरचरित्र पत्र ११३। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्रसूरि। **ग्रं.** ५५८५। **ले. सं.** १५३६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥×४॥

अन्त—

सवत् १५३६ वर्षे वैशाखमासे सितपक्षे द्वितीयाकर्म्मवाट्यां सोमवासरे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीपार्श्वतीर्थे राउलश्रीदेवकर्णविजयराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनदत्तसुरिसन्ताने श्रीजिनेश्वरसूरिशाखायां श्रीजिनशेखरसूरिपट्टोद्धरणश्रीजिनधर्मसुरिपट्टोदयाद्रिचूलासमलङ्करणश्रीपूज्यश्रीजिनचन्द्रसूरिशिष्याणु प. देवभद्रगणिवरेण वाचनार्थं श्रीकुमारपालप्रतिबोधदायकश्रीहेमसूरिविरचित श्रीमहावीरचरित्रपुस्तकमलेखि। श्रीभगवतीप्रसादादाचन्द्रार्कं नन्दतादिति ॥छ॥ शुभ भवतु सर्वत्र देवगुर्वोः प्रसादतः श्रीः।

ग्रामेशस्त्रिदशो मरीचिरमरः घोढा परिव्राट् सुरः ससारो बहुविश्वभूतिरमरो नारायणो नारकः।

सिंहो नैरयिको भवे बहुसुरश्चक्री सुरो नन्दनः श्रीपुष्पोत्तरनिर्जरोऽवतु भवाद् वीरस्त्रिलोकीगुरुः ॥१॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीर बुधाः संश्रिताः वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्य नम।

वीरात्तीर्थमिद प्रवृत्तमखिल वीरस्य घोर तपो वीरे श्रीधृतिकीर्त्तिकान्तिमिचयः श्रीवीर ! भद्र दिश ॥२॥

चन्द्रार्कौ गगने यावद् यावन्मेरुर्महीतले। तावत् सत्पुस्तकं ह्येतत् वाच्यमान हि नन्दतात् ॥३॥ श्रीः

क्र. २२९ सिद्धांतविचारगाथा पत्र २। **भा.** प्रा.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३० स्वप्नसप्ततिकाप्रकरण सावचूरि पत्र ३। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३१ काव्यकल्पलता कविशिक्षावृत्तिसह पत्र ५७। **भा.** स.। **क.** अमरचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ३३५७। **ले. सं.** १४८०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ११।×४॥

क्र. २३२ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र २४। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मस्वामी। **ग्रं.** १२५०। **ले. सं.** १६१५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३३ सूत्रकृतांगसूत्र पत्र ४१। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मा स्वामी। **ग्रं.** २१००। **ले. सं.** १५४३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३४ अनुत्तरोववाइयसूत्रवृत्ति त्रुटक पत्र २। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ११७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १८। **लं. प.** ११॥×४।

क्र. २३५ आचारांगसूत्र पत्र ४८। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मा स्वामी। **ग्रं.** २५७४। **ले. सं.** १५४३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३६ स्थानांगसूत्र पत्र ५८। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मा स्वामी। **ग्रं.** ३७७७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १९। **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २३७ अभिधानचिन्तामणिनाममाला पत्र ३९। **भा.** सं.। **क.** हेमचन्द्रसूरि। **ले. सं.** १५४१। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥×४॥.। पत्र २७ थी ३६ नथी।

अन्त—

संवत् १५४१ वर्षे पौष शुक्लाष्टमी कर्मवाट्यां श्रीशक्रगुरुवासरे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कारश्रीजिनचन्द्रसूरिवराणामादेशेन पण्डितदेवभद्रगणिना शिष्यमहिममंदिरमुनिपठनाथ श्रीहेमसूरिविरचित श्रीनाममालाशास्त्रमलेखि। चिरं नन्दतादाचन्द्रार्कम्।

क्र. २३८ पिंडनिर्युक्तिअवचूरि पत्र ४७। **भा.** स.। **क.** जयकीर्तिसूरि पूर्णिमापक्षीय। **ग्रं.** २८३२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥×४॥

अन्त—

इति श्रीपिण्डनिर्युक्तेरवचूरि.। इति श्रीविधिपक्षगच्छगगनरविमण्डलश्रीगच्छेश्वरश्रीजयकीर्तिसूरिशिष्यक्षमारत्नेन स्वपरावबोधाय श्रीपिण्डनिर्युक्तेरवचूरिरलेखि।

यत् किञ्चिन्मतिदौर्बल्यादसङ्गतमिहागतम्। तच्छोधने विधातव्या कृपा सद्भिः सद्बुद्धिभिः ॥१॥

यावदिन्दुरवी विश्वे प्रमोदं कुरुतो भृशम्। तावन्नन्दतु साधूनां हितैषाऽग्यर्थसन्ततिः ॥२॥

॥ ग्रन्थाग्रम् २८३२ श्लोकसङ्ख्या ॥

क्र. २३९ भवभावनाप्रकरण वृत्तिसह पत्र १६४। **भा.** स.। **क.** मलधारी हेमचद्रसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** १३०००। **र. सं.** ११७०। **ले. सं.** १५९५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** ११॥×४॥

अन्त—

संवत् १५९५ वर्षे फागुणमासे सप्तमीवासरे सोमवारे श्रीविक्रमपुरे श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्तानीयश्रीजिनशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कार तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टोदयाद्रि श्रीजिनमेरुसूरि चारित्रचूडामणिश्रीजिनगुणप्रभसूरिविजयराज्ये प. ज्ञानमन्दिरगणिनाऽऽत्मपुण्याय गुरूणां वाचनार्थे भवभावनावृत्तिर्लिखितमस्ति शुभमस्तु। कल्याणं भूयात् ॥छ॥

क्र. २४० कातंत्रव्याकरण दौर्गसिंहीवृत्ति टिप्पणीसह पंचपाठ चतुर्थपादपर्यंत पत्र १५-६०। **भा.** सं.। **क.** दुर्गसिंह। **ले. सं.** १५६८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ११×४॥

क. २४१ कातंत्रव्याकरण बालावबोधवृत्ति पत्र १६। **भा.** सं.। **क.** मेरुतुंगसूरि अचलगच्छीय। **ग्रं.** ५०९। **र. सं.** १४४४। **ले. सं.** १५३२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ११×४॥

क. २४२ शत्रुंजयमाहात्म्य पद्य पत्र १७८। **भा.** स.। **क.** धनेश्वरसूरि। **ग्रं.** ८८१२। **ले. सं.** १४९१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥×४॥

अन्त—संवत् १४९१ वर्षे पोस सुदि ७ भूमे श्रीडूंगरपुरे लिखित॥

क. २४३ पार्श्वनाथविवाहलो पत्र ५। **भा.** अप. गू.। **क.** पेथो मंत्री। **ग्रं.** २५०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ११॥×४॥

क. २४४ नैषधीयमहाकाव्यदीपिका द्वितीयसर्गपर्यन्त पत्र ३३। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ११×४॥

पोथी २४ मी

क २४५ कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति पत्र ३०६। **भा.** स.। **क.** दुर्गसिंह। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ११×४।

क. २४६ कर्पूरमंजरीनाटिका पत्र २०। **भा** म आदि। **क.** राजशेखर कवि। **ले. सं.** १५३८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४।

अन्त—

सवत् १५३८ वर्षे माघ शुक्ल पूर्णिमा गुरौ श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्तानीय श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कार श्रीजिनचन्द्रसूरिवराणामादेशेन प. देवभद्रगणिना स्ववाचनाय कपूरमजरीनाटिकाप्रकरणमलेखि श्रीदेवकर्णराज्ये श्रीपार्श्वतीर्थे शुभ भवतु ॥श्री॥

क. २४७ कर्पूरमंजरीनाटिका कर्पूरकुसुमभाष्य पत्र ४६। **भा.** म.। **क** प्रेमराज। **ले. सं.** १५३८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ११×४।

आदि—॥५० ॐ नमो वीतरागाय ॥

कर्पूरमंजरी नाम नाटिका राजशेखरी। तद्व्याख्या प्रेमराजेन कर्पूरकुसुमे कृता ॥१॥

इति श्रीमतसूर्यवशोद्भवसहिगिल्लकुलावतसश्रीमत्प्रयागदासाङ्गज श्रीप्रेमराजविरचिते कर्पूरकुसुमनाम्नि कर्पूरमजरीभाष्ये चतुर्थ यवनिकान्तर समाप्तमिति ॥छ॥ श्रीरस्तु शुभमस्तु श्रीदेवगुरुप्रसत्तः ॥छ॥ संवत् १५३८ वर्षे श्रावण शुक्ल सप्तम्यां सोमवासरे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे राउलश्रीदेवीदासविजयराज्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्तानीयश्रीजिनशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टोदयाद्रिचूलाममलङ्करणश्रीसहस्रकरावतारश्रीजिनचन्द्रसूरिवराणामादेशेन प. देवभद्रगणिवरेण वाचनार्थं श्रीकर्पूरमजरीभाष्यमलेखि नन्दतादाचन्द्रार्कं वाच्यमान। लेखकपाठकयोः कल्याण भूयात् श्रीजिनधर्मप्रमादतः ॥छ॥

क. २४८ कातंत्रविभ्रम सटीक टिप्पणी सह पत्र १०। **भा.** स.। **मू. क.** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** २६१। **र. सं** १३५२। **ले. सं.** १४७८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ११×४॥

आदि—

प्रणम्य परम ज्योतिर्बालानां हितकाम्यया। वक्ष्ये सङ्क्षेपतः स्पष्टां टीकां कातन्त्रविभ्रमे ॥१॥

दुर्दान्तशाब्दिकम्मन्यदर्प्पसर्प्पैकजाङ्गुली। नित्य जागर्तु जिह्वाग्रे विशेषविदुषामियम् ॥२॥

अन्त—

अमुना प्रकारेण विषमप्रयागान् पर्यनुयुज्यमाना अलीककलितवैयाकरणताभिमाना अननुसृतप्रकृतग्रन्थपद्धतयः

केचित् प्रतिप्रतिहतप्रतिभा विशेषतयोत्तरं वितरितुमपारयन्तः प्रश्रवन्ति प्रस्वेदबिन्दून्, स्वीकुर्वन्ति जृम्भाम्, आद्रियन्ते निद्रामुद्राम्, जल्पन्ति तथाविधाभिधेयवन्ध्यम्, निरीक्षन्ते हरितः, पश्यन्त्यन्तरिक्षम्, विलोकयन्ति मुहुर्मुहुर्महीतलमिति। तथा चाहुः श्रीसिद्धसेनदिवाकरपादाः—

स्वेद समुद्वहति जृम्भणमातनोति निद्रायते किमपि जल्पति वस्तुशून्यम्।
आशा विलोकयति ख पुनरेव धात्रीं भूताभिभूत इव दुर्वदकः सभायाम्॥
तदिदमवगम्य सम्यक् तदनुसारि चेतो विधेयम्।
अभ्यर्थनां प्रथितमाथुरवंशवंशमाणिक्यठक्कुरकुले कुलदीपकस्य।
कायस्थकैरवनिकायनिशाकरस्य स्वीकृत्य मङ्गलविधामिव खेतलस्य॥१॥
पक्षेषुशक्तिशशिमून्मितविक्रमाब्दे १३५२ धाम्याङ्किते हरतिथौ पुरि योगिनीनाम्।
कातन्त्रविभ्रम इह व्यतनिष्ट टीकामप्रौढधीरपि जिनप्रभसूरिरेताम्॥२॥
प्रत्यक्षर निरूप्यास्य ग्रन्थमान विनिश्चितम्। एकषष्ट्या समधिक शतद्वयमनुष्टुभाम्॥३॥

अङ्कतोऽपि ग्रन्थप्रमाण २६१ ॥छ॥ श्री सवत् १४७८ वर्षे श्रावण सुदि अष्टमीदिने श्रीखरतरगच्छे आचार्यश्रीकीर्त्तिसागरसूरिशिष्येण धर्मशेखरेण मुनिनाऽऽत्मपठनार्थं विलेखितः कातन्त्रविभ्रमः पण्डितगुणीयापुत्रेण पुरुषाकेन लिखितः भूमवारे ॥श्रीः श्रीः ॥छ॥

क्र. २४९ कालापकव्याकरण वृत्तिसह पत्र ९५। **भा.** स.। **ले. सं.** १५२६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४॥

अन्त—

सवत् १५२६ वर्षे माघमासे शुक्लसप्तम्यां गुरुवासरे रेवतीनक्षत्रे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनदत्तसूरिसन्ताने श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिपट्टप्रवर श्रीजिनशेखरसूरिपट्टालङ्कार श्रीजिनधर्मसूरिपट्टोदयाद्रिचूलासूर्यावतार श्रीजिनचन्द्रसूरिवराणामादेशेन प. देवभद्रगणिना स्वपठनार्थमन्येषा वाचनाय कालापकवृत्तित्रयीविवरणमलेखि श्रीपार्श्वतीर्थे राउलश्रीदेवकर्णराज्ये लिखितमिदं पुस्तकमाचन्द्रार्कं नन्दतादिति ॥छ॥श्रीः॥

क्र. २५० पार्श्वनाथचरित्र पद्य पत्र ७९-१९१। **भा.** स। **क.** भावदेवसूरि। **ग्रं.** ७०००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ११×४॥

क्र. २५१ चंडीशतक सटीक पत्र ३९। **भा.** स.। **टी.क.** बाणभट्ट। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४।

क्र. २५२ नलदवदंतीचरित्र पद्य पत्र २४। **भा.** स.। **ग्रं.** ८५४। **ले. सं.** १५३५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ११×४।

अन्त—

इति श्रीसत्यशीलविषये नलदवदतीचरित्रं समाप्त। सवत् १५३५ वर्षे भाद्रपदकृष्णे नवम्यां शनिवारे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्तानीय श्रीजिनशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कार श्रीश्रीश्रीजिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये प. देवभद्रमुनिना लिखित श्रीजागुसाग्रामे युगादिदेवतीर्थे श्रीशुभ भूयादिति।

यादृशं पुस्तके दृष्ट तादृश लिखित मया। यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते॥ श्रीरस्तु॥

क्र. २५३ अनर्घराघवनाटक पत्र ८६। **भा.** स. आदि। **क.** मुरारि कवि। **ले. सं.** १३७५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १०। **लं. प.** ११×३॥

पोथी २५ मी

क्र. २५४ गौतमपृच्छा बालावबोधसह अपूर्ण पत्र ४०। **भा** प्रा. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २५५ संबोधसप्तति बालावबोधसह पत्र ६। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २५६ सप्तस्मरण खरतरगच्छीय सावचूरिक पंचपाठ पत्र १२। **भा.** प्रा. सं.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** ९। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २५७ पर्युषणाकल्पनिर्युक्तिवृत्ति किंचिदपूर्ण पत्र ४५–६०। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** भद्रबाहुस्वामी। **वृ. क.** जिनप्रभसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥×४॥.। **संदेहविषौषधिवृत्ति** अतभाग।

क २५८ श्रावकाराधना पत्र ६। **भा.** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०॥×४॥।

क. २५९ तत्त्वसारगाथा पत्र ५। **भा.** प्रा.। **गा.** ७४। **ले सं.** १७४५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ८। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २६० कल्याणमंदिरस्तोत्र सस्तबक पत्र ७। **भा.** स. गू.। **मू. का.** ४४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २६१ (१) शत्रुंजयकल्प पत्र १–५। **भा** स.। **क** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** १३५। **ले. सं.** १७३२।

पत्र ५ मां-सवत् १७३२ व। श्रीथिराख्यपुरे लिपीकृतोऽय।

(२) उपदेशशतक पत्र ५–८। **भा.** सं.। **ग्रं.** १०३।

आनु अपरनाम **धर्मोपदेशशत** अने **जिनोपदेशशत** पण छे।

(३) सूक्तसंग्रह पत्र ८–१३। **भा.** स.। **ग्रं.** ९९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २६२ उपदेशमालाकर्णिकावृत्ति अपूर्ण पत्र १४। **भा.** स। **क.** उदयप्रभसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क. २६३ श्राद्धविधि विधिकौमुदीवृत्तिसह पत्र १२१। **भा.** स.। **क.** रत्नशेखरसूरि स्वोपज्ञ। **ग्रं.** ६७६१। **र. सं.** १५०६। **ले. सं.** १५३२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **प** १५। **लं. प.** १०।×४॥।

क. २६४ भगवतीसूत्रबीजक पत्र ३–१०। **भा.** स.। **क.** हर्षकुलगणि। **र. सं.** १६११। **ले. सं.** १६१८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क. २६५ प्रव्रज्याविधानकुलक पत्र ८। **भा.** प्रा.। **गा.** ३४। **ले. सं.** १७२३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ४। **लं. प.** १०।×४॥

क. २६६ संघपट्टक सस्तबक पत्र ९। **भा.** स. गू.। **ले. सं.** १७३५। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति चोंटीने नकामी थयेली छे।

क. २६७ (१) इंद्रियपराजयशतक सस्तबक पत्र १–१०। **भा** प्रा. गू.। **मू. गा.** १००।

(२) भववैराग्यशतक सस्तबक पत्र १०–१९। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** १०४।

(३) आदिनाथदेशनोद्धार सस्तबक पत्र १९–२७। **मू. गा.** ८८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क. २६८ विवेकमंजरीप्रकरण पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** आसड। **गा.** १४४। **र. सं.** १२४८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प** १०।×४॥

क. २६९ संदेहविषौषधि-कल्पसूत्रवृत्ति पत्र ५७। **भा.** प्रा. स.। **क.** जिनप्रभसूरि। **र. सं.** १३६४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २७० जीतकल्पसूत्र पत्र ५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **गा.** १०७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४।

क्र. २७१ जीतकल्पसूत्र सटीक पत्र ५२। **भा** प्रा. स.। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **वृ. क.** तिलकाचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

पत्र त्रीजु नथी। प्रतिनां केटलांक पानां चोंटेलां छे।

क्र. २७२ बृहत्कल्पसूत्र पत्र ९। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** १६२३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

अन्त—

सवत् १६२३ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीतिथौ श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनशेखरसूरिसन्ताने श्रीजिनधर्मसूरिपट्टधुरन्धरश्रीजिनचन्द्रसूरिवर श्रीजिनमेरुसूरिपट्टधर श्रीजिनगुणप्रभसूरीश्वरविजयराज्ये श्रीकल्पछेदग्रन्थसूत्रप्रति लिखिता। प. भक्तिमंदिरेण लिपीकृता श्री ६ जिनगुणप्रभसूरीणां तत्शिष्याणां च वाचनाय। चिरं नन्दतु। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु ॥छ॥

क्र. २७३ दशाश्रुतस्कंधसूत्रचूर्णी पत्र ४३। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २२२५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २७४ दशाश्रुतस्कंधसूत्र पत्र २६। **भा** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** १६६५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २७५ दशाश्रुतस्कंधसूत्र पत्र १८। **भा** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प** १०॥×४॥

क्र. २७६ दंडकप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र ३। **भा.** प्रा. स.। **क.** गजसार स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १५७९। **स्थि.** मध्यम। **पं** २०। **लं. प** १०×४॥

क्र. २७७ दंडकप्रकरण सस्तबक पत्र ६। **भा.** प्रा. गु.। **मू. क** गजसार। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २७८ दंडकप्रकरणअवचूरि पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २७९ कुमारसंभवमहाकाव्य सप्तमसर्गपर्यंत पत्र १६। **भा.** स.। **क** कालिदास। **ले.सं.** १५७५। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २८० कथासंग्रह पत्र १६। **भा.** स। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं** १४। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २८१ कुमारसंभवमहाकाव्यअवचूरि सप्तमसर्गपर्यन्त पत्र ४५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २८२ बिल्हणपंचाशिका पत्र १। **भा.** स। **क** बिल्हण कवि। **का** ५१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २२। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २८३ बिल्हणपंचाशिका पत्र ६। **भा.** स.। **क.** बिल्हण कवि। **का.** १२३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४॥

क्र २८४ द्वादशकथा त्रुटक अपूर्ण पत्र ८९-१००। **भा.** स। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २८५ सिन्दूरप्रकर पत्र ७। **भा.** स.। **क.** सोमप्रभाचार्य। **का.** ९९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २८६ सिन्दूरप्रकर पत्र ९ । **भा.** स. । **क.** सोमप्रभाचार्य । **का.** १०० । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १२ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. २८७ सिन्दूरप्रकर पत्र ७ । **भा.** स. । **क.** सोमप्रभाचार्य । **का.** १०० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. २८८ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १८-१५३ । **भा.** प्रा. । **क.** सुधर्मा स्वामी । **स्थि** मध्यम । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४॥

पोथी २६ मी

क्र. २८९ आवश्यकसूत्रबृहद्वृत्ति पत्र ५५३ । **भा.** सं. । **क.** हरिभद्रसूरि । **ग्रं.** २२००० । **ले. सं.** १६६४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४॥

पोथी २७ मी

क्र. २९० कातंत्रव्याकरण दौर्गसिंहीवृत्ति ढुंढिकासह पंचपाठ पत्र २०६ । **भा.** स. । **वृ. क.** दुर्गसिंह । **ले. सं** १४७४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ९ । **लं प.** १०×४।

क्र. २९१ कल्पसूत्र कल्पलतावृत्ति अपूर्ण पत्र २-११४ । **भा** स. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २९२ कल्पसूत्र सस्तबक पत्र २-१०० । **भा.** प्रा. गू. । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०॥×४॥

क्र २९३ पर्युषणाकल्पदुर्गपदव्याख्या पत्र १३ । **भा.** स. । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १६ । **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २९४ बृहत्कल्पसूत्र पत्र १० । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. २९५ शीलोपदेशमालाप्रकरण सस्तबक पत्र १२ । **भा.** प्रा. गू. । **मू. क.** जयकीर्त्ति-सूरि । **मू. गा.** ११६ । **ले. सं.** १५५३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १२ । **लं. प.** १०×४॥

अन्त—

सं. १५५३ वर्षे तपागच्छनायकश्रीइंद्रनंदिसूरिविजयराज्ये महोपाध्यायश्रीअमरनंदिगुरुराजशिष्येण लिखित सा. जीवा भार्या श्रा रमाई पुत्री श्रा. मृ. गाई पठनार्थं ॥श्री॥

क्र. २९६ शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र ३ । **भा.** प्रा. । **क.** जयकीर्त्तिसूरि । **गा.** ११५ । **ले. सं.** १५०५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—स. १५०५ वर्षे पोस वदि ६ दिने घोघामध्ये लिखितम् ॥

क्र. २९७ शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र १० । **भा.** प्रा । **क.** जयकीर्त्तिसूरि । **गा.** ११५ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** ९ । **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

सवत १५२२ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनिवारे श्रीबहादुरपुरस्थाने श्रीतपागच्छे भट्टारकश्रीहेमसमुद्रसूरीणां पण्डयाइंस (पन्यास) हरिषसुंदरगणि पण्डयाइस हंसरत्नगणि सपरिवारात श्राविका रूपा लिखापितम् । आत्मार्थे पठनीयात् ॥छ॥ लिखित साहमहिराजेन ॥छ॥छ॥

क्र. २९८ पुष्पमालाप्रकरण पत्र १५। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **गा.** ५०५। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. २९९ श्रेणीकरास-सम्यक्त्वरास पत्र २२। **भा.** गू.। **क.** सौभाग्यहर्षसूरिशिष्य। **र. सं.** १६०३। **ले. सं.** १६३१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०० गुणावलीकथानक रास पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** ज्ञानमेरु। **र. सं.** १६७६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २२। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०१ ईपुकारीयचरित्ररास पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** क्षेमराजमुनि। **कडी** ४५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३०२ जंबूस्वामिरास पत्र ९। **भा.** गू.। **क.** देपाल। **कडी** १७८। **र. सं.** १५२२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०३ साधुवंदनारास पत्र ६। **भा.** गू.। **क.** पुण्यसागर। **कडी** १०२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०४ जंबूस्वामिचरित्रबालावबोध पत्र २-१४। **भा.** गू.। **ले. सं.** १५६८। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०५ चंदनमलयागिरिकथा वासवदत्ताकथा तथा बारव्रतकथा पत्र ११। **भा.** सं.। **ले. सं** १७३१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०६ मृगापुत्रचरित्रसंधि पत्र ३। **भा** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** ४४। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३०७ (१) वेलिपीराफली पत्र १। **भा.** गू.। **क.** सिंहो। **कडी** १५।

(२) जंबूस्वामिप्रबंध पत्र १-२। **भा.** गू.। **गा.** १७। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र ३०८ श्रेणिकरास त्रूटक अपूर्ण पत्र २-७। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र ३०९ ईश्वरशिक्षा पत्र ३। **भा.** गू.। **कडी** २९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ३१० रत्नसारकुमाररास पत्र ९। **भा.** गू.। **क.** सहजसुंदर। **कडी** ३१८। **र. सं.** १५८२। **ले. सं.** १६६२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३११ रत्नसारकुमाररास पत्र १०। **भा.** गू.। **क** सहजसुंदर। **कडी** ३०१। **र. सं.** १५८२। **ले. सं.** १६२१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प** १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ३१२ रत्नचूडरास पत्र १२। **भा.** गू.। **क.** कमलप्रभसूरि। **कडी** ३०८। **र. सं.** १५७१। **स्थि.** मध्यम। **पं** १५। **लं. प.** १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ३१३ कयवन्नारास पत्र १०। **भा.** गू.। **क.** गुणसागरसूरि। **कडी** ३२९। **ले. सं.** १७३७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३१४ कलावतीरास पत्र ७। **भा.** गू.। **क.** संयममूर्ति अंचलगच्छीय। **कडी** १९४। **र. सं.** १५९४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३१५ चउगतिवेल पत्र ७। **भा.** गू.। **कडी** १३५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क. ३१६ प्रत्येकबुद्धरास त्रूटक अपूर्ण पत्र २२। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४॥। वचमां घणां पानां नथी।

क. ३१७ पार्श्वनाथविवाहलो त्रूटक पत्र ४-५। **भा.** गू.। **ले. सं.** १५५१। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १९। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

स. १५५१ वर्षे भीलमालागच्छे भट्टारकश्रीश्रीअमरप्रभसूरिशिष्य मु. कुलमंडनलिखितोऽयं रासः। श्रीजावालपुरनगरे। कल्याण भवतु लेखकस्य।

क ३१८ कर्मग्रंथपंचक पत्र १८। **भा.** प्रा। **क.** देवेन्द्रसूरि। **ले. सं.** १४८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३१९ पगामसज्जाय तथा हरियालीगीत पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। हरि० **क.** रतनमुनि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२० दर्शनसप्ततिकाप्रकरण पत्र ३। **भा.** प्रा.। **गा.** ७०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२१ कर्मग्रंथपंचक पत्र १२। **भा** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२२ कर्मस्तव द्वितीय कर्मग्रंथ पत्र ३। **भा** प्रा। **क.** देवेन्द्रसूरि। **गा.** ३५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२३ (१) षष्टिशतप्रकरण सावचूरि पत्र १-१५। **भा.** प्रा स.। **मू. क.** नेमिचन्द्र भंडारी। **अ. क.** गजसार।

(२) नवतत्त्वप्रकरण सावचूरि पत्र १५-२६। **भा.** प्रा. स। सं. **गा** ४१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२४ चतुर्थ पंचम कर्मग्रंथ पत्र १८। **भा** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **गा.** १८६। **ले. सं.** १६५७। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं प.** १०।×४॥

क. ३२५ काव्यकल्पलता कविशिक्षावृत्तिसह अपूर्ण पत्र ४८। **भा.** स.। **क** अमरचन्द्रसूरि स्वोपज्ञ। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क. ३२६ लघुसंघपट्टकप्रकरण पत्र २। **भा.** स.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **का** ४०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क. ३२७ पुष्पमालाप्रकरण पत्र २९। **भा.** प्रा। **क** मलधारी हेमचन्द्रसूरि। **गा** ५०८। **ले. सं.** १६८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं प.** १०॥×४॥

क. ३२८ कर्मविपाककर्मग्रंथ सावचूरि पत्र ६। **भा.** प्रा गृ.। **मू. क.** देवेन्द्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं प.** १०॥×४॥

क. ३२९ संवेहदोलावलीप्रकरण संस्कृतस्तबक सह पत्र १०। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **मू. गा.** १५०। **स्थि.** मध्यम। **पं** १८। **लं. प** १०॥×४॥

क. ३३० (१) उपदेशमालाप्रकरण पत्र १-१९। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४३। **ले. सं.** १५७३।

(२) चैत्यवंदनाविधिप्रकरण पत्र २०-२२। **भा.** प्रा.। **गा.** ३५।

(३) **नवतत्त्वप्रकरण** पत्र २२–२३। **भा.** प्रा.। **गा.** २७।

(४) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र २३–२८। **भा.** प्रा.। **क** आसड। **गा.** १४४। **र. सं.** १२४८।

(५) **जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र २९–३३। **भा.** प्रा.। **गा.** १०९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३३१ संग्रहणीप्रकरण अपूर्ण पत्र १०। **भा.** प्रा.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प** १०॥×४॥

क्र. ३३२ शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** जयकीर्तिसूरि। **गा** ११६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३३३ शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** जयकीर्त्तिसूरि। **गा.** ११६। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३३४ पुष्पमालाप्रकरण पत्र १९। **भा.** प्रा.। **क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **गा.** ५०५। **ले. सं.** १६६७। **स्थि** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३३५ वैद्यकसारोद्धार सन्निपाताधिकार अपूर्ण पत्र ११। **भा.** स.। **ग्रं.** २३३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र ३३६ अश्विनीकुमारसंहितागत त्रयोदशम प्रकरण सस्तबक पत्र ११। **भा.** स. गू.। **मू ग्रं** ४१। **ले. सं** १६८८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

पोथी २८ मी

क्र. ३३७ समवायांगसूत्र पत्र ३९। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मा स्वामी। **ग्रं.** १७६७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प** १०।×४॥। प्रथम पत्रमां भगवाननु चित्र छे।

क्र. ३३८ उपासकदशांगसूत्र पत्र २३। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मा स्वामी। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥। प्रति पाणीमां भींजायेली छे।

क्र. ३३९ सूत्रकृतांगसूत्र द्वितीयश्रुतस्कंध सस्तबक त्रिपाठ पत्र ३४। **भा** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २५। **लं. प** १०।×४॥

क्र. ३४० आचारांगसूत्रदीपिका पत्र १९०–३०१। **भा.** स.। **क.** जिनहंससूरि। **ग्रं.** १०५००। **र. सं.** १५७३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४१ (१) गुर्वावली पत्र १–२। **भा** गू.। **क.** गुणविनय। **गा.** ३१।

(२) **गौतमस्वामिगीत** पत्र २ जु। **भा** गू.। **क.** गुणविनय। **कडी** ४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४२ (१) पार्श्वनाथस्तवन पत्र १। **भा.** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि। **गा.** ७।

(२) **गोडीपार्श्वनाथस्तवन** पत्र १ लु। **भा.** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि। **गा.** ९।

(३) **पार्श्वनाथस्तवन** पत्र १–२। **भा.** गू.। **क.** हर्षसमुद्र। **गा.** ७। **र. सं.** १७४१।

(४) **ऋषभदेवस्तवन बालेवामंडन** पत्र २–३। **भा.** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि।

(५) **पार्श्वनाथमेघराजगीत** पत्र ३जु। **भा** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि। **गा.** ६। **र. सं.** १७४९। **ले. सं.** १७४९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४३ (१) थिरपुरमंडन शांतिजिनस्तवन–आलोचनाविनतीस्तोत्र पत्र २। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** ३९। **र. सं.** १७३२।

(२) **थिरपुरमंडन कुंथुजिनस्तवन** पत्र ३-४। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** ४७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४४ पंचसमवायाधिकार (गुणसागरप्रबोधांतर्गत) पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** ६९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४५ पार्श्वजिनछंद पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** जेतसी। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३४६ चतुर्विंशतिजिनचतुर्विंशतिका शांतिनाथजिनपर्यंत पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २०। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ३४७ (१) मौनएकादशीतपगर्भित सर्वतीर्थंकरस्तुतिरूप श्रीमल्लिजिनस्तोत्र पत्र २। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा** ४४।

(२) **मौनएकादशीस्तुति** पत्र २-३। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** ४।

(३) **एकादशीनिर्णयगर्भित पार्श्वनाथस्तवन** पत्र ३-४। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **गा.** १८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३४८ श्रीपालचरित्रबालावबोध पत्र १४। **भा.** गू.। **क.** रत्नसोम वेगडगच्छीय। **ले. सं.** १७२५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४॥। ग्रंथकर्त्ताए पोतेज लखेली प्रति छे।

अन्त—

श्रीमद्वेगडगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरिराट्। राज्ये एषा कृता वार्त्ता रत्नसोमेन साधुना ॥१॥ इति श्रीचरित्रम्॥ ॥छ॥ संवत् १७२५ वर्षे पोषमासे त्रयोदशीतिथौ सोमवारे श्रीमद्बृहत्खरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनसमुद्रसूरिविजयराज्ये प. रत्नसोमेन लिखित श्रीसुरतबंदरमध्ये श्रीअजितनाथप्रसादात्। शुभं भवतु ॥छ॥

क्र. ३४९ (१) नेमीश्वरगीत पत्र १ लु। **भा.** गू.। **क.** लाभोदय। **गा.** ५।

(२) **पंचासरापार्श्वनाथस्तवन** पत्र १ लु। **भा.** गू.। **क.** लाभोदय।

(३) **नारिंगापार्श्वनाथस्तवन** पत्र १-२। **भा.** गू.। **क.** लाभोदय। **गा.** ७।

(४) **चिंतामणीपार्श्वनाथस्तवन** पत्र २ जु। **भा.** गू.। **क.** लाभोदय। **गा** ७।

(५) **हरियाली ६** पत्र २-३। **भा.** गू.। **क.** लाभोदय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३५० (१) नेमिनाथगीत पत्र १। **भा.** गू.। **क.** महिमराज। **गा** १३।

(२) **वैराग्यगीत** पत्र १-२। **भा** गू.। **क.** राजसमुद्र। **गा.** ८।

(३) **संजमसुंदरीगीत** पत्र २ जु। **भा.** गू.। **क.** राजसमुद्र। **गा.** १५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३५१ गोडिचास्तवन पत्र ५। **भा.** गू.। **क.** जिनसुंदरसूरि वेगडगच्छीय। **र. सं.** १७५३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

३५२ चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र पत्र ४५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २०००। **ले. सं.** १६२०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४॥

अन्त—

संवत् १६२० वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षेऽमावास्या बुधवासरे श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनशेखरसूरि श्रीजिनधर्मसूरि श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनमेरुसूरिपट्टोदयाद्रि श्रीजिनगुणप्रभसूरिविजयराज्ये श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रमलेखि।

क्र. ३५३ औपपातिकोपांगसूत्र पत्र ३५। **भा.** प्रा. । **ग्रं.** ११६७। **ले. सं.** १६१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

उववाइय उवग सम्मत्त। ग्र. ११६७। स. १६१७ वर्षे श्रावण वदि सप्तमीदिने रविवासरे श्रीखरतर-वेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनशेखरसूरयः। ततः श्रीजिनधर्मसूरयः तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरयः तत्पट्ट-प्रवराः श्रीजिनमेरुसूरीश्वराः तत्पट्टोद्धरणप्रवणश्रीजिनगुणप्रभसूरिविजयराज्ये प. भक्तिमंदिरेण लिपीकृता श्रीउप-पातिकोपाङ्गप्रतिरिय वाचनाथ श्रीपूज्यवराणाम्। वाच्यमाना च चिरं नन्दतात् आचन्द्रार्कम्। श्रीरस्तु श्री-सङ्घस्य ॥ छ ॥

क्र. ३५४ औपपातिकोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ७१। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ३१३५। **ले. सं** १६१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३५५ गणधरसार्द्धशतकप्रकरण पत्र ८। **भा.** प्रा। **क** जिनदत्तसूरि। **ले. सं.** १६८९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क्र ३५६ (१) षष्टिशतप्रकरण सस्तबक पत्र १-१६। **भा.** प्रा. गु। **क.** नेमिचंद्र भंडारी। **गा.** १६१।

(२) महर्षिकुलक (लुद्धा नरा०) पत्र १६-१७। **भा.** प्रा.। **गा** २०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं प** १०।×४॥

क्र. ३५७ पुष्पमालाप्रकरण पत्र ३०। **भा.** प्रा। **क** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **गा** ५०८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** ११। **लं प.** १०।×४॥

क्र ३५८ प्रश्नोत्तररत्नमाला बालावबोधसह पत्र ३। **भा** स गु। **मू. क** विमलाचार्य। **मू** आर्या २९। **स्थि.** मध्यम। **पं** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र ३५९ चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक पत्र १२। **भा** प्रा गु। **मू** क. वीरभद्रगणि। **गा.** ६३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३६० वैद्यमनोत्सव पत्र ४-११। **भा** हिन्दी। **क.** नयनसुख। **ग्रं.** ६००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३६१ सूत्रकृतांगसूत्रगत आर्द्रकीय आदि अध्ययन पत्र ११। **भा.** प्रा। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प** १०।×४॥

क्र. ३६२ चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र ३। **भा** प्रा.। **क.** वीरभद्रगणि। **गा.** ६३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३६३ बुद्धिरास पत्र ४। **भा.** गु। **क** शालिभद्रसूरि। **गा** ५७। **ग्रं.** ९०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३६४ जंबूस्वामिरास पत्र ७। **भा.** गु.। **क.** रत्नसिंहसूरि शिष्य। **र. सं.** १५१६। **ले. सं.** १५४१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प** १०।×४॥

अन्त—

इति श्रीजंबूस्वामिरासः संपूर्णः। सवत् १५४१ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ। संघवी थावरभार्या सुश्राविका मानू तत्सुता श्रा० मणकाईपठनार्थं लिखित परोपकाराय ॥७॥ शुभं भवतु श्रीचतुर्विधश्रमणसघस्य ॥छ॥

क्र. ३६५ ललितांगकुमाररास पत्र ८। **भा.** गु.। **क.** क्षमाकलश। **गा.** २१९। **र. सं.** १५५३। **ले. सं.** १६४५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र ३६६ उपदेशरत्नकोश सस्तवक पत्र २ । **भा.** प्रा. गू. । **गा.** २५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** २० । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३६७ रत्नचूडरास पत्र १८ । **भा.** गू. । **गा.** ३४३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३६८ कलिकालरास पत्र २ । **भा.** गू. । **क.** हीरानदमुनि पिप्पलगच्छीय । **गा.** ४७ । **र. सं.** १४२६ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३६९ सुंदरशृंगार पत्र १६ । **भा.** हिं. । **गा** ३५३ । **ले. सं.** १७५३ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४॥

क्र ३७० रघुवंशमहाकाव्यटीका पत्र १२४ । **भा.** स. । **क.** गुणरत्नगणि । **ग्रं.** ६०७० । **र. सं.** १६६७ । **ले. सं.** १६८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं प.** १०×४॥

अन्त—

रघुवशे लघुटीका बालानां बोधहेतवे । गुणरत्नगणिवादी कृतवान् विदुषांवरः ॥१॥

श्रीमज्जोधपुरे रम्ये मुनिषड्रसमामिते । वर्षे श्रीगुणरत्नाख्यां टीकां बालसुबोधिनीम् ॥२॥

इति श्रीरघुवशे महाकाव्ये कालिदासकृतौ एकोनविंशतितमः सर्ग. समाप्तः । शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥श्री॥ सवत् १६८३ वर्षे भाद्रवा सुदि ८ दिने शनौ मूलनक्षत्रे श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनेश्वरसूरि-सन्ताने भ० श्रीजिनशेखरसूरि तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरि तत्पट्टे श्रीजिनमेरुसूरि तत्पट्टे श्रीजिनगुणप्रभसूरि तत्पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरि तत्पट्टालङ्कार भट्टारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये प. मतिसागरेण लिखिता एषा प्रति श्री-जेसलमेरौ राउल श्रीकल्याणजीविजयराज्ये श्रीपार्श्वतीर्थे ।

याद्दश पुस्तके दृष्ट ताद्दश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥

॥ श्रीरस्तु कल्याण भूयात् ॥ श्री ॥ ग्र. ६०७० ॥

पोथी २९ मी

क्र. ३७१ उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक पत्र ३४–१३० । **भा.** प्रा गू. । **ले सं** १७११ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १८ । **लं. प.** १०×४॥

अन्त—

सवत् १७११ आषाढादि १२ वर्षे कार्त्तिकमासे मनोल्लासे सप्तमीतिथौ शुक्रवारे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे श्रीजेसलमेरुनगरे श्रीपार्श्वजिनतीर्थे श्रीबृहत्खरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्री ५ श्रीजिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये तच्छिष्य प. रत्नसोमेन लिखिता एषा प्रतिरिय स्ववाचनाय । शुभ भवतु लेखकपाठकयो ॥छ॥ श्रीस्तात् कल्याण भूयात् ॥

क्र. ३७२ शीलोपदेशमाला शीलतरंगिणीवृत्तिसह त्रूटक अपूर्ण पत्र १८–७७ । **भा.** प्रा. सं. । **वृ. क.** सोमतिलकसूरि रुद्रपल्लीय । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १७ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३७३ कल्पसूत्र बालावबोधसह अपूर्ण पत्र २–१८१ । **भा.** प्रा गू. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ३७४ शीलोपदेशमालाप्रकरण बालावबोधसह पत्र १५३ । **भा.** प्रा. गू. । **ग्रं.** ६२५० । **ले. सं.** १५७८ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १५ । **लं. प** १०×४॥

अन्त—

संवत् १५७८ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे द्वितीयादिने भोमवासरे श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरि-श्रीजिनशेखरसूरि तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनधर्मसूरि भ० जिनचन्द्रसूरिपट्टालङ्कार श्रीजिनमेरुशिष्य आचार्यविद्यमान श्रीजयसिंघसूरिविजयराज्ये प. राजशेखर लिखितम् । आचन्द्रार्कं यावत् पुस्तकलेखकयोः शुभ भवतु ॥छ॥

क्र. ३७५ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र सस्तबक त्रूटक अपूर्ण पत्र १२५-२४८ । **भा.** प्रा. गू. । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३७६ कल्पसूत्र किरणावलिटीकासह त्रिपाठ पत्र २०१ । **भा.** प्रा. सं. । **मू. क.** भद्रबाहुस्वामी । **टी. क.** धर्मसागरोपाध्याय । **टी. र. सं.** १६२८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ३७७ रघुवंशमहाकाव्यवृत्ति पत्र १५३ । **भा.** सं. । **क.** चारित्रवर्धन । **ग्रं.** ८००० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १७ । **लं. प.** १०।×४॥

पोथी ३० मी

क्र. ३७८ सामाचारीशतक बीजकसह पत्र ११० । **भा.** सं. । **क.** समयसुंदरोपाध्याय । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३७९ वक्रोक्तिजीवित अपूर्ण पत्र ४४ । **भा.** सं. । **क.** कुन्तक महाकवि । **ले. सं.** १९८४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३८० जयदेवछंदःशास्त्र वृत्तिसह पत्र १९ । **भा.** स. । **मू. क.** जयदेव । **वृ. क.** हर्षट । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३८१ जयदेवछंदःशास्त्र पत्र ४ । **भा.** सं. । **क.** जयदेव । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३८२ कइसिट्ठछंदःशास्त्र पत्र १२ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३८३ ज्योतिष्करंडकप्रकीर्णक वृत्तिसह पत्र १३२ । **भा.** प्रा. स. । **वृ. क.** आचार्य मलयगिरि । **ले. सं.** १९८३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प** ११॥।×५।

क्र. ३८४ नंदीसूत्रलघुवृत्तिदुर्गपदप्रबोध पत्र ७७ । **भा.** स. । **क.** श्रीचंद्रसूरि । **ग्रं.** ३३०० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** ११॥।×५।

क्र. ३८५ योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १४ । **भा.** स. । **क.** हेमचन्द्रसूरि । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १२ । **लं. प.** ११॥।×४॥. । पत्र २-३ नथी.

क्र. ३८६ वज्जालग पत्र २० । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १५४१ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १६ । **लं. प.** ११॥।×४॥

अन्त—

संवत् १५४१ वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे राउलश्रीदेवकर्णराज्ये श्रीफाल्गुनमासे कृष्णपक्षे द्वितीया रवौ वासरे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कारश्रीजिनचन्द्रसूरीणामादेशेन पं. देवभद्रमुनिना श्रीसुभाषितग्रन्थः लिखितोऽयम् ॥श्रीकल्याणमस्तु ॥छ॥

क्र. ३८७ सूक्तसंग्रह-सम्यक्त्वकौमुदीकथागत पत्र ७ । **भा.** स. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. ३८८ सप्तस्मरण-खरतरगच्छीय पत्र ७ । **भा.** प्रा. स. । **ले. सं.** १५४७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. ३८९ दुरियरयसमीर महावीरचरित्रस्तोत्र पत्र २ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनवल्लभगणि । **गा.** ४४ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १२ । **लं. प.** ११॥×४॥

क्र. ३९० प्रवचनसारोद्धार अपूर्ण पत्र ३५ । **भा.** प्रा. । **क.** नेमिचन्द्रसूरि । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १८ । **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. ३९१ धनपालपंचाशिका सावचूरि पंचपाठ पत्र ३। **भा.** स.। **मू. क.** धनपाल। **मू. गा.** ५०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ११।।।×४॥

क्र. ३९२ जिनशतकमहाकाव्य पत्र ९। **भा.** स.। **क.** जबूकवि। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** ११। **लं. प.** ११।।।×४॥

क्र. ३९३ मलयसुंदरीचरित्र पद्य पत्र ३०। **भा.** स.। **क.** जयतिलकसूरि आगमिक। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प.** ११।।।×४।।। प्रति उदरे करडेली छे।

क्र. ३९४ उपदेशमाला हेयोपादेयावृत्तिसह पत्र ३-१३५। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** धर्मदास गणि। **वृ. क.** सिद्धर्षि। **स्थि.** सारी। **पं.** १२। **लं. प.** ११।×४॥

क्र. ३९५ कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति तद्धितपर्यंत टिप्पणीसह पंचपाठ पत्र ९०। **भा.** सं.। **ले. सं.** १५५२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ११×४॥

क्र. ३९६ सत्तरमरण संस्कृतस्तबकसह-खरतरगच्छीय पत्र ८। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ११×४॥

क्र. ३९७ कथासंग्रह पत्र ९। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १८। **लं. प.** ११×४॥

पोथी ३१ मी

क्र. ३९८ पंचतंत्र पत्र २-२९८। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ३९९ (१) शत्रुंजयउद्धाररास पत्र १-१०। **भा.** गू.। **क.** समयसुंदरोपाध्याय। **र. सं.** १६८२।

(२) **गौतमस्वामिरास** पत्र ११-१७। **भा.** गू.। **गा.** ४७। **र. सं.** १४१२।

(३) **महावीरस्वामितपपारणास्तवन** पत्र १७-२०। **भा.** गू.। **गा.** ३१।

(४) **शांतिनाथस्तवन** पत्र २०-२२। **भा.** गू.। **क.** गुणसागरसूरि। **गा.** २२।

(५) **सोलसतीस्तवन** पत्र २२-२४। **भा.** गू.। **गा.** ११।

(६) **नवकारनी सज्झाय** पत्र २४-२५। **भा.** गू। **क.** गुणसागरसूरि। **गा.** ९।

(७) **अष्टापदस्तवन** पत्र २६ मु। **भा.** गू.। **क.** समयसुदर। **गा.** ५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** १०।×४।। आ प्रतिनां पानां चोंटी जवाथी अक्षरो उखडी गया छे।

अन्त—

क्र. ४०० ऋषिदत्ताचोपाई पत्र २७। **भा.** गू। **र. सं.** १६९८। **क.** वेगडगच्छीय महिमसमुद्र प्रारब्ध. वेगडगच्छीय क्षमासुदर पूर्णीकृत। **ले. सं.** १७६६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

आदि—॥ ६०॥ श्रीभारत्यै नमः॥

श्रीश्रीसीमधरप्रमुख विहरमाण जिन वीस। सांप्रति सामी विहरता जगजीवन जगदीस ॥१॥
आदिनाथ जिन आदिदेव चउवीस जिनराय। पुंडरीक गौतम प्रमुख गणधर सवि सुखदाय ॥२॥
ए सहूनइ प्रणमी करी प्रणमु सदगुरु पाय। बे कर जोडी भावसु प्रणमु सरसति माय ॥३॥
प्रथम अभ्यास मइ मांडीयु पिण हु मूढ अज्ञान। आई जा तू आपिजे हिव मुझ अविरल वाणि ॥४॥
दान सील तप भावना च्यारे धर्म उदार। तउ पिण सील मोटउ कह्यउ इह परभव सुखकार ॥५॥

ढाल-सील कहुं जग हु वडो—ए देशी

एतलै खड पूरो थयो सात ढाले सुसवादो रे।
पांचमो रूडी परि जाणीइ श्रीजिनचंदसूरि प्रसादी रे। खं० ॥ १ ॥

शिश गच्छ खरतर गुणनिलो वेगडबिरुद श्रीकारो रे ।
महिमसमुद्र सतीतणा गुण गाया अतिह उदारो रे । ख० ॥ २ ॥
सीलै सवि सकट टलै सीलै सुख हुइ मोटा रे ।
सीलस्यु जस वाधे घणो इणमांहे कांइ न खोटा रे । ख० ॥ ३ ॥
ढाल एह पुरी थई कहै महिमसमुद्र मुदो रे ।
छट्ठो खड कहु हिवे भवीयण सुणज्यो आणंदो रे । खं० ॥ ४ ॥
॥ इति श्री पंचम खण्डः ॥

अन्त—मत कांई काढो इणमें खोडी जुगति संघाते जोडीजी ।
तरुण पुरुषने स्वाद वाचतां आवस्यै कोडी सुणतां कान पवित्र सजोडी जी ॥
सवत् सोल अठाणू वरसै १६९८ वैशाख सुदि मन हरखै जी ।
श्रीजिनचद वयणे चित तरसै तिण ए भाख्यो हरखै जी ॥
श्रीमहिमसमुद्र तेहनो सीस भाखी तिण विश्वावीस जी ।
पांच खड तिण पूरण भाखी छेहडें अधुरी राखी जी ॥
श्रीजिनसमुद्र सूर पाटे सोहै श्रीजिनसुदरसुर मन मोहै जी ।
तास आदेसइ तेहने सीसइ खमासुदर सुजगीसइ जी ॥
भाग थाकतो पूरण कीधो सुजस भलो जगमें लीधो जी ।
सतीचरित गायो मन हरसें भाख्यो अतिहरसइ जी ॥
जे ए चरित सांभलस्ये भणस्यै एकचित्त थइ गुणस्यै जी ।
ते लक्ष्मी अविचल लीला लहिस्ये सुख सपति बहु लहीइ जी ॥
.... श्रीऋषिदत्ताना गुण गाया ॥

इति श्रीऋषिदत्ता प्रति योगिन्या कलङ्क चटापन १ पुरबाह्य निकासन २ विरह विलाप कुर्वण ३ पश्चात्तपोवनप्रापन ४ जटिकाप्रयोगेन तापसवेषकुर्वन ५ कुमर मिलन ६ रुक्मिणीपरणण तत्र तापस स्त्री वेष करणन दीक्षा ग्रहण यावत् मोक्ष प्रापण नाम सर्ग षष्ट ॥

इति श्रीऋषिदत्ता चोपाई संपूर्णा । सं. १७६६ वर्षे श्रीईटाथी मध्ये लिखिता । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

क्र. ४०१ हृदयप्रकाश पत्र २-७ । **भा.** स. । **क.** हृदयनारायणदेव । **ले. सं.** १७३८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १२ । **लं. प.** १०×४॥ । **संगीतशास्त्र**विषयक ग्रंथ छे ।

अन्त—इति श्रीमहाराजाधिराजमहाराजगन्छदुर्गाधिपमहाराजश्रीहृदयनारायणदेवविरचितो हृदयप्रकाशः समाप्तः ॥ स. १७३८ वां ।

क्र. ४०२ पंचतंत्र पत्र २३-४६ । **भा.** सं. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ४०३ प्रक्रियाकौमुदी पत्र १०३ । **भा.** स. । **क.** रामचंद्राचार्य । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—श्रीपूज्यश्रीजिनगुणप्रभसूरीणां शिष्यश्रीकमलमंदिरगणीनां शिष्यमहोपाध्यायश्रीगुणसमुद्रेण श्रीप्रक्रियाकौमुदी लिपीकृता ॥ श्री स्तात ॥

क्र. ४०४ सुभाषितश्लोकसंग्रह पत्र ३-१७ । **भा.** सं. । **ले. सं.** १६९९ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १३ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ४०५ सूक्तावली पत्र २७। भा. सं.। ग्रं. १०४६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०।×४॥.। प्रति प्राणीमां भींजाईने खराब थयेली छे।

क्र. ४०६ सुभाषितसंग्रह पत्र ९। भा. सं.। का. १४५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४०७ वाग्भटालंकार पत्र ६२-७२। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १०। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४०८ सुभाषितसंग्रह पत्र ८। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४०९ गुणावलीगुणकरंडकरास पत्र १२। भा. गू.। क. उदयसूरि वेगडगच्छीय। र. सं. १७७३। ले. सं. १७७३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०।×४॥

अन्त—ढाल २३दीठौ २ रे जिम सुदर दरिसण दीठौ–एहनी देशी।

गाया गाया रे में सतीतणा गुण गाया।
कूडकपट मिथ्यात न कीजै धरम दया चित्त ध्याया रे, में सतीतणा गुण गाया ॥१॥
सील प्रमाणे सती गुणावलि परिगल सपद पाया।
बोल चतुर कीधा बिरुदाली श्रीजिनधरम सवाया रे। गुण सीलतणा इम गाया ॥२॥
सतीय चरित सुणतां सुख सपद आणंद अंग उपाया।
ग्रंथ निरीखे भाषा ग्रथी सलही सुगुरु पसाया रे। गुण० ॥३॥
कवि कल्पन जे अधिकौ कहियौ मिच्छादुक्कत दिराया।
भाव करीनै भावौ भवियण सुणतां हरख सवाया रे। ॥४॥
सतरहसै तेहुत्तर वरसै १७७३ शुक्रवार सुख दाया।
माघ शुकल दशमी मन हरखै चरित रच्यौ चित्त लाया रे। गुण० ॥५॥
ससि गच्छ खरतर साख सवाई वेगड बिरुद सवाया।
बडवडा विद्यावत सूरीश्वर सुगुरु जिनेश्वरराया रे। गुण० ॥६॥
श्रीजिनशेखर श्रीजिनधर्मवर मेरुसूरींद मुनिराया।
सुगुरु गुणप्रभसूरि सवाई विधि जिण धन वरसाया रे। गुण० ॥७॥
सूरि जिनेश्वर जिनचद्रसूरिवर जिनसमुद्र युगराया।
तास पट्ट गुरु युगवर गच्छपति श्रीजिनसुदरसूरिराया रे। गुण० ॥८॥
तस पद सेवक उदयसूरीश्वर ग्रन्थ रच्यौ गुण गाया।
सुख संपति भणतां सुणतां नित वछित फल वर दाया रे। गुण० ॥९॥
जहां लगि भूमि लवणदधि सूरिज जां चद्रमडल चदा।
थिर संबंध सदा थिर थावौ उदयसूरि आणदा रे। गुण० ॥१०॥

इतिश्रीगुणावलीगुणकरंडक सेठ गुणसुंदरीचरित्र सपूर्ण समाप्तम्। श्री ॥ छ ॥
॥ शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ॥ श्री ॥

संवत् १७७३ वर्षे माघ शुकल दशम्यां दिने पक्षे फाल्गुनि बहुलतृतीयायां भृगुवासरे श्रीपट्टपत्तनाख्यवेळे श्रीवीरातरां ग्राममध्ये श्रीवेगडखरतरगच्छे भट्टारक श्री १०५ श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे वर्त्तमानभट्टारकश्रीश्री१०४ श्रीजिनोदयसूरिविजयराज्ये प्राज्यसाम्राज्ये पं. विनयसुदर पं. देवकुसल चिर. कानजीप्रमुखयुतेन लिखिता पं. विनयसुंदरस्योद्यमेन श्रेयसे भूयात्। श्रीरस्तु। श्रीवांकुलदेव्याजीप्रसादात् ऋद्धि वृद्धि भूयात् ॥ छ ॥ श्रीकल्याणं भूयात् श्रीश्रेयसे शुभ ॥ छ ॥ प. विनयसुंदरपठनार्थमिदं श्रेयसे स्तात् ॥

क्र. ४१० (१) **सत्तरभेदीपूजा** पत्र १० । **भा.** गू. । **क.** जिनसमुद्रसूरि । **र. सं.** १७१८ ।

(२) **गुर्वावली** पत्र १० मु । **भा.** प्रा. । **गा.** ८ ।

(३) **पंचतीर्थीस्तुति** पत्र १० मुं । **भा.** गू. । **क.** जिनसमुद्रसूरि । **कडी** ४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ४११ **जंबूस्वामिचरितरास** पत्र २३ । **भा.** गू. । **क.** जिनेश्वरसूरि शिष्य वेगडगच्छीय । **गा.** ५८४ । **ग्रं.** १२५० । **ले. सं.** १६०३ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४॥

प्रति पाणीमां भींजाइ खराब थएली छे ।

क्र. ४१२ **साधुवंदनारास** पत्र २२ । **भा.** गू. । **क.** समयसुंदर । **गा.** ५१६ । **र. सं.** १६९७ । **ग्रं.** ५७० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४१३ **ऋषिदत्तारास** पत्र ४-२६ । **भा.** गू. । **क.** जयवंतसूरि । **गा.** ५४९ । **र. सं.** १६४३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०×४॥

पोथी ३२ मी

क्र. ४१४ **शत्रुञ्जयमाहात्म्य** पत्र २९० । **भा.** स. । **क.** धनेश्वरसूरि । **ग्रं.** ९००० । **ले. सं.** १६५९ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १२ । **लं. प.** १०।×४।।।

प्रति पाणीमां भींजाईने खराब थएली छे । वचमां घणां पानां नथी ।

क्र. ४१५ **सिद्धांतचंद्रिका पूर्वार्द्ध** पत्र ३० । **भा.** सं. । **क.** रामचंद्राश्रम । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४।।।

क्र. ४१६ **द्रव्यगुणपर्यायरास सस्तबक अपूर्ण** पत्र २७ । **भा.** गू. । **क.** यशोविजयोपाध्याय स्वोपज्ञ । **गा.** २७० पर्यंत । **स्थि.** मध्यम । **पं.** २२ । **लं. प.** १०।×४।।। । पत्र ८, ९, २१ **नथी** ।

क्र. ४१७ **उत्तराध्ययनसूत्र** पत्र ७१ । **भा.** प्रा. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** ११ । **लं. प.** १०।×४।।।

क्र. ४१८ **चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक** पत्र ९ । **भा.** प्रा. गू. । **मू. क.** वीरभद्रगणि । **मू. गा.** ६३ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४।।। । प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. ४१९ **कल्पसूत्रअवचूरि** पत्र ६३ । **भा.** स. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४।।।

क्र. ४२० **ब्रह्मविलास** पत्र ११६ । **भा.** हिन्दी । **क.** भगवतीदास । **र. सं.** १७५५ ।

(१) **अष्टोत्तरीशतस्तोत्र कवितबद्ध अपूर्ण** पत्र ४-१२ । **भा.** हिन्दी ।

(२) **द्रव्यसंग्रह** पत्र १५-२३ । **भा.** हिन्दी । **क.** भगवतीदास । **र. सं.** १७३१ । **कवित** ७७ ।

(३) **चेतनकर्मचरित्र** पत्र २३-३४ । **भा.** हिन्दी । **क.** भगवतीदास । **र. सं.** १७३६ । **गा.** २९६ ।

(४) **अक्षरबत्रीसी** पत्र ३४-३५ । **भा.** हिं. । **क.** भगवतीदास । **गा.** ३६ ।

(५) **ब्रह्मसमाधिशतक** पत्र ३५-३८ । **भा.** हिं. । **क.** भगवतीदास । **र. सं.** १७१६ । **गा.** १०० ।

(६) **अष्टप्रकारीपूजाकवित** पत्र ३८-३९ । **भा.** हिं. । **कडी** ११ ।

(७) **अष्टप्रातिहार्यकवित** पत्र ३९ मु । **भा.** हिं. ।

(८) **चित्रबद्धकवितत्रिक** पत्र ३९-४० । **भा.** हिं. ।

(९) **वर्त्तमानजिनचोवीसी छप्पा** पत्र ४३-४५ । **भा.** हिं. । **छप्पा** २५ ।

(१०) **विहरमानजिनवीसीछप्पा** पत्र ४५-४७ । **भा.** हिं. । **छप्पा.** २२ ।

(११) **परमातमजयमालिका** पत्र ४७-४८ । **भा.** हिं. । **कडी.** ९ ।

(१२) **मुनिराजजयमालिका** पत्र ४८ मु। **भा.** हिं.। **कडी.** १०।
(१३) **अहिछत्रापुरीपार्श्वनाथछंद** पत्र ४८-४९ । **भा.** हिन्दी । **गा.** ७। **र. सं.** १७३१।
(१४) **परमारथपद सवैया दुहा** पत्र ४९-५२ । **भा.** हिन्दी । **क.** भैया।
(१५) **शिष्यचतुर्दशी** पत्र ५२ मु। **भा.** हिन्दी। **क.** भगवतीदास । **गा.** १४।
(१६) **मिथ्यात्वविध्वंसनचतुर्दशी** पत्र ५२-५४। **भा.** हिन्दी। **क.** भैया। छप्पा-सवैया १५।
(१७) **जिनगुणमालिका** पत्र ५४-५५। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २१ ।
(१८) **गुणमंजरी** पत्र ५५-५८ । **भा.** हि.। **क.** भैया। **गा.** ७४। **र. सं.** १७४०।
(१९) **लोकक्षेत्ररज्जुचोपाई** पत्र ५८ मु। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २० । **र. सं.** १७४० ।
(२०) **मधुबिंदुकथाचोपाई** पत्र ५८-६१। **भा.** हिं. । **क.** भैया । **गा.** ६२। **र. सं.** १७४०।
(२१) **सिद्धचतुर्दशी** पत्र ६१-६२। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **सवैया** १४।
(२२) **निर्वाणकांड** पत्र ६२-६३ । **भा.** हिं. । **क** भैया । **र. सं.** १७४१।
(२३) **गुणस्थानएकादशचढयापडयाकथकसज्झाय** पत्र ६३-६४ । **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** २१ ।
(२४) **कालअष्टक** पत्र ६४ मुं । **भा.** हिं. । **क.** भया। **गा.** ८।
(२५) **उपदेशपच्चीसी** पत्र ६४-६६। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** २७ । **र. सं.** १७४१।
(२६) **नंदीश्वरद्वीपजयमाल** पत्र ६५ मुं। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** १६।
(२७) **बारभावना** पत्र ६५-६६। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** १५।
(२८) **कर्मभेदविवरण** पत्र ६६ मुं। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** १५।
(२९) **सप्तभंगवाणी** पत्र ६६-६७। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** १२।
(३०) **सुबुद्धिचोवीसी** पत्र ६७-७० । **भा.** हिं. । **क.** भगवतीदास। **सवैया** २५।
(३१) **शाश्वतचैत्यजयमाला** पत्र ७०-७१। **भा.** हिं.। **क** भैया। **गा.** ३३ । **र. सं.** १७४५।
(३२) **चौदगुणस्थानजीवसंख्याविचारसज्झाय अपूर्ण** पत्र ७१ मु । **भा.** हिं.।
(३३) **नित्यपच्चीसी** पत्र ७५ मु। **भा** हिं. । **क.** भैया। **सवैया** २५। १८ मा सवैयाथी शरु थाय छे ।
(३४) **अष्टकर्मचोपाई** पत्र ७५-७६। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** २७।
(३५) **सुपंथकुपंथपच्चीसी** पत्र ७६-७९ । **भा** हिं.। **क.** भैया। **सवैया** २५।
(३६) **मिथ्यादृष्टिसम्यग्दृष्टिवर्णन** पत्र ७९-८०। **भा.** हि.। **क.** भैया। **सवैया** ११।
(३७) **आश्चर्यचतुर्दशी** पत्र ८०-८२। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **सवैया** १४।
(३८) **रागादिनिर्णयाष्टक** पत्र ८२मु। **भा.** हिं.। **क.** भगवतीदास। **सवैया** ८।
(३९) **पुण्यपापजगमूलपचीसी** पत्र ८२-८४। **भा.** हिं। **क.** भैया। **सवैया** २७।
(४०) **बावीसपरीसहवर्णन** पत्र ८४-८७ । **भा.** हिं.। **क.** भैया। **स.** ३०।
(४१) **छेंतालीसदोषरहितआहारवर्णनपच्चीसी** पत्र ८७-८९। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** २५। **र. सं** १७५० ।
(४२) **जिनधर्मपच्चीसी** पत्र ८९-९१ । **भा.** हिं.। **क.** भैया । **गा.** २८। **र. सं.** १७५० ।
(४३) **अनादिबत्रीसी** पत्र ९१-९२ । **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** ३३ । **र. सं.** १७५० ।
(४४) **समुद्घातस्वरूप** पत्र ९२। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** ११।
(४५) **मूढाष्टक** पत्र ९२-९३। **भा.** हिं. । **क.** भैया। **गा.** ८८ ।

(४६) **सम्यक्त्वपच्चीसी** पत्र ९३-९४। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २६। **र. सं.** १७५०।

(४७) **वैराग्यपच्चीसी** पत्र ९४-९५। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २५। **र. सं.** १७५०।

(४८) **परमातमछत्रीसी** पत्र ९५-९६। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** ३६। **र. सं.** १७५०।

(४९) **नाटकपच्चीसी** पत्र ९६ मु। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २५।

(५०) **उपादानकारणनिमित्तकारणसंवाद** पत्र ९६-९८। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** ४७। **र. सं.** १७५०।

(५१) **चोवीसतीर्थंकरजयमाल** पत्र ९८-९९। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** १७।

(५२) **पंचइंद्रियचोपाई** पत्र ९९-१०४। **भा.** हिं.। **क.** भगवतीदास। **गा.** १५५। **र. सं.** १७५१।

(५३) **ईश्वरनिर्णयपच्चीसी** पत्र १०४-१०५। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २६।

(५४) **कर्त्ताअकर्तापच्चीसी** पत्र १०५-१०६। **भा.** हिं.। **क.** भैया। **गा.** २६। **र. सं.** १७५१।

(५५) **दृष्टांतपच्चीसी** पत्र १०६-१०७। **भा.** हिं.। **क.** भगवतीदास। **गा.** २५। **र. सं.** १७५२।

(५६) **मनबत्रीसी** पत्र १०७-१०८। **भा.** हिं.। **क.** भगवतीदास। **गा** ३४।

(५७) **सुपनबत्रीसी** पत्र १०९-११०। **भा.** हिं। **क.** भगवतीदास। **गा.** ३८।

(५८) **सूआबत्रीसी** पत्र ११०-१११। **भा.** हिं.। **क.** भगवतीदास। **गा.** ३४। **र सं.** १७५३।

(५९) **प्रकीर्णक सवैया** पत्र १११-११४। **भा.** हिं.। **दोहा.** ४१।

(६०) **ग्रंथोपसंहार** पत्र ११५-११६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥।।

पत्र—१-३, १३-१४, २७, ४०-४२, ७२-७४, ११६ नथी।

क्र. ४२१ गुणकरंडकगुणावलीरास पत्र १६। **भा.** गू.। **क.** जिनहर्ष। **र. सं.** १७५१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** १०×४॥।

क्र ४२२ कविप्रिया पत्र १०९। **भा.** हिं.। **क.** केशवकवि। **ले. सं.** १७११। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १०। **लं. प.** १०×४॥।

क्र. ४२३ राजप्रश्नीयोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ७९। **भा.** स.। **क** मलयगिरि। **ग्रं.** ३७००। **ले. सं.** १६१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

अन्त—इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपाङ्गवृत्तिका समर्थिता।

प्रत्यक्षरगणनातो ग्रन्थमान विनिश्चितम्। सप्तत्रिंशत् शतान्यत्र श्लोकानां सर्वसङ्ख्यया ॥ छ ॥ ग्र. ३७०० ॥

संवत् १६१७ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे त्रयोदशी सोमवारे मूलनक्षत्रे हर्षणयोगे श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरीश्वरसन्ताने श्रीजिनशेखरसूरयः ततः श्रीजिनधर्मसूरयः तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरयः तत्पट्टप्रवराः श्रीजिनमेरुसूरीश्वराः तत्पट्टोद्धरणप्रवणश्रीजिनगुणप्रभसूरिविजयराज्ये प. भक्तिमंदरेण लिपीकृता श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गवृत्ति अवाचीत् किञ्चिद्शोधीच। शुभ भवतु। कल्याणमस्तु ॥ छ ॥ श्री ॥

क्र. ४२४ नलदमयंतीरास पत्र ३३। **भा.** गू.। **क.** समयसुंदर। **स्थि.** मध्यम। **प.** १५। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ४२५ धातुप्रक्रिया पत्र २२। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०×४॥

पोथी ३३ मी

क्र. ४२६ कुमारसंभवमहाकाव्यटीका अपूर्ण पत्र ११६। **भा.** स.। **क.** मल्लिनाथ। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×४॥.। अष्टमसर्ग ७७ श्लोक पर्यंत।

क्र. ४२७ सारावली पत्र ४-१०२। **भा.** स.। **क.** कल्याणवर्म। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे। आदिनां पानां चोंटी गयां छे।

क्र. ४२८ प्रदेशीराजरास पत्र २-४९। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १०। **लं. प.** ९।×४॥.
पत्र १४-१९, ४४-४५ नथी।

क्र. ४२९ भगवतीसूत्र सटीक त्रिपाठ ११मा शतक पर्यंत पत्र ३०२। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** सुधर्मास्वामी। **टी. क.** अभयदेवसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २२। **लं. प.** ९।×४॥.।
पत्र—१२-१५ नथी।

क्र. ४३० सिद्धांतविचाररास पत्र २-९९। **भा.** गू.। **गा.** १८२८। **ले. सं.** १७२४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ४३१ हरिबलरास पत्र ६४। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि वेगडगच्छीय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×४॥
पत्र २० मां—

श्रीखरतरगच्छराजीयो भट्टारक अधिकप्रताप।
श्रीजिनगुणप्रभसूरजी जसु कीरति अछे अयाप ॥ ह० ॥ १३ ॥
मुंह मांग्यो जिण वरसावीयो मेघराजा मन्त्रप्रभाव।
माणिकसूरनें पाटीं थापियो श्रीजिणचंदसूरिंद ॥ ह० ॥ १४ ॥
तास पाटि असि जांणीये श्रीजिनेसरसूर नाम।
शास्त्रसूत्र कलानिलो जसु कीरति ठांम ठांम ॥ ह० ॥ १५ ॥
वेगडबिरुद वडो धरें तसु पाटें अधिक सनूर।
बाफणागोत्र वखाणीयो श्रीजिनचंद सूरिंद ॥ ह० ॥ १६ ॥
तेज प्रताप करी अति दीपतो जेसलमेरु जसु थांन।
रावल रांणा जेहनें माने घणा आपें जे बहु मांन ॥ ह० ॥ १७ ॥
तासु शिष्य पभणें इसो श्रीजिनसमुद्रसूरिंद।
साधुतणा गुण गावतां लहीये परम आनंद ॥ ह० ॥ १८ ॥
ढाळ पहिली पहिला खंडनी सुणतां भविक सुहाय।
पहिलो खंड पुरो थयो श्रीजिनचंद्र पसाय ॥ ह० ॥ १९ ॥

क्र. ४३२ सिंहासनबत्रीसी पत्र ६३। **भा.** गू.। **क.** संघविजय। **गा.** १५८१। **र. सं.** १६७८। **ले.** सं. १७७८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९।×४॥.।

पोथी ३४ मी

क्र. ४३३ सारस्वतव्याकरणचंद्रकीर्तिटीका पूर्वार्द्ध पत्र १५५। **भा.** सं। **क.** चंद्रकीर्तिसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥.। पत्र ७८-१२० नथी।

क्र. ४३४ प्रक्रियाकौमुदी पत्र १२८। **भा.** सं। **क.** रामचंद्राचार्य। **ले. स.** १७१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ४३५ पद्माकोश पत्र ८। **भा.** स.। **ले. सं.** १६९३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ४३६ सारस्वतव्याकरणचंद्रकीर्त्तिटीका पत्र २०३। **भा.** सं.। **क.** चंद्रकीर्त्तिसूरि। **ग्रं.** ७१००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥.। केटलांक पत्रो उदरे करडेलां छे।

क्र. ४३७ वसंतराजशास्त्र सटीक पत्र १०१। **भा.** सं.। **मू. क.** वसंतराज। **टी. क.** भानुचंद्र। **ग्रं.** ३७५०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥.। पत्र ३, २२, २७, ५७ नथी।

क्र. ४३८ परिशिष्टपर्व अपूर्ण पत्र १३३। **भा.** स। **क.** हेमचंद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥.। पत्र ८९–१०५, ११३–१२२ नथी।

क्र. ४३९ भरहेसर वृत्तिसह त्रूटक अपूर्ण पत्र २४८। **भा.** सं.। **वृ. क.** शुभशीलगणि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४॥.। प्रतिनां बधां मळीने लगभग ५० पानां छे, बाकीनां नथी।

क्र. ४४० उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक पत्र १६१। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १७६७। **स्थि.** अतिजीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

पोथी ३५ मी

क्र. ४४१ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्रटीका पत्र १७१। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ४६३०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

प्रतिनां केटलांक पानां उदरे करडेलां छे। पत्र १–२, ११–३० नथी।

क्र. ४४२ बोलविचार पत्र ३९। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥.।

प्रति चोंटी जवाथी अक्षरो उखडी गया छे।

क्र. ४४३ वंदारुवृत्ति पत्र ७२। **भा.** स.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **ग्रं.** २७२८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४४४ दशवैकालिकसूत्र सटीक पत्र ८८। **भा.** स.। **मू. क.** शय्यंभवसूरि। **वृ. क.** सुमतिसूरि। **ग्रं.** ३६००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४४५ उपदेशमालाप्रकरण सस्तबक पत्र ४३। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** धर्मदासगणि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४४६ अभिधानरत्नमाला पत्र २–४७। **भा.** स.। **क.** हलायुध भट्ट। **ले. सं.** १४५४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४४७ नंदीसूत्रवृत्ति पत्र २०५। **भा.** स.। **क.** मलयगिरिसूरि। **ग्रं.** ७७३२। **ले. सं.** १६२७–२९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

मुनिनयनकलावर्षे १६२७ लिपीकर्तुमारभद् भक्तिमन्दिरः। गुणाकिधना कृता पूर्णा एकोनत्रिंशवत्सरे ॥ श्रीजेसलमेरौ श्रीजिनगुणप्रभसूरीणां वाचनाय नृपहरिराजराज्ये ॥

क्र. ४४८ सारस्वतव्याकरणभाष्य पत्र ११०। **भा.** स.। **क.** काशीनाथ। **ग्रं.** ३२०१। **ले. सं.** १७०९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

अन्त—

सर्वलोकोपकाराय काशीनाथेन भाषितम्। भाष्यं सारस्वतस्येद पण्डितैः परिसेव्यताम् ॥१॥

इति श्रीकाशीनाथकृतौ सारस्वतभाष्ये कृत्प्रक्रिया समाप्ता।

संवन्निधिनभात्यष्टिप्रमिताब्दे १७०९ कार्त्तिकासितैकादश्यामिन्दुघस्रे सुयोगे शुभवेलायां श्रीईसमाईलखांन-देशाकोट्टे श्रीचन्द्रकुले कौटिकशाखायां श्रीबृहत्खरतरान्वये श्रीमद्वेगडगच्छे श्रीमज्जिनदत्त जिनकुशल जिनपति जिनेश्वर जिनचन्द्र जिनगुणप्रभ जिनेश्वरसूरिसन्ताने पट्टोद्धरणकरणमार्तण्डावतार भ० श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये तच्छिष्य मुख्य प. महिमासमुद्राणां शिक्ष प. महिमाहर्ष लिपीचक्रे। शुभ भवतु लेखकपाठकयोः। श्री स्तात् ॥छा॥ ग्र. ३२०१॥

क्र. ४४९ सारस्वतव्याकरणचंद्रकीर्त्तिटीका पत्र १०३। **भा.** सं.। **क.** चंद्रकीर्त्ति। **ग्रं.** ७८००। **ले. सं.** १६६२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ४५० उपदेशमालाप्रकरण पत्र २६। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४३। **ले. सं.** १६५१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥.। पुष्पचित्रांकिता।

अन्त—

सवत् १६५१ वर्षे माघ शुद्ध चतुर्थी दिने श्रीनागपुरमध्ये श्रीमति बृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनमाणिक्य-सूरिपट्टोदयाद्रिद्युमणिः सकलभूमण्डलाखण्डलश्रीअकबरसाहिमनःसरसीतिप्रश्नव्याकरणावाप्तप्रधानयुगप्रधानपदवीसन्निधान-युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूरिविजयिराज्ये आचार्यप्रभुश्रीजिनसिंहसूरिगुरुराजे वर्त्तमाने पण्डितप्रवरविजयराजगणि मुख्य शिष्यपण्डित श्रीहर्षसारगणिमणि विनेय प. शिवनिधानगणिना लिखितम्। श्राविकापुण्यप्रभाविकानवलादे पठनार्थम्॥ शुभ भवतु लेखकपाठकयोः॥

पोथी ३६ मी

क्र. ४५१ सारस्वतव्याकरण अपूर्ण पत्र ४५। **भा.** स.। **क.** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥।

क्र. ४५२ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र सस्तबक पत्र १००। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १७७९। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **ल प.** १०×४॥।

क्र. ४५३ सूत्रकृतांगसूत्रस स्तबक अपूर्ण पत्र १००। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं** १६। **लं. प.** १०×४॥।.। प्रतिमां घणां पानां नथी।

क्र. ४५४ उपदेशमालाप्रकरण सस्तबक किंचिदपूर्ण पत्र २-६२। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** धर्मदासगणि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४॥।

क्र. ४५५ कल्पसूत्र बारसा पत्र ३-१०१। **भा** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ६। **लं प** १०×४॥।.। अंतिम पत्र नथी।

क्र. ४५६ कल्पसूत्रबालावबोध सप्तम वाचना पत्र १७। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प** १०×४॥।

क्र. ४५७ कालिकाचार्यकथा पत्र ३५। **भा.** गू.। **ले. सं.** १६९३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥।

क्र. ४५८ कालिकाचार्यकथा बालावबोधसह पत्र १०। **भा.** सं. गू.। **मू. का.** ८१। **ले. सं.** १५८२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४॥।.।

अन्त—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे एकादश्यां तिथौ शुक्रवारे श्रीजेसलमेरौ श्रीवृद्धवेगडगच्छे पूज्य-भट्टारकश्रीजिनशेखरसूरि तत्पट्टे भ. श्रीजिनधर्मसूरि तत्पट्टे भ. श्रीजिनचंद्रसूरयः तत्पट्टे भ. श्रीजिनमेरुसूरयः

पूज्य भ. श्री६जिनगुणप्रेमसूरिशिष्य पण्डितकमलसुंदर प. गुणसागरेण पं. शष्य नाकरकस्यऽलेखि शुभ भूयात् ॥ श्रीशंखेश्वरापार्श्वनाथनी रक्षा श्रीअमीझरापार्श्वनाथनी रक्षाः भ. युगप्रधानश्रीपूज्यजिनसमुद्रसूरविजयराज्ये विजयते श्रीबेगडगच्छे ॥

क्र. ४५९ गीतगोविंद सटीक पत्र ४८। **भा.** स.। **मू. क.** जयदेवकवि। **टी. क.** जगद्धर। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २०। **लं. प** १०×४।।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ४६० उत्तराध्ययनसूत्र प्रथम अध्ययन पत्र २। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४।।.। बन्ने पत्रमां भगवाननु तथा पर्षदा सह आचार्यनु सुंदर चित्र छे।

क्र. ४६१ उत्तराध्ययनसूत्र बालावबोधसह १३ अध्ययनपर्यंत पत्र ४९। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।।.।

क्र. ४६२ निर्यावलिकासूत्र पत्र २८। **भा.** प्रा.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १५। **लं. प** १०×४।।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ४६३ निर्यावलिकासूत्रवृत्ति पत्र १४। **भा.** स.। **क.** श्रीचद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **प** १८। **लं. प.** १०×४।।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ४६४ राजप्रश्नीयोपांग पत्र ४८। **भा** प्रा.। **ग्रं** २०७९। **ले. सं.** १६१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४।।.।

अन्त—

रायपसेणइय सम्मत्त ॥ छ ॥ समर्थितमिद सूत्रम् ॥ ग्र. २०७९ ॥

स. १६१७ वर्षे आषाढ वदि दशमी शनीवारे श्रीखरतरबेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनशेखर-सूरिराजपट्टोद्धरश्रीजिनधर्मसूरिवरान्वयगगनविभाकरश्रीजिनचन्द्रसूरीशपट्टोदयाचलमार्तण्डश्रीजिनमेरुसूरीन्द्राः तत्पट्टो-दयकरश्रीजिनगुणप्रभसूरिवराणां विजयराज्ये वाचनाय च तेषामेव श्रीराजप्रश्नीयोपांगसूत्र। तत्पादाम्बुजभ्रमरेण प्रथमकलाभ्यासप्रवणेन प. भक्तिमदिरेण गौरवेणाऽलेखि। वाच्यमान च चिर नन्दतात् ॥ श्रीः

क्र. ४६५ उपदेशमालाप्रकरण पत्र २-२७। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४।।.। पत्र १, १७-२३ नथी।

क्र. ४६६ अंतगडदशांगसूत्र पत्र ५८। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ८२५। **स्थि.** जीर्ण। **पं** ७। **लं. प.** १०×४।।।

क्र. ४६७ कालिकाचार्यकथा गद्यपद्य पत्र २६। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३६९। **ले. सं.** १५२६। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ९। **लं. प.** १०×४।।।

अन्त—

सवत् १५२६ वर्षे कार्तिक वदि ५ सोमे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने भ० श्रीजिनशेखरसूरि-पट्टालङ्कार भ० श्रीजिनधर्मसूरिशिष्याचार्य श्रीजयानन्दसूरि शिष्यानुशिष्य-क्षमामूर्त्तिना कालिकाचार्यकथानकमलेखि ॥छ॥ श्रीजेसलमेरौ ॥छ॥

क्र. ४६८ महानिशीथसूत्रगत कमलप्रभाचार्यअधिकार सस्तबक पत्र १२। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४।।।

क्र. ४६९ अनेकविचारसंग्रह पत्र ९। **भा.** प्रा स। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।।।

क्र. ४७० अंतकृद्दशांगसूत्र वृत्तिसह त्रिपाठ पत्र ३१। **भा.** प्रा. स। **मू. क.** सुधर्मास्वामी। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४।।।

क्र. ४७१ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १३। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. १०×४॥।

क्र. ४७२ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १५। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०×४॥।

पोथी ३७ मी

क्र. ४७३ स्थानांगसूत्र पत्र १५४। भा. प्रा.। क. सुधर्मास्वामी। ग्रं. ३६००। ले. सं. १५७०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४७४ कल्पांतर्वाच्य पत्र ३१। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४७५ (१) लब्धिकुशलसूरिगीत पत्र १ लु। भा. गू.। क. कीर्त्तिवर्धन। गा. ७।
(२) लब्धिकुशलसूरिगीत पत्र १ लुं। भा. गू.। क. सुमतिहस। गा. ५।
(३) लब्धिकुशलसूरिगीत पत्र १-२। भा. गू.। क. कीर्त्तिवर्धन। गा. ७।
(४) लब्धिकुशलसूरिगीत पत्र २ जु। भा. गू.। क. दयावर्धन। गा. ८।
(५) लब्धिकुशलसूरिगीत पत्र २ जुं। भा. गू.। क. महिमाकीर्त्तिगणि। गा. ६।
स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४७६ सामवेदनिर्णय-द्वादशमहावाक्यनिर्णय पत्र २१-३६। भा स.। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४७७ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र सटीक त्रिपाठ पत्र २७३-३८३। भा. प्रा. सं.। वृ. क. शांतिचंद्रोपाध्याय। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०।×४॥.। वृत्तिनुं नाम "प्रमेयरत्नमंजूषा" छे।

क्र. ४७८ भुवनभानुकेवलिचरित्र बालावबोध पत्र ८२। भा. गू.। क. हरिकलश धर्मघोषगच्छीय। ले. सं. १७२५। स्थि. सारी। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४७९ ऋषिमंडलसूत्रबालावबोध अपूर्ण पत्र ४६। भा. गू.। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १७। लं. प. १०×४॥

क्र. ४८० त्याद्यंतप्रक्रिया अपूर्ण पत्र २-२२९। भा. स। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. १०×४॥.। पत्र ७४-१६१ नथी। प्रति उंदरे करडेली छे।

क्र. ४८१ कुंडेश्वरागम अपूर्ण पत्र ७। भा. स.। ग्रं. १७९। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९॥×४।

क्र. ४८२ प्रत्येकबुद्धरास अपूर्ण पत्र ४०। भा गू.। क. समयसुंदर। र. सं. १६६४। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क्र. ४८३ ऋषिदत्तारास पत्र २३। भा. गू.। क. जयवंतसूरि। ग्रं. ८५०। र. सं. १६४३। ले. सं. १७०४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०×४॥

क्र. ४८४ प्रत्येकबुद्धचोपाई त्रूटक अपूर्ण पत्र ८-१२। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं प. १०।×४॥

क्र. ४८५ चंपकमालारास अपूर्ण पत्र २४। भा. गू.। क. सौभाग्यसागरसूरिशिष्य। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

क्र. ४८६ वीरस्तुतिअध्ययन नरयविभत्तिअध्ययन सूत्रकृतांगसूत्रगत पत्र ४। भा. प्रा.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९॥×४॥।

क्र. ४८७ पूर्णकलशस्थापनाविधि पत्र ९। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९॥।×४॥

क्र. ४८८ **भर्तृहरिशतकबालावबोध** अपूर्ण पत्र ११। भा गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प १०×४॥

क्र. ४८९ **विक्रमचोपाईरास** पत्र २३-४१। भा. गू । क परमसागर। र. सं १७२४। स्थि. मध्यम। पं. १७। ल. प. १०×४॥

क्र. ४९० **शालिभद्रचोपाई** पत्र २१। भा. गू.। क. मतिसार। र. सं. १६७८। स्थि जीर्ण। पं. १३। लं. प. १०×४॥.। प्रति चोंटीने खराब थएली छे।

क्र. ४९१ **जंबूस्वामिरास** पत्र १२-३०। भा. गू। क. नयविमल। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क्र. ४९२ **उत्तराध्ययनसूत्र** पत्र ५२। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

पोथी ३८ मी

क्र. ४९३ **कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति** अपूर्ण पत्र २७-१८०। भा. सं। क. दुर्गसिंह। स्थि. जीर्ण। पं. १४। लं. प. १०।।।×४।।।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे। पत्र ३१-३९ नथी।

क्र. ४९४ **प्रव्रज्याविधानकुलक बालावबोधसह** पत्र ५। भा. प्रा. गू। बा. क. जिनेश्वरसूरि वेगडगच्छीय। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. १०।।।×४।।।।

क्र. ४९५ **पर्यताराधनाप्रकरण सस्तबक** पत्र ६। भा. प्रा. गू.। मू. क. सोमसूरि। मू. गा. ७०। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. १०।।।×४।।।

क्र. ४९६ **पर्यताराधनाप्रकरण सस्तबक** पत्र ६। भा. प्रा. गू.। मू. क. सोमसूरि। मू. गा. ७०। ले. सं १७३३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०।।।×४।।।

क्र. ४९७ **संबंधोद्योत** पत्र ८। भा. स.। क. रभसनंदि। स्थि. जीर्ण। पं. १७। लं. प १०।।।×४।।

क्र. ४९८ **अभिधानचिंतामणिनाममाला अपूर्ण** पत्र ८। भा. स.। क. हेमचंद्रसूरि। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ४९९ (१) **दानविधिप्रकरण** पत्र २ जुं। भा. प्रा.। गा. २२।
(२) **नवकारफलकुलक** पत्र २-३। भा. प्रा.। गा. २३।
(३) **आदिजिनस्तवन** पत्र ३-४। भा. प्रा.। गा. १९।
(४) **आत्मानुशासन** पत्र ४-६। भा. स.। क. पार्श्वनाग। आर्या ७६।
(५) **प्रश्नोत्तररत्नमालिका** पत्र ६-७। भा. स.। क. विमलाचार्य। आर्या. २९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ५०० (१) **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण** पत्र १-७। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १५६।
(२) **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण (प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रंथ)** पत्र ७-११। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ८६। स्थि. मध्यम। पं.११। लं.प. १०।।।×४।।

क्र. ५०१ **उत्तराध्ययनसूत्र सार्थ-अवचूरिसह** पत्र १६३। भा. प्रा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ५०२ **संस्तारकप्रकीर्णक बालावबोध सह त्रिपाठ** पत्र १२। भा. प्रा. गू.। बा. क. क्षेमराजऋषि पार्श्वचंद्रगच्छीय। मू. गा. १२१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ५०३ **तीर्थोद्‌गारप्रकीर्णक** पत्र २४। **भा.** प्रा.। **गा.** १२५४। **ग्रं.** १५४१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ५०४ (१) **चंदाविज्झयप्रकीर्णक** पत्र १-५। **भा.** प्रा.। **गा.** १७४।

(२) **तंदुलवेयालियप्रकीर्णक** पत्र ५-११। **भा.** प्रा.।

(३) **पौषधविधि** पत्र ११मु। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०॥।×४॥।

क्र. ५०५ **कातंत्रव्याकरण तद्धित अपूर्ण** पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥।×४॥.। पत्र २, ४ नथी।

क्र. ५०६ **कातंत्रव्याकरण दौर्गसिंहीवृत्ति व्याख्यानकलाप्रदीपिका** पत्र ६७। **भा.** सं.। **दी. क.** गौतमपंडित। **ग्रं.** ४०७०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥।×८॥

अन्त—इति श्रीवीरसिंहोपाध्याय श्रीगौतमपण्डितविरचितायां दुर्गसिंहोक्तकातन्त्रवृत्तिव्याख्यानकलाप्रदीपिकायां नाम्नि तृतीयः पादः समाप्तः ॥छ॥ शुभमस्तु लेखकपाठकयोः ॥छ॥ ग्र ४०७०।

क्र. ५०७ **नवपदप्रकरण** पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनचंद्र। **गा.** १३९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५०८ **योगशास्त्रस्वोपज्ञवृत्ति अपूर्ण** पत्र ३६। **भा.** सं.। **क.** हेमचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १४॥।×४॥

क्र. ५०९ **सारस्वतव्याकरण सूत्रपाठ** पत्र ९। **भा.** स.। **ग्रं.** ८४। **ले. सं.** १७११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ७। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१० **योगशास्त्र प्रथम प्रकाश** पत्र ४। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्रसूरि। **ग्रं.** ५६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५११ (१) **अनाथीमुनिसंधि** पत्र १-३। **भा.** गू.। **क.** विमलविनय। **गा.** ७१। **र. सं.** १६४७।

(२) **सिंहलसुतचोपाई-प्रियमेलकचोपाई अपूर्ण** पत्र ३-४। **भा.** गू.। **क.** समयसुंदर। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१२ **संदेहदोलावली लघुटीकासह** पत्र ३५। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **वृ. क.** जयसागरोपाध्याय। **ग्रं.** १५५०। **र. सं.** १४९५। **ले. सं.** १५७४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१३ **गणधरसार्धशतकप्रकरण** पत्र ८। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** १५०। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१४ **दानादिकुलक सस्तबक अपूर्ण** पत्र ६। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१५ **ज्ञानार्णवसारोद्धार** पत्र ७। **भा.** स.। **क.** शुभचंद्राचार्य। **ग्रं.** ६२२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २५। **लं. प.** ११॥।×४॥

क्र. ५१६ **प्रशमरतिप्रकरणअवचूरि** पत्र ११। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१७ **पर्यन्ताराधनाप्रकरण बालावबोधसह** पत्र ७। **भा.** गू.। **मू. क.** सोमसूरि। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ५१८ पर्यन्ताराधनाप्रकरण सस्तबक पत्र ७। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** सोमसूरि। **ले. सं.** १७३३। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति चोंटेली छे।

क्र. ५१९ पर्यन्ताराधनाप्रकरण पत्र ५। **भा.** प्रा.। **क** सोमसूरि। **गा.** ७०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५२० नैषधमहाकाव्य अपूर्ण पत्र ३१। **भा.** सं.। **क.** श्रीहर्षकवि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५२१ कातंत्रव्याकरण गोल्हणवृत्ति अपूर्ण पत्र ४८। **भा.** स.। **वृ. क.** गोल्हण। **स्थि.** अतिजीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र ५२२ सारस्वतव्याकरण त्रूटक अपूर्ण पत्र ४३-४६। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र ५२३ रामकलशव्याकरण पत्र १७। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १०। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५२४ संग्रहणीप्रकरण पत्र ४-१०। **भा.** प्रा.। **क.** श्रीचद्रसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५२५ संग्रहणीप्रकरण बालावबोधसह अपूर्ण पत्र ३-२२। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** श्रीचद्रसूरि। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १८। **लं. प** १०॥×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र ५२६ अनेकार्थतिलकनाममाला पत्र २३। **भा.** स.। **क.** महिप। **ग्रं.** ८९८। **ले. सं.** १७८१। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५२७ कतिविद्विचारबालावबोध पत्र १४। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं प.** १०॥×४॥

क्र. ५२८ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र अपूर्ण पत्र २५। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मास्वामी। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ६। **लं. प.** १०॥×४॥.। पत्र ११-१७ नथी।

पोथी ३९ मी

क्र ५२९ खंडनखंडखाद्य पत्र ७२। **भा.** स.। **क.** श्रीहर्ष। **ले. सं.** १५५४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५३० तत्त्वचिंतामणीमंगलवाद पत्र ४। **भा.** स.। **क.** गगेश भट्ट। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५३१ संबंधोद्योत पत्र ७। **भा.** स.। **क.** रभसनदि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५३२ वैद्यक ज्योतिष प्रकीर्णकसंग्रह पत्र १९। **भा.** गू.। **ले. सं.** १७०२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ५३३ (१) जीवविचारप्रकरण पत्र १५-१७। **भा.** प्रा.। **क.** शांतिसूरि।
(२) नवतत्त्वविचारगाथा पत्र १७-१९। **भा.** प्रा.। **क.** जयशेखरसूरि। **गा.** ३१।
(३) गौतमपृच्छा पत्र १९-२३। **भा.** प्रा.। **गा.** ६४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प** १०॥×४॥

क्र. ५३४ गौतमपृच्छाप्रकरण सटीक त्रिपाठ पत्र २४। भा. प्रा. सं.। टी. क. श्रीतिलक। मू. गा. ६४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५३५ गौतमपृच्छा पत्र २। भा. प्रा.। गा. ६४। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५३६ दशवैकालिकसूत्र सावचूरिक पंचपाठ पत्र ४२। भा. प्रा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५३७ गाथासंग्रह पत्र ४। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५३८ कर्मस्तवकर्मग्रंथ (प्राचीन द्वितीय कर्मग्रंथ) पत्र १। भा. प्रा.। गा. ५८। स्थि. श्रेष्ठ। पं २५। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५३९ कर्मविपाककर्मग्रंथ पत्र ४। भा. प्रा.। क. देवेंद्रसूरि। गा. ६१। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५४० दशवैकालिकसूत्र पत्र २०। भा. प्रा.। क. शय्यंभवसूरि। ग्रं. ७००। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५४१ अनेकार्थध्वनिमंजरी-शब्दरत्नप्रदीप पत्र ६। भा. सं.। ग्र. ३५१। स्थि. जीर्ण। पं. १८। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ५४२ एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र ५। भा. प्रा.। क. सिद्धसेनसूरि। गा. ६६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०।×४।।

क्र. ५४३ विचारषट्त्रिंशिका सस्तबक पत्र ५। भा. प्रा. गू.। क. गजसार। मू. गा. ३८। स्थि. जीर्ण। पं. १४। लं. प. १०।×४॥

क्र. ५४४ प्रश्नोत्तरषष्टिशतप्रकरण पत्र १०। भा. स.। क. जिनवल्लभगणि। का. १६१। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

क्र. ५४५ क्षुल्लकभवावलिकाप्रकरण सावसूरिक पंचपाठ पत्र १। भा. स.। मू. गा. २५। स्थि जीर्णप्राय। पं. २४। लं. प. १०।×४॥

क्र. ५४६ सम्यक्त्वस्वरूपस्तवअवचूरि पत्र ५। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।×४॥

क्र. ५४७ तत्त्वार्थसूत्र भाष्यसह पत्र ४५। भा. स.। क. उमास्वातिवाचक स्वोपज्ञ। ग्रं. २२५०। ले. सं. १६४२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. १०।×४॥

अन्त—संवत् १६४२ वर्षे मगशिर सुदि ५ तिथौ श्रीजेसलमेरौ राउलश्रीभीमजीविजयराज्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनगुणप्रभसूरिविनयराज्ये पं. मतिसागरेण लिपीकृता ॥

क्र. ५४८ तत्त्वार्थसूत्र पत्र ५। भा. सं.। क. उमास्वाति वाचक। ले. सं. १६४२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १०।×४॥.।

अन्त—

सवत् १६४२ वर्षे मगशिर सुदि ५ तिथौ श्रीजेसलमेरौ महाराउलश्रीभीमराज्ये खरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनगुणप्रभसूरिविजयराज्ये प. मतिसागरेण लिपीकृतम्। तत्वार्थसूत्रम् ॥ श्री ॥ छ ॥ श्रीः

क्र. ५४९ भवभावनाप्रकरण पत्र ३१। भा. प्रा.। क. मलधारी हेमचंद्रसूरि। गा. ५३१। स्थि. जीर्ण। पं. ९। लं. प. १०।×४॥

क्र. ५५० **सुभाषितश्लोक** पत्र ५। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ५५१ **पाक्षिकक्षामणासूत्र** पत्र २। **भा.** प्रा.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ७। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ५५२ **सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति प्रथमाध्याय** पत्र ५। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञ। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ५५३ **सारस्वतव्याकरण बालावबोध सह अपूर्ण** पत्र १५। **भा.** सं. गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ५५४ **योगवासिष्ठसार योगतरंगिणीटीका सह अपूर्ण** पत्र १५। **भा.** सं. हिन्दी। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥.। जैन टीका छे।

आदि—॥ श्रीअर्हद्भ्यो नमः ॥ श्रीविघ्नविनाशाय नमः ॥

प्रणम्य पूर्वं गुरुपादपद्मं जिनेश्वराणां च गणेश्वराणाम्।
सुवार्तिकं स्वात्महितोपकृत्यै वासिष्ठसारस्य करोमि व्याख्याम् ॥१॥

क्र. ५५५ **षष्टिशतप्रकरण बालावबोधसह** पत्र २४। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** नेमिचंद्र भंडारी। **बा. क.** सोमसुंदरसूरि। **मू. गा.** १६१। **बा. र. सं.** १४९६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ५५६ **षष्टिशतप्रकरण बालावबोधसह** पत्र २५। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** नेमिचन्द्र भंडारी। **मू. गा.** १६१। **बा. क.** सोमसुंदरसूरि। **बा. र. सं.** १४९६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

क्षमाखण्डामृतकुण्डविष्टपमिते १४९६ सवच्छरे श्रीतपागच्छेन्द्रैर्गुरुसोमसुन्दरवरैराचार्यधुर्यैरियम्।
वार्त्ताभिर्विहिता हिताय कृतिनां सम्यक्त्वबीजे सुधावृष्टिः षष्टिशताह्वयप्रकरणव्याख्या चिरं नन्दतु ॥१॥
इति षष्टिशतबालावबोधः समाप्तो विरचितः श्रीसोमसुन्दरसूरिपादैः सर्वजनोपकाराय॥ शुभं भवतु श्रीसङ्घस्य ॥छ॥श्रीः॥

क्र. ५५७ **समुद्रप्रकाशविद्याविलासचोपाई** पत्र ६। **भा.** हिं.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥.। वैद्यकविषयक।

क्र. ५५८ **नवतत्त्वप्रकरण** पत्र २। **भा.** प्रा.। **गा.** ४७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ५५९ **नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पंचपाठ** पत्र २। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** २७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २२। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५६० (१) **नवतत्त्वप्रकरण** पत्र १-३। **भा.** प्रा.। **गा.** ५४।

(२) **उपदेशमालागाथासज्झाय** पत्र ३-४। **भा.** प्रा.। **गा.** ३४।

(३) **तिजयपहुत्तस्तोत्र** पत्र ४ थुं। **भा.** प्रा.। **गा.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५६१ **सारस्वतव्याकरण** पत्र ३६। **भा.** स.। **क.** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ५६२ **उलंठवचननिर्लोठनचोपाई** पत्र ३। **भा.** गू.। **गा.** ७६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०॥×४॥

आदि—५० ॥

वीर जिणिंदह प्रणमी पाय मनि समरी गोतम रिषिराय ।
भली भाति कहीयइ चउपई सि...तह अनुसारइ थई ॥१॥

अन्त—

इम देखी आगम तणी हुंडी कहीअ छई चउपई ।
मन वचन काया मूंकि माया सेवि पाया सरसई ॥
प्रभु आण पाली कुमत टाळी मग्ग सूधउ थापिस्यइ ।
इह लोकि नइ परलोकि नर ते खेमि शिवपुर पामिस्यइं ॥७६॥

इति उत्सूत्रवचननिर्लोठनचउपई समाप्ता । प. लक्ष्मीचन्द्रगणि ॥

क. ५६३ तर्कभाषा पत्र २१ । **भा.** स. । **क.** केशवमिश्र । **ले. सं.** १७७७ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १३ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५६४ सारस्वतमंडन पत्र ७८ । **भा.** स. । **क.** मंडन । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १७ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५६५ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १६ । **भा.** प्रा. । **क.** धर्मदासगणि । **गा.** ५४३ । **ले. सं.** १५६८ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १५ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५६६ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १६ । **भा.** प्रा. । **क.** धर्मदासगणि । **गा.** ५४३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५६७ विदग्धमुखमंडनविषमपदव्याख्या अपूर्ण पत्र ७ । **भा.** सं. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** २१ । **लं. प.** १०॥×४॥. ।

क ५६८ अष्टोत्तरशतपार्श्वनाथनामस्तव पत्र १ । **भा.** सं. । **क.** जिनभद्रसूरि । **का.** १५ । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं प.** १०॥×४॥

क. ५६९ आदिनाथधवल पत्र ३ । **भा.** गू. । **ले. सं.** । १५४५ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** १०।×४॥

क. ५७० रामतियालाप्रबंध-वज्रस्वामीनां फुलडां पत्र २ । **भा.** गू. । **कडी.** २४ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** ११ । **लं. प.** १०।×४॥

क. ५७१ साधुवंदना अपूर्ण पत्र २ । **भा.** गू. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १८ । **लं. प.** १०×४॥. ।

क. ५७२ कुंयरिश्राविकाबारव्रतनियम पत्र ३ । **भा.** गू. । **कडी.** १८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ९ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५७३ शत्रुंजयरास पत्र ६ । **भा.** गू. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १२ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. ५७४ कर्पटहेटकपार्श्वनाथरास पत्र ७-९ । **भा.** गू. । **क.** दयारत्न । **र. सं.** १६९४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १२ । **लं. प.** १०॥×॥

अन्त—

संवत् सोल चाणवइ राजइ श्रीजिणहरष सूरीसकि ।
पासरास गुणपूरीयउ सुविहित दयारतन तस सीस कि ॥३९॥ हुं वलि० ॥

॥ इति कर्पटहेटकपार्श्वनाथरास सपूर्ण । लिखित ज्ञानउदयेन स. दुलीचंदवाचनकृते ॥

क. ५७५ रत्नाकरावतारिका अपूर्ण पत्र ७८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०×४॥

क. ५७६ तर्कभाषा पत्र २२ । **भा.** स. । **क.** केशवमिश्र । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४॥

पोथी ४० मी

क्र. ५७७ कर्मविपाककर्मग्रंथ अपूर्ण पत्र ९। **भा.** प्रा.। **क.** देवेंद्रसूरि। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** ४। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५७८ ज्ञानपंचमीकथा पत्र ७। **भा.** स.। **क.** कनककुशल। **ग्रं.** १५४। **र. सं.** १६५५। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५७९ वाग्भटालंकार सावचूरि पंचपाठ पत्र ७। **भा.** स.। **मू. क.** वाग्भट। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १०॥×४॥।.।

क्र. ५८० दंडकबोलविचार पत्र ११। **भा.** गू.। **ले. सं.** १७३१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५८१ गुणस्थानविचार पत्र ३। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५८२ क्रियाकलाप पत्र २७। **भा.** स। **स्थि** जीर्ण। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४॥।

क्र. ५८३ अनेकार्थनाममाला वृत्तिसह पंचपाठ अपूर्ण पत्र २७८। **भा.** स.। **मू. क.** हेमचंद्रसूरि। **वृ. क.** महेंद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५८४ अव्यय पत्र ५। **भा.** स.। **ले सं.** १५११। **स्थि.** जीर्ण। **पं** १४। **लं प** १०॥×४॥।

क्र. ५८५ बोलसंग्रह पत्र ७। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प** १०॥×४॥।

क्र ५८६ द्रव्यसंग्रह सस्तबक पत्र १२। **भा.** प्रा.। **स्त. क.** नेमिचंद्रसूरि। **मू. गा** ५८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २३। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५८७ प्रियंकरनृपकथा–उपसर्गहरस्तोत्रप्रभावे पत्र ११। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं प** १०॥×४॥।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ५८८ कथासंग्रह पत्र ७। **भा** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २७। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५८९ गौतमकुलक सस्तबक पत्र २। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** २०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५९० वनस्पतिसप्ततिकाप्रकरण पत्र ५। **भा** प्रा.। **क.** मुनिचंद्रसूरि। **गा.** ७७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५९१ सुलसचरित्र पत्र २–२२। **भा.** प्रा.। **गा.** ५१९। **ले. सं.** १६०१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५९२ सुपात्रदानादिविषयककथासंग्रह पत्र १९। **भा.** सं.। **ले. सं.** १५६५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥।

अन्त—सवत् १५६५ वर्षे फागुणवदि ४ शुक्रे श्रीतपागच्छनायकश्रीकमलकलससूरिशिष्यपन्यासस्सोमरत्नगणिशिष्य संघसोमगणिलिखापितम्। सेनापुरनगरे वास्तव्य जोषी मांडण लिखितम्॥ छ॥ शुभ भवतु॥

क्र. ५९३ समवायांगसूत्र पत्र ३७। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मास्वामी। **ग्रं.** १६६७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५९४ दशवैकालिकसूत्र सस्तबक पत्र ५५। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** शय्यंभवसूरि। **स्त. क.** राजचंद्रसूरि पार्श्वचंद्रगच्छीय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥।

क्र. ५९५ पाक्षिकसूत्र पत्र ६। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १७०६। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥।

क. ५९६ अभिधानचिंतामणीनाममाला अपूर्ण पत्र ३-५७। भा. सं.। क. हेमचंद्राचार्य। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. १०॥×४॥।

क. ५९७ अभिधानचिंतामणीनाममाला सावचूरि पंचपाठ पत्र ३६। भा. सं। मू. क. हेमचंद्रसूरि। ले. सं. १५२५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २७। लं. प. १०॥×४॥।

अन्त—श्री ५ तपागच्छाधिराजपरमगुरुश्रीजयचंद्रसूरिपट्टप्रभाकरश्रीउदयनंदिसूरिशिष्यश्रीसूरसुंदरसूरिशिष्यश्रीसोमजयसूरिशिष्यपरमाणुना पं. नंदिसहजगणिनाऽलेखि स. १५२५ वर्षे माघ शुदि ५ दिने। श्रीरस्तु ॥

क. ५९८ अभिधानचिंतामणीनाममाला पत्र २३-३६। भा. स.। क. हेमचन्द्रसूरि। ले. सं. १७९१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०॥×४॥।

क. ५९९ अभिधानचिंतामणीनाममालाअवचूरि अपूर्ण पत्र ८। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०॥×४॥।

क. ६०० चंदनबालाचोपाई पत्र ६। भा. गू.। क. देपालकवि। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥।

क. ६०१ नवतत्त्वचोपाई पत्र ६। भा. गू.। क. मेरुमुनि। गा. ९६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥।

क. ६०२ बालशिक्षाव्याकरण पत्र ३०। भा. स.। क. सग्रामसिंह। र. सं. १३३६। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. १०॥×४॥।

क. ६०३ ज्ञानपंचमीकथा पत्र २१। भा. स.। क. कनककुशल। ग्रं. १५४। स्थि. मध्यम। पं. ९। लं. प. १०॥×४॥।। प्रति चोटेली छे।

क. ६०४ स्थूलभद्रस्वामिचरित्र पत्र १२। भा. सं.। ग्रं. ५४७। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. १०॥×४॥

क. ६०५ श्रीपालचरित्र पद्य पत्र १८। भा. स.। क. सत्यराजगणि। र. सं. १५१४। ले. सं. १५७५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०॥×४॥।

क. ६०६ (१) चंदनबालाभास पत्र ३-५। भा. गू.। गा. २२। गा. ३ थी चालु।
(२) वीरजिनस्तवन आदि पत्र ५-६। भा. गू.।
(३) सिद्धांतगीत पत्र ६ठु। भा. स.।
(४) चिहुगतिनी वेल पत्र ६-१५। भा. गू.। गा. १३५।
(५) मृगावतीभास पत्र १५-१८। भा. गू.। गा. २२।
(६) गौतमस्वामिगीत पत्र १८-१९। भा. गू.। गा ९।
(७) शिवकुमारगीत पत्र १९-२१। भा. गू.। गा. १८।
(८) गुरुगीत पत्र २१ मु। भा. गू.।
(९) सुकोशलमुनिभास पत्र २१-२४। भा. गू.। गा. २२।
(१०) सप्तपदी चंदी पत्र २४-२५। भा. गू.।
(११) पूजाविधिभाससंग्रह पत्र २६-३१। भा. गू.।
(१२) पुण्याढ्यनरेसरभास पत्र ३२-४३। भा. गू.।
(१३) राजसिंहरत्नवतीरास-नवकारप्रभावे पत्र ४३-४६। भा. गू.। गा. २८।
(१४) आदिदेवस्तव पत्र ४६-४८। भा. गू.। गा. २१।

(१५) शांतिनाथविनती पत्र ४९-५०। भा. गू.। गा. १५।
(१६) भुवनतिलककुमारभास पत्र ५१-५२। भा. गू.।
(१७) नरवर्मकुमारभास पत्र ५३-५६। भा. गू.। कडी २०।
(१८) नागदत्तकुमारभास पत्र ५६-५९। भा. गू.। कडी. २३। पत्र ६०-६२ नथी।
(१९) मृगध्वजकुमारभास पत्र ६३-६४। भा. गू.। गा. १८। गा. ६ थी शरु।
(२०) मृगांकलेखाभास पत्र ६४-६८। भा. गू.। गा. ३४।
(२१) विवेकचउपई पत्र ६८-७०। भा. गू.। गा. १९।
(२२) कर्मविचारचउपई पत्र ७०-७१। भा. गू.। गा. १२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ६०७ सिद्धहेमशब्दानुशासन अष्टमाध्याय अपूर्ण पत्र ४८। भा. सं.। क. हेमचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०॥×४॥

पोथी ४१ मी

क्र. ६०८ सिद्धांतचंद्रिका पूर्वार्ध पत्र ४४। भा. स.। क. रामचद्र। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६०९ नेमिनाथचरित गद्य पत्र २-१२३। भा. स.। क. गुणविजय। ग्रं. ५२५५। र. सं. १६६८। ले. सं. १७३५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१० द्रव्यप्रकाश अपूर्ण पत्र १८। भा. हिन्दी। क. देवचन्द्र (?)। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६११ योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्क पत्र २७। भा. स.। क. हेमचन्द्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. ७। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१२ स्थानांगसूत्र अपूर्ण पत्र ४१। भा. प्रा.। क. सुधर्मास्वामी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१३ साल्हात्रऋषिसज्झाय पत्र १। भा गू.। क. शुभमंदिर। गा ११। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥×४।

क्र. ६१४ इलाकुमारचोपाई पत्र ७। भा. गू.। क. न्यानसागर। र. सं. १७७९। ले. सं. १८७०। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१५ कुमारसंभवमहाकाव्य सप्तमसर्गपर्यंत पत्र २९। भा. स.। क. महाकवि कालीदास। ले. सं. १७२३। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१६ कर्मस्तवअवचूरि पत्र ७। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१७ रंगरत्नाकर-नेमिनाथप्रबंध पत्र ८। भा. गू.। क. लावण्यसमय। ग्रं. ४००। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥×४।

क्र. ६१८ सुबाहुकुमाररास अपूर्ण पत्र ३। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६१९ प्रश्नोत्तररत्नमाला सस्तबक पत्र ३। भा. सं. गू.। मू. क. विमलाचार्य। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६२० प्रश्नोत्तररत्नमाला सस्तबक पत्र २। भा. सं. गू.। मू. क. विमलाचार्य। स्थि. जीर्ण। पं. २४। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६२१ ऋषभपंचाशिका सस्तबक पत्र ४। भा. प्रा. गू.। मू. क. धनपाल। मू. गा. ५०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६२२ कायस्थितिप्रकरण सस्तबक पत्र ३-७। भा. प्रा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६२३ सिंदूरप्रकर पत्र ७। भा. स.। क. सोमप्रभाचार्य। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६२४ सिंदूरप्रकर पत्र ५। भा. स.। क. सोमप्रभाचार्य। ग्रं. २२०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९।।।×४।.। प्रति पाणीमां भीजाएली छे।

क्र. ६२५ हलायुधनाममाला पंचमकांड पत्र ३। भा. सं.। क. हलायुध। स्थि. श्रेष्ठ। पं.१५। लं. प. ९।।।×४

क्र. ६२६ कालज्ञान अपूर्ण पत्र २। भा सं.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९।।।४।

क्र. ६२७ शतश्लोकी अपूर्ण पत्र ११। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६२८ रामविनोद अपूर्ण पत्र ८। भा. हिन्दी। क. रामविनोद। स्थि श्रेष्ठ। पं. १९। लं. प. ९।।×४।।

क्र. ६२९ सिद्धान्तालापक पत्र ८। भा. प्रा.। स्थि. मध्यम। पं. ९। ल. प. ९।।×४।।

क्र ६३० धन्यशालिभद्ररास पत्र २५। भा. गू।क. जिनराजसूरि। र. सं. १६७८। ले. सं. १७७१। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं प. ९।।।×४।।.। पत्र ९, १८, १९, २१-२५ सिवायनां पानां नथी।

क्र. ६३१ छंदमाला पत्र २-११। भा. गू.। क. हेमकवि। गा. १९४। र. सं. १७०६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं प. ९।।।×४।।

क्र. ६३२ कथासंग्रह पत्र ६। भा. हिंदी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६३३ ढोलामारुवार्त्ता पत्र ५। भा. गू.। स्थि. जीर्ण। पं. १६। लं. प. ९।।।×।।

क्र. ६३४ प्रश्नोत्तररत्नमालिका सस्तबक पत्र ३। भा. स. गू.। मू. क. विमलाचार्य। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६३५ (१) कायस्थितिस्तोत्र प्रकरण पत्र २-४। भा. प्रा.। गा. २४।

(२) सम्यक्त्वस्तवपच्चीसी पत्र ४-५। भा. प्रा.। गा. २५।

(३) नंदीसूत्रस्थविरावली पत्र ५-७। भा. प्रा.। गा. ५०।

(४) आवश्यकनिर्युक्तिगतकतिचिद्गाथा पत्र ७-८। भा. प्रा.। गा. २९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ९।।।×।।

क्र. ६३६ कर्मविपाककर्मग्रंथ सस्तबक पत्र ११। भा. प्रा. गू.। मू. क. देवेंद्रसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९।।।×४।।

क्र. ६३७ वाजसनेयीसंहिता पत्र १८६। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. ६। लं. प. ९।।।×।।.। वचमां घणां पानां खूटे छे।

क्र. ६३८ जिनबिंबनमस्कार पत्र २। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ९।।×४।

क्र. ६३९ जिनमातृका पत्र ३। भा. गू.। क. सुमतिरंग। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६४० माधवानलकामकंदलाचोपाइ पत्र १९। भा. गू.। कों. कुशललाभ। गा. ५५०। र. सं. १६१६। ले. सं. १६६७। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. ९॥।×४।.।

पत्र १०, ११, १५, १६, १८ नथी।

क्र. ६४१ योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १९। भा. स। क. हेमचंद्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ६४२ कातंत्रव्याकरणसूत्रपाठ पत्र ३। भा. स.। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १३। लं. प. ९॥×४

क्र. ६४३ भीमसेनचोपाई पत्र ६४। भा. गू.। क. जिनसुंदरसूरि। गा. १४२८। र. सं. १७५५। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥×४॥

पोथी ४२ मी

क्र. ६४४ सूत्रकृतांगसूत्र पत्र ५१। भा. प्रा.। क. सुधर्मास्वामी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६४५ पंचपरमेष्ठिनमस्कार पत्र २। भा. गू.। क. जिनवल्लभसूरि। गा. १३। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६४६ पंचसंवरगीत पत्र २। भा. गू.। क. हीरदेव। गा. २४। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १२। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६४७ श्रीपतिपद्धतिवृत्ति पत्र २–२०। भा. स.। स्थि. जीर्ण। पं. २१। लं. प. १०॥।×४॥ प्रति चोंटीने खराब थई छे।

क्र. ६४८ नेमिनाथस्तव तथा देवगुरुगीत पत्र २। भा. स.। स्थि. अतिजीर्ण। पं. ११। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६४९ अढारपापस्थानकभास पत्र २–८। भा. गू.। क. ब्रह्मकवि। ले. सं. १६६८। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०॥।×४॥.। प्रति दरे करडेली छे।

क्र. ६५० संग्रहणीप्रकरण सटीक पत्र ७१। भा. प्रा. सं.। मू. क. श्रीचंद्रसूरि। टी. क. देवभद्रसूरि। ग्रं. ३५००। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६५१ पिंडविशुद्धिप्रकरण पत्र ४। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १०३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६५२ नव्यबृहत्क्षेत्रसमास पत्र ७। भा. प्रा.। क. सोमतिलकसूरि। गा. ३८६। स्थि. जीर्णप्राय। पं. २१। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६५३ नव्यबृहत्क्षेत्रसमास पत्र ११। भा. प्रा.। क. सोमतिलकसूरि। गा. ३८६। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६५४ (१) पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण पत्र ६। भा. प्रा.। क. अभयदेवसूरि। गा. १०६।

(२) पार्श्वनाथविनती पत्र ६ठुं। भा. गू.। क. जिनसमुद्रसूरि। गा. ९। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. ६५५ (१) लघुक्षेत्रसमासप्रकरण पत्र १–१४। भा. प्रा.। क. रत्नशेखरसूरि। गा. २६७।

(२) **दंडकप्रकरण** पत्र १४–१६। **भा.** प्रा.। **क.** गजसारमुनि। **गा.** ३८।

(३) **जीवविचारप्रकरण** पत्र १६–१८। **भा.** प्रा.। **क.** शांतिसूरि। **गा.** ५१।

(४) **नवतत्त्वप्रकरण** पत्र १८–२०। **भा.** प्रा.। **गा.** ४७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६५६ **प्रज्ञापनातृतीयपदसंग्रहणी** पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **गा.** १३३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६५७ **उत्तराध्ययननां गीतो** पत्र १६। **भा.** गू.। **क.** राजशील उपाध्याय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६५८ **लीलावतीगणित** पत्र ३३। **भा.** सं.। **क.** भास्कराचार्य। **ले. सं.** १७२१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६५९ **अनुयोगद्वारसूत्र बालावबोधसह त्रिपाठ** पत्र ८५। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २३। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६० **उववाईसूत्रपर्याय** पत्र १६–२६। **भा.** गू.। **ग्रं.** ६१५। **ले. सं.** १६२२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६१ **विधिप्रपा** पत्र ६६। **भा.** सं.। **क.** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** ३५७४। **र. सं.** १३६३। **ले. सं.** १५५९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।।।×४।।

अन्त—श्रीविधिप्रपापुस्तकग्रन्थः समाप्तः। ग्रं. ३५७४ श्रीः ॥

स. १५५९ वर्षे भाद्रमासे सोमवारे शुक्लपक्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालङ्कार श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टपूर्वाचलचूलिकायां प्रौढप्रतापदिवाकरपूज्यश्रीजिनमेरुसूरिवराणां वाचनाय प. ज्ञानमंदिरमुनिना पण्ड्याभीदाकेन विधिप्रपापुस्तकमलेखि चिरं नन्दतात्। आचन्द्रार्कमिति ॥ छ ॥

क्र ६६२ **योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्टय** पत्र १७। **भा.** सं.। **क.** हेमचंद्रसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६३ **नवरससागर-उत्तममहाराजर्षिचरित्ररास अपूर्ण** पत्र १६–७२। **भा.** गू.। **क.** जिनसमुद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।।।×४।।। पत्र १९ नथी।

क्र. ६६४ **नवतत्त्वना बोल** पत्र ४। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६५ **वसुदेवचरित्ररास** पत्र १४। **भा.** गू.। **क.** महिमासमुद्र। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६६ **गुणसुंदरचोपाई अपूर्ण** पत्र ६। **भा.** गू.। **क.** जिनसुदरसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६७ **सरस्वतीकुटुंबसंवाद** पत्र २–३। **ले. सं.** १७२६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६६८ (१) **सज्जनचित्तवल्लभ** पत्र १–२। **भा.** सं.। **क.** मल्लिषेणसूरि। **का.** २५।

(२) **पूजाप्रकरण** पत्र ३जु। **भा.** सं.। **क.** उमास्वाति वाचक। **आर्या.** १९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २०। **लं. प** १०।।।×४।।

क्र. ६६९ **उत्तराध्ययनसूत्रसावचूरिक पंचपाठ** पत्र १०९। **भा.** प्रा. सं.। **ले. सं.** १५९८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।।।×४।।

क्र. ६७० राजसिंहकुमारचोपाई पत्र ११ । **क.** जटमल नहार । **गा.** २२५ । **र. सं.** १६९३ । **स्थि** जीर्ण । **पं.** १२ । **लं. प.** १०॥।×४॥. । प्रति चोंटीने अक्षरो उखडी गया छे ।

क्र. ६७१ दशआश्चर्य पत्र १० । **भा.** स. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १० । **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ६७२ अनेकार्थध्वनिमंजरी अपूर्ण पत्र ४-१० । **भा.** सं. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १० । **लं. प.** १०॥।×४॥

क्र. ६७३ पांचपांडवरास (द्रौपदीरास) पत्र ३५ । **भा. गू.** । **क.** जिनचन्द्रसूरि । **ग्रं.** १३०० । **गा.** ८७१ । **र. सं.** १६९८ । **ले. सं.** १७०९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०॥।×४॥

अन्त—

इति श्रीपांचपांडवद्रूपदीचरित्रे षष्ठमो प्रस्तावः ।। सर्वगाथा १३९ ढाल ७ ॥ सर्व ग्रन्थाग्रं गाथा ८७१ श्लोक सङ्ख्या १३०० सर्व ढाल ५१ ॥

स. १७०९ वर्षे वैशाख वदि १० दिने मंगलवारे धनिष्ठानक्षत्रे सिद्धियोगे श्रीमेहरानगरे शान्तिजिनप्रासादे श्रीबृहत्खरतरवेगडगच्छे भट्टारक श्री ५ श्रीजिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये तच्छिष्य प. रत्नसोमैर्लिखितम् ॥छ॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ श्रीरस्तात् ॥ कल्याणं भूयात् ॥

क्र. ६७४ चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र पत्र ५२ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** २००० । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** १०॥।×४॥ । पत्र २४मु नथी ।

क्र. ६७५ आराधना पत्र ५० । **भा.** गू. । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** ११ । **लं. प.** १०॥।×४॥

पोथी ४३ मी

क्र. ६७६ जीवविचारप्रकरण अपूर्ण पत्र ९ । **भा** प्रा. । **क.** शांतिसूरि । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ३ । **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. ६७७ ऋषिमंडलप्रकरण पत्र ९ । **भा.** प्रा । **क.** धर्मघोषसूरि । **गा.** २०८ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं** १३ । **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. ६७८ योगशास्त्र आद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १५ । **भा.** स । **क.** हेमचन्द्राचार्य । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** ९॥×४

क्र. ६७९ रामायण पत्र २-७ । **भा** स । **स्थि** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ६८० सुधानिधियोगविवरण पत्र १० । **भा.** स । **क** यादवसूरि । **स्थि.** मध्यम । **पं.**१२ । **लं. प.** १०×४॥.। ज्योतिषविषयक ग्रंथ ।

क्र. ६८१ नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक अपूर्ण पत्र २-१३ । **भा.** प्रा गू. । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ६८२ (१) एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र १-३ । **भा.** प्रा. । **क.** सिद्धसेनसूरि । **गा.** ६६ ।
(२) महावीरस्तवन पत्र ३जु । **भा** प्रा. । **क** अभयदेवसूरि । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १५ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ६८३ लघुक्षेत्रसमासप्रकरण पत्र १० । **भा.** प्रा. । **क.** रत्नशेखरसूरि । **गा.** २६३ । **ले. सं.** १६०० । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १३ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ६८४ नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक अपूर्ण पत्र १३ । **भा.** प्रा. स. । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १७ । **लं. प.** १०×४॥

क. ६८५ गौतमस्वामिसज्झाय पत्र १। भा. गू.। क. कांतिविजय। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १०। लं. प. १०×४॥

क. ६८६ विकपटचोरासीबोलकवित पत्र ८। भा. हिंदी। गा. ९०। ले. सं. १७६४। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. १०×४॥

क ६८७ चौदस्वप्नबालावबोध पत्र ४। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १०। लं. प. १०×४॥

क. ६८८ तपागच्छगुर्वावलि सटीक त्रिपाठ पत्र १९। भा. प्रा. सं.। मू. टी. क. धर्मसागरोपाध्याय स्वोपज्ञ। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०×४॥

क. ६८९ सारस्वत आख्यातप्रक्रिया पत्र २०। भा. स.। क. अनुभूतिस्वरूपाचार्य। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४॥

क. ६९० नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र ७। भा. प्रा. गू.। मू. गा. ५१। ले. स. १७४८। स्थि. मध्यम। पं. १९। लं. प. १०×४॥

क. ६९१ नवतत्त्वप्रकरण पत्र २। भा. प्रा.। गा. ५३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क. ६९२ गणेशकथा अपूर्ण पत्र ४। भा. हिंदी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०×४॥

क. ६९३ स्नात्रपूजा पत्र १०। भा. अपभ्रंश। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क. ६९४ तत्त्वप्रबोधनाटक पत्र १३। भा. हिंदी। क. जिनसमुद्रसूरि। गा. १८१। र. सं. १७३०। ले. सं. १७३०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १९। लं. प. १०×४॥

क ६९५ ज्ञानपंचमीस्तवन पत्र २। भा. गू.। क. लब्धिहर्ष। गा. ७७। स्थि. मध्यम। पं. २३। लं. प. १०×४॥

क. ६९६ योगशास्त्र अपूर्ण पत्र १०। भा. स.। क. हेमचन्द्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क. ६९७ कल्पान्तर्वाच्य प्रथमवाचना पत्र ११। भा. गू.। क. जिनभद्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प १०×४॥। प्रति पाणीमां भींजाएल छे।

क. ६९८ चउगतिचोपाई पत्र ५। भा. गू.। क. वस्तिग। गा. ९६। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. १०×४

क. ६९९ कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति-चतुष्कवृत्ति पत्र ४६-६४। भा. स.। वृ. क. दुर्गसिंह। स्थि. अतिजीर्ण। पं. ९। लं. प. १०×४॥

क. ७०० दशवैकालिकसूत्र पत्र १९। भा. प्रा.। क. शय्यंभवसूरि। ग्रं. ७००। ले. सं. १७०१। स्थि. अतिजीर्ण। पं. १९। लं. प. १०×४॥

क. ७०१ योगचिंतामणि पत्र ४१। भा. स. गू.। क. हर्षकीर्तिसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २१। लं. प. ९॥×४।

क. ७०२ अभिधानचिंतामणिनाममाला पत्र २ थी ८२। भा. सं.। क. हेमचन्द्राचार्य। ले. सं. १६९९। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. १०×४॥

अन्त—इत्याचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितायां अभिधानचिंतामणौ नाममालायां सामान्यकांडः षष्ठः ॥६॥ श्री शुभं भवतु लेखकपाठकयोः। श्रीरस्तु ॥ स्वस्ति श्री सवत् १६९९ वर्षे भाद्रवा वदि ७ दिने चंद्रवारे लिखितं श्रीकर्पटवाणिज्ये भट्टारक श्री ५ श्रीहीरविजयसूरिशिष्यपंडितशिरोरत्नायमानपंडितश्रीदेवविजयगणिशिष्य पं. प्रवरपंडितश्री......विजयगणिवाचनार्थं शिष्यगणि......विजयेन। शुभं भवतु। श्रेयसे कल्याणमस्तु ॥छ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम् ॥१॥

जलाद्रक्षेत् स्थलाद्रक्षेत् रक्षेत् शिथिलबंधनात् । परहस्तगताद्रक्षेत् एवं वदति पुस्तिका ॥२॥

शुभं भूयात् ॥छ॥ मंगलं श्रीसंघस्य भूयात् ॥छ॥ श्रीरस्तु ॥छ॥

क्र. ७०३ मृगावतीचरित्ररास अपूर्ण पत्र ३ थी २६ । **भा. गू.** । **क.** समयसुंदरगणि । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १५ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ७०४ रात्रिभोजनरास पत्र ६ । **भा. गू.** । **गा.** २४९ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १९ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७०५ जीवविचारप्रकरण सस्तबक पत्र ४ । **भा.** प्रा. गू. । **मू. क.** शांतिसूरि । **मू. गा.** ५१ । **ले. सं.** १७७८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७०६ देशीनाममाला पत्र २५ । **भा.** प्रा. । **क.** हेमचन्द्राचार्य । **श्लो.** ९२० । **ले. सं.** १७०१ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०×४॥

अन्त—संवत् १७०१ वर्षे ॥ भाद्रपद शुक्ल दशम्यां । श्रीजेसलमेरौ श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्री५श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराणां शिष्यमुख्य पं. श्रीमहिमासमुद्रेण एषा प्रतिर्लिखापिता । श्रीः ।

क्र. ७०७ परमात्मस्वरूपगीत तथा अध्यात्मगीत पत्र १ । **भा.** हिंदी । **क.** यशोविजयोपाध्याय । **गा.** २१–५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १८ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७०८ प्राकृतपिंगल अपूर्ण पत्र ४ । **भा.** अपभ्रंश । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.**९॥×४॥

क्र. ७०९ धातुपाठ अपूर्ण पत्र ९ । **भा.** स. । **स्थि** श्रेष्ठ । **पं.** २४ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ७१० पंचमहाव्रतस्वाध्याय पत्र ४ । **भा.** गू. । **क.** कांतिविजय । **गा.** २९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ८ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ७११ परमानन्दपंचविंशतिका सस्तबक पत्र ३ । **भा.** सं. गू. । **मू. क.** यशोविजयोपाध्याय । **मू. श्लो.** २५ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १८ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७१२ षड्विंशति प्रश्नोत्तर वार्त्तिक पत्र २८ । **भा.** प्रा. सं. गू. ।**क.** जयसोम उपाध्याय । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १० । **लं. प.** १०×४।

आदि—

नत्वा श्रीसर्वज्ञं ध्यात्वा श्रुतदेवतां विशेषेण । गुरुचरणाम्बुजसेवां कृत्वा विघ्नव्यपोहाय ॥१॥

खरतरगणराजानां श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिराजानाम् । राज्ये श्रीलाभपुरे प्रमोदमाणिक्यगणिशिष्यैः ॥२॥

श्रीजिनसिंहगुरूणामाज्ञातः प्रवचनानुसारेण । जयसोमोपाध्यायैः प्रश्नानामुत्तराणि लिख्यन्ते ॥३॥

क्र. ७१३ नवकारबालावबोध पत्र ६ । **भा.** गूर्जर । **स्थि.** मध्यम । **पं.** ११ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७१४ कर्मस्तवकर्मग्रंथ सस्तबक पत्र ७ । **भा.** प्रा. गू. । **मू. क.** देवेन्द्रसूरि । **मू. गा.** ३५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १७ । **लं. प.** १०×४। । पत्र २ जु नथी ।

क्र. ७१५ भर्तृहरिवैराग्यशतक सटीक पत्र ३५ । **भा.** स. हिंदी । **मू. क.** भर्तृहरि । **टी. क.** जिनसमुद्रसूरि । **टी. र.** १७४० । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १२ । **लं. प.** १०×४। ।

टीकानाम—सर्वार्थसिद्धिमणिमाला ।

अन्त—

नमो वैराग्यनाथाय महावीराय स्वामिने । जिनाय च जिनेन्द्राय कर्मोन्मूलनहस्तिने ॥१॥

नमः श्रीनेमिनाथाय स्थूलभद्राय साधवे । याभ्यां त्यक्ता वरा नारी रता ताभ्यां भवे गता ॥२॥

वज्राय वज्रनाथाय वज्रसेनाय सूरये । नमो योगीन्द्ररूपाय ब्रह्मणे ब्रह्मचारिणे ॥३॥
ये जिनाः ये जिनेन्द्राश्च वैराग्यरसधारिणः । साधवो मानवाश्चैव तेषां नित्य नमो नमः ॥४॥
वैराग्यशतकं नाम ग्रंथं विधे महोत्सवम् । सटीकं सार्थकं पूर्णं कृत जैनाब्धिना शुभम् ॥५॥ इति ।
श्रीवैराग्यशत शास्त्रं महावैराग्यकारणम् ।
सुभार्थं सुगमं चक्रे समुद्रोद्यतसूरिणा ॥६॥ सूरिणा श्रीजिनाब्धिना [पाठां०] ॥
श्रीमत्सर्वार्थसिद्धयाः मणिस्रजि मतिना रत्नकानि धृतानि॰
नानाशास्त्रागरेभ्यः श्रुतश्रुतविधिना मथ्यतानि स्थितानि ।
प्रोद्यत्श्रीवेगडाख्यगगनदिनमणीनां गणीनां सुशिष्यैः,
शिष्यानामर्थसिद्धयै जिनदधिरविभिः शोधनीयानि विद्भिः ॥७॥
शीघ्रगत्या यथा पत्री लिख्यतेऽत्राप्यसौ मया । लिखिता शतकटीका च शोध्या विद्भिः सतां गुणैः ॥८॥
वैराग्यशतकाख्यस्य टीकायां श्रीसमुद्रभिः । सर्वार्थसिद्धिमालायां प्रकाशस्तुरीयो मतः ॥९॥

इति श्रीश्वेतांबरसूरिशिरोमणीनां परमार्हच्छासनगगनांगणदिनमणीनां भट्टारकश्रीजिनेश्वरसूरिसूरीणां पट्टे युगप्रधानपूज्यपरमपूज्यपरमदेवश्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराणां शिष्येण भट्टारकश्रीजिनसमुद्रसूरिणा विरचितायां श्रीभर्तृहरिनामवैराग्यशतकटीकायां सर्वार्थसिद्धिमणिमालायां चतुर्थः प्रकाशोऽय समाप्तः । श्रेयसे स्तात् । कल्याण भूयात् ।

सौधर्मगच्छे गगनांगणेऽस्मिन् श्रीवज्रसूरिरभवत्र सूरिः ।
युगप्रधानान्वयके प्रभाकृद्युद्योतनोद्योतकरो गणीन्द्रः ॥१॥
श्रीवर्द्धमानाभिधवर्द्धमानः सूरीश्वरोऽभूच्च रमाप्रधानः ।
तत्पट्टधारी भुवनैकवीरो जिनेश्वरः सूरिगुणैः सधीरो ॥२॥
जिनाद्यचन्द्रोऽभयदेवसूरिः क्रमेण सूरिर्जिनवल्लभाख्यः ।
तत्पट्टधारी कृतविद्यभूरिर्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥३॥
पत्तिर्जिनाद्यस्तत्पट्टचन्द्रः श्रीचन्द्रपट्टे प्रवरो गणीन्द्रः ।
जिनेश्वरः श्रीकुशलादिसूरिः क्रमेण तु श्रीजिनचन्द्रसूरिः ॥४॥
श्रीवेगडेत्याख्यगणस्य कर्त्ता सपूर्णचुद्राख्यखरस्य धर्त्ता ।
तरांग्यशब्दाभिधगच्छनेता जिनेश्वरः सूरिरभूज्जनेता ॥५॥
श्रीशेखराख्यो जिनधर्मसूरिः ततः पर श्रीजिनचन्द्रसूरिः ।
श्रीमेरुपट्टे सुगुणावतारो गुणप्रभः सूरिगुणैरुदारः ॥६॥
जिनेश्वरस्तस्य विनेय एव तत्पट्टधारी जिनचन्द्रदेवः ।
युगप्रधानः सुगुणैः प्रधानः तत्पट्टधारी सुविराजमानः ॥७॥

सूरेः श्रीजिनचंद्राह्वगुरोः शिष्येण चाग्रहात् । टीका शतप्रबधस्य कृता भाषामयी शुभा ॥८॥
शिष्याणां सेवकाणां च सूर्यान्तः श्रीजिनाब्धिना । सर्वार्थसिद्धयाख्यया मणिमाला मनोहरा ॥ ९ ॥ युग्मम् ॥
पूर्णचन्द्राश्विपक्षाख्य २२१० प्रमिते वीरवत्सरे । पूर्णवेदसमुद्रेन्दुवत्सरे विक्रमाह्वये १७४० ॥१०॥
कार्त्तिक्यां शुक्लपूर्णायां दिने जीवे सुयोगके । औरंगाह्वस्य साहस्य वादे कर्णपूरे तथा ॥११॥
तत्राधीशे नृपेऽस्मिन् बलवशे जयेन्दुके । तीर्थे श्रीवीरनाथस्य पार्श्वे देवगिरेस्तथा ॥१२॥
आरब्धा तु मया तत्र संपूर्णाऽपि कृता तथा । चतुःषष्टिदिनैरेषा सर्वसिद्धार्थदायिनी ॥१३॥
नीतिसिंगारवैराग्याधिकारैस्त्रिशतैः शुभैः । त्रिवर्गान्वितत्रिस्कधा रचितैषा मया [शुभा] ॥१४॥
धर्मार्थकामसंसिद्धा निबद्धा वर्गकैस्त्रिकैः । धारयंति हि वै कंठे तेषां सर्वार्थसाधिनी ॥१५॥

संस्कृता प्राकृता देशी क्वचिदन्याऽपि कीर्त्तिता । ग्वालेरदेशजा जाता सर्वतोऽस्यां धृता स्रजि ॥१६॥
पुनः पाठांतरम्-

क्वचित् संस्कृता प्राकृता चान्यदेशी परं सर्वतो देशग्वालेरजाता ।
बुधैरेव ज्ञात्वा मया प्रथिताभिः गले धार्यतां सर्वभूषार्थसिद्धयै ॥१७॥

यावद्धराभ्रचन्द्राकेंध्रुवसागरपर्वताः । तावन्नन्दतु प्रथोऽय सर्वार्थमणिमालिकम् ॥१८॥
श्रीसौधर्मगणे पट्टधारी श्रीवीरशासने । युगप्रधानश्रेण्यां तु सूरिः श्रीजिनवल्लभः ॥१९॥
गच्छस्तु युगप्रधानानां श्रीसौधर्मिकसंज्ञिकम् । पूर्णसत्यतराह्वं च वेगडामुखशोधनम् ॥२०॥
वेदाधिकद्विसाहस्री संख्या तेषां प्रवर्त्तते । युगेऽस्मिन् युगप्रधानानां श्रीजिनागमसम्महे ॥२१॥
शासने वीरनाथस्य प्रमिते पञ्चमारके । खखचद्राश्विवार्षिक्यां (२१००) भविष्यति कलौ युगे ॥२२॥
प्रसिद्धोऽय समाख्यातः सामाचार्य्यत्र वर्त्तते । स्वय सर्वेषु गच्छेषु ज्ञातव्यो ज्ञानसंग्रहात् ॥२३॥
पट्टे श्रीजिनचन्द्रस्य सूरे श्रीविजयो गुरुः । तत्प्रसादात् कृता पूर्णा श्रीजिनाद्यादिसूरिणा ॥२४॥
वाच्यमाना पठ्यमाना श्रयमाणा त्वहर्निशम् । क्षेमारोग्यायुःकल्याणप्रदा भवतु सर्वदा ॥२५॥
श्रीसर्वार्थसिद्धाया मणिमाला महोत्तमा । यावच्च शासनं जैन तावच्च नदताच्चिरम् ॥२६॥
सर्वागमेष्वधिष्ठाता श्रुतज्ञा श्रुतदेवता । न्यूनाधिकमिहाख्यात तत् क्षमस्व महेश्वरि ! ॥२७॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं० ॥२८॥

मगल सर्वभूतानां सङ्घानां मंगल सदा । मगल सर्वधर्माणा श्रीसर्वज्ञप्रसादनः ॥१॥

लोकाना भूयात् सर्वत्र मगलम् १ । सर्वम. २ । मगल भ ३ । शिवम. ४ । मगलं लेखकस्यापि पाठकस्यापि मगल मगल. ५ । तैला. । शुभ भवतु कल्योणकल्याणमालिका भव्यप्राणिनां लेखकपाठकानां च जिनेशप्रभावतः ६ ॥

क ७१६ ऋग्वेदयजुर्वेदगतशब्दादिनिर्णय पत्र २ थी २० । **भा.** स. । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १० । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७१७ शब्दभेदप्रकाशनाममाला पत्र ७ । **भा.** स. । **क.** महेश्वर कवि । **श्लो.** २७० । **ले. सं** १७७२ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १७ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७१८ माधवानलकामकंदलाचोपाई किंचिदपूर्ण पत्र २ थी २० । **भा.** गूर्जर । **गा.** ५२९ पर्यंत । **क.** कुशललाभ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १५ । **लं. प** १०×४॥

क्र. ७१९ हरिबलचरित्ररास-विबुधप्रिया अपूर्ण पत्र ६४ । **भा.** गूर्जर । **क.** महिमासमुद्रगणि । **गा.** १३१९ पर्यंत । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४॥

पोथी ४४ मी

क्र. ७२० प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र बालावबोधसह पंचपाठ पत्र ९२ । **भा.** प्रा. गु. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १९ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७२१ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १३८ । **भा.** प्रा । **ग्रं.** ४९५४ । **ले. सं.** १५८२ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४।

अन्त—

धम्मकहा सुयखधो सम्मत्तो ॥छ॥ दसहिं वग्गेहिं नायधम्मकहाओ सम्मत्ताओ ॥छ॥ ग्रंथाग्र ४९५४ ॥छ॥
संवत् १५८२ वर्षे श्रीपत्तने श्रीखरतरगच्छाधीश्वरश्रीजिनमाणिक्यसूरिविजयराज्ये श्रीजिनभद्रसूरिसताने

श्रीमुनिसोमोपाध्याय शिष्य वा. विनयकुमारगणि सतीर्थ्य वा. विमलकीर्तिगणिवराणां वाचनार्थं लेखितम्। श्री-ज्ञाताभिध षष्ठांगं मात्रा रंगाईसुश्राविकया स्वश्रेयसे। तच्च वाच्यमानं चिरं नदतु ॥छ॥

क्र. ७२२ जीवाभिगमोपांगसूत्र सस्तबक पत्र १६२। भा प्रा. गू.। मू. ग्रं. ४७५०। उभय ग्रं. १५०००। ले. सं. १७८६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०×४।

अन्त—संवत् १७८६ वर्षे भाद्रवा शुक्ल १४ भोमे॥

क्र. ७२३ निरयावलिकादिपंचोपांगसूत्र सस्तबक पत्र ६९। भा. प्रा. गू.। स्थि. जीर्ण। पं. १४। लं. प. १०×४॥

क्र. ७२४ भक्तामरस्तोत्र भाषा कवित काव्य पद्यविधानसहित पत्र २७। भा. हिन्दी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १०। लं. प. १०×४।

क्र. ७२५ अवचकालोचना पत्र ९। भा. सं.। ले. सं. १७९५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०।×४।

क्र. ७२६ महादंडकबोल पत्र ३४। भा. गू.। ले. सं. १८७०। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०×४।

क्र. ७२७ सप्तपदार्थीमितभाषिणीटीका पत्र ३०। भा. स.। क. माधव सरस्वती। ले. सं. १६८१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०×४॥

क्र. ७२८ धन्वंतरीयनिघंटु पत्र ४२। भा. स.। क. धन्वंतरी। ग्रं. १३००। ले. सं. १६०४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।×४॥

अन्त—॥ संवत् १६०४ वर्षे भाद्रवा वदि ११ शुक्रे लिखितम् ॥

क्र. ७२९ विपाकसूत्र सस्तबक पत्र ४४। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १८१६। स्थि. जीर्णप्राय। पं. २५। लं. प. १०×४।

अन्त—गाढ १२१६ श्रुत ॥ सम्पत्तं। १८ विरखे सोलसट्ठे॥ जोधपुर मध्ये। श्रीआरज्याजी श्री१००८ पुन्याजनी सीषणी सकतु। आरज्या आत्मा अरथी लीक्तं सम्पत्त. ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥

क्र. ७३० लघुक्षेत्रसमासप्रकरण यंत्र स्थापना चित्रसह पत्र ४४। भा. प्रा.। क. रत्नशेखर-सूरि। गा. २६४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०×४।

क्र. ७३१ प्रदेशीराजरास पत्र ५४। भा. गू.। क. ज्ञानसागर आंचलिक। ग्रं. ११००। गा. ७३१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०×४॥

पोथी ४५ मी

क्र. ७३२ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र ८४। भा. प्रा.। ग्रं. २१००। स्थि. श्रेष्ठ। पं ११। लं. प. १०॥×४।

क्र. ७३३ उपासकदशांगसूत्र सस्तबक पत्र ५९। भा. प्रा. गू.। ग्रं. २०००। ले. सं. १६९६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०।×४॥

अन्त—संवत् १६९६ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे ४ दिने वार बुधवासरे लखिता ॥छ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्र. ७३४ अंतकृद्दशांगसूत्र पत्र ४८। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ६। लं. प. १०।×४।

क्र. ७३५ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १९। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४३। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०॥×४।। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ७३६ सुभाषितावलि पत्र ९। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४। प्रति चोंटेली छे।

क्र. ७३७ नमस्कारवार्त्तिक पत्र ४। भा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७३८ सप्तस्मरण सस्तबक अपूर्ण पत्र २३। **भा.**प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७३९ सप्तस्मरण पत्र ९। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७४० देववन्दनादिभाष्यत्रय पत्र ५। भा. प्रा.। **क.** देवेंद्रसूरि। **गा.** १५३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७४१ वंदारुवृत्ति-श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति पत्र ६१। भा. सं.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७४२ सिंदूरप्रकर सस्तबक पत्र १८। भा. सं गू.। **मू. क.** सोमप्रभाचार्य। **मू. का.**९९। **ले. सं.** १७७०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×४॥

अन्त—॥ संवत् १७७० वर्षे मिती भाद्रवा वदि ९ दिने सोमवारे श्रीमन्मूलत्राणमध्ये प. **लीलापति** लि.

क्र. ७४३ श्रावकविधिप्रकाश पत्र २३। भा. गू.। **क.** क्षमाकल्याण। **ले. सं.** १९०९। **र. सं.** १८३८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७४४ (१) समाधितंत्रदुहा पत्र १-६। भा. गू.। **क.** यशोविजयोपाध्याय। **दुहा** १०४।
(२) **हितशिक्षाद्वात्रिंशिका आदि** पत्र ६-२०। **भा.** हिन्दी। **क.** क्षमाकल्याण आदि। गा. ३२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७४५ आगमसार पत्र ४८। **भा.** हिन्दी। **क.** देवचन्द्र। **र. सं.** १७७६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७४६ द्रव्यप्रकाश पत्र ४१। **भा.** हिन्दी। **क.** देवचन्द्रगणि। **ग्रं.** ७७५। **र. सं.** १७९७। **ले. सं.** १९०९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७४७ सुरसुंदरीरास अपूर्ण पत्र १०। **भा.** गू.। **क.** नयनसुंदर। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७४८ जीवविचारप्रकरण सस्तबक पत्र ८। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** शांतिसूरि। **मू. गा.** ५१। **ले. सं.** १८३६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७४९ मजलस पत्र २। **भा.** हिन्दी-उर्दू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७५० सिद्धांतहुंडिका सटीक त्रिपाठ पत्र ४-२३। **भा.** प्रा. सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।

क्र. ७५१ उपासकदशांगसूत्र सस्तबक पत्र ३८। भा. प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७५२ तर्कसंग्रह दीपिका टीका पत्र ११। **भा.** सं.। **क.** अन्नंभट्टोपाध्याय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७५३ महावीरस्वामिचरित्रस्तोत्र बालावबोधसह पत्र १६। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **मू. गा.** ४४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७५४ (१) षष्टिशतप्रकरण पत्र १-९। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्र भंडारी। **गा.** १६१।

(२) **चैत्यवंदनाकुलक** पत्र ९-१२। **भा.** प्रा.। **गा.** ३५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४।

क्र. ७५५ वीतरागस्तव पत्र ११। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०×४।

क्र. ७५६ नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र ५। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** ४७। **ले. सं.** १७०९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २७। **लं. प.** १०।×४।

अन्त—इति श्रीनवतत्त्वसूत्रस्य टबार्थः समाप्ता ॥ संवत् १७०९ पोष वदि१० दिने पंडितश्रीश्रीश्रीसुमतिधर्ममुनीनां वि. सुंदरेण लिपि॥ श्रीहाजीखांनडेरामध्ये ॥

क्र. ७५७ चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक पत्र ९। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** वीरभद्रगणि। **मू. गा.** ६३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७५८ आराधना अपूर्ण पत्र २-९। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं** १३। **लं. प.** ९॥।×४॥

क्र. ७५९ रसिकप्रिया पत्र ३२। **भा.** सं.। **क.** केशवदास। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४।

क्र. ७६० रामविनोद वैद्यक अपूर्ण पत्र ७५। **भा.** हिन्दी। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४

पोथी ४६ मी

क्र. ७६१ (१) गणधरनमस्कार पत्र १। **भा.** गू.। **कडी** ११।

(२) **एकादशगणधरस्तुति** पत्र १-२। **भा.** स.। **का.** १३।

(३) **एकादशगणधर एकादश भास** पत्र २-४। **भा.** गू.। **क.** दानशेखर। **ग्रं.** ११५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७६२ ज्ञानसुखडी पत्र २०। **भा.** गू.। **क.** धर्मचन्द्र वेगडगच्छीय। **र. सं.** १७६७। **ले. सं.** १७८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

सवत सत्तरह सतसठे अश्वनी आदितवार। सित फागुन फुन पचमी आनद जोग सभार ॥६॥
वेगडबिरुद वखाणीये गछ खरतरकी साख। श्रीजिनचंद जतीश्वरू पदमचद गुरु भाख ॥७॥
धमचंद नित ध्याईयइ ज्ञानसुखडी ग्रथ। तस प्रसाद करि जुं लहो मुक्ति मुहलको पथ ॥८॥
थट्टा नगर वखाणीयै श्रावक चतुर सुजाण। सभाचद सोहे भलो कुशलकरण कल्याण ॥९॥
इति श्रीज्ञानसुखडी ग्रथ समाप्तम्। सवत् १७८४ वर्षे नभस्यपरदले चतुर्दशीतिथौ लिखितमस्ति श्रीसक्तिपुरौ श्रीमहावीरमूलनायकप्रासादात् कल्याणमस्तु श्रीरस्तु ॥श्रीः॥

क्र. ७६३ दशवैकालिकसूत्र पत्र ९। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं** ७००। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७६४ नेमिनाथस्तवन पत्र २। **भा.** गू.। **क.** धनचन्द्र। **गा.** ३५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७६५ गौतमपृच्छा बालावबोधसह अपूर्ण पत्र ५। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ७६६ भक्तामरस्तोत्र बालावबोध अपूर्ण पत्र ५। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७६७ नवकारबालावबोध पत्र ७। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७६८ **लिंगानुशासन सावचूरि** पत्र १२। **भा.** सं.। **मू. क.** हेमचंद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७६९ **जीवविचारप्रकरण सस्तबक अपूर्ण** पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७७० **दोढसो कल्याणकनुं गणणुं** पत्र २। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७७१ **चैत्रीपूर्णिमाचैत्यवंदन अपूर्ण** पत्र २। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७७२ **अध्यात्मकल्पद्रुमवृत्ति** पत्र ३५। **भा.** स.। **वृ. क.** रत्नचंद्रगणि। **र. सं.** १६७४। **ग्रं.** २४६०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** १०।×४॥। वृत्तिनु नाम अध्यात्मकल्पलता छे।

क्र. ७७३ **चतुःशरणप्रकीर्णक बालावबोधसह** पत्र ६। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** वीरभद्रगणि। **बा. क.** जयचंद्रसूरि। **ले. सं.** १५१८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४।

अन्त—संवत् १५१८ वर्षे फागुण शुदि १४ दिनेऽलेखि तिलककल्याणगणिभिः ॥ कर्णपुरग्रामे ॥छ॥ इति भद्रम् ॥ श्रीतपागच्छनायकसुविहितचक्रचूडामणिपरमगुरुभट्टारकप्रभुश्रीरत्नशेखरसूरितत्पट्टालंकरणश्रीलक्ष्मीसागरसूरिशिष्येण ॥

क्र. ७७४ **विनयचटकुमाररास त्रूटक अपूर्ण** पत्र २-९। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७७५ **व्रतविचार त्रूटक अपूर्ण** पत्र १२। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७७६ **कल्याणमंदिरस्तोत्र सावचूरि** पत्र ७। **भा.** स गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १६। **लं. प** १०।×४॥। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ७७७ **पिंडविशुद्धिप्रकरणअवचूरि किंचिदपूर्ण** पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.**२१। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७७८ **कातंत्रद्व्याश्रयकाव्यअवचूरि** पत्र १६। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प** १०॥×४॥

क्र. ७७९ **सिद्धांतसारोद्धार टिप्पनकसह** पत्र २१। **भा.** प्रा. गू.। **क.** कमलसयमोपाध्याय। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७८० **प्रतिक्रमणसूत्र सस्तबक** पत्र ३६। **भा.** प्रा. स. गू.। **ले. सं.** १७०८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७८१ **गजसुकुमालरास** पत्र १८। **भा.** गू.। **क.** जिनराजसूरि। **गा.** ५५७। **र. सं.** १६९२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ७८२ **वंदारुवृत्ति-श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति** पत्र ३-७९। **भा.** स.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **ग्रं.** २७००। **ले. सं.** १४७३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ७८३ **पुरंदरचतुष्पदी** पत्र १०। **भा.** गू.। **क.** मालदेव। **गा.** ३०१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७८४ **जीवविचारप्रकरण सस्तबक अपूर्ण** पत्र ५। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ७८५ श्रावकव्रतातिचार पत्र १६। भा. स.। स्थि. जीर्ण। पं. ९। लं. प. १०।×४॥

क्र. ७८६ ओघनिर्युक्ति पत्र २३। भा. प्रा.। क. भद्रबाहुस्वामि। गा. ११६४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

क्र. ७८७ दर्शनसप्ततिकाप्रकरण पत्र ५। भा. प्रा.। गा. ७०। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. १०।×४॥

क्र. ७८८ ब्रह्मतुल्यज्योतिष पत्र ६। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १०।×४।

क्र. ७८९ द्रव्यसंग्रह पत्र ५। भा. प्रा.। क. नेमिचंद्र भडारी। गा. ५९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०×४॥

क्र. ७९० अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र पत्र ५। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४।

क्र. ७९१ स्थविरावली पत्र १२। भा. प्रा.। गा. ५०। स्थि. मध्यम। पं. ४। लं. प.१०×४।

क्र. ७९२ कुमारसंभवमहाकाव्य अवचूरि मू. अ. पत्र २२। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०×४॥

क्र. ७९३ कल्पसूत्रबालावबोध अपूर्ण पत्र ४०। भा. गू.। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १४। लं. प. १०।×४।

क्र. ७९४ कल्पसूत्रबालावबोध पत्र ६४। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।×४।

क्र. ७९५ स्थानांगसूत्रचतुर्थस्थान सस्तबक अपूर्ण पत्र २०। भा. प्रा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०।×४।

क्र. ७९६ रत्नाकरावतारिका अपूर्ण पत्र ८६। भा. स.। क. रत्नप्रभाचार्य। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. १०।×४।। प्रति चोंटेली छे।

क्र. ७९७ भक्तामरस्तोत्र पत्र ४। भा. स.। क. मानतुंगसूरि। का. ४४। स्थि. जीर्ण। पं. ११। लं. प. १०×४॥

क्र. ७९८ (१) एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र १–८। भा. प्रा.। क. सिद्धसेनसूरि। गा. ६६।

(२) विचारषट्त्रिंशिकाप्रकरण सावचूरि पंचपाठ पत्र ८–१२। भा. प्रा. स.। क. गजसारमुनि स्वोपज्ञ।

(३) प्रश्नोत्तररत्नमालिका अपूर्ण पत्र १२–१४। भा. सं.। क. विमलाचार्य। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. १०।×४॥

क्र. ७९९ धर्मरत्नप्रकरण बृहद्वृत्तिसह मू. अ. पत्र ६५–२३५। भा. प्रा. सं.। मू. क. शांतिसूरि। वृ. क. देवेन्द्रसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४।

पत्र ७९ थी १६०, १७६–१८४, १९२, १९३, १९७–२०३ नथी.

क्र. ८०० सप्ततिशतस्थानप्रकरण सस्तबक अपूर्ण पत्र ४१। भा. प्रा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०।×४॥। पत्र १४ थी २२ नथी।

पोथी ४७ मी

क्र. ८०१ गाथाकोश पत्र १। भा. प्रा.। गा. ४०। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १६। लं. प. १०।×४।

क्र. ८०२ श्रीचंद्रीयसंग्रहणीप्रकरण पत्र १३। भा. प्रा.। क. श्रीचंद्रसूरि। गा. ३१४। लै. सं. १७२३। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. १०।×४।

क्र. ८०३ भक्तामरस्तोत्र पत्र ४। **भा.** सं.। **क.** मानतुंगसूरि। **का.** ४४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८०४ भक्तामरस्तोत्र पत्र ४। **भा.** सं.। **क.** मानतुंगसूरि। **का.** ४४। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४।

क्र. ८०५ भक्तामरस्तोत्र सार्थ पत्र २१। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** मानतुंगसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ८०६ सूर्यसहस्रनामस्तोत्र-स्कंदपुराणगत पत्र ८। **भा.** सं.। **ग्रं.** १३०। **ले. सं.** १६९८। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १२। **लं. प.** १०×४।

अन्त—

संवत् १६९८ वर्षे शाके १५६५ प्रवर्त्तमाने मास भाद्रवा वदि चतुर्दशीदिने शुभजोगे श्रीमेहराशुभस्थाने शांतिजिनप्रासादे श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारक श्रीजिनगुणप्रभसूरि तत्पट्टे श्रीजिनेश्वसूरि तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः वाणारसमानसिंघ तत् शिष्य पं. श्रीसदारंगशिष्य खेतसी पठनार्थम्॥ श्रीमानों परत सवत् १७॥

क्र. ८०७ दशआश्चर्य अपूर्ण पत्र ६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८०८ (१) द्वादशभावनासज्झाय पत्र १-३। **भा.** गू.। **क.** जयसोम। **गा.** ७३। **र. सं.** १६७६।

(२) **मेघकुमार चोढालीयुं** पत्र ३-४। **भा.** गू.। **क.** कनककीर्त्ति। **गा** ४७।

(३) **अनाथीसंधि** पत्र ४-६। **भा.** गू.। **क.** विमलविनय। **गा.** ७१। **र. सं** १६४७।

(४) **सुबाहुसंधि** पत्र ६-९। **भा.** गू.। **क.** पुण्यसागरोपाध्याय। **गा.** ९४। **र. सं.** १६७४।

(५) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र ९ मुं। **भा.** स.। **क.** शिवलक्ष्मी। **का.** १३।

(६) **चंद्रप्रभजिनस्तोत्र षड्भाषामय** पत्र ९-१०। **भा.** स.। **का.** १३।

(७) **वैराग्यस्तोत्र-रत्नाकरपचीसी** पत्र १०मुं। **भा.** स.। **क.** रत्नाकरसूरि। **का.** २५।

(८) **चतुर्विंशतिजिनस्तवन** पत्र १०-११। **भा.** स.। **क.** जिनप्रभसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २०। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ८०९ (१) वीसविहरमानजिनगीत पत्र ५। **भा.** गू.। **क.** जिनसागरसूरि।

(१) **षड्बांधवमुनिसज्झाय** पत्र ५ मु। **भा.** गू.। **क.** प्रेममुनि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८१० आराधनाचुपई पत्र ५। **भा.** गू.। **क.** हरिकलशमुनि। **गा.** ८३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४।

अन्त—

संवत भवणनरप्रतिरिससी जो जो विपुण हीयए कसी।
माह सुकल गुरु पुष्यसजोग तेरस तिथि तेरम रविजोग ॥८१॥
खरतरगच्छ जिणचदसूरीस साता सुराजि हर्षप्रभ सीस।
हरीकलस मुनि परम पसाइ कही आराधन आदिपुराणादि ॥८३॥

इति श्रीआराधनाचुपई समाप्ता ॥छ॥

क्र. ८११ गौतमपृच्छाचउपई पत्र २। **भा.** गू.। **क.** नयरंग। **ले. सं.** १६७३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४।

अन्त—संवत् १६७३ वर्षे वईसाख वदि १० दिने ॥ श्रीसिंधुदेशे। श्रीतपुरे लिखितमिदम् ॥

क्र. ८१२ ऋषभदेवविवाहलो पत्र १३। **भा.** गू.। **गा.** २४५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४।

क्र ८१३ विद्याविलासपवाडो पत्र १०। **भा.** गू.। **क.** हीरानंदसूरि। **गा.** १७३। **र. सं.** १४८५। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ८१४ चतुर्गतिवेलि पत्र १०। **भा.** गू.। **गा.** १३५। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ८१५ छोतीकुलक पत्र ५। **भा.** गू.। **क.** पातो। **गा.** ८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८१६ रूपकमाला वृत्तिसह पत्र १७। **भा. मू.** गू.। **भा. वृ.** सं.। **मू. क.** पुण्यनदि। **वृ. क.** रत्नरंगोपाध्याय। **वृ. र.** १५८२। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।

पत्र १३ तथा १६ मु नथी।

क्र. ८१७ (१) नंदीश्वरस्तवन पत्र ४ थु। **भा.** अपभ्रश। **गा.** ११।

(२) **सीमंधरस्तवन** पत्र ४-६। **भा** अपभ्रश। **गा.** २१।

(३) **चोवीसजिनस्तवन** पत्र ६-७। **भा.** अपभ्रश। **गा.** १७।

(४) **चतुर्विंशतिजिनस्तवन** पत्र ७-९। **भा.** अपभ्रंश। **गा.** २४।

(५) **आदिनाथस्तवन** पत्र ९-१०। **भा.** अपभ्रश। **गा.** २१।

(६) **अष्टापदस्तवन** पत्र १०-११। **भा.** अपभ्रंश। **क.** समरो। **गा.** २२।

(७) **सीमंधरजिनस्तुति** पत्र ११-१२। **भा.** प्रा.। **का** ४।

(८) **पंचतीर्थीस्तुति** पत्र १२ मुं। **भा.** स.। **का** ४।

(९) **चतुर्विंशतिजिनस्तुति** पत्र १२ मु। **भा.** स.। **का.** ४।

(१०) **महावीरस्तवन** पत्र १६-२१। **भा.** अपभ्रंश। **क.** लखमण। **गा.** ४-९१।

र. सं. १५२१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४।। पत्र १३-१५ नथी।

क्र. ८१८ श्रीपालचरित्रबालावबोध पत्र ५। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८१९ नंदबत्रीसीचोपाई पत्र २-८। **भा.** गू.। **क.** ज्ञानशील। **गा.** १५७। **र. सं.** १५६०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८२० पुरंदरचोपाई पत्र ९। **भा.** गू.। **क.** मालदेव। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ८२१ (१) गौतमपृच्छाचउपई पत्र १-४। **भा.** गू.। **क.** नयरग। **गा.** ४५।

(२) **द्वादशभावनासंधि** पत्र ४-८। **भा.** गू.। **क.** जयसोम। **गा.** ७२। **र. सं.** १६४६। **ले. सं.** १६९५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

अन्त—

सवत् १६९५ वर्षे जेठमासे सुकलपक्षे कसनपक्षे ६। वरसोमदिने पारीष्य परतापसी पांचाणी लीषतं ॥ भोजगरथटे मध्ये ॥छ॥ बाई लाल वाचना अर्थे ॥ शुभं भवतुः॥ श्रीरस्तुः ॥

क्र. ८२२ **नवतत्त्वविचार** पत्र ७। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क्र. ८२३ **कमलावतीचरित्रचोपाई** पत्र ४। भा. गू.। क. विजयभद्र। स्थि. मध्यम। पं. १८। लं. प. १०×४॥

क्र. ८२४ **एकाक्षरीनाममाला** पत्र १। भा. सं.। क. अमरचंद्र। ग्रं. २०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४।

क्र. ८२५ **सुकोशलऋषिसज्झाय** पत्र २। भा. गू.। क. वियाचारित्र। गा. ४९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क्र. ८२६ **वाग्भटालंकार** पत्र ६। भा. सं.। क. वाग्भट। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १७। लं. प. १०×४॥

क्र. ८२७ **चतुर्मुखश्रीधरणविहारश्रीआदिनाथस्तवन** पत्र ३। भा. गू.। क मेघो। गा. ४८। र. सं. १४९९। ले. सं. १५४७। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १४। लं. प. १०×४॥

अन्त—

जगम तीरथ जयवता ए, गोयमसम गणहर। श्रीसोमसुंदरसूरिराय, नदउ संघ जयकर ॥४५॥
तस पयपकय भमर जिम, नितु धरइ आणद। प्रागवसि धरणिंद साह, चिरकालिंहिं नदउ ॥४६॥
भगति करइ साहामीतणी, छइ दरसण दान। चिहु दिसि कीरति विस्तरी ए, धन धरण प्रधान ॥४७॥
सवत चउदनवाणवइ ए, धुरि काती मासे। मेहउ कहि मइ तवन कीउ मनिरगि उल्हासे ॥४८॥

इति श्रीचतुर्मुखश्रीधरणविहारश्रीआदिनाथस्तवन समाप्तम् ॥छ॥ सवत् १५४७ वर्षे। पं. नंदिसहजगणि सघाटिक अभयप्रभगणिना लिखित कुतबपुरे ॥

क्र. ८२८ **नमस्कारबालावबोध** पत्र ६। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०×४॥

क्र. ८२९ **आदिजिनस्तवन** पत्र २। भा. गू.। क. विजयतिलक। गा. २१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०×४॥

क्र. ८३० **भोज्यनामगर्भित जिनस्तुति** पत्र १। भा. स.। क. साधुराजगणि। का. १२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४॥

क्र ८३१ **उत्तराध्ययनसूत्रछत्रीसभास** पत्र ४। भा. गू.। क. राजशीलोपाध्याय। ले. सं. १६१२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २७। लं. प. १०×४।

अन्त—स. १६५२ वर्षे आसोज वदि ३ गुरौ ॥ श्रीखरतरगच्छे प. श्रीराजहसगणीनां शिष्य प. क्षेमकलश लिखिता ॥

क्र. ८३२ **शांतिनाथस्तवन** पत्र २। भा. गू.। क. प्रेमविजय। गा. १७। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४।

क्र. ८३३ **नंदीसूत्रगत द्वादशांगीआलापक** पत्र १३। भा. प्रा। क. देववाचक। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४॥

क्र. ८३४ **रघुवंशमहाकाव्यअवचूरि** पत्र १७। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०×४॥

क्र. ८३५ **सीमंधरस्वामिरूपवर्णनस्तवन सस्तवक** पत्र २। भा. गू.। गा. १३। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०×४॥

क्र. ८३६ **आलोचनाविचार-योगविध्यन्तर्गत** पत्र १५-२१। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. १०×४॥

क्र. ८३७ सम्यक्त्वकौमुदी पत्र १८ । **भा.** गू. । **ग्रं.** १३०० । **ले. सं.** १७०३ । **स्थि.** अतिजीर्ण । **पं.** १९ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८३८ शत्रुंजयउद्धार पत्र ४ । **भा.** गू. । **क.** नयसुंदर । **गा.** १२४ । **र. सं.** १६३८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १६ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ८३९ देलवाडामंडनआदिजिनस्तवन सावचूरि पंचपाठ पत्र २ । **भा.** अपभ्रंश सं. । **मू. क.** लक्ष्मीसागर । **मू. कडी** २२ । **स्थि.** जीर्ण । **पं.** १९ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८४० जिनपालजिनरक्षितस्वाध्याय पत्र ३ । **भा.** गू. । **क.** आनंदप्रमोद । **गा.** ६९ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८४१ औक्तिक पत्र ८ । **भा.** सं. गू. । **ले. सं.** १७०२ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८४२ चतुःशरणप्रकीर्णक बालावबोधसह पत्र १७ । **भा.** प्रा. गू. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ९ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८४३ चंद्रलेखाचरित्ररास अपूर्ण पत्र १५ । **भा.** गू. । **स्थि.** जीर्णप्राय । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४।। प्रति उधेइए खाधेली छे ।

क्र. ८४४ चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र ३ । **भा.** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **गा.** ६३ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १२ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८४५ अंतरिक्षपार्श्वनाथस्तवन पत्र २ । **भा.** गू. । **क.** सुमतिहंस । **गा.** ३२ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १८ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८४६ रसमंजरी-अलंकारग्रंथ पत्र १९ । **भा.** सं. । **क.** भानुकर भट्ट । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १० । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८४७ चारित्रमनोरथमाला पत्र ३ । **भा.** गू. । **क.** खेमराजमुनि । **गा.** ५३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ८४८ साधुवंदना पत्र ८ । **भा.** गू. । **क.** कुंवरजी । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १८ । **लं. प.** १०×४ ।

क्र. ८४९ सुदर्शनश्रेष्ठिरास पत्र १० । **भा.** गू. । **क.** मुनिसुंदरसूरिशिष्य । **गा.** २६४ । **र. सं.** १५७१ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १३ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८५० कालिकाचार्यकथा पत्र ७ । **भा.** प्रा. । **गा.** ५६ । **ले. सं.** १६५९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ८ । **लं. प.** १०×४॥

आदि—नयरम्मि धरावासे.

अन्त—॥ इति श्रीकालिकाचार्यकथा सपूर्णा ॥

संवत् १६५९ वर्षे भाद्रपदकृष्णैकादश्यां सोमे श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनगुणप्रभसूरीश्वराणां शिष्येण पं. मतिसागरेण लिपीकृता छाजहडगोत्रे वेगडान्वये मं. पंचाइण तत्पुत्र चांपसी उदयसिंह ठकुरसिंह तोडरमल्लपौत्र देवकर्ण इत्यादिपरिवारो जयति । मं. उदयसिंहभार्या श्राविका भानां ज्ञानपुण्यवृद्धयर्थं लेखिता । श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वचैत्ये महीपतिश्रीभीमसेनराज्ये । चिरं नदतादाचन्द्रार्कं यावत् वाच्यमाना प्रतिरियम् ॥ श्री ॥

क्र. ८५१ एकाक्षरीनाममाला पत्र १ । **भा.** सं. । **ग्रं.** ३६ । **ले. सं.** १७४९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** १५ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८५२ जिनचंद्रसूरिगीतादि गुरुगीत पत्र २ । **भा.** गू. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ८५३ विदग्धमुखमंडन पत्र १६। **भा.** स.। **क.** धर्मदास। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८५४ जयतिहुयणस्तोत्र सार्थ पत्र ५। **भा.** अपभ्रंश, गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४।

क्र. ८५५ शांतिनाथचरित्र पद्य टिप्पणीसह पत्र ११२। **भा.** स.। **क.** अजितप्रभसूरि। **ग्रं.** ४९११। **ले. सं.** १६९२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८५६ गुरुगुणषट्त्रिंशिका सटीक पत्र २५। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** १६०२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४।

अन्त—॥ संवत् १६०२ वर्षे भाद्रवा वदि ४नै दिने। श्रीसेरणाग्रामे। श्रीरत्नरगोपाध्यायशिष्य प. अमरगिरिगणिना स्वहस्तेन स्ववाचनार्थं लिखिता ॥ छ ॥

क्र. ८५७ संयममंजरीप्रकरण पत्र २। **भा.** प्रा.। **क** महेश्वरसूरि। **गा.** ३५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ८५८ (१) शीलरास पत्र १-६। **भा.** गू.। **क.** पार्श्वचंद्रीय विजयदेवसूरि। **कडी.** ७८।
(२) **नेमिरास** अपूर्ण पत्र ६-७। **भा.** गू.।
(३) **द्वादशभावना** पत्र ११-१२। **भा.** गू.। **क.** जयसोम। **गा.** ७३। **र. सं.** १६७६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८५९ इंद्रियपराजयशतक सस्तबक पत्र १०। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८६० चंदनबालाचुपई पत्र ५। **भा.** गू.। **क.** देपालकवि। **गा.** १७६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ८६१ ध्यानस्वरूप पत्र १। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४।

पोथी ४८ मी

क्र. ८६२ रघुवंशमहाकाव्य सटीक त्रिपाठ पत्र १७६। **भा.** स। **मू. क.** कालिदास। **टी. क.** धर्ममेरु। **टी. ग्रं.** ८०००। **उभयकुल ग्रं.** १००००। **पं.** २२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०॥×४॥।
प्रतिमां केटलांक पानां नथी। तथा चोंटी गई छे तथा थोडा पानानां टुकडा थएला छे।

अन्त—इति श्रीवाचनाचार्य मुनिप्रभगणि। शिष्य धर्ममेरुविरचितायां रघुकाव्यटीकायां वंशप्रतिषेधराज्ञीराज्यनिवेशो नामैकोनविंशतितमः ॥१९॥ इति श्रीरघुवंशटीका समाप्तेति ॥ श्रेयो भूयात् ॥

क्र. ८६३ समाधितंत्रबालावबोध पत्र १५४। **भा.** गू.। **क.** पर्वत धर्मार्थी। **ले. सं.** १७७९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×४॥।

अन्त—

इति परवतधर्मार्थीकृत बालावबोध समाधितंत्र अध्यात्मशास्त्र समाप्तम् ॥ श्री ॥ सवत् १७७९ वर्षे मिती कार्त्तक सुदि १० बुद्धिवासरे लिखत श्रीनगरथटामध्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रसूरिसूरीश्वराणां शिष्यमुख्य पण्डितप्रवर श्रीपदमचन्द्रजी तत्शिष्य प. धर्मचंद्रेण लिखत शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ श्री ॥

क्र. ८६४ न्यायप्रवेशवृत्ति टिप्पणीसह पंचपाठ पत्र ५। **भा.** सं.। **वृ. क.** हरिभद्रसूरि। **पं.** २५। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥। प्रति प्राचीन अने अतिसुंदर छे।

क्र. ८६५ पिंडविशुद्धिप्रकरण सस्तबक पत्र ७। भा. प्रा. गू.। मू. क. जिनवल्लभगणि। गा. १०३। ले. सं. १५९६। पं. २०। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ८६६ (१) चतुर्विंशतिजिनवर्णलांछनादि अष्टक पत्र २। भा. अपभ्रंश। कडी. ८।

(२) वर्धमानाष्टक पत्र २ जुं। भा. स.। कडी. ८।

(३) गुरुपरिवाडी पत्र २–३। भा. अपभ्रंश। कडी. ८। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ८६७ नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र ७। भा. प्रा. गू.। गा. ४६। पं. १५। लं. प. १०॥×४॥।

क्र. ८६८ द्वारिकामाहात्म्य अपूर्ण पत्र ११। भा. सं.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥×४॥।

क्र. ८६९ भोजचरित्र पद्य पत्र ८–३६। भा. स.। क. राजवल्लभोपाध्याय। ले सं. १६३४। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।॥×४॥

अन्त—

इति श्रीधर्मघोषगच्छे धर्मसूरिसंताने पाठकराजवल्लभकृते श्रीभोजचरित्रे भानुमतीविवाहवर्णनो देवराजसज्जीभूतवर्णनो नाम पचमः प्रस्तावः। श्रीभोजचरित्र सपूर्ण समाप्तम् ॥ ग्रन्थाग्रम् १८०१॥ सवत १६३४ वर्षे चैत्र वदी १० दिने अकबरपातीशाहविजयराजे। कुभमेरगढवीग्रहे विजयो भवति। वा. श्रीभावधर्मशीष्यगणि श्रीउदयनंद सीष्यष्य हारी लीखत स्वलूमधे मांगलीकययो भवती कलीकालसमा चैत्रे. दसमी बुधवासरे। गोपाचलसंस्थानमध्ये लीक्षतं भोजचरीत्रज। सुभ सघु भवती॥

क्र. ८७० (१) आगमोद्धारगाथा पत्र ११२–११४। भा. प्रा.। गा. ७१।

(२) षट्स्थानकप्रकरण अपूर्ण पत्र ११४–१२०। भा. प्रा.। पं. ९। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।॥×४॥

क्र. ८७१ पुष्पमालाप्रकरण पत्र ३५। भा. प्रा.। क. मलधारी हेमचन्द्रसूरि। गा ५०६। ले. सं. १५९६। पं. ९। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।॥×४।

अन्त—सवत् १५९६ वर्षे ज्येष्ठवदि १० दिने शनिवारे श्रीयोद्धपुरे श्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमालदेवविजयराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्रीश्रीश्रीजिनदेवसूरिविजयराज्ये श्रीपुष्फमालाप्रकरण लिखित हर्षकुंजरेण ॥छ॥

क्र. ८७२ कल्याणमंदिरस्तोत्र वृत्तिसह पत्र १२। भा. स.। मू. क. सिद्धसेनाचार्य। ले. सं. १८५१। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।॥×४॥।

क्र. ८७३ (१) चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र ४–५। भा. प्रा.। क. वीरभद्रगणि। गा. ६३।

(२) नवतत्त्वप्रकरण पत्र ५–९। भा. प्रा.। गा. ४७।

(३) जीवविचारप्रकरण पत्र ९–१३। भा. प्रा.। क. शांतिसूरि। गा. ५१।

(४) शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र १३–२१। भा. प्रा.। क. जयकीर्त्तिसूरि। गा ११५।

(५) स्थविरावली पत्र २१–२४। भा. प्रा.। क. देववाचक। गा. ५०। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं प. १०।॥×४॥।

क्र. ८७४ भक्तामरस्तोत्र वृत्तिसह त्रिपाठ पत्र १३। भा. सं.। मू. क. मानतुंगसूरि। वृ. क. अमरप्रभसूरि। ग्रं. ४०१। ले. सं. १८५१। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।॥×४॥।

क्र. ८७५ कल्पसूत्र सस्तबक त्रु. अ. पत्र ५-१२। भा. प्रा. गू.। पं. २२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।।×४।।।

क्र. ८७६ दशवैकालिकसूत्र अपूर्ण पत्र ५। भा. प्रा.। क. शय्यंभवसूरि। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ८७७ जीवविचारप्रकरण पत्र २। भा. प्रा.। क. शांतिसूरि। गा. ५१। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ८७८ अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र वृत्तिसह पंचपाठ पत्र ६। भा. प्रा. सं.। वृ. क. अभयदेवसूरि। पं. २१। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।×४।।

क्र. ८७९ कल्पसूत्रवृत्ति त्रु. अ. पत्र ६७-७८। भा. स.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।।×४।।

क्र. ८८० अमरदत्तमित्राणंदकथा बालावबोध अपूर्ण पत्र १३-१८। भा. गू.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।।×४।।

क्र. ८८१ चतुःशरणप्रकीर्णक बालावबोधसह पत्र १०। भा. प्रा. गू.। मू. क. वीरभद्रगणि। गा. ६३। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।×४।

क्र. ८८२ कल्याणमंदिरभाषास्तोत्र पत्र २। भा. हिन्दी। क. बनारसीदास। ले. सं. १७७१। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।।×४।।।

क्र. ८८३ सिद्धान्तआलापक पत्र ६। भा. प्रा.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।×४।।।

क्र. ८८४ मनोवेगवायुवेगचोपाई पत्र ४-५६। भा. गू.। क. दर्शनविजय। र. सं. १७०१। गा. ९०८। ग्रं. १२५२। ले. सं. १७५६। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८८५ वीरचरित्रस्तोत्र पत्र ३। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ४५। पं. ८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८८६ चन्द्रप्रभस्वामिषड्भाषामयस्तोत्र पत्र ४। भा. षड्भाषा। गा. १३। पं. ४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८८७ जीवाभिगमोपांगसूत्र अपूर्ण पत्र ४२। भा. प्रा.। पं. ४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८८८ तत्त्वार्थसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र २०। भा. सं. गू.। मू. क. उमास्वाति वाचक। पं. ३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८८९ तत्त्वार्थसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र १४। भा. प्रा. गू.। मू. क. उमास्वाति वाचक। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

क्र. ८९० शत्रुंजयरास पत्र १०। भा. गू.। क. समयसुंदरोपाध्याय। र. सं. १६८२। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।×५,। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ८९१ श्रीचंद्रीयसंग्रहणीप्रकरण सस्तबक यंत्रसह पत्र ४४-७१। भा. प्रा. गू.। मू. क. श्रीचंद्रसूरि। ले. सं. १८८६। पं. २०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।।।

पोथी ४९ मी

क्र. ८९२ कल्पसूत्र सस्तबक पत्र १३२। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १८४९। पं. १२। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०।×५

क्र. ८९३ **एकविंशतिस्थानप्रकरण किंचिदपूर्ण** पत्र ३। भा. प्रा.। क. सिद्धसेनसूरि। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ८९४ **भर्तृहरित्रिशती सुखबोधिनीटीकासह** पत्र ५०। भा. सं.। मू. क. भर्तृहरि। टी. क. श्रीनाथव्यास। ग्रं. ३०००। र. सं. १८१८। ले. सं. १८७७। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।॥

क्र. ८९५ **आचारांगसूत्रद्वितीयश्रुतस्कंध बालावबोधसह पंचपाठ अपूर्ण** पत्र ३-१११। भा. प्रा. गू.। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. ८९६ **रामचरित्ररास** पत्र ९७। भा. गू.। क. केशराज मुनि। ग्रं. ४५००। र. सं. १६८३। ले. सं. १९१५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. १०×४।॥

क्र. ८९७ **सूत्रकृतांगसूत्र प्रथमश्रुतस्कंध सस्तबक** पत्र ६५। भा. प्रा. गू.। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।॥

क्र. ८९८ **सूत्रकृतांगसूत्र द्वितीयश्रुतस्कंध सस्तबक** पत्र १०५। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १९४८। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।॥

क्र. ८९९ **सुभाषितसंग्रह** पत्र ४-१७। भा. स. प्रा. गू.। पं. १२। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०×४॥

क्र. ९०० **अनुत्तरौपपातिकसूत्र वृत्ति** पत्र ३। भा. स.। वृ. क. अभयदेवसूरि। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९०१ **लघुस्तव टीका सह** पत्र २-१६। भा. सं.। वृ. क. सोमतिलकसूरि। ग्रं. ४७४। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।॥

क्र. ९०२ **दंडकप्रकरण तथा नवतत्त्वप्रकरण** पत्र १५। भा. प्रा.। पं. ४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. ९०३ (१) **सामायिकदोषनिवारणबत्रीसी** पत्र २। भा. गू.। क. प्रमोदमाणिक्य। गा. ३२।

(२) **पौषधविधिस्वाध्याय** अपूर्ण पत्र २-४। भा. गू.। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. ९०४ **कुमतिउत्थापनचर्चा** पत्र १४। भा. हिन्दी। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९०५ **लघुक्षेत्रसमासप्रकरण सस्तबक यंत्र स्थापना सह** पत्र ३२। भा. प्रा. गू.। मू. क. रत्नशेखरसूरि। मू. गा. २६२। ले. सं. १७४२। पं. १५। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १०।×४॥

क्र. ९०६ **जीवविचारप्रकरण** पत्र ८। भा. प्रा.। क. शांतिसूरि। गा. ५१। ले. सं. १९०९। पं. ४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. ९०७ **कल्पसूत्र अष्टमक्षण-वाचना** पत्र १७। भा. गू.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।॥

क्र. ९०८ **वीसस्थानकपूजा** पत्र १३। भा. गू.। क. जिनहर्षसूरि। र. सं. १८७१। ले. सं. १८९५। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. ९।॥×४॥

पोथी ५० मी

क्र. ९०९ **नमिराजर्षिचोपाई** पत्र ७। भा. गू.। क. समयसुंदर। गा. ३१९। ग्रं. ४७५। ले. सं. १७००। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।

क्र. ९१० उपदेशमालाप्रकरण अवचूरि किंचिदपूर्ण पत्र १३। **भा.** सं.। **पं.** १९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०×४

क्र. ९११ (१) सर्वज्ञस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ पत्र १। **भा.** सं.। **मू. क.** सोमतिलकसूरि।
आदि—शुभभावानतं स्तौमि.

(२) पार्श्वनाथस्तोत्र महायमकमय सावचूरि पंचपाठ पत्र १-२। **भा.** सं.। **मू. क.** पद्मप्रभदेव दिगंबर। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

आदि—लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती.

क्र. ९१२ उत्तमचरित्रकथानक गद्य पत्र १४। **भा.** सं.। **ले. सं.** १७०१। **पं.** १०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

क्र. ९१३ नंदीसूत्र पत्र १९। **भा.** प्रा.। **क.** देववाचक। **ग्रं.** ७००। **पं** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९१४ शारीरनिबंधसंग्रह-वैद्यक अपूर्ण पत्र ३३। **भा.** सं.। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

क्र. ९१५ सिद्धान्तचंद्रिका पूर्वार्द्ध पत्र २३-३७। **भा.** सं.। **क.** रामाश्रमाचार्य। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९१६ सप्ततिकाकर्मग्रंथभंगक पत्र २-८। **भा** गू.। **पं.** २१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९१७ नंदीषेणचोपाई किंचिदपूर्ण पत्र ७। **भा.** गू.। **क.** ज्ञानसागर। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९१८ पंचमषष्ठकर्मग्रंथ बालावबोध त्रू. अ. पत्र ५०-९३। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९१९ पाक्षिकसूत्र पत्र ५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३००। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०×४।

क्र. ९२० देववंदनादिभाष्यत्रय बालावबोधसह पंचपाठ किंचिदपूर्ण पत्र १२। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** देवेंद्रसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९२१ संस्कृतमंजरी पत्र २-४। **भा.** स.। **पं.** १४। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९२२ कर्पूरप्रकर सावचूरि पंचपाठ अपूर्ण पत्र ५। **भा.** सं.। **मू. क.** हरिकवि। **पं.** २४। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९२३ जिनयक्षयक्षणीवर्णादि निर्वाणकलिकांतर्गत पत्र २। **भा.** स.। **ले. सं.** १५०४। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९२४ नंदीसूत्रवृत्तिगत योग्यायोग्यपर्षदाविचार पत्र २-८। **भा.** स.। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९२५ लघुस्तव वृत्तिसह पत्र ८। **भा.** सं.। **टी. क.** सोमतिलकसूरि। **वृ. र. सं.** १३९७। **ग्रं.** ४७४। **पं.** २०। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥
अन्त—सपूर्णेयं लघुस्तवटीका ॥छ॥

जाता नवांगीविवृतेर्विधातुरनुक्रमेणाभयदेवसूरेः। युगप्रधाना गुणशेखराह्वाः सूरीश्वराः संप्रति तस्य पट्टे ॥१॥

श्रीसिंहतिलकसूरिस्तच्चरणांभोजखेलनमरालः । श्रीसोमतिलकसूरिर्लघुस्तवे व्यधित वृत्तिमिमां ॥२॥
मुनिनंदगुणक्षोणीमिते विक्रमवत्सरे । कृता घृतघटीपुर्य्यामाचंद्रार्क प्रवर्त्तताम् ॥३॥
प्रत्यक्षरं निरूप्यास्या ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । अनुष्टुभां चतुःसप्त साग्रा जाता चतुःशती ॥४॥
अङ्कतोपि ४७५ ॥ इति श्रीलघुस्तवव्याख्या पूर्णेति ॥छ॥श्री॥
श्रीकंबोजकुलोत्तंसः स्थगणुनामाऽस्ति ठक्कुरः । तस्याभ्यर्थनया चक्रे टीकेयं ज्ञानदीपिका ॥३॥छ॥

क्र. ९२६ चित्रबद्धजिनस्तुति पत्र १ । **भा.** स. । **क.** जिनचन्द्रसूरि । **ग्रं.** ५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४।.। पत्रनी एक बाजु लखाएल छे ।

क्र. ९२७ (१) भावारिवारणस्तोत्र बालावबोधसह पत्र ६ । **भा.** समस. प्रा. गू. । **मू. क.** जिनवल्लभगणि । **मू. का.** ३० ।

(२) विद्वद्गोष्ठी पत्र ६ ठु । **भा.** सं. । **का.** २१ । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९२८ काव्यप्रकाश पत्र ७ । **भा.** स. । **क.** मम्मट अने अलक । **ले. सं.** १७११ । **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९२९ रघुवंशमहाकाव्य त्रु. अ. पत्र १२–१८ । **भा.** स. । **क.** महाकवि कालिदास । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९३० मुनिपतिचरित्र अपूर्ण पत्र १९ । **भा.** प्रा । **पं.** १५ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प** १०।×४।

क्र. ९३१ बुद्धिरास पत्र २ । **भा.** गू । **क.** शालिभद्रसूरि । **गा.** ८४ । **पं.** १७ । **स्थि** जीर्णप्राय । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९३२ चतुर्विंशतिजिनचरित्रस्तोत्र त्रु. अ. पत्र २–१५ । **भा.** सं । **पं** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४॥. । पूर्वभव–जन्मादिअनेकस्थानकविचारगर्भित ।

क्र. ९३३ कथासंग्रह पत्र ६–९ । **भा.** स. । **पं.** १९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०॥×४।

क्र. ९३४ सप्ततिशतस्थानप्रकरण अपूर्ण पत्र ४ । **भा.** प्रा. । **पं.** २१ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९३५ कर्पूरप्रकर पत्र ११ । **भा.** स. । **क.** हरिकवि । **का.** १७५ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९३६ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १२ । **भा.** प्रा. । **क.** धर्मदासगणि । **गा.** ५४४ । **पं.** १४ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९३७ शीलरास त्रु. अ. पत्र २–६ । **भा.** गु । **पं** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९३८ शीलोपदेशमालाबालावबोध पत्र ५९–७७ । **भा.** गु. । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०॥×४॥

प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. ९३९ वीसलदेवरास पत्र ११ । **भा.** राजस्थानी । **गा.** २०२ । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०॥×४।. प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. ९४० प्रश्नोत्तर वार्त्तिक पत्र १४ । **भा.** सं. । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४।

क्र. ९४१ मल्लिज्ञाताध्ययनगत आलापक पत्र ५ । **भा.** प्रा. । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०॥×४॥. । प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. ९४२ अंतकृद्दशांगसूत्र पत्र २३। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ७९०। **पं. १३। स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४।

क्र. ९४३ बोलसंग्रह पत्र १४। **भा.** गू.। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ९४४ पंचवर्गपरिहारनाममाला—अपवर्गनाममाला पत्र ६। **भा.** स.। **क.** जिनभद्रसूरि। **ग्रं.** ३६०। **ले. सं.** १५२५। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४।

अन्त—

श्रीजिनवल्लभजिनदत्तसूरिसेवी जिनप्रियविनेयः। अपवर्गनाममालामकरोज्जिनभद्रसूरीणां ॥५६॥

इति पंचवर्गपरिहारनाममाला समाप्ता ॥ सवत् १५२५ वर्षे कार्तिक वदि १० श्रीखरतरगच्छाधिराज युगप्रधानावतार श्रीजिनभद्रसूरिशिष्योत्तम सैद्धान्तशिरश्चूडामणि श्रीकमलसयमोपाध्यायविनेय मुनिमेरुमुनिना लिखिता ॥ वाच्यमाना चिर जयतु ॥

क्र. ९४५ औपपातिकसूत्र अपूर्ण पत्र १५। **भा.** गू.। **पं** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४।

क्र. ९४६ द्वादशव्रतस्वरूप आदि पत्र ४-२९। **भा.** गू.। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प** १०॥×४॥

क्र. ९४७ ज्योतिष्करंडकवृत्तिगत सप्तदश प्राभृत वृत्ति सह पत्र ३। **भा.** प्रा. सं.। **क.** मलयगिरिसूरि। **पं.** १८। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९४८ चंद्रप्रभस्वामिस्तोत्र षड्भाषामय सटीक पत्र ४। **भा.** षड्भाषा। **पं.** २०। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९४९ कालिकाचार्यकथाबालावबोध पत्र ९। **भा.** गू.। **प.** १४। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९५० दशवैकालिकसूत्र पत्र २४। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं.** ७००। **ले. सं.** १६११। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति पाणिमां भीजाएली छे।

क्र. ९५१ (१) नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र १-९। **भा.** प्रा. गू.। **क.** विमलकीर्तिगणि वाचनाचार्य। **गा.** ५१।

(२) जीवविचारप्रकरण सस्तबक पत्र ९-१६। **भा.** प्रा. गू.। **क.** विमलकीर्तिगणि वाचनाचार्य। **गा.** ५१। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९५२ सम्यक्त्वपंचविंशतिका—सम्यक्त्वस्वरूपस्तवन सटीक पंचपाठ पत्र २। **भा.** प्रा. स.। **पं.** २२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९५३ चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक त्रिपाठ पत्र ५। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** २१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९५४ हैमधातुपाठ पत्र ९। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९५५ श्रीपालचरित्र प्राकृत गाथाबद्ध पत्र २६। **भा.** प्रा.। **क.** रत्नशेखरसूरि। **ग्रं.** १७००। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥.। पत्र १, ४-१३ नथी.

अन्त—

इति श्रीपालनरेन्द्रकथा श्रीसिद्धचक्रमाहात्म्ययुता समाप्ता ॥छ॥ ग्रन्थाग्रम् १७०० ॥छ॥ श्री : ॥छ॥

श्रीपत्तनस्यांतिकमाविक्षानपुरे महेभ्योऽजनि सायराख्य:।
ऊकेशवशामलमौक्तिकाभो गुणैः पवित्रो बहुपुत्रपौत्र:॥१॥
जाया सहजलदेवी तस्येह सती बभूव सदपत्यैः।
निचिता नवभिर्निधिभिर्लक्ष्मीरिव सार्वभौमस्य ॥२॥
पञ्चेषुरूपास्तनयाः बभूवुर्वर्यास्तयोः पंचजनेषु पंच।
वेलाभिधो मालवनीवृतीह संखेटकेऽगात्समयानुभावात् ॥३॥
वीरीति नाम्ना दयिताऽस्य जाता जनेषु मुख्याः पितृबन्धुसंख्याः।
पुत्रस्तयोस्तेषु गुणाकरोऽस्ति वनाभिधो धर्मधुराधुरीणः ॥४॥
सोऽलीलिखद् द्वादशपादवृत्ति श्रीपालभूपालचरित्रमेतत्।
मुदादिसूत्रं च जिनोदितश्रीसिद्धान्तभक्त्या निजवित्तशक्त्या ॥५॥ इति प्रशस्तिः॥

क्र. ९५६ कालिकाचार्यकथा पत्र ३। **भा.** प्रा.। **गा.** १०२। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९५७ शांतिनाथविवाहलो अपूर्ण पत्र १६। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९५८ नेमिनाथशीलरास पत्र ७। **भा.** गू.। **गा.** ७१। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति चोंटी गएली छे।

क्र. ९५९ कल्पसूत्रबालावबोध त्रु. अ. पत्र ७६-८५। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९६० उत्तराध्ययनसूत्रवृत्ति त्रु. अ. पत्र २९९-३०८। **भा.** स.। **वृ. क.** कमलसयमोपाध्याय। **पं.** १५। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९६१ कल्पसूत्र-बारसा त्रु. अ. पत्र २-२३। **भा.** प्रा.। **पं.** ८। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९६२ कल्पसूत्र सामाचारी बालावबोध अपूर्ण पत्र २-१३। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. ९६३ मात्रापताका पत्र ३। **भा.** स.। **पं.** २४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

पोथी ५१ मी

क्र. ९६४ चैत्यवंदनावंदनकप्रत्याख्यानश्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति पत्र ८६। **भा** स.। **वृ. क.** श्रीचंद्रसूरि। **र. सं.** १२२२। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।॥×५

क्र. ९६५ न्यायकंदलीटिप्पनक पत्र ६२। **भा.** स.। **क.** नरचंद्रसूरि। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।॥×५

क्र. ९६६ श्रीपालरास पत्र ७५। **भा.** गू.। **क.** विनयविजय तथा यशोविजयोपाध्याय। **र. सं.** १७३८। **ले. सं.** १८७८। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।॥×५

क्र. ९६७ सर्वसिद्धांतविषमपदपर्याय पत्र ४८। **भा.** स.। **ले. सं.** १९८४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।॥×५

क्र. ९६८ जीतकल्पसूत्र वृत्तिसह पत्र ४६। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** तिलकाचार्य। **मू. क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ले. सं.** १९८४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।॥×५

क्र. ९६९ **श्रावकाचार कुलक आगमपाठसह** पत्र २-४। भा. गू.। क. क्षेमकुशल। गा. ८०। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ११×५

क्र. ९७० (१) **आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक** पत्र १-४। भा. प्रा.। क. वीरभद्रगणि। गा. ५९।
(२) **आराधना** पत्र ४-५। भा. प्रा.। पं. १२। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. ११×४॥

क्र. ९७१ **द्रव्यसंग्रह बालावबोधसह** पत्र १५। भा. प्रा. गू.। मू. क. नेमिचन्द्र भंडारी। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११×४॥

क्र. ९७२ **वैद्यकविषयक प्रकीर्णक पानांओ**। भा. सं. गू.। स्थि. मध्यम। लं. प. ११×४॥

क्र. ९७३ **वीतरागस्तोत्र** पत्र ६। भा. सं। क. हेमचन्द्रसूरि। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११×४॥

क्र. ९७४ **हितोपदेशप्रकरण** पत्र २७। भा. प्रा.। क. प्रभानन्दसूरि। गा. ५२५। ले. सं. १९८४। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×५

क्र. ९७५ **बृहत्संग्रहणीप्रकरण** पत्र १३। भा. प्रा.। क. जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। गा. ५२४। ले. सं. १९८४। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×५

क्र. ९७६ **श्रावकधर्मप्रकरण** पत्र ६। भा. स.। क. जिनेश्वरसूरि। ग्रं. २४५। र. सं. १३१३। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×५

क्र. ९७७ **पंचवस्तुकप्रकरण** पत्र ४७। भा. प्रा.। क. हरिभद्रसूरि। ले. सं. १९८४। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×५

क्र. ९७८ **लघुक्षेत्रसमासप्रकरण टिप्पणीयंत्रसह** पत्र ४१। भा. प्रा. स.। क. रत्नशेखरसूरि। मू. गा. २६३। ले. सं. १८६९। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×५

क्र. ९७९ **दीवालीस्तवन** पत्र १३। भा. गू.। क. गुणहर्ष। गा. १२२। ले. सं. १९०२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×५

क्र. ९८० **कल्पसूत्रवृत्ति त्रु. अ.** पत्र ३०-६०। भा. स.। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०×५

क्र. ९८१ **गौतमस्वामिरास** पत्र ६। भा. गू.। क. विजयभद्र। र. सं. १४१२। गा. ५२। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ९८२ **विचारपंचाशिका सावचूरि** पत्र ५। भा. प्रा. सं.। अ. क. विजयविमलगणि अपरनाम वानर्षिगणि स्वोपज्ञ। ले. सं. १९०१। ग्रं. २५०। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९८३ **अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र सस्तबक** पत्र १५। भा. प्रा. गू.। ग्रं. ११००। ले. सं. १९२४। पं. २०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९८४ **खंडाजोयणबोल** पत्र ५। भा. गू.। पं. २३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ९८५ **निशीथसूत्रवचनिका** पत्र २६। भा. गू.। ले. सं. १९०८। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९८६ **राजनीतिवर्णनकवित्त** पत्र २०। भा. हिन्दी। क. देवीदास। ले. सं. १९११। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ९८७ **दीपालिकाकल्प** पत्र ४-११। भा. स.। क. जिनसुंदरसूरि। र. सं. १४८३। ले. सं. १७४०। पं. १३। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०×४।

क्र. ९८८ आनंदसंधि पत्र ९ । **भा.** गू. । **क.** श्रीसारमुनि । **र. सं.** १६८१ । **ले. सं.** १७३१ । **गा.** २४८ । **पं.** १५ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९८९ जयतिहुअणस्तोत्र सटीक पत्र ५ । **भा.** अपभ्रंश स. । **मू. क.** अभयदेवसूरि । **ग्रं.** २५० । **ले. सं.** १७८१ । **पं.** १९ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९९० नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र ५० । **भा.** प्रा. गू. । **स्त. क.** मानविजयजी । **ग्रं.** ११५० । **मू. गा.** ९६ । **मू. ग्रं.** १२५ । **ले. सं.** १७७३ । **पं.** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४॥

क्र. ९९१ सिद्धांतचंद्रिका उत्तरार्द्ध पत्र ४० । **भा.** स । **क.** रामचन्द्राश्रम । **ले. सं.** १७७९ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४॥

क्र. ९९२ नियतानियतिविचार पत्र ४ । **भा.** सं. । **क.** पार्श्वचन्द्रगणि । **ग्रं.** १९२ । **पं.** १३ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प.** १०×४॥. । प्रति चोंटी गएली छे । पत्र २ जु नथी ।

पोथी ५२ मी

क्र. ९९३ अनेकार्थतिलक पत्र ३८ । **भा.** सं. । **क.** महीप । **ग्रं.** ९०७ । **ले. सं.** १७१५ । **पं.** १२ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** १०×४।

क्र. ९९४ स्याद्यंतप्रक्रिया पत्र ५४ । **भा.** स. । **क.** सर्वधर । **ले. सं.** १५२८ । **पं.** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४

अन्त—

इत्युपाध्यायसर्वधरविरचितायां स्याद्यन्तप्रक्रियायां लिंगकाण्ड. षष्ठ समाप्त ॥छ॥श्रीः॥ श्रीनृपविक्रमादित्य-सवत् १५२८ वर्षे पौष सुदि षष्ठी रवौ वासरे । खरतरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसिताने श्रीजिनधर्मसूरि पट्टालंकार चूडामणि भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरि । आचार्य श्रीजयानदसूरि । देवभद्रशिष्य लिखिता । श्रीरस्तु ॥

क्र. ९९५ सूत्रकृतांगसूत्र अपूर्ण पत्र ६३ । **भा.** प्रा. । **पं** १३ । **स्थि.** अतिजीर्ण । **लं. प.** १०×४।

क्र. ९९६ द्वादशभावना पत्र ५ । **भा.** गू. । **क.** सकलचद्रगणि । **ले. सं.** १७७३ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४।

क्र. ९९७ सिंहासनबत्रीसी पत्र ४६ । **भा.** गू. । **पं.** १३ । **स्थि** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४।

क्र. ९९८ प्रश्नोत्तरषष्ठिशतअवचूरि त्रू. अ. पत्र २-५ । **भा.** स. । **पं.** २० । **स्थि.** अतिजीर्ण । **लं. प.** १०×४।

क्र. ९९९ दशवैकालिकसूत्र सस्तबक पत्र ६५ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** १५ । **स्थि.** अतिजीर्ण । **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. १००० सारस्वतव्याकरण पत्र ५४ । **भा.** स. । **क.** अनुभूत स्वरूपाचार्य । **पं.** १३ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. १००१ वैद्यकसारोद्धार सटीक अपूर्ण पत्र १०५ । **भा.** सं. । **क.** हर्षकीर्तिसूरि । **पं.** १५ । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. १००२ आवश्यकसूत्र पत्र २५ । **भा.** प्रा. स. । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १००३ कातंत्रव्याकरण पत्र २५ । **भा.** सं. । **पं.** ७ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×३॥। । अस्तव्यस्त पानां ।

क्र. १००४ नवतत्त्वविचार पार्श्वनाथस्तोत्र क्षेत्रसमासचतुष्पदी आदि अनेक स्तोत्र प्रकरण आदि संग्रह पत्र २४८। **भा.** प्रा. सं. गू.। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।।×४।

वच्चमां केटलांक पानां नथी।

क्र. १००५ बंधस्वामित्वप्रकरण वृत्तिसह-प्राचीन तृतीय कर्मग्रंथ पत्र १३। **भा.** प्रा. सं.। **ग्रं.** ६५०। **पं.** १७। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ९।।×४।।

क्र. १००६ पाक्षिकप्रतिक्रमणविधि पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १९०८। **पं.** १०। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।×४।।

क्र. १००७ समयसारप्रकरण अपूर्ण पत्र ५। **भा.** प्रा.। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।×४।

क्र. १००८ शालिभद्ररास अपूर्ण पत्र ८। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९।।।×४।।

क्र. १००९ संबोधसप्ततिकाप्रकरण अपूर्ण पत्र ४। **भा.** प्रा.। **पं.** १०। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९।।×४।।

क्र. १०१० आराधनाबालावबोध पत्र १०। **भा.** गू.। **पं.** १०। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ९।×४।।

क्र. १०११ दशाश्रुतस्कंध सस्तबक पत्र ५२। **भा.** प्रा. गू.। **मू. ग्रं.** ८००। **स्त. ग्रं.** ३०००। **ले. सं.** १८३६। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।।×४।

क्र. १०१२ लुंकाचउपई पत्र ११। **भा.** गू.। **क.** लावण्यसमय। **गा.** १८१। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।।×४।

क्र. १०१३ सुरसुंदरीरास पत्र १७। **भा.** गू.। **क.** नयसुंदर। **गा.** ५०७। **र. सं.** १६४४। **ले. सं.** १७०७। **पं.** १७। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।।×४।

क्र. १०१४ जीरणशेठरत्नपालचोपाई पत्र १२। **भा.** गू.। **क.** सुमतिकमल। **र. सं.** १६४५। **ले. सं.** १६४५। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।×४।।

क्र. १०१५ ऋषिमंडलप्रकरण पत्र १४। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मघोषसूरि। **गा.** २२५। **ले. सं.** १७२६। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९।।×४।

अन्त—

इति श्रीश्वेताम्बराचार्यवर्यधुर्य श्रीधर्मघोषसूरिविनिर्मित ऋषिमण्डलशास्त्र समाप्तमिति ॥ सवत् १७२६ विक्रमतः शाके १५९१ शालिवाहनतः अब्दे २१९६ श्रीमद्देवाधिदेवश्रीमन्महावीरवद्धमानशिवसुखसप्रापणतश्चैत्र-मासि श्रीधौंगपचमीतिथौ कुजवासरेसुनक्षत्रसुयोगे श्रीषट्पत्तनाहूवजनपदे श्रीवीरपादनाम्नि महादेव्याश्री-धांकुलांबामहास्थाने श्रीखरतरवेगडनामगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसन्ताने श्रीजिनपत्ति जिनकुशल जिनधर्म जिनगुण-प्रभ जिनेश्वरादीनां पट्टशृंगारभट्टारकयुगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराणां पट्टाद्रिसहस्रकरावतार सवाई युगप्रधान श्रीजिन-समुद्रसूरीश्वरविजयराज्ये शिष्य प. समुद्रेण लिपीकृतं श्रेयसे भूयात् ॥श्री॥

पोथी ५३ मी

क्र. १०१६ नर्मदासुंदरीरास पत्र ५५। **भा.** गू.। **क.** मोहनविजय। **र. सं.** विधिमुख शिवसुख ऋषि इंदु संवत् सज्ञा एहजी। **ले. सं.** १८२१। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९।।×४।

क्र. १०१७ मनोरथमाला पत्र १८। भा. गू.। क. जिनसमुद्र। र. सं. १७०८। पं. २०। स्थि. मध्यम। लं. प. ९।×४।

क्र. १०१८ उपदेशमालाप्रकरण शब्दार्थसह पत्र २४। भा. प्रा. गू.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४३। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

प्रतिना दरेक पत्रना मध्यमां लखेला चित्राक्षरोने सळग करतां नीचे प्रमाणे नाम नीकळे छे—

"श्रीशांतिवल्लरि गणिनी शिष्यणी श्रीपरमश्री श्रीमद्दत्तरा योग्यं।"

क्र. १०१९ योगशास्त्रआद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १९। भा. स.। क. हेमचन्द्राचार्य। ले. सं. १५५०। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १०२० कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति पत्र २-१४२। भा. स.। वृ. क. दुर्गसिंह। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९।॥×३।॥

क्र. १०२१ जीवसिद्धि पत्र ९। भा. स.। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. १०२२ कल्पसूत्रवृत्ति अपूर्ण पत्र ३१। भा. स.। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. १०२३ विष्णुनामसहस्र-महाभारतशतसाहस्रीसंहितागत पत्र ५। भा. सं.। ले. सं. १७३९। ग्रं. १२५। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४

क्र. १०२४ कल्पसूत्रबालावबोध षष्ठीवाचना पत्र १५। भा. गू.। पं. १६। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. ९॥×४

क्र. १०२५ राजसिंघकुमारचतुष्पदी पत्र १४। भा. गू.। क. जिनचंद्रसूरि। र. सं. १६८७। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. १०२६ एकविंशतिस्थानप्रकरण सस्तबक पत्र ६। भा. प्रा. गू.। मू. क. सिद्धसेनसूरि। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४।

क्र. १०२७ समाधिशतक बालावबोधसह अपूर्ण पत्र १४। भा. प्रा. सं. गू.। मू. क. सोमसेन-सूरि। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९।×४।

क्र. १०२८ भक्तामरस्तोत्र सस्तबक पत्र ५। भा. स. गू.। पं. २४। स्थि. मध्यम। लं. प. ९।×४।

क्र. १०२९ जीवविचारप्रकरण पत्र ११। भा. प्रा.। क. शांतिसूरि। गा. ५१। ले. सं. १८३८। पं. ४। स्थि. साधारण। लं. प. ९।×४।

क्र. १०३० नंदीसूत्र पत्र २६। भा. प्रा.। क. देववाचक। ग्रं. ७००। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९।×४।

क्र. १०३१ आवश्यकसूत्र सस्तबक पत्र २७। भा. प्रा. गू.। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४।

क्र. १०३२ सिंहासनद्वात्रिंशिका त्रु. अ. पत्र ५२-६२। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४॥

क्र. १०३३ ढोलामारुवार्ता अपूर्ण पत्र २२। भा. गू.। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९।॥×४।। पत्र ८, १२, १९, २० नथी।

क्र. १०३४ एकविंशतिस्थानप्रकरणबालावबोध पत्र ९। भा. गू.। ले. सं. १७१९। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४॥

क्र. १०३५ **कल्पसूत्रसंक्षिप्तबालावबोध** पत्र १४ । **भा.** गू. । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।×४।

क्र. १०३६ **नेमिनाथबारमासा तथा सवैया** पत्र २-४ । **भा.** हिन्दी । **क.** तिलक गुसाँई । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४।. बारमासानी आदिनी १० गाथा नथी ।

क्र. १०३७ (१) **कर्मछत्रीसी** पत्र १-२ । **भा.** हिन्दी । **गा** ३७ ।

(२) **अध्यात्मपयडीछत्रीसी** पत्र २-३ । **भा.** हिन्दी । **क.** बनारसीदास । **गा.** ३५ ।

(३) **कवितसंग्रह** पत्र ३-५ । **भा.** हिन्दी । **क.** ज्ञानरत्न । **पं.** १३ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×४।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. १०३८ **दिक्पटचोरासीबोलविसंवाद** पत्र ५ । **भा.** हिन्दी । **क.** जिनलमुद्र । **पं.** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क्र. १०३९ **मृगांकलेखारास** पत्र १५ । **भा.** गू. । **गा.** ४०८ । **पं** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४।.। पत्र ५-१२ नथी ।

क्र. १०४० **उत्तमकुमारचरित्र पद्य** पत्र ३-१९ । **भा.** सं. । **ग्रं.** ५७५ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प** ९।।।×४।

क्र. १०४१ **कालज्ञान** अपूर्ण पत्र १३ । **भा.** सं. । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×४।

क्र. १०४२ **कातंत्रव्याकरण पंचसंधि** पत्र १० । **भा.** स. । **पं.** १० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९।।।×४।

क्र. १०४३ **बृहत्संग्रहणीप्रकरण सटीक** पत्र ? । **भा.** प्रा. स. । **मू. क.** जिनभद्रगणि । **पं.** १० । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९×४.। प्रति त्रूटक अपूर्ण चोंटेली अने अस्तव्यस्त छे ।

क्र. १०४४ **उत्तराध्ययनसूत्र** पत्र ८० । **भा.** प्रा. । **पं.** १२ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ८।।।×४। । प्रति पाणीमा भींजाइ ने खराब थएली छे ।

पोथी ५४ मी

क्र. १०४५ **भावाध्याय** अपूर्ण पत्र १० । **भा.** स. । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १०४६ **गोरक्षकप्रबोध** अपूर्ण पत्र २-१३ । **भा.** स । **पं.** १२ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×४. । पत्र ४, ५, नथी ।

क्र. १०४७ **कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति टिप्पणीसह** अपूर्ण पत्र १६१ । **भा.** स. । **वृ. क.** दुर्गसिंह । **पं.** १० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प** १०×३॥. । पत्र २, ३, ७-६४ नथी ।

क्र. १०४८ **कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति टिप्पणीसह** पत्र १२३ । **भा.** सं. । **वृ. क.** दुर्गसिंह । **पं.** ७ । **स्थि** मध्यम । **लं. प.** ९।।।×३॥

क्र. १०४९ **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र परिशिष्टपर्व** अपूर्ण पत्र ७९ । **भा.** सं. । **क.** हेमचन्द्रसूरि । **स्थि.** जीर्णप्राय । **लं. प.** ९।×३॥

क्र. १०५० **लघुजातक सटीक त्रिपाठ** पत्र ६९ । **भा.** सं. । **मू क.** वराहमिहिर । **टी. क.** उत्पलभट्ट । **ले. सं.** १७०१ । **पं.** १२ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९×४.

प्रति पाणीमां भींजाइने खराब थई छे ।

क. १०५१ दार्शनिकग्रंथ अज्ञात अपूर्ण पत्र १८ । **भा.** स. । **पं.** ८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×३॥।

आदि—

प्रणम्य शंभु जगतः पतिं परं समस्ततत्त्वार्थविदं स्वभावतः ।
शिष्यप्रबोधाय मयाऽभिधास्यते प्रमाणतद्भेदतदन्यलक्षणम् ॥१॥

क. १०५२ प्रवचनसारोद्धार त्रुटक-अपूर्ण अस्तव्यस्त । **पं.** १३ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९॥×३॥.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे ।

क. १०५३ कथासंग्रह गद्यपद्य पत्र २४० । **भा.** प्रा. सं. । **पं.** १० । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९×३॥।

क. १०५४ नारचंद्रज्योतिष द्वितीयप्रकरण पत्र १३ । **भा.** सं. । **क.** नरचन्द्रसूरि । **पं.** १२ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×३॥

पोथी ५५ मी

क. १०५५ कातंत्रव्याकरण दुर्गसिंही आख्यातवृत्ति अपूर्ण पत्र ३१ । **भा.** स. । **वृ. क.** दुर्गसिंह । **पं.** १३ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** १०॥×५॥

क. १०५६ शालिभद्रकथा पद्य पत्र २-४ । **भा** सं. । **ग्रं.** १८१ । **पं.** १५ । **स्थि** श्रेष्ठ । **लं प.** १०॥×४॥

क. १०५७ जीरावलापार्श्वनाथस्तवन पत्र १ । **भा.** गू. । **क.** भक्तिलाभ । **गा.** १४ । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०॥।×४॥

क. १०५८ अष्टप्रकारपूजाकथा पत्र २४ । **भा** प्रा. । **पं.** १४ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ११॥।×४।

क. १०५९ शीलोपदेशमालाबालावबोध अपूर्ण पत्र ७ । **भा.** गू. । **पं.** १७ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ११॥।×४॥

क. १०६० त्रिषष्टिशालाकापुरुषचरित्र परिशिष्टपर्व पत्र ३१ । **भा.** स. । **क.** हेमचंद्रसूरि । **ग्रं.** ३५६४ । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११×४॥

क. १०६१ जल्पमंजरी अपूर्ण पत्र ७ । **भा.** स. गू. । **पं.** १६ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०॥×४॥

क. १०६२ अल्पबहुत्वस्तवन पत्र २ । **भा.** अपभ्रंश । **क.** क्षांतिमंदिरशिष्य खरतर । **गा.** ३७ । **पं.** ११ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०॥।×४॥।

आदि— ऍर्द ॥

श्री सेत्रुज सिणगार रिसह जिणेसर वदि करि । अलपबहुत्तविचारी अट्ठाणउ पद जीवधरि ॥१॥
पन्नवणासिद्धत अणुसारिद इम संकलीय । हु विन्नत्ति करेसु जीवरहइ जिणिपरिवलीय ॥२॥
थोवा गब्भय जेय सामन्नाइ माणुस कहीय १ । तेह थकी तसु नारी अधिकी सखगुणी सहीय २ ॥३॥

अन्त—

खरतरगच्छि जुगप्पवर सिरिजिनहससूरिस तु । तसु आएस लही करीय श्रीमुखि गुरुअ जगीस तु ॥३७॥
इय महदंडगि भमणठाण जे छइ सत्ताणउ । ते मझ न रूवइ वीतराग आप सव ठाणउ ।
बहुविह अल्पबहुत्तखाणि पन्नवणा खधइ । क्षांतिमंदिरगुरुसीसि तवन कीजउ तसु बंधिइ ॥३८॥

ईय विन्नविउ रिसहजिण सामिय वारउ......। दुक्ख निवारिज्यो मझनइ एहजि भाउ ॥३९॥
इति अल्पबहुत्वस्तवनम् ॥छ॥

क्र. १०६३ षोडशकप्रकरण पत्र ८। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** २९६। **ले. सं.** १५४४। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १०६४ (१) देववंदनवंदनकप्रत्याख्यानप्रकरण पत्र १८। **भा.** प्रा.। **क.** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** ६७२। **ले. सं.** १५४४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥

(२) साधुसंघमर्यादापट्टक पत्र १८ मु। **भा.** स.। **क.** जिनप्रभसूरि।

क्र. १०६५ पिंडविशुद्धिप्रकरण पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १०३। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १०६६ वरदराजीटिप्पनक पत्र ६। **भा.** स.। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १०६७ श्रीचंद्रीया संग्रहणी सावचूरि पंचपाठ पत्र १०। **भा** प्रा स.। **मू. क.** श्रीचन्द्रसूरि। **अव. क.** साधुसोम। **मू. गा.** २७६। **ले. सं.** १५०१। **पं.** १४। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०॥×४॥

अन्त—

श्रीखर [तर] गच्छे श्री**जिनभद्र**सूरिशिष्यश्री**सिद्धा**न्तरुचिमहोपाध्यायशिष्येण साधु**सोम**गणिना परोपकृतयेऽवचूरिरिय लिखिता चिरं नन्द्यात् ॥ सवत् १५०१ वर्षे श्री**माल**वदेशे श्रीमण्डपपुर्गे श्री**सिद्धा**न्तरुचिमहोपाध्यायपादाम्बुजचञ्चरीकेण साधुना यथावबोध लिखितेय मतां हर्षाय भूयात् ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥श्री॥

क्र. १०६८ मौनएकादशीकथा सस्तबक पत्र ७। **भा.** स गू.। **क.** सौभाग्यनदि। **मू. ग्रं.** ११७। **र. सं.** १५७६। **ले. सं.** १८००। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १०६९ सारस्वतीयधातुपाठ वृत्तिसह अपूर्ण पत्र १९। **भा** स। **पं.** २१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १०७० चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक पत्र १०। **भा** प्रा. गू.। **पं.** २०। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४॥.। पत्र २-६ नथी।

क्र. १०७१ हैमधातुपाठ सावचूरि पंचपाठ पत्र ४-८। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **ले. सं.** १४९७। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १०७२ चंपकमालाकथा अपूर्ण पत्र २१। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥.। प्रति चोंटी जवाथी अक्षरो उखडी गया छे। पत्र ३-८ नथी।

क्र. १०७३ नमिराजर्षिकुलक पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** विनयसमुद्र वाचक। **गा.** ६३। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १०७४ अनाथीमुनिसज्झाय पत्र १। **भा.** गू.। **क.** समयसुदर। **गा.** ९। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४।

क्र. १०७५ (१) दानषट्त्रिंशिका वृत्तिसह पत्र १-९। **भा.** स.। **मू. क.** राजशेखर। **वृ. क.** देवल्लाभसाधु। **र. सं.** १५५२।

(२) जीवविचारप्रकरण सटीक किंचिदपूर्ण पत्र ९-१५। **भा.** प्रा. सं। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १०७६ लक्ष्मीआदिमंत्रसंग्रह पत्र १। **भा.** सं.। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १०७७ नवतत्त्वप्रकरण सावचूरि पत्र ६-१०। भा. प्रा. स.। अव. क. साधुरत्नसूरि। ले. सं. १५१९। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. १०७८ दमयंतीकथाचंपू सावचूरि पंचपाठ अपूर्ण पत्र ३२। भा. सं। मू. क. त्रिविक्रमभट्ट। पं. १२। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४।

क्र. १०७९ (१) दमयंतीकथाचंपूविवरण पत्र १-३९। भा. स। वि. क. चंडपाल। ग्रं. १९००। ले. सं. १४८४।

(२) कविगुह्यनामकाव्य पत्र ३९-४६। भा. सं.। क. हलायुध। ग्रं. ३५०। पं. १६। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०॥×४।

क्र. १०८० संस्कृतशब्दरूपावली पत्र १२। भा. सं.। ले. सं. १५५५। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।।×४।

क्र. १०८१ ऋषिमंडलप्रकरण पत्र ३-९। भा. प्रा.। क. धर्मघोषसूरि। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प १०॥×४॥

क्र. १०८२ योगचिंतामणि वैद्यक पत्र ५४। भा. स.। क. नागपुरीय तपागच्छीय हर्षकीर्त्तिसूरि। पं. ११। स्थि श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १०८३ बालशिक्षाव्याकरण अपूर्ण पत्र ८। भा. स. गु.। क. भक्तिलाभ। पं. १६। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०।×४॥

क्र. १०८४ (१) दशवैकालिकसूत्र पत्र ६-१४। भा प्रा.। क शय्यंभवसूरि।

(२) चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र क्रियागुप्त पत्र १४ मु। भा. स.। क. जयशेखरसूरि। का. २६। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।

क्र. १०८५ नवतत्त्वविवरण तथा चैत्यवंदनावंदनकादिविचारबालावबोध त्रुटक-अपूर्ण। भा. सं. प्रा. गु.। पं. १३। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०।×४।

प्रति अस्तव्यस्त तथा पत्रांको भुसाइ गयेल छे।

क्र. १०८६ अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र पत्र ९। भा. प्रा.। ग्रं. २००। पं. ११। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०×४।

अन्त—

अणुत्तरोववाइयदसाओ समत्ताओ ॥ प्रथाग्र २०० ॥छ॥

श्री जो० आणदसुत कुंअरजी स्वहस्तेन लिपिकृत लेखकपाठकयोश्चिर जीयात् ॥ श्रीरस्तु ॥

स्वस्ति श्रीमद्विशालत्रिभुवनविदितो जंगलो देशराजस्तत्र श्रीवर्द्धमानप्रभुमहिमयुता सत्यपूः पुण्यपात्रम्।
नानादेशीयवस्तूत्रयपरिकलिता धर्मिणां सौख्यधाम, प्रोत्तुङ्गैर्जैनचैत्यैरतिशयललितैर्भूषिता भूमिरत्नम् ॥१॥
तत्रासीच्छेष्ठिमुख्यः सकलगुणनिधिर्दानसत्कल्पवृक्षो, व... केशावतसो गुरुचरणसरःसेवने राजहंसः।
लक्ष्मीवान् धर्मिधुर्यो विमलतरमतिः पंचकाख्यः प्रवीणे. टीबू कुरी च भार्ये समजननयनानंददात्र्यौ हि तस्य ॥२॥
तत्पुत्रो धन्यराजः कुलकमलरविः साधुसारङ्गतुल्यो, विख्यातो भूमिपीठे विनयनयपटुर्धीमतां माननीयः।
तस्यास्ति प्रेमपात्र प्रबलतमकलाकेलिसत्र कलत्र, धन्यादेवीति नाम्ना वरतरवनितामौलिमाणिक्यमौलिः ॥३॥
करुणाचांतस्वांतो बभस्ति तत्सुनुरुदयसिंहोऽयम्। भानुरिवोदयशाली जिनवचनापास्ततिमिरभरः ॥४॥
लाडिमदाडिमदेव्यौ पत्न्यावद्वन्द्वमानसे तस्य। नानी-मरघे भव्यौ सुनुः श्रीपालनामास्य ॥५॥
गुणराजः पितृव्योऽस्य धौरेयो धर्मिणामभूत्। गंगादेवी प्रिया तस्य गंगेव शुचिशीलभाक् ॥६॥

स्ववशीपोदयसि...साधुः श्रीपूर्णिमापक्षसरोजहंसः। सत्तीर्थयात्रादिकपुण्यकारकः सज्ञागगोत्राम्बुजबोधभास्करः ॥७॥
राकापक्षविधुप्रभ गुणधरा विद्वज्जनैः सेविताः, पचाचारविचारपालनपरा मिथ्यात्वनिर्नाशकाः।
भव्यानां भवभीतिभेदनकराः कदर्पदर्पेश्वरा, जीयासुर्विमलेन्दुसूरिवृषभाश्चारि .... ॥८॥

क्र. १०८७ वैद्यकग्रंथ अपूर्ण पत्र २-११। **भा.** स.। **पं.** ६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४॥

क्र. १०८८ भववैराग्यशतक अपूर्ण पत्र। **भा.** प्रा.। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. १०८९ चैत्यवंदनाभाष्य सस्तबक पत्र ५। **भा.** प्रा.। **गा.** ५१। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥। देवेन्द्रसूरिकृत चैत्यवदनभाष्यथी अन्य।

क्र. १०९० रामसीतासबंध पत्र ३। **भा.** गू.। **पं.** १८। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४।

क्र. १०९१ चैत्यवंदनभाष्य पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** देवेंद्रसूरि। **गा.** ६३। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १०९२ उपदेशमालाप्रकरण सस्तबक पत्र २-३७। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** ५४२। **स्त. ग्रं.** ७५०। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४।

क्र. १०९३ दशवैकालिकसूत्र अपूर्ण पत्र ११। **भा.** प्रा.। **प.** ११। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

पोथी ५६ मी

क्र. १०९४ विनयचटरास पत्र ५-४३। **भा.** गू.। **क.** ऋषभसागर। **ले. सं.** १८३२। **पं.** १९। **स्थि** मध्यम। **ल. प.** ९×५।.। पत्र २१-३४ नथी।

क्र. १०९५ शालिभद्रचरित्र पद्य पत्र ५६। **भा.** स.। **क.** धर्मकुमार। **ग्रं.** १२२४। **र. सं.** १३३४। **ले. सं.** १५५१। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×५।

क्र. १०९६ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र सस्तबक पत्र ३००। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १९११। **पं.** २२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×५

क्र. १०९७ संग्रहणीप्रकरण पत्र १९। **भा.** प्रा.। **क.** श्रीचंद्रसूरि। **गा.** ३१२। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ९॥×४॥। पत्र १६-१८ नथी।

क्र. १०९८ वंकचूलचोपाई पत्र ४। **भा.** गू। **ले. सं.** १७६०। **गा.** ११६। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४॥।

अन्त—संवत् १७६० वर्षे आसु वदि १४ दिने **हालार** देसे **मोडपुर**मध्ये लिखितम्॥

क्र. १०९९ सीमंधरजिनसवासोगाथानुं स्तवन पत्र ३-११। **भा.** गू.। **क.** यशोविजयोपाध्याय। **पं.** ९। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४॥.। पत्र १० मुं नथी।

क्र. ११०० ईषुकारीयचरित्ररास पत्र ३। **भा.** गू.। **क** खेमराजमुनि। **गा.** ५१। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ९॥×४॥।

क्र. ११०१ भक्तामरस्तोत्र सस्तबक पत्र २-९। **भा.** स. गू.। **मू. क** मानतुंगसूरि। **मू. का.** ४४। **पं.** २६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. ११०२ अध्यात्मस्तुति सस्तबक (**उठी सवेरा सामायिक लीधुं.** स्तुति) पत्र २। **भा.** गू.। **क.** भावप्रभसूरि। **पं.** २१। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. ११०३ नवकारबालावबोध अपूर्ण पत्र ८। **भा.** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४॥।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क. ११०४ एकविंशतिस्थानप्रकरण सस्तबक पत्र ६। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** सिद्धसेनसूरि। **गा.** ६७। **ले. सं.** १७७७। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।×५

क. ११०५ अनेकविचारसंग्रह पत्र ६। **भा.** सं.। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९×४॥

क. ११०६ सुव्रतश्रेष्ठिकथानकबालावबोध पत्र ६। **भा.** गू.। **ले. सं.** १७८४। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।×४॥

क. ११०७ भक्तामरस्तोत्र भाषाकवित्त पत्र ३। **भा.** हिन्दी। **क.** बनारसीदास। **ले. सं.** १७८३। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं. प** ८।।।×४।।।

अन्त—सवत् १७८३ रा वर्षे काती वदि ९ दिने डेरासमालखांन मध्ये प. दीपचद लिखित आत्मार्थे।

क. ११०८ गोडीपार्श्वनाथस्तवन पत्र २। **भा** गू। **क.** प्रीतिविमल। **गा.** ५५। **ले. सं.** १७८३। **पं.** १७। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ८।।।×४।।।

अन्त—

अष्टमहाभयहरै कांनपीडा टलइ.....................लसीसगभणते।

वदितवरप्रतिसु प्रीतविमल प्रभु पासजिणनाम अभिराम मलै ॥५५॥ओजि.॥

......**गोडीपारसनाथ स्तवन** सपूर्णम्। सवत् १७८३ वर्षे मिती माहमासे कृष्णपक्षे अमावास्या-तिथौ बुधवारे श्रीसमालखांनडेरामध्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे प. दीपचदलिखत आत्मार्थे। कल्याणमस्तु: ॥श्रीः॥

क. ११०९ महावीरसत्तावीसभवस्तवन पत्र ४। **भा.** अपभ्रंश। **कडी.** ३२। **र. सं.** १५३०। **पं.** ११। **स्थि** मध्यम। **लं. प.** ९।×४।।।

क. १११० लघुचाणाक्यराजनीतिशास्त्र सस्तबक पत्र ४। **भा.** स. गू.। **पं.** २५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ८।×४।।।

क. ११११ कविप्रिया पत्र ८०। **भा.** हिन्दी। **क.** केशवदास। **ले स.** १८३२। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८।।।×४।

क. १११२ गौतमपृच्छाप्रकरण पत्र ३। **भा.** प्रा.। **गा.** ६४। **पं** १३। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ८।।।×४।

क. १११३ अमरसेनवयरसेनरास पत्र १८। **भा.** गू.। **क** जिनहर्ष। **गा.** ४६३। **र. सं.** १७४२। **ले. सं.** १७४७। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं प.** ८।×४।

क. १११४ महर्षिकुलक सस्तबक पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** २०। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ८।×४॥

क. १११५ (१) पंचभावना सज्झाय पत्र ३। **भा.** हिं.।

(२) लघुभावना तथा तमाकुसज्झाय आदि पत्र ३–४। **भा.** हिं.। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८।×४॥

क १११६ श्रावकअतिचार पत्र ५। **भा** गू.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८॥×४॥

क. १११७ संवत् १८२५ नुं पंचांग गुटकाकारे। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ८×४।

क. १११८ सारस्वतव्याकरण पंचसंधि पत्र ९। **भा.** सं.। **क.** अनुभूतस्वरूपाचार्य। **ले. सं.** १९०२। **पं.** ९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८×४।.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क. १११९ महावीरस्वामितपपारणुं पत्र ३। **भा.** गू.। **गा.** २८। **पं.** ९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ८×४.। प्रति प्राणीमां भींजाएली छे।

क्र. ११२० शांतिजिनस्तवन पत्र २। भा. गू.। क. गुणसागर। गा. २१। पं. ९। स्थि. मध्यम। लं. प. ८×४.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ११२१ नवकारछंद पत्र २। भा. गू.। क. कुशललाभ। गा. १३। पं. ९। स्थि. मध्यम। लं. प. ८×४.। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. ११२२ कामधेनुज्योतिषग्रंथ तथा सारणी पत्र १६। भा. सं.। क. रामचंद्राचार्य। ले. सं. १७०२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।.

पोथी ५७ मी

क्र. ११२३ (१) ग्रहरत्नाकरसारणी पत्र ४–१६। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥
(२) ज्योतिषसारणी पत्र ४–१९। भा. स.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥
(३) खेटभूषणसारणी पत्र १९। भा. स.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥
(४) ज्योतिषसारणी पत्र ६। भा. स.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥
(५) ज्योतिषसारणी पत्र ४। भा. सं.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥

क्र. ११२४ यंत्रराजकोष्ठक पत्र ८। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क्र. ११२५ यंत्रराजवृत्तिसह पत्र ३२। मू. क. महेन्द्रसूरि। भा. सं.। पं. १५। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०×४।

क्र. ११२६ वीतरागसहस्रनाम पत्र ४। भा. सं.। ग्रं. १२८। पं. १४। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०×४।

क्र. ११२७ ज्योतिषग्रंथ त्रु. अ. पत्र ३–१३। भा. स.। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प.१०×४।

क्र. ११२८ ग्रहणाधिकार पत्र ४। भा. सं.। क. शतानंद। पं. १६। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. ११२९ शकुनावली पत्र ३। भा. गू.। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. ११३० कल्याणमंदिरस्तोत्र सस्तबक पत्र ७। भा. सं. गू.। मू. क. सिद्धसेन दिवाकर। ले. सं. १७३७। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. ११३१ ताजिकसार पत्र १६। भा. स.। क. हरिहर। ले. स. १७२८। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥.। प्रति पाणीमां भींजावाथी अक्षरो खराब थयेला छे।

क्र. ११३२ ग्रहसाधनप्रक्रिया पत्र १४। भा. स.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. ११३३ रत्नप्रदीप पत्र १०। भा. स.। क. गणपति। ले. सं. १७०३। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४।.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११३४ जनावरशकुनावली पत्र ९। भा. हिं.। पं. ११। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०।×४॥.। पत्र १, ५, ६ नथी।

क्र. ११३५ षट्पंचाशिका पत्र ३। भा. सं.। क. पृथुयशा। ग्रं. ५६। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११३६ कर्णकुतूहल पत्र १०। भा. सं। ले. सं. १७२८। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

अन्त—संवत् १७२८ वर्षे माह सुदि ५ बुधे श्रीजेसलपुरमध्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे भट्टारकश्रीजिनसमुद्रसूरि-[विज]यराज्ये तत्शिष्य प. सौभाग्यसमुद्रेण एषा प्रतिलिपीकृता ॥ श्रीपार्श्वनाथ श्रीअजितनाथ प्रसादात् ॥छ॥श्री॥छ॥

क्र. ११३७ [illegible] पत्र ३। आ. सं.। ग्रं. ३५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४।.। प्रति ऊदरे करडेली छे।

क्र. ११३८ [illegible] पत्र १। आ. सं.। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।

क्र. ११३९ महादेवीज्योतिषयंत्रावली पत्र ७७। आ. सं.। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।।.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४० ग्रहभावप्रकाश पत्र ७। आ. सं.। क. [illegible]सूरि। ग्रं. १७७। ले. सं. १७०८। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४१ यंत्रराज पत्र १८। आ. सं.। क. महेन्द्रसूरि। ले. सं. १७२२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क्र. ११४२ महादेवीवृत्ति पत्र ३८। आ. सं.। वृ. क. धनराज। ले. सं. १६६२। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।×४।

क्र. ११४३ [illegible] सटीक [illegible] पत्र ३८। आ. सं.। वृ. क. [illegible]। ले. सं. १७१२। पं. १६। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४४ ज्योतिषसारणी [illegible] अस्तव्यस्त। आ. सं.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४५ [illegible]मार्गणायंत्र पत्र १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४६ ऋषिमंडलस्तोत्र पत्र ३। आ. सं.। ग्रं. ७९। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प ९॥।×४।

क्र. ११४७ अजितशांतिस्तोत्र तथा गोडीपार्श्वनाथस्तवन आदि पत्र ५। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४।

क्र. ११४८ नारचंद्रज्योतिष पत्र ७। आ. सं.। क. नरचन्द्रसूरि। ग्रं. २१३। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४९ मुहूर्तचिंतामणि पत्र १४। आ. सं.। क. रामदैवज्ञ। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११५० मुहूर्तदीपक पत्र ३। आ. सं.। क. भूरामदेव (?)। पं. १८। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×४॥

क्र. ११५१ ज्योतिषसारणी पत्र ?। आ. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।

क्र. ११५२ किरातमहाकाव्य पत्र ६९। आ. सं.। क. भारवि। ले. सं. १५२५। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×३॥।.। पत्र १३-६२ नथी।

क्र. ११५३ विवाहपटल सस्तबक पत्र अस्तव्यस्त। आ. सं.। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।

क्र. ११५४ विवाहपटल पत्र ११-१४। आ. सं.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प ९॥।×४।

क्र. ११५५ कर्णकुतूहल वृत्तिसह पत्र ५८। आ. सं.। वृ. क. [illegible]। ग्रं. १८५०। वृ. र. सं. १६७८। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४।

क्र. ११५६ [illegible] पत्र ५। आ. सं.। ग्रं. ७२। ले. सं. १६२५। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×४।

पोथी ५८ मी

क्र. ११५७ षष्टिसंवत्सर अपूर्ण पत्र ६। भा. गू.। पं. १९। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४॥ पत्र ३, ४, नथी।

क्र. ११५८ षष्टिसंवत्सरवृत्ति पत्र ४। भा. सं.। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४।

क्र. ११५९ भुवनदीपक पत्र २-६। भा. सं.। क. पद्मप्रभसूरि। ग्रं. १७१। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४।

क्र. ११६० पंचांगतत्त्वव्याख्यासह पत्र ८। भा. सं.। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४।

क्र. ११६१ बृहद्ग्रहलाघवहरिलसारणी पत्र १९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११६२ आशाधरसारणी पत्र ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११६३ महादेवीसारणी पत्र १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११६४ कल्पसूत्रनवमव्याख्यानबालावबोध पत्र १४-२७। भा. गू.। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४।

क्र. ११६५ आशाधर पत्र ५। भा. स.। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४॥। पत्र १, ४ नथी।

क्र. ११६६ सप्तस्मरणनी अनेक प्रतिओ। भा. प्रा. सं.। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११६७ योगार्कीपद्धति पत्र ३। भा. सं.। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११६८ षड्विंशिकाबालावबोध पत्र ५। भा. गू.। पं. १६। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।×४॥

क्र. ११६९ श्रीपतिसूत्रवृत्ति अपूर्ण पत्र १४। भा. सं.। पं. १५। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११७० कर्णकुतूहलवृत्ति पत्र १८। भा. सं.। मू. क. भास्कराचार्य। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×४

क्र. ११७१ जीवविचारप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ पत्र ५। भा. प्रा. सं.। मू. क. शांतिसूरि। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११७२ ज्योतिषरत्नमाला बालावबोधसह. पत्र २१। भा. सं.। क. श्रीपति। ग्रं. ८८०। ले. सं. १७१४। पं. २२। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १०॥×४॥.।

प्रति चोंटेली अने नकामी छे।

क्र. ११७३ षष्टिसंवत्सरटीका पत्र ४। भा. सं.। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥×४॥

क्र. ११७४ कर्णकुतूहल पत्र १३। भा. सं.। क. भास्कराचार्य। ले. सं. १७०८। पं. १०। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क्र. ११७५ जातकपद्धति टिप्पणीसह पत्र ४। भा. सं.। क. मिश्रप्रेम। ग्रं. ५४। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९×४।

क्र. ११७६ कर्मविपाकज्योतिष पत्र ६। भा. सं.। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।

क्र. ११७७ भुवनदीपकवृत्ति अपूर्ण पत्र १०। भा. सं.। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. ११३७ विष्णुपुरस्वरक्रमज्योतिष पत्र ३। भा. सं.। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४।। प्रति उदरे करडेली छे।

क्र. ११३८ मुष्टिज्ञान पत्र १। भा. सं.। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।

क्र. ११३९ महादेवीज्योतिषपर्यायावली पत्र ७७। भा. प्रा.। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥।। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४० ग्रहभावप्रकाश पत्र ७। भा. सं.। क. पद्मप्रभसूरि। ग्रं. १७७। ले. सं. १७०८। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४१ यंत्रराज पत्र १८। भा. सं.। क. महेन्द्रसूरि। ले. सं. १७२२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क्र. ११४२ महादेवीवृत्ति पत्र ३८। भा. सं.। वृ. क. धनराज। र. सं. १६९२। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।×४।

क्र. ११४३ विवाहवृन्दावन सटीक विवाह पत्र ३८। भा. सं.। वृ. क. ... । ले. सं. १७१२। पं. १६। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥।। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४४ ज्योतिषसारणी अस्तव्यस्त। भा. सं.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥।। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. ११४५ बालावबोधमार्गणयंत्र पत्र १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४६ ऋषिमंडलस्तोत्र पत्र ३। भा. सं.। ग्रं. ७९। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४।

क्र. ११४७ अजितशांतिस्तोत्र तथा गोडीपार्श्वनाथस्तवन आदि पत्र ५। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४।

क्र. ११४८ नारचंद्रज्योतिष पत्र ७। भा. सं.। क. नरचन्द्रसूरि। ग्रं. २१३। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११४९ मुहूर्तचिंतामणि पत्र १४। भा. सं.। क. रामदैवज्ञ। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. ११५० मुहूर्तदीपक पत्र ३। भा. सं.। क. भूप्रमादेव (?)। पं. १८। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ११५१ ज्योतिषसारणी पत्र ?। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।

क्र. ११५२ किरातमहाकाव्य पत्र ६९। भा. सं.। क. भारवि। ले. सं. १५२५। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×३॥।। पत्र १३-६२ नथी।

क्र. ११५३ विवाहपटल सस्तबक पत्र अस्तव्यस्त। भा. सं.। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४।

क्र. ११५४ विवाहपटल पत्र ११-१४। भा. सं.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ११५५ कर्णकुतूहल वृत्तिसह पत्र ५८। भा. सं.। वृ. क. सुमतिहर्षगणि। ग्रं. १८५०। वृ. र. सं. १६७८। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४।

क्र. ११५६ जातकाभरण पत्र ५८। भा. सं.। ग्रं. ७२। ले. सं. १६२७। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥×४।

पोथी ५८ मी

क्र. ११५७ षष्टिसंवत्सर अपूर्ण पत्र ६। आ. गू.। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४॥ पत्र ३, ४, नथी।

क्र. ११५८ षष्टिसंवत्सरवृत्ति पत्र ४। आ. सं.। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४।

क्र. ११५९ भुवनदीपक पत्र २-६। आ. सं.। क. पद्मप्रभसूरि। ग्रं. १७१। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४।

क्र. ११६० पंचांगतत्त्व व्याख्यासह पत्र ८। आ. सं.। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥x४।

क्र. ११६१ [illegible] पत्र ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६२ आशाधरसारणी पत्र ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६३ महादेवीसारणी पत्र १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६४ कल्पसूत्रनवमव्याख्यानबालावबोध पत्र १४-२७। आ. गू.। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४।

क्र. ११६५ आशाधर पत्र ५। आ. सं.। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥x४॥। पत्र १, ४ नथी।

क्र. ११६६ सप्तस्मरणनी अनेक प्रतिओ। आ. प्रा. सं.। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६७ चंद्रार्कीपद्धति पत्र ३। आ. सं.। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६८ षट्पंचाशिकाबालावबोध पत्र ५। आ. गू.। पं. १६। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११६९ श्रीपतिसूत्रवृत्ति अपूर्ण पत्र १४। आ. सं.। पं. १५। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११७० कर्णकुतूहलवृत्ति पत्र १८। आ. सं.। मू. क. भास्कराचार्य। पं. १२। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥x४

क्र. ११७१ जीवविचारप्रकरण लावचूरि त्रिपाठ पत्र ५। आ. प्रा. सं.। मू. क. शांतिसूरि। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११७२ ज्योतिष्रत्नमाला बालावबोधसह पत्र २१। आ. सं.। क. श्रीपति। ग्रं. ८८०। ले. सं. १७३४। पं. २२। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १०॥x४॥।

प्रति चोंटेली अने नकामी छे।

क्र. ११७३ षष्टिसंवत्सरटीका पत्र ४। आ. सं.। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥x४॥

क्र. ११७४ कर्णकुतूहल पत्र १३। आ. सं.। क. भास्कराचार्य। ले. सं. १७०८। पं. १०। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।x४।

क्र. ११७५ जातकपद्धति टिप्पणीसह पत्र ४। आ. सं.। क. मिश्रप्रेम। ग्रं. ५४। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९x४।

क्र. ११७६ कर्मविपाकज्योतिष पत्र ६। आ. सं.। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. १०x४।

क्र. ११७७ भुवनदीपकवृत्ति अपूर्ण पत्र १०। आ. सं.। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥x४

क्र. ११७८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति पत्र ७८। भा. सं.। क. हर्षकीर्त्तिसूरि। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४।

क्र. ११७९ विपाकसूत्र सस्तबक पत्र ८०। भा. प्रा. गू.। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८।×४॥

क्र. ११८० बृहद्ग्रहरत्नाकर पत्र २। भा. सं.। क. योगराज। का. २७। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४॥। प्रति एक बाजुथी उंदरे करडेली छे।

क्र. ११८१ औपपातिकसूत्र सस्तबक पत्र ११६। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १९२७। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४॥

क्र. ११८२ संवत् १७२७ थी १७४१ सुधीनां पंचांगनी विशेष हकीकतोनो लांबो गुटको स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८॥×४।

क्र. ११८३ सीमंधरस्वामिस्तुति आदि स्तुतित्रय पत्र १। भा. प्रा. सं.। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. ८।॥×४।

क्र. ११८४ जंबूद्वीपसंग्रहणी सस्तबक पत्र ८। भा. प्रा. गू.। मू. क. हरिभद्रसूरि। ले. सं. १८१७। पं. १०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८।॥×४॥

क्र. ११८५ शिवामणस्वाध्याय अपूर्ण पत्र २। भा. गू.। पं. १६। स्थि. मध्यम। लं. प. ८।॥×४

क्र. ११८६ ॐकारबावनी अपूर्ण पत्र २। भा. हिं.। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८।॥×४

क्र. ११८७ षडावश्यकसूत्रबालावबोध पत्र ४-४३। भा. गू.। ले. सं. १७४६। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९×४

पोथी ५९ मी

क्र. ११८८ तत्त्वसंग्रहपंजिका पत्र ३३८। भा. सं.। क. कमलशील। ले. सं. १९८३। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११॥×५॥।

क्र. ११८९ द्वादशकुलक विवरणलघु पत्र ९१। भा. प्रा. सं.। मू. क. जिनवल्लभसूरि। वृ. क. जिनपालोपाध्याय। ले. सं. १९८३। पं. १६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११×५॥

क्र. ११९० नयचक्रवचनिका अपूर्ण पत्र १। भा. हिं.। पं. २६। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×५

क्र. ११९१ उपदेशमालाशकुनावली पत्र ४। भा. सं.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।॥×४।॥

क्र. ११९२ चंडीशतक पत्र ९। भा. सं.। क. बाणभट्ट। का. १०१। ले. सं. १५४६। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ११×४।

क्र. ११९३ ऋषभदेवबीवाहलो पत्र १३। भा. गू.। गा. २४५। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११।×५

क्र. ११९४ भक्तामरस्तोत्र सावचूरिक पंचपाठ पत्र ४। भा. सं.। पं. १९। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. ११×४॥

क्र. ११९५ षष्टिसंवत्सर पत्र ३-७। भा. सं.। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. ११×४॥

क्र. ११९६ शकुनावली पत्र १। भा. गू.। स्थि. मध्यम। लं. प. १०॥×४॥।

क्र. ११९७ विवाहपटल सस्तबक पत्र १९। भा. सं. गू.। ग्रं. ११७। ले. सं. १८१७। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०॥×५

क्र. ११९८ अनेक ग्रंथोनां प्रकीर्णक आदि अंत वगेरेमां पानां। लं. प. ११॥×४॥

पोथी ६० मी

क्र. ११९९ परचुरणकवितपदसंग्रह गुटको। भा. हिं.। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×६।

क्र. १२०० गोपीचंदकी वारता पत्र ८। भा. हिं.। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×६।

क्र. १२०१ नंददासनाममाला तथा दुहा सोरठा आदि गुटको। स्थि. श्रेष्ठ। ल. प. ९॥×६।

क्र. १२०२ रसमंजरी तथा अष्टनायिकाभेद पत्र ३८ गुटको। र. क. नंददास। भा. हिं.। ले. सं. १७११। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×६।

क्र. १२०३ कोकशास्त्र पत्र २४। भा. हिं.। क. आनंद। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×६।

क्र. १२०४ रसिकप्रिया पत्र १०६। भा. हिं.। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×६।

क्र. १२०५ माधवानलकामकंदलाचोपाई पत्र ५९। भा. हिं.। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×६।। प्रति भींजाईने चोंटी गई छे।

क्र. १२०६ उपासकदशांगसूत्र अपूर्ण पत्र २३। भा. प्रा.। पं. ८। स्थि. मध्यम। लं. प. ९×५॥

पोथी ६१ मी

क्र. १२०७ चमत्कारचिंतामणि पत्र १२। भा. सं.। पं. ८। स्थि. जीर्ण। लं. प. ८×४॥

क्र. १२०८ भागवतदशमस्कंधपंचाध्यायी पत्र २–१०९। भा. सं.। क. वल्लभदीक्षित। ले. सं. १८२२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ७॥×४॥।। पत्र ६९–९४ नथी।

क्र. १२०९ अर्घकांड अपूर्ण पत्र १२। भा. सं.। पं. ८। स्थि. मध्यम। लं. प. ७॥×५

क्र. १२१० भक्तामरस्तोत्रवृत्ति पत्र ३। भा. सं.। मू. क. मानतुंगसूरि। वृ. क. समयसुंदर। पं. २३। स्थि. मध्यम। लं. प. ७॥×५.

आदिनो अर्धो भाग छोडीने लखवामां आवी छे। उत्तरार्द्ध मात्र छे।

क्र. १२११ दुर्गासप्तशती पत्र ४७। भा. सं.। ले. सं. १७५१। पं. १२। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. ७॥×४॥

क्र. १२१२ विवाहपटल सस्तबक पत्र १५। भा. सं. गू.। मू. ग्रं. १००। ले. सं. १७७०। पं. १८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ७॥×५॥।

क्र. १२१३ शीघ्रबोधसंग्रह ज्योतिष पत्र ८७। भा. सं.। क. काशीनाथ। पं. ८। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ७।×५

क्र. १२१४ कोकसार पत्र ३६। भा. हिं.। ले. सं. १७४८। पं. ८। स्थि. मध्यम। लं. प. ७।×४

क्र. १२१५ योगदीपवैद्यक पत्र ४०। भा. सं.। ले. सं. १७६२। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ७×४.। पत्र २७–३९ नथी।

क्र. १२१६ देवीगीत आदि पत्र ६। भा. हिं.। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ७×४॥

क्र. १२१७ शिक्षापत्री बृ. अ. पत्र ५७। भा. सं. । पं. ९। स्थि. मध्यम। लं. प. ६।।।×४।।।.। पत्र ३२–४० नथी।

क्र. १२१८ सारसिद्धान्तरत्नम् पत्र १८। भा. गू.। ले. सं. १७७५। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. ५।।।×४।।।

पोथी ६२ मी

क्र. १२१९ रत्नाकरावतारिकाटिप्पनक पत्र १४०। भा. सं.। क. ज्ञानचन्द्र। ग्रं. २५०४। लै. सं. १५५१। पं. ६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १३।।×४।

क्र. १२२० खंडनखंडखाद्यटिप्पनक पत्र ८९। भा. सं.। क. परमानंदसूरि। ग्रं. १२५०। ले. सं. १५५१। पं. ६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १३।।×४।

क्र. १२२१ जिनागमपाठसंग्रह अस्तव्यस्त। भा. प्रा. सं.। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १३।×४।।

क्र. १२२२ कथासंग्रह गद्यपद्य पत्र ७–२४। भा. सं.। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।।।×३।।।

क्र. १२२३ नैषधमहाकाव्य पत्र ११ अपूर्ण। भा. सं.। क. श्रीहर्षकवि। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ११।×३।।

क्र. १२२४ लटकमेलकप्रहसन पत्र १०। भा. सं.। क. शंखधर। पं. १०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।।×३।।।.। प्रति अनु. १५मा सैकामां लखाएली छे।

क्र. १२२५ नैषधमहाकाव्य पत्र ९–२०१। भा. सं.। क. श्रीहर्षकवि। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ११।×३।।।.। पत्र १२७–१८१ नथी।

क्र. १२२६ सिद्धहेमसूत्रपाठ आदि त्रुटक अपूर्ण। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९।×३।।

क्र. १२२७ अनुत्तरौपपातिकसूत्र पत्र ६। भा. प्रा.। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९×३।।

पोथी ६३ मी

क्र. १२२८ सन्मतितर्कनी चार अपूर्ण प्रतिओ तथा अनेकांतजयपताका अपूर्ण स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १२।।×५।।।

क्र. १२२९ नारदीयपुराण अपूर्ण पत्र २००। भा. सं.। पं. ७। ले. सं. १४७६। स्थि. मध्यम। लं. प. १२।।×५

पत्र ९० मां—संवतु राजाश्रीविक्रमादित्ये १४७६ वर्षे पोष सुदि १ प्रतिपदायां मूलनक्षत्रे श्रीमेलिकवाहण स्थाने प्रवर्त्तमानेऽति श्रीहरिचंद्रः। तस्य पुत्रेण व्यास जनार्दनेन लिखितमिदं पुस्तकं शिवमस्तु॥छ॥

आ ग्रंथमां नासिकेत तथा रुक्मांगदचरित्रादि छे।

क्र. १२३० प्रेतमंजरी पत्र १६। भा. सं.। ग्रं. १५४। पं. ७। स्थि. मध्यम। लं. प. १२।।×५

क्र. १२३१ विवेकविलास पत्र ४५। भा. सं.। क. जिनदत्तसूरि। र. सं. १४९३। ले. सं. १४९७। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १२।×४।।

अन्त—

भुवननंदयुगेन्दुसुवत्सरे प्रबलमाधवपक्षसमासके। असितपक्षसुकर्मदिने तिथौ..........रराजिते ॥१॥

वाचनाचार्य श्री ५ श्री वाचकोत्तमवाचक श्री ५ श्री १०८ श्री सोमसुंदरजी शिष्य भयाचंद दीपचंदजी मुनि भयाचंदकेन लिखितं स्ववाचनार्थं। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु ॥श्री॥

जलाद्रक्षेत् स्थलात् रक्षेत् रक्षेत् शिथिलबंधनात्। मूर्खहस्तेषु गतात् रक्षेदेवं वदति पुस्तिका ॥

भद्रं भूयात् श्रेय ॥श्री॥

क्र. १२४५ (१) कल्याणमंदिरस्तोत्र सावचूरि पत्र १–७। भा. सं.।

(२) भक्तामरस्तोत्र सावचूरि पत्र ७–९ अपूर्ण। भा. सं। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२४६ भवानीसहस्रनामस्तोत्र तथा जैनरक्षास्तोत्र पत्र ७। भा. सं। म. ग्रं. २०६। जै. ग्रं. १७। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२४७ धनंजयनाममाला अपूर्ण पत्र २७। भा. सं.। क. धनंजय। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२४८ कथासंग्रह पत्र ६। भा. प्रा. सं। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १९। लं. प. १०।×४।

क्र. १२४९ चंद्रार्कीटिप्पणिका पत्र ३। भा. स.। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क्र. १२५० उल्लासिक्रमस्तोत्रबालावबोध अपूर्ण पत्र २। भा. गू.। पं. २३। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।×४।

क्र. १२५१ वृत्तरत्नाकर पत्र २–७। भा. स.। क. केदारभट्ट। पं. १०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।

क्र. १२५२ जयतिहुयणस्तोत्र पत्र ३। भा. अप.। क. अभयदेवसूरि। कडी. ३०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प १०।×४॥

क्र. १२५३ दुरियरयस्तोत्र अपूर्ण पत्र ६। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ४४। पं. ४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२५४ भक्तामरस्तोत्र बालावबोधसह पंचपाठ पत्र ६–२४। भा. सं. गू.। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२५५ स्वप्नचिंतामणि पत्र ९। भा. सं.। क. जगदेव। ग्रं. २५१। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प १०×४।

क्र. १२५६ लग्नपत्रसारणी पत्र ३०। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४॥

क्र. १२५७ चैत्यवंदनावंदनकप्रत्याख्यानविवरण पत्र २४–३५। भा. स.। पं. १४। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२५८ शिशुपालकथा पत्र ६–८। भा. गू.। पं. १८। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४॥

क्र. १२५९ स्तोत्रस्तवनादिसंग्रह पत्र ९। भा. अप. गू.। पं. २१। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १२६० आचारांगसूत्रआलापक बालावबोधसह पंचपाठ पत्र २–४। भा. प्रा. गू.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४॥

क्र. १२६१ क्रांतिसाधन पत्र ३। भा. सं.। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४॥

क्र. १२६२ सरस्वतीस्तवन पत्र १। भा. सं। ग्रं. १२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क. १२६३ (१) **नेमिनाथबारमासा गीत** पत्र १ल्ल। भा. गू.। क. धर्मकीर्त्ति। गा. १७।
(२) **जेसलमेरपार्श्वनाथगीत** पत्र १-२। भा. गू.। क. धर्मकीर्त्ति। गा. ७।
(३) **जिनचंद्रसूरिगीत** पत्र २जु। भा. गू.। क. धर्मकीर्त्ति। गा. ९।
(४) **सीमंधरगीत** पत्र १-२। भा गू। क. धर्मकीर्त्ति। गा. ७। पं. १३।
स्थि. जीर्ण। लं. प. १०।×४।

क. १२६४ **ज्योतिषरत्नमाला बालावबोधसह** अपूर्ण पत्र १०। भा. स गू.। पं. १३। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. १०×४॥

क. १२६५ **ऋषिमंडलप्रकरण** पत्र २-८। भा प्रा.। क. धर्मघोषसूरि। गा. ११०। ले. सं. १६५२। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। ल. प. १०।×४।

क. १२६६ **शीतलामातागीत आदि** पत्र १। भा गू.। क. (१) कानजी। गा. ७। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०।×४।

क. १२६७ **सिद्धांतशिरोमणिसूत्र** पत्र १५-२६। भा. सं.। क. भास्कराचार्य। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४।

क. १२६८ **उपधानविधिप्रकरण** पत्र ३। भा. प्रा.। क. मानदेवसूरि। गा. ५४। पं १०। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प ९।×३।

क. १२६९ **राशिचक्र** पत्र ३। भा. स.। पं. १०। स्थि. जीर्ण। लं प. ९।×३।

क. १२७० **नंदिताढ्यछंद शास्त्र** किंचिदपूर्ण पत्र ७। भा प्रा। पं. ८। स्थि मध्यम। लं प ९×३॥।

क. १२७१ **संवत् १८२२ नु पंचांग**। स्थि मध्यम। लं प ८।×४॥।

क. १२७२ **भागवतदशमस्कंधविवरण** अपूर्ण पत्र ४८। भा. ग। पं. १३। स्थि जीर्ण। लं. प. ७॥।×४॥।

क. १२७३ **अंतःकरणप्रबोधवृत्ति** पत्र २-९। भा सं.। क वल्लभ। ग्रं. १७०। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ७॥।×४॥।.। प्रति चोंटेली छे।

पोथी ६५ मी क. १२७४

पोथी ६६ मी क. १२७५

पोथी ६७ मी

क. १२७६ **राजप्रश्नीयोपांगसूत्रवृत्ति** पत्र ७०। भा. स। वृ. क. आचार्य मलयगिरि। ले. सं. अनु. १४मानु उत्तरार्द्ध। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १७।×३.। प्रति उधेईए खाधेली छे।

क. १२७७ **चैत्यवंदनाकुलक वृत्तिसहित अपूर्ण** पत्र २-१५। स्थि. श्रेष्ठ। ले. सं. अनु. १४ मा सैको। लं. प. १७।×३

आ ग्रंथनो बीजो मूल श्लोक—
यस्योच्चैः हस्तदृष्तस्फुरदरुणनखश्रेणिरोचिष्प्रपंचस्तीव्रध्वान्त

क. १२७८ **अंजनासुंदरीकथानक** पत्र २३। भा. प्रा.। क. गुणसमृद्धि महत्तरा। गा. ५०४। र. सं. १४०७। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १२।×।३

अन्त—

सिरिजेसलमेरपुरे विक्कमचउदहसतुत्तरे वरिसे । वीरजिणजम्मदिवसे कियमंजणसुदरीचरियं ॥५०३॥

जो आसायण कुणई अणंतससारु भमइ सो जीवो । जो आसायण रक्खइ सो पावइ सासयं ठाणं ॥५०४॥

इति श्रीअंजणासुदरीमहासतीकथानक समाप्तम् ॥ कृतिरियं श्रीजिनचंद्रसूरिशिष्यणीश्रीगुणसमृद्धिमहत्तरायाः ॥छ॥ शुभं भवतु । श्रमणसघस्य ॥छ॥

पोथी ६८ मी

क्र. १२७९ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य दशमपर्व महावीरचरित्र पत्र २४१ । भा. सं. । क. हेमचन्द्रसूरि । ले. सं. १३८४ । लं. प. १५×२॥

अन्त—

सवत् १३८५ वर्षे अश्विन सुदि त्रयोदश्यां रवौ श्रीमत्मठस्थाने श्रीमहावीरपुस्तकमलेखि । श्रीलेखक-पाठकयोः ॥छ॥छ॥

श्रीवीरनाथः सकलः शशांकः शिवावतसस्थितिरद्भुतश्रीः ।
शीतात्मकः स्फोटितपापतापः सदा मतानां तमस भिनत्तु ॥१॥
अस्तींदिराधाम कवीन्द्रराजिविराजित सूरबुधः समृद्धम् ।
गुर्वेश्वरश्रीदसमूहयुक्त सुरालयाद् बाहुपुर मन्योन्यम् (मनोज्ञम्) ॥२॥
श्रीमालवशः सुकृतावतसस्तस्मिन् पुरे भूपकृतप्रशंस ।
पात्रालयो मानवरत्नखानिर्जीयाचिर धर्मसुपर्वजानि. ॥३॥
भुवनविदितकीर्त्तिस्तत्र वशे विशाले नरपतिरितिनामा साधुरासीन्नयज्ञ. ।
गुरुजनगुरुभक्तिप्रीतचित्त. सुवृत्तः शुभगुणगणशाली धर्मकर्मप्रवीण. ॥४॥
आसीत् प्रिया तस्य सुलक्षणस्य धानीति नाम्नी गुरुभक्तियुक्ता ।
तयोर्बभूवुस्तनया सुशीला गुणास्त्रयोऽपीव शरीरबद्धाः ॥५॥
गुणैर्गरिष्ठोऽजनि साधुरांबूदेदाभिधानः प्रथितो द्वितीयः ।
लाषूस्तृतीयः सरलस्वभावस्त्रयोऽपि गांभीर्यगुणादियुक्ताः ॥६॥
समधरधीरिति दयिताऽस्यांबूनाम्नो विशुद्धतरचित्ता ।
अजनिषत शुद्धपक्षा दक्षाश्चत्वार इह तनयाः ॥७॥
कामाभिधोऽभूत् प्रथमः प्रतीतोऽपरो नयी कुवरपालनामा ।
नानूस्तृतीयः सुगुणैरमेयो हीलाख्यसाधुः सुकृती तुरीयः ॥८॥
लाषूनाम्नस्तृतीयस्य कामदेवसमत्विषः । वीरोधीरिति संजज्ञे कांता कांता रतिद्युतिः ॥९॥
वीरोधीः स्यात् श्राविकाणां गरिष्ठा सल्लावण्या दानदाक्षिण्यशिष्टा ।
मन्ये सम्यक् शीलयोगेन दक्षा सत्सौभाग्येनापि सीतासदृशा ॥१०॥
धीराकनामेति तयोः सुबुद्धिः आद्यो द्वितीयोऽजनि खेतसिंहः ।
गोविंदनामा विदुरस्तृतीयो जीयासुरेते तनुजास्त्रयोऽपि ॥११॥
धीराभार्या धोतू रम्यालकारधारिणी सौम्या । यद्विमलशीलमहिमा नित्यं संस्तूयते विबुधैः ॥१२॥
खेताकनाम्नो दयिता बभूव साल्ही सदाचारविशुद्धबुद्धिः ।
य द्रूपशोभामवलोक्य काममरुधती विष्णुपद सिषेवे ॥१३॥

गोविंदसाधोरभवद्विनीता शांता प्रिया रोहिणिनामधेया।
अद्यापि मन्ये सकलत्वमस्याः सा रोहिणी ध्यायति रोहिणीशम् ॥१४॥
श्रीविक्रमादित्यनरेन्द्रकालाद् वेदाष्टयक्षप्रमिते १३८४ व्यतीते।
संवत्सरे माधवमासि षष्ठ्यां तिथौ सितायां शुचि चन्द्रवारे ॥१५॥
अलेखयत् श्रीजिनवीरनाथचरित्रमेतत् परितः पवित्रम् ।
स साधुधीराक इति स्वमातुः सुपुण्यपोषाय विशालकीर्त्तिः ॥१६॥ युग्मम् ॥
नक्षत्राक्षतपूरितं मरकतस्थाल विशालं नभः, पीयूषद्युति नालिकेरकलित श्रीचन्द्रिकाचदनम्।
यावन्मेरुकराग्रसंस्थितमिद धत्ते धरित्रीवधूस्तावन्नन्दतु पुस्तिका भुवि चिर व्याख्यायतां साधुभिः ॥१७॥

पोथी ६९ मी

क्र. १२८० संग्रहणीप्रकरण आदि संक्षिप्तटिप्पणी पत्र ८। **भा.** स। **स्थि.** जीर्ण। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **लं. प.** १४×३॥

क्र. १२८१ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य प्रथमपर्व आदिनाथचरित्र अपूर्ण पत्र १०२। **क.** हेमचद्राचार्य। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **लं. प.** १४×३॥।

क्र. १२८२ दुर्गवृत्तिद्व्याश्रयमहाकाव्य स्वोपज्ञवृत्तिसह त्रटक अपूर्ण पत्र १२२-२८२। **भा.** स.। **क.** जिनप्रभसूरि स्वोपज्ञ। **स्थि.** जीर्ण। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **लं. प.** १२॥।×३।।

क्र. १२८३ पंचवस्तुकप्रकरणवृत्ति प्रथमखंड अपूर्ण पत्र १९९। **क.** मुनिचद्रसूरि। **भा.** स। **ले. सं.** अनु १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२।×३॥

पोथी ७० मी

क्र. १२८४ कर्मप्रकृतिप्रकरण सटीक अपूर्ण पत्र ३४७। **भा** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **टी. क.** आचार्य मलयगिरि। **ले. सं.** अनु. १४ मा सैकानु पूर्वार्द्ध। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×३.।

पत्र ११७ तथा ११८, १५५, १६१-१६३, १९५, १९७, २०४-३४६ नथी।

क्र. १२८५ (१) प्रद्युम्नशांबचरित्र पत्र ३-५०। **भा** प्रा.। **गा.** १०७०।

(२) सीताचरित्र अपूर्ण पत्र ५०-१४३। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १२×३.।

पत्र—२५-४६, ५५, ५७-६१, ६६-६९, ७१, ७३-७४, ७७, ७९-८५, ८९-९०, ९७, १०६, १०८, ११०, ११५, १२२, १३९, १४२ नथी।

क्र. १२८६ बृहत्संग्रहणीप्रकरण त्रु. अ. पत्र ५६-७६। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** अतिजीर्ण। **लं. प.** ११॥।×३।

क्र. १२८७ पाणिनीव्याकरणमहाभाष्यप्रदीप त्रु. अ. पत्र ४-१०८। **भा.** सं.। **क.** कैयट। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११॥×३।.। वचमां केटलांक पानां नथी।

पोथी ७१ मी

क्र. १२८८ (१) कातंत्रव्याकरणदुर्गपदप्रबोधवृत्तिढुंढिका कारकपर्यन्त पत्र २०८। **भा.सं.गू.**।

(२) शास्त्रीयअनेकविचार पत्र २०९-२४३। **भा.** सं. गू.।

(३) कर्मविपाककर्मग्रंथबालावबोध पत्र २४४-२५७। **भा.** सं. गू.।

(४) लघुअजितशांतिस्तव भाषार्थसह पत्र २५७-२६१। भा. सं. गू.। मू. क. जिनदत्तसूरि।

(५) प्रकीर्णकविचार पत्र २६१-२६४। भा. सं.। ले. सं. अनु. १५ मो सैको। स्थि. मध्यम। लं. प. ११॥×२॥।

क्र. १२८९ (१) बृहत्संग्रहणीप्रकरण (२) वंदनविधिप्रकरण (३) पंचाशकप्रकरण (४) श्रावकवक्तव्यताप्रकरण (५) भवभावनाप्रकरण आदि प्रकरणो। पत्र २२४। ले. सं. अनु. १४ मो सैको। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. १०॥।×३।। प्रति चोंटी गयेली अने उंदरे करडी खाधेली छे।

पोथी ७२ मी

क्र. १२९० उपदेशमालाप्रकरण दोघट्टीवृत्तिसह अपूर्ण पत्र ७-३७०। भा. प्रा. स। टी. क. रत्नप्रभाचार्य। ले. सं. अनु. १४ मो सैको। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १२×३।। पत्र २१९-२२० नथी।

क्र. १२९१ कातंत्रव्याकरण विद्यानंदिवृत्तिसह पत्र ३२३। भा. सं.। क. विजयानंद। ले. सं. १३९२। भा. सं.। स्थि. मध्यम। लं. प. १२×३

प्रति पाणीमां भींजाइने खराब थई छे अने अक्षरो उखडी गया छे।

अन्त—

इति विजयानन्दविरचिते कातन्त्रोत्तरे विद्यानन्दापरनाम्नि कृत्सु षष्ठ. पाद. समाप्त. ॥छ॥छ॥छ॥ शिव भूयात् सघस्य ॥छ॥छ॥ॐ॥ संवत १३९२ मार्गशीर्षशुक्ल अष्टम्यां श्रीविद्यानन्दमहाशास्त्रपुस्तक समर्थित श्री-मज्जिनचन्द्रसूरिशिष्येण यशःकीर्तिगणिना श्रीदेवराजपुरस्थितेन ॥छ॥

पोथी ७३ मी

क्र. १२९२ प्रवचनसारोद्धारप्रकरणवृत्ति द्वितीयखंड ३४ मा द्वारथी ८३ मा द्वार पर्यंत पत्र २३०। भा. स। ले. सं अनु १५मानु पूर्वार्द्ध। स्थि श्रेष्ठ। लं. प. १२॥×२॥।

क्र. १२९३ प्रवचनसारोद्धारप्रकरणवृत्ति तृतीयखंड ८४ मा द्वारथी २१७ द्वार पर्यंत पत्र २२८। भा. स.। ले. सं. अनु. १५मानु पूर्वार्द्ध। स्थि अतिजीर्ण। लं. प. १२॥×२॥।।

पत्र ६२-६४, ७६, ७८, ८९ २२५, २२७ नथी। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

पोथी ७४ मी

क्र. १२९४ पंचवस्तुकप्रकरणवृत्ति प्रथमखंड पत्र २१६। ले सं अनु १४ मानु उत्तराद्ध। स्थि.अतिजीर्ण। लं. प. १२॥×२॥।। प्रति पाणीमां भींजाएली छे। प्रति उधेइए खाधेली छे।

आदि—प्रणिपत्य जिन वीर

क्र. १२९५ रुद्रटालंकार त्रुटक अपूर्ण पत्र ४६-५९। भा. स.। क. रुद्रट। ले. सं. अनु १४मो सैको। स्थि अतिजीर्ण। लं. प. ११॥×३।

क्र. १२९६ शिशुपालवधमहाकाव्य-माघकाव्य टिप्पणीसह २० मा सर्ग पर्यन्त अपूर्ण पत्र १०७। भा स। क. महाकवि माघ। ले. सं. अनु १४मानु उत्तरार्द्ध। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प १०॥।×२॥

क्र १२९७ कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति अपूर्ण पत्र ३-३२। भा. स। वृ. क. दुर्गसिंह। ले सं अनु १५ मो सैको। स्थि श्रेष्ठ। लं. प. ११×३

क्र. १२९८ शतककर्मग्रंथ सटीक पत्र ७। **भा.** प्रा. स.। **ग्रं.** ३७००। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **टी. क.** मलधारी हेमचंद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** अतिजीर्ण। **लं. प.** ११×२॥।
प्रतिना पानांना अंको घसाइ जवाथी पानां अस्तव्यस्त छे।

क्र. १२९९ (१) सर्वजिननमस्कार पत्र १ लु। **भा.** स.। **ग्रं.** ६ काव्य।

आदि—स्तोतुं समर्थ किल

(२) चतुर्विंशतिजिनस्तव पत्र १-४। **भा.** स.। **क.** पूर्णभद्र।

आदि—विभक्तिभिः सप्तभिरस्मिसर्ववचोभिरुत्कृष्टगुणस्तवेन

अन्त—

इत्थं सुभक्त्यादरतः पवित्रं ये मोदिनः स्तोत्रमिदं विचित्रं। तीर्थंकराणां पुरतः पठंति ते पूर्णभद्र पदमाप्नुवंति ॥१६॥
॥ इति सर्वविभक्तिवचनांतयत्तन्नामविन्यासवैचित्र्येण चतुर्विंशतिजिनस्तवनं समाप्तम् ॥छ॥

(३) जिननमस्कार पत्र ४-६। **भा.** स.। **का.** २०।

आदि—नाभेयो भवतीति

ले. सं. अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×२॥।। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. १३०० (१) दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति पत्र १-२१। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ४४४।

(२) उत्तराध्ययनसूत्रनिर्युक्ति पत्र २२-४७। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** ५९६। **ले. सं.** १२७७।

अन्त—उत्तरज्झयणाण **निज्जुत्तीओ** समत्ताओ ॥छ॥

अश्वस्वरद्युमणिसम्मितविक्रमाब्दे ज्येष्ठस्य दर्शदिवसे ग्रहणे च भानोः।
वीजापुरे जिनपतेर्यतिपस्य शिष्यो निर्युक्तिमालिखदिमा मुनिपूर्णभद्रः ॥१॥छ॥

शुभमस्तु लेखकपाठकव्याख्यातृश्रोतृणां ॥ मंगलं महाश्री ॥

(३) आचारांगसूत्रनिर्युक्ति पत्र ४८-६५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ग्रं.** ४७०। **ले. सं.** १२७७।

अन्त—आचारांगनिज्जुत्ती समत्ता ॥छ॥ अनुष्टुप्छंदसा श्लो. ४७०।

मुनिभवरविसंख्ये विक्रमादित्यवासरे। अश्वयुक्प्रथमपक्षस्याष्टमी दिवसे रवौ ॥१॥
प्रल्हादनपुरस्थेन पूर्णभद्रेण साधुना। निर्युक्तिः प्रथमाङ्गस्याऽलेखि कर्मविमुक्तये ॥२॥ नमो नमः श्रीजिनशासनाय ॥

(४) सूत्रकृतांगसूत्रनिर्युक्ति पत्र ६६-७५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **गा.** २०८। **पं.** ७। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ११॥।×२।

पोथी ७५ मी

क्र. १३०१ सनत्कुमारचरित्र पत्र १८४। **भा.** स.। **क.** जिनपालगणि। **ले. सं.** १२७८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×३

क्र. १३०२ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य सप्तमपर्व-रामायण पत्र २-१८५। **भा.** सं.। **क.** आचार्य हेमचंद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×३
पत्र १०-१३ नथी।

क्र. १३०३ किरातार्जुनीयमहाकाव्य पंचदशसर्गपर्यंत पत्र ७६। **भा.** सं.। **क.** महाकवि भारवि। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×२॥

क्र. १३०४ नैषधमहाकाव्य पंचमसर्गपर्यन्त टिप्पणीसह पत्र ७८। **भा.** सं.। **क.** श्रीहर्ष। **ग्रं.** ९३५। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×२॥

क्र. १३०५ (१) चच्चरीरासक सटीक पत्र १७-३९। **भा.** अपभ्रंश सं.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **टी. क.** जिनपाल। **टी. र. सं.** १२९४।

(२) **उपदेशरसायनरासक सटीक** पत्र ३९-५९। **भा.** अप. सं.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **टी. क.** जिनपाल। **टी. र. सं.** १२९४।

(३) **कालस्वरूपकुलकविवरण** पत्र ५९-६५। **भा.** स। **क.** जिनपाल। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३

क्र. १३०६ सामायिकप्राप्तिआदिविषयककथानकादि पत्र १३। **भा.** प्रा. स.। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३

पोथी ७६ मी

क्र. १३०७ तत्त्वप्रदीपिका चित्सुखी पत्र १९५। **भा.** स.। **क.** चित्सुखमुनि। **ले. सं.** अनु. १३मा सैकानु उत्तरार्द्ध। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ९।×२॥

क्र. १३०८ कातंत्रव्याकरणदौर्गसिंहीवृत्ति त्रटक अपूर्ण पत्र १९९। **भा.** स। **वृ क.** दुर्गसिंह। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प** ९×३।। पाना अस्तव्यस्त छे।

क्र. १३०९ सिंहासनद्वात्रिंशिका पत्र ३३-८०। **भा.** स। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८॥×३.। आदि अने अतनो थोडो भाग नथी।

क्र. १३१० (१) पाक्षिकसूत्र पत्र १-१७। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ३००।

(२) **यतिप्रतिक्रमणसूत्र** पत्र १७-२२। **भा.** प्रा।

(३) **स्थविरावलि** पत्र २२-२५। **भा.** प्रा.। **गा.** ५०।

(४) **पिंडविशुद्धिप्रकरण** पत्र २५-३०। **भा.** प्रा। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १०३।

(५) **दशवैकालिकसूत्र** पत्र ३०-६८। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं.** ७००।

(६) **उपदेशमालाप्रकरण** पत्र ६९-१०३। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४१। **ले. सं.** अनु. १५ मो सैको। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ८।×३।

क्र. १३११ षट्स्थानकप्रकरण वृत्तिसह त्रु. अ. पत्र ९३। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** अभयदेवसूरि। **वृ. क.** जिनपाल। **ले. सं.** अनु १४मो सैको। **स्थि.** अतिजीर्ण। **लं. प.** ८।॥×२॥

प्रति अत्यन्त अस्तव्यस्त छे।

पोथी ७७ मी

क्र. १३१२ पंचवस्तुकप्रकरण पत्र १९१। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९×२॥।

क्र. १३१३ किरणावली पत्र २२९। **भा.** स.। **ले. सं.** अनु. १४ मो सैको। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९×३।

क्र. १३१४ दमयंतीकथाचंपू त्र. अपूर्ण पत्र ९४। **भा.** स.। **क.** त्रिविक्रमभट्ट। **ले. सं.**। अनु. १३मानु उत्तरार्द्ध। **स्थि.** अतिजीर्ण। **लं. प.** ९×३।.। पत्रांको भुसाइ गया छे।

पोथी ७८ मी

क्र. १३१५ बृहत्संग्रहणीप्रकरण अपूर्ण पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ले. स.** अनु. १४ मो सको। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** ८×३

क्र. १३१६ (१) ऋषभदेव, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरजिनपंचस्तवी पत्र १९२-१९४। **भा.** प्रा.। **गा.** ३१।

(२) धूमावलि पत्र १९४-१९५। **भा.** प्रा.। **गा.** १४।

(३) अजितशांतिस्तोत्र पत्र १९६-२०२। **भा.** प्रा.। **क.** नन्दिषेण। **गा.** ४२। **ले. सं.** १३३४। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ८।×३

अन्त—ॐ श्रीवीरजिण प्रणम्यः अवकउरग्राम द...पुत्तहरिया लिषित सवत् १३३४ चैत्र वदि ५ रा श्रीलोहट राज्ये लिषित।

क्र. १३१७ (१) उपदेशमालाप्रकरण पत्र ३-३५। **भा.** प्रा.। **क.** धर्मदासगणि। **गा.** ५४१।

(२) श्रावकधर्मविधितंत्रप्रकरण पत्र ३५-४२। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **गा.** १२०।

(३) आगमोद्धारगाथा-स्वप्नसप्ततिकाप्रकरण पत्र ४२-४६। **भा.** प्रा.। **गा.** ७१।

(४) श्रावकवक्तव्यताप्रकरण-षट्स्थानकप्रकरण पत्र ४६-५३। **भा** प्रा.। **क** अभयदेवसूरि। **गा.** १०३।

(५) पंचलिंगीप्रकरण अपूर्ण पत्र ५३-५८। **भा** प्रा.।

(६) द्वादशकुलक पत्र ६९-८६। **भा** प्रा.। **क** जिनवल्लभसूरि।

(७) प्रवचनसंदोह अपूर्ण पत्र ८६-१०३। **भा** प्रा।

(८) नाभेयस्तोत्र, शांतिनाथस्तोत्र, नेमिनाथस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, महावीरस्तोत्र पत्र १११-१८। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १३२।

(९) गणधरस्तव पत्र ११९-१२०। **भा.** प्रा। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** २१।

(१०) चैत्यवन्दनकुलक पत्र १२०-१२२। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** ३०।

(११) चैत्यवन्दनविधिकुलक पत्र १२२-१२४। **भा** प्रा.। **गा.** ३३।

(१२) श्रावकआवश्यकसूत्र पत्र १२४-१२७। **भा.** प्रा.।

(१३) चच्चरीप्रकरण पत्र १२७-१३२। **भा.** अपभ्रंश। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** ४७।

(१४) उपदेशरसायन पत्र १३२-१३८। **भा.** अपभ्रंश। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** ८०।

(१५) कालस्वरूपकुलक पत्र १३८-१४१। **भा.** अपभ्रंश। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** ३१।

(१६) गणधरसार्धशतकप्रकरण पत्र १४१-१५०। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **गा.** १५०।

(१७) संदेहदोलावलीप्रकरण पत्र १५०-१५९। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **गा.** १५०।

(१८) वन्दित्तुसूत्र पत्र १५९-१६३। **भा.** प्रा। **गा.** ५०।

(१९) प्रश्नोत्तररत्नमालिका अपूर्ण पत्र १६४-१६५। **भा.** स। **क.** विमलाचार्य।

(२०) नवकारफल पत्र १७०मुं। **भा.** प्रा.। **गा.** २३।

(२१) अजितशांतिस्तव पत्र १७०-१७४। भा. प्रा.। क. नंदिषेण। गा. ३९।
(२२) लघुअजितशांतिस्तोत्र पत्र १७७-१७८। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १७।
(२३) स्नपनविधि पत्र १८२-१९३। भा. सं.।
(२४) कथानककोश पत्र १९३-१९५। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. ३०।
(२५) चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र १९५-१९६। भा. प्रा.। गा. २८।
(२६) आतुरप्रत्याख्यान पत्र १९६-१९९। भा. प्रा.। गा. १९।
(२७) भावनाप्रकरण पत्र १९९-२०१। भा. प्रा.। गा. २९।
(२८) प्रव्रज्याविधानप्रकरण पत्र २०१-२०३। भा. प्रा.। गा. ३०। ले. सं.

अनु. १४ मो सैको। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८।×३.। वचमां केटलांक पानां नथी।

क्र. १३१८ कातंत्रसूत्रपाठ त्रु अ. पत्र ४-१५। भा. स.। ले. सं. अनु. १५ मो सैको। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८×३.। वचमां पानां नथी।

क्र. १३१९ ऋषिदत्ताचरित्र अपूर्ण भा. प्रा.। ले. सं. अनु. १४ मो सैको। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. ८×२॥

क्र. १३२० स्मरणस्तोत्रत्रिक पत्र २४२-२४६। भा. प्रा.। ले. सं. अनु. १४ मो सैको। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. ८।×२॥

क्र. १३२१ उपदेशमालाप्रकरण अपूर्ण पत्र १०५-११६। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। ले. सं. अनु. १४ मो सैको। स्थि. अतिजीर्ण। लं. प. ८।×२॥।

क्र. १३२२ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति अपूर्ण पत्र २६। भा. प्रा.। क. भद्रबाहुस्वामि। ले. सं. अनु. १५ मो सैको। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ७॥।×२॥।। प्रति पाणीमां भींजाएली छे।

क्र. १३२३ योगशास्त्र नवतत्त्व जीवविचारप्रकरण आदिनां प्रकीर्णक पानां अपूर्ण त्रुटक। भा. सं. प्रा.। ले. सं. १५१८। स्थि. जीर्ण। लं. प. ६॥।×२॥

पोथी ७९ मी

क्र. १३२४ (१) सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण पत्र ७३। भा. प्रा.। क. धर्मेश्वरसूरि। ले. सं. १२४६।

(२) षडशीतिप्रकरण चतुर्थकर्मग्रंथ टिप्पनकसह पत्र ७४-१०५। भा. प्रा.। मू. क. जिनवल्लभगणि। टि. क. रामदेवगणि। ले. सं. १२४६। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८।×२॥।

क्र. १३२५ मणिपतिराजर्षिचरित्र पत्र १०७। भा. सं.। क. जंबूकवि। ले. सं. अनु. १३ मो सैको। स्थि. जीर्णप्राय। लं. प. ८।×२॥।। प्रति उधेइए खावेली छे।

क्र. १३२६ (१) उपदेशमालाप्रकरण पत्र १-४२। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४१।

(२) पिंडविशुद्धिप्रकरण पत्र ४२-५०। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. १०३।

(३) श्रावककर्तव्यताप्रकरण-षट्स्थानकप्रकरण पत्र ५०-५८। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०३।

(४) पंचलिंगीप्रकरण पत्र ५८-६६। भा. प्रा.। क. जिनेश्वरसूरि। गा. १०१।

(५) श्रावकधर्मविधितंत्रप्रकरण पत्र ६६-७५। क. हरिभद्रसूरि। गा. १२०।

(६) **आगमोद्धारगाथा-स्वप्नसप्ततिका** पत्र ७५-८० । **भा.** प्रा. । **गा.** ७१ ।

(७) **जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण** पत्र ८०-८८ । **भा.** प्रा । **गा** १०९ ।

(८) **संदेहदोलावलीप्रकरण** पत्र ८८-१०१ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** १५० ।

(९) **गणधरसार्धशतकप्रकरण** पत्र १०१-११२ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** १५० ।

(१०) **पंचनमस्कारफलस्तव** पत्र ११२-१२१ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनचंद्रसूरि । **गा.** ११८ ।

(११) **नाणाचित्तप्रकरण** पत्र १२१-१२७ । **भा.** प्रा. । **गा.** ८१ ।

(१२) **कथानककोश** पत्र १२८-१३० । **भा.** प्रा. । **क** जिनेश्वरसूरि । **गा** ३० ।

(१३) **व्यवस्थाकुलक** पत्र १३०-१३५ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** ७५ ।

(१४) **पष्टिशतप्रकरण** पत्र १३५-१४७ । **भा.** प्रा. । **क.** नेमिचंद्र भंडारी । **गा.** १६१ ।

(१५) **विवेकमंजरीप्रकरण** पत्र १४७-१५८ । **भा.** प्रा. । **क.** आसड । **गा.** १४४ । **र. सं.** १२४८ ।

अन्त—

विवेकमंजरीप्रकरण समाप्तम् ॥छ॥ संवत् १३८५ वर्षे चैत्रमासे **मु**निसिंहगणिना पुस्तिका लिखिताः श्रीआलापुरे ॥

(१६) **प्रवचनसंदोहप्रकरण** पत्र १५९-१८१ । **भा.** प्रा. ।

(१७) **बालावबोधप्रकरण** पत्र १८१-१९२ । **भा** अपभ्रंश । **गा.** ११६ ।

आदि—

पणमवि जिणवइ देउ गुरु अनु सरसइ सुमरेवि ।
धम्मुवएसु पयपियइ सुणि अवहाणु करेवि ॥१॥

(१८) **चतुर्विंशतितीर्थंकरनमस्कार** पत्र १९२-१९७ । **भा.** अपभ्रंश । **गा.** २५ ।

आदि—देव तिहुयणपणयपयकमल ।

(१९) **चतुर्विंशतिजिननमस्कार** पत्र १९७-२०२ । **भा.** अपभ्रंश । **गा.** २५ ।

आदि—

पढमजिणवर जणमणाणंद सुरनाहसंथुयचलण भरहजणय,
जय पढमसामिय ससारवणगहणदवचत्तदोस अपवग्गगामिय ! ।
लोयालोयपयासयर पयडियधम्माहम्म ! ।
सुविहाणउ तुहु रिसहजिण ! दुज्जयनिज्जियकम्म ॥१॥

अन्त—सुविहाणांकाश्चतुर्विंशतिजिननमस्काराः ॥ लिखिताः श्रीआलापुरे **आ**नन्दमूर्त्तिमुनिना ॥

(२०) **श्रावकषडावश्यकसूत्र** पत्र २०२-२१९ । **भा.** प्रा. स. गू. ।

(२१) **जयतिहुयणस्तोत्र** पत्र २१९-२२४ । **भा.** अपभ्रंश । **क.** अभयदेवसूरि । **कडी.** ३० ।

(२२) **अजितशांतिजिनस्तोत्र** पत्र २२४-२३० । **भा.** प्रा. । **क.** नंदिषेण । **गा.** ३९ ।

(२३) उल्लासिक्कमस्तोत्र-लघुअजितशांतिस्तोत्र पत्र २३०-२३२ । भा. प्रा. । क. जिनवल्लभगणि । गा. १७ ।

(२४) भयहरस्तोत्र पत्र २३२-२३४ । भा. प्रा. । क. मानतुंगसूरि । गा. २१ ।

(२५) स्मरणास्तोत्र पत्र २३४-२३६ । भा. प्रा. । क. जिनदत्तसूरि । गा. २६ ।

(२६) गुरुपारतंत्र्यस्मरण पत्र २३६-२३८ । भा. प्रा. । क. जिनदत्तसूरि । गा. २१ ।

(२७) सिग्घमवहरउपार्श्वजिनस्तोत्र पत्र २३८-२३९ । भा. प्रा. । क. जिनवल्लभगणि । गा. १४ ।

(२८) श्रावकविधिप्रकरण पत्र २३९-२४१ । भा. प्रा. । गा. २२ ।

(२९) दानविधिकुलक पत्र २४१-२४३ । भा. प्रा. । गा. २५ ।

(३०) लघुनमस्कारफलस्तव पत्र २४३-२४५ । भा. प्रा. । गा. २३ ।

(३१) चैत्यवंदनविधिकुलक पत्र २४५-२४९ । भा. प्रा. । गा. ३५ ।

(३२) चैत्यवंदननियमकुलक पत्र २४९-२५१ । भा. प्रा. । क. जिनदत्तसूरि । गा. २८ ।

(३३) महर्षिकुलक पत्र २५१-२५४ । भा. प्रा. । गा. ३६ ।

प्रतिमां "पडिलेहणकुलक समाप्त" एवु नाम लखेलु छे पण ते खोटु छे ।

(३४) महर्षिकुलक पत्र २५५-२५७ । भा. प्रा. । गा २६ ।

(३५) गुर्वावलि पत्र २५७-२५८ । भा. प्रा. । गा. १० ।

(३६) प्रव्रज्याविधानप्रकरण पत्र २५८-२६१ । भा. प्रा. । गा. ३४ ।

(३७) संजममंजरीप्रकरण पत्र २६१-२६३ । भा अपभ्रंश । क. महेश्वरसूरि । गा. ३५ ।

(३८) प्रश्नोत्तररत्नमाला पत्र २६३-२६६ । भा. स । क. विमलाचार्य । आर्या २८।

(३९) धर्मलक्षण पत्र २६६-२६७ । भा स. ।

(४०) साधर्मिकवात्सल्यकुलक पत्र २६७-२६९ । भा. प्रा. । क. अभयदेवसूरि । गा. २६ ।

(४१) उपदेशमणिमालाकुलक पत्र २६९-२७० । भा. प्रा । क. जिनेश्वरसूरि ।

(४२) संवेगकुलक पत्र २७०-२७२ । भा. प्रा. । क. धनेश्वरसूरि । गा. १५ ।

(४३) चिन्ताकुलक पत्र २७२-२७३ । भा. प्रा. । गा. १३ ।

(४४) पुण्यलाभकुलक पत्र २७३-२७४ । भा. प्रा. । गा १० ।

(४५) इगुणतीसीभावना पत्र २७४-२७६ । भा अपभ्रंश । गा. २९ ।

(४६) चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र २७६-२७९ । भा. प्रा. । गा. २८ ।

(४७) आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक पत्र २७९-२८२ । भा. प्रा. । गा. २६ ।

(४८) द्वादशकुलक पत्र २८२-३०१ । भा. प्रा. । क. जिनवल्लभसूरि । गा. २३३ । ले. सं. १३८९ वर्षे पोष मासे ॥छ॥

(४९) आदीश्वरस्तवन पत्र ४१२-४१३ । भा. सं. । क. जिनचन्द्रसूरि । का.३-२५ ।

(५०) भक्तामरस्तोत्र अपूर्ण पत्र ४१३-४१५ । भा. स. । क. मानतुगसूरि ।

(५१) युगादिदेवस्तोत्र पत्र ४१७-४२० । भा. अपभ्रंश । कडी ३० । ले. सं. १३८५-८९ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ८×२॥।। वचमां केटलांक पानां नथी ।

पोथी ८० मी

क्र. १३२७ ज्योतिषग्रंथो अपूर्ण तथा प्रकीर्णक ज्योतिषविषयक पानांनो संग्रह.

पोथी ८१ मी

क्र. १३२८ अनेक ग्रंथोनां अने स्तवन सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां.

पोथी ८२ मी

क्र. १३२९ अनेक ग्रंथोनां अने स्तवन सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां.

पोथी ८३ मी

क्र. १३३० अनेक ग्रंथोनां अने स्तवन सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां.

॥ अर्हम् ॥

श्रीजेसलमेरुदुर्गस्थ बडो उपाश्रय जैन ज्ञानभंडार

पोथी ८४ मी

क्र. १३३१ गोमटसार कर्मकांड सटीक पत्र ६४। **भा.** प्रा. स.। **क.** नेमिचंद्र। **पं.** १०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०॥×४

क्र. १३३२ तत्त्वसंग्रहचंद्रलघुटीका पत्र १५। **भा.** सं.। **क.** शिवाचार्य। **पं.** १०। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १३३३ तत्त्वसंग्रहचंद्रलघुटीका पत्र १८। **भा.** सं.। **क.** शिवाचार्य। **पं.** १०। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १३३४ न्यायग्रंथ पत्र २५। **भा.** स.। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४॥

क्र. १३३५ न्यायग्रंथ पत्र ६३। **भा.** स। **पं.** १२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४॥

क्र. १३३६ न्यायग्रंथ पत्र २२। **भा.** स.। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४।

क्र. १३३७ न्यायग्रंथ पत्र १९। **भा.** स। **पं.** १२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०॥×४

क्र. १३३८ द्वादशांशफल आदि ज्योतिष पत्र १२। **भा** स.। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०॥×४

क्र. १३३९ योगिनीदशाफल ज्योतिष पत्र ७। **भा.** सं.। **पं** १५। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०॥×४।

क्र. १३४० लोकतत्त्वनिर्णय सस्तबक पत्र २१। **भा.** स. गु.। **मू. क.** हरिभद्रसूरि। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं प** १०॥×४।

क्र. १३४१ प्रकीर्णकविचारसंग्रह पत्र २२। **भा.** स.। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०॥×४।

क्र. १३४२ स्याद्वादरत्नाकर सावचूरिक त्रिपाठ पत्र १९। **भा.** स.। **पं** १९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **लं. प.** १०×४।

क्र. १३४३ न्यायसिद्धांतमंजरी प्रत्यक्षपरिच्छेद पत्र ९। **भा.** स.। **पं.** ८। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०॥×४

क्र. १३४४ वृत्तरत्नाकर सटीक पंचपाठ अपूर्ण पत्र ८। **भा.** स.। **मू. क.** भट्ट केदार। **पं.** २६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४

क्र. १३४५ कल्पसूत्र सचित्र श्रु. अ. पत्र २३-८८। **भा.** प्रा। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **पं.** ७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ११×४

पोथी ८५ मी

क्र. १३४६ आचारांगसूत्र पत्र ७९। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २५५४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३४७ आचारांगसूत्र पत्र ६६। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** २५५४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १३४८ आचारांगसूत्रनिर्युक्ति पत्र ११। **भा.** प्रा.। **ले. सं** १५३३। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३४९ **आचारांगसूत्रवृत्ति** पत्र २०९। **भा.** स.। **वृ. क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १२०००। **पं.** १७। **ले. सं.** १५३५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४

क्र. १३५० **आरांगसूत्रवृत्ति** पत्र ३१६। **भा.** स.। **वृ. क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १२०००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १३५१ **सूत्रकृतांगसूत्र प्रथमश्रुतस्कंध** पत्र ३२। **भा.** प्राकृत। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४।। किनारी उदरे करडेली छे।

क्र. १३५२ **सूत्रकृतांगसूत्र** पत्र ६०। **भा** प्रा.। **ले. सं.** १५५८। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

अन्त—स. १५५८ वर्षे श्रीखरतरगच्छेशश्रीजिनहससूरिराज्ये श्रीधर्मरत्नाचार्यशिष्यश्रीपुण्यवल्लभोपाध्याय समुद्यमेन म. धणपतिपुत्र म. गुणराजभार्यया कन्हाईसुश्राविकया पुत्ररत्न म. जगपाल पौत्रलटकण उदयकर्ण प्रमुखपरिवारश्रीकया श्रीएकादशांगीपुस्तक लेखयांचके ॥ श्रेयोऽस्तु ॥

क्र. १३५३ **सूत्रकृतांगसूत्र** पत्र ५०। **भा.** प्राकृत। **ग्र.** २१००। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३५४ **सूत्रकृतांगसूत्र** पत्र ५७। **भा.** प्राकृत। **ग्रं** २१००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३५५ **सूत्रकृतांगसूत्रनिर्युक्ति**। पत्र ५। **भा.** प्रा.। **कं.** भद्रबाहुस्वामी। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३५६ **सूत्रकृतांगसूत्रवृत्ति** पत्र १६९। **भा.** सं.। **वृ. क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १३८४३। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

पोथी ८६ मी

क्र. १३५७ **सूत्रकृतांगसूत्रवृत्ति** पत्र २६४। **भा.** सस्कृत। **टी. क.** शीलांकाचार्य। **ग्रं.** १३८५३। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३५८ **सूत्रकृतांगसूत्र सस्तबक** पत्र १८९। **भा.** प्रा. गू.। **ग्रं.** १४००। **पं.** १०। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १३५९ **स्थानांगसूत्र** अ. त्र. पत्र ९३-११३। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३६० **स्थानांगसूत्र** पत्र ७७। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १६५३। **ग्रं.** ४७५०। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

अन्त—श्री १६५३ वर्षे युगप्रधानश्रीजिनचंद्रसूरीश्वरेभ्यः श्रीस्थानांगसूत्रप्रतिर्विहारिता साउसक्खागोत्रीय सा. श्रीचंदपुत्र सा.पदमसीकेन श्रीपुत्रपौत्रादियुतेन ज्ञानभक्त्ये श्रेयोस्तु।

क्र. १३६१ **स्थानांगसूत्र** पत्र १०४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १६५९। **ग्रं.** ३७००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३६२ **स्थानांगसूत्रवृत्ति** पत्र २५५। **भा.** स.। **टी. क.** अभयदेवसूरि। **र. सं.** ११२०। **ले. सं.** १६७६। **ग्रं.** १४५००। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १३६३ **स्थानांगसूत्रवृत्ति** पत्र २१२। **भा.** स। **टी. क** अभयदेवसूरि। **र. सं.** ११२०। **ग्रं.** १४३५०। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

अन्त — उल्लसल्लीलाल्यजालरत्नरश्मिविजितमेरौ श्रीजेसलमेरौ लिखिता प्रतिः ग्रं. मुख्येण कमलोदयेन ॥
आजानेयाब्जषष्ठद्विजसदशसमे कर्म्मवाटयां दशम्यां वैषे मासे सुभासे विमलतरदिने मजुपक्षे वलक्षे ।
स्थानव्याख्यानकल्प स्वपरहितधिया लेखयामास साधुः । जीयादापुष्पदन्तौ कनकगिरिरय साधुभिर्वाच्यमानः ॥१॥छ॥

पोथी ८७ मी

क्र १३६४ भगवतीसूत्रवृत्ति पत्र ३०३ । **भा.** सं. । **वृ. क.** अभयदेवसूरि । **र. सं.** ११२८ । **ग्रं.** १८६१६ । **पं.** १८ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४

क्र. १३६५ भगवतीसूत्रवृत्ति पत्र ४२५ । **भा.** सं. । **वृ. क.** अभयदेवसूरि । **र. सं.** ११२८ । **ले. सं.** १५७५ । **ग्रं.** १८६१६ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११॥×४३॥

अन्त—

स्वस्ति ॥ एकोपि श्रीकारः सुप्रापो नेह भाग्यहीनानां । तद्द्वययुक्ता ज्ञातिः कथ प्रशास्पदं न स्यात् ॥१॥
पुरस्नरत्नखानौ तस्यां ज्ञातौ प्रशस्तगुणजालः । श्रीआयवाटिकाभिधगोत्रे मन्त्रीशमूंजालः ॥२॥
समभूत्तत्सताने धर्मात्मजमन्त्रिराजशिवराजः । तज्जायाऽजनि वरणुनाम्नी तत्पुत्ररत्नयुग ॥३॥
अभ्युदितभागधेय धणपतिहर्षाभिध सुधीरम्य । देवगुरुभक्तिभरिता चंपाई धणपतेर्दयिता ॥४॥
तत्कुक्षिशुक्तिमुक्ताफलोपमः सप्रभः सुवृत्तश्च । सर्वमहाजनमान्यः समस्तदीवाणलब्धयशाः ॥५॥
यः सरलात्मा सदयः सकलव्यवहारिमुकुटमणिसदृशः । मन्त्रीश्वरगुणराजस्तज्जायाऽजनि जने विदिता ॥६॥
सुश्राविका कन्हाई तपोनिधिः पठितधर्मशास्त्रसभारा । सौराष्ट्रादिषु यात्रा घृतलभनिकादिकृत्यकरी ॥७॥
अतिजातो यज्जातः पत्तनतिलक जयी धनी धन्यः । मन्त्रीशः श्रीराजो राजति राजेव मान्नतुगः ॥८॥
समभूतां तत्तनयौ लटकणमन्त्री सहस्रकर्णश्च । विद्याधरः प्रपौत्रस्तस्यैव परिकरः प्रचुरः ॥९॥
श्रीमति खरतरगच्छे श्रीमज्जिनहसमूरिसुगुरूणां । आदेशात् कन्हाईनाम्नी श्रीदेवगुरुभक्ता ॥१०॥
एकादशांग्याः सूत्राणि वृत्तीश्च विशदाक्षराः । लेखयामास हर्षेण ग्रथानन्याश्च काश्चन ॥११॥
नदतु शासनमेतत् प्रभावकाः शासनस्य नदतु । पुस्तकलेखकवाचकरक्षयितारोपि नंदंतु ॥१२॥
लेखितमिद वा. धवलचद्रगणिमिश्राणामादेशात् पं. गजसारगणिना स. १५७५ वर्षे ॥

क्र. १३६६ भगवतीसूत्र सस्तबक त्रयोदशशतकतृतीयोद्देशपर्यंत पत्र ३९५ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४

क्र. १३६७ स्थानांगसूत्र वृत्तिसह पत्र ३५३ । **भा.** प्रा. स. । **टी. क.** अभयदेवसूरि । **टी. र.सं.** ११२० । **ग्रं. उ.** १८००० । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११॥×४

क्र. १३६८ समवायांगसूत्र पत्र ८१ । **भा.** प्रा. । **स्थि.** श्रेष्ठ । **पं.** ९ । **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३६९ भगवतीसूत्र पत्र ४०८ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १६७६ । **ग्रं.** १५७५० । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ११॥×३॥

अन्त—

सवत् १६७६ फाल्गुन सुदि २ शुक्रे श्रीबृहत्खरतरगच्छाधिपजहांगीरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारकश्रीमच्छ्रीजिनसिंहसूरिपट्टपूर्वाचलचूलिकासहस्रकरावतारप्रतिष्ठितश्रीशत्रुंजयाष्टमोद्धारसर्वातिशायिभट्टारकचक्रवर्तिश्रीजिनराजसूरिसूरिराजेभ्यो विहारित श्रीपचमांगसूत्र श्रीमदुपकेशज्ञातीयशंखवालगोत्रीय सा. कोचरान्वयोद्भवत्सदेवावास्तव्य सा. गोराभार्या अलवेसर पु. श्रीराशभार्या मृगादे पु. सा. महिकाभार्या नाथीपुत्र वउधभार्या चतुरगदे पुत्ररत्न सा. जयतमाल्लेन भार्या राणीयुतेन वाच्यमानं च तत् शिष्यप्रशिष्य परंपराभिश्चिर नंदतादाचंद्रार्कम् ॥छ॥

क्र. १३७० भगवतीसूत्रवृत्ति अपूर्ण पत्र १०३। **भा.** स.। **टी. क.** अभयदेवसूरि। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३७१ भगवतीसूत्रवृत्ति अपूर्ण पत्र ४९। **भा.** स.। **क.** अभयदेवसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥

पोथी ८८ मी

क्र. १३७२ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १३२। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १६५६। **ग्रं.** ५३७५। **पं.** १५। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३७३ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र २२०। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ५३७५। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३७४ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १४५। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १६६३। **ग्रं.** ६०००। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३७५ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १४५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ५६५०। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १४७६ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र १२३। **भा.** स। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **र. सं.** ११२०। **ग्रं.** ४२००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

प्रथम पत्रमां आचार्यनु चित्र छे।

क्र. १३७७ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र १११। **भा.** स.। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **र. स** ११२०। **ले. सं.** १६१६। **ग्रं.** ४२००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

अन्त—

नंदरबारनगरे तपागच्छे श्रीआणदविमलसूरितत्‌शिष्यगणीश्रीभानुविमलप्रतिश्राविकासोनाइवाश्राविकाकमलादे-लिखापित कर्मक्षयनिमित्त ॥ राज्ये मीरामबीरषरयाहा ॥ लषीत कृष्णासुत गोपाल लषीत ॥ शुभ भवतु ॥

क्र. १३७८ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र ९९। **भा** स.। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **र. सं.** ११२०। **ग्रं.** ३८००। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

पोथी ८९ मी

क्र. १३७९ उपासकदशांगसूत्र पत्र २४। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ८१२। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३८० अंतकृद्दशांगसूत्र पत्र २४। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १३८१ अनुत्तरौपपातिकसूत्रवृत्ति पत्र ३। **भा.** सं.। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **ले. सं.** १६५३। **ग्रं.** १००। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं प.** ९॥×३॥

अन्त—

सवत् १६५२ सूरेतिमदिरे लिखितेयं प. जयनिधानगणिना शुक्र हरिणदशम्यां ॥श्री॥छ॥छ॥

क्र. १३८२ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र २३२। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १५९१। **ग्रं.** १२५०। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥। पत्र १ अने २८ मु नथी।

क्र. १३८३ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र ३६। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** १२५०। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १३८४ विपाकसूत्र सस्तबक पत्र ७२ । **भा.** प्रा. गू. । **ग्रं. उभय.** ५००० । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १३८५ उववाइसूत्र पत्र २९ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १६४९ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥।×३॥। । किनारी उदरे खाधेली छे ।

अन्त—

संवत १६७९ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीयातिथौ शनिवारे श्रीजावालदुर्गे लिखितं ॥श्री॥छ॥

क्र. १३८६ औपपातिकोपांगसूत्र सटीक त्रिपाठ अपूर्ण पत्र १५ । **भा.** प्रा. सं. । **टी. क.** अभयदेवसूरि । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १३८७ राजप्रश्नीयोपांगसूत्र पत्र ४४ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १५९० । **ग्रं.** २०८९ । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥।×४

अन्त—

गयणनिहिबाणचंदे १५९० वरिसे वहुलम्मि पण्णरसितिहिए ।
रायपसेणीगथ लिहिय डूणायि हरिसवसा ॥१॥। श्रेयोस्तु लेखकस्य ॥

क्र. १३८८ राजप्रश्नीयोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ९३ । **भा.** स. । **ग्रं.** ३७०० । **पं.** १५ । **टी. क.** आचार्य मलयगिरि । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १३८९ राजप्रश्नीयोपांगसूत्र वृत्तिसह त्रिपाठ पत्र ३७-९८ । **भा** प्रा. सं. । **पं.** १८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १३९० जीवाभिगमोपांगसूत्र पत्र ८५ । **भा.** प्रा. । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र १३९१ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र ८१ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १६५१ । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४

अन्त—सवत् १६५१ वर्षे श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे श्रीपुण्यसागरमहोपाध्यायपुरदराणां शिष्येण वाचकपद्मराजगणिना सशोधितमिद श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र ॥ वाच्यमानं चिर नदतु ॥

क्र. १३९२ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र ९६ । **भा.** प्रा. । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥।×३॥। । किनारी उदरे करडेली छे ।

क्र. १३९३ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र १३१ । **भा** प्रा. । **ग्रं** ४१५४ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प** ९॥।×४

क्र. १३९४ सूर्यप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र पत्र १०२ । **भा** प्रा. । **पं** १० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×३॥।

पोथी ९० मी

क्र. १३९५ कल्पसूत्रकल्पलतावृत्ति पत्र १४० । भा. स. । **वृ. क.** समयसुदरोपाध्याय । **र. सं.** १६८५ । **ग्रं** ६३७८ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प** ९॥×३॥।

क्र. १३९६ कल्पसूत्रकल्पमंजरीटीका पत्र १५७ । **भा.** स. । **टी. क.** सहजकीर्त्ति । **र. सं.** १६८५ । **ले. सं.** १७७१ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×३॥।

अन्त—सवत् १७७१ वर्षे मिती कार्त्तिक शुदि ६ ने मगलवारे श्रवणनक्षत्रे श्रीमरोटकोट्टमध्ये लिषिता ॥ शुभ भूयात् ॥

क्र. १३९७ कल्पांतर्वाच्य अपूर्ण पत्र ३९ । भा. सं. । पं. १५ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १३९८ कल्पसूत्र भाषाटीकासह पत्र १३५ । भा. प्रा. गू. । ले. सं. १५८६ । पं. ११ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×३॥।

अन्त—

संवत् १५८६ वर्षे शाके १४५१ प्रवर्त्तमाने कृष्णपक्षे कार्त्तिकमासे कृ. नवम्यां तिथौ रवौ वारे पुष्य-नक्षत्रे सिद्धिनाम्नयोगेन लिखित ॥ शुभ भवतुः ॥छ॥छ॥ श्रेयोऽस्तुः ॥ श्रीभट्टारक श्री ६ श्रीसंडेरगच्छाधीश-पूज्यभट्टारक श्री६यशोभद्रसूरिभिः सताने श्रीशालिसूरि श्रीसुमतिसूरि तत्पट्टे भट्टारकश्रीशांतिसूरि तत्पट्टे भट्टारक श्रीईश्वरसूरि तत्पट्टे प्रभपुरदरभट्टारकश्रीश्री५शालिसूरि तत्‌शिष्य वा. श्रीहर्षसागर तत्‌शिष्य मुनिगंगाकेन वाचनार्थे ॥ शुभं भवतुः ॥मुनिमेया लिखित ॥श्री०॥रिसासीग्राममध्ये लिखितं ॥ शुभ भूयात् ॥

क्र. १३९९ कल्पसूत्र सस्तबक पत्र १८२ । भा. प्रा. गू । मू. क. भद्रबाहुस्वामी । ले. सं. १७८७ । पं. १३ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४०० कल्पसूत्र सस्तबक पत्र १०४ । भा. प्रा. गू. । मू. क. भद्रबाहुस्वामी । ले. सं. १७४० । पं. १४ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४०१ कल्पसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र ११० । भा. प्रा. गू. । मू. क. भद्रबाहुस्वामि । पं. ४ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×३॥।

पोथी ९२ मी

क्र. १४०२ सूत्रकृतांगसूत्र तथा सूत्रकृतांगनिर्युक्ति पत्र ५४ । भा. प्रा. । निर्यु. क भद्रबाहुस्वामि । पं. १५ । ले. सं. १५६६ । स्थि. जीर्ण । लं. प. १०×४

अन्त—

श्रीवर्द्धमानजैनसवत्सरस्य २०३६ वर्षे श्रीमत्पर्थि स. १५६६ वर्षे फाल्गुनमास श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिविजयिराज्ये श्रीसागरचंद्राचार्यान्वये वा सागरचद्रगणीनां शिष्य वा. दयासागरगणीनामंतेवासि वा. ज्ञानमंदिरगणिनां शैक्षदेवतिलकगणेर्वाचनार्थ श्रीसूत्रकृतांगस्य सूत्र निर्युक्तिर्लिखिते ।

क्र. १४०३ उपासकदशांगसूत्र पत्र १६ । भा. प्रा. । पं. १४ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×३॥।

क्र. १४०४ उपासकदशांगसूत्र पत्र २५ । भा. प्रा. । ले. सं. १७९८ । पं. १३ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×४।

क्र. १४०५ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र २० । भा. प्रा. । ले. सं. १६६१ । ग्रं. १२५० । पं. १७ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०।×४

अन्त—

संवत् १५६१ वर्षे श्रावणशुद्धपचम्यां तिथौ श्रीतिमिरीपुरे श्रीसागरचद्रसूरिसताने वा. दयासागरगणींद्राणां शिष्य वा. ज्ञानमदिरगणिवराणां विनेयो देवतिलकगणिः श्रीप्रश्नव्याकरणांगसूत्रमवाचि किंचिदशोधि च शिष्य-शाखायां वाच्यमान चिर नदतु ॥ श्रीबृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिविजयराज्ये ॥ मगलमस्तु चतुर्विधश्रीसघाय

क्र. १४०६ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्रवृत्ति पत्र ८३ । भा. सं. । वृ. क. अभयदेवसूरि । पं. १५ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०।×३॥।

क्र. १४०७ प्रश्नव्याकरण सस्तबक पत्र ८७ । भा. प्रा. गू. । पं. ११ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०।×४।

क्र. १४०८ समवायांगसूत्र अपूर्ण पत्र ३६ । भा. प्रा. । पं. १४ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥×४।

क्र. १४०९ उपासकदशांगसूत्र सस्तबक पत्र ६४ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४

क्र. १४१० अनुत्तरौपपातिकदशांगसूत्र पत्र ९ । **भा.** प्रा. । **पं.** १२ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥×४

क्र. १४११ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र ५० । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १२५० । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×४

क्र. १४१२ अनुयोगद्वारसूत्र पत्र ३९ । **भा.** प्रा. । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४१३ अनुयोगद्वारसूत्र अपूर्ण पत्र २२ । **भा.** प्रा. । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४

क्र. १४१४ कल्पसूत्र सस्तबक पत्र ८३ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** १४ । **लं. प.** १०×४

क्र. १४१५ कल्पांतर्वाच्य पत्र २४ । **भा.** सं. । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४

क्र. १४१६ कल्पांतर्वाच्य पत्र ४ । **भा.** स. । **पं.** १९ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४१७ कल्पसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र ५४ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १४१८ कल्पसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र ६६ । **भा.** प्रा. गू. । **पं.** ५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १४१९ कल्पसूत्र सप्तमव्याख्यान पत्र १६ । **भा.** स. । **पं.** २७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४२० कल्पसूत्र नवमव्याख्यान सस्तबक पत्र १७ । **भा.** स. गू. । **पं** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १४२१ कल्पसूत्र अष्टमनवमव्याख्यानबालावबोध पत्र ४४ । **भा.** गू. । **ले. सं** १७७६ । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९।×३॥।

पोथी ९३ मी

क्र. १४२२ श्राद्धजीतकल्प सटीक अपूर्ण पत्र २० । **भा.** प्रा. स. । **प.** २३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०×४

क्र. १४२३ कल्पसूत्रसंदेहविषौषधिटीका पत्र ३१ । **भा.** स. । **क.** जिनप्रभसूरि । **ले. सं.** १५७० । **ग्रं.** २१६८ । **पं.** १९ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** १०।×४. । प्रति पाणीथी भींजाएली छे ।

अंत— वा. दयासागरगणीनां वि. वा. ज्ञानमंदिरगिणभिः शोधिता श्रीतिजाभापुरे १५७० वर्षे ॥

क्र. १४२४ चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र ३ । **भा.** प्रा. । **क.** वीरभद्रगणि । **गा.** ६३ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४२५ चतुःशरणप्रकीर्णकादि पत्र २ ।

(१) **चउसरणपयन्नो भा.** प्रा । **क.** वीरभद्र । **गा.** ६३ ।

(२) **चउक्कसाय गा.** २ । **भा.** अपभ्रंश ।

(३) **संथारापोरिसी गा.** २३ । **भा.** प्रा. । **पं.** १८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४२६ चतुःशरण-आउरपच्चक्खाण-भक्तपरिज्ञा-संस्तारकप्रकीर्णक विषमपदविवरण पत्र १४ । **भा.** स. । **पं.** १७ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४२७ चतुःशरणप्रकीर्णक सस्तबक पत्र ७। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** वीरभद्रगणि। **ले. सं.** १७२६। **मू. गा.** ६३। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १४२८ चतुःशरणप्रकीर्णक बालावबोध पत्र १६। **भा.** प्रा. गू.। **बाला. क.** पार्श्वचंद्रसूरि। **पं.** १५। **बाला. र. सं.** १५९७। **ले. सं.** १६९८। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४।

प्रति उदरे करडेली छे।

अन्त—

मुनिनिदेषुचंद्राब्दे १५९७ व्यतीते विक्रमार्कतः। सुभासि फाल्गुने मासि त्रयोदश्यां रवेर्दिने ॥१॥

पवित्रमूलनक्षत्रे चतुःशरणवार्त्तिकं। गुरुश्रीसाधुरत्नानां साधुरत्नानुयायिनाम् ॥२॥

शिष्येण पार्श्वचंद्रेण रचितं हितहेतवे। शब्दशास्त्रानभिज्ञानां साध्वादीनां तदादरात् ॥३॥

वाच्यमानमिदं नद्यायावत्तीर्थं जिनेशितुः। श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य सद्गुणैः ॥४॥ चतुर्भिः कुलकं ॥

शमस्तु ॥ सवत् १६९८ वर्षे हरखालिषित ॥श्री॥

क्र. १४२९ आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** वीरभद्रगणि। **गा.** ६०। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४३० संस्तारकप्रकीर्णक पत्र ४। **भा.** प्रा.। **गा.** १२२। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४

क्र. १४३१ तीर्थोद्गालिप्रकीर्णक पत्र ३६। **भा.** प्रा। **ले. सं.** १५६२। **गा.** १२२३। **ग्रं.** १५६५। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४३२ तीर्थोद्गालिप्रकीर्णक पत्र २२। **भा.** प्रा.। **गा.** १२२३। **ग्रं.** १५६५। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४। प्रति उदरे करडेली छे।

क्र. १४३३ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र १११। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४३४ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र ५५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **पं.** १७। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४

क्र. १४३५ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र ६३। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** १५३३। **पं.** १५। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १४३६ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र १०४। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १४३७ आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति पत्र ४९-९५। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामी। **ले. सं.** १५०३। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०।×४

क्र. १४३८ आवश्यकसूत्र सावचूरि पत्र ७१। **भा.** सं.। **अव. क.** ज्ञानसागरसूरि। **पं.** २२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १४३९ विशेषावश्यकमहाभाष्य पत्र ११७। **भा.** प्रा.। **क.** जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। **ले. सं.** १६७९। **गा.** ३६२५। **ग्रं.** ४४१०। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

प्रति उंदरे करडेली छे।

क्र. १४४० ललितविस्तरावृत्ति पत्र २४। **भा.** सं.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ले. सं.** १५११। **ग्रं.** १२७०। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १४४१ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र-वंदित्तुसूत्र अर्थदीपिकाटीकासह पत्र १४१। **भा.** प्रा. सं.। **टी. क.** रत्नशेखरसूरि। **र. सं.** १४९६। **ग्रं.** ४२६६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×३॥।

पोथी ९४ मी

क्र. १४४२ पाक्षिकसूत्र पत्र ९ । भा. प्रा.। पं. १३ । स्थि. मध्यम । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४४३ पाक्षिकसूत्र अपूर्ण पत्र १४-१७ । भा. प्रा. । प. १० । स्थि. मध्यम । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४४४ पाक्षिकसूत्र तथा दशवैकालिकसूत्र पत्र १० । भा. प्रा. । दश. क. शय्यंभवसूरि । पं. २२ । स्थि. जीर्ण । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४४५ पाक्षिकसूत्र सटीक पत्र ८९ । भा. प्रा. सं. । टी. क. यशोदेवसूरि । र. सं. ११८० । ग्रं. २२०७ । पं. १३ । स्थि. जीर्ण । लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १४४६ पाक्षिकसूत्र सावचूरि पंचपाठ पत्र ५ । भा. प्रा. सं. । पं. २० । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×४

क्र. १४४७ यतिप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति टिप्पनकसह पत्र १४ । भा. स. । पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×४

क्र. १४४८ पगामसज्झाय सस्तबक पत्र ६ । भा. प्रा. गू. । ले. सं. १६९४ । पं. १५ । स्थि. मध्यम । लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १४४९ ओघनिर्युक्ति पत्र १४ । भा. प्रा. । क. भद्रबाहुस्वामी । ले. सं. १६५७ । पं. १४ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×४

अंत—संवत् १६५७ वर्षे श्रावणमासे पचमीतिथौ शनीवासरे श्रीमुलतानननगरे प. विणमल्लमुनिना लिपीकृता स्ववाचनाय ॥ कल्याण वो भूयात् ॥

क्र. १४५० ओघनिर्युक्ति पत्र ५३ । भा. प्रा. । क. भद्रबाहुस्वामी । गा. ११६० । पं. ११ । ले. सं. १५९० । स्थि. मध्यम । लं. प. १०×४

अंत—

सवत् १५९० वर्षे श्रीभाद्रवामासे शुक्लपर्वाधिराजे वा. श्रीमहिमलाभगणिशिष्याणुश्रीखरतरगच्छे वा. दयानंदनगणिभिः श्रीओघनिर्युक्तिसूत्रं लिखाप्य प्रदत्त संघाधिराजश्रीजजमलपुत्र स. मानसिंहभार्या उभयकुलानंदकारणी सा. आसराजपुत्री सघवाणी आसाही जोग्यं ॥श्री॥

क्र. १४५१ ओघनिर्युक्ति पत्र ३२ । भा. प्रा. । क. भद्रबाहुस्वामी । गा. ११६० । पं. ११ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १४५२ ओघनिर्युक्तिवृत्ति पत्र ६९ । भा. सं. । वृ. क. द्रोणाचार्य । ले. सं. १५१० । ग्रं. ७००० । पं. २१ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. १०×४

अंत—संवत् १५१० वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीसागरचंद्रसूरिशाखायां वा. महिमराजगणि तत्शिष्य पं.दयासागरगणिना लिखिता श्रीपट्टने ।

क्र. १४५३ ओघनिर्युक्ति सटीक पत्र १२५ । भा. प्रा. सं. । टी. क. द्रोणाचार्य । मू. क. भद्रबाहुस्वामी । ग्रं. ८३८५ । ले. सं. १५१४ । पं. १७ । स्थि. श्रेष्ठ । लं. प. ९॥।×३॥।

अंत—

संवत् १५१४ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे १३ दिने श्रीखरतरगच्छे श्रीसागरचंद्रसूरि वा. महिमराजगणि तच्छिष्य वा. दयासागरगणिना समलेखि प्रयोऽयं श्रीमालज्ञातीय स. कालपुत्र स. ठाकुरसी सुसावकोत्तमेन लिखिता । लेखिता टीकेयं श्रीमंडपे वा.दयासागरगणिवराणां लक्षमधास्त : ।

क्र. १४५४ साधुषडावश्यकसूत्र-स्मरणादिआवश्यकसूत्रसंग्रह पत्र ४६। **भा.** प्रा. सं.। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

क्र. १४५५ श्रावकषडावश्यकसूत्र पत्र ६। **भा.** प्रा.। **पं.** १४। **स्थि.** जीर्ण। **लं.प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४५६ श्रावकआवश्यकसूत्र पत्र ६। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४५७ श्रावकषडावश्यकसूत्र अपूर्ण पत्र २-१३। **भा.** प्रा.। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।। प्रति उधईए खाधेली छे।

क्र. १४५८ षडावश्यकसूत्र अपूर्ण पत्र ५-२१। **भा.** प्रा.। **पं.** ९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४।

क्र. १४५९ श्रावकआवश्यकसूत्र पत्र ४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १५३८। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १४६० षडावश्यकसूत्र सस्तबक पत्र ९। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४

क्र. १४६१ श्रावकषडावश्यकसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र २-३०। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

क्र. १४६२ श्रावकषडावश्यकसूत्र सस्तबक पत्र १५। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४॥।

क्र. १४६३ आवश्यकसूत्रबालावबोध अपूर्ण पत्र २६-५१। **भा.** गू.। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४

क्र. १४६४ श्रावकप्राकृतअतिचार सस्तबक पत्र ४। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. १४६५ श्रावकअतिचार पत्र २-५। **भा.** गू.। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १४६६ श्रावकअतिचार पत्र ३-७। **भा.** गू.। **ले. सं.** १८१०। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. १४६७ दशवैकालिकसूत्र पत्र २९। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ले. सं.** १६५९। **ग्रं.** ७००। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १४६८ दशवैकालिकसूत्र चारअध्ययनपर्यंत पत्र ५। **भा.** प्रा.। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १४६९ दशवैकालिकसूत्रवृत्ति पत्र १२५। **भा.** सं.। **वृ. क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** ६८१०। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १४७० आवश्यकसूत्रलघुवृत्ति पत्र ५०। **भा.** सं.। **क.** सुमतिसूरि। **ले. सं.** १५१६। **ग्रं.** २६००। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

अन्त—संवत् १५१६ वर्षे श्रीपट्टननगरे लेखिता श्रीदशवैकालिकवृत्तिः श्रीकीर्तिरत्नसूरिभिः। वाचिता तेषामेव शिष्येण श्रीधर्म्मेण श्रीराटद्रहे ॥

पोथी ९५ मी

क्र. १४७१ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र ७६। **भा.** प्रा.। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥।

क. १४७२ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र ३-४०। भा. प्रा.। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क. १४७३ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र ३६। भा. प्रा.। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क. १४७४ उत्तराध्ययनसूत्र पत्र ५१। भा. प्रा.। पं. १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क. १४७५ उत्तराध्ययनसूत्रनिर्युक्ति पत्र १७। भा. प्रा.। क. भद्रबाहुस्वामी। ग्रं. ७००। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क. १४७६ उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्तिसह पत्र ३०४। भा. प्रा. सं.। वृ. क. नेमिचंद्रसूरि। मू. ग्रं. १४००। टी. ग्रं. १२०००। र. सं ११२९। ले. सं. १६२४। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. १०×३॥

क. १४७७ उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्तिसह पत्र २९५। भा. प्रा. सं.। वृ. क. नेमिचंद्रसूरि। ग्रं. १४०००। र. सं. ११२९। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. १०×३॥

क. १४७८ उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्तिसह पत्र २८१। भा. प्रा. स.। वृ. क. नेमिचंद्रसूरि। र. सं. ११२९। ले. सं. १५८६। ग्रं. १४०००। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

अन्त—सवत् १५८६ समये पोष वदि १ प्रतिपदौ भोमवासरे। खाती श्रीसूत्रधार प्रत्यागदासात्मजेन पुरुषोत्तमेनालेखि॥

पोथी ९६ मी

क. १४७९ उत्तराध्ययनसूत्रसुखबोधावृत्ति-नवम अध्ययन पर्यंत पत्र ८३। भा. स.। वृ. क. नेमिचंद्रसूरि। र. सं. ११२९। पं. १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. १०×४

क. १४८० उत्तराध्ययनसूत्र अवचूरिटिप्पणीसह पत्र ३३। भा. स.। अव. क. ज्ञानसागरसूरि। र. सं. १४४१। ले. सं. १४८६। पं. २१। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

अन्त—

> श्रीमत्तपागणनभोंगणभास्करात श्रीदेवसुंदरयुगोत्तमपादुकानां।
> शिष्यैर्जिनागमसुधांबुविलीनचित्तैः श्रीज्ञानसागरगुरूत्तमनामधेयैः॥१॥
> भूवार्द्धिमनु १४४१ मितेऽब्दे कृति उत्तराध्ययनगावचूर्णिरियम्।
> श्रीशान्त्याचार्यभुवरसद्विवृतेः स्वपरहितकृतये॥२॥

संवत् १४८६ वर्षे फाल्गुन वदि १० रवौ श्रीडूंगरपुरे राउल श्रीगइपालदेवराज्ये लिखिता लींबाकेन॥

क. १४८१ उत्तराध्ययनसूत्र प्रथमद्वितीयाध्ययन सस्तबक पत्र १३। भा. प्रा. गू.। पं. १९। **स्थि.** मध्यम। लं. प. ९॥×३॥

क. १४८२ उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र १२९। भा. प्रा. गू.। पं. ११। **स्थि.** जीर्ण। लं. प. १०×४

क. १४८३ उत्तराध्ययनसूत्र दीपिकासह पत्र २४४। भा. प्रा. स.। ले. सं. १६२८। ग्रं. १०७७०। पं. १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

अन्त—

संवत् १६२८ वर्षे आषाढ सुदि प्रतिपत्तिथौ शनिवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीमज्जेसलमेरौ। यादवान्वयमुकुटमणिराउलश्रीहरिराजविजयिराज्ये। श्रीबृहत्खरतरगच्छे। श्रीजिनचंद्रसूरिसूरीशे विजयिनि श्री मत्सागरचंद्रसूर्या-

चार्य श्रीमहिमराजगणिबधुराणां शिष्य वा. दयासागरगणिसिंधुराणां शिष्य ज्ञानमदिरगणिधुरंधराणां प्रवर प्राथमकल्पिकानल्पगुणरत्नरोहणाद्रि श्रीश्रीदेवतिलकोपाध्यायपुरहूतदताबलानां विनेयामेयगुणश्रीविजयराजोपाध्याय-दिग्गजानां प. पद्ममदिरमुनि प. कनकसारमुनि प. कर्मसारमुनि प. मेहाजल चिरजीवी रिणमल्ल प. किसना प्रमुखसारपरिवारपरिवृत्तानां शिष्येण प. कनकसारमुनिना श्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रदीपिका लिलिखे ॥ श्री ॥ श्रेयसे स्तात् ॥ कल्याणमस्तु लेखकवाचकयोः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

क्र. १४८४ उत्तराध्ययनसूत्र सावचूरि किंचिदपूर्ण पत्र २१८। **भा.** प्रा. स.। **पं.** १५। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १।।।×३।।।.। पाणीथी भींजाएली तथा उधेइए खाधेली छे।

क्र. १४८५ उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक पत्र १७४। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १।।×३।।।

क्र. १४८६ दशवैकालिकसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र २५। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १८। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १।।।×४।

पोथी ९७ मी

क्र. १४८७ जीवविचार-नवतत्त्व-दंडकप्रकरण पत्र ७। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १।।।×४

क्र. १४८८ जीवविचारप्रकरण सावचूरिक त्रिपाठ पत्र ४। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शांतिसूरि। **पं.** २४। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प** १।।।×३।।।.। रिक्तलिपिचित्रमय।

क्र. १४८९ नवतत्त्वप्रकरण पत्र २। **भा.** प्रा.। **गा** ५४। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १।।×४

क्र. १४९० नवतत्त्वप्रकरण सस्तबक पत्र ११। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १८५०। **गा.** ६१। **पं.** १९। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** १।।।×४

क्र. १४९१ विचारषट्त्रिंशिकाप्रश्नोत्तर पत्र ५। भा. स.। **क.** जिनाब्धिसूरि। **र. सं.** १७२४। **पं.** २०। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १×३।।।

अन्त—

श्रीमद्वेगडगच्छेशजिनचंद्रस्य सद्गुरोः। शिष्येण विहिता चैषा सूरिणा श्रीजिनाब्धिना ॥१॥
सिद्धसयमसख्याब्दे १७२४ स्थिरपक्षे मासि फाल्गुने। शुक्लपक्षे द्वितीयायां वासरे रोहिणीपतौ ॥२॥
॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्र. १४९२ जंबूद्वीपसंग्रहणीप्रकरण सटीक त्रिपाठ पत्र ९। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** हरिभद्रसूरि। **मू. गा.** २९। **टी. क.** प्रभानदसूरि। **र. सं.**१३९०। **पं.** २२। **ग्रं.** ६६७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १।।।×४

अन्त—

नित्य श्रीहरिभद्रसूरिगुरवो जीयासुरत्यद्भुतज्ञानश्रीसमलंकृताः सुविशदाचारप्रभाभासुराः।
येषां वाक्प्रपया प्रसन्नतरया शास्त्रांबुसपूर्णया भव्यस्येह न कस्य कस्य विदधे सतापलोपोऽवनौ ॥१॥
वृत्ते श्रीकृष्णगच्छे श्रवणपरिवृढः श्रीप्रभानदसूरिः क्षेत्रादेः सग्रहण्या अकृत समयगौरववतीं सद्यः।
एतां वृत्तिं खनदज्वलनशशिमिते विक्रमाब्दे चतुर्थ्यां भाद्रस्य श्यामलायामिह यदनुचित तद् बुधाः शोधयंतु ॥२॥
इति क्षेत्रसग्रहणीवृत्तिः समाप्ता ॥ मंगलानि भवंतु ॥

क्र. १४९३ नवतत्त्वप्रकरण पत्र ३। भा. प्रा.। गा. ४७। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९।×३।॥

क्र. १४९४ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी पत्र १४। भा. प्रा.। क. श्रीचंद्रसूरि। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×३॥

क्र. १४९५ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी सटीक त्रिपाठ पत्र ३४। भा. प्रा. सं.। मू. क. श्रीचंद्रसूरि। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

अंत—सं. १८४० मिते भाद्रपद वदी द्वादश्यां श्रीजैसलमेरुदुर्गे वा. अमृतधर्मगणिभिः पं. क्षमाकल्याणयुतैः पुस्तकमिदं ज्ञानभांडागारे स्थापितं ॥

क्र. १४९६ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी सस्तबक पत्र ४७। भा.प्रा. गू.। मू.क. श्रीचंद्रसूरि। पं. १०। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥×४

क्र. १४९७ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी पत्र ३१। भा. प्रा.। क. श्रीचंद्रसूरि। ले.सं. १८४९। पं. ६। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १४९८ लघुक्षेत्रसमास पत्र १२। भा. प्रा.। क. रत्नशेखरसूरि। ले. सं. १८५८। गा. २६४। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १४९९ लघुक्षेत्रसमासप्रकरण यंत्रसह पत्र २०। भा. प्रा.। क. रत्नशेखरसूरि। गा. २६३।

क्र. १५०० जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण पत्र ४। भा. प्रा.। गा. १०९। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. १५०१ जंबूद्वीपक्षेत्रसमासप्रकरण सस्तबक पत्र १३। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १७८३। गा. १५४। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १५०२ कर्मविपाककर्मग्रंथ प्राचीन वृत्तिसह पत्र १५। भा. प्रा. स.। वृ. क परमानंदसूरि। ग्रं. ९२२। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४

क्र. १५०३ प्राचीन कर्मस्तव बंधस्वामित्वकर्मग्रंथवृत्ति पत्र २५। भा. स.। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०×४।। किनारी उदरे करडेली छे।

(१) कर्मस्तववृत्ति पत्र १-१६। भा. स.। ग्रं। १०९०।

(२) बंधस्वामित्वकर्मग्रंथवृत्ति पत्र २५।

क्र. १५०४ आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-प्राचीन चतुर्थ कर्मग्रंथ पत्र ६। भा. प्रा.। क. जिनवल्लभगणि। गा. ९२। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १५०५ आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-प्राचीनषडशीतिचतुर्थकर्मग्रंथ सटीक पत्र ३९। भा. प्रा. सं.। मू. क. जिनवल्लभगणि। टी. क. मलयगिरि। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×४

क्र. १५०६ कर्मग्रंथषट्क पत्र २०। भा. प्रा.। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥×३॥

(१) कर्मग्रंथ १ थी ४ पत्र १-१७। क. देवेन्द्रसूरि।

(२) सप्ततिनामा षष्ठकर्मग्रंथ पत्र १७-२०।

क्र. १५०७ कर्मग्रंथ प्रथम द्वितीय तृतीय पत्र ४। भा. प्रा.। क. देवेन्द्रसूरि। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १५०८ कर्मग्रंथ प्रथम द्वितीय तृतीय सस्तबक पत्र २१। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** देवेन्द्रसूरि। **पं.** १८। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५०९ कर्मविपाककर्मग्रंथ पत्र ५। **भा.** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **गा.** ६२। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५१० कर्मविपाककर्मग्रंथबालावबोध पत्र ३२। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×४.। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १५११ द्वितीयतृतीयकर्मग्रंथ पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५१२ सप्ततिका षष्ठकर्मग्रंथ पत्र ३। **भा.** प्रा.। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५१३ सप्ततिका षष्ठकर्मग्रंथ सटीक पत्र ३४-६१। **भा.** प्रा. सं.। **टी. क.** मलयगिरि। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १५१४ कर्मग्रंथपञ्चक पत्र ९। **भा.** प्रा.। **क.** देवेन्द्रसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५१५ कर्मप्रकृतिप्रकरण पत्र १७। **भा.** प्रा.। **क.** शिवशर्मसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. १५१६ कर्मप्रकृतिवृत्ति पत्र १२२। **भा.** स.। **वृ. क.** मलयगिरि। **पं.** १७। **स्थि.** अतिजीर्ण। **लं. प.** १०×४

क्र. १५१७ कर्मप्रकृतिप्रकरण वृत्तिसह पत्र २०७। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** शिवशर्मसूरि। **वृ. क.** मलयगिरि। **ग्रं.** ८०००। **पं** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प** १०×३॥।

पोथी ९८ मी

क्र. १५१८ सार्धशतकप्रकरण (सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण) सटीक पत्र ९४। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनवल्लभगणि। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५१९ लोकनालिकाद्वात्रिंशिका पत्र २। **भा.** प्रा.। **गा.** ३२। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १५२० लोकनालिकाद्वात्रिंशिका प्रकरण बालावबोध सह पंचपाठ पत्र २। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५२१ क्षुल्लकभवावलिप्रकरण सावचूरिक पंचपाठ पत्र १। **भा.** प्रा. स.। **पं.** १९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५२२ प्रज्ञापनातृतीयपदसंग्रहणीप्रकरण पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५२३ प्रज्ञापनातृतीयपदसंग्रहणीप्रकरण पत्र ७। **भा.** प्रा.। **क.** अभयदेवसूरि। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५२४ प्रज्ञापनातृतीयपदसंग्रहणीप्रकरण अवचूरि पत्र १४। **भा.** सं.। **अव. क.** कुलमंडनगणि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १५२५ प्रज्ञापनातृतीयसंग्रहणीप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ पत्र ७। **भा** प्रा. सं.।

मू. क. अभयदेवसूरि । **अव. क.** कुल्मण्डनगणि । **ले. सं.** १६५५ । **पं.** २३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×४

क. १५२६ देववंदनादिभाष्यत्रय पत्र ११ । **भा.** प्रा. । **क.** देवेन्द्रसूरि । **पं.** ९ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १५२७ प्रत्याख्यानभाष्य वंदनकभाष्य पत्र ५ । **भा.** प्रा. । **क.** देवेन्द्रसूरि । **पं.** ११ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।। उदरे किनारी करेली छे ।

क. १५२८ सम्यक्त्वस्तवपंचविंशतिकाप्रकरण पत्र २ । **भा.** प्रा. । **गा.** २५ । **पं.** ९ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ८।।।×३।।।

क. १५२९ गुणस्थानक्रमारोहप्रकरण पत्र ८ । **भा.** स. । **क.** देवेन्द्रसूरि । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १५३० तत्त्वार्थाधिगमसूत्र पत्र ५ । **भा.** स. । **क.** उमास्वातिवाचक । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×४

क. १५३१ तत्त्वार्थसूत्र श्रुतसागरीटीकासह अपूर्ण पत्र ५१ । **भा.** स. । **मू. क.** उमास्वातिवाचक । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×४

क. १५३२ समयसारनाटक सटीक त्रिपाठ पत्र ? । **भा.** स. । **ले. सं.** १७४३ । **मू. क.** अमृतचंद्राचार्य । **टी. क.** शुभचद्राचार्य । **पं.** १८ । **स्थि.** श्रेष्ठ ।

अंत—

सवदीशाक्षिवेदर्षिचद्रमिते १७४३ वर्षे आषाढस्य सितेतरे पक्षे नवम्यामर्यमदिने । श्रीमद्बृहत्खरतरगणे भट्टारकश्री**जिन**भद्रसूरिशाखायां वा श्री**सम**यहर्षगणेः शिष्य प. **धर्म**चद्रस्तच्छिष्य प. **रत्न**समुद्रेण लिखितेय वृत्तिः । शिष्य**जै**वातृकमुनि**सत्**यशीलादिविलोकनाय पठनार्थं वा ॥ श्री**अर्जु**नपुरवरे ॥

शुभं भूयात् ॥ श्रीय दयात् लेखकपाठकयोः ॥ श्रीः ॥

क. १५३३ षट्स्थानकप्रकरण पंचलिंगीप्रकरण पत्र ५ । **भा.** प्रा. । **पंच. क.** जिनेश्वरसूरि । **षट्. गा.** १०३ । **पंच. गा.** १०२ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १५३४ षट्स्थानकप्रकरण वृत्तिसह पत्र २५ । **भा.** प्रा. स. । **टी. क.** जिनपाल । **ले. सं.** १५१४ । **पं.** १७ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९।।।×४

अंत—सवत् १५१४ वर्षे माघ मासे १३ दिने श्री**खरतर**गच्छे श्री**साग**रचंद्रसूरि शिष्य वा. **म**हिमराजगणि तच्छिष्य वा. **द**यासागरगणिना समलेखि प्रथोऽय ।

क १५३५ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ५२ । **भा.** प्रा. । **क.** नेमिचद्रसूरि । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १५३६ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ९१ । **भा.** प्रा. । **क.** नेमिचंद्रसूरि । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** १५८५ । **गा.** १६१४ । **पं.** ११ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९।।।×३।।।

अन्त—

सवत् १५८५ वर्षे श्री**खरतर**गच्छे श्री**जिनहंस**सूरीश्वरपट्टोदयशैलचूलिकासहस्रकरावतारभट्टारकप्रभुश्रीश्रीश्री**जिनमाणिक्य**सूरिसार्वभौमविजयिराज्ये भ० **हेमा**पुत्रिका**मृ**गावतीसुश्राविकापठनार्थं लिखिता स्वाध्यायपुस्तिका वा० **आनंद**नदनगणिभिः ॥ शुभ भवतु ॥

शोधित च श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः। संवत् १५८९ वर्षे श्रीजेसलमेरौ भाद्रवा वदी २ दिने रवीवारे ॥ श्रीरस्तु ॥

क्र. १५३७ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ८१। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि। **ले. सं.** १६६१। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५३८ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ६१। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि। **ले. सं.** १५२९। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५३९ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ८९। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५४० प्रवचनसारोद्धारप्रकरण अपूर्ण पत्र ३०। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचंद्रसूरि। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥.। किनारी खावेली छे।

क्र. १५४१ प्रवचनसारोद्धारप्रकरणवृत्ति पत्र २४९। **भा.** स.। **वृ. क.** सिद्धसेनसूरि। **ग्रं.** १८००। **पं.** १९। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४.। पत्र १९९ थी २४२ सुधी जीर्ण छे।

पोथी ९९ मी

क्र. १५४२ प्रवचनसारोद्धारविषमपदपर्याय पत्र ११-५१। **भा.** सं.। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प** १०×३॥। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १५४३ प्रवचनसारोद्धारबीजक पत्र ३। **भा.** स। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५४४ प्रवचनसारोद्धारबीजक पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५४५ सत्तरिसयठाणप्रकरण पत्र १५। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १७८१। **गा.** १७०। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४.। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १५४६ एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** सिद्धसेनसूरि। **पं.** १२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र १५४७ एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र ४। **भा.** प्रा.। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र १५४८ एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र ६। **भा.** प्रा.। **क.** सिद्धसेनसूरि। **पं.** ७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५४९ एकविंशतिस्थानप्रकरण पत्र २। **भा.** प्रा.। **क.** सिद्धसेनसूरि। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १५५० एकविंशतिस्थानप्रकरण सस्तबक पत्र १५। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १८२२। **पं.** १५। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १५५१ अष्टकप्रकरण सटीक पत्र ८२। **भा.** स.। **मू. क.** हरिभद्रसूरि। **टी. क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ३३७०। **पं.** १५। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १५५२ षोडशकप्रकरण टिप्पणीसह पत्र ६। **भा.** स.। **क** हरिभद्रसूरि। **ले. सं.** १५५५। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥

अन्त—

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुद तृतीया दिने शनी रोहिण्यां वा० दयासागरगणिवराणां शिष्य वा० ज्ञानमंदिरगणींद्राणां विनेयदेवतिलकेनाऽलेखि श्रीयोधपुरे ॥

क. १५५३ षोडशकप्रकरणवृत्ति पत्र ३०। भा. सं.। क. यशोभद्रसूरि। ले. सं. १६६४। ग्रं. १५००। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५५४ ज्ञानमंजरीज्योतिष पत्र १६। भा. स.। ले. सं. १८१०। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

क. १५५५ योगशास्त्र प्रथमप्रकाश पत्र ३। भा. सं.। क. हेमचंद्राचार्य। ले. सं. १७०८। ग्रं. ५६। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ८॥।×४

क. १५५६ योगशास्त्रप्रथमप्रकाश पत्र ३। भा. सं.। क. हेमचंद्राचार्य। ग्रं. ५६। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

क. १५५७ योगशास्त्रआद्यप्रकाशचतुष्टय पत्र १४। भा. स.। क. हेमचंद्राचार्य। पं. १४। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क. १५५८ योगशास्त्र बालावबोधसह पत्र ११०। भा. स. गू.। मू. क. हेमचन्द्राचार्य। बा. क. सोमसुदरसूरि। ले. सं. १५०२। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४।.।

अंत्य पत्रमां चतुर्विध सघनुं चित्र छे।

अन्त—

श्रीतपागच्छाधिराजश्रीदेवसुदरसूरिपदालंकारश्रीसोमसुदरसूरिपादैर्विरचितश्चिरं नदतु ॥ इति भद्र ॥ शुभं भवतु मगलमस्तु ॥ ऊकेशज्ञातीय सा. हर्पति भार्या हेमादि सुतायाः सा. हरसिंग पत्न्या सा. रूपाई श्राविकायाः योग्यः श्रीयोगशास्त्रबालावबोध। सवत् १५०२ वर्षे श्रावण सुदि १२ भूमे लिखित॥ मंत्रि सांगा लिखित ॥छ॥श्री॥

क. १५५९ संघपट्टकप्रकरण पत्र ३। भा. स। पं. १४। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६० संघपट्टकप्रकरण सावचूरिक पत्र १४। भा. सं.। मू क. जिनवल्लभसूरि। अव. क. साधुकीर्तिगणि। र. सं. १६१९। पं. १५। स्थि श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६१ संदेहदोलावलीप्रकरण पत्र ९। भा. प्रा.। क. जिनदत्तसूरि। गा. १५०। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६२ संदेहदोलावलीप्रकरण पत्र ८। भा. प्रा.। क. जिनदत्तसूरि। ले. सं. १६७५। गा. १५०। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६३ संदेहदोलावलीप्रकरण पत्र ९। भा. प्रा.। ले. सं. १६१६। गा. १५०। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६४ संदेहदोलावलीप्रकरण वृत्तिसह पत्र ६८। भा. प्रा. स.। मू. क. जिनदत्तसूरि। वृ. क. जिनेश्वरसूरि। ग्रं. ४७५०। र. सं. १३२०। पं. १७। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

अन्त—

श्रीमद्विक्रमवप्रे महाराजाधिराजमहाराजाश्रीराजसिंहविजयराज्ये लिखितं विद्वन्द्रसिंहाह्वेनर्षिणा ॥

क. १५६५ पषणाशतक पत्र ४। भा. गू.। क. पार्श्वचंद्रसूरि। गा. १०४। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क. १५६६ द्वादशकुलक टिप्पणीसह पत्र ६। भा. प्रा.। मू. क. जिनवल्लभसूरि। ग्रं. ३००। पं. १८। स्थि जीर्ण। लं. प. १०×४

क्र. १५६७ द्वादशकुलक विवरणसह पत्र ७५। भा. प्रा. स.। मू. क. जिनवल्लभसूरि। टी.क. जिनपाल। र. सं. १२९३। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. १०×४

क्र. १५६८ षष्टिशतप्रकरण पत्र ८। भा. प्रा.। क. भंडारी नेमिचंद्र। गा. १६१। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५६९ षष्टिशतप्रकरण बालावबोधसह पत्र ४४। भा. प्रा. गू.। मू. क. भंडारी नेमिचंद्र। बाला. क. सोमसुंदरसूरि। र. सं. १४९६। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४

क्र. १५७० षष्टिशतप्रकरण बालावबोधसह पत्र २–४४। भा. प्रा. गू.। मू. क. भंडारी नेमिचंद्र। बा. क. सोमसुंदरसूरि। र. सं. १४९६। ग्रं. ११२५। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५७१ सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण पत्र ६। भा. प्रा.। गा. ७०। पं. ९। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५७२ दर्शनसप्ततिका वृत्तिसह अपूर्ण पत्र १९१। भा. प्रा. स.। पं. १३। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

पोथी १०० मी

क्र. १५७३ ऋषिमंडलप्रकरण पत्र १०। भा. प्रा। क. धर्मघोषसूरि। गा २३३। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

अन्त—

संवत् १८३८ वा. अमृतधर्मगणिना पं. क्षमाकल्याणयुतेन इद भांडागारे मुक्तम्।

क्र. १५७४ ऋषिमंडलप्रकरण पत्र ११। भा. प्रा.। क. धर्मघोषसूरि। गा. २३३। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५७५ विवेकमंजरीप्रकरण जीवविचारप्रकरण पत्र ९। भा. प्रा.। वि. क. आसड। र. सं. १२४८। जी. क. शांतिसूरि। वि. गा. १४४। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र १५७६ उपदेशमालाप्रकरण अपूर्ण पत्र ६–१४। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा ५४४। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५७७ उपदेशमालाप्रकरण पत्र २६। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५७८ उपदेशमालाप्रकरण अपूर्ण पत्र १०–२५। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×३॥

क्र. १५७९ उपदेशमालाप्रकरण पत्र ३–१८। भा प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥

क्र. १५८० उपदेशमालाप्रकरण पत्र २–१५। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। गा. ५४४। पं. १६। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५८१ उपदेशमालाप्रकरण बालावबोधसह पत्र ४३। भा. प्रा. गू.। मू. क. धर्मदासगणि। बा. क. विमलकीर्ति। बा. र. सं. १६६९। ले. सं. १६८०। पं. १५। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

अन्त—

सवत् १६८० वर्षे भाद्रपदविशददशम्यां। श्रीमद्वीरमपुरे ॥ श्रीसाधुकीर्त्युपाध्यायानां शिष्य वा. श्रीमहिमसुंदरगणीन्द्राणां वि. ज्ञानमेरुभिरलखि निःशेषविशेषविदांवरा साध्वी मानसिद्धिगणिनीशिष्या पद्मसिद्धिगणिनी तच्छिष्या साध्वी पुण्यसिद्धिगणिनी पठनकृते। कृतिनां श्रेयोस्तु श्रीश्रेयांसजिनेशप्रसत्त्या ॥छ॥

क्र. १५८२ उपदेशमालाप्रकरण बालावबोधसह अपूर्ण पत्र ६४–११५। भा. प्रा. गू.। ग्रं. ५०००। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५८३ उपदेशमाला बालावबोध अपूर्ण पत्र ४–४७। भा. गू.। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५८४ पुष्पमालाप्रकरण पत्र २४। भा. प्रा.। क. मलधारी हेमचन्द्राचार्य। गा. ५०५। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५८५ पुष्पमालाप्रकरण अपूर्ण. पत्र २४। भा. प्रा.। क. मलधारी हेमचन्द्राचार्य। गा. ५०५। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४.। पत्र ७ थी १२ नथी।

क्र. १५८६ पुष्पमालाप्रकरण पत्र ६–२७। भा. प्रा.। क. मलधारी हेमचन्द्रसूरि। पं. ११। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. १०×४

क्र. १५८७ अध्यात्मकल्पद्रुम सटीक त्रिपाठ पत्र ६२। भा. स.। मू. क. मुनिसुंदरसूरि। ग्रं. २४५९। टी. क. वाचक रत्नचंद्र। टी. र. सं. १६७२। ले. सं. १६७४। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

अंत— संवत् १६७४ वर्षे अश्विनमासि शुक्लदशम्यां। श्रीसूरतबंदिरे उपाध्यायश्री रत्नचंद्रगणिभिर्विरचिता श्रीप्रद्युम्नचरित्र। श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोध श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशाभ्यां भ्रातृभ्यां। श्री कल्याण मंदिरस्तव १। श्रीभक्तामरस्तव २। श्रीदेवप्रभोस्तव ३। श्रीमनन्धरस्तव ४। श्रीऋषभवीरस्तव ५। श्रीशृंगारसकोष ६। श्रीनैषधमहाकाव्य। श्रीरघुवंशमहाकाव्यानां वृत्तिभगिनीभिः। सह रममाणा चिरं जयतु। अध्यात्मकल्पलतानाम्नी वृत्तिः॥ श्रीविजयदेवसूरीणां आदेशात् ॥

क्र. १५८८ रत्नसंचय सस्तबक अपूर्ण पत्र १८–४०। भा. प्रा. गू.। पं. ७। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५८९ पूजाप्रकरण पत्र ३। भा. प्रा.। गा. ५०। पं. ११। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५९० संबोधसप्ततिकाप्रकरण पत्र ४। भा. प्रा.। क. रत्नशेखर। पं. १२। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५९१ संबोधसप्ततिकाप्रकरण पत्र ३। भा. प्रा.। क. रत्नशेखर। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५९२ संबोधसप्ततिकाप्रकरण पत्र ३। भा. प्रा.। क. रत्नशेखर। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १५९३ संबोधसप्ततिकाप्रकरण सस्तबक पत्र १३। भा. प्रा. गू.। मू. क. रत्नशेखर। स्त. क. विमलबोध। र. सं. १७३३। पं. १३। स्थि. श्रेष्ठ। ले. सं. १७७९। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १५९४ उपदेशरत्नकोश सावचूरिक त्रिपाठ पत्र ३। **भा.** प्रा. सं.। **पं.** १७। **ले. सं.** १७४९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५९५ उपदेशरत्नकोश सस्तबक पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १५९६ सिंदूरप्रकर पत्र ७। **भा.** स.। **क.** सोमप्रभाचार्य। **का.** १००। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १५९७ सिंदूरप्रकर सटीक पत्र २३। **भा.** स.। **मू. क.** सोमप्रभाचार्य। **टी.क.** हर्षकीर्त्तिसूरि। **ले. सं.** १८७६। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १५९८ सिंदूरप्रकर अवचूरि किंचिदपूर्ण पत्र ११। **भा.** स.। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १५९९ (१) आदिनाथदेशनोद्धार पत्र १-४। **भा.** प्रा.। **गा.** ८८।
(२) **आत्मभावनास्तव** पत्र ४-७। **भा.** स.। **क.** पार्श्वनाग। **ग्रं.** ७६। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६०० (१) भववैराग्यशतक पत्र १-५। **भा.** प्रा.। **गा.** १०३।
(२) **जिनस्तुति** पत्र ५ मु। **का.** ४। **भा.** प्रा.। **ले. सं.** १६१७। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६०१ भववैराग्यशतक सस्तबक पत्र ११। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** ११। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र १६०२ गौतमपृच्छा बालावबोधसह पत्र ४०। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १५। **स्थि** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १६०३ गुणस्थानकप्रकरण वृत्तिसह पत्र ३१। **भा.** स.। **क.** रत्नशेखरसूरि स्वोपज्ञ। **पं.** १५। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. १६०४ दानादिकुलकबालावबोध अपूर्ण पत्र ५३। **भा** गू.। **पं.** १४। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १६०५ श्रावकदिनकृत्यप्रकरण पत्र १६। **भा.** प्रा.। **पं** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १६०६ गौतमकुलक सस्तबक पत्र २। **भा.** प्रा गू.। **मू. गा.** २०। **पं.** १४। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६०७ गौतमकुलक सस्तबक पत्र ३। **भा.** प्रा. गू.। **मू. गा.** २०। **पं.** १२। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६०८ गौतमपृच्छा पत्र २। **भा.** प्रा.। **गा.** ६४। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६०९ ईरियापथिकीकुलक सस्तबक पत्र २। **भा** प्रा. गू.। **पं.** १२। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६१० प्रश्नोत्तररत्नमाला सस्तबक पत्र २। **भा.** सं. गू.। **मू. क** विमलाचार्य। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क. १६११ सिद्धमातृकाप्रकरण पत्र २-५। **भा.** स.। **पं.** १७। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×४।

क. १६१२ षष्टिशतप्रकरण पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** नेमिचद्र भंडारी। **गा.** १६२। **पं.** १६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

पोथी १०१ मी

क. १६१३ वीतरागस्तोत्र पत्र ८। **भा.** सं.। **क.** हेमचद्राचार्य। **पं.** ११। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क. १६१४ वीतरागस्तोत्र पत्र ४। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **पं.** १८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥×४

क. १६१५ वीतरागस्तोत्र सावचूरि पत्र ६। **भा.** स.। **मू. क.** हेमचद्राचार्य। **पं.** १९। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क. १६१६ भावारिवारणस्तोत्र पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभगणि। **का.** ३०। **पं.** १२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क. १६१७ भावारिवारणस्तोत्र सटीक पत्र ८। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनवल्लभसुरि। **टी. क.** जयसागरसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क. १६१८ उल्लासिक्कमस्मरण सस्तबक नमिऊणस्तोत्र सस्तबक पत्र ७। **उ. क.** जिनवल्लभ-सूरि। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प** १०×४

क. १६१९ दुरियरयसमीरस्तोत्र पत्र ४। **भा.** प्रा.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **पं.** ७। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क. १६२० दुरियरयसमीरस्तोत्र बालावबोधसह अपूर्ण पत्र ७। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** १२। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।×३॥।

क. १६२१ दुरियरयसमीरस्तोत्र सावचूरिक पंचपाठ पत्र ४। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिन-वल्लभसूरि। **ले. सं.** १६२४। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

अन्त—

सवत् १६२४ वर्षे श्रीबृहत्खरतरगच्छे। श्रीजिनचंद्रसूरिराज्ये। श्रीअलकापुर्यां श्रीदयाकलशगणि-वाचनाचार्य श्रीअमरमाणिक्यगणि तत्शिष्य पं. कनकसोमेन स्ववाचनार्थं श्रीमहावीरचरित्रं श्रीमदभयदेव-सूरिशिष्यपुगव श्रीजिनवल्लभसूरिभिः कृत लिखित ॥ श्रेयसेस्तु। कल्याणमस्तु ॥श्री॥

क. १६२२ अजितशांतिस्तवावचूरि पत्र ८। **भा.** स.। **ले. सं.** १५९१। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

अंत—

इति श्रीअजितशांतिस्तवावचूरिः। लिपिकृता वा. सहजकीर्तिगणिना संवत् १५९१ वर्षे नागपुरवरे ॥

क. १६२३ अजितशांतिस्तव सावचूरिक पंचपाठ पत्र ८। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** नंदिषेण। **ले. सं.** १६००। **ग्रं.** ४१७। **पं.** १८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९॥।×४

क. १६२४ अजितशांतिस्तोत्र सस्तबक पत्र ७। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** नंदिषेण। **पं.** १२। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १६२५ सप्तस्मरण पत्र २० । **भा.** प्रा. स. । **ले. सं.** १७२६ । **पं.** ९ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९।×३।।।

(१) **नवकार** पत्र १ । **भा.** प्रा. ।
(२) **उवसग्गहरं** पत्र १ । **भा.** प्रा. । **क.** भद्रबाहुस्वामी । **गा.** ५ ।
(३) **संतिकरं** पत्र १-२ । **भा.** प्रा.। **क.** मुनिसुदरसूरि । **गा.** १३ ।
(४) **नमिऊण** पत्र २-५ । **भा.** प्रा. । **गा.** २४ ।
(५) **अजितशांति** पत्र ५-११ । **भा.** प्रा. ।**क.** नदिषेण । **गा.** ४० ।
(६) **भक्तामर** पत्र ११-१६ । **भा.** स. । **क.** मानतुगसूरि । **गा.** ४४ ।
(७) **बृहत्‌शांति** पत्र १६-१९ । **भा.** सं. । **क.** वादिवेताल शांतिसूरि ।
(८) **लघुशांति** पत्र १९-२० । **भा.** सं.। **क.** मानदेवसूरि । **गा.** १७ ।

क्र. १६२६ सप्तस्मरण पत्र १० । **भा.** प्रा. स. । **पं.** ११ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** । ९।।।×४।

(१) **अजितशांति** पत्र १-४ । **भा.** प्रा. । **क** नदिषेण । **गा.** ४० ।
(२) **लघुअजितशांति** पत्र ४-६ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनवल्लभगणि । **गा.** १७ ।
(३) **नमिऊण** पत्र ६-७ । **भा.** प्रा. । **गा.** २४ ।
(४) **तं जयउ स्मरण** पत्र ७-८ । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** २६ ।
(५) **मयरहिय स्तोत्र** पत्र ८-१० । **भा.** प्रा. । **क.** जिनदत्तसूरि । **गा.** २१ ।
(६) **सिग्घमवहरउविग्घं स्तोत्र** पत्र १०। **भा.** प्रा. । **क** जिनदत्तसूरि । **गा.** १४ ।

क्र. १६२७ भक्तामरस्तोत्र पत्र ३ । **भा.** स. । **क.** मानतुगसूरि । **ले. सं.** १७५५ । **का.** ४८ । **पं.** १२ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १६२८ भक्तामरस्तोत्र बालावबोध पत्र १२ । **भा** गू. । **पं.** ११ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९×३।।।

क्र. १६२९ कल्याणमंदिरस्तोत्र पत्र २ । **भा.** सं. । **क.** सिद्धसेन दिवाकर । **का.** ४४ । **पं.** १३ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९।।×३।।।

क्र. १६३० कल्याणमंदिरस्तोत्र पत्र ३ । **भा.** सं. । **क.** सिद्धसेन दिवाकर । **पं.** १६ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प** ९।।×३।।।

क्र. १६३१ कल्याणमंदिरस्तोत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र ८ । **भा.** स. गू. । **मू. क.** सिद्धसेन दिवाकर । **पं.** १० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×३।।।

क्र. १६३२ लघुशांतिस्तव पत्र २ । **भा.** स. । **क.** मानदेवसूरि । **गा.** १७ । **पं.** ८ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १६३३ जयतिहुयणस्तोत्र सस्तबक पत्र ६ । **भा.** अपभ्रंश. गू.। **मू. क.** अभयदेवसूरि । **मू. गा.** ३० । **पं.** १० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १६३४ कलिकुंडपार्श्वनाथस्तोत्र धरणोरगेन्द्रस्तोत्र पत्र २ । **भा.** सं. । **ग्रं.** ३९ । **पं.** १३ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९×३।।।

क्र. १६३५ विज्ञप्तिद्वात्रिंशिका पत्र २ । **भा** स. । **ग्रं.** ३३ । **पं.** ११ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** । ९।।×३।।।

क्र. १६३६ परमानंदस्तोत्र तथा मूर्खशतक पत्र १ । **भा.** सं. । **ग्रं.** २८ । **पं.** १८ । **स्थि.** जीर्ण । **लं. प.** ९।×३।।।

क्र. १६३७ ऋषिमंडलस्तोत्र पत्र २। भा. स.। पं. १५। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १६३८ चतुर्विंशतिजिनस्तव तथा सद्भक्त्या देवलोके स्तोत्र पत्र २। भा. सं.। का. २८। च. क. देवविजयगणि। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १६३९ बप्पभट्टिस्तुतिचतुर्विंशतिका सटीक पंचपाठ पत्र ५। भा. सं.। मू. क. बप्पभट्टिसूरि। का. ९६। पं. २२। स्थि. श्रेष्ठ लं. प. ९॥।×४

क्र. १६४० शोभनस्तुति पत्र ८। भा. सं.। क. शोभनमुनि। ले. सं. १८७६। पं. १२। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १६४१ स्तोत्रसंग्रह पत्र ६। भा. सं.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

क्र. १६४२ जिनस्तोत्ररत्नकोश पत्र ५। भा. स.। क. मुनिसुंदरसूरि। पं. १७। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४.। पाणीथी भींजाएल छे।

क्र. १६४३ नवकारमाहात्म्य अपूर्ण पत्र ४-८। भा. सं.। पं. १७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १६४४ जिनकुशलसूरिकवित्वाष्टक पत्र १। भा. सं.। क. मुनिमेरूपाध्याय। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १६४५ भवानीसहस्रनामस्तोत्र पत्र ९। भा. स.। पं. १२। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×४

क्र. १६४६ त्रिपुरास्तोत्र लघुस्तव पत्र २। भा. सं। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४

क्र. १६४७ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमहाकाव्य दशमपर्व-महावीरचरित्र पत्र २०८। भा. सं.। क. हेमचंद्राचार्य। ले. सं. १६५७। पं ११। स्थि. मध्यम। लं प. ९॥।×४

अन्त—

संवत् १६५७ वर्षे भाद्रपद वदी ७ वार गुरु लखत व्यास लडूजी ॥ शुभं भवतु ॥

क्र. १६४८ एकविंशतिस्थानकप्रकरण सस्तबक पत्र ५। भा. प्रा. गू.। ले. सं. १७०१। मू. क. सिद्धसेनसूरि। पं. १६। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×४

क्र. १६४९ शांतिनाथचरित्र गद्य त्रुटक पत्र ११-४६ अने १९६मु। भा. स.। क.भावचंद्रसूरि। ले. सं. १६५६। ग्रं. ६९००। पं. १३। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४

क्र. १६५० त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण त्रुटक-अपूर्ण पत्र ६४-१०१। भा. स.। पं. ११। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×४

क्र. १६५१ जंबूस्वामिचरित्र पत्र १८। भा. प्रा.। क. पद्मसुंदर। पं. १५। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १६५२ जंबूस्वामिचरित्रगद्य पत्र ११। भा. स.। क. सकल हर्ष। ले. सं. १७२०। पं. १६। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १६५३ अंबडचरित्र गद्य पत्र ३१। भा. स.। क. अमरसुंदर। ले. सं. १८५७। पं.१५। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १६५४ धर्मदत्तकथानक गद्य पत्र ७। भा. स.। ले. सं. १६६८। पं.१७। स्थि. श्रेष्ठ। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १६५५ ज्ञानपंचमीकथा पत्र ३। **भा.** स.। **क.** कनककुशल। **र. सं.** १६५५। **ले. सं.** १८५९। **पं.** १७। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १६५६ पौषदशमीकथा गद्य पत्र ३। **भा.** सं.। **पं.** १६। **स्थि.** मध्यम। **लं.प.** ९॥×३॥. प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १६५७ होलिकाकथा पद्य पत्र ३। **भा.** सं.। **पं.** १३। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १६५८ चातुर्मासिकव्याख्यान पत्र ६। **भा.** सं.। **क.** समयसुंदर। **र. सं.** १६६५। **पं.** १३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९×३॥।

क्र. १६५९ सम्यक्त्वकौमुदीकथा गद्य पत्र ३९। **भा.** स.। **पं.** १५। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×३॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १६६० चातुर्मासिकव्याख्यान पत्र ४। **भा.** स.। **पं.** १९। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र १६६१ सिंहासनद्वात्रिंशिकाकथा पत्र १२-४४। **भा.** स.। **पं.** ११। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×३॥।

पोथी १०२ मी

क्र. १६६२ उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक पत्र १६८। **भा.** प्रा. गू.। **मू. ले. सं.** १८२८। **ट. ले. सं.** १८३३। **ग्रं.** ९०००। **पं.** १४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

क्र. १६६३ भक्तामरस्तोत्र वार्त्तिकसह पत्र २८। **भा.** सं. गू.। **मू. क.** मानतुंगसूरि। **वा. क.** मेरुसुंदरोपाध्याय। **पं.** ११। **ले. सं.** १६४२। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १६६४ उपदेशरत्नाकर पत्र ७। **भा.** स। **क.** मुनिसुंदरसूरि। **पं.** १५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १६६५ सुरसुंदरीकथा टिप्पनकसह पत्र ८१। **भा.** प्रा.। **क.** धनेश्वरसूरि। **र. सं.** १०९५। **ले. सं.** १५०३। **ग्रं.** ५०००। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४

अन्त—

सवत् १५०३ वर्षे पोषमासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां कुजे देवकुलपाटके महाराजाधिराजप्रतापाक्रांतसकल-दिक्चक्रवालराजन्यराणश्रीकुंभकर्णविजयराज्ये श्रीखरतरगच्छालंकारभूत षट्त्रिंशद्गुणोपेत महामहनीयतमश्रीमजिन-भद्रसूरीश्वरैः सुरसुदरीकथापुस्तकमिद लेखयांचक्रे ॥ लिखित च विप्रपंचाननेन ॥

क्र. १६६६ मलयसुंदरीचरित्र पत्र ३-४३। **भा.** स। **क** जयतिलकसूरि। **ग्रं.** २४०६। **पं.** १६। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४.। प्रति उधईए खाधेली छे।

क्र. १६६७ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र दशमपर्व महावीरचरित्र पत्र ८३। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **पं.** १७। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** १०×४

क्र. १६६८ श्रीपालचरित्र पत्र २७। **भा.** प्रा.। **क.** रत्नशेखरसूरि। **र. सं.** १४२८। **ले. सं.** १६७४। **पं.** १९। **स्थि.** जीर्ण। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १६६९ श्रीपालचरित्र पत्र ३८। **भा.** प्रा.। **क.** रत्नशेखरसूरि। **र. सं.** १४२८। **पं.** १३। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०×४

क्र. १६७० वरांगचरित्र पत्र ३८। **भा.** स। **क.** वर्द्धमानभट्टारकदेव। **ग्रं.** १३८३। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** १०।×४.

अन्त—

स्वस्ति श्रीमूलसंघे भुवि विदितगणे श्रीबलात्कारसंज्ञे
श्रीभारत्यादिगच्छे सकलगुणनिधिर्वर्द्धमानाभिधानः।
आसीद्भट्टारकोऽसौ सुचरितमकरोच्छ्रीवरांगस्य राज्ञो
भव्यश्रेयांसि तन्वद् भुवि चरितमिदं वर्त्तनामार्कतार ॥

प्रमाणमस्य काव्यस्य श्लोका ज्ञेया विशारदैः। अनुष्टुप्सख्यया सर्वे गुणेभाग्नीदुसम्मिताः १३८३॥
॥इति श्रीपरवादिदंतिपचाननश्रीवर्द्धमानभट्टारकदेवविरचिते वरांगचरिते वरांगसर्वार्थः॥

क्र. १६७१ आचारांगसूत्र पत्र ३९। **भा.** प्रा.। **क.** सुधर्मास्वामी। **ग्रं.** २५५४। **पं.** १८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४

क्र. १६७२ चैत्यवंदनभाष्य सस्तबक पत्र ४। **भा.** प्रा गू.। **गा.** ६२। **पं.** १५। **स्थि.** **लं. प.** १०×४

क्र. १६७३ क्षुल्लकभवावलिकाप्रकरणसावचूर्णि पंचपाठ पत्र १। **भा** प्रा. स.। **अव क.** धर्मशेखरगणि। **ले. स.** १७८५। **गा.** २५। **पं.** २३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४।

अन्त—

सं. १७८५ चैत्रादि सितदशम्यां श्रीमयूरसीम्नि ग्रामेऽलीलिखत श्रीखरतरवेगडगणाधीश भट्टारकश्री जिनउदयसूरिविजयराज्ये शिष्य प कनककीर्त्तिकेन अभ्यर्थनया लिखापिता श्रेयसे भूयात्

क्र. १६७४ पाक्षिकसूत्र तथा अतिचार पत्र २-१७। **भा.** प्रा. गू.। **पं.** ११। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×३।।।

क्र. १६७५ श्रीचंद्रीयासंग्रणी सस्तबक अपूर्ण पत्र २-३८। **भा** प्रा. गू.। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०।×४.। गाथा १३० सुधी टबो छे।

क्र. १६७६ प्राचीनकर्मस्तवकर्मग्रंथवृत्ति पत्र २-१५। **भा** स। **क** गोविंदगणि। **ग्रं.** १४९९। **पं.** १९। **लं. प.** १०।×४

क्र. १६७७ उपदेशमालाप्रकरण टिप्पणीसह पत्र २६। **भा.** प्रा। **मू. क.** धमदासगणि। **पं.** १२। **स्थि** जीर्ण। **ल. प.** १०।×४

क्र १६७८ संघपट्टकप्रकरण वृत्तिसह पत्र ४८। **भा.** स.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **ग्रं.** ३६००। **टी. क.** जिनपतिसूरि। **ले. स.** १५६४। **पं.** १९। **स्थि** श्रेष्ठ। **लं. प** १०।×४

अन्त—

श्रीवर्द्धमानजिनस. २०३४वर्षे विक्रमसवत्१५६४वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्रीसागरचंद्राचार्यान्वये वा. महिमराजगणीनां शिष्य वा. दयासागरगणीनां वि. वा. ज्ञानमंदिरगणीनां समीपे शि. देवतिलकेन वाचिता किंचिच्छोधिता च श्रीजंगलदेशे श्रीबीकानयरे श्रीलूणकर्णराज्ये ॥

क्र. १६७९ दर्शनसप्ततिकाप्रकरण वृत्तिसह पत्र ११६। **भा.** प्रा. स। **टी. क** सोमतिलकाचार्य। **टी. र सं.** १४२२। **ले. सं.** १५०१। **ग्रं.** ८७०७। **पं.** १७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १६८० लघुक्षेत्रसमासप्रकरण पत्र (?)। **भा.** प्रा.। **क.** रत्नशेखरसूरि। **ले. सं.** १८६०। **गा.** २६५। **पं.** १४। **स्थि.** मध्यम। **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १६८१ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी पत्र ६ । **भा.** प्रा. । **क.** श्रीचंद्रसूरि । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १६८२ जीवविचार नवतत्त्वप्रकरण पत्र ४ । **भा.** प्रा. । **जी. गा.** ५० । **न. गा.** ५१ । **जी. क.** शांतिसूरि । **पं.** १४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।×४

क्र. १६८३ नवतत्त्वप्रकरण सावचूरिक पत्र ८ । **भा.** प्रा. स. । **पं.** १५ । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४।

क्र. १६८४ गीत सज्झायादि पत्र ७ । **भा.** गू. । **पं.** २० । **स्थि.** मध्यम । **लं. प.** १०×४

पोथी १०३ मी

क्र. १६८५ पर्युषणाष्टाह्निकाव्याख्यान पत्र १५ । **भा.** स. । **क.** क्षमाकल्याण । **र सं.** १८६० । **ले. सं.** १८८२ । **पं.** १५ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं प** ९।।×४।।

क्र. १६८६ आत्मप्रबोध बीजकसह पत्र १२४ । **भा.** स. । **क.** जिनलाभसूरि । **र. सं.** १८३३ । **पं.** १३ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।।×४।

क्र. १६८७ वर्धमानदेशना गद्य पत्र १७९ । **भा.** स. । **क.** राजकीर्ति । **ले. सं.** १८६५ । **पं.** ११ । **स्थि.** मध्यम । **लं प.** ९।।।×४।

क्र. १६८८ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी अपूर्ण पत्र ७१ । **भा** प्रा. । **पं.** ४ । **स्थि.** श्रेष्ठ । **लं. प.** ९।×४।

क्र. १६८९ समरादित्यचरित्र संस्कृतछायासह पत्र ३०१ । **भा** प्रा. स । **मू. क.** हरिभद्रसूरि । **ग्रं.** १०००० । **पं** ११ । **स्थि** मध्यम । **लं प** ९।।×४

क्र. १६९० सप्तव्यसनकथानक पद्य अपूर्ण पत्र ५२ । **भा** स । **क** सोमकीर्ति । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १५ । **लं. प.** ९।।।×३।।।

पोथी १०४ मी

क्र. १६९१ प्रज्ञापनोपांगसूत्रटीका पत्र ३६-३५२ । **भा.** सं. । **टी क.** मलयगिरि आचार्य । **ले. सं.** १७८२ । **ग्रं.** १६००० । **स्थि.** जीर्ण । **प.** १६ । **लं. प.** ९।।×४।। । पाणीथी भींजाएली छे ।

क्र. १६९२ पाक्षिकसूत्र पत्र ८ । **भा** प्रा. । **स्थि.** मध्यम । **पं.** ११ । **लं. प.** ९।।×४।

क्र. १६९३ स्मरणस्तोत्रादि सार्थ कल्प सह पत्र २१ । **भा.** प्रा. स. गू. । **ले. सं.**१८२९ । **स्थि.** मध्यम । **पं.** १६ । **लं. प.** ९।।।×४।

(१) **जांगुलीमहाविद्याकल्प** पत्र १ । **भा.** स. ।
(२) **सर्वरोगहरस्तोत्र** पत्र २ । **भा.** सं. ।
(३) **ज्वालामालिनीमंत्र** पत्र २ । **भा.** स. ।
(४) **उवसग्गहरंस्तोत्र** पत्र २-३ । **भा.** प्रा. ।
(५) **सप्ततिशतजिनस्तोत्र** पत्र ३-४ । **भा.** प्रा ।
(६) **भयहरस्तोत्र** पत्र ४-७ । **भा.** प्रा. ।
(७) **अजितशांतिस्तोत्र** पत्र ७-१४ । **भा.** प्रा. ।
(८) **बृहत्शांतिस्तोत्र** पत्र १४-१५ ।

(९) लघुशांतिस्तोत्र पत्र १५-१७।

(१०) संतिकरं पत्र १७-१९।

(११) भैरवपद्मावतीकल्प पत्र १९-२०।

(१२) अवकहडाचक्र पत्र २१।

क्र. १६९४ रत्नाकरपच्चीसी सस्तबक पत्र ३। **भा.** स. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×४।

क्र १६९५ अजितशांतिस्तव पत्र ३। **भा.** प्रा.। **क.** नंदिषेण। **गा.** ४०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. १६९६ भक्तामरस्तोत्र पत्र ९। **भा.** स.। **क.** मानतुगसूरि। **का.** ४४। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ४। **लं. प.** ९॥×४.। किनारी उदरे करडेली छे।

क्र. १६९७ षोडशकप्रकरणटीका पत्र ३७। **भा.** स.। **टी. क.** यशोभद्रसूरि। **ले. सं.** १८१७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १६९८ योगशास्त्रटीका पत्र ४८। **भा.** स.। **क.** हेमचन्द्राचार्य स्वोपज्ञटीका। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४॥.।

क्र १६९९ दशवैकालिकसूत्र सस्तबक पत्र ४८। **भा.** प्रा गू.। **मू. क.** शय्यंभवसूरि। **ग्रं.** ४५००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २३। **लं. प.** ९।×४।

क्र. १७०० सप्तस्मरण अपूर्ण पत्र ८। **भा.** प्रा स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ९×४।

क्र १७०१ शीलोपदेशमालाप्रकरण पत्र ६। **भा** प्रा.। **क.** जयकीर्तिसूरि। **गा.** ११७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** ९।×४।

क्र. १७०२ भावारिवारणस्तोत्रादिवृत्ति पत्र १५। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ८॥।×४।

क्र. १७०३ अष्टाह्निकाव्याख्यान अपूर्ण पत्र २१। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ८॥।×४

क्र १७०४ ज्योतिषाम्नाय पत्र १। **भा.** स.। **स्थि** जीर्ण। **पं.** १२। **लं. प.** ९।×३॥

क्र. १७०५ कल्पसूत्र अपूर्ण पत्र ९९। **भा.** प्रा.। **स्थि.** मध्यम। **पं** ७। **लं. प.** ९।×४

क्र. १७०६ श्रावकषडावश्यकसूत्र पत्र १६। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९×४।

क्र. १७०७ दशवैकालिकसूत्र पत्र २८। **भा.** प्रा.। **क.** शय्यंभवसूरि। **ले. सं.** १६०६। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** ८॥।×४

क्र. १७०८ भक्तामरस्तोत्र वृत्तिसह पत्र ५९। **भा.** स.। **मू. क.** मानतुगसूरि। **वृ. क.** गुणाकरसूरि। **र. सं.** १४२६। **ले. सं.** १८५९। **ग्रं.** १५७२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९×३॥।

क्र. १७०९ भावारिवारणस्तोत्र तथा दुरियरयसमीरस्तोत्र पत्र ४। **भा.** स. प्रा.। **क.** जिनवल्लभसूरि। **पं.** १२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** ८॥×३॥।

क्र. १७१० कालज्ञानभाषाप्रबंध पत्र ९। **भा.** राजस्थानी। **क.** लक्ष्मीवल्लभगणि। **र. सं.** १७४१। **ले. सं.** १८५२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** ९×३॥।

क्र. १७११ शीतलजिनस्तुति आदि पत्र २। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं. १३**। **लं. प.** ९×३॥।

(१) **शीतलनाथस्तुति भा.** स.। **क.** जिनलाभसूरि। **गा.** ४।
(२) **ज्ञानपंचमीस्तुति भा.** गू.। **क.** जिनलाभसूरि। **गा.** ४।
(३) **मौनएकादशीस्तुति भा.** गू.। **क.** जिनलाभसूरि। **गा.** ४।
(४) **पार्श्वनाथस्तुति भा.** गू.। **क.** जिनलाभसूरि। **गा.** ४।
(५) **वीरस्तुति भा.** गू.। **क.** जिनलाभसूरि। **गा.** ४।

पोथी १०५ मी

क्र. १७१२ सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति द्वितीयअध्याय प्रथमपादपर्यंत पत्र १५। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य स्वोपज्ञ। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४

क्र. १७१३ सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति षष्ठसप्तमाध्याय-तद्धितवृत्ति पत्र ४१। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १५१६। **ग्रं.** १६२८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०।×४

क्र. १७१४ सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद्वृत्ति लघुन्यास षष्ठपाद पर्यंत पत्र ५९। **भा.**स.। **क.** कनकप्रभसूरि। **पं.** २२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **लं. प.** १०×४

क्र. १७१५ सिद्धहेमशब्दानुशासन चतुष्कावचूरि षष्ठपादपर्यंत पत्र २०। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं** २४। **लं. प.** १०×४

क्र. १७१६ सिद्धहेमशब्दानुशासन आख्यातावचूरि चतुर्थाध्यायपर्यंत किंचिदपूर्ण पत्र २८। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १०×४

क्र. १७१७ हैमलिंगानुशासन अपूर्ण पत्र ११। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १७१८ लिंगानुशासन स्वोपज्ञटीकासह पत्र ८३। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×३॥।

अंत—

श्रीकल्याणविजयवरवाचकशिष्यशुभविजयबुधशिशुना । लालविजयेन कृतिना चित्कोषे प्रतिरिय मुक्ता ॥

क्र. १७१९ सिद्धहेमशब्दानुशासन अष्टमाध्याय बृहद्वृत्तिसह पत्र ६८। **भा.** सं.। **क.** हेमचद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १५५४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४

क्र. १७२० प्राकृतचंद्रिका पत्र २६। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **ले. सं. १६४१। पं.** ८। **लं. प.** १०×३॥

क्र. १७२१ पाणिनिव्याकरण अष्टाध्यायीसूत्रपाठ पत्र २५। **भा.** सं.। **ले. सं.** १७१६। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

अंत—

संवत् १७१६ वर्षे मास कार्त्तिकसुदि १०दिने सौम्यनामासवच्छरे इद लिपिकृत। पडितसभाभामिनीभालस्थलतिलकायमान पडितश्रीसुमतिविजयगणिविनेय गणिसुजाणविजयस्य निजवाचनार्थं लिखितं पावटीनगरमध्ये ॥

क्र. १७२२ लघुसिद्धांतकौमुदी पत्र ५४-११७। **भा.** स.। **क.** वरदराज। **ले. सं.** १८८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ७। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १७२३ मध्यमसिद्धांतकौमुदी पत्र ९५। भा. स.। क. वरदराज। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ८॥।×३॥।

क्र. १७२४ पाणिनिउणादिगणवृत्ति पत्र २०। भा. स.। ग्रं. १६५१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २५। लं. प. ८॥।×३॥।

क्र. १७२५ पाणिनिपरिभाषा पत्र २। भा. स.। क. व्याडि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १७२६ सिद्धांतचंद्रिका सुबोधिनीव्याख्यासह पत्र ११८। भा. स.। मू. क. रामाश्रमाचार्य। व्या. क. सदानद। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ९।×३॥।

क्र. १७२७ सिद्धांतचंद्रिकातत्त्वदीपिकाव्याख्या पूर्वार्द्ध पत्र ७५। भा. सं.। क. वोवेशकर शर्मा। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १७२८ सारस्वतव्याकरण पत्र ५४। भा स.। क. अनुभूतिस्वरूपाचार्य। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ९॥×३॥।

पोथी १०६ मी

क्र. १७२९ सिद्धांतकौमुदी पूर्वार्धे पत्र १३७। भा. स। क भट्टोजी दीक्षित। ले सं १८३१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प ९॥।×४

क्र. १७३० सिद्धांतकौमुदी तत्त्वबोधिनी टीका अपूर्ण पत्र ८५। भा स। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १७३१ सिद्धांतचंद्रिका पत्र ८७। भा स। स्थि. श्रेष्ठ। ले सं. १८६०। पं. १२। लं. प. ९॥।×४

क्र. १७३२ सिद्धांतचंद्रिका स्वरान्तनपुंसकलिंग पर्यंत पत्र १२। भा. स.। क रामाश्रमाचार्य। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प ९॥।×४।

क्र. १७३३ सिद्धांतचंद्रिका पत्र ३४। भा. स.। क रामाश्रमाचार्य। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १७३४ सारस्वतव्याकरण पत्र ६४। भा. स.। क अनुभूतिस्वरूपाचार्य। ले. सं. १८११। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०×३॥।

क्र. १७३५ सारस्वतव्याकरणटीका पत्र ११५। भा. स.। क. चद्रकीर्त्ति। स्थि. श्रेष्ठ। ले. सं. १७१६। पं. १७। लं. प. १०×३॥।

अंत—

संवद्रसांगमुनिभू१७१६समे अश्वयुजि बहुलेतरे पक्षे। दशम्यां कर्मवाट्यां शुचिवारे श्रीफलवर्द्धिकापुरि चतुर्मासी चक्रे॥ भट्टारकयगमयुगप्रधान भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीजिनचद्रसूरिशाखायां पाठकयथार्थपदधारक श्रीमदुपाध्याय श्री १०८ श्रीविनयप्रमोदगणिजी तदतेवासी सर्वविद्याप्रवीणगरियसीनिर्दूषणवाचनाचार्यवर्य श्री १०८ श्रीविनयलाभगणिजी तत्शिष्यमुख्यमनुष्यदक्षकृतिसत्तमश्रीसुमतिविमलजीगणि तच्छिष्य विद्वद्धौरेय श्रीसुमतिसुदरजी तदतेवासी सुमतिहेमगणिना व्यलीलिखित्॥ श्रीमच्छ्रीपार्श्वनाथजीसाहायात्॥ विजयदशमीदिने प्रथमप्रहरेऽलेखि।

क्र. १७३६ सारस्वतव्याकरण पत्र ८०। **भा.** स.। **क.** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **ले. सं.** १८५९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७३७ सारस्वतव्याकरण पत्र २१। **भा.** स.। **क** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७३८ सारस्वतव्याकरण अपूर्ण पत्र ११। **भा.** सं.। **क.** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९।।।×३।।।

पोथी १०७ मी

क्र. १७३९ सारस्वतवृत्ति अपूर्ण पत्र ७। **भा.** स.। **वृ. क.** चंद्रकीर्ति। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४० सारस्वतदीपिका पंचसंधि पत्र ३२। **भा.** स.। **स्थि** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४१ सारस्वतटिप्पनक पत्र १७। **भा.** स.। **टि. क.** क्षेमेन्द्र। **ले सं.** १६६२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४२ सारस्वतप्रथमश्लोकार्थ पत्र २–६। **भा.** सं। **स्थि.** मध्यम। **पं** १०। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४३ क्रियाचंद्रिका अपूर्ण पत्र ७३। **भा.** सं.। **स्थि** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४४ ऋजुप्राज्ञप्रक्रियावृत्ति पत्र ५। **भा** स। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** २४। **लं. प.** ९।।×४

क्र. १७४५ ऋजुप्राज्ञव्याकरण पत्र १०। **भा.** सं.। **क.** सहजकीर्ति। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प** ९।।×४

क्र. १७४६ शब्दशोभाव्याकरण टिप्पणीसह पत्र २८। **भा** सं.। **क.** नीलकंठ। **ले. सं.** १७३७। **स्थि** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** ९।।×४

अंत—

सवत् १७३७ वर्षे वर्षाऋतौ अश्विनिकृष्णत्रयोदश्यां भृगुवासरे शुभवेलायां पूर्णीचकार ॥ श्रीनवरंगखानस्य कोट्टमध्ये लिखित ॥ श्रीसागरचंद्रसुरिशाखायां पट्टानुक्रम श्रीश्रीश्रीरायचंद्रगणिवाचक प्रसरति यशः। श्रीवा०जयनिधान गणिशिष्य पण्डितोत्तम कमलसिंहगणिशिष्यश्री वा०कमलरत्नगणि तदनुशासनशिष्य वि.ज्ञानचंद्रमुनिशिष्य प.नयनानंद-मुनिपठनहेतवे ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीश्रीश्री भट्टारक श्रीजिनकुशलसूरि तत्प्रसादाल्लिखितमस्ति। श्रीखरतरगच्छीय ॥

क्र. १७४७ शतश्लोकीव्याकरण अपूर्ण पत्र ३। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४८ कविकल्पद्रुम टिप्पणीसह पत्र १६। **भा** सं.। **क.** वोपदेव। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १७४९ कविकल्पद्रुम पत्र २६। **भा.** स। **क.** वोपदेव। **ग्रं.** १०५४। **ले. सं.** १६७२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ८। **लं. प.** ९।।।×३।।।

अंत—

सवत् १६७२वष फाल्गुन सितैकादश्यामलेखि वा०जयनिधानेन श्रीलाभपुरे। शुभं भवतु ॥

क्र. १७५० कविकल्पद्रुम धातुपाठ पत्र ५। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** ९॥।×४

अंत—

संवत् १६ वैशाख वदि १४ दिने रविवारे श्रीमत्खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिविजयराज्ये श्रीहर्षप्रियोपाध्याय तत्शिष्यवाचनाचार्यवर्यधुर्यश्रीचारित्रोदयगणि तत्शिष्य प.समयकल्लोलेनाऽलेखि ॥ शुभ भवतु। कल्याणमस्तु ॥

क्र. १७५१ क्रियाकलाप पत्र ९। **भा.** स.। **क.** विद्यानंद। **ग्रं.** ३२५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १७५२ क्रियाकलाप पत्र ११। **भा.** स.। **क.** विद्यानद। **ले. सं.** १७५८। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १७५३ दुर्गसिंहलिंगानुशासन पत्र १२। **भा.** सं.। **क.** दुर्गसिंह। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १७५४ कातंत्रविभ्रम सटीक त्रिपाठ पत्र ७। **भा.** स.। **टी. क.** चारित्रसिंह। **र. सं.** १६३५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×३॥।

अंत—

बाणाश्विषडिंदु१६२५मिते सवति धवलक्कपुरवरे समेह। श्रीखरतरगणपुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणाम् ॥१॥
श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणा सकलसार्वभौमानाम्। पट्टे वरे विजयिषु श्रीमज्जिनचंद्रसूरिराजेषु ॥२॥ गीतिः।
वाचकमतिभद्रगणेः शिष्यस्तदुपास्त्यवाप्तपरमार्थः। चारित्रसिंहसाधुर्व्यधादवचूर्णिमिह सुगमाम् ॥३॥
यल्लिखित मतिमांद्यादनृतं प्रश्नोत्तरेऽत्र किंचिदपि। तत् सम्यक प्राज्ञवरैः शोध्य स्वपरोपकाराय ॥४॥
इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः सपूर्णा लिखनतः। श्रीमद्विक्रमद्रंगे ॥ शुभ भवतु ॥

क्र. १७५५ अव्यय सावचूरिक त्रिपाठ पत्र २। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १७५६ अनिट्कारिका पत्र ५। **भा.** स.। **ले. सं.** १७०१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १७५७ विभक्तिविचार अपूर्ण पत्र ७। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १७५८ वाक्यप्रकाश-औक्तिक सटीक त्रिपाठ पत्र ६। **भा.** स.। **टी. क.** उदयधर्मगणि। **र. सं.** १५०२। **ले. सं.** १६१२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २५। **लं. प.** १०×३॥।

अन्त—

सवत् १६ बारोत्तरा वर्षे। तपगच्छनायकश्रीविजयदानसूरीश्वरभट्टारक श्री ६ हीरविजय[सूरी]श्वर तत्शिष्य पंडितविशालसत्यगणि तत्शिष्यशिवहर्षगणि लिखित ॥

क्र. १७५९ गणरत्नमहोदधिवृत्ति पत्र ५०। **भा.** सं.। **क.** गोविंदसूरिशिष्य वर्द्धमान। **र सं.** ११९७। **ले. सं.** १७६९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प** ९॥।×४

अंत—

सवत् १७६९ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे अक्षयतृतीयातिथौ अर्कवारे ज्येष्ठानक्षत्रे श्रीमत्बृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनकुशलसूरिशाखायां श्रीक्षेमकीर्त्तिसतानीय उपाध्याय श्रीलक्ष्मीकीर्त्तिगणिदिग्गजानां शिष्यमुख्यवाचनाचार्यवर्यधुर्य श्रीसोमहर्षगणिमणीनामतेवासी वाचनाचार्यवर्यधुर्य श्री१०४श्रीलक्ष्मीसमुद्रगणिमतल्लिकानां शिष्यमुख्य दक्ष्य

पंडितप्रवर श्रीकनकप्रियगणिस्तच्छिष्य पंडितजससोमसुनिः लिपिश्चकार। श्रीजेसलमेरमध्ये ॥ श्रीगौडीपार्श्वनाथजी प्रसादात् ॥

क्र. १७६० गणरत्नमहोदधि स्वोपज्ञटीकासह अपूर्ण पत्र ५४। **भा.** सं.। **क.** गोविंदसूरिशिष्य वर्द्धमान। **र. सं.** ११९७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १७६१ वृत्तरत्नाकर टिप्पणीसह पत्र ५। **भा.** स.। **क.** भट्ट केदार। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×३॥

क्र. १७६२ वृत्तरत्नाकर पत्र ४। **भा.** स.। **क.** भट्ट केदार। **स्थि.** मध्यम। **प.** १३। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७६३ वृत्तरत्नाकर सटीक पत्र ३०। **भा.** सं.। **मू. क.** भट्ट केदार। **टी. क. पं.** सोमचंद्र। **र. सं.** १३२९। **ग्रं.** ११९९। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×४

अन्त—

श्रीविक्रमनृपकाले नदकरकृपीटयोनिशशि१३२९सख्ये। समजनि रजोत्सवदिने वृत्तिरिय मुग्धबोधकरी ॥४॥
सर्वाग्रं ग्रंथके रुद्रमितशतानि नवतियुक्तानि ११९०। अत्रानुष्टुप्गणनायोगाज्जातानि किंचिदधिकानि ॥५॥
सपूर्णा चेय पंडितसोमचंद्रकृता वृत्तरत्नाकरछंदोवृत्ति ससूत्रा समाप्ता ॥

क्र. १७६४ श्रुतबोध पत्र २। **भा.** स.। **क.** कालिदास कवि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७६५ भरतसंगीतसंयोग पत्र ५। **भा.** स.। **ग्रं.** १५१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १७६६ रूपदीप भाषाछंदोग्रंथ पत्र ५। **भा.** हिन्दी। **र. सं.** १७७६। **क.** जयकृष्ण। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७६७ रूपदीप भाषाछंदोग्रंथ पत्र ५। **भा.** हिन्दी। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ८॥×३॥

क्र. १७६८ काव्यानुशासनसूत्रपाठ पत्र ४। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं** १३। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७६९ हैमकाव्यानुशासनविवेक पत्र ११२। **भा.** स। **क** हेमचंद्राचार्य। **ग्रं.** ४०००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४

अंत—

संवत् १८७८ वर्षे शाके १७४३ रा प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ८तिथौ ज्ञवासरे श्रीबृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिशाखायां वाचनाचार्यमोक्ष वा.लालचंदजी तत्शिष्य वा.उदयचंदजी तत्सीष्यमोक्ष प. बखतमलजी तत्भ्रात्र प० प्र०कसरूपजी तत्सीष्य प.लखनमलमुनिना इदं पुस्तक भांडागारे स्थापित जेसलमेरुमध्ये ॥

क्र. १७७० कविशिक्षा काव्यकल्पलता वृत्तिसह पत्र ७१। **भा.** स.। **क.** अमरचंद्रसूरि। **ग्रं.** ३३५७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७७१ वाग्भटालंकार पत्र ६। **भा.** स.। **क.** वाग्भट। **ग्रं.** २८९। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १७७२ कुमारसंभवमहाकाव्य सप्तमसर्गपर्यंत सावचूरि पत्र २५। **भा.** सं.। **मू. क.** कवि कालिदास। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×३॥.। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १७७३ रघुवंशमहाकाव्य अपूर्ण पत्र २४। **भा.** स.। **क** कवि कालिदास। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×३॥

क. १७७४ रघुवंशमहाकाव्य–सर्ग नवथी बार अपूर्ण पत्र १७। **भा.** स.। **क.** कविकालिदास। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×४

पोथी १०८ मी

क. १७७५ अभिधानचिंतामणिनाममाला स्वोपज्ञटीकासह पत्र १७०। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य स्वोपज्ञ। **ग्रं.** १००००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×३॥।

प्रतिनी किनारी उदरे करडेली छे।

क. १७७६ अभिधानचिंतामणिनाममाला स्वोपज्ञटीकासह पत्र २४७। **भा.** सं.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **ले. सं.** १६५०। **ग्रं.** १००००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क. १७७७ अमरकोश प्रथमकांड सटीक त्रिपाठ पत्र १११। **भा.** स.। **मू. क.** अमरसिंह। **टी. क.** भावुजी दीक्षित। **ले. सं** १८०२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प** ९।×४

क. १७७८ अमरकोश सटीक द्वितीयकांड त्रिपाठ पत्र २८९। **भा.** स.। **मू. क.** अमरसिंह। **टी. क.** भावुजी दीक्षित। **ले. सं.** १८०३। **स्थि** मध्यम। **पं.** १३। **लं प.** ९।×३॥।

क. १७७९ अमरकोश तृतीयकांड सटीक त्रिपाठ पत्र ११६। **भा.** स.। **मू. क.** अमरसिंह। **टी. क.** भावोजी दीक्षित। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं प.** ९।×३॥।

पोथी १०९ मी

क. १७८० अभिधानचिंतामणिनाममाला अपूर्ण पत्र ९। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४।

क. १७८१ अभिधानचिंतामणिनाममाला अपूर्ण पत्र १०–३१। **भा** स.। **क** हेमचद्राचार्य। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×४।

क. १७८२ अभिधानचिंतामणीनाममाला अपूर्ण पत्र ५–१९। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ९॥।×४

क. १७८३ अभिधानचिंतामणीनाममाला स्वोपज्ञवृत्तिसह अपूर्ण पत्र ५४। **भा.** स.। **क.** हेमचद्राचार्य स्वोपज्ञ। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×४

क. १७८४ अमरकोश प्रथमकांड पत्र ४२। **भा.** स.। **क.** अमरसिंह। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ४। **लं. प.** ९॥।×४

क. १७८५ रघुवंशमहाकाव्यटीका पत्र १२७। **भा** स.। **क.** मल्लिनाथ। **ले. सं.** १७१८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४

क. १७८६ न्यायरत्नप्रकरण शशधरसूत्र पत्र ३९। **भा.** स.। **क.** शशधर। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प** १०×३॥।। प्रतिनी किनारी उदरे करडेली छे।

क. १७८७ न्यायरत्नप्रकरण शशधरसूत्र टिप्पणीसह पत्र ४३। **भा.** स.। **क.** शशधर। **ले. सं.** १८१६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०×३॥।

क. १७८८ तर्कपरिभाषा पत्र १४। **भा.** स.। **क.** केशवमिश्र। **ले. सं.** १५५२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४

क. १७८९ तर्कपरिभाषा पत्र २०। **भा.** स.। **क.** केशवमिश्र। **ले. सं.** १६५९। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×३॥।। प्रति चारे बाजुथी उधेईए खाधेली छे।

क्र. १७९० तर्कपरिभाषा अपूर्ण पत्र २७। **भा.** सं.। **क.** केशवमिश्र। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९।।×३।।

क्र. १७९१ तर्कभाषाप्रकाशवृत्ति पत्र ३०। **भा.** स.। **क.** गोवर्धन। **ले. सं.** १६९९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।×३।।

क्र. १७९२ न्यायसार न्यायतात्पर्यदीपिकाटीका पत्र ५२। **भा.** स.। **क.** जयसिंहसूरि। **ग्रं.** ३०००। **ले. सं.** १६३३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९।।×३।।

अंत—

श्रीकृष्णर्षिमहेच्छगच्छमुकुटश्रीमन्महेंद्रप्रभोः शिष्यः श्रीजयसिंहसूरिरखिलप्रामाणिकग्रामणीः।

एतां निर्मितवान् परोपकृतये श्रीन्यायसाराश्रितां स्पष्टार्थां विवृतिं कृपापरवशैः सैषा विशोध्या बुधैः ॥१॥

टीकेयं न्यायसारस्य न्यायतात्पर्यदीपिका। मनीषिणा मनःसौधे सर्वदापि प्रकाशताम् ॥२॥

इतिश्रीकृष्ण[र्षिगच्छ]मडनश्रीमन्महेंद्रसूरिशिष्यश्रीजयसिंहसूरिविरचितायां तात्पर्यदीपिकाभिधानायां श्रीन्यायसारटीकायामागमपरिच्छेदस्तार्तीयीकः समाप्तः॥०॥

प्रथाग्र ३००० ॥०॥ सवत् १६३३ वर्षे फागुण सुदि ६ दिने आदित्यवारे ॥०॥

क्र. १७९३ सप्तपदार्थी पत्र ४। **भा.** स.। **क.** शिवादित्य मिश्र। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९।।×४

क्र. १७९४ तर्कसंग्रहदीपिका पत्र १२। **भा.** सं.। **क.** अन्नभट्ट। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।×३।।

क्र. १७९५ मंगलवादप्रश्नपद्धति पत्र ३। **भा.** स.। **क.** समयसुदरजी। **ले. सं.** १६५२। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** ९।।×३।।.

ग्रथकर्त्ताए स्वहस्ते लखेली प्रति। प्रतिनी किनारी खवाएली छे।

अंत—

श्रीमंगलवादसुखावबोधप्रश्नोत्तरपद्धतिः समाप्ता ॥ कृता लिखिता च सवत् १६५२ वर्षे आषाढ सुदि १० दिने श्रीइलादुर्गे चतुर्मासीस्थितेन श्रीयुगप्रधानश्री४जिनचद्रसूरिशिष्यमुख्य पंडितसकलचद्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुंदरगणिना ॥ प. हर्षनदनमुनिकृते शुभ भवतु ॥

क्र. १७९६ आलापकपद्धति अपूर्ण पत्र ७। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ९।।×३।।

क्र. १७९७ षड्दर्शनसमुच्चय पत्र २-५। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९।।×३।।

क्र. १७९८ षड्दर्शनसमुच्चय सटीक पत्र २७। **भा.** स.। **मू. क.** हरिभद्रसूरि। **वृ. क.** विद्यातिलक। **ग्रं.** १२५२। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १९। **लं. प.** ९।।×३।।.। प्रति प्राणीथी भीजाएली छे।

अन्त—

श्रीरुद्रपल्लीयगणे गणेयः श्रीचंद्रसूरिर्गुणराशिरासीत्।
तद्वंशपुरिंदुप्रभकीर्त्तिभूरिर्जीयाच्चिरं श्रीविमलेंद्रसूरिः ॥१॥

नदन्तु श्रीगुरवः श्रीगुणशेखरसुनीश्वरास्तदनु। श्रीसंघतिलकसूरिस्तत्पट्टे जयति चिरमधुना ॥२॥

तत्पदपयोजभृगो विद्यातिलको मुनिर्जिनस्मृतये। षड्दर्शनीयसूत्रे चक्रे विवृतिं समासेन ॥३॥

यदनुचितमौच्यताऽत्र प्रमादतो। मंदमतिविमर्शाच्च। हृदय विधाय मधुर तत्सुजनाः शोधयतु मयि ॥४॥

वैक्रमे ऽब्दे......नदविश्वदेवप्रमाणिते। आदित्यवर्द्धनपुरे शास्त्रमेतत् समर्थितम् ॥५॥
खेलतोऽमू राजहंसौ यावद्विश्वसमस्तटे। तावद् बुधैर्वाच्यमान पुस्तक नदतादिदम् ॥६॥
सप्ताशीतिः सूत्र[मान] टीकामान विनिश्चितम्। सहस्रमेक द्विशती द्वापचाशदनुष्टुभाम् ॥७॥
अकतोऽपि प्रथमान १२५२ ॥०॥ श्रीरस्तु ॥०॥

क. १७९९ प्रामाण्यवाद पत्र २४। **भा.** स.। **क.** हरिराम तर्कवागीश। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १८०० वादस्थल अपूर्ण पत्र २। **भा. स.**। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** ९।।×३।।।

क. १८०१ शरोमणीटीका पत्र ६३। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ९।।×३।।।

क. १८०२ न्यायग्रंथ पत्र ७९। **भा.** स। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।×३।।।

आदि—

अनुमितिलक्षणैककार्यानुकूलत्वसगत्या पक्षधर्मतां निरूपयितुमाह—व्याप्तीति। सदिग्धेति। यत्र साध्यस्य यादृशसबंधावगाहिनिर्णयनिवर्त्यो सशयः स तत्र तादृशसबधेन साध्यानुमितौ पक्षतेत्यर्थः, तेन न पक्षसाध्यविशेष्यक-संशयाननुगमः, न वा सबधांतरेण संदेहेऽपि निर्णीतसबंधेन पक्षत्वम्, न वा तम प्रभृतिषु समवायेनाकाशादिसाधने तद्वैकल्य सशययोग्यतां निरस्यति। नापीति साधकबाधकमाने सिद्धिबाधौ केवलान्वयिनिजपक्षनिष्ठाभावप्रतियोगित्व-धीरेव सुलभो बाधः।

क. १८०३ न्यायग्रंथ टीका अपूर्ण पत्र ३५। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **प.** ९। **लं. प.** ९।।×३।।।.। पत्र बीजु नथी।

आदि—

श्रीगणेशाय नमः॥ अनुमाननिरूप्यन्यायतदवयवनिरूपण प्रतिजानीते–मूले तच्चेति, तन्निरुक्तमनुमान परार्थ विचारदशाया मध्यस्थस्य विवादविषयसाध्यनिश्चयरूपप्रयोजनसाधन॥ न्यायसाध्यमिति न्यायप्रयोज्यमित्यर्थः॥ वादि-प्रयुक्तन्यायजन्यशाब्दबोधेन मध्यस्थस्य लिंगपरामर्शरूपानुमानजननादिति भावः॥

पोथी ११० मी

क. १८०४ सारस्वतव्याकरणदीपिकाटीका पत्र २१२। **भा.** स.। **क.** चद्रकीर्त्ति। **र सं** १७७४। **ले सं.** १८२२। **स्थि.** मध्यम। **पं** १३। **लं. प.** १०।।×४।

क. १८०५ लोंकानी हुंडी बीजकसह पत्र ३५। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ८। **लं. प.** १०।×४।

क. १८०६ शत्रुंजयकल्प सस्तबक तथा पडिलेहणाकुलक पत्र ४। **भा.** प्रा. गू.। **प. क.** विनयविमल। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प** १०×४।

क. १८०७ सिद्धांतचंद्रिका स्वरान्तनपुंसकपर्यंत पत्र ३२। **भा.** स.। **क.** रामाश्रम। **पं.** ७। **लं. प.** १०।×४।

क. १८०८ व्याकरण पत्र २६। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ७। **लं. प.** १०।×४।

क. १८०९ अनिट्कारिका सटीक त्रिपाठ पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ८। **लं. प.** १०।×४।।

क. १८१० हारितोत्तर वैद्यकग्रंथ अपूर्ण पत्र ६७। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ९। **लं. प.** १०।×४।

क. १८११ अष्टांगहृदयसंहिता उत्तरकल्प त्रुटक पत्र १०३। **भा.** स.। **क.** वाग्भट। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** १०।।।×४।

क्र. १८१२ निबंधसंग्रह वैद्यक सटीक अपूर्ण पत्र ७२। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. १८१३ शार्ङ्गधरसंहिता पत्र ६ तथा ५९-९८। **भा.** स.। **क.** शार्ङ्गधर। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १०॥×३।॥

क्र. १८१४ अष्टांगहृदयसंहिता पत्र ११२। **भा.** स.। **क.** वाग्भट। **ले. सं.** १७१४। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ७। **लं. प.** १०।×४॥.। अस्तव्यस्त।

पोथी १११ मी

क्र. १८१५ रामविनोद-वैद्यक पत्र ७६। **भा** गू.। **क.** रामचद्र। **र. सं.** १६१०। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४॥

क्र. १८१६ अनेकार्थतिलक पत्र ३४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. १८१७ योगचिंतामणी सस्तबक अपूण पत्र ९१। **भा.** स. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १८१८ बालतंत्र-वैद्यक पत्र १२। **भा.** स.। **क.** वैद्यरतन। **ले. सं.** १८८६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९।॥×४।

क्र. १८१९ सन्निपातकलिका वैद्यक पत्र १४। **भा** स.। **क.** अश्विनीकुमार। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ६। **लं. प.** ९।॥×४।

क्र. १८२० सूत्रस्थान-वैद्यकग्रंथ पत्र ३-३२। **भा** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** १०।×४।

क्र. १८२१ सुश्रुतसूत्रस्थान पत्र २४। **भा.** स.। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प** १०×४

क्र. १८२२ योगसारसमुच्चय सस्तबक-वैद्यक पत्र ३९-४८। **भा.** सं. गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** १०×४।

क्र १८२३ न्यायग्रंथटीका पत्र ९१। **भा** स.। **ले. सं.** १६६२। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** १०×४

आदि—

श्रीगणेशाय नमः॥ मिलदिति तां विधुमवधिनीं कलां नुमः स्तुमः। किंभूतां विश्वबीजस्य महादेवस्य अंकुरसमां अकुरसाम्यमाह। पुरद्विषः। मूर्ध्नि स्थिता अव्ययस्याग्यकुरबीजमस्तकस्थायित्वात्। मिलती या मदाकिनी सैव माली-दाम यस्याः सा ताम्। एता जलसान्निध्य अकुरसाम्य भवति। यथा बीज अकुरसहभूत म करोति। तथा भगवानपि यत्कलासहभूत विश्व निर्वर्त्तयति तां स्तुम इति भाव॥

अन्त—

सवत् १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्त्तमाने उत्तरायनगते श्रीसुर्ये शिशिरऋतौ सन्मांगल्यप्रदौ अद्येह माघमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदायां तिथौ सोमवासरे अद्य भृगुकच्छवास्तव्य मेदपाठज्ञातीय अध्यारू गोव्यदसुत रूपजी लिखित॥ लेखकपाठकयोः।

क्र. १८२४ लीलावतीगणित पत्र ५१। **भा.** स.। **क.** भास्कराचार्य। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १०। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. १८२५ अभिधानचिंतामणि सटीक बृहद्वृत्ति पत्र २०५+८९=२९४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।॥×४।

क्र. १८२६ सारस्वतव्याकरणसिद्धांतरत्नावलीटीका अपूर्ण पत्र ८४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १९। **लं. प.** ९।॥×४॥

पोथी ११२ मी

क्र. १८२७ शीघ्रबोधज्योतिष पत्र १३। **भा.** सं.। **क.** काशिनाथ। **ले. सं.** १८४३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८२८ रत्नदीपज्योतिष पत्र ११। **भा.** सं.। **क.** गणपति। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८२९ फलकल्पलता पत्र १२। **भा.** सं.। **ले. सं.** १८४४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८३० बालावबोधसारसंग्रहज्योतिष पत्र १०। **भा.** स.। **क.** मुंजादित्य। **ग्रं.** ५००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८३१ प्रश्नप्रदीप पत्र ८। **भा.** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८३२ प्रश्नप्रदीप पत्र ५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८३३ महादेवी दीपिकावृत्ति पत्र २७। **भा.** स.। **क.** धनराजगणि। **ग्रं.** १५००। **र. सं.** १६९२। **ले. सं.** १८२९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** ९॥।×४

आदि—

श्रीनाभेयजिन नत्वा श्रीगुरोः पादपुष्कर। वाग्देवीं तपनादींश्च हेरबं भुवनेश्वरीम् ॥१॥

महादेवोक्तसारिण्याः प्रहाणां विदधाम्यहम्। वृत्तिं शास्त्रानुसारेण दैवज्ञानां सुखाप्तये ॥२॥

अन्त—

वर्षे नेत्रनवांगभूपरिमिते१६९२ ज्येष्ठस्य पक्षे सितेऽष्टम्यां सद्गुणपुक्ष्यमत्ररयुते पद्मावतीपत्तने।

राजाऽस्त्युत्कटवैरिनागदमनः राष्ट्रोढवशोद्भवः श्रीमान् श्रीगजसिंहभूपतिवरोऽस्मिन्न् श्रीमरोर्मडले ॥१॥

जैने शासन एवमंचलगणे सत्सज्जनैस्सस्तुते कल्याणोदधिसूरयः शुभकरा नदतु भूमडले।

तत्सेवाकरभोजराजगणयो विद्वद्वरा वाचकाः आसन् सर्वसुधीमन.कमलिनीसबोधने भानवः ॥२॥

खेटानां हि पुराकृतां बुधमहादेवेन यत् सारणी तस्या दैवविदां सुखार्थजननीं वृत्तिं च सविस्तरां।

तच्छिष्यो धनराज एवमकरोद् वर्षेण बह्वादरैः बहूवर्थैः सहिता च पडितपदाप्तप्रसत्तेर्गुरोः ॥३॥

बाणेलाशतसंख्यका पुनरनुष्टुपूछदसा तन्मितिर्यावम्मेरुमहीध्रुवाः स्थिरतराः खे पुष्पदंतौ स्थिरौ ॥

तावत्तिष्ठतु दीपिकेति सतत नाम्नी हि वृत्तिस्त्वियं तज्ज्ञानां च सुखाप्तये सुमतिनां धार्या गुरोर्भावतः ॥४॥

इत्यांचलिकवाचनाचार्यश्रीभुवनराजगणीद्राणां शिष्यपडितश्रीधनराजगणिकृता महादेवीदीपिकावृत्तिः सपूर्णा ॥ इति सपूर्णम् ॥ सवत १८२९ वर्षे शाके १६९४ प्रवर्त्तमाने श्रावण सुदि ३ रविवारे श्रीबालोतरानगरे प.सुमतिधर्म-लिखितम् ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभ भवतु दिने दिने ॥

क्र. १८३४ रुद्रयामलज्योतिष पत्र ४। **भा.** स.। **ले. सं.** १८२९। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८३५ रुद्रयामलज्योतिष पत्र ४। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८३६ भुवनदीपक पत्र १८। **भा.** सं.। **क.** पद्मप्रभसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ६। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८३७ यंत्रचिंतामणी सटीक पत्र ८। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं प.** ९।×३॥

क्र. १८३८ ताजिकसार ज्योतिष पत्र ३। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८३९ ताजिकसार ज्योतिष पत्र २४। **भा.** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८४० ताजिकसारकारिकाटीका पत्र ?। **भा.** सं.। **क.** सुमतिहर्ष अपरनाम सामंत। **र. सं.** १६७७। **ले. सं.** १८१८। **ग्रं.** ११०१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५।

आदि—

> श्रीसूर्यचंद्रारबुधेन्द्रपूज्यान् भृगवार्किमुख्यान् प्रणिपत्य खेटान्।
> हन्मानसस्वर्णसुबोधपद्मप्रबोधने तिम्मकर गुरु च ॥१॥
> श्रीशारदीयं शारदिन्दुशुभ्रं तेजौगतध्वान्त इवैकदीप।
> निधाय चित्ते विवृणोमि ताजिकसारेऽत्र तन्त्राभ्युगमान् पदार्थान् ॥२॥

अन्त—

> सुबोधा श्रीपती महादेवी ब्रह्मार्कपर्वणां। एतस्या वृत्तयो ज्ञेयाः स्वसारो हृदयंगमाः ॥१॥
> वर्षे शैलहयांगभूपरिमिते १६७७ मासे तथा फाल्गुने, पक्षे शुभ्रतरे तिथौ दशमितें श्रीखेरवापूर्वके।
> राज्ये श्रीमति विष्णुदासनृपतेर्वैरीभकृन्दे हरौ वृत्ति श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया सामतनामाऽकरोत् ॥२॥
> गुरुबाधवरत्नाहृवदीर्घायुर्वर्द्धनराजयो.। निरतरामहादेषा रचिता तमुतान्विर॥३॥।

इत्यांचलिकमहोपाध्यायश्रीअभयराजगणिकुंजर शिष्योपाध्यायश्रीहर्षरत्नगणिशार्दूलशिष्य पंडितवादिराजश्री पं. श्रीसुमतिहर्षगणिना कृता ताजिकसारटीका कारिकानाम्नी सपूर्णा ॥१॥ ग्र. ११०१॥ सवत् १८१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सोमवासरे। श्रीसितपत्रपुरे लिखिता प्रतिरिय प सुमतिधर्मेण स्ववाचनार्थं। श्रीरस्तु।

क्र. १८४१ ताजिकबालावबोध ज्योतिष पत्र ३। **भा** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८४२ ताजिकभूषण ज्योतिष अपूर्ण पत्र १०। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८४३ रत्नमाला ज्योतिष बालबोधिनी टीका पत्र ४२। **भा** स.। **टी. क.** महादेव। **ले. सं.** १७६४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** ९॥।×४

अंत—

श्रीश्रीपतिविरचितायां ज्योतिषरत्नमालायां पंडितमहादेवकृतटीकायां स्वरप्रतिष्ठायां विंशतितमं प्रकरणं समाप्तम् ॥ श्रीनमः ॥

शश्वद्वाक्यप्रमाणप्रवणपटुमतेर्वेदवेदांगवेत्तुः सूनुः श्रीलूणिगस्याच्युतचरणनतिः श्रीमहादेवनामा।

तत्प्रोक्ते रत्नमालारुचिरविवरणे सज्जनांभोजभानौ स्वर्भानू दुर्जनदोः प्रकरणमगमत्......प्रदिष्टम् ॥२०॥

संवत्वारिधिरसमुनिहृदुप्रमितिवर्षे १७६४ कार्त्तिकशुक्लैकादश्यां तिथौ रविवारे लिखित प.मानसिंघगणिशिष्य जीवणवाचनार्थम् ॥

क्र. १८४४ विवाहवृंदावन ज्योतिषशास्त्र सटीक पत्र ३३। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८४५ षट्पंचाशिका ज्योतिष पत्र ९। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८४६ भावचिंतामणि षष्ठपटल-ज्योतिष पत्र ३। **भा.** सं.। **ले. सं.** १८४८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८४७ आरंभसिद्धि-ज्योतिष द्वितीयविमर्श पर्यंत पत्र ६। **भा.** सं.। **क.** उदयप्रभसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८४८ लघुजातक ज्योतिष पत्र ९। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **क.** वराहमिहिर। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ९। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८४९ लघुजातक सटीक-ज्योतिष पत्र ३३। **भा.** सं.। **टी. क.** उत्पलभट्ट। **मू. क.** वराहमिहिर। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८५० लघुजातक सटीक-ज्योतिष पत्र ३१। **भा.** स.। **मू. क.** वराहमिहिर। **टी. क.** उत्पलभट्ट। **ले. सं.** १८४५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८५१ पद्मकोशज्योतिष पत्र ५। **भा.** स.। **क.** गोवर्धन। **ले. सं.** १८०९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८५२ अर्घकांड-ज्योतिष पत्र १। **भा.** सं.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८५३ पद्मकोश-ज्योतिष पत्र ५। **भा** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **क.** गोवर्धन। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८५४ पद्मकोश-ज्योतिष पत्र ६। **भा.** स.। **क.** गोवर्धन। **ले. सं.** १८४६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८५५ प्रश्नफलादेश ज्योतिष पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८५६ ज्योतिषप्रकीर्णकविचार पत्र ५। **भा.** स। **स्थि.** मध्यम। **पं** १५। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८५७ षष्टिसंवत्सर-ज्योतिष किंचिदपूर्ण. पत्र २। **भा.** स। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८५८ षष्टिसंवत्सर-ज्योतिष पत्र ५। **भा** स.। **स्थि** मध्यम। **पं.** २२। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८५९ योगरत्नावली ज्योतिष पत्र ३७-६८। **भा.** स। **क.** श्रीकंठशिव पंडित। **ले. सं** १६५८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×३॥।

अंत—

संवत् १६५८ वर्षे चैत्र शुदि पूर्णिमायां तिथौ बृहस्पतवारे श्रीसरस्वतीपत्तने श्रीबृहद्गच्छे श्रीश्रीश्रीपुण्यप्रभसूरि तत्पट्टे भट्टारकश्रीश्रीश्रीशीलदेवसूरि तच्छिष्य मांडणेन व्यलेखि ॥१॥

क्र. १८६० लघुसारावलीगत अरिष्टाध्याय ज्योतिष पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८६१ ग्रहभावप्रकाशज्योतिष अपूर्ण. पत्र ८। **भा.** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८६२ ग्रहभावप्रकाशज्योतिष सस्तबक पत्र ८। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८६३ जातकचंद्रिका ज्योतिष अपूर्ण. पत्र ३। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८६४ त्रिपुरबन्धमुहूर्त्त ज्योतिष पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. १८६५ **ग्रहसिद्धिज्योतिष** पत्र २। **भा.** स.। **क.** महादेव दैवज्ञ। **ले. सं.** १८१७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८६६ **चंद्रार्कीज्योतिष** पत्र १। **भा.** स.। **क.** दिनकर। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥।×४

अंत—

बारेजाख्ये वसन् ग्रामे चक्रे दिनकरो मुदा। जातः कुसिकसे गोत्रे मौढज्ञातिसमुद्भवः ॥२६॥
इति चंद्रार्की सम्पूर्णा ॥

क्र. १८६७ **चंद्रार्कीज्योतिष** पत्र २। **भा.** स.। **क.** दिनकर। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८६८ **भवनविचार ज्योतिष** पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** ९।×४॥

क्र. १८६९ **जन्मपत्रीविधानपद्धति** अपूर्ण. पत्र ६१। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८७० **जगद्भूषणसारणी** पत्र ३४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. १८७१ **कामधेनुपंचांगसारणी** पत्र १८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** ९॥×३॥।

पोथी ११३ मी

क्र. १८७२ **जातककर्मपद्धतिउदाहरण** पत्र ४२। **भा.** स। **क.** कृष्ण दैवज्ञ। **ले. सं** १७६२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८७३ **समाविचार (सुभिक्षदुर्भिक्षविचार)** पत्र १८। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८७४ **कर्णकुतूहलज्योतिष** पत्र १२। **भा** स.। **क** भास्कराचार्य। **ले. सं.** १६९३। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प** ९॥।×३॥।

क्र. १८७५ **नारचंद्रज्योतिष** अपूर्ण पत्र ५। **भा.** सं.। **क.** नरचंद्राचार्य। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४

क्र. १८७६ **भुवनदीपक सस्तबक** पत्र ९। **भा.** स. गू.। **क.** पद्मप्रभसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४

क्र. १८७७ **आरंभसिद्धि पंचम विमर्श पर्यंत** पत्र ११। **भा.** स.। **क.** उदयप्रभसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८७८ **ताजिकसारसूत्रज्योतिष** पत्र २५। **भा.** स.। **क.** हरिभद्र। **ले. सं.** १८४४। **ग्रं.** १३९४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८७९ **प्रश्नमनोरमाविद्याज्योतिष** पत्र ६। **भा.** स.। **क.** गर्गाचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. १८८० **पंचांगानयनविधिज्योतिष** पत्र २। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. १८८१ **भुवनदीपक सस्तबक** पत्र ६-१३। **भा.** स.। **क.** पद्मप्रभसूरि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८८२ **षष्टिसंवत्सर** पत्र २०। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८८३ **श्रीपतिपद्धति** अपूर्ण पत्र ३६। **भा.** सं। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. १८८४ दशाकोष्ठकज्योतिष पत्र ५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ९॥×४

क्र. १८८५ उपदशायंत्र ज्योतिष पत्र २-६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २५। लं. प. ९।×३॥।

क्र. १८८६ सारणी ज्योतिष पत्र ११। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ९॥।×४

क्र. १८८७ कामधेनुकोष्ठक ज्योतिष पत्र ७। स्थि. श्रेष्ठ। पं २२। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १८८८ दशाकोष्ठक ज्योतिष पत्र ५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥।×४

क्र. १८८९ महादेवीकोष्ठक ज्योतिष पत्र ९१। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २६। लं. प. ९॥×४

क्र. १८९० ज्योतिषसारणी पत्र ७६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. ९॥।×४

क्र. १८९१ शीघ्रबोधज्योतिष पत्र २१। भा. स.। क. काशीनाथ भट्ट। ले. सं. १८६१। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १८९२ भुवनदीपकज्योतिष सटीक पत्र २४। भा. स.। क. पद्मप्रभसूरि। ले. सं. १६७८। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १८९३ खरखंडांज्योतिषसारणी पत्र २। स्थि. मध्यम। पं १९। लं. प. ९॥।×४।

क्र. १८९४ रत्नमाला बालावबोध सह पत्र ४८-९०। भा. स. गू.। मू.क. श्रीपति। ले. सं १८०४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ९॥×४।

क्र. १८९५ वैद्यजीवन पत्र ३७। भा. स.। क. लोलिंबराज। ले सं. १८५०। स्थि. श्रेष्ठ पं. ९। लं. प. ९॥×३॥।

क्र १८९६ योगचिंतामणी अपूर्ण पत्र ८२। भा. स। स्थि. जीर्ण। पं ९। लं. प. ९।×३॥।

पोथी ११४ मी

क्र. १८९७ अनेकार्थनाममालाभाषा पत्र ५। भा. हिंदी। क नंददास। स्थि मध्यम। पं. १३। लं. प. ८॥।×४॥।

क्र. १८९८ विश्वशंभुपकाक्षरनाममाला पत्र ५। भा. स। क विश्वशंकर। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ८॥।×४।

क्र. १८९९ वाग्भटालंकारवृत्ति पत्र २४। भा. स.। वृ. क जिनवर्धनसूरि। ले सं. १८०७। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ८॥।×४।

क्र. १९०० वाग्भटालंकार पत्र ९। भा स.। क. वाग्भट। स्थि. मध्यम। पं १६। लं. प. ८॥।×४।

क्र. १९०१ विद्वन्मनोरंजनीप्रक्रिया पत्र ६३। भा. स.। क शंकरदत्त। ले. सं. १८२०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ८॥।×४।

क्र. १९०२ तर्कभाषा अपूर्ण पत्र १४। भा. स.। क. केशव। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. ८॥।×३॥।

क्र. १९०३ निषेकोदाहरणज्योतिष पत्र २। भा. स.। ले. सं १८३९। स्थि. मध्यम। पं. २३। लं. प. ८॥।×४।

क्र. १९०४ श्रावकअतिचार पत्र ४। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं प. ८॥।×४।

क्र. १९०५ षड्दर्शनसमुच्चय बालावबोधसह पत्र १२। भा. स. गू.। स्थि. मध्यम। पं.१३। लं. प. ८॥×४।

क्र. १९०६ विनयचंद्रकृत चोविशी पत्र ६। **भा.** गू। **क** विनयचन्द्र। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ८।।।×४।

क्र. १९०७ भाषाभूषण पत्र ११। **भा.** हिन्दी। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ८।।।×४।

क्र. १९०८ ज्योतिषसारणी पत्र ९। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** ८।×४।

क्र. १९०९ धातुरूपावली पत्र ६७। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ८।।×४।।

क्र. १९१० कोकसवैयाछप्पा पत्र १८। **भा.** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ८।×४।

क्र. १९११ चिहुंगतिवेल पत्र ७। **भा.** गू.। **क.** जिनआनद। **ले. सं.** १६६६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ८।।×४

क्र. १९१२ ग्रहलाघवसारणी पत्र २७। **स्थि** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** ८।।×४

क्र. १९१३ घीकोटीग्रंथ्यादि पत्र ४। **भा.** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ८।।×४

क्र. १९१४ दंडकप्रकरण-विचारषट्त्रिंशिका स्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र ७। **भा.** प्रा. स.। **क.** गजसार। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ८।।×४।

क्र. १९१५ रामकृष्णचरित्ररास पत्र ८७। **भा.** गू.। **क** लावण्यकीर्ति। **र सं.** १६७७। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं प.** ८।।×४।

क्र. १९१६ भगवद्गीता दोहासह भाषाटीका पत्र २६२। **भा.**गू.। **ले. सं.**१८०९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १०। **लं. प** ८।×४

क्र. १९१७ षष्टिशतप्रकरण पत्र ११। **भा.** प्रा.। **क** नेमिचद भडारी। **स्थि** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ८×४

क्र. १९१८ सौंदर्यलहरी पत्र १५। **भा** स.। **क.** शकराचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ७।।।×३।।।

क्र. १९१९ मृगांकलेखाचरित्रचोपाई पत्र २८। **भा.** गू.। **क.** जिनहर्ष। **र. सं.** १७४८। **ले सं.** १७८४। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १९। **लं. प** ७।।।×३।।।

क्र. १९२० सुभाषितसंग्रह पत्र २९-३८। **भा.** मिश्र। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प.** ७।।।×३।।।

पोथी ११५ मी

क्र. १९२१ मेघदूतमहाकाव्य पत्र ७। **भा.** स। **क.** कवि कालिदास। **स्थि** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १९२२ सूक्तावली अपूर्ण पत्र १३। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १९२३ सुभाषित पत्र २। **भा.** स.। **का.** ४१। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १९२४ सुभाषितप्रास्ताविकश्लोक पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९।।।×४

क्र. १९२५ अतिचारनी आठगाथा सटीक त्रिपाठ पत्र २। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २१। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १९२६ रसरत्नाकरवैद्यक पत्र ९। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क्र. १९२७ रूपमंजरी पत्र ६। **भा.** स.। **क.** रूपचद्र। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. १९२८ वैद्यजीवन टिप्पणीसह पत्र २२। **भा.** स.। **क.** लोलिंबराज। **ले. सं.** १७६३। **ग्रं.** ४९८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९॥×३।॥

क १९२९ धनंजयनाममाला पत्र २७। **भा.** स.। **क.** धनजय। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ९। **लं. प.** ९॥×३॥

क. १९३० गणितनाममालाज्योतिष पत्र २। **भा.** स.। **क** श्रीपतिसुत। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** २०। **लं. प.** ९॥×३॥

क. १९३१ भट्टिकाव्य पत्र ६१। **भा.** सं.। **क.** भट्टिकवि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १०। **लं. प.** ९॥×३॥

क १९३२ भर्तृहरित्रिशती पत्र ३४। **भा** स.। **क** भर्तृहरि। **ले सं.** १८७८। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ८। **लं प.** ९॥×३॥

क. १९३३ कालिकाचार्यकथानक गद्य पत्र ३०। **भा.** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ६। **लं. प.** ९॥×३॥

क. १९३४ कालिकाचार्यकथानक अपूर्ण पत्र ५। **भा.** गू। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥×३॥

क. १९३५ दिव्यतत्त्व पत्र २४। **भा** सं.। **क** रघुनदन भट्टाचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** १२। **लं. प.** ९×४

क. १९३६ ग्रहलाघवज्योतिष पत्र ३७। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ८॥×४

क. १९३७ नारचंद्रज्योतिष पत्र १९। **भा.** स.। **क.** नरचद्राचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ८॥×३॥

क. १९३८ ज्योतिषसारणी पत्र १२४। **भा** स.। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं** १५। **लं प.** ९×३॥

क. १९३९ व्याकरण पत्र २९। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं** १२। **लं. प.** ९।×४।

क. १९४० किरातार्जुनीयमहाकाव्य पत्र ७४। **भा.** स.। **क.** भारवि। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ९।×४।.। प्रथम पत्र नथी।

क. १९४१ रघुवंशमहाकाव्य अपूर्ण पत्र ६। **भा.** स.। **क.** कालिदास। **स्थि** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ९।×३॥

क. १९४२ प्रक्रियाकौमुदी अपूर्ण पत्र ७४। **भा.** स.। **क.** रामचद्राचार्य। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.**१३। **लं. प.** ९।×३॥

क. १९४३ सुभाषितश्लोकसंग्रह पत्र १५। **भा.** स.। **स्थि** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९×३॥.। पत्र ८ मु नथी।

क. १९४४ अलंकारमाला पत्र २३। **भा.** हिन्दी। **क** सूरतमिश्र। **र. सं.** १७६६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९×३॥

अलकारमाला करी सूरत मन सुखदाय। वरनत चूक परीलषौ लीजौ सुकवि बनाय ॥४८॥
सूरतमिश्र कनौजिया नगर आगरे वास। रच्यो ग्रथ तिह भूषन नवलित विवेकविलास ॥४९॥
सवत सत्तरह सै वरस छासठ सावन मास। सुरगुर सुद एकादसी कीनो ग्रथ प्रकास ॥५०॥
अलकारमाला जु यह पढे सुनै चित लाय। बुद्धि समा पर बीनती ताहि देत हरिराय ॥५१॥

इति श्रीसूरतमिश्रविरचिते अलंकारमाला संपूर्ण ॥ आहडसर मध्ये ॥

पोथी ११६ मी

क्र. १९४५ रघुवंशमहाकाव्य पत्र १४६। **भा.** स.। **क.** कालिदास। **ग्रं.** २१००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** १०॥×४

क्र. १९४६ दशवैकालिकसूत्रलघुवृत्ति पत्र ५१। **भा.** स.। **मू. क.** शय्यभवसूरि। **ले. सं.** १४८१। **क.** सुमतिसूरि। **ग्रं.** २८००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०॥×३॥

अंत—

सं. १४८१ श्रीपत्तने सा. देपापुत्रैः श्रीकीर्त्तिरत्नाचार्यमिश्रभ्रातृभिः सा. लखा सा. भादा सा. केल्हादिश्राद्धैः स्वपुण्यार्थं लेखिता ॥ स. १४९९ वर्षे श्रीसत्यपुरे शोधिता वा. शांतिरत्नगणिना पं.जिनसेनगणिसान्निध्यात् ॥

क्र. १९४७ गणधरसार्धशतक सटीक अपूर्ण पत्र ११०। **भा.** प्रा. सं.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १०×४

क्र. १९४८ उपदेशतरंगिणी पत्र ९-४१। **भा.** स.। **क.** रत्नमंदिरगणि। **ले. सं.** १५३५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०×४

क्र. १९४९ गणधरसार्धशतकप्रकरण पत्र ५। **भा.** प्रा.। **क.** जिनदत्तसूरि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. १९५० गणधरसार्धशतक लघुटीकासह पत्र ३१। **भा.** प्रा. स.। **मू. क.** जिनदत्तसूरि। **टी. क.** सर्वराजगणि। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** १०×३॥

क्र. १९५१ चतुःशरणप्रकीर्णकादिप्रकीर्णकसंग्रह पत्र ९५। **भा** प्रा.। **ग्रं.** २८२५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प** १०×४

(१) **चतुःशरणप्रकीर्णक** पत्र १-४। **भा.** प्रा.। **गा.** ६३।
(२) **भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक** पत्र ४-११। **भा.** प्रा.। **गा.** १७२।
(३) **आउरपच्चक्खाण** पत्र ११-१४। **भा.** प्रा.। **गा.** ६०।
(४) **संथारगपयन्नो** पत्र १४-१९। **भा.** प्रा.। **गा.** १२१।
(५) **तंदुलवेयालियपयन्नो** पत्र २५-३३। **भा.** प्रा।
(६) **चंदाविज्झयप्रकीर्णक** पत्र ३३-४०। **भा.** प्रा.। **गा.** १७४।
(७) **देविंदत्थओ** पत्र ४०-५१। **भा** प्रा.। **गा.** ३००।
(८) **गणिविज्जाप्रकीर्णक** पत्र ५१-५४। **भा.** प्रा.। **गा.** ८६।
(९) **महापच्चक्खाणप्रकीर्णक** पत्र ५५-६०। **भा.** प्रा.। **गा.** १४१।
(१०) **वीरस्तव** पत्र ६०-६२। **भा.** प्रा.। **गा.** ४३।
(११) **अजीवकल्प** पत्र ६३-६४। **भा.** प्रा.। **गा.** ४५।
(१२) **गच्छाचारप्रकीर्णक** पत्र ६४-६९। **भा.** प्रा.। **गा.** १३७।
(१३) **मरणविधिप्रकीर्णक** पत्र ६९-९५। **भा.** प्रा.। **गा.** ६५९।

आ प्रतिनां पानां सांधेलां छे।

क्र. १९५२ भरतबाहुबलीकथा पत्र ४। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×४

क्र. १९५३ कथासंग्रह त्रटक पत्र २-५८। **भा.** सं.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×३॥।

पत्र—१-४-८-१३-१७थी२७-३६-३९-४८-५४-५५-५७ नथी।

क्र. १९५४ कालिकाचार्यकथाबालावबोध त्रु. अ. पत्र १२थी२४। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९॥।×३॥।। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. १९५५ कुमारविहारशतक पत्र ७। भा. स.। क. रामचन्द्रगणि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४

क्र. १९५६ कुमारसंभवमहाकाव्य सप्तमसर्गपर्यंत पत्र २८। भा. सं.। क. कालिदास। ले. सं. १७८६। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र १९५७ कुमारविहारशतक पत्र ७। भा. स.। क. रामचन्द्रगणि। ले. सं. १४८९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १०×३॥।

क्र. १९५८ नलोदयकाव्यसावचूरिक पंचपाठ पत्र ९। भा. स.। क. रविदेव स्वोपज्ञ। ले. सं. १४९६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २३। लं. प. १०×४

क्र. १९५९ जिनशतकमहाकाव्य पत्र ६। भा स.। क. जंबूकवि। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १९६० जिनशतक सावचूरि पंचपाठ पत्र ९। भा. स.। मू. क जंबूकवि। ले. सं. १५२०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १९। लं. प. १०×४

क्र. १९६१ द्वयाश्रयमहाकाव्य वृत्तिसह-कुमारपालचरित पत्र ४५। भा. प्रा. सं.। मू. क. हेमचन्द्राचार्य। वृत्तिक. राजशेखर। र. सं. १३८७। ग्रं. ३५००। ले सं. १५११। स्थि. श्रेष्ठ। पं.१९। लं. प. १०।×४।

क्र. १९६२ पट्टावली भाषानी खरतरगच्छीया पत्र ९। भा. गू.। ले. सं. १७५५। स्थि श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. १९६३ पट्टावली खरतरगच्छीया पत्र ३। भा. गु.। स्थि. मध्यम। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. १९६४ पट्टावली खरतरगच्छीया पत्र ८। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं प ९॥।×३॥।

क्र. १९६५ पट्टावली खरतरगच्छीया पत्र १५। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. ९।×३॥।

क्र. १९६६ कृत्यरत्नावली पत्र ११०। भा. स.। क. रामचन्द्रभट्ट। ग्रं. २३००। ले. सं. १८३१। स्थि मध्यम। पं. ११। लं. प. १०×४।

पोथी ११७ मी

क्र. १९६७ राजमृगांकसारणी पत्र १६०। ले. सं. १८४५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २०। लं. प. १०×४॥

क्र. १९६८ श्रावकातिचार पत्र ८। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. १०।×४॥।

क्र. १९६९ संबोधसप्ततिकाप्रकरण वृत्तिसह पत्र २०। भा. सं.। मू. क. रत्नशेखरसूरि। टी. क. अमरकीर्तिसूरि। ले. सं. १८९६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०।×४॥.।

अत पत्रमां गोडिपार्श्वनाथनुं स्तवन छे।

क्र. १९७० चतुःशरणप्रकीर्णक पत्र २। भा. प्रा.। क. वीरभद्रगणी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. १०×४।

क्र. १९७१ **पर्यंताराधनाप्रकरण** पत्र ४। भा. प्रा.। क. सोमसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०।×४॥

क्र. १९७२ **वर्षतंत्र** पत्र २५। भा. स.। क. नीलकंठ। ले. सं. १८४२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १०।×४॥

अंत —

संवत् १८४२ मिति आषाढ कृष्ण द्वादश्यां तिथौ श्रीमकसूदावादअजीमगजमध्ये। श्रीखरतरगच्छाधिराज भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरि शाखायां उपाध्याय श्रीज्ञानवर्धनगणि स्तत्सिष्य प. कुशलकल्याणेन लिखितमिद पुस्तक चिर। दुलीचंद्रादि पठनहेतवे ॥श्री॥

क्र. १९७३ **सूर्यचंद्रसारणी** पत्र १३। भा. स.। क. त्रिविक्रम दैवज्ञ। ले. सं. १७७६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०×४।॥

क्र. १९७४ **ज्योतिषसारणी** पत्र १०। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. १०×४

क्र. १९७५ **घनफलीगणसारणी सस्तबक** पत्र १०। भा. स. गु.। स्थि श्रेष्ठ। पं. २१। लं. प. १०×४।॥

क्र. १९७६ **ज्योतिषसंग्रह** परचुरण भा. मिश्र। स्थि. मध्यम। लं. प. १०×४॥

क्र. १९७७ **ज्योतिषप्रकीर्णकसंग्रह** भा. मिश्र। स्थि मध्यम। लं. प १०×४॥

क्र. १९७८ **जीवाभिगमोपांगसूत्र** अपूर्ण पत्र ५४। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०×४॥.

पोथी ११८ मी

क्र. १९७९ **स्तवन सज्झाय थोय विगेरे संग्रह** भा. मिश्र। स्थि मध्यम। लं. प. १०×४॥

क्र. १९८० **धन्यशालिभद्ररास** पत्र ७५। भा. गू। क. जिनविजय। ले. सं. १८२२। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. १०×४।

क्र. १९८१ **श्रीपालरास** पत्र २७। भा. गू.। क. जिनहरख। र. सं. १७४०। ग्रं. १२६०। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९।॥×४।

क्र. १९८२ **श्रीपालरास** अपूर्ण पत्र १०। भा. गू.। पं. ११। स्थि. जीर्ण। पं. ११। लं. प. ९।॥×३।॥

क्र. १९८३ **श्रीपालरास** अपूर्ण पत्र ?। भा. गू.। क जिनहर्ष। र. सं. १७४०। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. ९॥×३।॥

क्र १९८४ **अंजनासुंदरीपवनंजयकुमाररास** पत्र २३। भा. गू। क. पुण्यसागर। र. सं. १६८९। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९।॥×३।॥

क्र. १९८५ **मृगावतीरास** अपूर्ण पत्र १८। भा. गू। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ९।॥×४।

क्र. १९८६ **सुरसुंदरीरास** पत्र ३३। भा. गू.। क. नयनसुंदरजी। र. सं. १६४४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ९।॥×३।॥

क्र. १९८७ **शत्रुंजयउद्धाररास** पत्र ३। भा. गू। क. नयसुंदर। र. सं. १६४८। ले. सं. १७७१। स्थि. मध्यम। पं. २०। लं. प. ९।॥×३।॥

क्र. १९८८ **शत्रुंजयआदिरास संग्रह** पत्र ३-२४। भा. गू.। ले. सं. १८७०। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ९।॥×४

(१) शत्रुंजयरास पत्र ३-६। क. समयसुंदरजी।
(२) अवंतिसुकुमालचोढालीया पत्र ६-११। क. जिनहर्ष।
(३) आषाढाभूतिधमाल पत्र ११-१४। क. कनकसोम। र. सं. १६३८।
(४) मेघकुमारराजर्षिसज्झाय पत्र १५-२४। क. श्रीसार।

क्र. १९८९ अभयकुमाररास अपूर्ण पत्र ११। भा. गू.। क. पद्मराज। र. सं. १६५०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १९९० परदेशीराजारास अपूर्ण पत्र ६। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १९९१ जिनप्रतिमास्थापनरास पत्र २। भा. गू.। क. पार्श्वचन्द्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९॥×४

क्र. १९९२ विद्याविलासचोपाई पत्र १६। भा. गू.। क. आज्ञासुदर। र. सं. १५१६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. १०×४

क्र. १९९३ हंसराजवच्छराजचोपाई अपूर्ण-त्रुटक पत्र १२-२५। भा. गू.। ले. सं. १६४७। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. १०×४

क्र. १९९४ रत्नचूडमुनिचोपाई पत्र २६। भा. गू.। क. कनकनिधान। र. सं. १७२४। ले. सं. १८११। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. ९×३॥

क्र. १९९५ माधवानलकामकंदलाचोपाई अपूर्ण पत्र १२। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १९९६ चंद्रलेखाचोपाई पत्र २३। भा. गू.। क. मतिकुशल। र. सं. १७२८। स्थि मध्यम। पं. १७। लं. प. ९॥×४।

क्र. १९९७ मृगावतीचोपाई पत्र ९। भा. गू.। क चन्द्रकीर्ति। र. सं. १६८२। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९॥×३॥

क्र. १९९८ जयसेनकुमारचोपाई तथा रात्रिभोजनचोपाई पत्र १३। भा. गू.। क. धर्मसमुद्र-वाचक। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प. ९॥×४

क्र. १९९९ शालिभद्रचोपाई पत्र १७। भा. गू.। क. मतिसार। र. सं. १६७८। ले. सं. १७२३। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प ९॥×४।

क्र. २००० उपदेशरसाल पत्र ६७। भा. स.। ले. सं. १८१३। ग्रं. ३०००। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९॥×४

क्र. २००१ अइमत्तामुनिचोढालियु पत्र २। भा. गू.। क नयरग। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प. ९॥×४

क्र. २००२ दानशीलतपभावनाचोपाई पत्र ५। भा. गू.। क. समयसुंदर। र. सं. १६६४। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ९×३॥

क्र. २००३ ज्ञानपच्चीसी पत्र २। भा. हिन्दी। क बनारसीदास। ले. सं. १७३२। स्थि. जीर्ण। पं. ९। लं. प. ९×३॥

क्र. २००४ स्त्रीसंयोगबत्रीसी पत्र ५। भा. गू.। ले. सं. १८१३। स्थि. मध्यम। पं. १७। लं. प. ९॥×३॥

क्र. २००५ शाश्वतजिनस्तोत्र पत्र २। भा. प्रा.। क. देवेंद्रसूरि। गा. २४। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ९॥×३॥

क्र. २००६ ऋषभदेवस्तवन बालावबोधसह पत्र ५। **भा.** प्रा. गू.। **मू. क.** विजयतिलक। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. २००७ वासुपूज्यजिनपुण्यप्रकाशस्तवन पत्र २६। **भा.** गू.। **क.** सकलचंद्र। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. २००८ जिनप्रतिमाहुंडीस्तवन पत्र १-४। **भा.** गू.। **क.** विजय। **ले. सं.** १६४३। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. २००९ वीसस्थानकतपस्तवन पत्र २। **भा.** गू.। **क.** वस्ती। **ले. सं.** १६३८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ९। **लं. प.** ९।×३॥

क्र. २०१० गोडीपार्श्वनाथस्तवनादि पत्र ४। **भा.** गू.। **र. सं.** १८१३। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ८॥।×३॥।

(१) **गोडीपार्श्वनाथस्तवन** पत्र १-३। **क.** जिनलाभ।

(२) **शांतिजिनस्तवन** पत्र ३जु। **क** धर्मवर्धन। **र. सं.** १७००।

(३) **पार्श्वनाथस्तवन** पत्र ३-४। **क.** जिनहर्ष।

क्र. २०११ वीसविहरमानजिनगीतो अपूर्ण पत्र ३। **भा** गू.। **क.** जिनराज। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४

क्र. २०१२ आदिनाथस्तवनादि स्तवनो पत्र ४। **भा** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×३॥।

(१) **आदिनाथस्तवन** पत्र १-२। **क.** विजयतिलक। **गा** २१।

(२) **सामायिकदोषनिवारणस्तवन** पत्र २-३। **क.** वा. गुणरंग। **गा.** ३२।

(३) **उपदेशस्तवन** पत्र ३-४। **क.** धर्मसी।

(४) **गोडीपार्श्वनाथस्तवन** पत्र ४थु।

क्र. २०१३ महावीरस्तवन नयनिक्षेपविचारगर्भित पत्र ३। **भा.** गू.। **क.** रामविजय। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. २०१४ स्थविरावलीस्वाध्याय पत्र २। **भा.** गू.। **क.** सहजकीर्त्ति। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४

क्र. २०१५ सुंदरशृंगार पत्र ५-२३। **भा.** हिन्दी। **क.** कवि राजसुंदर। **ले. सं.** १७५७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. २०१६ जीवोत्पत्तिसज्झाय कलियुगगीत पत्र २। **भा.** गू.। **जी. क.** श्रीसार। **क. क.** कर्मचंद। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प** ९॥×३॥

क्र २०१७ सीमंधरस्वामिस्वाध्याय पत्र ३। **भा** गू.। **क.** लावण्यसमय। **र. सं.** १५६२। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** ११। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २०१८ त्रेसठशलाकापुरुषस्तवन पत्र २। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. २०१९ राजनीतिकवित पत्र १५। **भा.** हिन्दी। **क.** देवीदास। **ले. सं.** १८७४। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २०२० महावीररसोइस्तवन पत्र १। **भा.** गू.। **क.** दयासागर। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २०२१ **मल्लिनाथबृहत्स्तवन** पत्र २। **भा.** गू.। **क.** कुशललाभ। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥×४

क्र. २०२२ **हितशिक्षा** पत्र १। **भा.** गू.। **क.** धरणसी। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** ९॥×४

क्र. २०२३ **कोकचोपाई** पत्र २३। **भा.** गू.। **क.** नबुंद। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥।×३॥।। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. २०२४ **गोरावादरप्रस्ताविक** पत्र ९। **भा.** गू.। **ले. सं.** १७६६। **स्थि.** जीर्ण। **प.** १४। **लं. प.** ९॥।×३॥।

क्र. २०२५ **पृथ्वीराजवेली सस्तबक** अपूर्ण पत्र १५। **भा.** हिंदी। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** ९॥।×३॥।

पोथी ११९ मी

क्र. २०२६ **मुष्टिज्ञान आदि** पत्र ४। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प** १०।×४।

क्र. २०२७ **अभिधानचिंतामणिनाममाला** पत्र ४५। **भा.** स.। **क.** हेमचंद्राचार्य। **ले. सं.** १६८५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०।×४॥

क्र. २०२८ **चैत्यवंदनचतुर्विंशतिका** पत्र ४। **भा.** स। **क** क्षमाकल्याण। **स्थि** जीर्ण। **पं** १५। **लं. प.** १०।×४।। पत्र ३ जु नथी।

क्र. २०२९ **सारस्वतव्याकरण** अपूर्ण पत्र २०। **भा** स.। **क.** अनुभूतिस्वरूपाचार्य। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प** १०।×४।

क्र. २०३० **श्रीचंदरास** अपूर्ण पत्र ८। **भा.** गू.। **स्थि** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०×४॥

क्र. २०३१ **चोवीसतीर्थंकरगीत** पत्र ३। **भा.** हिन्दी। **क.** लक्ष्मीवल्लभ। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।

क्र. २०३२ **नर्मदासुंदरीरास** अपूर्ण पत्र ३१। **भा** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १०×४।

क्र. २०३३ **सवैया-ऋषभदेवछंद आदि** पत्र ३। **भा.** गू.। **स्थि** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×४।

क्र. २०३४ **स्वरोदय** पत्र ९। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥×४॥

क्र. २०३५ **प्रतिष्ठाविधि** पत्र ७। **भा.** मिश्र। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४

क्र. २०३६ **जिनजन्माभिषेकमहोत्सव** पत्र २। **भा.** सं.। **क** इंद्र। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।

क्र. २०३७ **भगवतीसूत्र** अपूर्ण पत्र १०-१४। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४।

क्र. २०३८ **सप्तस्मरण** पत्र ८। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** १०×४

(१) **एकीभावस्तोत्र** पत्र १-२। **क.** वादिराज। **का.** २५।

(२) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र २ जु।

(३) **पार्श्वनाथस्तोत्र** पत्र २ जु।

(४) **भावारिवारणस्तोत्र** पत्र ३ जु। **क.** जिनवल्लभ।

(५) **भयहरस्तोत्र** पत्र ३-४।

(६) **लघुशांति** पत्र ४ थुं।

क्र. २०३९ सारस्वतपुंजराजीटीका अपूर्ण पत्र ७६। **भा.** स.। **क.** पुजराज। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४

क्र. २०४० समासयोगपटल पत्र २। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **क.** वररुचि। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।

क्र. २०४१ माघकाव्य संदेहविषौषधिटीका अपूर्ण पत्र २४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **टी. क.** आनंददेव। **पं.** १६। **लं. प.** १०×४।

आदि—

यस्य मृगावलिः कंठे दानांभोराजरजिते। भाति रुद्राक्षमालेव स वः पायाद् गणाधिपः ॥१॥

अभीष्टफलसपत्सिद्धेतु स्मृत्वा सरस्वती। **शिशु**पालवधे काव्ये **सार**टीका विधीयते ॥२॥

अन्त—

इति श्री**आ**नंददेवायनिविरचितायां **सं**देहविषौषध्यां नाम्न्यां **शिशु**पालवधटीकायां प्रथमः सर्गः॥

क्र. २०४२ भावारिवारणस्तोत्र वृत्तिसह पत्र ७। **भा.** म.। **मू. क.** जिनवल्लभ। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×३॥।

क्र. २०४३ ज्ञानपहेरामणी आदि पत्र ३। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४

क्र. २०४४ अनेकविचारसंग्रह पत्र ९। **भा** प्रा. सं.। **क** रत्नसूरि। **ले. सं.** १६१६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २१। **लं. प.** १०×४

अन्त—

पूज्यभट्टारकपुरदर प्रामाणिकप्रकरालकरण विद्वद्जनशिरोमणि कुमततमोनिर्न्नाशननभोमणि सुविहितचूडामणि। महामोहांधकारप्रणाशनगृहमणि श्री**गुण**रत्नसूरिविरचिता. समाप्ताः ॥छा॥श्री॥ सवत् १६१६ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे १२ गुरुवासरे अदेह राजपुरवास्तवां राउल कक्रीआ लक्षित ॥छा॥श्री॥

क्र. २०४५ कल्पसूत्रनी मांडणी पत्र ४। **भा.** गू.। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १०×३॥।

क्र. २०४६ स्थानांगसूत्रना बोल पत्र ७। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १८। **लं. प.** १०।×४

क्र. २०४७ ढुंढकप्रतिक्रमण पत्र ११। **भा** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** १०×३॥

क्र. २०४८ वाग्भटशारीरस्थान पत्र ५१। **भा.** गू.। **ले. सं.** १७१५। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ६। **लं. प.** १०।×४

क्र. २०४९ अभिधानचिंतामणिनाममाला पत्र ७४। **भा.** स.। **ले. सं.** १७२१। **पं.** ११। **लं. प.** १०×४

अंत—

सवत् १७२१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे एकादशीतिथौ भोमवारे मृगसिरनक्षत्रे विकुभयोगे श्री**बृहत्खर**तरगच्छे भट्टारक श्री**जिन**रत्नसूरि तत्पट्टालकार भट्टारकयुगप्रधान श्री**जिन**रत्नसूरि तत्पट्टालकार भट्टारकयुगप्रधान श्री श्री श्री**जिनचंद्रसूरि**विजयराज्ये श्री श्री श्री श्री**सागर**चंद्रसूरिसताने महोपाध्याय श्री**दया**रतनगणि तत्शिष्य वा. श्री**शिवदेव**गणि तत्शिष्य वाचनाचार्य श्री **सह**जकीर्त्तिगणि तत्शिष्य वा. श्री श्री**राज**चंद्रगणि तत्शिष्य वाचकराज श्री**जय**निधानगणिगजेन्द्राणां शिष्य पडितप्रवर श्री श्री **कमल**सिंहगणि तत्शिष्य **प. कमल**रत्नगणि लिखित शिष्य प. **ज्ञान**चन्द्रपठनार्थं श्री**सिंधु**देशे श्री**हाजी**षानदेशमध्ये चतुर्मासी कृता तदा लिखिता ॥ शुभ भवतु ॥श्री॥

क. २०५० योगविधिआदि पत्र ३९। **भा.** मिश्रित। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** १०।×४

क. २०५१ बिहारीसतसइयां पत्र २४। **भा.** हिन्दी। **क.** बिहारीदास। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** १०×४।

क. २०५२ आराधना पत्र ५। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** ९।।।×४।

क. २०५३ स्तवनचोवीसी पत्र १६। **भा.** गू। **क.** ज्ञानविमल। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ९।।।×४।

क. २०५४ बृहत्संहितागत अधिकार पत्र ३। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९।।।×३।।।

क. २०५५ देशकालस्वरूप पत्र ५। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४

क. २०५६ हेमधातुपाठ पत्र ७। **भा.** स.। **ले. सं.** १७९६। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १७। **लं. प.** १०×४।

क. २०५७ भोजराजकथा पत्र ४। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९।।।×४।

क २०५८ आगमसारबालावबोध पत्र ६४। **भा.** गू.। **क** देवचन्द्रजी। **ग्रं.** ३०००। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं प.** ९।।।×४

क. २०५९ लिंगानुशासन पत्र ३। **भा** स। **क.** हेमचन्द्राचार्य। **ले. सं** १६८०। **स्थि.** मध्यम। **पं** १५। **लं प.** ९।।।×४

क २०६० शक्रस्तवाम्नाय पत्र १। **भा** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।।×४

क. २०६१ स्वरोदय पत्र १३। **भा.** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९।।।×४।

क. २०६२ प्रश्नोत्तरसार्धशतकभाषा पत्र २५। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ९।।×४।

क. २०६३ सामायिकबत्रीसदोपसज्झाय पत्र २। **भा** गू.। **क.** गुणरंग। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।।×४।

क. २०६४ सज्झायसंग्रह पत्र ३। **भा.** गू.। **ले. सं.** १८१०। **स्थि** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ९।।×४।

क. २०६५ सत्तरभेदीपूजा पत्र ७। **भा.** गू। **क.** साधुकीर्त्ति। **र. सं.** १६१८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं प.** ९।।×४।।

क. २०६६ अष्टयोगिनीअंतर्दशा पत्र ३। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९।×४।।

क २०६७ अंतर्दशाकोष्ठक पत्र ७। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १४। **लं. प.** ९।×४।

क. २०६८ आवश्यकपीठिकाबालावबोध पत्र १५। **भा.** गू.। **क.** सवेगदेवगणि। **र. सं.** १५१४। **ले. सं.** १५५७। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २०। **लं. प.** ९।।।×४

अंत—

श्रीसोममुंदरयुगोत्तमसूरिशिष्यः संवेगदेवगणिरिंद्रतिथि १५१४ प्रमेऽब्दे।
आवश्यकस्य धुरि सस्थितपीठिकाया बालावबोधमतनोत् स्वपरार्थसिद्धयै ॥१॥

इति श्रीआवश्यकप्रथमपीठिका बालावबोधः समर्थितः ॥ प्रथाम १२११ ॥ श्रीः ॥ सवत् १५५७ वर्षे माघ वदि ४ रवौ। श्रीमति गंधारबंदिरे लिखितोऽय ग्रथः ॥

क. २०६९ मार्गगस्यध्ययन सावचूरि पत्र २-८। **भा.** सं.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९।×३।।।

क्र. २०७० पासाकेवली पत्र १३। भा. गू.। स्थि. जीर्ण। पं. १३। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०७१ त्रिपताकीचक्रोदाहरण पत्र १। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९।×३॥।

क्र. २०७२ नृसिंहकवच पत्र १। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०७३ नवकारनो अर्थ पत्र ३। भा. गू.। पं. १४। स्थि. जीर्ण। लं. प. ९॥।×४

पोथी १२० मी

क्र. २०७४ जिनागमगाथासंग्रह पत्र १२। भा. प्रा.। क. रत्ननिधान। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०७५ प्रश्नोत्तरीसंग्रह पत्र २४। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. २०७६ श्रीदेवीवर्णन (चतुर्थस्वप्नवर्णन) पत्र २। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०७७ दशआश्चर्यस्वरूप पत्र ६। भा. प्रा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०७८ चतुर्दशस्वप्नविचार पत्र ५। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥।×४

क्र. २०७९ नागमहामंत्रषोडश पत्र १। भा. स। स्थि. जीर्ण। पं. १६। लं. प. ९॥।×४

क्र. २०८० नागमंताचोपाई पत्र ३। भा. गू.। क. मेरुशेखर। ले. सं. १७३०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. २०८१ भगवतीसूत्रगतशतकादि पत्र ७०। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ९॥।×४

क्र. २०८२ कल्पसूत्रकल्पद्रुमटीका अपूर्ण पत्र ३। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ९।×३॥।

क्र. २०८३ कल्पसूत्र अपूर्ण पत्र ९। भा. प्रा.। स्थि. मध्यम। पं. ६। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. २०८४ कल्पसूत्र अपूर्ण पत्र १२। भा. प्रा.। स्थि. जीर्ण। पं. ७। लं. प. १०×४

क्र. २०८५ शत्रुंजयमाहात्म्य चतुर्थसर्ग पत्र ५। भा. स.। क. धनेश्वरसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०८६ चोलुकदृष्टान्त पत्र १३। भा. स.। ले. सं. १७१२। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०८७ दशप्रश्नोत्तर पत्र ६। भा. प्रा. स। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०८८ वृत्तज्योतिष पत्र ६। भा. स.। क. महेश्वराचार्य। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. १०×४

क्र. २०८९ पार्श्वनाथदशभव संक्षेपबालावबोध पत्र १३। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०९० खरतरगच्छसामाचारी अष्टोत्तरीस्नात्रविधि पत्र ३। भा. प्रा. सं. गू.। क. जिनपतिसूरि। स्थि. जीर्ण। पं. १७। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०९१ खरतरगच्छसामाचारी पत्र २। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ९॥×३॥।

क्र. २०९२ श्रावकआराधना पत्र ५। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ९॥।×३॥।

क्र. २०९३ सिद्धान्तहुंडी पत्र ७। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** २३। **लं. प.** ९॥।×३॥।। प्रति पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. २०९४ वसुधारा पत्र ८। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १०। **लं. प.** ९।×३॥

क्र. २०९५ वार्त्तिक पत्र १२। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. २०९६ मोकलीआराधना पत्र २। **भा.** गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥

क्र. २०९७ प्रश्नोत्तरसंग्रह पत्र १३। **भा** गू.। **क.** जयसोम। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×३॥

क्र. २०९८ योगविधि पत्र ११। **भा.** स. गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥×४

क्र. २०९९ रत्नकोश पत्र ४। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २१०० पौषधादिविधि ज्वरहरादिमंत्र पत्र ३। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं** २३। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. २१०१ आराधना पत्र ५। **भा.** गू। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×३॥

क्र. २१०२ सोलस्वप्नविचार पत्र २। **भा.** प्रा.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १७। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २१०३ योगविधि यंत्र पत्र ५। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १२। **लं प.** ९॥।×४

क्र. २१०४ वसुधारा पत्र ३। **भा.** स.। **ले. सं.** १७२१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १८। **लं. प.** ९॥।×४

क्र. २१०५ आठकर्मनी उत्तरप्रकृति पत्र ३। **भा** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** ९॥।×४।

क्र. २१०६ योगविधि पत्र २५। **भा.** गू। **स्थि.** मध्यम। **पं** १५। **लं. प.** ९॥×४

क्र. २१०७ स्वरोदयविचार पत्र २। **भा.** गू। **ले. सं.** १८४३। **स्थि** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।×४

क्र. २१०८ द्वादशव्रतअतिचारस्वरूप पत्र ३। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प.** ९॥×४

क्र. २१०९ पंचसमितिसज्झाय पत्र ४। **भा.** गू.। **क** देवचद्रजी। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १७। **लं. प.** ९।×४।

क्र. २११० पगुणतीसीभावना संस्कृत स्तबक सह पत्र २। **भा.** प्रा. स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १४। **लं. प** ९॥×४

क्र. २१११ अष्टप्रकारीपूजा पत्र १४। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ९। **लं. प.** ९।×३॥

क्र. २११२ ज्ञानछत्रीशी पत्र ४। **भा.** गू.। **क.** कान्हजी। **स्थि.** मध्यम। **पं** १३। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. २११३ गजसिंहचरित्ररास पत्र २०। **भा.** गू.। **क.** राजसुदर। **र. सं.** १५५६। **ले. सं.** १८११। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १२। **लं. प.** ९।×३॥।। प्रति उधइथी खवायेली छे।

क्र. २११४ नवपदपूजा—अपूर्ण. पत्र ७। **क** उ. यशोविजयजी। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १३। **लं. प.** ९।×३॥।

क्र. २११५ लोंकाहुंडी ५८ बोल पत्र ३१। **भा.** गू.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ९।×३॥

क्र. २११६ चंद्राजरास अपूर्ण पत्र २६। **भा.** गू.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १०। **लं. प** ९×३॥

क. २११७ सिंहासनबत्रीसीरास अपूर्ण. पत्र २-६२। भा. गू.। स्थि. जीर्ण। पं. १४। लं. प. ९×३॥।

क. २११८ चतुःश्लोकीप्रकाश पत्र १९। भा. स.। क. केशवभट्ट। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ९×३॥।

क. २११९ स्वरोदयसिद्धि पत्र ११। भा. गू। ले. सं. १८५३। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ९×३॥।

पोथी १२१ मी

क. २१२० प्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति तथा सप्तस्मरणवृत्ति पत्र ५१। भा. सं.। ले. सं. १८८५। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १०। लं. प. १०॥×५

(१) चैत्यवंदनकप्रत्याख्यानलघुवृत्ति पत्र १-१०। क. तिलकाचार्य।

(२) वंदित्तुसूत्रवृत्ति पत्र १०-१४। क. तिलकाचार्य।

(३) चत्तारि अट्ठ दस दोय सूत्रवृत्ति पत्र १४। क. देवेन्द्रसूरि।

(४) नवग्रहस्तुतिगर्भितपार्श्वनाथस्तुतिवृत्ति पत्र १४-१६। क. जिनप्रभसूरि सौपञ्ञ।

(५) लघुशांतिवृत्ति पत्र १६-१८। क हर्षकीर्त्तिसूरि।

(६) अजितशांतिवृत्ति पत्र १८-२७। क. जिनप्रभसूरि। र. सं. १३६५। ग्रं. ७४०।

(७) लघुअजितशांतिवृत्ति पत्र २७-३१। भा. प्रा.। क. धर्मतिलकोपाध्याय। र. सं. १३२२। ग्रं. ३२०।

(८) भयहरस्तोत्रवृत्ति पत्र ३१-३५। क. जिनप्रभसूरि। ग्रं ३००।

(९) तं जयउ० स्तववृत्ति पत्र ३५-३७। क. वाचनाचार्य जयसागर।

(१०) गुरुपारतंत्र्यस्तववृत्ति पत्र ३७-३९।

(११) सिग्घमवहरउ स्तोत्र पत्र ३९।

(१२) उवसग्गहरंवृत्ति पत्र ४०-४३। क. जिनप्रभसूरि।

(१३) भक्ष्याभक्ष्यगाथावृत्ति पत्र ४३।

(१४) पार्श्वनाथस्तोत्रवृत्ति पत्र ४३-४४।

(१५) ,, ,, ,, पत्र ४४-४५।

(१६) साधुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति पत्र ४५-४९।

(१७) तिजयपहुत्तस्तोत्रवृत्ति पत्र ४९-५१। क. हर्षकीर्ति। ले. सं. १८८५।

क. २१२१ प्रकीर्णकविचारसंग्रह पत्र १०। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. ३१। लं. प. ८॥×५

क. २१२२ सारोद्धारकोश सस्तबक पत्र ३५। भा. सं.। स्थि. जीर्ण। पं. १२। लं. प. १०॥×३॥।

क. २१२३ गौतमस्वामिरास पत्र ६। भा. गू.। क. विनयप्रभ। र. सं. १४१२। ले. सं. १७२९। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥।

क. २१२४ लघुसिद्धांतकौमुदी अपूर्ण. पत्र २५। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. १०×४॥।

क. २१२५ शंखेश्वरपार्श्वनाथछंद पत्र ३। भा. गू.। क. कवि वर्द्धमान। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. १०×४॥।

क्र. २१२६ द्वादशभावफलविवरणज्योतिष पत्र १५। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १९। लं. प. १०॥×५.। पाणीथी भींजाएली छे।

क्र. २१२७ अव्ययसंग्रह पत्र ५। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. १०॥।×४॥।

क्र. २१२८ जीवविचारप्रकरणवृत्ति पत्र ६। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०॥।×४॥

क्र. २१२९ एकाक्षरीनाममाला पत्र ११। भा. सं. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. १०॥।×४॥।

क्र. २१३० पाणिनीयव्याकरणगणपाठ पत्र ४६। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ८। लं. प. १०॥×४॥।

क्र. २१३१ कल्पसूत्रटीका अपूर्ण पत्र १५। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. १०।×४।

क्र. २१३२ श्रीचंद्रीयसंग्रहणीप्रकरण पत्र २०। भा. प्रा.। क. श्रीचंद्रसूरि। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. १०॥×४॥

क्र. २१३३ चिंतामणिसार प्रत्यक्षखंड पत्र ४४। भा. सं.। क. भवानंद सिद्धांत। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०।×४॥.। लखतां अधुरी छे।

आदि—

नवनीलांबुदरुचिरं चरणरणत्किंकिणीजाल। हैयंगवीनचोर नंदकिशोर नमस्यामः ॥१॥

प्रत्यक्षीयमणौ सारमालोकोऽय प्रयत्नतः। श्रीभवानदसिद्धांतवागीशेन प्रकाश्यते ॥२॥

क्र. २१३४ पद्मकोश पत्र ६। भा. सं.। स्थि. मध्यम। पं. १८। लं. प. १०×४।

क्र. २१३५ ऋषभदेवस्तवन आदि पत्र ६। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०॥×४॥

(१) आदिनाथस्तवन पत्र १-२। क. रतनचंद।

(२) आदिनाथस्तवन पत्र २-३। क. समयसुदर।

(३) लोद्रवास्वामिलेख पत्र ३-४। क. जिनचंद्रसूरि।

(४) चौदगुणस्थानकस्तवन पत्र ४-६। क. धर्मसी।

क्र. २१३६ बेंतालीसदोषविवरणस्तवन पत्र २। भा. गू.। क. सिद्धार्थमुनि। र. सं. १८७८। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. १०।×३॥।

क्र. २१३७ स्नात्रविधि पत्र ७। भा. गू.। क. देवचद्र। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. १०×४॥

क्र. २१३८ दंडकचोवीसबोलयंत्रपट पत्र १। स्थि. श्रेष्ठ।

क्र. २१३९ श्रीपालरास अपूर्ण पत्र ४८। भा. गू.। क. विनयविजयजी यशोविजयजी। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ९॥×४।

क्र. २१४० दानविजयचोवीसी पत्र ५। भा. गू.। क. दानविजयजी। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९×४।

क्र. २१४१ महावीरस्तुतिआदि पत्र २। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ९×३॥।

क्र. २१४२ कालकाचार्यकथानक. पत्र १९। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १२। लं. प. ८॥।×३॥।

क्र. २१४३ दिगंबरचोरासीबोल पत्र ३। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ९॥×३॥

क्र. २१४४ भक्तामरस्तोत्रभाषाकवित पत्र ८-१४। भा. गू.। क. हेमराज। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. ८॥×३॥

क्र. २१४५ सुभाषितश्लोकसंग्रह पत्र २-११। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ८॥×३॥

क्र. २१४६ मेघदूतमहाकाव्य पत्र १६। भा. सं.। क. कालिदास। स्थि. श्रेष्ठ। ले. सं. १८१२। पं. ५। लं. प. ८॥×३॥

क्र. २१४७ प्रश्नोत्तर तथा बोलविचार पत्र २५। भा. गू। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ८।×३॥

क्र. २१४८ बोलविचारसंग्रह पत्र ११। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ८×४

क्र. २१४९ चातुर्मासिकव्याख्यानबालावबोध पत्र १२। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १९। लं. प. ७॥×४।

क्र. २१५० भवानीकवच आदि पत्र ७। भा. स.। क. हरिहरब्रह्म। स्थि. मध्यम। पं. ११। लं. प. ७॥×४।

क्र. २१५१ गोडीपार्श्वनाथछंद पत्र १। भा. गू.। क. रूपचंद। गा. ११३। स्थि. जीर्ण। लं. प. ७॥×४

क्र. २१५२ गोरखबोधवाणी आदि दुहाकवितसंग्रह पत्र ६३। भा. गू.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २०। लं. प. ७॥×४॥

क्र. २१५३ कूटमुद्गर पत्र ८। भा. स.। क. माधव। ले. सं. १८१२। स्थि. मध्यम। पं. १४। लं. प. ७॥×४॥

पोथी १२२ मी

क्र. २१५४ मोतीकपासीयासंवाद पत्र ४। भा. गू.। क. श्रीसार। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ७×४

क्र. २१५५ विचारसित्तरिप्रकरण सस्तबक पत्र ९। भा. प्रा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. ७।×४

क्र. २१५६ वार्तासुभाषितादि पत्र २१। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ७।×४

क्र. २१५७ विनोदकथासंग्रह अपूर्ण पत्र ३२। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. १६। लं. प. ७।×४

क्र. २१५८ हस्तिफलज्योतिष अपूर्ण पत्र ३। भा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ७॥×४

क्र. २१५९ पच्चक्खाणविचारगर्भ पार्श्वनाथस्तवन पत्र ३। भा. गू.। क. वाचक क्षेम। स्थि. मध्यम। पं. १९। लं. प. ७॥×४

क्र. २१६० साधुषडावश्यकसूत्र आदि पत्र ११२। भा. प्रा. सं. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ८×३॥

(१) प्रतिक्रमणसूत्र पत्र १-९।
(२) प्रव्रज्याकुलक पत्र ९-११। गा. ३४।
(३) साधुप्रतिक्रमणसूत्र पत्र ११-१४।
(४) जयतिहुयणस्तोत्र पत्र १४-१८। क. अभयदेवसूरि। गा. ३०।
(५) वंदित्तु पत्र १८-२१।
(६) संथारापोरसी पत्र २१-२२।
(७) सीमंधरस्वामिआदिनी स्तुतिओ-स्तवन-स्तोत्र पत्र-२२ ४४।
(८) अजितशांति पत्र ४४ ४९।
(९) लघुअजितशांति पत्र ४९-५१।
(१०) नमिऊणस्तोत्र पत्र ५१-५४।
(११) महस्यिगुण पत्र ५४-५६।
(१२) सिध्धमवहरउस्तोत्र पत्र ५६-५७।
(१३) लघुशांति पत्र ५७-५८।
(१४) लिजयपहुत्त पत्र ५८-५९
(१५) उपदेशमाला पत्र ५९-६३।
(१६) भक्तामरस्तोत्र पत्र ६३-६८।
(१७) कल्याणमंदिरस्तोत्र पत्र ६८-७३।
(१८) भावारिवारणस्तोत्र पत्र ७३-७६।
(१९) तुरियरयस्तोत्र पत्र ७६-८०।
(२०) जीवविचार पत्र ८०-८४।
(२१) नवतत्त्वप्रकरण पत्र ८४-८७
(२२) दंडकप्रकरण पत्र ८७-९०।
(२३) संग्रहणीप्रकरण पत्र ९०-११२।

क्र. २१६१ दुहासंग्रह पत्र ८। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ५।×४

क्र. २१६२ कोकदोहासंग्रह पत्र ६। भा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १३। लं. प. ५×४

क्र. २१६३ सप्तव्यसनकथा पद्य पत्र १३१। भा. स.। स्थि. जीर्ण। पं. ११। लं. प. ७×३।

क्र. २१६४ बृहत्क्षेत्रसमास सस्तबक पत्र ६३। भा. प्रा. गू.। स्थि. मध्यम। पं. १०। लं. प. ६×३।।।

क्र. २१६५ उपदेशमालाप्रकरण पत्र ३८। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. ६।।।×२।।। पत्र. ३७मु नथी।

पोथी १२३ मी

क्र २१६६ प्रज्ञापनोपांगसूत्र पत्र २५८। भा. प्रा.। क. श्यामाचार्य। ले. सं. १८२६। ग्रं. ७७८७। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. १२×५

अंत—

संवत् १८२६ वर्षे। मि। आसू वदि १० दिने उपाध्याय श्री. १०६ श्रीक्षमाप्रमोदजीगणि, तच्छिष्य पं. अनोपचंद्रमुनिनैषा। प्रतिलिखिता॥ श्रीजेसलमेरदुर्गे ऊकेशवंशे। गोलवच्छा गोत्रे। सा। श्रीतिलोक-

सीजी। तत्पुत्र सा। घारसी। तेनैषा प्रतिः ज्ञानवृद्धर्थं बोधीबीजप्राप्तर्थं। पुस्तकभंडारे ढौकिता। सा वाच्यमाना ज्ञानलाभाय मिथ्यात्वनाशाय भवेयुः। वर्त्तमानभट्टारक जंगमयुगप्रधान श्रीजिनलाभसूरीणां विजयिराज्ये॥ श्री॥ श्रेयोमाला विशाला वृद्धिर्भवेयुः। ॥ श्रीरस्तुः॥

क्र. २१६७ (१) प्रज्ञापनोपांगसूत्रवृत्ति पत्र २३३ सुधी। **भा.** स.। **क.** मलयगिरि।

(२) प्रज्ञापनोपांगसूत्रवृत्ति पत्र २३४-३६५। **भा.** सं.। **वृ. क.** मलयगिरि। **ग्रं.** १६०००। **ले. सं.** १८२६। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** १२×५

अन्त—

संवत् १८२६ वर्षे। मि। पोह सुदि ५ दिने उपाध्याय श्री१०६क्षमाप्रमोदजी गणिः।

क्र. २१६८ लघुजातक पत्र १२। **भा.** स.। **ले. सं.** १८८४। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १०। **लं. प.** १०॥×५।

क्र. २१६९ जीवाभिगमोपांगसूत्र पत्र ५५। **भा.** प्रा.। **ग्रं.** ४८८०। **ले. सं.** १५७१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १९। **लं. प.** १३×४॥

अंत—

सवत् १५७१ वर्षे आसाढमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ श्रीअणहिल्लपुरपत्तने पातसाहश्रीमदाफरराज्ये श्रीखरतरवेगडगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसताने श्रीजिनशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनधर्म्मसूरिपट्टालकार श्रीजिनचन्द्रसूरयस्तत्पट्ट-पूर्वाचलसहस्रकरावतार। श्रीजिनशासनशृगारहार श्रीजिनमेरुसूरीणां वाचनाय ओसवालज्ञातीय दोसी सिरपति तयोः पुत्र दोसी सहस्रकिरणभार्या श्री.संसारदेस्य पुण्याय श्रीजीवाभिगमोपांगं लिखाप्य गुरूणां प्रदत्त। वाचकस्य शुभ भवतु॥

पोथी १२४ मी

क्र. २१७० गोयरिगवयरिरूपविचार पत्र ३। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १६। **लं. प.** १३×४॥

क्र. २१७१ वासुपूज्यजिनचरित्रमहाकाव्य पत्र ६८। **भा.** स.। **क.** वर्धमानसूरि। **ले. सं.** १४८२। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १९। **लं. प.** १३×५

क्र. २१७२ उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्तिसह पत्र १५०। **भा.** प्रा स.। **ग्रं.** १२०००। **वृ. क.** नेमिचन्द्रसूरि। **र सं.** ११२९। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १९। **लं. प.** १३×४॥

क्र. २१७३ हनुमन्नाटक पत्र १८। **भा.** स.। **क.** हनुमत। **ले. सं.** १६३५। **स्थि** जीर्ण। **पं.** २१। **लं. प.** १२॥×५

अंत—

अब्दे श्रीविक्रमस्य केवलबलशशिकलासहिते मधौ मासे सितपक्षे पचम्यां तिथौ रविवासरे। श्रीमत्कानक-पादपद्मभृंगाः श्रीरामदासाचार्याः तत्पट्टे श्रीहंसराजसूरयः तच्छात्रेण सागरविंगाऽऽत्मबोधार्थं हनुमद्विरचित नाटक श्रीवूटिकनगरमध्ये॥ श्रीरस्तु॥

क्र. २१७४ सिद्धान्तकौमुदी पूर्वार्धं अपूर्ण पत्र ५५। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** १२॥×४॥

क्र. २१७५ कल्पसूत्रसंदेहविषौषधिवृत्ति पत्र ६१। **भा.** सं.। **क.** जिनप्रभसूरि। **ग्रं.** ३५४१। **ले. सं.** १५९६। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १५। **लं. प.** १२×४॥

अंत—

मंदुरवारनिवासी भीमः संघाधिपोऽभवद् भविकः । श्रीजिनधर्माधारोऽभूत्तनयो डुंगरस्सुकृती ॥१॥
तद्वंशैकविलासी प्राग्वाटः प्रकटजिनमताभ्यासी । श्रीगुणराजो गुणवान् पदप्रतिष्ठादिकारयिता ॥२॥
श्रीशत्रुंजयरैवतजीरापल्ल्यर्बुदादियात्रासु । वित्तव्ययसफलीकृतजन्मा तद् च लखमाई ॥३॥
तनयस्तयोः सुविनयः कालू नामा कृतानुकृतसुकृती । तज्जाया असमाई ललितादेवी च वीराई ॥४॥
श्रीजिनभवनजिनार्चापुस्तकसंघादिके सदा क्षेत्रे । वित्तव्ययस्य कर्त्ता दानार्थिजनान् समुद्धर्त्ता ॥५॥युग्मं॥
श्रीमत्कालूनाम्ना निजकरकमलार्जितेन वित्तेन । चित्कोशे सिद्धांताः ससूत्रका वृत्तिसयुक्ताः ॥६॥
श्रीमद्वाचकनायकमहीसमुद्राभिधानमुखकमलात् । लब्ध्वा वरोपदेशं नदतु च लेखिताः सुचिरं ॥७॥

संवत् १५९६ वर्षे मिती काती सुदि ७ दिने शनिवारे वा०जयशीलगणिना जेसलमेरभंडारमध्ये मुक्ता प्रतिरियं ॥

क्र. २१७६ **दशवैकालिकसूत्रलघुवृत्ति** पत्र ४८ । भा. सं. । क. सुमतिसूरि । स्थि. जीर्णप्राय । पं. १५ । लं. प. १२×४॥

क्र. २१७७ **निरुक्तिकांड** पत्र २१ । भा. सं. । स्थि. मध्यम । पं. १२ । लं. प. १२×४।

क्र. २१७८ **प्रशमरतिप्रकरण** पत्र २ । भा. स. । क. उमास्वातिवाचक । स्थि. मध्यम । पं. १७ । लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१७९ **चिंतामणि** पत्र ६ । भा. स. । स्थि. मध्यम । पं. ९ । लं. प. ११।×४॥।

क्र. २१८० **त्रूटक पानाना टूकडा**

पोथी १२५ मी

क्र. २१८१ **संकाशकथानक** पत्र ३ । भा. सं. । क. सर्वलाभगणि । स्थि. जीर्ण । पं. १० । लं. प. ११॥।×४

क्र. २१८२ **व्याकरणन्यायसंग्रह** पत्र २ । भा. स. । ग्रं. १७५ । स्थि. जीर्ण । पं. १८ । लं. प. ११॥।×४

क्र. २१८३ (१) **कौतुकमंजरी** पत्र १–३ । भा. सं. । क. जयचंद्रसूरि । ग्रं. १४२ ।
(२) **कौतुकमंजरीटीका** पत्र ३–५ । भा. स. । स्थि. श्रेष्ठ । पं. १८ । लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१८४ **कविशिक्षा** पत्र ८ । भा. सं. । ग्रं. ५२५ । स्थि. श्रेष्ठ । पं. १७ । लं. प. ११॥।×४

क्र. २१८५ **आलोचनाविधि** अपूर्ण पत्र ६ । भा. सं. । स्थि. जीर्ण । पं. १७ । लं. प. ११॥×४. । उंदरे करडेली छे ।

क्र. २१८६ **कर्पूरप्रकरवृत्ति अपूर्ण** पत्र २–५२ । भा. सं. । स्थि. जीर्ण । पं. १३ । लं. प. ११॥×४

क्र. २१८७ **प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार** पत्र ५ । भा. स. । स्थि. जीर्ण । पं. २२ । लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१८८ **सम्यक्त्वकौमुदी** पत्र २९ । भा. सं. । स्थि. जीर्ण । पं. १६ । लं. प. ११॥।×४

क्र. २१८९ **शोभनस्तुतिचतुर्विंशतिका टिप्पणीसह** पत्र ८ । भा. सं. । क. शोभनमुनि । ले. सं. १५६० । स्थि. श्रेष्ठ । पं. ११ । लं. प. ११॥।×४

क्र. २१९० दमयंतीकथा-नलचंपूविवरण पत्र ४३। भा. सं.। क. चंडपाल। ले. सं. १४७६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ११॥×४।

क्र. २१९१ बंधस्वामित्व तृतीयकर्मग्रंथ वृत्तिसह प्राचीन पत्र ७। भा. प्रा. सं.। ले. सं. १४९६। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९२ प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ३३। भा. प्रा.। क. नेमिचंद्रसूरि। पं. १९। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९३ (१) एकाक्षरीनाममाला पत्र १। भा. स.।

(२) एकाक्षरीनिर्घंटुनाममाला पत्र १-३। भा. सं.। क. सुधाकलश।

(३) शब्दप्रभेदनाममाला पत्र ३-८। भा. सं.। क. महेश्वर भट्टारक। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९४ प्रवचनसारोद्धारप्रकरणलघुवृत्ति पत्र ५१। भा. स.। क. उदयप्रभसूरि। ग्रं. ३२०२। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १८। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९५ संघपट्टकप्रकरण वृत्तिसह पत्र ४२। भा. सं.। मू. क. जिनदत्तसूरि। टी. क. जिनपतिसूरि। ग्रं. ३६००। स्थि. जीर्ण। पं. १९। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९६ उपदेशमालाप्रकरण पत्र १०। भा. प्रा.। क. धर्मदासगणि। स्थि. जीर्ण। पं. १७। लं. प. ११॥।×४

क्र. २१९७ (१) बृहत्क्षेत्रसमास विवरण सह पत्र २६। भा. प्रा. स.। मू. क. जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण। वि. क. मलयगिरि।

(२) लोकनालिकाद्वात्रिंशिका मूल तथा अवचूरि पत्र २६-२७। भा. प्रा. स.। मू. क. धर्मघोषसूरि। स्थि. जीर्ण। पं. २०। लं. प. ११॥।×४

क्र. २१९८ षडावश्यकसूत्रबालावबोध अपूर्ण पत्र ५१। भा. गू.। क. तरुणप्रभसूरि। स्थि. जीर्ण। पं. १८। लं. प. ११॥।×४।

क्र. २१९९ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी सटीक पत्र ?। भा. प्रा. स.। मू. क. श्रीचंद्रसूरि। टी. क. देवभद्रसूरि। स्थि. जीर्ण। पं. १७। लं. प. ११॥।×४

क्र. २२०० अनुयोगद्वारसूत्र पत्र ३०। भा. प्रा.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १३। लं. प. ११॥।×४

क्र. २२०१ अगडदत्तकथा पत्र ७। भा. प्रा.। स्थि. जीर्ण। पं. १८। लं. प. ११॥×४.। उंदरे करडेली छे।

क्र. २२०२ धर्मकुटुंबकथा-अष्टप्रकारीपूजाफलविषये पत्र ३। भा. स.। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ११॥।×४

क्र. २२०३ तत्त्वचिंतामणिआलोक अपूर्ण पत्र ३६। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ९। लं. प. ११॥।×३॥।

पोथी १२६ मी

क्र. २२०४ ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र ८१। भा. प्रा.। ले. सं. १६१९। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १७। लं. प. ११॥।×४

क्र. २२०५ अष्टकप्रकरण वृत्तिसह पत्र १९। भा. सं.। मू. क. हरिभद्रसूरि। टी. क. अभयदेवसूरि। ग्रं. २३७०। ले. सं. १५०९। स्थि. जीर्ण। पं. २४। लं. प. ११॥×४।

क्र. २२०६ सम्यक्त्वस्वरूपस्तव सावचूरिक पत्र ३। भा. प्रा. सं.। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ११॥×४

क्र. २२०७ कविशिक्षा काव्यकल्पलतावृत्तिसह पत्र ४६। भा. सं.। क. अमरचंद्रसूरि स्वोपज्ञ। ग्रं. ३३५०। स्थि. जीर्ण। पं. १७। लं. प. ११॥×४

क्र. २२०८ तर्कपरिभाषा पत्र १०। भा. सं.। क. केशवमिश्र। ले. सं. १५४६। स्थि. जीर्ण। पं. १९। लं. प. ११×४.। उदरे करडेली छे।

अन्त—

संवत् १५४६ वर्षे श्रावणशीतात् त्रयोदशीदिने गुरौ श्रीपार्श्वतीर्थे श्रीदेवकर्णराज्ये श्रीजेसलमेरौ ॥

क्र. २२०९ षष्टिशतप्रकरण सटीक पत्र ५४। भा. प्रा. स.। मू. क. नेमिचंद्र भंडारी। टी. क. गुणरत्नोपाध्याय। स्थि. श्रेष्ठ। पं १६। लं. प. ११॥×४

क्र. २२१० प्रवचनसारोद्धारप्रकरण पत्र ४८। भा. प्रा.। क. नेमिचंद्रसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ११×४

क्र. २२११ कथासंग्रह पत्र ९। भा. सं.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १६। लं. प. ११×४

क्र. २२१२ खंडप्रशस्तिकाव्य पत्र ९। भा. स.। स्थि. जीर्ण। पं. ११। लं. प. ११×३॥

क्र. २२१३ व्रतविधिसंग्रह पत्र १७। भा. प्रा. स.। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ११×४

क्र. २२१४ आराधनाविधिआदि पत्र २१। भा. प्रा. स। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १५। लं. प. ११×४

क्र. २२१५ भर्तृहरित्रिशती सावचूरिक पंचपाठ पत्र १८। भा. स.। मू. क. भर्तृहरि। स्थि. जीर्ण। पं. १४। लं. प. ११×३॥

क्र. २२१६ चैत्यवंदनादिभाष्यत्रय सावचूरिक पत्र २७। भा. प्रा. सं.। मू. क. देवेन्द्रसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ११×४॥

क्र. २२१७ (१) जयतिहुयणस्तोत्र सटीक पत्र १-९। भा. प्रा. सं.। मू. क. अभयदेवसूरि।
(२) जीवविचारप्रकरण सटीक पत्र ९-१५। भा. प्रा. स.। मू. क. शांतिसूरि।
(३) संसारदावास्तुति सटीक पत्र १५-१७। भा. प्रा. सं.। टी. क. पार्श्वचंद्र। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १२। लं. प. ११×४।

क्र. २२१८ हनुमंतवज्रकवच पत्र ७। भा. स.। स्थि. मध्यम। पं. ८। लं. प. ११×४

क्र. २२१९ प्रश्नव्याकरणदशांगसूत्र पत्र ४-२६। भा. प्रा.। स्थि. जीर्ण। पं. १५। लं. प. ११×४.। पाणीथी भींजाएली छे।

पोथी १२७ मी

क्र. २२२० कल्पसूत्रसंदेहविषौषधिटीका पत्र ३१। भा. प्रा. सं.। टी. क. जिनप्रभसूरि। स्थि. श्रेष्ठ। पं. २२। लं. प. १२×४.। किनारी उंदरे करडेली छे।

क्र. २२२१ प्रमेयरत्नकोश आदि पत्र ३२। भा. सं.। स्थि. जीर्ण। पं. २०। लं. प. १२×४

(१) प्रमेयरत्नकोश पत्र १-१०। क. चन्द्रप्रभसूरि।

(२) महाविद्याविडंबन पत्र १०-२०। क. वादींद्र।

(३) विदग्धमुखमंडन पत्र २०-२४। क. धर्मदास।

(४) अनेकार्थतिलककोश पत्र २४-३२। भा. सं.। क. महीप। र. सं १४३०।

क्र. २२२२ नंदिताढयछंदःशास्त्र सटीक पत्र ५। भा. स.। टी. क. रत्नचद्र। स्थि. जीर्ण। पं. १९। लं. प. १२।×४

क्र. २२२३ सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति टिप्पणीसह चतुष्कवृत्ति पर्यंत पत्र ८९। भा. स.। क. हेमचंद्राचार्य स्वोपज्ञ। स्थि. श्रेष्ठ। पं ११। लं. प. १२।×४

क्र. २२२४ श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि पत्र ६९। भा. प्रा। स्थि. जीर्ण। प. १५। लं. प. ११॥।×३॥।

क्र. २२२५ कर्मविपाककर्मग्रंथ सटीक पत्र २९। भा. प्रा. स.। ग्रं. ४८०। स्थि. श्रेष्ठ। पं. ११। लं. प. ११।×३॥

क्र. २२२६ समयसार सटीक पत्र २३। भा प्रा. स.। ले. सं. १४३५। स्थि. जीर्ण। पं. ९। लं. प. १०×३

क्र. २२२७ प्रश्नप्रदीप पत्र १। भा स.। स्थि. मध्यम। पं १३। लं. प. ८॥×३।

क्र. २२२८ योगशत सटीक पत्र २१। भा स। ले. सं. १५४५। स्थि. जीर्ण। पं. ११। लं. प. ८॥।×३।

क्र. २२२९ पाशाकेवली पत्र ७। भा. गू.। स्थि मध्यम। पं ८। लं प. ८॥।×३।

क्र. २२३० प्रश्नशतावचूर्णि पत्र ६। भा स.। स्थि. मध्यम। पं. २०। लं. प. ९॥।×३।

क्र. २२३१ सारसंग्रह पत्र १०। भा. स.। क. वरदराज। स्थि मध्यम। पं ८। लं. प. ९॥×२॥

पथी १२८ मी

क्र. २२३२ हरिवंशपुराण पत्र २०१-३९६। भा. स.। ले. सं. १७२७। स्थि. जीर्ण। पं. १०। लं. प. ११॥×५.। उंदरे करडेली छे।

क्र. २२३३ समयसारनाटक सटीक पत्र ९३। भा. स.। मू. क. अमृतचन्द्राचार्य। टी. क. देवेन्द्रकीर्ति। टी. र. सं. १७८८। ले. सं. १८२८। स्थि. श्रेष्ठ। पं. १४। लं. प. ११॥×५।

क्र. २२३४ सप्ततिकाकर्मग्रंथ सस्तबक यंत्रसह पत्र ३८। भा. प्रा. गू.। स्थि. जीर्ण। पं. २१। लं. प. ११॥×५

क्र. २२३५ प्रवचनसारोद्धारटीका अपूर्ण पत्र ४४। भा. स। क सिद्धसेनाचार्य। स्थि. जीर्णप्राय। पं. १६। लं. प ११॥×५

क्र. २२३६ दशवैकालिकसूत्रनां गीतो आदि पत्र ६। भा गू.। स्थि. मध्यम। पं. १५। लं. प. १०।×४॥

(१) दशवैकालिकगीत क. खेतसी-पुण्यकलश शिष्य।

(२) मेघकुमारसज्झाय क. श्रीसार।

(३) धन्यर्षिसज्झाय क. नयरंग।

(४) धन्यर्षिसज्झाय **क.** विद्याकीर्ति।

(५) अनाथीमुनिसज्झाय **क.** अभयचंद्र।

(६) ढंढणऋषिसज्झाय **क.** जिनहर्ष।

क. २२३७ बटुकभैरवस्तोत्र मंत्राम्नायसह अपूर्ण पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** ११। **लं. प.** ११×४॥।

क. २२३८ चातुर्मासिकव्याख्यान पत्र ९। **भा.** स.। **क.** क्षमाकल्याण। **ले. सं.** १८३९। **ग्रं.** ४०१। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १६। **लं. प.** ११॥×४॥।

क. २२३९ यशोधरनृपचरित्र गद्य पत्र ३४। **भा.** स। **क.** क्षमाकल्याण। **र. सं.** १८३९। **ले. सं.** १८३९। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११।×४॥।

अंत--

सवत् १८३९ मिते वैशाखमासे श्रीजेसलमेरुद्रंगे भ० श्रीजिनचद्रसूरीश्वरविजयिराज्ये वाचकअमृतधर्मगणिनां। प. क्षमाकल्याणगणियुतानां उपदेशात् सा। घारसीजीकस्य लघुभार्या फतूबाई तया स्वपरोभयज्ञानवृद्धयर्थ स्वश्रेयोर्थे च पुस्तकमिद लेखयित्वा ज्ञानभांडागारे स्थापित सद्भिर्वाच्यमान चिर नदतु॥

क. २२४० साधुविधिप्रकाश पत्र १६। **भा.** स। **क.** क्षमाकल्याण। **ग्रं.** ७००। **र. सं.** १८३८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११।×४॥।

क. २२४१ श्राद्धविधिप्रकाश पत्र ११। **भा.** स. गू.। **क.** क्षमाकल्याण। **र. सं.** १८३८। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११।×४॥।

पथी १२९ मी

क. २२४२ उपासकदशांगसूत्र सस्तबक अपूर्ण पत्र ३२। **भा.** प्रा. गू.। **स्थि.** जीर्ण। **पं.** १८। **लं. प.** ११॥×४॥

क. २२४३ आवश्यकहारिभद्रीयवृत्ति पत्र १०८-४२२। **भा.** स.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ग्रं.** २२०००। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११॥×४।

क. २२४४ गदाधरीअनुमानखंड-न्याय पत्र ३८। **भा.** स.। **स्थि.** श्रेष्ठ। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४।। प्रति उदरे करडेली छे।

क. २२४५ न्यायग्रंथ पत्र १०१। **भा.** स.। **स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४॥

क. २२४६ न्यायग्रंथ पत्र ९८-२१०। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १५। **लं. प.** ११×४॥

क. २२४७ भवानंदीप्रकाश सटीक पत्र ४७। **भा.** स.। **मू. क.** महादेव। **ले सं.** १८३१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** ११। **लं. प.** ११×४॥

क. २२४८ न्यायग्रंथ पत्र ३१। **भा.** स.। **स्थि** जीर्ण। **पं.** १३। **लं. प.** ११×४॥

क. २२४९ सिद्धांतकौमुदी पत्र १३। **भा** स। **स्थि** श्रेष्ठ। **पं.** १५। **लं. प.** ११×४॥।

क. २२५० नाडकारिका वृत्ति सह तथा तत्त्वनिर्णयविवरण पत्र ६। **भा.** स.। **स्थि.** मध्यम। **पं.** २०। **लं. प.** ११×४॥।

क. २२५१ श्रीचंद्रीयासंग्रहणी बालावबोधसह पत्र ६५। **भा.** प्रा. गू.। **ले. सं.** १८३१। **स्थि.** मध्यम। **पं.** १२। **लं. प.** ११×४॥।

क्र. २२५२ प्रयोगमुखव्याकरण अपूर्ण पत्र ३४। **भा.** सं। **स्थि.** मध्यम। **पं. ११। लं. प.** ११॥×४॥

क्र. २२५३ विशेषशतक बीजकसह पत्र ४३। **भा.** सं.। **क.** समयसुदर। **र. सं. १६८७। स्थि.** जीर्णप्राय। **पं.** २१। **लं. प.** ११×४॥।

पोथी १३० मी

क्र. २२५४ अनेक ग्रंथो अने स्तवन, सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां

पोथी १३१ मी

क्र. २२५५ अनेक ग्रंथो अने स्तवन सज्झाय आदिनां प्रकीर्णक पानां

पोथी १३२ मी

क्र. २२५६ स्तवन, सज्झाय, रास, चोपाई, प्रतिक्रमण अने नवस्मरण आदिना गुटकाओ.

पोथी १३३ मी

क्र. २२५७ तीर्थंकरभगवाननां चित्रो जीर्ण

॥ अहम् ॥

प्रस्तुत सूचीपत्रना पृष्ठ ६४ क्रमांक १७८ (१) बन्धस्वामित्ववृत्ति ग्रन्थकारनी प्रशस्ति—

यत्यालये मन्दगुरूपशोभे सन्मङ्गले मुद्बुधराजहसे। तारापथे वा मुकविचारे श्रीमानदेवाभिधसूरिगच्छे ॥१॥

भव्या बभूवु. शुभशस्यशिष्या. अध्यापका श्रीजिनदेवसंज्ञा ।

तेषां विनेयो गुरुभक्तिपूर्णः समस्ति नाम्ना हरिभद्रसूरिः ॥२॥

अणहिल्लपाटकपुरे श्रीमज्जयसिंहदेवनृपराज्ये। आशावरसौवर्णिकवसतौ विहिताधिवासेन ॥३॥

बन्धस्वामित्वाख्यप्रकरणवृत्तिः समासतो रचिता। तेनेय तनुमतिना प्राक्तनटिप्पनकमवलोक्य ॥४॥

अत्र च यन्मतिमान्द्यादुत्सूत्र विरचित कथञ्चिदपि। तच्छोध्य धीमद्भि. परोपकारैकक्तचित्तै. ॥५॥

वर्षशतैकादशके द्वासप्तत्याऽधिके नभोमासे। सितपञ्चम्यां सूर्ये समर्थिना वृत्तिकेयमिति ॥६॥

अस्यामक्षरगणनाज्जात शतपञ्चक युत षष्ट्या। द्वात्रिंशदक्षरात्मकमदनुष्टुप्छन्दसां प्रायः ॥७॥

॥ इति बन्धस्वामित्वप्रकरणवृत्तिः समाप्ता ॥

प्रस्तुत सूचीपत्रना पृष्ठ १८९ पोथी ८ मीना खंडित क्रमांको

पथी ८ मी

क्र. ७७ संवेगरंगशाला अपूर्ण। भा. प्रा.। **क.** जिनचन्द्रसूरि। **लं. प.** १३।×५।.।
प्रति अतिजीर्ण उधेईए खाधेली अस्तव्यस्त छे।

क्र. ७८ जीवसमासप्रकरण वृत्तिसह पत्र १०८। **भा.** प्रा. सं.। **वृ. क.** मलधारी हेमचन्द्रसूरि।
ग्रं. ६६२७। **ले. सं.** १४९९। **लं. प.** १३।×५।.।
प्रति उंदरे करडेली, पाणीमां भींजाएली, जीर्ण अने अस्तव्यस्त छे।

प्रस्तुत सूचीपत्रना पृष्ठ २८१ पोथी ६५-६६ ना क्रमांको

पोथी ६५ मी

क्र. १२७४ (१) न्यायतात्पर्यटीका द्वितीयाध्याय पर्यन्त टिप्पणी सह पत्र ५ थी १८९।
क. वाचस्पतिमिश्र। **ले. सं.** १२७९। **लं. प.** १८॥×३॥। प्रति अतिशुद्ध। पत्र ३७मु नथी।

(२) न्यायतात्पर्यटीका तृतीयाध्यायथी सम्पूर्ण टिप्पणी सह पत्र १९० थी
२८०। **क.** वाचस्पतिमिश्र। **ले. सं.** १२७९। **लं. प.** १८॥×३॥.। प्रति अतिशुद्ध।
अन्त—श्रीवाचस्पतिमिश्रविरचितायां न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीकायां पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥छ॥
आदर्शदोषान्मतिविभ्रमाद्वा यदर्थहीन लिखित मयाऽत्र।
तत् सर्वमार्यैः परिशोधनीय प्रायेण मुह्यन्ति हि ये लिखन्ति ॥१॥
॥ सवत् १२७९ भाद्रपद वदि १३ लिखितम् ॥छ॥

(३) न्यायभाष्य टिप्पणीसह अपूर्ण पत्र २८१ थी ३५०। **क.** वात्स्यायनमुनि।
ले. सं. १२७९। **लं. प.** १८॥×३॥.। प्रति अतिशुद्ध।

पथी ६६ मी

क्र. १२७५ (१) न्यायवार्त्तिक टिप्पणीसह पत्र ८ थी १५७। **क.** भारद्वाज। **ले. सं.** १२७९।
लं. प. १८॥×३॥
अन्त—
योऽक्षपादमृषिं न्यायः प्रत्यभाद् वदतांवरम्। तस्य वात्स्यायन इद भाष्यजातमवर्त्तयत् ॥१॥
जातीनां सप्रपञ्चानां निग्रहस्थानलक्षणम्। शास्त्रस्य चोपसहारः पञ्चमे परिकीर्त्तितः ॥
यदक्षपादप्रतिमो भाष्य वात्स्यायनो जगौ। अकारि महतस्तस्य भारद्वाजेन वार्त्तिकम् ॥
॥छ॥ इति पञ्चमोध्यायः समाप्त ॥छ॥ न्यायवार्त्तिकं समाप्तमिति ॥छ॥
संवत् १२७९ वर्षे फागुन सुदि ६ बुधे प्रह्लादनपुरस्थितेन ठ. बिल्हणेन न्यायवार्त्तिकपुस्तक समाप्तमिति ॥
श्रीमज्जिनपतिसूरिशिष्यश्रीजिनेश्वरसूरीणां उपदेशेन।

नूतनलिखित—
संवत् १७४५ रा श्रावण सुदि १३ सोमे। भट्टारक जगमयुगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीणां प्रथमशिष्यपण्डितो-
त्तमप्रवर श्रीसकलचन्द्रगणिमणीनां शिष्यमुख्यमहोपाध्यायश्रीसमयसुन्दरजीगणीनां शिष्यवाचनाचार्यश्रीमेघविजय-
गणिमणीनां शिष्यवाचनाचार्यश्रीहर्षकुसलगणिमणीनां शिष्यवाचनाचार्यश्रीहर्षनिधानगणिमणीनां शिष्य प. हर्षसागर-
भ्रातृ श्रीज्ञानतिलकशिष्य वेणीदास चिर. तोडरमल चिर धर्मदास सपरिकरसहितैं लिखिता सोधिता ॥

(२) तात्पर्यपरिशुद्धि टिप्पणीसह अपूर्ण पत्र १५७-२ थी ३२५। **क.** उदयनाचार्य।
ले. सं. १२७९। **लं. प.** १८॥×३॥.। अतिशुद्ध।

प्रदर्शनीमंजूषामां (शोकेसमां) मूकेली वस्तुओ

१ एक डब्बामां प्राचीन ताडपत्रीय पुस्तकोना टूकडाओ

२ ताडपत्रीय अनेक ग्रंथोनां पानां

३ श्रीमहावीरस्वामि भगवाननां पांच कल्याणकनी चित्रपट्टिका

४-५ चोवीस तीर्थंकरोनी माताओनी बे चित्रपट्टिकाओ

६ जलक्रीडा आदि विषयक चित्रपट्टिका

आ चित्रपट्टिकामां जिराफनु चित्र छे, जे ऐतिहासिक अने प्राणिशास्त्रनी दृष्टिए घणुज महत्त्वनु छे। आ पट्टिकानी बीजी बाजुए चौद स्वप्नो चीतरेला छे।

७ नदी अने जलाशय दृश्य विषयक चित्रपट्टिका

८ भगवान श्रीऋषभदेवना जीवनप्रसंगविषयक चित्रपट्टिका

(१) भगवानना भिक्षायाचनामां स्त्री-हाथी-घोडा वगेरेनु दान अने तेनो अस्वीकार तथा श्रेयांसकुमारनु इक्षुरसदान

(२) नमि-विनमि कुमारोनी राज्यभागयाचना आदि प्रसंगो.

९ निशीथसूत्र साथेनी पट्टिका

आ पट्टिका आचार्य श्रीजयसिंहना नामथी अलंकृत छे। आमां हाथी-सिंह आदि प्राणियोनां सुंदर चित्रो छे तथा आ पट्टिकानो रंग अति प्रभावित छे। पट्टिका उपर "निसीहभास्यपुस्तक श्रीजयसिंहाचार्याणाम्" एवो उल्लेख छे।

१० काष्ठपट्टिका

आ पट्टिका चित्र विनानी होवा छतां, ए श्रीखरतरगच्छीय महप्रभावक युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरि महाराजना नामथी विभूषित होई घणी ज महत्त्वनी छे। आ पट्टिकाओ दशवैकालिकचूर्णि अने टीकानी प्रति साथे जोडाएली हती। पट्टिका उपर "॥छ॥ श्रीमज्जिनदत्तसूरीणां दशवैकालिकवृत्तिचूर्णिश्च ॥छ॥ प्रधानाक्षरा ॥" एवो उल्लेख छे.

११ भगवान महावीरना जीवनप्रसंगने लगती खंडित चित्रपट्टिका

॥ अर्हम् ॥

जेसलमेर तपागच्छीय ज्ञानभंडारगत ताडपत्रीय ग्रंथो

१ पंचाशकप्रकरण पत्र ७७। **भा.** प्रा.। **क.** हरिभद्रसूरि। **ले सं.** ११९५। **लं. प.** १५×२। **अन्त**—संवत् ११९५ वर्षे लिखिता।

२ ऋषभदेवचरित्र पद्य पत्र १-२०४। **भा.** स.। **क.** जयसिंहसूरि। **ग्रं.** ३१००। **ले. सं.** १३३०। प्रथम पत्रमां ऋषभदेव तथा २०३ पत्रमां ग्रंथ लखावनार श्रावक श्राविकानु चित्र छे।

अन्त—

इति श्रीजयसिंहसूरिविरचिते पुरुषरत्नगदिते जिनयुगलचरिते मरीचिभवभाविशलाकापुरुषभगवन्निर्वाण-वर्णनो नाम षष्ठः प्रस्तावः समाप्तः ॥ तत्समाप्तौ च समाप्त श्रीमदृषभदेवचरितम् ॥छ॥छ॥

श्रीमदृषभदेवस्य चरित्रमिदमुत्तमम्। सदैव सततानन्दहेतवेऽस्तु स्तुतिस्पृशाम् ॥१॥
कुलप्रभप्रभायुक्तो नरेश्वरकृतस्थितिः। पद्मानन्दकरो देवो जयसिंहः श्रियेऽस्तु व. ॥२॥
वृत्तेऽत्र ग्रन्थमानेन सहस्रत्रितय मतम्। अनुष्टुभामिति तथा शतेनैकेन संयुतम् ॥३॥
ग्रथाग्रथ ३१०० ॥छ॥ मगल महाश्रीः॥ शुभ भवतु लेखकपाठकश्रोतॄणाम् ॥छ॥छ॥
वर्षे त्रयोदशांत्र(शान्त्रि)शे मार्गे श्वेतेऽह्नि पञ्चमे। वृषभस्य कृत वृत्त श्रीजयसिंहसूरिभि. ॥

धत्ते कुन्तलसन्ततिर्जिनपतेर्यस्यांसदेशे स्थितिं वक्त्राम्भोरुहसौरभाकुलमिलद्भृगावलीविभ्रमम्।
स श्रेयःश्रियमातनोतु जगतीनेता विनीतावनीपाविव्यप्रथमावतारचतुरः श्रीनाभिसूनुर्जिन ॥१॥

श्रीमालान्वयसभव शुभमति श्रेष्ठी पुरा जेसल
स्तत्पुत्रो विजयाभिधो गुणनिधि सिंहावतार पुर।
तत्पत्न्यस्ति त्रपालसप (?) सुता तत्कुक्षिसभूतया
लक्ष्मा(क्ष्म्याऽ) लेख(खि) युगादिदेवचरित श्रेयोऽर्थमत्रात्मन ॥२॥

य(ज)ह्ने यस्या आंबडो बधुराद्य सोभाकाह्व सालिगो भीमसिंह।
तस्मादेव माहण· पद्मसिंह सामताख्यो माणिकस्तु स्वसैका ॥३॥
अय हि पुस्तक· स्वस्तिहेतवेऽस्तु निरन्तरम्। सूरिभिर्वाच्यमानस्तु श्रीमद्यादिजिनेशितु ॥४॥
यतः कल्पद्रुमनिर्भश्चिन्तितार्थप्रदायक। स एव भविनामस्तु सर्वदा सर्वसिद्धिद ॥५॥
त्रिंशत्त्रयोदशे१३३०वर्षे विक्रमाद् भक्तितस्तथा। श्रीजयसिंहसूरीणा पुस्तकोऽय समर्पित ॥६॥

स्वःशैलस्वर्णदण्डोपरिरचितककुप्शालभजीसशोभ
तारामुक्तावचूल जलनिधिविलसज्झल्लरीसुन्दरान्तम्।
यावद् व्योमातपत्र तपनतपमथो बद्धगंगादुकूल
तावद् व्याख्यायमानो जगति विजयतां सूरिभि· पुस्तकोऽयम् ॥७॥

शुभमस्तु सर्वजगत परहितनिरता भवन्तु भूतगणा·। दोषा प्रयान्तु नाश सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥१॥

३ महावीरचरित्र पत्र २०६-४०७। **भा.** स.। **क.** जयसिंहसूरि। **ले. सं.** १३३०। **लं. प.** १८×२।

४ धर्मरत्नप्रकरणस्वोपज्ञवृत्तिसह पत्र १९८। **भा.** स.। **क.** शांतिसूरि स्वोपज्ञ। **ले. सं.** १३०९। **लं. प.** १६×२।

अन्त—

इति श्रीसिद्धांतसग्रहभूषा भव्यजनहिता नाम धर्मरत्नवृत्तिः समाप्ता ॥

चंद्रकुलांबरविधुभिः परोपकारैकरसिकचेतोभिः । श्रीशांतिसूरिभिरिय बुधप्रिया विरचिता वृत्तिः ॥

संवत् १३०९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ बुधे अद्येह धवलक्कके श्रे सीधासुत सहजलेन धर्मरत्नप्रकरणपुस्तिका लिखापिता ।

५ महानिशीथसूत्र पत्र २९५ । **भा.** प्रा. । **ले. सं.** अनु. १४ श । **लं. प.** १८×२ ।

६ उपदेशमालाहेयोपादेयाटीका पत्र २३५ । **भा** स । **क** सिद्धर्षि । **ग्रं.** ४०६१ । **ले. सं.** अनु १४ श । **लं. प.** १६॥×२॥

७ हरिविक्रमचरित्र पत्र ३०० । **भा.** स. । **क.** जयतिलकसूरि । **ले. सं.** १४१५ । **लं. प.** १७॥×२

अन्त—

सवत् १४१५ वर्षे अद्येह स्तंभतीर्थे प्रतिलिखिता ।

८ कल्पसूत्र सचित्र सुवर्णाक्षरी कागळ उपर लखेली अतिसुंदर अने सुरक्षित प्रति ।

अन्त—

ग्रथाग्र १२१६ ॥छ॥ सवत् १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि सप्तमी शनिवारे लिखित मत्रि वाछाकेन ॥छ॥

ए ६० ॥ नम सर्वज्ञाय ॥

श्रीवीरतीर्थकरराजतीर्थे सुधर्मनामा गणभृद् बभूव । तद्वशमुक्ताफलमजुलश्रीर्जम्बूमहात्मा प्रभव प्रभुश्च॥१॥
शय्यभव स्वांगरुहोपकर्ता सूरिर्यशोभद्रमुमुक्षुभर्ता । संभूत आर्योऽजनि भद्रबाहुः श्रीस्थूलभद्रश्च महागिरिश्च ॥२॥

सुहस्तिसूर्याऽऽर्यसमुद्रसूरी श्रीआर्यमगुश्च गुरु सुधर्मा ।
श्रीभद्रगुप्तोऽर्पितसर्वशर्मा स्वामी च वज्रोऽद्भुतसौभगश्री ॥३॥
श्रीआर्यरक्षितगुरुर्हरिभद्रसूरिसार क्रमादपि ततोऽजनि नेमिचन्द्र ।
उद्योतनो मुनिपतिर्गुरुवर्द्धमान श्रीमज्जिनेश्वरयतीश्वरकुञ्जरोऽभूत् ॥४॥
चान्द्र कुले श्रीजिनचन्द्रसूरि सविग्नभावोऽभयदेवसूरि ।
सद्वल्लभः श्रीजिनवल्लभोऽपि युगप्रधानो जिनदत्तसूरि ॥५॥
भाग्याधिक श्रीजिनचन्द्रसूरि क्रियाकठोरो जिनपत्तिसूरि ।
जिनेश्वर सूरिरुदारचेता जिनप्रबोधो दुरितापनेता ॥६॥
प्रभावक श्रीजिनचन्द्रसूरि सूरिर्जिनादि. कुशलावसानः ।
पद्मापद श्रीजिनपद्मसूरिर्लब्धेर्निधानं जिनलब्धिसूरि ॥७॥
सांवेगिक श्रीजिनचन्द्रसूरि जिनोदयः सूरि बभूव सूरि. ।
तत. पर श्रीजिनराजसूरिर्युगप्रधाना जिनभद्रसूरयः ॥८॥
तदास्पदव्योमतुषारभावनवोदया. शुद्धनया महाधिय ।
स्याद्वादपकेरुहपद्मपाणयो जयन्त्यमी श्रीजिनचन्द्रसूरय. ॥९॥

इतश्च—

ऊकेशवशे सश्रीके बभूवतुर्मनोरमे । भाण्डशालिकशाखायां लूणाढूल्हाभिधौ नरौ ॥१०॥
पाश्चात्यपदमादृत्त ताभ्यां सामलसघे तु । शत्रुजयोज्जयताद्रितीर्थयात्रा व्यधीयत ॥११॥
तथा ढूल्हांगजो जातो हांयलाह्वो महीतले । मूलामांडलिकाजाह्वास्तत्सुता विश्रुता इमे ॥१२॥
मूलाकस्याभवस्तेषु भीम-हीडण-तान्दणाः । देवराज-महीराजावित्येते पच नन्दनाः ॥१३॥

तत्रापि साधुभीमस्य भरमादेव्यभूत् प्रिया। तत्कुक्षिशुक्तिमुक्ताभाश्चत्वारः सन्ति सूनवः ॥१४॥
प्रथमो नायकस्तत्र दूदाख्यस्त्वपरः पुनः। तृतीयः सुरपतिश्च दशराजस्तुरीयकः ॥१५॥
माऊ भाऊ वरणू इति तिस्रः पुत्रिकाः पवित्राशा। नायकजाया जज्ञे नायकदेवी च धर्मिष्ठा ॥१६॥
सीधरो देवनामा च गोविंदश्च तदगजा। तेषु सीधरजायाऽस्ति हीराई तत्सुतद्वयम् ॥१७॥
नउला कोला सञ्ज्ञा जसमाई-कुंउरि-चंद्रिकाः पुत्र्यः। देवाकस्य प्रिये स्तो धन्नाई चापरा सांपूः ॥१८॥
धन्नाईकुक्षिसंभूतो जगमालः सुता पुनः। नाथी नाम्ना विजयते चन्द्रोज्ज्वलगुणा तथा ॥१९॥
गोविंदस्य प्रियायुग्मं चंगाई इंदुनामिका। दूदाकस्य प्रिया रम्या चंपाई पुण्यतत्परा ॥२०॥
वर्त्तते तत्तनयाश्चत्वारश्चतुरबुद्धयः सन्तः। मण्डन-हमीर-समधर-साधारणनामकाः क्रमशः ॥२१॥
द्वे पुत्रिके तु रूपाई हंसाई इति विश्रुते। जाता सुरपतेर्जाया कुशली कुशलाशया ॥२२॥
जीवणिश्च दशाकस्य प्रिया पुत्रो महीपतिः। सोनपालश्च रंगाई चंगाई चापि पुत्रिके ॥२३॥
लीलादेव्याः सुतः पूनपालः पुत्रीद्वयं तथा। देमाई चाथ पूनाईरित्याद्येषां सुसंततिः ॥२४॥

किंच—

महातीर्थे महायात्रा सांघपत्योपसूचिका। विनिममे महीराज नायकार्यैः सविस्तरा ॥२५॥
अपि चेति महेभ्यैश्च जीरापल्ल्यां तथाऽर्बुदे। श्रीमद्देवनमस्याभिः स्वलक्ष्मीः सफला कृता ॥२६॥
कृता षट् पट्टने यात्रा तथा सत्यपुरे पुरे। सर्वैर्नायकदूदाद्यैः कारितः पौषधालयः ॥२७॥
अथ दूदादशाभ्यां तु सम सुश्राद्धसीधरः। पंचम्युद्यापनं चक्रे भूनंदमनुवत्सरे १४९१ ॥२८॥
नन्दनदाब्धिचन्द्राक १४९९ सख्ये वर्षेऽपि संघयुक्। यात्रामासूत्रयामास शत्रुंजयोज्जयंतयो ॥२९॥
दशाख्योऽथ तथा भ्रातृसुतौ श्रीधर-मण्डनौ। भाग्नेयो धनपालश्च सर्वेऽप्येते सनन्त्रकाः ॥३०॥
संघानुमत्या ते धर्मशालां गुर्वीमचीकरन्। वर्षे युग्मकबाणेदु १५१२ मिते श्रीपत्तने पुरे ॥३१॥
साधुसीधरसुश्राद्धो धर्मकर्मधुरंधरः। दीक्षादानोत्सवांश्चक्रेऽनेकान् सम्यक्त्वमोदकान् ॥३२॥
चैत्येषु धर्मशालासु तथा साधर्मिकेष्वपि। द्रव्यव्ययं करोत्येष सर्वदैव शुभाशयः ॥३३॥

ततश्च—

आदेशतः श्रीजिनचन्द्रसूरिराजेश्वराणामिह सीधराख्यः।
सिद्धांतलक्षं प्रविलेख्य हैममलीलिखच्चित्रितकल्पपुस्तकम् ॥३४॥
वेदपक्षेषुभूसंख्ये १५२४ वर्षे हर्षात् समर्पितम्। सुचिरं नंदतादेतत् सौवर्णं कल्पपुस्तकम् ॥३५॥
नन्दतु खरतरगच्छो नन्दन्तु तदीश्वराः पुनर्गुरवः। नन्दतु पुस्तककारी नंदतु संघः सुकृतकारी ॥३६॥
कृतिरियं वाचनाचार्यसाधुसोमगणीनाम् ॥ संवत् १५२४ वर्षे श्रीअणहिलपाटकनगरे सुरत्राणमहमूदराज्ये श्रीखरतरगच्छाधिराजश्रीजिनचन्द्रसूरीणामादेशेन भ. नायकपुत्र भ. सीधरसुश्रावकेण भ. देवा भ. गोइंद भ. नउला भ. कउलाप्रमुखपरिवारसश्रीकेण कल्पपुस्तकमिदं लेखितम्। वाच्यमानं चिरं नंदतात्। लिखितं मंत्रिवाछाकेन ॥छ॥ श्रीशुभं भवतु ॥छ॥ श्री ॥ १ ॥

॥ अर्हम् ॥

जेसलमेरुनगरस्थ लोंकागच्छीय ज्ञानभंडारगत ताडपत्रीय प्रतिओ

---*---

क्र. १ (१) ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पत्र १-१५९। **भा** प्रा.। **ग्रं.** ५०६१। **ले. सं.** १३०७। **सं.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। **लं. प** ३१॥×२।.। पत्र २ मां चतुर्विध संघने लगतां **बे** सुदर चित्रो **छे**।

क्र. २ (२) ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रवृत्ति पत्र १६०-३०४। **भा.** स.। **वृ. क.** अभयदेवसूरि। **ग्रं.** ३८००। **र. सं.** ११२०। **ले. सं.** १३०७। सं. श्रेष्ठ। द. श्रेष्ठ। लं. **प.** ३१॥×२।

क्र. ३ (३) निरयावलिकादिपंचोपांगसूत्र पत्र ३०५-३२९। **भा.** प्रा.।

(४) निरयावलिकादि पंचोपांगसूत्रवृत्ति पत्र ३३०-३४७। **भा.** सं.। **वृ. क.** श्रीचंद्रसूरि। **र. सं.** १२२८। **ग्रं.** ६४०।

(५) कल्पसूत्रटिप्पनक पत्र ३४८-३६६। **भा.** स.। **क.** पृथ्वीचंद्रसूरि। **ग्रं.** ६७०।

(६) कल्पसूत्र बारसा पत्र ३६७-४००। **भा.** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **ग्रं** १२१६।

(७) कल्पसूत्रचूर्णि पत्र ४००-४१७। **भा.** प्रा.।

(८) कल्पसूत्रनिर्युक्ति पत्र ४१७-४१९। **भा** प्रा.। **क.** भद्रबाहुस्वामि। **गा.** ६७। **ले. सं** १३०७। **सं.** श्रेष्ठ। **द.** श्रेष्ठ। लं. **प.** ३१॥×२।.।

पत्र—४१८ मां समवसरणनु खडित चित्र छे।

अननां पत्रो उदरे करडेलां छे अने टुकडाओ छे।

अन्त—

मगल महाश्रीः ॥छ॥

........................समहोदधौ। अवतार. सर्वविद्यानां नयानां सरितामिव ॥१॥
सरस्थाने पूर्वं प्रसृतदृढपादौघनिचितप्रशस्यश्रीमालान्वयनिलयसौवर्णकलश।
चतु.श्रेष्ठिश्रेष्ठ; समजनि स...... . ...श्रेष्ठी गुणगरिमगभीरिमगृहम् ॥२॥
तज्जन्मा बहुपाल. समजनि रजनीशविशदगुणनिवह.। विपुलमतिरस्य गृहिणी विपुलमतिर्नाम धर्मरता ॥३॥
तयोर्नयसरोजन्मभानव. सूनवस्त्रयः। ऊदाकआभडगुणपालसंज्ञाः क्रमादमी ॥४॥
.... । ....शामलकेतव. ॥५॥
समभूवन् त्रयः पुत्राः पवित्रगुणशालिन। सर्वदेव. साढदेवश्छाडाकश्च क्रमेण ते ॥६॥
त[था] पवित्रशीलालंकारसार विचारवित्। रत्नी माऊरिति ख्यात पुत्रीयुग्म बभूव तत् ॥७॥
मनोनिहितार्हद्देवः सर्वदेव. सदा शुचिः। ....॥८॥
....। ....राभिध. साधुधर्मे तेने विशुद्धधी; ॥९॥
ज्ञानदर्शनचारित्ररत्नश्रीपरिशीलिता। रत्नी यत्नाद्भुत......रन्तश्रीरिति विश्रुता ॥१०॥
साढाकस्याऽभवद् भार्याद्वन्द्व द्वन्द्वविवर्जितम्। आद्या प्रियमतिरिति श्रियादेवी द्वितीयका ॥११॥
प्रियमतिप्रियाजातौ प्रियौ पुत्रौ बभूवतुः। वीरपालस्तथा देवधरश्चेति सुविश्रुतौ ॥१२॥
श्रियादेव्याः सुतौ जातौ गेहिन..................। .... ॥१३॥
पुत्र्यौ लालदेवीति पूनिणीनामतः श्रुते। जाया देवधरस्याथ देल्हणादेविनामिका ॥१४॥

तयोश्च धांधलाभिख्यस्तनयोऽतिनयान्वितः । साढासुश्रावकस्यैवमन्वयो वर्णितः स्फुटः ॥१५॥
अस्मिन् कुले गुरुकुलमिय सूरिपरम्परा । ... . ॥१६॥
..................................। ....च जयसिंहमुनीशमुख्यः ।
श्रीधर्मघोषगुरुरुग्रयशास्ततोऽपि श्रीमन्महेन्द्रमुनिवन्द्रपतिः प्रतीतः ॥१७॥
तत्पदपद्मसरोवरहंसः श्रीभुवनतुगसूरिवरः । इति गुरुपक्तिभक्तः साढासुश्रावक. सततम् ॥१८॥
अथाऽत्र सर्वदेवस्य महि... . ... । .... ॥१९॥
.... रसम्यक्त्ववासितमतिर्वरशुद्धभाव. ।
दानादिधर्मपरिपालनबद्धकक्षो दीनेषु दानमपि सततमाततान ॥२०॥
शत्रूणां निचखाय पादमुदरे नि.काश्य गर्त्तोदरात् , श्रीभूमीशकुमारपा[ल]......मे ....।
...., ...शुद्धधीः ॥२१॥
यश्चास्मिन् तिमिरपुरे चैत्ये श्रीवीरजिनवरप्रवरम् । स्थापयति स्म सुविस्मयजनक जगतीत्रयस्याऽपि ॥२२॥
.... । ....म्यचेता. ॥२३॥
इत्यादिसद्धर्मविधिर्विधाता आराध्य सुश्रावकधर्ममुच्चै । म[हेन्द्र]सूरीश्वरपादमूले स सर्वदेव ......॥२४॥
तस्य श्रेयस्कृते साढाश्रावको वरपुस्तके। षष्ठाग लेखयामास सूत्रत[द्वृत्तिसंयुतम्] ॥२५॥
....। .... ॥२६॥
[निरयावलि]काश्रुतस्कधसूत्रं वृत्त्यान्वित तथा । पर्युषणाकल्पसूत्रचूर्णिनिर्युक्तिटिप्पनम् ॥२७॥
ज्ञान मानवदानवर्द्धिजनक ज्ञान मदोच्छेदक, ज्ञान दुर्गतिदुर्गभगमुभगं ज्ञान तमस्तोमभित् ।
ज्ञान चोपशमैककारणमिद सवेग ... .॥२८॥
[ज्योति]श्चक्रमचक्रमबरतले यावच्च विद्योतते यावच्छासनमार्हत विजयते यावच्च सघोऽनघ ।
....स्तावन्नन्दतु पुस्तक वरतर वाच्यमान बुधैः ॥२९॥छ॥
मंगल महाश्री. ॥छ॥ संवत् १३०७ वर्षे माघ शुदि १५ सोमे ॥छ॥

क्र. ४ भगवतीसूत्र पत्र ४२२ । **भा.** प्रा. । **ग्रं.** १५६०० । **ले. सं.** अनु. १२ मी शताब्दी । **सं.** जीर्णप्राय । **द.** श्रेष्ठ । **लं. प.** २६।।×२. ।

पत्र ४२२ ना अंतमां त्रण अतिसुंदर **शोभनो** छे।

अन्त—

रासीजुम्मसत सम्मत्त ॥ ४१ सत । सव्वाए भगवतीए अट्ठतीस सयाण १३८ ॥ उद्देसाण १९२५ ॥
चुलसीयसयसहस्सा पयाण पवरवरनाणदसीहिं । भावाभावमणता पण्णत्ता एत्थमगम्मि ॥
तवनियमविणयवेलो जयति सया णाणविमलविपुलजलो । हेउसयविउलवेगो संघसमुद्दो गुणविसालो ॥छ॥
रासीजुम्मसय सम्मत्त ॥ समत्ता भगवती ॥६०३॥

नमो गोयमाईण गणहराण ॥ नमो भगवतीविवाहपन्नत्तीए । नमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥
कुम्मसुसठियचलणा अमलियकोरेंटबिण्टसकासा । सुयदेवया भगवती मम मतितिमिर पणासेउ ॥छ॥

पण्णत्तीए आदिमाणं अट्ठण्ह सयाण दो दो उद्देसया उद्दिसिज्जति। नवरं चउत्थसए पढमदिवसे अट्ठ बीयदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति। नवमाओ सयाओ आरद्ध जावतिय ठाइ तावइयं एगदिवसेण उद्दिसिज्जइ उक्कोसेण सय पि एगदिवसेण, मज्झिमेण दोहि दिवसेहि सय, जहण्णेण तिहिं दिवसेहिं, एव जाव वीसतिम

सयं। नवरं गोसालो एगदिवसेण उद्दिसिज्जइ। जति ठियो एगेण चेव आयबिलेण अणुणव्वइ, अह ण ठियो आयबिलछट्ठेण अणुणव्वइ। एक्कवीसबावीसतेवीसतिमाइ सयाइ एक्केक्कदिवसेण उद्दिसिज्जंति। चउवीसतिम दोहि दिवसेहि छ छ उद्देसगा। पचवीसतिम दोहि दिवसेहि छ छ उद्देसगा। तमियाण आतिमाइ सत्त सयाइ एगेण दिवसेण। सेढिसयाइ बारस एगेण। एगिंदियमहाजुम्मसयाइ बारस एगेण। एव बेदियाणं बारस, तेंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं बारस एगेण। असन्निपचेंदियाण बारस, सन्निपचेंदियमहाजुम्मसयाइ एक्कवीसं एगदिवसेण उद्दिसिज्जंति। रासीजुम्मसय एगदिवसेण उद्दिसिज्जइ ॥ ग्रथाग्र उद्देसतः १५६०० ॥ भगवती समाप्ता ॥ मंगल महाश्रीः ॥छ॥

चे चदसेहरकलासहिओ हवेज्ज सपप्प पक्खममियं जइ नो खिएज्ज।
बोहिज्ज भव्वकुमुयुप्पलमंडल चे, तो चंदगच्छसरिसो सलहेज्ज चदो ॥१॥

तत्थेवऽहेसि सगुणा सिरिसव्वदेवसूरी सुचापसरिसा विणयावनम्मा।
रागारिचूरणपरा न हु लोहबाणा वन्नोत्तमा सगुणकोडिजणाणुजुत्ता ॥२॥

सिरिमुणिचदभिहाणा सज्झायपरायणा उवज्झाया। सजाया तेसिं चिय सुविणेया बाहुबलिविणया ॥३॥

पारंगया जे सुयसायरस्स निस्सगचित्ता तवतेयदित्ता। सूरोवमा बोहियभव्वसत्ता भवाऽवतारणसत्थवाहा ॥४॥

गंगातरगतरलिदियवग्गदुट्ठअस्सालिवज्जमयदामसमा अहेसि।
सीसाहिया सिरिधणेसरसूरिरेसि एरावणिंदुभुयगिंदपवित्तकित्ती ॥५॥

माणेभदारणे सीही पवित्तिणी मियावई। अगोगसेंदिया निच्च तिगुत्तिवज्जपजरे ॥६॥

दियतविस्संतसहस्ससखसाहाउलो पावपरखट्ठो।
वंसो विसालो भुवि वन्नसालो ससोहए सो इह धक्कडाण ॥७॥

तदुब्भवो नागभिहाणसेट्ठी विसिट्ठपत्तोचियदत्तदाणो।
पच्चक्ख......... . नराण दक्खिन्नुदारत्तगुणेगवासो ॥८॥

जो बुद्धिदप्पणतल न कया वि धीरो पक्कीकरेइ परदसणपक्कजोगा।
आसावहूवयणमडलनिम्मलाभ सव्वन्नुभत्तिपुरिसज्जियधम्मलाभो ॥९॥

तत्थऽन्नया......धम्मपरायणस्स चिंताकरी सुपयवी विमला विसाला।
सारस्सउज्जमपरे वयणाण देवी भत्ते जहा कयिजणे विहियप्पसाया ॥१०॥

दाणाइमेएहि चउप्पयारो धम्मो जिणेहिं भणिओ विसिट्ठो।
दाणाभिहाणो मम सो य इट्ठो विसेसओ नाणमओ नराण ॥११॥

एय भयवइसुत्त लिहाविय तेण हेउणा तेण। रविबिंब व पयडय नीसेसपयत्थसत्थाण ॥१२॥

जिणावली जाव महीयलम्मि खंताइओ रेहइ जाव धम्मो।
तेसिं पि जा पंच महव्वयाणि सुपुत्थय नदउ ताव काल ॥१३॥छ॥

मंगल महाश्रीः ॥छ॥छ॥

आ प्रथनी बे बाजूए बे चित्रपट्टिकाओ छे। जेमां नेमिनाथभगवानना नवभवना प्रसगो आलेखाएला छे।

॥ अर्हम् ॥

जेसलमेरुदुर्गस्थ थाहरूशाह ज्ञानभंडार

१. अंगविज्जा पत्र ३३२।

अन्त—

ग्रं. ९००० ॥छ॥ सं. १६६९ वर्षे जेठ वदि २ दिवसे सोमवारे बहुमगलसुरिबुधगुरुजनवर्गे प्रवरतर-न्यायोदयविधिधरणीपालनानुकृतश्रीरामे प्रस्फुरत्प्रचुरतरजगत्त्रयाकृताश्चर्यनिष्पापप्रतापसुरूपसहस्रधामाभिरामे । निजरूप-शोभावैभवतिरस्कृतकामे । श्रीमद्यादवकुलामलकमलिनीदलमरालाबालश्रीभीमनिस्सीमभूमिरामेशे विजयिनि ॥ इतश्च—

श्रीखरतरविधिपक्षे श्रीमज्जिनभद्रसूरिपरंपराशुक्तिकासपुटमौक्तिकानुकारिश्रीजिनमाणिक्यसूरिपट्टधारकेषु स्ववचनरचनारजिताऽकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदस्फारकेषु । जलधिसकलजलचरजतुरक्षाकारेषु । श्रीशत्रुंजयप्रमुख-तीर्थकरमोचकेषु सकलगोरक्षादायकेषु कलिकालकल्कावलोकनकलुषीभूतमनस्समस्तावनुस्सागरांबरधरणीनिवेशितात्म-प्रतापकोट्टपालसाहिसलेमबलिराजेन सतापितं श्रीवीरशासनं निराधारं प्रणष्टसकलसूरिपालनमालोक्य विशिष्टवचोमृतै-स्तमाश्वास्याखण्डजैनशासनरक्षाविधायकेषु युगप्र. श्रीजिनचंद्रसूरिषु खरतरगणसततिं राजन्वतीं कुर्वत्सु तत्पट्टोदय-शैलसहस्रधामानुकारिषु श्रीसाहिकृतसूरिपदमहोत्सवविधिषु चतुर्दशविद्यावधूवरभोगविधानभर्तृषु श्रीजिनसिंहसूरिषु यौवराज्यपद पालयत्सु श्रीमज्जेसलमेरुवास्तव्यकृतानेकधर्मकर्त्तव्यभणसालीगोत्रपवित्रताकारक सा० पूनसी तत्पुत्र सा. श्रीमल्ल तद्भार्या चांपलदे तत्पुत्ररत्नेन धर्मस्थानविषयप्रदत्तबहुद्रविणकृतसकलनगरलोकभोजनपूर्वकनालिकेरयुत-रजतवितरणजीवजतुरक्षागुणस्मारितकुमारपालगुण सा० थिरराजेन सा. हरिराजपुत्रयुतेन स्वकृतनूतनश्रीज्ञानकोशे अंगविद्यापुस्तक लेखितम् ॥ श्रीजिनकुशलसूरिशाखायां वा० श्रीस्वर्णप्रभगणि तच्छिष्य श्री कमलोदयगणितत्शिष्य प. देवसार प. गुणराजजी थिरराजेन पुस्तक लिपीकृता । शिष्य करमचद उदयसघ सपरिवारान् शुभ भवतु । कल्याणमस्तु । अंगविद्यापुस्तक लिपीकृतम् ।

श्रीसाधुकीर्त्युपाध्यायानां शिष्येण प. महिमसुंदरगणिना यथा प्रतिकृतेय प्रति प. ज्ञानमेरु प नयमेरुयुतेन। स. १६६९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ दिने । सा. थिरुकेन स्वभाडागारे पुण्याय लिखितेय प्रति. कल्याणमस्तु ॥छ॥

२. जिनदत्तसूरिचित्रपट्टिका शताब्दी १३ मी।

गुणसमुद्राचार्य । पंडित ब्रह्मचन्द्र । सहणपाल । अनग ।

नरपतिश्रीकुमरपालभक्तिरस्तु । श्रीजुगप्रधानागमश्रीमज्जिनदत्तसूरय ।

३. थाहरूशाहना भंडारनी कल्पसूत्रनी सचित्र सुवर्णाक्षरी प्रति

ग्रं. १२१६ सवत् १५१९ वर्षे आखाढ सुदि ३ रवौ लिखितम् मन्त्रि वाछाकेन ॥छ॥ शुभं भवतु ॥ छ॥श्री॥ सवत् १६४४ वर्षे कार्त्तिक शुदि ११ दिने वरदगोत्रे साह खरहतसुत साह वरसिंघ तत्पुत्र सा० कर्मचद प्रभृत्यपत्यानां श्रीकल्पसूत्रपुस्तिका वाच्यमाना चिर नन्द्यात् ॥छ॥

थाहरूशाहना भंडारना चामडाना दाबडा उपर लेख

स्वस्ति श्रीजयमगलाभ्युदयाय संवत् १६७३ वर्षे श्रीमज्जेसलमेरुमहादुर्गे श्रीबृहत्खरतरगच्छाधीश्वर युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टालकार युगप्र० श्रीजिनसिंहसूरीश्वरे विजयिनि श्रीकल्याणदासमहाराजे राज्य कुर्वति भंडसालिक गोत्रीय सा० श्रीमल्ल तत्पुत्र भ० थाहरूश्रावकेन । चि. हरराज । चि मेघराज प्रमुखसपरिकरेण श्रीज्ञानकोशे पुस्तकरक्षार्थं दाबडा कारिता ॥श्री॥ हर्षनंदनमुनीनामुपदेशेन आचन्द्रार्क विजयतात् ।

१

प्रथमं परिशिष्टम्

जेसलमेरुदुर्गस्थज्ञानभंडारगतग्रन्थानां अकारादिवर्णक्रमेण सूची

ऋ

ए

ख

ग

घ

च

ढ

त

थ

द

२

द्वितीयं परिशिष्टम्

जेसलमेरुदुर्गस्थज्ञानभंडारसूची स्थितग्रन्थकर्तृनाम्नामकारादिवर्णक्रमेण सूची

३

तृतीयं परिशिष्टम्

जेसलमेरुदुर्गस्थज्ञानभंडारगतग्रन्थप्रान्तस्थितलेखकपुष्पिकान्तर्गतानामैतिहासिकोपयोगिविशेषनाम्नामकारादिवर्णक्रमेण सूची

भ

विशेषनाम	किम्	पत्रांक
सप्रति	महाराजा	११७
सभूतविजय		११७, १२२
सवत्सर		२९७, ३१६, ३१९
संसारदे	श्रेष्ठिनी	३४९
साइया	श्रेष्ठी	२, ३, ७, १७, १८, २०, २२, २३, ३३, ३५, ४६
साई	श्रेष्ठिनी	९२
साईया	श्रेष्ठी	५, ९, १४, ३१, ३५, ४१, ४६, १३४
साउंसक्खा	गोत्र	२९३
साऊ	श्रेष्ठिनी	१४४
सागर	ऋषि	३४९
,,	श्रेष्ठी	२६२
सागरचद्रगणि		२९७
सागरचद्रसूरि		२९७, ३००, ३०२, ३०६, ३१६, ३२१, ३४१
साचा	श्रेष्ठी	७८
साठ	,,	७७
साढक	,,	४, ५
साढदेव	,,	३६१
साढल	,,	३६, ११९
साढलही	श्रेष्ठिनी	३७, ११६, १२०
साढा ठ०		२७, ३२, ४२
सादेव पडित	लेखक	६०
साधर्मिक		३६०
साधर्मिकवात्सल्यभोजनदान		५, १७९
साधारण	श्रेष्ठी	१२, २९, ८५, ९३, ९४, ३६०
साधारणकवि	मुनि	१११
साधुकीर्त्ति उपाध्याय		४७, १४५, ३१०, ३६४
साधुरत्न		२९९
साधुसुंदरगणि वाचनाचार्य		१४५
साधुसोमगणि	लेखक-मुनि	२६९
साभट	श्रेष्ठी	९१
साम	,,	८५
सामंत	लेखक	३२९
,,	श्रेष्ठी	९२, १०२, ३५८
सामंतसिंह	,,	७१
सायणवाड	ग्राम	१०६
सारग	श्रेष्ठी	१९१
सारग	लेखक	१
सारगदेव	राजा	९९
सालिग	श्रेष्ठी	३५८
सालिसूरि		२९७
साल्हण	श्रेष्ठी	४, ५, ५९, १०३
साल्ही	श्रेष्ठिनी	२८२
सावित्री	,,	९२, ११६
साहड	श्रेष्ठी	९२
साहण	,,	९२
साहिमलेम		१९३, ३६४
साहु हेमा	श्रेष्ठी	१६
साख्य	सप्रदाय	१६०
सागण	श्रेष्ठी	९२, १७८
सागाक उ०	लेखक	५९
सागा मत्री	,,	३०८
सापट स्वर्णिक	श्रेष्ठी	४
सापू	श्रेष्ठिनी	३६०
सितपटगुरु		७६
सितपत्रपुर	नगर	३२९
सिद्ध	श्रेष्ठी	९१, ९३
सिद्धधवल	,,	९३
सिद्धराज	राजा	१०१, १०६
सिद्धवीर	श्रेष्ठी	८८
सिद्धसूरि		६८, १०१
सिद्धसेन दिवाकर		२०७
सिद्धसेनसूरि		१११
सिद्धान्तकोश		७, ९, १४, १८, २०, २३, ३३, ३५, ४१, ४६
सिद्धान्तभाण्डाकार		३१

४
चतुर्थं परिशिष्टम्

सं. १८०९ रा पोस सुदि ४ दिने संभवनाथजीरे देहरै पुस्तकरो भंडार छै तिण पुस्तकरी टीप लिखीजे छै श्रीजेसलमेरुमै छै

तीजी गांठडीमें प्र २२ परता छै

१	शतकवृत्ति	पत्र	२३८	१२	कृतपुण्यचरित्र	पत्र	१२१
२	न्यायावतार	,,	२३०	१३	क्षेत्रसमासटीका	,,	११९
३	प्रमाणव्यवस्था	,,	२६१	१४	.........चरित्र	,,	१८५
४	काव्यालंकारसार	,,	८६	१५	न्यायबधटीका	,,	१८
५	कातत्रावतारटीका	,,	२०९	१६	चद्रोद्योतकाव्य	,,	१६०
६	आगमपरिच्छेद	,,	१६६	१७	वदनविधान	,,	२१
७	राग काव्य	,,	१४४	१८	वदनसूत्र	,,	६३
८	अगविज्जापुस्तक	,,	५४	१९	कर्मग्रथटीपणी	,,	२०५
९	तर्कप्रकरण	,,	१२४	२०	किरातसूत्र	,,	७६
१०	महादेवटिप्पन	,,	३०५	२१	नैषधसूत्र स्वग ५		
११	न्यायग्रथ	,,	३४९	२२	न्यायटीका	,,	३३३

१	कमलशील	पत्र	३१३	७	उपदेशपदटीका	पत्र	२९९
२	सघाचारपइन्ना	,,	२९४	८	समवायांगसूत्रटीका	,,	२१५
३	निशीथचूर्ण	,,	४६४	९	नैषधटीका विद्याधरी	,,	३६३
४	जबूदीवपन्नत्ती	,,	२३३	१०	हैमचद्रकृता लिंगादिवृत्ति	,,	१०३
५	ज्ञाताधर्मकथादिपडगीविवरण	,,	३७५	११	पृथवीचद्रचरित्र	,,	२६०
६	कल्पलताविवेकालकार	,,	३८९	१२	भगवतीवृत्ति	,,	२५५

ए प्रति १२ चोथा आकरी गांठडीमांहि छै।

१	स्यादवादकरीकर जैनतर्क	पत्र	२७३	८	आदिचरित्र प्राकृत	पत्र	३६३
२	पन्नवणासूत्ररी टीका	,,	२२९	९	पचाशकवृत्ति	,,	१८१
३	जीवाभिगमटीका	,,	३३१	१०	पचकल्पभास्य	,,	२०२
४	मुनिसुव्रतचरित्र	,,	१५७	११	आवश्यकचूर्ण	,,	२५०
५	क्षेत्रसमासटीका	,,	२३८	१२	वृहत्कल्पभाष्य	,,	२०२
६	धर्मरत्नकरंडक	,,	२५०	१३	आवश्यकचूर्ण	,,	४४२
७	पिंडनिर्युक्तिविवरणटीका	,,	२४१	१४	ओघनिर्युक्ति	,,	१०९

एतली परत पांचमा आंकरी लांबा पानारी गांठडीमांहे परत छै १५ छै।

१	श्रावकसामाचारी	पत्र १११	१२	उपदेशपद	पत्र १००
२	जीर्णव्याकरणसूत्रटीका	,,	१३	कल्पचूरण	,, १४१
३	सयममजरी	,, ६८	१४	काव्यालंकारसार	,, ८७
४	कर्मप्रथचूरण	,, ५६	१५	आवश्यकटीका	,, १४३
५	कल्पसूत्र	,, ११७	१६	सनत्कुमारचरित्र	,, १८४
६	शब्दानुशासन	,, ११८	१७	सर्वधरव्याकरण	,, ४९
७	पातजलिभास्य	,, ७२	१८	वदन्ताकथा	,, ४७
८	पिंडविशुद्धिप्रकर्ण	,, २०५	१९	सामाचारी तिलकाचार्यकृत	,, १८७
९	रघुकाव्य	,, २३०	२०	शतकचूरण	,, १७३
१०	प्रमाणमीमांसा	,,	२१	भाष्यवार्तिकटीका	,, ११७
११	काव्यराक्षयसज्ञा	,, ४०	२२	प्रथमकर्मप्रथटीका	,, १११

ए पांचमा आंकरी गांठडीमांहे २२ परता छै।

१	जीर्णअलंकारटीका	पत्र ३००	१३	व्याकरण चतुष्कावचूरि	पत्र १६०
२	चक्रिपाणिकाव्य	,, ११७	१४	उपदेशप्रकरण	,, १४०
३	उपदेशपद	,, ११३	१५	चरचरीविवरणटीका	
४	मंडपदुर्गवृत्ति	,, ३९३	१६	न्यायार्थमजूषा	
५	संग्रहणीटीका त्रटक		१७	नैषधकाव्य	,, ३००
६	कम्मपयडीसग्रहणी	,, ३०६	१८	गचणवृत्ति	,, १५८
७	दुर्गव्याकरणपचक	,, २७०	१९	खडनतर्क	,, २६०
८	प्रत्येकबुद्धचरित्र	,, २७०	२०	मातृकादिवरणटीका	,, १४२
९	विलासवतीकथा	,, २०५	२१	विवेकाख्यालकार	,, १९८
१०	काव्यप्रकाश	,, ९२	२२	उपदेशपद	,, १०९
११	रामनाटकन्यायालकार	,, १६६	२३	त्रेसठिसलाकाचरित्र	,, १४०
१२	पोडशजिनचरित्र	,, १६०			

एती परत छट्ठा आंकरीमांहे गांठडीरे परत २३ छै सही।

१	पचासकवृत्ति	पत्र २६१	९	ज्योतिष्करंड	पत्र २३३
२	धातुपाराइण हेम	,, १८१	१०	भगवती प्रथमखड	,, ५६
३	नेमीचरित्र	,, ३५५	११	ओघनिर्युक्तिभाष्य	,, १०१
	दशवेकालक त्रटक		१२	अनुयोगद्वारचूर्णी	
४	गीतभास्य	,, १३०	१३	सूरपन्नत्तीटीका	,, ३१०
५	तर्कग्रथ	,, ८९			
६	पिंडनिर्युक्ति		१४	चदपन्नत्तीटीका	,, ३३५
७	कुवलयमाला सकीर्णकथा	,, २४३	१५	पद्मचरित्र	,, २६०
८	उपदेशमाला सकीर्णकथा	,, २७४	१६	कल्पव्यवहारचूर्णी	,, १६६

एतली परत सातमा आंकरी गांठडी मोटी लांबा पानारी तिणमां प्रति १६ है।

१ भुवनदीपकादि	पत्र ६७	१४ विशेषाविशेष	
२ कालकुलक	,, ६५	१५ विषमपदपर्याय	पत्र १५२
३ शब्दानुशासनद्वयाश्रयवृत्ति	,, २७३	१६ अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी	,, १३४
४ प्रमाणमीमांसा	,, १८७	१७ शब्दानुशासन	,, ३००
५ द्वयाश्रयवृत्ति पंचमांग	,, २९७	१८ माघकाव्य	,, १०७
६ शब्दप्रभेदप्रकरण		१९ धर्मोत्तरटिप्पनक	,, ८६
७ न्यायभाष्य	,, ३५०	२० पचाशकवृत्ति	,, ३२३
८ चद्रलेखाविजयप्रकरण	,, २०३	२१ षष्ठकर्मग्रथ	,, ४७
९ दुर्गव्याकरण		२२ चतुर्द्धर्मकथा	,, २९२
१० काव्यप्रकाशटीका	,, २२२	२३ अनेकांतजयपताका	,, १३१
११ कर्मग्रथटीका	,, २२८	२४ षडावश्यक	,, १६५
१२ छदोनुशासन	,, २१४	२५ काव्यालोक	,, १९६
१३ उपदेशमालाटीका	,, १०७		

ए आठमी आंकरी गांठडीमां प्रति २५ है।

---

१ उपदेशमाला		१० जबुदीवपन्नत्तीसूत्र	पत्र १०१
२ व्यवहारसूत्र	पत्र १९	११ उववाईवृत्ति	,, २५८
३ रातमागादिसूत्र	,, ९५	१२ रायपसेणीसूत्रवृत्ति	,, ३४४
४ ओघनिर्युक्ति त्रटक		१३ कल्पचूर्णी त्रटक	
५ कल्पटीका	,, २९७	१४ भगवती त्रटक	
६ व्यवहारटीका	,, ३७४	१५ ठाणागटीका	,, ३३
७ चूर्णगिद्धप्राभृतसूत्रवृत्ति		१६ पिंडनिर्युक्ति त्रटक सूत्र	
८ जबुदीवपन्नत्तीसूत्र	,, ९७	१७ ,, टीका	
९ रायपसेणीटीका	,, ६४		

एती परत नवमा आंकरी गांठडी मोटी लांबा पानारी तिणमाहे परत १७ छे।

---

१ हेमअनेकार्थनाममालाटीका	पत्र ३३६	११ वासुपूज्यचरित्र	
२ शतकादि	,, १९	१२ दशवैकालिकनिर्युक्ति	
३ सिद्धांतसार	,, ४३१	१३ जीतकल्प	
४ सूयगडागवृत्ति	,, ४०९	१४ श्रावकजीतकल्प	पत्र ३८०
५ कमलशीलतर्क	,, १८५	१५ प्रायश्चित्तजीतकल्प	
६ चदपन्नत्ती त्रटक		१६ सिद्धसेन जीतकल्पवृत्तिचूर्णी	
७ त्रेसठशलाकाचरित्र त्रटक		१७ श्रावकप्रतिक्रमणवृत्ति	,, ९३
८ नेमचरित्र त्रटक		१८ उत्तराध्ययनलघुवृत्ति	
९ साहित्यविद्याधरीटीका	,, ३२९	१९ सूरपन्नत्ती	
१० भगवतीसूत्र	,, ३२४	२० पचकल्पभास्यचूर्णी	

एतली परत दसमा आंकरी गांठडीमांहे परत १६ छे सही।

---

१ निशीथभाष्य पत्र १७८
२ सिद्धपाहुड ,, १६०
३ अनुयोगद्वार सटीक ,, १६३
४ पाखीसूत्रटीका समवायांगछेद
५ दशवैकालिकसूत्रटीका
६ ,, चूर्णी जिनदत्तसूरिकृत
७ भवप्रपचप्रकरण ,, ३६३
८ वीरचरित्र ,, ३६३
९ उत्तराध्ययन वृहद् वृत्ति पत्र ३०८
१० सूयगडांगसूत्रचूर्णी ,, २०१
११ आवश्यकनिर्युक्ति त्रूटक
१२ अनेकांतजयपताकासूत्र ,, ३१
१३ ,, टीका ,, २०६
१४ चंद्रप्रभचरित्र प्राकृत ,, १७८
१५ लोकसाराध्ययन ,, ३३२
१६ उपदेशमालावृत्ति ,, २७२

ए एकादशरी आकरी गांठडीमांहे परता छै।

---

१ प्रवचनसारोद्धारसूत्र पत्र १४४
२ कल्पलताविवेकालंकार ,, २६०
३ वीरचरित्र ,, २४१
४ प्रबोधचद्रोदयनाटक ,, १६५
५ सग्रहणीटीका ,, २६०
६ श्रुतकेवलीचरित्र ,, ३१६
७ आवश्यकटीका हेमचद्रकृत ,, २१८
८ आवश्यकसूत्र ,, २९१
९ भवभावना ,, २२१
१० नदीटीका ,, २२१
११ श्रावकधर्म १ पर्चलिंगी २
१२ क्षेत्रसमास ,, २०२
१३ नदीविवरण ,, ३९
१४ नदीचूर्णी पत्र १३६
१५ कल्पसूत्र ,, १३६
१६ पक्खीसूत्रटीका ,, २४०
१७ नैषधकाव्य ,, १७५
१८ लीलावतीकथा ,, १४३
१९ कल्पसूत्र ,, १३३
२० प्रश्नव्याकरण ज्योतिष ,, २४३
२१ न्यायकदली ,, २३९
२२ काव्यप्रकाश ,, २७५
२३ नवतत्त्वप्रकरणादि ,, २००
२४ भट्टीकाव्य छद त्रूटक ,, ४१४
२५ हैमव्याकरण पचमोध्याय ,, २७७
२६ षडशीति ,, १५२

ए प्रथम आंकरी गांठडीमाहे परत २५ अथ २८ मा जनै छै।

---

१ सुपार्श्वचरित्र पत्र २७८
२ कल्पचूर्णी ,, ३३३
३ व्यवहारभाष्य ,, २७९
४ मुनिसुव्रतचरित्र ,, ३८९
५ अगविज्जा प्राकृत ,, २४१
६ उपदेशमालादुर्गपदवृत्ति ,, ३१८
७ भगवतीवृत्ति अभयदेवसूरिकृत पत्र ४४३
८ समरादित्यचरित्र प्राकृत ,, ३०७
९ उपदेशपदटीका
१० व्यवहारचूर्णी ,, ३०१
११ आवश्यकनिर्युक्तिटीका ,, २३६
१२ विशेषाविशेष प्रथम खड ,, ३

ए प्रति १२ छट्ठा आंकरी गांठडी मोटी लांबा पानारी छै।

१ ओघनिर्युक्ति पाखीसूत्र वृत्ति	७ नदीसूत्र
२ उपदेशमालावृहद्वृत्ति	८ दशवैकालिकवृहद्वृत्ति
३ सघयणी ,,	९ भवभावना
४ नेमि० वीरचरित्र	१० प्रवचनसारोद्धार
५ ज्ञाताधर्मकथादि षडगीसूत्र	११ आवश्यकवृहद्वृत्ति द्वितीय खड
६ अगविज्जा	१२ आवश्यकनिर्युक्ति त्रूटक

ए १२ प्रति गांठडी आठमा आंकरी लावा पानानी छै ।

---

१ अंगविज्जाप्रकीर्णक			१५ कर्मस्तव टीका	पत्र	५२
२ गोडविधिसार टीका			१६ ,,	,,	९६
३ आदिनाथचरित्र	पत्र	२९९	१७ खडनखाद्यटीका	,,	१८१
४ द्रव्यपदार्थकंदलीभाष्य			१८ लघुवृत्ति पचमाध्यायपयत	,,	१२३
५ शशांकसकीर्त्तन	,,	३४९	१९ प्रदेशीचरित्र	,,	१५७
६ प्रवचनसारोद्धार	,,	१९५	२० कमप्रकृति	,,	१४०
७ धर्मबिंदुप्रकरण			२१ प्रतिक्रमणवृत्ति	,,	१५२
८ स्वोपज्ञ हेमनाममाला टीका	,,	१८३	२२ पदार्थप्रवेशन्यायकंदली	,,	१९०
९ रायपसेणीवृत्ति	,,	८०	२३ ,, द्वितीय खड	,,	२८१
१० घनरत्नमहोदधिटीका	,,	१७८	२४ उपदेशमाला-योगशास्त्र आदि		
११ मीमासा	,,	३३८	२५ आवश्यकवृत्ति	,,	२९९
१२ रामचरित्र प्राकृत	,,	१९९	२६ चैत्यवदनवृत्ति	,,	१११
१३ दुर्गसिंह व्याकरण			२७ क्षेत्रसमासवृत्ति	,,	१३०
१४ हेमव्याकरण रहस्य	,,	१६०	२८ पिंडविशुद्धिप्रकरण	,,	१९४

ए बीजी गाठडीमाहे परता २८ छै ।

---

१ पचवस्तुकप्रकरण	पत्र	१९९	१२ कारक टिप्पण	,,	२२०
२ सांख्यसप्ततिका	,,	८०	१३ निर्वाण लीलावती कथा	,,	२६
३ सांख्यग्रंथ	,,	८०	१४ तर्कीकरण		
४ मुनिपतिचरित्र	,,	१०७	१५ नाटक काव्य मडळी	,,	९०
५ अलकारग्रथ	,,	३९	१६ षडशीति टिप्पनक	,,	१०९
६ अलकारदर्पण	,,	१३	१७ विलासवती कथा	,,	२०३
७ पज्जुसणानिर्युक्ति	,,	२०१	१८ कन्न श्रेष्ठि छद	,,	१८६
८ कातन्त्रवृत्ति	,,	२७०	१९ उपदेशमाला	,,	१५५
९ उपदेशमाला विवेकमजरी अजितशांति	,,	१६७	२० दुर्गपद प्रबोध व्याकरण	,,	१९
१० शब्दानुशासनवृत्ति	,,	१९३	२१ धर्मबंधाख्य प्रकरण	,,	६४
११ शतकचूर्णी	,,	१४३	२२ धर्मोत्तर तर्क	,,	१५५

२३	प्रशमरतिप्रकरण	,,	२०१
२४	शतकचूर्णी	,,	१७५
२५	प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति	,,	१८३
२६	आवश्यकनिर्युक्ति	,,	१७९
२७	साख्यसत्तरी	,,	१०२
२८	प्रवचनसारोद्धारसूत्र	,,	९
२९	न्यायप्रवेश तर्क	,,	१३
३०	लघुवृत्ति पचमाध्याय	,,	९
३१	उणादिवृत्ति पाद	,,	२

ए तीजा आंकरी गांठडीमाहे परता छे आंके ३२ छे।

१	रत्नचूडकथाटीका	पत्र	१५८
२	अनेकार्थनाममाला कांड टीका	,,	२३९
३	न्यायमजरीसूत्र	,,	२४५
४	गजसुकुमालचरित्र	,,	१२१
५	शतकवृत्ति	,,	२९१
६	काव्यप्रकाशटीका	,,	२०६
७	पचवस्तुप्रकरण	,,	२४१
८	मुरारिटीका	,	१९२
९	सार्द्धशतकटीका	,,	२४७
१०	अभि॰दनचरित्र	,,	६०
११	उपदेशपद	,,	१३३
१२	उपदेशपदप्रकरण	,,	१३३
१३	अलकारटीका रुद्रटालकार	,	६१
१४	वीरचरित्र	,,	६
१५	भट्टीकाव्यटीका	,,	८
१६	सग्रहणीटीका	,,	१५
१७	आवश्यकनिर्युक्ति		
१८	भावनाकुलक	,,	८
१९	रत्नावलीनाटक	,,	४
२०	कर्मविचारग्रथ	,,	२
२१	पचवस्तुकविवरण	,,	२१
२२	पचमकमग्रथवृत्ति	,,	२३
२३	गुर्वावली	,,	३२
२४	काव्यालकार	,,	२१
२५	मारुयवृत्ति	,,	८
२६	कविरहस्य		

चोथा आकरी गाठडीमांहे लघुपत्ररी प्रति २६ छोटा पानारी छे।

---

१ दशवैकालिकनिर्युक्तिवृत्ति
२ मलयगिरिकृत आवश्यकवृत्ति द्वितीय खंड
३ विशेषावश्यक द्वितीय खंड
४ शांतिचरित्र
५ भगवतीसूत्र
६ दशवैकालिकबृहद्वृत्ति
७ दशवैकालिकलघुवृत्ति
८ सग्रहणीसूत्रटीका
९ कल्पांटप्पनक
१० आवश्यकबृहद्वृत्ति
११ बृहत्कल्पवृत्ति
१२ निशीथसूत्रवृत्ति

ए १२ प्रति लांबा पानारी प्रथम आंकरी ग्रथां मांहे छे।

१	पन्नवणाटीका मलयगिरिकृत		
२	श्रावकधर्मप्रकरणयोग्य ५	पत्र	३५२
३	विशेषानिशेष द्वितीयखड	,,	३६१
४	नेमिचरित्र	,,	३४०
५	महानिशीथसूत्र	,,	८७
	,, चूर्णी	,,	९५४
६	भवभावनावृत्ति	,,	३८३
७	आवश्यकबृहद्वृत्ति द्वितीयखड	पत्र	३३
८	मुनिसुव्रतचरित्र	,,	१९
९	धर्मविधिप्रकरण	,,	१९
१०	कल्पचूर्णी	,,	२०
११	जीवाभिगमसूत्रलघुवृत्ति जंबूद्वीप-पन्नत्तीसूत्र तथा चूर्णी	,,	३२
१२	उत्तराध्ययनबृहद्वृत्ति	,,	३९

एतां परत द्वितीय आंकरी मोटी लांबा पानारी तिणमांहे परत १२ छे।

---

१ संवेगरगशाला प्राकृत पत्र २३८
२ भगवतीवृत्ति
३ निशीथचूर्णी विशेष ,, ४१८
४ वसुदेवहिंडी प्रथमखड ,, १५८
५ हरिविजयमहाकाव्य ,, १०६
६ वसुदेवहिंडी ,, ३४५
७ पिंडनिर्युक्तिभद्रबाहुकृत पत्र २००
ओघनिर्युक्ति ,, २४१
८ तिलकमजरीचरित्र ,, १९३
९ पार्श्वनाथचरित्र प्राकृत ,, २२९
१० विवेकमजरीचरित्र ,, २९४
११ व्यवहारभाष्य ,, २३३
१२ मुनिसुव्रतचरित्र ,, ११८

ए त्रीजा आंकरी गांठडी द्वितीय मोटा लांबा पानारी परति १४ छै।

---

१ क्षेत्रविवरणटीका पत्र ३३३
२ अनुयोगद्वारचूर्णी ,, २७५
३ सूयगडांगटीका
४ आवश्यकटीका ,, ३०१
५ व्यवहारटीका मलयगिरिकृत पत्र ३०७
६ आचारांगसूत्रबृहद्‌वृत्ति ,, ४४१
७ निशीथभाष्य ,, २१४
८ पन्नवणासूत्रटीका त्रूटक

ए प्रति ८ लाबा पानारी गांठडीमांहे छै।

इतरी पुस्तक जेसलमेरुरा उपरला भडारमें छै। भंडार सभवनाथजीरा देहरामें छै।

संघवी थिरूसाहजीरा भंडाररा पुस्तकनी टीप लिखीजे छे।

संख डाबडारी टीप

१ पन्नवणासूत्रटीका पत्र १७३
२ जोवाभिगमसूत्र ,, ११३
३ ,, टीका ,, ३११
४ रायपसेणीसूत्र ,, ४६
५ ,, टीका ,, ७९
६ जबुद्वीपपन्नत्तीसूत्रटीका तथा चूर्णी
७ चद्रपन्नत्तीसूत्र ,, ४१
८ ,, टीका ,, १७६
९ सूरपन्नत्तीसूत्र ,, ५४
१० ,, टीका ,, २१७
११ निरयावलीसूत्रटीका
१२ नदीसूत्रटीका
१३ अनुयोगद्वारसूत्र पत्र ५८
१४ ,, टीका ,, १२५
१५ उत्तराध्ययनसूत्र ,, ५३
१६ ,, टीका ,, ३१७
१७ उववाईसूत्र ,, २९
१८ ,, टीका ,, ७४
१९ दशवैकालिकसूत्र ,, २१
२० ,, टीका ,, १८८
२१ सधाचारपइन्नासूत्र तथा टीका ,, १७६
२२ प्रवचनसारोद्धारसूत्र तथा टीका ,, ४३०
२३ पन्नवणासूत्र तथा टीका ,, ३३६
२४ पन्नवणासूत्रबीजक ,, ५४

दर्पण डाबडारी टीप

१ ज्ञातासूत्रटीका पत्र १८५
२ ज्ञातासूत्र ,, १३३
३ उत्तराध्ययनसूत्र ,, ११२
४ ,, टीका ,, २९२
५ धर्मरत्नकरडकसूत्र ,, २२०
६ पिंडनिर्युक्तिसूत्रवृत्ति ,, १६१
७ ओघनिर्युक्तिवृत्ति ,, १५१
८ षोडशकसूत्रटीका ,, ४०

९ प्रतिक्रमणविधि	पत्र	२५	१४ रायपसेणीटीका	,,	८८
१० वादस्थलसूत्र	,,	१६३९	१५ दशाश्रुतस्कंधचूर्णी	,,	१०१
११ ज्ञाताटीका			१६ आवश्यकनिर्युक्तिभाष्य	,,	६८
१२ उत्तराध्ययनटीका	,,	४१७	१७ ओघनिर्युक्तिभाष्य	,,	६८
१३ जंबूद्वीपचूर्णी	,,	१२१	१८ रायपसेणीटीका	,,	९१

धजा डावडारी टीप

१ निशीथसूत्र	पत्र	१९	१६ दशवैकालिकसूत्र	,,	२१
२ निशीथचूर्णी प्रथमखड	,,	३३१	१७ शीलांगरथ	,,	९
३ जीतकल्प	,,	५६	१८ वदारुवृत्ति	,,	५१
४ सघाचारटीका	,,	१८३	१९ अष्टकसूत्र	,,	१०५
५ पचास्तिकायसूत्र	,,	२८	२० नमस्कारमाहात्म्य	,,	८
६ ,, टीका	,,	२०९	२१ चैत्यवदनाभाष्य	,,	९
७ ,, भाष्य	,,	१४१	२२ प्रवचनसारोद्धारसूत्र	,,	५९
८ व्यवहारसूत्रटीका	,,	१४१	२३ चैत्यवदनसूत्रभाष्य	,,	३
९ वृहत्कल्प प्रथमखड	,,	४०७	२४ ,, टीका	,,	२७
१० ,, द्वितीयखड	,,	२४१	२५ षडावश्यकबालावबोध	,,	४३
११ आराधना	,,	७२	२६ लौकामतखडनमडन	,,	९३
१२ चैत्यवदनाभाष्य	,,	२७	२७ तपामतखडन	,,	५४
१३ पचलिंगीवृत्ति			२८ पार्श्व० गणधरसबध		
१४ पचास्तिकायसूत्र	,,	३१	२९ निशीथचूर्णी	,,	२८
१५ विशेषणवती	,,	११	३० सघपट्टा०सूत्र	,,	१९

काला डाबडारी टीप

१ आचारांगसूत्रटीका		१२ आवश्यकलघुवृत्ति	
२ सूयगडांग ,,		१३ विशेषावश्यकवृत्ति प्रथमखड	
३ समवायांग ,,		१४ ,, द्वितीयखड	,, ३०४
४ भगवतीसूत्र ,,		१५ रायपसेणीसूत्रटीका	
५ ज्ञातासूत्र ,,		१६ विधिप्रभा	
६ उपासकदशांगसूत्रटीका		१७ भक्तामरबालावबोध	
७ अणुत्तरोववाईसूत्र ,,		१८ सूयगडांगसूत्र	
८ अतगडदशासूत्र ,,		१९ पडिकमणाविधि	
९ प्रश्नव्याकरणसूत्र ,,		२० ठाणांगसूत्र	
१० विपाकसूत्र ,,		२१ उत्तराध्ययनसू त्रुटक	
११ आवश्यकबृहद्वृत्ति			

श्रीवच्छ डाबडारी टीप

१	व्यवहारभाष्य	पत्र	२३२	५	अगविज्जापइन्ना	पत्र	३२२
२	,, टीका	,,	११४	६	चैत्यवदन	,,	३५
३	पचकल्पचूर्णी	,,	९९	७	श्रावकपन्नत्ती	,,	१७
४	चैत्यवदनचूर्णी	,,	७९	८	पायचंदीया आंचलीया तपामत खंडन		

स्वस्तिक डाबडारी टीप

१	निशीथसूत्र	पत्र	२७	७	बृहत्कल्पसूत्र		
२	,, भाष्य	,,	२६८	८	आराधनापत्र	पत्र	५८
३	निशीथचूर्णी वीसमा उद्देसारी टीप	,,	१३४	९	आवश्यकनिर्युक्ति	,,	६९
४	निशीथचूर्णी			१०	ललितविस्तरा	,,	३१
५	बृहत्कल्पभाष्य			११	अगचूलिया		
६	बृहत्कल्प खड ३ टीका	,,	१४९	१२	त्रटक पानारी परत		

नंद्यावर्त डाबडारी टीप छै

१	आचारांगसूत्र	पत्र	६२	११	रायपसेणीसूत्र	पत्र	४५
२	,, निर्युक्ति	,,	११	१२	,, वृत्ति	,,	८०
३	,, टीका	,,	२६५	१३	आवश्यक मलयगिरिटीका	,,	५०३
४	सूयगडांगसूत्र निर्युक्ति टीका	,,	२८०	१४	आवश्यकटिप्पण		
५	समवायागसूत्र	,,	८६	१५	शत्रुजयमाहात्म्य	,,	२६४
६	,, निर्युक्ति टीका	,,	३४४	१६	सग्रहणीलघुटीका	,,	२७
७	ठाणांगसूत्रटीका	,,	३११	१७	ऋषिमडलटीका	,,	३६३
८	भगवतीसूत्रटीका	,,	४०२	१८	धर्मपरीक्षा	,,	६६
९	उत्तराध्ययनसूत्रटीका			१९	दशवैकालिकवृत्ति	,,	३४
१०	ज्ञातासूत्रटीका	,,	८८	२०	कल्पसूत्र स्वर्णांकित छै		

मच्छयुग्म डाबडारी टीप छै

१	धर्मोपदेशमाला	पत्र	१४०	५	प्रतिक्रमणचूर्णी	पत्र	१०८
२	दर्शनसत्तरीटीका	,,	२१६	६	विचारसार	,,	२४७
३	भवभावना	,,	२९३	७	क्षेत्रसमाससूत्रटीका	,,	१८३
४	धर्मसग्रहणीसूत्रटीका	,,	२७२	८	सत्तरी	,,	१३

९ नवतत्त्वटीका	पत्र	६७	२० आचारदिनकर	पत्र	३०९
१० ,,	,	५८	२१ योगशास्त्रटीका		
११ पचास्तिकायसूत्र	,,	२५	२२ नवपदप्रकरण	,,	२३८
१२ ,, टीका	,,	२१५	२३ पचवस्तुसूत्र	,,	५१
१३ विवेकमंजरी प्रथमखंड	,,	२०१	२४ ,, टीका	,,	१३५
१४ प्रतिक्रमणगर्भहेतु	,,	२७	२५ सवेगरगशाला	,,	२७३
१५ उपदेशपदसूत्र	,,	३१	२६ सग्रहणी	,,	१२०
१६ , टीका	,,	१५१	२७ पचलिंगीवृत्ति	,,	१४८
१७ श्रावकविधि	,,	१६१	२८ पचाशकवृत्ति	,,	२१५
१८ नवतत्त्वटीका	,,	८	२९ विधिप्रभा	,,	८६
१९ प्रश्नोत्तरटीका					

५
पञ्चमं परिशिष्टम्

संवत् १९४१ रा मिती पोष सुदि ११ दिने वार रवी भट्टारक श्री श्री १०८ श्रीजिनमुक्तिसूरिश्वरविजयराज्ये देश गुजरात सुरतबिंदरका रहिवासी श्री श्री १०८ पं। प्र। मुनि लालचंदजी तत्भ्राता श्रीग्यांनचंदजी तत्शिष्य पं। प्र। भाईचंदजी तत्भ्राता श्रादलीचंदजी तत्शिष्य मुनिहीराचंदजी तत्शिष्य पं। प्र। मोतीचंदजी तत्भ्राता पं। प्र। देवीचंदजी बृहत्खरतरगच्छे श्रीजेसलमेरुमध्ये श्रीसंघहस्ते किल्ले ऊपर श्रीपार्श्वनाथजीको मंदिर है उसमें च्यार भुवरा छे तेहनी विगत इण मुजब प्रथम भुंवरा मध्ये सर्वधातुकी प्रतिमायां छे। बीजा भुंवरामध्ये पारसपाषाणकी खंडित प्रतिमायां छे जिणसे अगाडी छोटी बारी एक आवे छे तिणसूं अगाडी तीसरो भुंवरो छे तिण मध्ये लकडेकी सिंदूकां नंग ४ बडी हैं अने सिंदूक एक छोटी है अने कुडाना डब्बा नंग दोय हे जिसमें ताडपत्र तथा कागदका लिखित पुस्तकोंकी टीप में करुं हुं। देश गुजरात अहमदाबादके पास शहर कापडवणजके शेठ पारष नीहालचंदभाई नत्थूभाईकी तरफसे श्रीआणंदसूरिगच्छाधिपति। श्री १०८ श्रीविजयगुणरत्नसूरिश्वरजीकी मारफत पुस्तकजीको भंडार देखणकुं आया। मु। मोतीचंदजी उणांने सर्वपुस्तकजी देखके सर्व पुस्तकोंकी टीप इण वहीमध्ये करी हे। तीजा भुंवरामां पुस्तकजीको भंडार हे तिमरी ए टीप करि हे अने जीमणे बाजू चोथो भुंवरो छे ते परचूरन सामान्य भरीयां पडीयां छे ते भुंवरा अंदर पेसतां डीमणे हाथे छे ताजा भुंवरामां ताडपत्रके पुस्तकको भंडार हे उसकी टीप नीचे करी मुजब। ताडपत्रोंकी यादास्ति इणमुजब—

पेटी पहिली नंबर पहिलो

१ प्रमाणप्रमेयतर्कग्रंथ	पत्र २२४	१२ शब्दानुशासनवृत्ति कृत हेमचंद्रसूरि	पत्र १९३
२ प्रत्येकबुद्धचरित्र श्लोकबंध	,, २२०	१३ खंडनखंडखाद्यखंड क० हर्षसूरि	,, १९०
३ मुरारिटिप्पन क० हेमचंद्रसूरि	,, २०३	१४ कातंत्रदुर्गसिंह क० त्रिलोचनदास संस्कृत	,, १९६
४ नैषद् टीका क० विद्याधरी	,, २१८	१५ आवश्यकनिर्युक्ति	,, २९०
५ नैषदसूत्र	,, ३१७	१६ प्रमाणमीमांसा	,, १३७
६ प्रबोधचंद्रोदयनाटिक काव्यबंध	,, १६५	१७ प्रमाणतर्क	,, ६५
७ आद्यतप्रक्रिया	,, ४७	१८ न्यायग्रंथ	,, ९१
वासवदत्तकथा भेली	,, ४७	१९ हेमव्याकर्ण	,, १०८
८ अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी	,, १३४	२० कर्कटिप्पनक	,, ८५
९ ,,	,, २०४	२१ पचग्रंथीव्याकर्ण क० बुद्धिसागर	,, ३७२
१० हैमी नाममाला सौपज्ञटीका	,, २६२	२२ कर्मग्रंथवृत्ति क० हरिभद्रसूरि	,, २९१
११ शब्दानुशासन संस्कृत	,, १९८	२३ छंदटीका	,, २९४

२४ नैषद किरात ,, ७८
२५ न्यायावतारटिप्पन ,, २३०
२६ जैनवार्तिकवृत्ति क० शांत्याचार्य ,, १५५
२७ गुणनिर्णय ,, १११
२८ न्यायप्रवेशटीका ,, १३४
२९ चद्रदूतकाव्य ,, २९५
३० अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी ,, ३३८
३१ बिक्रमकाव्य ,, १५९
३२ माघकाव्य त्रटक ,, २७०
३३ दुर्गसिंहव्याकर्ण ,, १२०
३४ काव्यालकारवृत्ति ,, १२०
३५ धन्नाशालिभद्रचरित्र क० जिनहर्षसूरि ,, ११८
३६ द्रव्याऽलकारटीका क० रामचद्रगुणचद्र
परत २ मेली ,, २२३
३७ हेमप्रकाश, ,, १६०,
काव्यालकार दोनु मेला ९२
३८ गणधरसार्धशतक प्राकृत कृत क्रियासुमती पत्र ३९३
३९ रुद्रटालकार मूल सस्कृत पत्र ४५
धातवतषोडशपलका ,,४५,१८
४० श्रुतकेवलीचरित्र पत्र ३१६
४१ अनेकार्थकरवाकरकौमुदी ,, २३९
४२ सामाचारीग्रथ कृ० तिलकाचार्य ,, १८८
४३ चर्चरीवृत्ति, कालस्वरूपबिवरण ,, ६८
४४ कल्पकीर्णावली ,, २२९
४५ काव्यप्रकाशकाव्यालकार ,, १७८
४६ दुर्गपदप्रबोधावृत्ति ,, १९२
४७ पचकल्पसतकलघुवृत्ति , २२०
४८ धन्नाशालिभद्रचरित्र सस्कृत कृ०
पुन्यमऋषि ,, ३८५
४९ न्यायकदलीचरित्र तक ,, २३९
५० उद्भटालकारलघुवृत्ति कृत इदुराज ,, १४२
५१ महावीरचरित्र कृ० चदकुशलसूरि ,, ११४
५२ सप्तशब्दादिग्रथ कृत जयदेवसूरि ,, १८३
५३ उपदेशप्रकरण ,, १५२
५४ स्तुतीकाव्य हम्मीरमर्दननाटिक ,, ९०
५५ उपदेशसूत्रनाटिक ,, १०९
५६ चक्रपाणिकाव्य पत्र ११७
५७ खडनवृत्ति ,, १०४
५८ काव्यादर्शकाव्यप्रकाश
५९ व्याकर्णअवचूरि ,, १८८
६० रामरावणचरित्र ,, ११९
६१ न्यायबिंदुवृत्ति ,, ३५९
६२ उपदेशमाला आदि सप्त प्रकर्ण ,, १५२
६३ बिवेकालंकारप्रकर्ण ,, १९८
६४ गोडबधसारटीका ,, २४२
६५ सभवचरित्र सस्कृत ,, १४०
६६ दुर्गसिंहकातत्र छुटक पत्र ,, २२७
६७ प्रवचनसारोद्धार ,, १३४
६८ कर्मग्रथटीका ,, १११
६९ बिलासवतीकथा ,, २०३
७० महावीरचरित्र कृत हेमाचार्यजी ,, २४१
७१ कल्पलताबिवेकालकार , २५९
७२ भट्टीकाव्यटीका ,, ३७५
७३ भाष्यटीका सखसप्तका ,, ११२
७४ कमलशील तर्कसूत्र ,, १८५
७५ रामनाटिक ,, १७०
७६ सखसप्तकावृत्ति ,, १६१
७७ तत्त्वकौमुदी ,, ८०
सखसप्तकासूत्रवृत्ति ,, ७०
७८ न्यायकदलीटीका ,, २८८
७९ लघुधर्मोत्तरसुत्रवृत्ति न्यायबिंदु टीका,
चैत्यवदनटीका कृत हरिभद्रसूरि ,, ११५
८० रहस्यसुत्र ,, ९०
कातत्रवृत्ति ,, ६०
८१ विचारसग्रहणी ,, २६४
जैनव्याकर्ण ,, ७२
८२ हेमीसब्दानुशासन ,, २७७
८३ रघुवशटीका ,, २३०
८४ द्वादसकुलक कृत जिनवल्लभसूरि ,, ३०१
८५ सामुद्रिकशास्त्र ,, २२१
८६ उपासकदशांगटीका ,, २८४
८७ श्राद्धसतकवृत्ति कृ० मेरुसुदरगणि ,, २४४

पुस्तक	पत्र
१५२ चैत्यवंदनादिसूत्रविवरण पाखीसूत्र	पत्र १५०
१५३ प्रवचनसारोद्धार	,, २०४
१५४ प्रदेशीचरित्र	,, ११३
१५५ संग्रहणीटीका	,, २५६
१५६ तपयोगविधि त्रूटक	,, १०
१५७ ऋषिमंडलकुलक त्रूटक	,, १५२
१५८ सब्दानुशासन कृत हेमचद्रसूरि	,, १०७
१५९ पंचवस्तुकटीका	पत्र ३००
१६० काव्यालकारटीका	,, १२९
१६१ कल्पसूत्र कल्पवाच्य, कालिकाचार्यकथा	,, १३७
१६२ सतकचूर्णी	,, १२९
१६३ कल्पलक्षण	,, ४६
१६४ नमोत्थूणटीका कृत प्रद्युम्नसूरि	,, १३०
१६५ प्रबोधचद्रोदयनाटिक	,, १६५

॥ इति श्री ताडपत्रोकी पुस्तकोकी सूचीपत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ कागदांगी पुस्तकोंकी सूचीपत्र लिख्यते ॥

पुस्तक	पत्र
१ षोडशाधिकारप्रकरण कृत हरिभद्रसूरि	पत्र ८
२ भवनभावनावृत्ति कृ० हेमचद्रसूरि	,, १६४
३ पचलिंगप्रकरण	,, १८
४ नेमिचरित्र	,, ५
५ सिद्धातगाथाबधप्रकर्ण	, १०७
सित्तरी	,, १९
६ ठाणागसूत्र पचकल्याण	,, ६
७ स्थिवरावलीचरित्र कृत हेमचद्रसूरि	, ३१
८ रत्नप्रकाश प्राकृत	,, ८
९ दर्शनसित्तरी	,, ५
१० मलयसुंदरीचरित्र	,, ४३
११ सब्दप्रकाश प्राकृत	,, ७
१२ उपदेशमालाविवरण	,, १३५
१३ संदेहदोहलावृत्ति	,, १४
१४ देशीनाममाला	,, २५
१५ दीवसागरपन्नत्ती	,, ५
१६ त्रेसठसिलाकापुरसचरित्र बालाबोध	,, २४
१७ योगनिर्युक्तिवृत्ति	,, ९८
१८ अध्यात्मोपनेषमजात कृत हेमचद्रसूरि	,, १४
१९ प्रश्णव्याकर्णटब्बो	,, १००
२० सुयगडांग त्रिपाठ	,, ३४
२१ प्रस्मरती अवचूरि	,, ११
२२ खडशटीका	,, १६
२३ जीतकल्पसूत्र	,, ५
२४ योगनिर्युक्तिअवचूरि	,, २८
२५ कर्पूरमजरीनाटिक	पत्र २०
२६ व्याकर्ण कातत्र	,, ३३६
२७ सूक्ष्मार्थिविचार	,, ७
२८ बिमालरास	,, ११
२९ चदनबालाचौपइ	,, ११
३० गोडीपार्श्व० स्तवन	,, ५
३१ चउसरणपइन्नो मूल	,, ५
३२ प्रममरति	, ९
३३ चतुर्विंशतिजिनस्तवन	,, ११
३४ पत्तनचैत्यप्रवाडी	,, ४
३५ कर्मस्तवन	,, २
३६ अष्टकसूत्र कृ० हरिभद्रसूरि	,, ४
३७ प्रश्नोत्तरीअवचूरि	,, ३
३८ महावीरजीस्तवन	,, ७
३९ समाधिसतक	,, १४
४० गणधरस्तवन	,, ८
४१ हेमव्याकर्ण	,, ५
४२ अमरसेनरास	,, १८
४३ सोमशतक प्राकृत	,, ९
४४ योगशास्त्र प्रथमप्रकाश	,, ४
४५ दुर्गापाठ	,, ४६
४६ चउगतिचौपई	,, ५
४७ नवतत्त्व प्राकृत टबो	,, ७
४८ आदिनाथस्तोत्र	,, ३
४९ चउसरणपयन्नोटबो	,, ९

५०	वैष्णवगीता	पत्र	३	८६	कालिकाचार्यकथा	पत्र	३५
५१	भक्तामरस्तोत्रटबो	,,	५	८७	रायपसेणीचौपइ	,,	६०
५२	इकवीसठाणासूत्र	,,	६	८८	कमलावतीचरित्र	,,	४
५३	सारस्वत	,,	२६	८९	पचमहाव्रतसिज्झाय	,,	४
५४	ईश्वरीशिक्षा	,,	३	९०	काया पर सिज्झाय	,,	६
५५	महावीरचरित्र	,,	२	९१	नवतत्त्वचउपई	,,	६
५६	ऋषभदेवधवलबध	,,	१३	९२	रायपसेणीसूत्र	,,	४८
५७	आवश्यकसूत्र	,,	५९	९३	भवनभानुकेवलीचरित्र	,,	८२
५८	जबूस्वामिचरित्र	,,	७	९४	सूयगडागसूत्र	,,	४१
५९	रामसीताचरित्र	,,	७	९५	एतदमस्थापन	,,	१८
६०	अतगडसुत्रवृत्ति	,,	६४	९६	ठाणागसूत्र	,,	३६
६१	पार्श्वनाथस्तवन	,,	४	९७	आचारांगसूत्र	,,	४८
६२	भक्तामरस्तोत्र	,,	८	९८	विवाहपडल	,,	१५
६३	सातस्मरण	,,	८	९९	न्यायप्रवेशटीका	,,	१०
६४	नमस्कारवृत्ति	,,	४	१००	उववाईवृत्ति	,	७१
६५	राजहसचौपई	,,	११	१०१	रायपसेणीवृत्ति	,,	७९
६६	एकादशीनिणय	,,	४	१०२	दर्शनसित्तरी	,,	५७
६७	स्वानसित्तरीअवचूरि	,,	६८	१०३	गुरुगणछत्तीसी	,,	१६
६८	अमरकृत शतक	,,	१०	१०४	कातत्र मूल	,,	१०
६९	स्तवन बप्पभट्टसूरिकृत	,	५	१०५	वीतरागस्तोत्र	,,	१६
७०	आत्मानुशासन	,,	४	१०६	पच्चुणस्तोत्र	,,	३४
७१	शिलोपदेशमाला	,,	४३	१०७	तत्त्वप्रदीपिका	,,	१९५
७२	लघुसघपट्टप्रकरण	,,	११	१०८	लटकमोरनाटिक	,,	१०
७३	अष्टोत्तरसतक	,,	१४	१०९	सतकाव्य	,,	१८
७४	बिवेकमजरीप्रकरण	,,	२४	११०	वीतरागस्तुति	,,	६
७५	प्रश्णव्याकर्ण	,,	२४	१११	राघवानिधाननाटिक	,,	८६
७६	चक्रवर्त्तिगाथाबद्ध	,,	४	११२	गीतगोविंदटीका	,,	४८
७७	धनपालपचासिका	,,	३	११३	कालिकाचार्यकथा	,,	१०
७८	सिद्धांतगाथा	,,	२	११४	योतिषनाममाला	,,	२८
७९	अजितशांतिस्तवन	,,	२	११५	लघुस्तोत्रटीका	,,	८
८०	वैद्यक फुटकर	,,	६	११६	जैनरामायण	,,	१३९
८१	विष्णुकरज्योतिस	,,	३८	११७	दशाश्रुतस्कंध	,,	४३
८२	नवतत्त्वसूत्र	,,	२	११८	पचवस्तुकाव्य	,,	२२८
८३	गुणसुदरीचरित्र	,,	१२	११९	भुवनदीपकज्योतस	,,	६६
८४	ऋषिदत्तानो रास	,,	२३	१२०	लिंगानुशासन	,,	५
८५	रत्नचूडनो रास	,,	१८	१२१	अणुत्तरोववाईवृत्ति	,,	३

क्रम	ग्रंथ		पत्र
१२२	काव्यप्रकास	पत्र	७
१२३	उत्तराध्ययनगीत	,,	१६
१२४	योगनिर्युक्ति	,,	१३
१२५	योगभाषा	,,	३०
१२६	आवश्यकटिप्पन	,,	४१
१२७	आवश्यकवृहद्वृत्ति	,,	९२
१२८	सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र	,,	२५
१२९	उत्तराध्ययनवृहद्वृत्ति	,,	१८४
१३०	दशवैकालिकटीका	,,	७२
१३१	तत्त्वार्थवृत्ति	,,	३३१
१३२	सग्रहणीवृत्ति	,,	७१
१३३	लिंगानुशासन कृत हेमचंद्रसूरि	,,	२३
१३४	अनुयोगद्वारलघुटीका	,,	३१
१३५	सूर्यप्रज्ञप्तिटीका	,,	९३
१३६	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	,,	७
१३७	उत्तसिद्धांतधनधुर्यगाथा	,,	२४
१३८	उत्तराध्ययनअवचूरि	,,	५८
१३९	विशेषाविशेषसूत्र	,,	५०
१४०	कल्पचूर्णी	,,	१०४
१४१	सुयगडांगचूर्णी	,,	९८
१४२	पिंडनिर्युक्ति	,,	७४
१४३	आवश्यकलघुवृत्ति	,,	५३
१४४	,, वृहद्वृत्ति कृ। हरिभद्रसूरि	,,	१३४
१४५	सुमतितर्क दूजो खड	,,	९६
१४६	दशवैकालिकनिर्युक्ति	,,	५
१४७	निशीथसूत्र	,,	७४
१४८	सुमतिप्रकरण	,,	१२६
१४९	दशवैकालिकसूत्र	,,	५१
१५०	भगवतीसूत्र	,,	१५८
१५१	नदीसूत्र	,,	८
१५२	,, वृत्ति कृत मलयगिरि	,,	८५
१५३	ज्ञाताधर्मकथावृत्ति कृत ,,	,,	६४
१५४	अनुयोगद्वारवृत्ति	,,	५४
१५५	प्रज्ञापनाटीका कृ० मलयगिरि	,,	१४४
१५६	समवायांगवृत्ति कृत देवसूरि	,,	३९
१५७	जंबूद्वीपपन्नत्ती	,,	४६
१५८	वृहद्कल्पटीका	पत्र	११३
१५९	आचारांगचूर्णी	,,	८३
१६०	जबुद्वीपपन्नत्तीवृत्ति कृत हरिभद्रसूरि	,,	१८७
१६१	निरयावलीसूत्र	,,	१८
१६२	जबुद्वीपअवचूरि	,,	१६
१६३	समाधितत्र बालावबोध	,,	११३
१६४	रसिकमंजरी कविता	,,	१९
१६५	स्थिवरावलीसूत्र	,,	३१
१६६	पुष्पमालाप्रकर्ण	,,	२९
१६७	संदेहविषेऔषधि	,,	५७
१६८	सथारापयन्नो बालावबोध	,,	१२
१६९	कालिकाचार्यकथा	,,	२६
१७०	दशवैकालिकसूत्र	,,	२४
१७१	क्षेत्रसमासवृत्ति	,,	१०
१७२	सिद्धान्तमणिमाला	,,	११४
१७३	तर्कसस्कृत	,,	२२
१७४	दशवैकालिकसूत्र	,,	७
१७५	आवश्यकसूत्र	,,	२३
१७६	चदपन्नत्तीसूत्र	,,	११७
१७७	प्रश्नव्याकर्ण	,,	३१
१७८	विपाकसूत्र	,,	१२
१७९	पचांगीवृत्ति	,,	७५
१८०	जीवाभिगमसूत्र	,,	४८
१८१	,, वृत्ति	,,	१३०
१८२	पन्नवणासूत्र	,,	८३
१८३	वृहत्कल्पटीका खड १	,,	११७
१८४	,, खड २	,,	१२८
१८५	रायपसेणीवृत्ति	,,	३७
१८६	सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति	,,	१३४
१८७	ठाणागसूत्रवृत्ति खड १	,,	६०
१८८	,, खड २	,,	९०
१८९	उववाईवृत्ति	,,	३१
१९०	सूयगडांगसूत्र	,,	२२
१९१	ठाणांगसूत्र	,,	३९
१९२	उववाईसूत्र	,,	१२
१९३	आचारांगवृत्ति	,,	४७

२६५ प्रवज्याविधि ,, १०
२६६ पंचपरमेष्ठीनमस्कार ,, २
२६७ वार्तारूपविचार ,, १४
२६८ प्रज्ञापतिसूत्र ,, ४
२६९ कर्मविपाक ,, ६
२७० प्रशस्ती ,, ३०
२७१ क्षेत्रसमास ,, ७
२७२ मुनिपतिचरित्र ,, १९
२७३ गणधरस्तवनम् ,, ८
२७४ क्षेत्रसमास ,, ३०
२७५ उपदेशमाला ,, १५
२७६ नवतत्त्वबालाबोध ,, ७
२७७ भावनाप्रकास ,, ३२
२७८ कर्मस्तवनम् ,, ३
२७९ चद्रप्रभस्तवनम् ,, ४
२८० नवपदस्तवनम् ,, ७
२८१ चद्रप्रभस्तवनम् ,, ८
२८२ कर्मस्तवनम् ,, ७
२८३ वीतरागस्तवनम् ,, २
२८४ एकवीसठाणा ,, ३
२८५ षोडशवृत्ति ,, ५
२८६ उपदेशमाला ,, ४
२८७ साते स्मरण ,, ९
२८८ भक्तामरबालाबोध ,, १२
२८९ उपदेशमाला ,, १३
२९० शातिस्तवनम् ,, ९
२९१ मनोर्थमाला ,, १०
२९२ प्रवर्ज्याविधी ,, ८
२९३ विवेकमजरी ,, ८
२९४ जयतिहुयण ,, ४
२९५ पौषधवृत्ति ,, ११
२९६ क्रीयाकलाप ,, २७
२९७ आगमवस्तुविचार ,, ११
२९८ लघुसघपट्टक ,, २
२९९ उपदेशमाला ,, १९
३०० सग्रहणीसूत्र ,, १३
३०१ षष्टिशतक ,, २७
३०२ चउसर्णसूत्र ,, ३
३०३ उपासगदशा ,, ७
३०४ पार्श्वनाथवदन ,, ३
३०५ निर्वाणकलिका ,, ६
३०६ सनात ,, १०
३०७ क्षेत्रसमास ,, १२
३०८ मलासिज्झाय ,, ५
३०९ साते स्मरण ,, १२
३१० चंद्रकीर्त्ती ,, १५५
३११ सप्तकश्लोक ,, ११
३१२ चौपइ ,, ३
३१३ नेमनाथस्तवनम् ,, २
३१४ सिज्झायमाला ,, ७
३१५ रामनाटक ,, १५
३१६ रत्नाकरावतारिका ,, ८
३१७ विद्याविलास ,, १०
३१८ लीलावतीसूत्र ,, ३३
३१९ षष्टीशतक ,, १०
३२० कातन्त्र ,, ४१६
३२१ सिलोपदेशमाला ,, ३
३२२ समकितकथा ,, ५
३२३ कातन्त्रअवचूरि ,, १६
३२४ भक्तामरस्तोत्र ,, ३
३२५ सुरसुदरीरास ,, १७
३२६ श्रीपालचरित्र ,, १८
३२७ चंपककथा ,, १९
३२८ षष्टीटीका ,, १८
३२९ गुरुआवली ,, ७
३३० कालिकाचार्यकथा ,, ४
३३१ आदिनाथदेशना ,, २७
३३२ आराधना ,, ६
३३३ नवतत्व ,, २
३३४ जिनमाला ,, ३
३३५ चारित्रमनोर्थमाला ,, ३
३३६ ललितांगरास ,, ६

३३७	उपासगदशा	पत्र	१
३३८	चद्रद्योतकथा	,,	७
३३९	अतीचार	,,	१७
३४०	अंतगडसूत्र	,,	२४
३४१	उत्तराध्ययन	,,	२५
३४२	चउसर्ण	,,	१२
३४३	सिलोपदेशमाला	,,	३
३४४	वाग्भट्टालकार	,,	११
३४५	किरातकाव्य	,,	२०
३४६	लिंगानुशासनवृत्ति	,,	१२
३४७	प्रश्नोत्तररत्नमाला	,,	३
३४८	सप्तपदीटीका	,,	१९
३४९	तपकुलाक्षीटब्बो	,,	६
३५०	प्रश्नोत्तरनाममाला	,,	१४
३५१	बुद्धीरास	,,	४
३५२	सीतभनपार्श्व०स्तोत्र	,,	१३
३५३	प्रक्रियाकौमुदी	,,	११
३५४	रत्नमालचौपी	,,	१२
३५५	सिंघासणबत्तीसी	,,	६३
३५६	बारे भावना	,,	१२
३५७	आचारांगसूत्र	,,	४८
३५८	हरिबलचरित्र	,,	४१
३५९	दुर्गसिंहवृत्ति	,,	१०
३६०	सम्यक्त्वकौमुदी	,,	७
३६१	पांडवकथा	,,	९
३६२	भुवनदीपक	,,	११
३६३	पिंडविशुद्धिप्रकर्ण	,,	४
३६४	बत्तीस अतकाय	,,	६
३६५	संबोधसित्तरी	,,	६
३६६	ठाणांगसूत्र	,,	४
३६७	जयतिहुयण	,,	८
३६८	बारे भावना	,,	८
३६९	वासिष्ठकथा	,,	१५
३७०	ऋषीदत्त कथा	,,	२७
३७१	इलाकुमारचौपी	,,	४५
३७२	पांडवचरित्र	,,	३५
३७३	ऋषीदत्तचरित्र	,,	१४
३७४	नेमीनाथचरित्र	पत्र	१२३
३७५	भरहेसरवृत्ति	,,	२४८
३७६	उत्तराध्ययन	,,	१०८
३७७	रूपमालावृत्ति	,,	२
३७८	जयतिहुयण	,,	३
३७९	दुर्गसिंहवृत्ति	,,	१२३
३८०	विचारषट्त्रिंशिका	,,	६
३८१	कृतषष्ठोध्याय	,,	९०
३८२	निबध पचमोध्याय	,,	३३
३८३	सूरिस्तवन	,,	८
३८४	मोक्षाधिकार	,,	६
३८५	भक्तामरस्तोत्र	,,	४
३८६	षष्टीशतक	,,	१५
३८७	गौतमपृच्छा	,,	२
३८८	अर्थखड	,,	११
३८९	सम्यक्त्वकौमुदी	,,	१८
३९०	महावीरजीस्तवनम्	,,	४
३९१	चौवीसदडक	,,	११
३९२	विवेकविलास	,,	३५
३९३	,,	,,	३४
३९४	वृहत्वृत्ति	,,	१४
३९५	भवीम्योना	,,	९१
३९६	दुर्गसिंहतत्र	,,	१६
३९७	तारकीपरिष्या	,,	३
३९८	आवश्यकवृहद्वृत्ति	,,	४५
३९९	दवदतीकथा	,,	३३
४००	सिलोपदेशमाला	,,	१५३
४०१	मुरारीनाटिक	,,	५५
४०२	वसतराजटीका	,,	१०१
४०३	षट्पचाशिका	,,	३
४०४	बोधप्रक्षा	,,	६७
४०५	कल्पसूत्र	,,	११०
४०६	गौतमकुलकवृत्ति	,,	३८
४०७	उपदेशमाला	,,	४३
४०८	तत्वप्रबोध	,,	१३
४०९	भावारीवारण	,,	६
४१०	मुरारीनाटिक	,,	५५

॥ इति श्री लिखित पुस्तकोंकी सुचिपत्र संपूर्णम् ॥ सरुपचंदजीमहाराजके सुचिपत्रमें २५३ नग हे ॥

———o———

अथ श्रीखरतरगच्छके बडे उपासरेमें ताडपत्र या लिखित पुस्तकोंकी टीप इण मुजब नीचे प्रमाणें।

अथ लिखितपुस्तकोंकी टीप इण मुजब है।

गांठ पहिली पोथी १

१ तत्वबोधनी वृत्ति कृत ग्यानेन्द्रसरस्वती	पत्र ४०६	८ नाममाला कृत हेमचसूरि	पत्र ४५
२ आगमसारोद्धार बाला०कृत धर्मराजऋषी	,, १८	९ श्राद्धशतकभाषा कृत क्षमाकल्याणजी	,, १६
३ ज्ञानमंजरीटीका कृतमहर्षिसर्म	,, १६	१० षट्पचासिका	,, ९
४ सुरादित्यचरित्रप्राकृत	,, ३०१	११ ताजकसारटीका कृत सुमतिहर्षगणी	,, २४
५ साधुप्रतिक्रमणवृत्ति कृत चंद्रकीर्तिसूरि	,, ६१	१२ ताजकसारसुत्र	,, १४
६ सारस्वतटीका ,,	,, ११६	१३ दशनीकालिकटीका कृत हरिभद्रसूरि	,, ४५
७ सग्रहणीसूत्रप्राकृतबालाबोध कृत हेमचंद्रसूरि	,, ६५		

पोथी २ टीप

१ आवश्यकवृत्तीऽवचूरि मूलकर्ता हरिभद्रसूरि टीकाकर्ता ग्यानसागरसूरि	पत्र ७१	६ वर्षतंत्र कृत नीलकंठ	पत्र २५
२ महावीरचरित्र कृत हेमचन्द्रसूरि	,, २०८	७ रत्नमालाटीका कृत श्रीपती	,, ४२
३ सतकसूत्र कृत देवेंद्रसूरि	,, ११	८ वाराहसंहिता कृत वराहमीर	,, ९५
४ मीनराजताजकवृत्ती कृत यवनेश्वरसूरि	,, १०३	९ प्रकर्णअवचूरी कृत गुणरत्नसूरि	,, ४६
५ भुवनदीपकसूत्र कृत पद्मप्रभसूरि	,, १३	१० तिर्थोगालि सिद्धांतगाथाबंध	,, १३
		११ गुणरत्नमहोदधीवृत्ती कृत वर्द्धमानसूरि	,, ५०

पोथी ३ थी पोथी १८ उपर लिखये मुजब पोथी १६मां परचुर्ण जोतस वैद्यक सूत्रादिक टब्बा तथा प्राकृत तथा बालाबोध तथा स्तवन चोपई वगेरेकी पोथीयां छे॥

गांठ २ पोथी १ जिस्का सुचिपत्र पं० वस्तपालजी मोहनलाल की

१ सूक्ष्मजातकवृत्ती कृत भट्ट उत्पल	पत्र ३३	८ वैरागी तथा उपदेशकरसिककथा	पत्र २०१
२ सत्तरसठाणा कृत सोमतिलकसूरि	,, १५	९ पार्श्वनाथदशभवकथा	,, १५
३ समयसारनाटकवृत्ती कृत कुंदकुंदाचार्य	,, ३४	१० ब्रह्मपुराण	,, ७
४ विद्वन्मनोरजया पूर्वार्ध कृत रामदत्त	,, २७	११ धातु कृत हेमचंद्रसूरि	,, ७
५ खरतरगछसामाचारी कृत राजकीर्ति	,, ११८	१२ मानमणीशिरोमणि कृत भट्टाचार्य	,, १९
६ रत्नकुलकवृत्ति कृत समयसुदरोपाध्याय	,, १५	१३ श्लोकीप्रकाश कृत कैसव	,, १९
७ विशेसाविशेषसूत्रवृत्ती ,,	,, ४३	१४ वाक्यप्रकास कृत रायसिंहसूरि	,, ६

पोथी २ टीप इण मुजब

१ लिंगानुशासनवृत्ति कृत हेमचंद्रसूरि	पत्र ३८३	६ तर्कपरिभासा कृत कैशवमिश्र	पत्र २०
२ ,, कृत सिंहसूरि	,, २८९	७ कुमारसभवकाव्य कृत कालिदास	,, २८
३ अनेकार्थवर्ण कृत धनराज	,, १७	८ लिंगानुशासनवृत्ती कृत दीक्षत	,, ५७
४ वीतरागस्तोत्रत्रिपाठ कृ० हेमचद्रसूरि	,, १	९ सज्ञाप्रकर्ण	,, ६
५ प्राकृतचद्रिका कृत श्रीकृस	,, ३०		

पोथी ३ टीप

१ तत्वत्रयनिरणे विवर्ण कृत अघोर शिवाचार्य पत्र ६
२ प्रमाणवाद कृत हरिराम तर्कवागीश ,, २४
३ अमरकोसटीका कृत मेरुजी दीक्षत ,, ११
४ ,, ,, ११६
५ सामान्यनिर्युक्तिकोड पत्र २१
६ विद्वन्मनोरजनी कृत शंकरदत्त ,, १२
७ तिलकमजरी कृत सोमभट्टसुरि ,, २४
८ तत्वसग्रहचद्रस्यलघुवृत्ति कृत अघोरशिवाचार्य ,, १५

गांठ ३ पोथी १

१ सग्रहणीसुत्र पत्र ११२
२ विपाकसुत्र टब्बेरी टीका ,, ७१
३ सुभद्रचरित्र प्राकृत ,, २७
४ रत्नचूडमुनीचौपई कृत कनकसुरि ,, २६
५ धर्मदत्तकथा ,, ७
६ विक्रमचरित्र पत्र ३६
७ सिद्धांतचद्रिकाटीका लोकेसकरकृत ,, ७५
८ सुयगडांगसुत्र टब्बो ,, ९८
९ श्रीपालचरित्रटब्बो ,, १२१
१० जैनतत्वविचार , ४२

पोथी २ टीप

१ कालिकाचार्यव्याख्या पत्र ३०
२ ,, कथा ,, २९
३ उपासगदशासूत्र टब्बो ,, ६४
४ पचेद्रीयजीवविचार ,, २५
५ मगलकलसकथा कृत कनकसोमवाचक
६ दशमीकालिक टब्बो ,, ४८
७ वाग्भट्टालकार ,, ६
८ उपदेशरसाल पत्र ६७
९ कल्याणभाषा कृत लक्ष्मीवल्लभगणि ,, ९
१० प्रज्ञापनाविधान चतुर्थो उपांगकृत अभयदेवसूरि ,, १४
११ सबोधसत्तरी कृत मानकीर्तिसूरि ,, २०
१२ प्रश्नव्याकर्ण टब्बो ,, ८७
१३ उत्तराध्ययन टब्बो ,, १६८
१४ जीवाभिगमसूत्र ,, ५५

अथ गांठ ४ डब्बो पहिलो

१ श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र बालाबोध पत्र ५१
२ धन्नाशालिभद्रचरित्र कृत बुधविजय ,, ७५
३ भक्तामरस्तोत्रकथानि ,, २८
४ चतुर्विंशतिजिनस्तुति त्रिपाठ कृत बप्पभट्टसूरि ,, ४
५ तर्कभाषा कृत कैसवमिश्र ,, १६
६ ऐरावतक्षेत्रद्वार कृत गुणसुंदर ,,
७ षट्दर्शनटीका कृत सिंहतिलकसुरि ,, १७
८ आलापकप्रकर्णवृत्ती कृत गुणरत्नसुरि ,, ९
९ प्रद्युम्नकुमारचरित्र कृत गुणसागरगणि ,, ५
१० जिनसतकसंपाठ कृत जबू ,, ९
११ लघुशब्दानुशासनसौपग्य कृत हेमचंद्रसुरि ,, १५
१२ भवानीसहस्रनामस्तोत्र कृत महदेव नंदिकेस ,, ९
१३ रत्नकराख्यछद अ० ६ कत कैदारभट्ट पत्र ४
१४ साधुदिनचरियासामाचारी ,, १६
१५ सामाचारिसूत्र ,, २४
१६ व्याकर्ण लघु अवचूरी ,, २०
१७ श्रावकदिनकृत्यप्रकर्ण ,, १६
१८ षोडशकसटीक मूलकर्त्ता हरिभद्रसुरि टीकाकर्त्ता यशोभद्रसुरि ,, ३७
१९ जंबुचरित्र बालाबोध कृत पद्मसुदरसुरि ,, १८
२० कियाकलाप अ० ४ कृत विद्यानंद ,, ९
२१ कर्मपयडीसूत्र ,, १७
२२ समयसारनाटिक कृत अमृतचद्राचार्य ,, ९३
२३ कर्णकुतूहल कृत कवि भास्कर, १२
२४ ऐरावतसारोद्धारगाथाबद्धकृतनेमिचंद्रसूरि ,, ८९

डब्बा २ की टीप इण मुजब

१ काव्यकल्पलताकविसिक्षा कृत अमरचंद	पत्र ७९	९ कर्मप्रकृतिटीका कृत मलयगिरि	पत्र १९
२ दशवैकालिकवृत्ती कृत कीर्तिरत्नसुरि	,, ४८	१० कल्पसुत्रटीकातृपाठ कृत ब्रह्मकवि	,, १०५
३ चिंतामणीनाममाला कृत हेमचंद्रसुरि	, १७०	११ उपासगदशासूत्र	,, १२५
४ विदग्धमुखमडनालकारटीका कृत कनकसागर	,, ६९	१२ तर्कभाषाप्रकाश कृ० गोवर्द्धनसुरि	,, ३०
५ आवश्यकटिप्पनक मूलकर्ता अभयदेवसूरि टीकाकर्ता हेमचद्रसुरि	,, ६२	१३ द्रव्यगुणपर्यायरास कृत जसविजय	,, ५३
६ भुवनदीपिकाटीका	,, २४	१४ सिद्धांतकौमुदीमध्यम कृत वरदराज भट्ट	,, ९५
७ ठाणांगवृत्ती कृत अभयदेवसूरि	,, २४२	१५ विचारषट्त्रिंशिका कृत धवलचद्र	,, ७
८ कल्पसूत्रटीका	,, १३५	१६ कल्पसूत्रवृत्ति कृत महोपाध्याय समयसुदरगणी	,, १४०
		१७ भगवतीसूत्रटीका	,, ७१२

इण मुजब पुस्तक खरतरगच्छका बडा उपाश्रेमें छे ॥

अथ गुजराती लूकागच्छका बडा उपाश्रेमें पुस्तकजीको भडार छे तेहनी टीप इण मुजब नीचे प्रमाणे छे ।

पहिले डब्बेकी टीप लिख्यते

१ जीवाभिगमसूत्र तृपाठ	पत्र ११३	४ महानिसीथसूत्र	पत्र १०९
२ भगवतीसूत्र	,, ५४७	५ पन्नवणासूत्र	,, २८६
३ षष्ठकर्मग्रथ बालाबोध	,, २७८	६ श्रीयुगादीदेसना	,, ६७

अथ २ की टीप इण मुजब

१ भगवतीसूत्र	पत्र ७०७	११ रायपसेणीसूत्र	,, ७५
२ पन्नवणासूत्र	,, २८६	१२ उववाईसूत्र	,, ६४
३ ज्ञातासूत्र	,, २३६	१३ निर्यावलीसूत्र	,, २४
४ ठाणांगसूत्र	,, १६८	१४ आचारांगसूत्र	,, ६८
५ अनुयोगद्वारसूत्र	,, ५०	१५ उत्तराध्ययनटब्बो	,, ११२
६ अंतगडदशासूत्र	,, २३	१६ प्रतीक्रमणसूत्र	,, १०
७ आचारांगप्रथमस्कंध	,, ८४	१७ दशमीकालिकसूत्र	,, २७
८ अणुत्तरोववाईसूत्र	,, ९	१८ उत्तराध्ययनटबो	,, १९९
९ उत्तराध्ययनसूत्र	,, ७२	१९ विपाकसूत्र	,, ६२
१० जबुद्दीपपन्नत्तीसूत्र	,, १५७	२० तदुलवेयालीयसूत्र	,, २७

अथ ३ की टीप इण मुजब

१ कल्पसूत्र	,, ११२	४ ठाणांगवृत्ती	,, ४३९
२ भगवतीवृत्ती	,, ३६०	५ ज्ञाताटीका	,, ४६०
३ ,,	,, ४१०	६ आचारांगदीपिका कृत जिनहंससूरि	,, २४५

अथ ४ डब्बे की टीप इण मुजब

१ चदपन्नत्ती	,, ७०	३ उववाईसूत्र	,, ५०
२ सूर्यपन्नत्ती	,, ५७	४ सुयगडांग बालाबोध	,, ७७

५	सुयगडांगसूत्र पंचपाट	,,	७६
६	उत्तराध्ययनसूत्र	,,	८४
७	,,	,,	९४
८	,,	,,	४१
९	,,	,,	१००
१०	दशवैकालिक बालाबोध	,,	१०८
११	दशवैकालिकसूत्र	,,	३९
१२	,,	,,	२६
१३	,,	,,	३८
१४	,,	,,	३०
१५	,,	,,	३०
१६	,,	,,	२७
१७	दशवैकालिकसूत्र	,,	२४
१८	उपासगदशा	,,	२१
१९	नंदीसूत्र	,,	२६
२०	प्रस्मरतीवृत्ती	,,	१२
२१	नंदीसूत्र पचपाट	,,	४५
२२	भुवनभानुकेवलीचरित्र	,,	४४
२३	हुंडीका ग्रंथ	,,	७९
२४	उत्तराध्ययन	,,	३०
२५	ज्ञातावृत्ती	,,	९३
२६	अनुयोगद्वार	,,	५४
२७	निसीथवृत्ती	,,	१९
२८	पिंडविसुद्धिप्रकर्ण	,,	५
२९	प्रिष्णव्याकरण	,,	५
३०	शिलोपदेशमाला	,,	७
३१	वसुधारा	,,	६
३२	उपासगदशा	,,	२३

डब्बे ५ की टीप इण मुजब

१	भगवतीसूत्र	पत्र	७०७
२	पन्नवणासूत्र	,,	३१५
३	जीवाभिगम	,,	२०१
४	उत्तराध्ययनबालावबोध	,,	२३८
५	दशवैकालिक	,,	२१
६	कल्पसूत्र	,,	१०९
७	ज्ञातासूत्र	,,	१०४
८	नंदीसूत्र	,,	२४
९	प्रवचनसारोद्धार	,,	६४
१०	सुयगडांग द्वितीय	पत्र	५१
११	ठाणांगसूत्र	,,	१३०
१२	रायपसेणीवृत्ती	,,	११०
१३	आचारांगसूत्र	,,	३४
१४	व्यवहारसूत्र	,,	१०
१५	प्रतिक्रमणसूत्र	,,	३०
१६	सूयगडांगसूत्र	,,	६३
१७	संग्रहणीसूत्र	,,	२४
१८	उपदेशमाला	,,	२९

अथ डब्बे ६ की टीप इण मुजब

१	कल्पसूत्र चित्रम्	,,	८२
२	कालिकाचार्यकथा	,,	१०
३	छूटक बोल	,,	९६
४	गजसुकमालचौपी	,,	५
५	प्रतिक्रमणसूत्र	,,	२९
६	सग्रहणीबालावबोध	,,	२७

अथ किल्ले पर भंडारमें गुप्त परतां हे तिस्की यादवास्ती

१	नेमनाथ चरित्र लंबर पहिलो	,,	३०४
२	मुनिसुव्रत चरित्र ,, २	,,	१४२
३	मुनिपति चरित्र ,, ३	,,	१५७
४	धर्मबद्धप्रकर्ण	,,	१८७
५	भवभावनावृत्ती	,,	३८४
६	नैषधविद्याधरीटीका	,,	३७७
७	कल्पविवरण	,,	१६६
८	श्रावकदिनकृत्यप्रकरण	,,	२४८
९	आवश्यकनिर्युक्ति	,,	२३२
१०	भगवतीसूत्र	,,	३४८
११	योगनिर्युक्ति	,,	२३४
१२	कल्पपीठिकावृत्ती	,,	९६

१३ दशाश्रुतस्कंध	पत्र	७०	२० ज्योतिषकरंडटीका कृत मलयगिरि	पत्र	२२३
१४ ,, निर्युक्ति	,,	११२	२१ दशवैकालिक बृहद्वृत्तीनिर्युक्ति	,,	२४७
१५ पंचकल्प बृहत् भाष्य	,,	१२५	जंबूद्वीपपन्नत्तीचूर्णी	,,	१६०
१६ दशाश्रुतस्कंधचूर्णी	,,	१२५	२२ जबूद्वीपपन्नत्तीवृत्ती	,,	२६५
१७ ऋषभादि श्रेयांस सुधी ११ तीर्थंकर चरित्र सं. श्लोकबद्ध कृत हेमचंद्रसुरि	,,	२४०	जीवाभिगमसूत्र	,,	६५
			२३ विशेषाविशेषवृत्ती	,,	३२२
			२४ प्रज्ञापनावृत्ती कृत मलयगिरि	,,	३६८
१८ उत्तराध्ययनवृत्ती	,,	७००	२५ चद्रप्रभचरित्र प्राकृत टीका सूत्र धनदेव उ०	,,	१७८
१९ विशेषाविशेषवृत्ती द्वितीयखंड कृत हेमाचार्य	,,	३६४	२६ निशीथचूर्णी तथा महानिशीथ सूत्र	,,	२९४+८७

॥ इति श्री किल्लेपर भडारमें गुप्त परतां हे तिस्की टीप सपूर्णम् ॥

अथ लव्धाचार्यगच्छ उपाश्रये पुस्तकेषु विपत्र प्रारभ्यते

नंबर पहिला

१ कल्पसुत्र मूल रूप्यक्षराणि	पत्र	१४३	२ कल्पसुत्र मूल रूप्यक्षराणि त्रूटक	पत्र	१८

नंबर दूजा

१ सप्ततिबृहत्चूर्णि कर्मप्रकृतिचूर्णि	पत्र	१३२	८ समवायांगसुत्र	पत्र	४२
२ कर्मप्रकृतिचूर्णि	,,	१००	९ उपासकदशासुत्र	,,	२०
३ कम्मपयडीसग्रहणीटीका	,,	३४	१० अंतगडसुत्र	,,	२०
,, चूर्णि टिप्पनक	,,	३०	११ ठाणांगसुत्र	,,	८६
४ शतकचूर्णि	,,	३६	१२ अणुत्तरोववाईसू०	,,	५
५ तत्वार्थसारदीपक तथा ध्यानस्वरूप	,,	२९	१३ विपाकसुत्र	,,	३३
६ ज्ञातासूत्र मूल	,,	१३२	१४ आचारांगसुत्र	,,	५८
७ प्रश्नव्याकर्णसूत्र	,,	२४	१५ उववाईसुत्र	,,	१७

नंबर ३

१ वृंदारुवृत्ति श्रावकप्रतिक्रमणा	पत्र	६१	९ काव्यकल्पलतावृत्ति अमरचद्र	,,	४६
२ प्रवचन सारोद्धार सूत्र	,,	४२	१० वृंदारुवृत्ति	,,	३१
३ पर्यूषणकथा कल्पसूत्र	,,	१०८	११ ललितविस्तरापजीका मुनिचंद्रसूरि	,,	३०
४ देवचंदजीकत चतुर्विशति बालावबोध	,,	९७	१२ ज्ञानार्णव योगप्रदीप सुभचद्रसूरि	,,	३०
५ भत्तपरिन्ना	,,	१६	१३ अर्थदीपिका श्रावक प्र० टीका	,,	१४४
६ दशवैकालिक वृत्ति सुमतिसूरि	,,	५३	१४ कल्पान्तरवाच्य	,,	४७
७ योगशास्त्र द्वादशमप्रकाश हेमचंद्रसूरि	,,	१५	१५ सुयगडांगवृत्ति शीलंकाचार्य	,,	१९०
८ चोराशीआशातनादि पूजाविधि	,,	३१	१६ उत्तराध्ययनसूत्र नग २	,,	६४+८४

नंबर ४

१ आवश्यकनिर्युक्तिचूर्णि	पत्र	३४२	४ भगवती सूत्र	,,	४२५
२ पंचाशकवृत्ति हरिभद्राचार्य	,,	१९९	५ पिंडविशुद्धिदिपिका	,,	१६
३ विपाकसूत्र	,,	४२	६ गुणस्थानकप्रकर्णवृत्ति	,,	२८

७ उपधानविधि नंदिसूत्र	,,	६	१२ कल्पसूत्र	,,	१२०
८ उपदेशमाला	,,	२१	१३ दशमच्छेरा	,,	५
,,	,,	२९	१४ बलिनरेंद्राख्यानम्	,,	५४
९ सूयगडांग बालावबोध त्रुटक	,,	४१	१५ निशीथसूत्र	,,	२९
१० पच्चक्खाणभाष्य	,,	७	१६ श्रावकदिनकृत्य	,,	१५
११ सुकृतसागर आजणप्रबंध रत्नमंडन	,,	१६	१७ प्रतिक्रमणहेतुगर्भ जयचंद्रसूरि	,,	११

र ५

१ पुरंदरकथा-शीलविषये	पत्र	१७	२४ भक्तामरस्तोत्र	,,	७८
२ दिगंबरमतनिरूपणनाम द्वितीयो विश्राम प्रवचनपरीक्षा उ० धर्मसागर	,,	३०	२५ पच्चखाणभाष्य व्याख्या नग २	,,	६+७
३ उववाइसूत्रवृत्ति तथा मूल अभयदेवसूरि	,,	६५	२६ उपदेशमाला	,,	२८
४ श्राद्धदिनकृत्य	,,	१३	२७ श्राद्धसामाचारी	,,	
,,	,,	१५	२८ योगशास्त्र चतुर्थप्रकाश नग २ हेमचन्द्रसूरि	,,	८, १९
५ पुष्पमालाप्रकर्ण	,,	१९	२९ प्रदेशीकथा	,,	१४
,,	,,	१६	३० पिंडविशुद्धिदीपिका	,,	८
६ अंतगडसूत्रटीका	,,	७	३१ विवेकमंजरीबालावबोध	,,	१६
७ जीवविचारवृत्ति	,,	१७	३२ कर्मविपाक	,,	६२
८ रत्नश्रावकप्रबंध	,,	५	३३ परिशिष्टपर्व क० हेमचंद्रसूरि	,,	६३
९ उपदेशमाला	,,	३१	३४ नवतत्वटीका	,,	१७
१० संग्रहणीसूत्र मलधारी हेमचंद्रसूरिशिष्य	,,	२२	३५ कल्याणमंदिरवृत्ति देवतिलकसूरि	,,	१३
११ उत्तराध्ययनसूत्र	,,	४८	३६ अनुमानखंड गोपाल	,,	१३
१२ गडयस्स कहा	,,	१५	३७ पचनिग्रंथसग्रहणी अभयदेवसूरि	,,	५
१३ प्रश्नषष्टिशतककाव्यवृत्ति क. पुण्यसागर	,,	१८	३८ रविगमनप्रमाण योतिष	,,	७
१४ अतिचार	,,	८	३९ अनुत्तरोववाई	,,	६
१५ दशवैकालिकसूत्र	,,	१५	४० चतुःशरण अवचूरि	,,	३
१६ दशविधसामाचारी	,,	३४	४१ कायस्थितिस्तोत्र	,,	३
१७ लघुक्षेत्रसमासविवरण	,,	४२	४२ कृष्णराजीविचार	,,	१
१८ प्रबोधचिंतामणि क० मेरुतुगाचार्य	,,	३०	४३ रत्नचूडचोपई	,,	१४
१९ अंतगडसूत्र	,,	२९	४४ नवतत्वप्रकर्णमूलटब्बो	,,	४५
२० चैत्यवंदनाविधि	,,	३३	४५ नयचक्र मूल तथा बाला०	,,	४९
२१ प्रश्नव्याकर्णसूत्र	,,	१९	४६ लोकनाल मूल तथा बाला०	,,	१२
२२ श्रमणदिवसचर्या	,,	१३	४७ दशठाण	,,	१६
२३ ललितविस्तरा चैत्यवंदनवृत्ति हरिभद्रसूरि	,,	२४, १६	४८ पुष्पमालाप्रकर्णमूल	,,	९
			४९ ,,	,,	२५
			५० संदेहदोहलावलिप्रकर्ण	,,	१३

नंबर ६

1 संग्रहणीसूत्र ,, ७६
2 उत्तराध्ययनसूत्र ,, ६८
3 ,, ,, ५४
4 विवेकमंजरी पत्र ७
5 भगवतीसूत्र मूल ,, १८०
6 श्राद्धदिनकृत्य ,, ८
7 कल्पसूत्र बालावबोध ,, १५१
8 अंतगडसूत्र ,, २४
9 निर्यावलिसूत्र ,, २४
10 गुणमंजरीवरदत्तचौपई ,, २३
11 दशपयन्नासूत्र ,, ११५
12 शालिभद्रचोपई ,, २५
13 साधुसामाचारी ,, १४
14 थावच्चाजिनचौपइ ,, ११
15 अयवतीसुकुमालभास ,, ७
16 पचदशतिथिस्तुति ,, ६
17 आणदश्रावकसंधि ,, १०

नंबर ७

1 कल्पलता कल्पसूत्रवृत्ति समयसुंदरगणि पत्र १९१
2 महानिशीथसूत्र ,, १५१
3 शत्रुंजयमहात्म श्लोकबद्ध धनेश्वरसुरि ,, १८४
4 भगवतीवृत्ति ,, ३२५
5 उत्तराध्ययनावचूरि पत्र ११६
6 ज्ञातासूत्र तथा वृत्ति पत्र ६७+१३८
7 लघु संदेहदोहलावली प्रबोधचंद्रगणि ,, ३३
8 वदारुवृत्ति ,, ६२

नंबर ८

1 सुयगडांगदीपिका साधुरंग उ० ,, १४४
2 पात्रदाने वस्तकथानक ,, २९
3 उपदेश ,, ५
4 श्रीपालरास ,, ७९
5 योगशास्त्रप्रकाश ४ हेमचंद्रसुरि ,, २७
6 दंडकटब्बो ,, १०
7 विंशतिवहिरमानस्तवन जशोविजयजी ,, ६
8 दोशावलि निमित्त ,, ३
9 सारस्वत ,, ३७
10 उपासकदशाटब्बो ,, ५१
11 कर्मग्रंथ ,, २२
12 श्रावकदिनकृत्य ,, १४
13 लघुक्षेत्रसमास ,, १३
14 षष्टिशतकप्रकर्ण ,, १५
15 समकित ६७ बोल ढाल यशोविजयजी ,, ६
16 सिद्धाचलमहिमा ,, ८
17 द्रव्यगुणपर्यायरास ,, १५
18 सत्तरभेदीपूजा सकलचंद्र ,, ४
19 भगवतीसूत्रभोगा ,, ७
20 चतुर्मासीव्याख्यान ,, ७
21 संबोधसत्तरीटब्बो ,, १८
22 पच्चखाणभाष्यादि ,, १९
23 वीतरागस्तोत्र हेमचंद्राचार्य ,, १०
24 चैत्रीदेववदनविधि ,, ५
25 अतीचार ,, १
26 वसुधारा ,, ४
27 दशाफल ,, ५
28 समकित तथा चतुर्थव्रत उच्चारणविधि ,, १४
29 वैराग्यशतक ,, २
30 क्षेत्रसमास ,, ७
31 योगविधिकल्पाकल्प ,, ३
32 शिलोपदेशमाला ,, ६
33 विवेकमंजरी ,, ७
34 स्तवन सज्झायादि ,, ७५
35 सीमंधरजिन स्तवन १२५ गाथानु ,, ६
36 चोवीसजिनस्तवन ,, ६
37 रगरत्नाकर छंद ,, ८
38 चउसरणपयन्ना ,, ७
39 सीमंधर जिन ३५० गाथानु स्तवन ,, १७
40 चोवीसजिनस्तवन ,, ९६
41 सिद्धचत्वारिंशिका ,, २
42 भववैराग्यशतक ,, ७
43 क्षेत्रसमास ,, ११
44 समाससारोद्धार ,, १०
45 कर्मग्रंथ ,, ७
46 शोधनाममाला ,, ११
47 सामायक पौषधविधी पोसहादी ,, १६
48 दशवैकालिकसूत्र ,, १४
49 द्वादशभावनासिज्झाय ,, ७
50 कपूरप्रकराभिध सुभाषितकोश वज्रसेनशिष्य ,, ६

नंबर ९

१ सम्मतितर्कटीका भाग दो तत्वबोध विधायनी प्रद्युम्नसूरिशिष्य	पत्र	६५	८ विचारषट्त्रिंशिका	,,	
२ कालिकाचार्यकथा समयसुंदर	,,	११	९ जगतसिंहयशस्वीसमस्या महाकाव्ये तृतीयस्वर्ग-भटभदन	,,	४६ २९
३ विवाहप्रकर्ण काशीनाथ	,,	७०	१० शालिभद्रचौपइ	,,	३१
४ भक्तामरटीका मंत्रकथासहित	,,	२५	११ शांबप्रद्युम्नचोपाई	,,	२
५ स्तवन सिज्झाय सिद्धाचलगीतम् गुणाकरसूरि	,,	७ १४	१२ कर्मग्रंथबालाबोध त्रूटक	,,	८
			१३ प्रवचनसारोद्धार सारांस	,,	५
६ क्षेत्रसमास	,,	१०	१४ इलाकुमारचोपइ	,,	१२
७ चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र भाषा	,,		१५ बिल्हकृत बावनी	,,	६

नंबर १०

१ नदीसूत्र	पत्र	१४	७ उत्तराध्ययन सुबोधिकावृत्ति	,,	३२७
२ शत्रुंजय महात्म धनेश्वरसूरि	,,	१६७	८ जबुद्वीपपन्नत्ती सूत्र	,,	१०
३ जीवाभिगमसूत्र-नग २	पत्र	९०+८१	९ जीतकल्पसूत्र	,,	१०
४ उवाईसूत्र	पत्र	२८	१० श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र तिलकाचार्य	,,	१४
५ दशवैकालिकटीका तिलकाचार्य	,,	३८	११ ओघनियुक्ति	,,	२८
६ पिंडनिर्युक्ति	,,	१०	१२ रायप्रस्नीसूत्र	,,	२७

नंबर ११

१ भगवतीसूत्रवृत्ति अभयदेवसूरि	पत्र	३६५	३ आचारांगसूत्रवृत्ति शीलकाचार्य	,,	२००
२ ,, मूल	,,	२८८	४ अनुयोगद्वारसूत्र	,,	२८

नंबर १२

१ अनेकांतजयपताका हरिभद्रसूरि	पत्र	८७	३ अनेकांतजयपताका टिप्पण श्रीमुनिचंद्र	पत्र	२२
२ अनेकांतजयपताकाटीका ,,	,,	२०			

नंबर १३

१ पचकल्पभाष्य संघदासगणि क्षमा०	पत्र	१५१	३ कप्पे छट्ठो उद्देसो	पत्र	२२
२ ,, चूर्णी ,,	,,	१४२			

नंबर १४

१ वसुदेवहिंडीए पढमो पभाबईलभो नाम धर्मसेनगणि कृत — पत्र ३६५

नंबर १५

१ श्रावकधर्मप्रकर्ण वृत्ती ग्रंथ श्लोक १५१३१ जिनेश्वरसूरि — पत्र ३५३

नंबर १६

१ तिलकमंजरी धनपाल पंडित — पत्र १९३

नंबर १७

१ सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकर्ण तथा लोकनालि तथा पंचलिंगीप्रकर्ण आवश्यकविधि तथा सम्यग् क्षेत्रसमासादि अनेक ग्रंथ छे जिनवल्लभसूरि आदि — पत्र २०२

नंबर १८

नंबर १९

नंबर २०

६

षष्ठं परिशिष्टम्

जेसलमेरज्ञानभण्डारशिलालेख:

॥ ५० ॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ वीरवद्धमाणजिणस्स । णमो त्थु णं अणुओगधराणं ।

श्रीमन्तं कमठप्रतापमथनं श्रीअश्वसेनाङ्गजं
श्रीवामातनयं प्रभावनिलयं नाम्ना निरस्तामयम् ।
अर्हन्तं धरणोरगेन्द्रमहितं पद्मावतीसंस्तुतं
पौनःपुन्यमहं करोमि शरणं श्रीपार्श्वनाथं जिनम् ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीनृपविक्रमार्कसंवति २००७ चैत्रमासे शुक्लपक्षे एकादशीतिथौ बुधवासरे पूर्वाफल्गुनीनक्षत्रे स्थिरयोगेऽद्येह श्रीजेसलमेरुमहादुर्गे खरतरगच्छालङ्कारयुगप्रधानाचार्यप्रवरश्रीजिनभद्रसूरिजैनभाण्डागारस्य जीर्णोद्धारविधानादिपुरस्सरं पुनः स्थापना विहिता । अयं च ज्ञानकोशो युगप्रधानाचार्यश्रीजिनभद्रसूरिभिः पञ्चदशविक्रमशतकचतुर्थचरणे स्थापित आसीत् । तदन्तश्च तैः प्राचीनतमानां चिरन्तनजैनजैनेतरस्थविराचार्यपुङ्गवविनिर्मितानामतिबहुमूल्यानामलभ्यदुर्लभ्यानां ग्रन्थानां सङ्ग्रहोऽकारि । नवीना अपि च सहस्रशो ग्रन्थप्रतयस्तैस्ताल-कागलादिपत्रेषु लेखिताः । लेखयित्वा चात्रत्यज्ञानकोशेऽणहिल्लपुरपत्तनादिचित्कोशेषु च स्थापिताः । अपि च जेसलमेरुदुर्गस्थस्थास्यातिमहतो ज्ञानागारस्याद्यावधि बहुभिर्मुनिपुङ्गवैर्विद्वत्प्रवरैश्चावलोकनं ग्रन्थनामसूचीपत्रं पुस्तकलेखनं जीर्णोद्धारादिकं च व्यधायि । तत्रापि गतविक्रमशतकान्तः डॉ० टॉड, डॉ० बुल्हर, डॉ० याकोबी, डॉ० भाण्डारकर, यतिजी श्रीमोतीविजयजी, श्रीहंसविजयजी महाराज, श्रीजैनश्वेताम्बर कोन्फरन्स मुम्बई, सी०डी० दलाल, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि, श्रीजिनहरिसागरसूरि, भारतीयविद्याभवनाद्याचार्य श्रीजिनविजयजी, यतिश्रीलक्ष्मीचन्द्रजीप्रभृतिभिर्विद्वद्भिर्ज्ञानभण्डारनिरीक्षण-पुस्तकलेखन-ग्रन्थनामसूचीविधानादि पाण्डित्यसूचकं निरमायि । तथापि नैकेनापि विद्वत्प्रकाण्डेनैतद्भाण्डागारजीर्णोद्धार-ग्रन्थव्यवस्थापन-लेखन-संशोधनादिकं समग्रभावेन व्यधायि । किञ्च श्रीसङ्घपुण्योदयात् श्रीजेसलमेरुदुर्गश्रीसङ्घसम्मत्या सङ्घवीश्रेष्ठि बाफणा श्रीसांगीदासजी सुपुत्र श्रेष्ठिश्रीआयदानजी, महेता श्रेष्ठिश्रीराजमलजी सुत श्रीफतेसिंहजी सुश्रावकयोर्विज्ञप्त्या श्रीजेसलमेरुतीर्थयात्रा-प्राचीनज्ञानभण्डारजीर्णोद्धाराद्यर्थं श्रीगूर्जरदेशान्तर्गतराजनगरतः (अहमदाबादनगरात्) अत्युग्रेण विहारेण विहृत्यागतैः श्रीतपोगच्छदिवाकर न्यायाम्भोनिधि संविग्नशाखीयाद्याचार्य पञ्जाबदेशोद्धारक आचार्यश्रीविजयानंदसूरि (श्रीआत्मारामजी महाराज) शिष्याऽणहिल्लपुरपत्तनादिगतजैन-

ज्ञानभाण्डागारोद्धारक प्रवर्त्तक श्रीकान्तिविजयान्तेवासि लीम्बडीप्रभृतिनगरस्थप्राचीनज्ञान-भण्डारोद्धारक श्रीआत्मानन्दजैनग्रन्थमालासम्पादकमुनिवर श्रीचतुरविजयजीशिष्याणु-शिष्यरत्नैः समग्रजिनागमपुनःसर्वाङ्गसंशोधनेच्छुकैर्मुनिपुण्यविजयैः स्वबृहद्गुरुबन्धुपूज्यपाद श्रीमेघविजयजीमहाराजच्छत्रच्छायास्थितैः पूज्यप्रवरचारित्रचूडामणिश्रीहंसविजयजी महाराजान्तिषदतिविनीतभावपूर्ण प्रज्ञांशश्रीसम्पतविजयजी शिष्याणु अनेकग्रंथसंशोधन-प्रतिलिपिविधानप्रवीण मुनिश्रीरमणीकविजयजीसंयुतैः स्वशिष्य श्रीजयभद्रविजयजीपरि-वृतैरत्रत्यदुर्गस्थितप्राचीनतमजैनज्ञानकोशस्य ग्रन्थालेखन-संशोधन-पृथकरण-टिप्पविधाना-दिना सर्वाङ्गीणो जीर्णोद्धारो विहितः। अपि चैतद्भण्डारजीर्णोद्धारादिसमस्तकार्येषु अनेक-कार्यविधानकुशलो न्यायतीर्थवेलाणीश्रीफत्तेहचन्द्रो भोजककुलभूषणः पण्डितश्रीअमृ-तलालः सततसंशोधनादिलीन पण्डितश्रीनगीनदासः लेखनकलाप्रवीणो भोजकचीमन-लालश्च एते चत्वारोऽपि विद्वांसः सततसहायिनोऽभूवन्। तथा राजनगरीयश्रीगूजरात विद्यासभया स्वीयद्रव्यव्ययेन प्रहिताः श्रीजितेन्द्रभाई जेटली एम. ए. न्यायाचार्या अप्यत्रत्यज्ञानकोशस्थदार्शनिकग्रंथसंशोधनादिषु सहायका आसन्। तथैवात्रत्यभण्डारजीर्णो-द्धाराद्युपयोग्यन्यान्यकार्येष्वनवरतश्रमी भोजककुलनंदनो लक्ष्मणदासो रसिकलालश्चापि सहायिनावभूताम्। रसवतीकारको वीरचन्द्रः ठाकोरमाधवसिंहश्चापि सोत्साहभावेन सर्वेषामानंददायिनावभूताम्।

अपि चैतज्जीर्णोद्धाराद्यर्थं समस्ता द्रव्यादिव्यवस्था श्रीजैनश्वेताम्बरकोन्फरन्स बम्बई संस्थया विहिता। तत्रोपर्युक्तविद्वत्समूहद्रव्यव्ययव्यवस्था सर्वाऽप्यणहिल्लपुरपत्तन-वास्तव्य-ज्ञानभक्तिभृत् सुश्रावकश्रेष्ठि श्रीकीलाचन्द्रात्मज श्रीकेशवलालसत्प्रेरणया पत्तनी-योदारचेतस्क-जिनप्रवचनानुरागिणा श्रेष्ठि पोपटलालसुपुत्रेण श्रीचीमनलालेनात्मीय-ज्ञानावरणीयादिक्लिष्टकर्मनिर्जरार्थं विनिर्मिता। अपरा च ग्रन्थकाष्ठपट्टिका-दवरक-वस्त्रवेष्टन मञ्जूषा-ऊर्ध्वमहामञ्जूषा (कबाट) आदिविषया ग्रन्थप्रतिबिम्बन (माइक्रोफिल्मिगफोटोग्राफी) विषया च द्रव्यव्यवस्था विश्वाऽपि श्रीजैन श्वे० को० कार्यकरविज्ञप्त्या तत्तत्स्थानीयश्री-सङ्घैर्विहिता। तथाहि–श्रीगोडीजीजैनश्रीसङ्घ बम्बई रू० १००००। कोटश्रीसङ्घ बम्बई रू० २०००। पूना श्रीसङ्घ २०००। कलकत्ता श्रीसङ्घ २०००। श्रेष्ठिश्रीहेम-चंदभाई–भूपेन्द्र ब्रधर्स बम्बई २५००। वडोदरा जानीसेरीश्रीसङ्घ ७५१। वडोदराश्री आत्मारामजीजैनज्ञानमंदिर ७५१। बहेन जसकोरबहेन झवेरी ह० हसमुखबहेन झवेरी वडोदरा ५००। शा० छगनलाल लक्ष्मीचंद वडु ४०१। एतत्सर्वसहायकारिभ्योऽप्य-त्युपयोगि साहाय्यं श्रीजेसलमेरु श्रीसङ्घचित्कोशव्यवस्थापक सङ्घमुख्य श्रेष्ठि महेता श्री

रतनलालजीनंदन श्रेष्ठि श्रीरामसिंहजी-श्रेष्ठि श्रीफत्तेसिंहजी महेता-संघवी श्रेष्ठि श्रीआयदानजी बाफणा-श्रेष्ठि श्रीकेसरीमलजी जिंदाणी सुपुत्र श्रेष्ठि श्रीप्यारेलालजी प्रभृतिभिर्वितीर्णम्, यद् एतैर्निर्मलज्ञानभक्तिशालिभिः समस्तोऽपि ज्ञानकोशो व्यवस्थाद्यर्थं समर्पितो येन ज्ञानकोशव्यवस्थादिसौकर्यं समजनि। अपि चात्र पञ्चदशमासाधिकसमयस्थित्या जीर्णोद्धारादि सर्वं कार्यं निर्वाहितमिति भद्रं श्रीसंघभट्टारकस्य।

प्रशस्तिर्लिखितेयं चीमनलालेन। उत्कीर्णा च मेडती सिलावट ईस्माइलेन। वीर संवत् २४७७॥ श्री॥ शुभं भवतु॥

तपागच्छाधीशश्रीविजयानंदसूरिपट्टप्रभाकर श्रीविजयवल्लभसूरिधर्मसाम्राज्ये स्वतन्त्रभारतमहासाम्राज्यगणतन्त्रच्छायास्थमहारावलजी श्रीरघुनाथसिंघजी साहबबहादुर विजयराज्ये॥ श्री॥